भारतीय व्यापारियोंका परिचय

[दूसरा भाग]

कलकत्ता, बंगाल, आसाम और बिहार

मुद्रकः—
रावतमल चौधरी
वणिक् प्रेस,
१ सरकार लेन, कलकत्ता।

ब्लाकमेकर—
एस० सी० दास गुप्ता एण्ड संस
३७।१ पटुआटोला लेन,
कलकत्ता।

प्रकाशक—
कामर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस
भानपुरा (इन्दौर)

श्री चन्द्रराज भण्डारी "विशारद"

श्री० भ्रमरलाल सोनी　　　　श्री० कृष्णलाल गुप्त

(सञ्चालक-कॉमर्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस भानपुरा)

संपादक—

श्री० चन्द्रराज भण्डारी

श्री० कृष्णकुमार मिश्र

श्री० अमरलाल सोनी

श्री० कृष्णलाल गुप्त

प्रकाशक—

श्री० चन्द्रराज भण्डारी

श्री० अमरलाल सोनी

श्री० कृष्णलाल गुप्त

संचालक—

कॉमार्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

भानपुरा (इन्दौर)

Opinion
On First Volume

The Compilation is both a Directory and a 'who is who' as the title signifies, and as there is no book of this kind in Hindi, it is sure to supply a long-felt want I am sure it will be useful as a book of reference and congratulate you on your successful attempt.

Rai Bahadur

S M. Bapna B.SC., L.L.B

Prime-Minister of Indore State

ग्रन्थके माननीय सहायक

श्रीमान् बाबू घनश्यामदास बिड़ला एम० एल० ए० कलकत्ता
" राजा विजयसिंहजी दुधोरिया अजीमगंज
" सर सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी कलकत्ता
" छाजूरामजी चौधरी सी० आई० ई०, कलकत्ता
" साधूराम तोलाराम गोयनका कलकत्ता
" राय हजारीमलजी दूदवेवाला वहादुर, कलकत्ता
" राय रामेश्वरदासजी नाथानी बहादुर, कलकत्ता
" राय रामजीदासजी बाजोरिया बहादुर, कलकत्ता
" राय सेढ़मलजी डालमियां बहादुर, कलकत्ता
" बाबू झालीरामजी सोनथलिया कलकत्ता
" बाबू गणेशदासजी गधैया सरदार शहर
" राय बहादुर बाबू राधाकृष्ण साहब मुजफ्फरपुर
" महाराज बहादुरसिंहजी बालूचर स्टेट अजीमगंज
" बाबू निर्मलकुमारसिंहजी नौलखा अजीमगंज
" महासिंह राय मेघराज बहादुर तेजपुर
" शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर डिबरूगढ़
" मौजीराम इन्द्रचन्द नाहटा कलकत्ता
" कुंवर शुभकरणजी सुराणा चुरू
" वाणिज्यभूषण लालचन्दजी सेठी झालरापाटन
" शिवरामदास रामनिरंजनदास कलकत्ता
" मामराज रामभगत कलकत्ता
" गिरधारीमल रामलाल गोठी सरदार शहर
" रामप्रसाद चिमनलाल गनेड़ीवाला कलकत्ता
" गणपतराय कम्पनी कलकत्ता
" सनेहीराम डूंगरमल तिनसुखिया
" बृजमोहन दुर्गादत्त तिनसुखिया
" महादेवराम रामविलास रानीगंज
" लालचन्द अमानमल कलकत्ता

Opinion
On First Volume

"Introduction of Indian Merchants Vol I" is a monumental work. It is the result of great Industry and intelligence The work is of great utility. It is to be hoped that they will receive sufficient encouragement from the public to enable them to bring out subsequent Volumes describing the activities and giving the family history of the Merchant Princes of India in other parts of the country.

Rai Bahadur Sardar

M. V. Kibe, M. A.,

Deputy Prime-Minister of Indore State.

Opinion
On First Volume

It is quite surprising that the huge volume of the book has not in any way interfered with the excellent get up which has been quite upto the modern taste. The book provides an interesting study of the life and career of the Indian business and industrial magnets and it cannot be denied that much industry and patience have gone to the publication to say that owing to the unique nature of the production it will be appreciated and admired by all

Sir Bisheshardas Daga, Kt.,

Messrs Bansilal Abirchand of

Bikaner.

Opinion
On First Volume

I have gone through the book and after reading it I cannot refrain from writing that it is a new book, novel in its style and really a good one It nicely pictures out an account of all important merchants in Rajputana and Central India In such a small time you could compile such a nice book, it is all due to your hard and much creditable labour. In Hindi, at least, it is the first book of its type Sincerely I wish that God may fulfil your desires and you may go on making progress after progress.

Vanijyabhushan

Seth Lalchand Sethi

Messrs. Binodiram Balchand of

Jhalarapatan.

भूमिका

आज हम बड़ी प्रसन्नताके साथ अपने माननीय पाठकोंके सम्मुख दूसरी बार फिरसे नवीन और अनुपम भेंटको लेकर उपस्थित होते हैं। इस भव्य भेंटको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करते हुए, आनन्दसे हमलोगोंका हृदय बांसों उछल रहा है, उत्साहकी एक उत्फुल्ल उमंग हमारी रग २ में प्रवाहित हो रही है। इस आनन्दका, इस उत्साहका अनुमान शब्दोंके द्वारा नहीं लगाया जा सकता। इसका अनुभव हृदयका काम है, उसी हृदयका जो कार्य्यक्षेत्रमें आशातीत सफलता प्राप्त किये हुए सैनिकके मनोजगतमें निवास करता है।

जिस समय हम लोगोंने इस कार्य्यक्षेत्रमें प्रवेश किया था। उस समय हमको स्वप्नमें भी इस बातका विश्वास न था कि यह कार्य्य इतना शीघ्र और इतनी सफलताके साथ सम्पन्न होता हुआ दृष्टिगोचर होगा। हिन्दी साहित्यकी और उसमें भी खासकर व्यापारसाहित्यकी इस समयमें जो स्थिति है, उसकी गतिविधिके अनुमानसे बिना एक पैसेकी पूंजीके होते हुए, इस महान् कार्य्यमें पूर्ण सफलताकी आशा न रखना स्वाभाविक ही था। हमारी इस निराशाका, हमारे स्नेहियोंने, हमारे मित्रोंने, हमारे परिचितोंमें भी बहुत सद्भावके साथ समर्थन किया था, मगर हृदयके अज्ञात प्रदेशसे न मालूम कौनसी उमंग हमें कार्य्यक्षेत्रमें बलात्कार खींचे लिये जा रही थी। हमारे पैर रोके न रुकते थे। फल यह हुआ कि कार्य्यक्षेत्रमें बढ़ते २ हमारे आगेसे निराशाके बादल हटने लगे, और क्रमशः आशाकी चन्द्रिकाके दर्शन होने लगे। यह ऐसा समय था जब शारीरिक कष्ट तो हमलोगोंको बहुत हो रहे थे, मगर आशा की बढ़ती हुई किरणसे हमारा मानसिक जगत उज्ज्वल हो रहा था। अन्तमें हमारी मनोकामना पूर्ण हुई और ग्रन्थका प्रथम भाग हम लोग अपने पाठकोंको भेंट करनेमें समर्थ हो सके। यद्यपि उसकी सामग्रीसे, उसकी छपाईसे, तथा उसके साजो सामानसे हमलोगोंको पूरा सन्तोष न हुआ फिर भी व्यापारी आलमने उसको देखकर बड़ा आश्चर्य्य किया। हमारे परिश्रमकी सराहा और हमारी सफलताका अभिनन्दन किया।

प्रथम भागके निकल जानेपर भी हमें यह आशा नहीं थी कि हम इस ग्रन्थका दूसरा भाग इतनी शीघ्रताके साथ पाठकोंकी सेवामें भेंट कर सकेंगे। क्योंकि प्रथम भागके निकलनेपर

कमसे कम तीन महीनेका विश्राम हम लोगोंके लिए आवश्यक था और उसके पश्चात् केवल ७ ही मासका समय बचता था। इतने थोड़े समयके अन्तर्गत हमें कलकत्ता, बंगाल, बिहार और आसामके सुदूर वर्त्ती और विशाल स्थानोंका परिचय एकत्र करना था। यह काम कितना व्यापक और कितना दीर्घ है इसका अनुमान प्रत्येक पाठक भली प्रकार कर सकता है। मगर प्रकृतिने इसमें भी हमारी सहायता की, और अपने माननीय ग्राहकोंकी अनुकम्पासे आज उसी क्षुद्र समयमें इस महान् ग्रन्थको भेंट करनेमें समर्थ हो रहे हैं। यद्यपि हमारी दृष्टिसे यह ग्रन्थ भी अपूर्ण है, त्रुटिपूर्ण है, हमारी कल्पनाके अनुसार सर्वांग सुन्दर नहीं है, फिर भी पाठक यदि ध्यानसे देखेंगे तो पहले भागकी अपेक्षा इसे अवश्य कुछ विकसित पावेंगे। यदि पाठकोंने इसे इतना भी समझ लिया तो हमारी सफलताका वह पर्याप्त प्रमाण है। इस ग्रन्थके आरम्भमें बंगाल, बिहार और आसामकी प्रधान उपजकी औद्योगिक सामर्थ्यपर प्रकाश डालनेके पूर्व भारतकी व्यवसाय सम्बन्धी सामर्थ्य पर स्वतन्त्र विचार व्यक्त किये गये हैं। भारतके वास्तविक व्यापार सम्मुख रखकर यहाके निर्यात् व्यापारको ही प्रधान्य दिया गया है। इसके बाद ही संसारके प्रधान देशोंके साथ भारतके व्यापारिक सम्बन्धको दिखाते हुए भारतके निर्यात् मालके खपतके अनुकूल नवीन बाजारकी चर्चा की गयी है। इसी दृष्टिसे नवीन व्यापार स्थापित करनेके लिये आवश्यक पंचाङ्ग साधनोंकी मीमांसा की गयी है। और इस प्रकार प्रथम निबन्धको संकलित किया गया है। इसके बादही भारतकी गृह सम्पत्ति नामक शीर्षकके अन्तर्गत बंगाल, आसाम और बिहारकी प्रधान उपजके सम्बन्धमें जूट चाय, लाख, अभ्रक, रेशम, कोयला और लोहेपर विशेष निबन्ध लिख गये है। जिनमें इन सभी पदार्थोंके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। इस प्रकार विषय संकलनपर विशेष ध्यान रक्खा गया है।

व्यापारियोंके परिचय और उनके चित्रोंके सम्बन्धमें अधिक न लिखकर हम केवल इतना ही कहेंगे कि फर्मोंके मालिकोंसे मिलकर ही उनके परिचय संग्रह किये गये है। अतः हमारे ग्रन्थमें दिये गये परिचयकी प्रतिष्ठा कितनी महत्वपूर्ण है यह सहजमें अनुमान की जा सकती है।

इस भूभागके प्रधान व्यापारी प्रायः मारवाड़ी है ऐसी अवस्थामें दुकानदार और व्यवसायियोंके पारस्परिक भेदको दृष्टिमें रखकर ही संकलन किया गया है। इस कार्यमें मारवाड़ी व्यापारियोंने हमें पूर्ण सहयोग प्रदान किया है जिसके लिये हम उनके कृतज्ञ है पर बंगाली और इतर व्यापारियोंने ग्रन्थमालाकी उपयोगितासे उदासीन रहनेके कारण पर्याप्त सहयोग नहीं दिया जिससे उनके व्यापारिक परिचय हमे उपलब्ध नहीं हो सके कि इसके लिये हमें अत्यन्त खेद है।

भूमीका

भारतवर्षके अन्तर्गत इस कालमें व्यापार-साहित्यके प्रचारकी कितनी भारी आवश्यकता है, यह बतलाना सूर्य्यको दीपक दिखलानेके समान निरर्थक है। वर्तमानमें व्यापार-ज्ञानके अभावसे संसारके व्यापारिक क्षेत्रमें हम लोगोंकी जो छीछालेदर हो रही है वह किसीसे छिपी हुई नहीं है। इस छीछालेदरका यह कारण नहीं है कि हम लोगोंके पास उपजाऊ भूमिका अभाव है, अथवा हम लोगोंके पास खनिज द्रव्योंकी कमी है, या हम लोगोंमें व्यापारिक बुद्धिका अभाव है। ये सब बातें हमारे यहाँ पर्याप्त परिमाणमें विद्यमान हैं। हमारे देशकी भूमि "सजलां सुफलां" है, उर्वरा है, उपजाऊ है, सारे संसारमें वह खाने और पहननेकी सामग्रीको पहुंचाती है,खाने और पहननेहीकी सामग्रीको नहीं, प्रत्युत खनिज द्रव्योंके रूपमे भी वह संसारको महान् और दिव्य सम्पत्ति भेंट करती है। ऐसी सामग्री जिसके अभावमें शायद विज्ञानके दिखलाई देनेवाले कई अद्भुत चमत्कार भी प्रभा-विहीन दिखलाई देने लगे। इसके अतिरिक्त हम लोगोंमें व्यापारिक दिमागका अभाव है, यह कहना भी प्रायः बुद्धिको धोखा देनाही होगा। हम लोगोंके अन्तर्गत व्यापारिक दिमाग भी कमाल दर्जेका है यदि उसके उपयोगके लिए हम लोगोंको पर्याप्त क्षेत्र मिले। सबसे प्रथम तो हम लोगोंकी राजनैतिक गुलामी हमारी व्यापारिक उन्नतिमें सबसे बड़ी बाधक हो रही है। विदेशी सरकारके और हम लोगोंके स्वार्थोंमें प्रायः स्वार्थ—वैपरीत्य होनेकी वजहसे, शासकोंकी नीति हम लोगोंकी व्यापार नीतिके फलने फूलनेमें सबसे बड़ी बाधक हो रही है। मगर इसके सिवाय भी कई अभाव ऐसे हैं, जो हमारे व्यापारिक क्षेत्रके रहे सहे जीवनको भी कुचल रहे हैं। इनमेंसे कुछ ये हैं।

१—व्यापार साहित्यका अभाव—व्यापारिक क्षेत्रमें सफलता प्राप्त करनेके लिए, प्रत्येक व्यापारीके लिए, संसारके प्रत्येक व्यापारिक-बाजारसे परिचित रहना कितना अधिक आवश्यक है, संसारके प्रत्येक बाजारके उतार चढ़ावका, प्रत्येक देश और समाजकी अभिरुचिके परिवर्तनका, तथा फसल और खनिजद्रव्योंकी उन्नति और ह्रासका, दैनिक ज्ञान, प्रत्येक व्यापारीके लिए कितना आवश्यक है यह बतलाना व्यर्थ है। यही कारण है कि प्रत्येक व्यापारिक देशमें इन बातोंका ज्ञान कराने वाले सैकड़ों पत्र, पत्रिकाएं, डायरेक्टरीयें तथा और भी दूसरा व्यापारिक साहित्य प्रकाशित होता रहता है। मगर भारतके समान विशाल देशकी राष्ट्रभाषामें—जहांकी जन संख्याका अनुमान संसार के एक पंचमांशसे लगाया जाता है—इस सम्बन्ध की शायद एक भी पत्र, पत्रिका नहीं है, जो संसार भरके बाजारोंकी स्थितिका यहांके व्यापारियोंको दिगदर्शन करावे और न इस सम्बन्धका कोई व्यापारिक साहित्यही है जो व्यापारके स्थायी सिद्धान्तोंसे उन्हें परिचित करे। इस अभावका परिणाम यह हो रहा है कि, जहां प्रत्येक व्यापारीको संसार भरके व्यापारिक केन्द्रोंका अध्ययनकर,

व्यापारिक जगतमें गतिविधि करना चाहिए, वहां यहांके बहुत से व्यापारी केवल प्रारब्धके विश्वास पर, अथवा स्वप्नोंके आधारपर अथवा किसी पागलके वचनपर अथवा किसी शकुन अपशकुनके ख्यालपर हजारों लाखोंकी बाजी चढ़ा देते हैं। हमने अपनी आंखोंसे देखा है कि, एक सट्टा करने वाले महाशय सड़कपर जा रहे थे उन्हे रास्तेमें एक कुत्ता मिला, उसकी पूंछ उंची थी, उन्होंने अनुमान किया कि इस कुत्तेकी पूंछ उंची है इसलिए जरूर रुईका भाव उंचा जाना चाहिए। और इसी अनुमानके बलपर उन्होंने तेजी मन्दी लगाई, दैवयोगसे उन्हे सफलता न हुई, यदि कहीं हो जाती तो कुत्तेकी उंची पूंछ भी भावकी तेजीका एक कारण हो जाता। एक पागलने इसी प्रकार एकबार उटपटाग एक महाशयसे कुछ बात कह दी और उससे उनको लाभ भी हो गया, परिणाम यह हुआ कि फिर उसकी बातको सुननेकी इन्तिजारीमें सैकड़ों आदमियोंकी भीड़ लगी रहती थी। यह सब भयंकर स्थिति व्यापार साहित्यके अभाव हीके कारण है। इसके अभाव में यहाका व्यापारी समाज हमेंशा अन्धेरेमें तीर लगाता रहता है। यह सच है कि काकताली न्यायसे इससे भी कई लक्षाधीश और कोट्याधीश होजाते हैं, मगर केवल इसी प्रमाणपर यह स्थिति अभिनन्दनीय नहीं कही जा सकती। इस स्थितिकी वजहसे यहांके समाजमें धीरे २ उद्योगवादका अतः पतन और प्रारब्धवादका अप्रासांगिक बल बढ़ रहा है। जो किसी भी व्यापारी जातिके लिए अभीष्ट नहीं हो सकता।

२—व्यापारिक संगठनका अभाव-हमलोगोंमें व्यापारिक दिमाग, संसारकी शायद किसी भी व्यापारिक जातिसे कम नहीं है। मगर कुछ तो व्यापारिक ज्ञानकी कमी कारण, और कुछ दूसरे सामाजिक स्थितिकी कमजोरीके कारण, हमलोगोंमें व्यापारिक संगठनसे काम करनेकी पद्धतिका प्रायः अभाव है। जहां दूसरी व्यापारिक जातियां छोटेसे छोटे व्यवसायको भी समूह बद्ध रूपमें प्रारम्भ करती हैं। वहां हम लोग प्रत्येक छोटेसे छोटे और बड़ेसे बड़े कामको केवल व्यक्तिगत बलपर प्रारम्भ करते हैं। परन्तु यह होता है कि प्रथम तो हमलोग किसी बड़े संगठित कार्यका प्रारम्भ ही नहीं कर पाते और कभी यदि कार्य प्रारम्भ होता भी है तो पर्य्याप्त सम्पत्तिके अभावमे कभी योग्य कार्य्यकर्त्ताओंके अभावमें तथा कुछ कमी और कोई दूसरे कारणोंसे वह असफल हो जाता है। फल यह होता कि हमारा,व्यापारिक समाज बहुत कुछ व्यापारिक दिमागको रखते हुए भी व्यापिरिक संगठनके अभावसे सिवाय विदेशी कम्पनियोंकी दलाली, कमीशन एजन्सी या बेनियन शिपसे आगे नहीं बढ़ने पाता। यही कारण है कि हजारों, लाखों और करोड़ों रुपयेकी सम्पति होते हुए भी व्यापारिक जीवनके वास्तविक आनन्दसे हम लोग अकिंचन रहते हैं।

३—सामाजिक जीवनकी दुरवस्था—राजनैतिक गुलामी ही की तरह सामाजिक जीवनके सामाजिक गुलामी भी हमलोगोंकी व्यापारिक उन्नतिमे कम बाधक नहीं हो रहे हैं। यद्यपि ये

बन्धन अब धीरे२ टूटते जा रहे हैं फिरभी इनका अभी बहुत प्राबल्य है जो हमारे फलने फूलनेके मार्गमें भयङ्कर विघ्नकी तरह है। उदाहरणार्थ समुद्र यात्राके विधान ही को ले लीजिए, इस विधानकी वजहसे हमलोगोंकी व्यापारिक गतिविधीमें जो भारी ह्रास हो रहा है। उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। यदि हमारे जीवनमें यह भारी बन्धन नहीं होता तो आज कलकत्ता, बम्बई और करांची ही को तरह लन्दन, पेरिस, न्यूयार्क, शंघाई आदि संसारके प्रसिद्ध बाजारोंमें भी हमलोगोंका कितना प्रभाव होता, यह कौन कह सकता है इसी प्रकारके और भी कितने भीषण समाजिक बन्धन हमारे व्यापारिक जीवनको भयङ्कर रूपसे कमजोर बना रहे हैं, पर उन सबपर प्रकाश डालना इस छोटेसे स्थानमें असम्भव है।

मतलब यह कि हमारे व्यापारिक विकासके लिये व्यापार साहित्यकी उन्नति की बहुत भारी आवश्यकता है इसमे सन्देह नहीं। इसी अभावकी पूर्तिके लिए हमलोगोंने यह एक प्रयत्न किया है। हमें इसमें कितनी सफलता हुई है इसका निर्णय करना पाठकोंका काम है हमारा नही, इसके आगे भी इस साहित्यके सम्बन्धमें और भी बहुत कुछ कार्य्य करनेका हमलोगोका इरादा है, खासकर व्यापार सम्बन्धका एक दैनिक और एक मासिक पत्र प्रकाशित करनेका हमलोगोंका बहुत दिनोंसे विचार है। मगर हम इसी प्रतीक्षामें हैं कि यदि कोई हमसे अधिक योग्य सज्जन इस कार्य्यको प्रारम्भ करे तो उससे विशेष लाभ हो। पर यदि ऐसा न हुआ और समय हमारे अनुकूल रहा तो निकट भविष्यमें ही ऐसे उद्योगको प्रारम्भ करनेकी चेष्टा की जाय गी।

अन्तमें इस भूमिकाको समाप्त करनेके पूर्व जिन लोगोंके सहयोग दानसे यह महान कार्य्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ है उन लोगोंके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित न करना वास्तवमें बड़ी कृतघ्नताका काम होगा। सबसे प्रथम तो हम अपने उन सहायकोंके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं जिन्होंने इस ग्रन्थकी अनेक प्रतियोंको खरीदकर हमें उत्साहित किया है। इसके पश्चात् वणिक प्रेसके मैनेजर मि० एच० पी० मैत्रको धन्यवाद दिये बिना भी हम नहीं रह सकते, जिनके मेनेजमेण्टमें पुस्तक पहलेसे अधिक सुन्दर, अधिक शीघ्र, और अधिक शुद्धरूप में प्रकाशित हुई है। इस बार आपके व्यवहारसे हमें बहुत ही अधिक सन्तोष रहा। इस ग्रन्थके ब्लॉकमेकर मि० सुरेशचन्द्रदासगुप्ताको धन्यवाद देना भी हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं जिन्होंने बहुतही साधारण रेटमें अच्छे और सन्तोषजनक ब्लाक नियत समयपर बनाकर हमें दिये। इसके अतिरिक्त इस ग्रन्थके संकलनमें सरकारी रिपोर्टें तथा विभिन्न विषयोंके कई ग्रन्थोंसे सहायता ली गयी है। उनके लेखकोंके भी हम अत्यन्त आभारी हैं साथही कलकत्तेकी स्थानीय कमर्शियल लाइब्रेरी और इम्पीरियल लायब्रेरीके प्रबन्धकोंको भी धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनके कारण हमें इस कार्यमें पर्याप्त सहायता मिली है।

अन्तमें हम अपने उदार पाठकोंका एक बार पुनः अभिनन्दन करते हुए इस भूमिकाको समाप्त करते हैं।

भानपुरा, निवेदक—

१ अगस्त सन् १९२९ ई० } प्रकाशक कॉमार्शियल बुक पब्लिशिंग हाउस

विषय-सूची

कलकत्ता

बंगाल विभाग

विषय-सूची

आसाम विभाग

बिहार विभाग

भारतीय व्यापारपर एक दृष्टि

SIDE LIGHT ON INDIAN TRADE.

भारतका सच्चा व्यापार

मानव-समाजमें व्यापार वाँणिज्यका आश्रय पाकर नित नवीन भव्य भवनोंका निर्माण हुआ करता है। जिस राष्ट्र विशेषका व्यापार जितना अधिक उन्नत अवस्थापर होता है वह राष्ट्र उतना ही अधिक प्रभावशाली एवं स्मृद्धिशाली माना जाता है। अतः राष्ट्रकी उन्नतम श्रेष्ठताका एकमात्र आदि कारण उसके व्यापार वाँणिज्यकी उन्नति ही है। यही सिद्धान्त भारतके लिये भी अनुकरणीय है।

यदि उपरोक्त विचार सारिणीके अनुसार हम भारतके स्वराष्ट्रोचित व्यापारको सम्मुख रखकर विचार करें तो हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि व्यापार वाँणिज्यका रुख भारतीय राष्ट्रके स्वरुपके प्रतिकूल होनेके कारण संसारके अन्य उन्नतिशील राष्ट्रोंकी समतामें लेशमात्र भी खड़ा नहीं हो सकता। फलतः हमें स्वीकार करना ही होगा कि जबतक भारतका व्यापार राष्ट्रीय हितको सम्मुख रखकर सुसंगठित रीतिसे नहीं किया जायगा तबतक वह समुन्नत राष्ट्रोंकी श्रेणी पर नहीं पहुंच सकेगा। ऐसी स्थितिमें भारतके सच्चे व्यापारका वास्तविक स्वरुप समझ लेना अत्यन्त आवश्यक है।

संसारके समुन्नत राष्ट्रोंके व्यापारकी तात्विक मीमांसा कर लेनेपर सहज ही मालूम हो जायगा कि राष्ट्रका वास्तविक व्यापार वही है जिसे वह अपनी आवश्यकता पूर्ति कर बाहर भेज कर किया करता है। अतः मानना पड़ेगा कि भारतका सच्चा व्यापार उसका निर्यात् ही है।

भारत तो कृषि प्रधान देश ही है पर अपने शासकोंकी विशेष नीतिके कारण वह आज कच्चा माल उत्पन्न करनेवाला देश बन गया है। भारत सरकारकी कृषि सम्बन्धी नीतिने भारतको अन्य उन्नत राष्ट्रोंके कल-कारखानोंकी आवश्यकता पूर्तिके लिये कच्चे मालका विस्तृत क्षेत्र बना डाला है। अतः भारतसे कच्चा माल ही निर्यात्के रुपमें विदेश भेजा जाता है। ऐसी दशामें भारतका सच्चा

व्यापार भारतका निर्यात् ही है। इसीपर भारत राष्ट्रका उत्थान सर्वरूपेण निर्भर है। भारतका कच्चा माल ही वास्तवमें भारतके सच्चे व्यवसायका पदार्थ है। संसारके अन्य स्थानोंसे आनेवाले तैयार मालका व्यापार वास्तवमें भारतका सच्चा व्यापार कभी नहीं माना जा सकता। इस प्रकारके तैयार मालका व्यापार करनेवाले व्यापारी अन्य देशोंके कारखानेवाले पूंजीपतियोंके दलाल मात्र हैं जो आंशिक आर्थिक लाभ अर्थात् दलालीपर अपना व्यापार जमाये बैठे हैं। इन्हीं व्यापारियोंके द्वारा आज भारतके बाजारमें उन लोगोंका माल भारतके बने हुए मालकी प्रतियोगिता करनेमें होड़ लगा रहा है। ये व्यापारी वास्तवमें भारतके सच्चे व्यापारसे बहुत दूर हैं। अब उपरोक्त विचार पद्धतिके अनुसार स्थिर किये गये भारतके सच्चे व्यापार अर्थात् कच्चे मालके व्यापारके सम्बन्धमें हम यहां विस्तृत विवेचन करेंगे।

भारतके सच्चे व्यापारका वास्तविक स्वरुप और उसकी विशेषतायें

इस शीर्षकमें हम इस बातपर प्रकाश डालेंगे कि भारतका कच्चा माल कौन है, वह कहां कहां जाता है और किस २ उपयोगमें आता है तथा उसे वहां पर कहां कहांके मालसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त हम यह भी बतावेंगे कि वह किस रूपमें विदेशमें भेजा जाय कि उसे सफलता मिले और भारत राष्ट्रके वास्तविक उत्कर्षका कारण बनें।

भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहां प्रचुरतासे कच्चा माल पैदा होता है जिसमेंसे अपनी आवश्यकता पूर्तिको छोड़कर शेष अधिकांश भाग विदेश भेजा जाता है। कच्चे मालका अर्थ इतना अस्पष्ट है कि इसका स्पष्टीकरण कर देना ही उचित है। कच्चे मालके दो भेद है जिनमें एकको कच्चा माल कहते हैं और दूसरेको खाद्य पदार्थके नामसे पुकारते है। यह दोनों मिलाकर भारतके कुल निर्यात् अर्थात विदेश जानेवाले मालका ८० प्रतिशत भाग होता हैं। निर्यात्के शेष २० प्रतिशत भागमें वह माल माना जाता है जो पूर्ण अथवा आंशिक रुपसे तैयार करके विदेश भेजा जाता है। इसका बोधगम्य स्पष्टीकरण इस प्रकार है जिसे भारतके निर्यात्के रुपमें हम दे रहे हैं:—

भारतका निर्यात्	सन् १८९९-००	सन् १९०६-७	सन १९१३-१४
रुई	६६ (मिलियन पौण्ड) ...	१४६ .	२७३ .
जूट कच्चा	५३ ,, ,, ...	१७८ ...	२०५ ..
जूट तैयार	६२ ,, ,, ...	१०४ ...	१८८ ..
चावल	८६ ,, ,, ..	१२३ ...	१७६ .
तेलहन (तिल, सरसों अलसी आदि)	६६ ,, ,, ...	८६ ...	१७० ..

भारतका निर्यात	सन् १८९९-००			सन् १९०६-७		सन् १९१३-१४	
चाय	६·० ,,	,,	...	६·५	...	९९	...
गेहूं	२·६ ,,	,,	...	५·२	...	८७	...
सूती माल	५५ ,,	,,	...	८१	...	८·१	...
चमड़ा खाल (कच्चा)	४·६ ,,	,,	..	७८	..	७·८	..
चमड़ा (कमाया)	२३ ,,	,,	...	२९	...	२८	...
अफीम	५४ ,,	,,	...	६२	..	२२	..
ऊन	९ ,,	,,	...	१·६	...	१६	...
लाख, चपड़ा	७ ,,	,,	..	२·३	...	१३	...
काफी	·९ ,,	,,	...	६	...	१०	...
जोड़	६२२ ,,	,,	...	१०४३	...	१४४६	
कुल निर्यात	७०० ,,	,,	...	११५.३	...	१६२.८	

यदि उपरोक्त दिये गये कच्चे मालको माल के प्रकारके रूपमें विभाजित किया जाय तो नीचे लिखेनुसार उसके प्रकार होंगे। और उनमें ये ये पदार्थ माने जायगे।

कच्चा माल	*खाद्य पदार्थ*	*पक्का माल*	*अन्य प्रकारका माल*
रुई	चावल	जूटका तैयार माल	अफीम
जूट	गेहूं	सूती माल	लाख, चपड़ा
ऊन	चाय	चमड़ेका सामान	खनिज पदार्थ
तेलहन	काफी		
खाल व चमड़ा			

इन्हीं विभिन्न पदार्थोंको मूल्यकी दृष्टिसे यों मानेंगे।

	सन् १९०० ई०				सन् १९०६-७ ई०		सन १९१३-१४ ई०
कच्चा माल	२४० (मि० पौं०)			...	४९८	...	७४२
खाद्य पदार्थ	१८१	,,	,,	...	२४६	...	३७२
पक्का माल	१४०	,,	,,	...	२१४	...	२९७
अन्य प्रकारका माल	६१	,,	,,	...	८५	...	३५
जोड़	६२२	,,	,,	...	१०४३	...	१४४६

उपरोक्त अंकोंसे स्पष्ट है कि कच्चे मालकी भांति यहांका तैयार माल भी महत्वका होता जा रहा है।

कच्चे मालकी मदको लेकर हमने उसके ४ प्रकार लिखे हैं उनमेंसे एक एक प्रकारको लेकर हम नीचे उनका विस्तृत विवेचन दे रहे हैं। प्रथम प्रकारके अन्तर्गत रुई, जूट, ऊन, तेलहन, चमड़ा और खाल हैं अतः हम क्रमानुसार इनपर प्रकाश डालेंगे।

रुई

संसारमें रुईके बेचनेवाले प्रधान रूपसे तीन ही देश हैं। जिनके नाम अमेरिका मिस्र और भारत हैं। पर भारतकी रुईके खरीदारोंमें प्रधान रूपसे जापान, जर्मनी, बेलजियम इटली, अस्ट्रिया हंग्री, फ्रान्स और ब्रूटेन हैं। उपरोक्त खरीददारोंके नाम क्रमानुसार दिये गये हैं।

भारतसे विदेश जानेवाली रुईकी निकासीका प्रधान बन्दर बम्बई है।

जूट

जूट उत्पन्न करनेवाला संसारका प्रधान केन्द्र भारत है। संसारके कितने ही देशोंमें जूटकी खेती करनेके लिये प्रचुर धन साध्य प्रयत्न किया गयापर सफलता न मिली। जूटके प्रति उपयोगी पदार्थकी खोजमें संसारके वैज्ञानिकोंने सारा जोर लगा दिया फिर भी वे सफल मनोरथ नहीं हो सके। कहा जाता है कि दक्षिण अफ्रीकामें एक प्रकारके रेशेका प्रयोगकर देखा जा रहा है। यदि उन रेशोंसे टाट बनाया जा सका और बोरे बुननेमें सफलता मिल गयी तो अवश्य ही भारतके जूट व्यवसायको धक्का लगेगा। जूटका उपयोग प्रायः मोटेसे मोटे माल जैसे टाट और बोरे बनानेमें किया जाता है तथा तरहके रस्से बनानेका काम भी इन्हींके रेशोंसे लिया जाता है। जूटके टूटे टुकड़े और मोटे बेकार रेशोंसे कागज बनाया जाता है।

भारतके जूटके खरीदारोंमें ब्रूटेन, जर्मनी, अमेरिका, फ्रान्स, आस्ट्रिया हंगरी, इटली आदि क्रमानुसार प्रधान देश हैं।

भारतसे विदेश जानेवाले जूटकी निकासीका प्रधान बन्दर कलकत्ता है।

भारतसे बाहर जानेवाली भारतीय ऊनकी निकासीका प्रधान बंदर करांची है। यहींसे अधिकांश ऊन विदेश भेजी जाती है और शेष ऊन बम्बईके बंदरसे रवाना होती है।

भारतकी ऊनका प्रधान खरीददार बृटेन हैं। बृटेनके बाजारमें आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड दक्षिण अफ्रीका, अर्जेन्टाइना रिपब्लिक तथा भारतकी ऊन बिक्रीके लिये इकट्ठी होती हैं। आस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैण्डकी ऊन सर्वश्रेष्ठ होती है अतः ऊनके बाजारमें भारतको ऊनके लिये बहुत बड़ी प्रतियोगिता करनी पड़ती है। ऐसी दशामें भारतकी ऊनके लिये कोई दूसरा मार्ग खोज निकालनेमें ही भारत राष्ट्र एवं भारतीय व्यापारियोंका हित है। बाजारमें प्रतियोगितासे दूर रहने और अपना हित साधन कर लाभ उठानेके लिये सर्वश्रेष्ठ उपाय यही है कि भारत अपने घर खर्चके लिये आवश्यक कम्मल आदि मोटा माल स्वयं भारतमें तैयार करावे और साथ ही इसी प्रकारका सस्ता मोटा माल तैयार करा कर एशियाके अन्य देशोंमें व्यवहारके लिये भेजे। इसका परिणाम भी भारतके लिये अत्यन्त हितकर होगा।

रेशम.

संसारमें सबसे अधिक रेशम जापानमे उत्पन्न होता है। और सबसे अधिक रेशमका खर्च अमेरिकामें होता है अतः अमेरिका रेशमका सबसे बड़ा खरीददार है। रेशमकी उपजके सम्बन्धमें जहां जापानका स्थान प्रथम है वहां फ्रांस और इटलीका स्थान क्रमानुसार दूसरा और तीसरा है।

भारतीय रेशमके ४ प्रकार हैं जिनके नाम क्रमानुसार शहतूती, मूंगा, अंडी और टसर है। भारतका शहतूती रेशम उत्तम श्रेणीका रेशम माना जाता है अतः इसे संसारकी उत्तम श्रेणीकी रेशम से प्रतियोगिता करना पड़ती है। उत्तम श्रेणीका रेशम जापान, फ्रान्स, और इटलीमें उत्पन्न होता है अतएव इन्हीं तीन प्रधान देशोंसे भारतको अपनी उत्तम रेशमके लिये प्रतियोगिता करना पड़ती है। भारतमें इस प्रकारकी उत्तम शहतूती रेशम मैसूर राज्य और काश्मीरकी झेलम घाटीमें उत्पन्न होती है।

मूंगा रेशम – शहतूती रेशमकी भांति पालतू रेशमके कीड़ोंसे उत्पन्न होती है। इस प्रकारकी रेशम आसाम और बंगालमे पैदा होती है।

अरंडी रेशम—उन अर्ध पालतू रेशमके कीड़ोंसे उत्पन्न होती है जो अरंडीके पत्ते खाते हैं। इस प्रकारकी रेशम भी आसाम और बंगालमें ही पैदा होती है।

टसर—यह रेशम जङ्गली कीड़ोंकी होती है और मध्य भारत तथा उड़ीसा प्रदेशमे मुख्यतया पायी जाती है। इसके प्रधान केन्द्र रायपुर, बिलासपुर, चाँपा, भागलपुर आदि है।

इन चार प्रकारकी रेशमके अतिरिक्त एक पाचवा प्रकार भी है जिसे वेस्ट सिल्क कह कर पुकारा जाता है। इस प्रकारकी रेशम प्रायः उलझी हुई रेशम तथा कटी छटी रेशमकी कुसियारीसे

तैयार की जाती है पर यह बड़े ही कामकी रेशम होती है। प्रथम ४ प्रकारकी रेशमके समान ही वेस्ट-सिल्कके लिये भी भारतको जापानसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। भारतकी वेस्ट सिल्कमें कूड़ा अधिक रहता है और जापानके मालमें बिलकुल कूड़ा-कचड़ा नहीं रहता।

उपरोक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि भारतकी रेशमके ५ प्रकार होते हैं और सबके लिये उसे संसारके तीन प्रधान रेशम उत्पन्न करने वाले केन्द्रोंसे प्रतियोगिता करना पड़ती है। अब भारतके लिये रेशमकी कुसियारीका व्यापार भी ध्यानमें रखना आवश्यक है। रेशमकी कुसियारी भारतसे विदेश जाती है। इसके खरीदारोंमें प्रथम बृटेन और दूसरा फ्रान्स माना जाता है। कुछ समयसे इटली भी कुसियारी खरीदने लगा है। वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए मानना पड़ेगा कि संसारमें कुसियारीका व्यापार उन्नति करेगा। दूसरे देश वाले अपनी सुविधाके अनुकूल कुसियारीसे रेशम निकाल कर सुलझा सकते हैं जिससे उन्हें बुननेमें सुविधा होती है। अतः इस व्यापारका भविष्य उज्वल है।

भारतीय रेशमके लिये प्रधान विदेशी बाजार

रेशम—(सभी प्रकारका) बृटेन, फ्रांस और इटली (क्रमानुसार)
वेस्ट सिल्क (चसम)—बृटेन, फ्रान्स और इटली (")
कुसियारी— बृटेन, फ्रान्स और इटली (")

५ तेलहन माल

तेलहन माल किसी एक प्रकारके पदार्थ विशेषका नाम नहीं है। इसके अन्तर्गत ७ प्रकार के तेल देनेवाले पदार्थोंका समावेश माना जाता है। जिनके नाम क्रमशः अल्सी, लाही, सरसों, तिल, बिनौले, अंडी, मूंगफली और नारियलकी गरी है। इनका अलग अलग आवश्यक विवरण इस प्रकार है।

१ अल्सी—भारतमें अल्सी इतनी अधिक उत्पन्न होती है कि भारतके घर खर्चको छोड़ कर भी बहुत अधिक परिमाणमें बच रहती है जो विदेशके बाजारमें बेंची जाती है। यही कारण है कि भारतमें बहुत बड़ा अल्सीका निर्यात् विदेशको किया जाता है। यह निर्यात् कुछ नवीन नहीं है गत सन् १९ वीं शताब्दीके आरम्भसे ही इसके निर्यात्का सूत्रपात होता है। सन् १८३२ ई० में केवल ८ हंडरवेट अल्सी विदेश भेजी गयी थी पर सन १८८०ई०मे ५० लाख हंडरवेट पर अल्सीका निर्यात पहुंच गया। और सन १९००ई० तक भारतने संसार भरमें अल्सी बेचनेका एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। इसी बीच अर्जेन्टाइना रिपब्लिकमें अल्सीकी खेती आरम्भ की गयी और वहा उसे अच्छी सफलता मिली। आज भी अर्जेन्टाइना रिपब्लिकका स्थान सबसे प्रथम माना जाता है और इसके बाद

भारतका स्थान है। तीसरा स्थान कनाडाका है और फिर क्रमानुसार रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका का स्थान माना जाता है। रूस और संयुक्त राज्य अमेरिकामें इतनी ही अल्सी उत्पन्न होती है कि उनके घर खर्चके लिये वह पर्याप्त हो जाती है। ऐसी दशामें अल्सीके लिये संसारके बाजारमें भारतको अर्जेन्टाइना रिपब्लिक और कनाडाकी अल्सीसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

अलसीकी माग बाजारमें खूब रहती है। अलसीका तेल पेन्ट, वार्निश, आइल पेन्ट, छापनेकी स्याही आदि बनानेके काममें आता है। ठंढक पहुंचा कर ठंढी पद्धतिसे निकाले गये अल्सीके तेलको जैतूनके तेलके स्थानपर काममें लाते हैं। अलसीसे तेल निकाल लेनेके बाद बची हुई खली जानवरोंके खानेके काममें आती है।

भारत अलसी बेंचता है और अलसीका तेल खरीदता है। अलसीका तेल बाहरसे मंगाना भारतके लिये हानिकर है अतः भारतमें ही अलसीका तेल निकलवाया जाय और घर खर्चके लिये व्यवहार किया जाय तो इससे भारत विदेशियोंका शिकार बननेसे बच जायगा और भारतका उद्योग धन्धा उन्नतिकी ओर अग्रसर होगा। तेल सस्ता पड़ेगा और खली मुफ्तमें बच जायगी।

भारत अपनी अल्सी बृटेन, फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी और इटलीके बाजारमें बेंचता है।

सरसों और लाही—भारतके घर खर्चके लिये ही बोई जाती है। इसका तेल मुख्य-तया जलानेके काममें आता है पर मिट्टीके तेलके बढ़ते हुए व्यवहारके कारण जलानेके काममें इस तेलका व्यवहार कम हो चला है। इसकी खली खादके काममें आती है।

सरसों और लाही सबसे अधिक पंजाबमें पैदा होती है और उससे कुछ कम परिमाणमें यह संयुक्त प्रान्तमें उत्पन्न होती है। पंजाबका माल करांची बंदरसे विदेश जाता है और संयुक्त प्रान्तका सरसों बम्बई तथा कलकत्तेसे बाहर जाता है।

भारतको सरसों और लाहीके लिये विदेशी बाजारोंमें रूससे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। भारतका सरसों बेलजियम, जर्मनी और फ्रान्सके बाजारमें बिकता है। बृटेन प्रायः योरोपके अन्य देशोंको सरसोंका तेल और खली भेजता है और जापान सरसों तथा लाहीके स्थानमें सोवा-बीज बाहरके बाजारोंमें बेंचता है। यही कारण है कि सोवाके बीज और भारतीय सरसोंसे भी वहा पारस्परिक मुठभेड़ हो जाती है और योरोपके तेल पेरनेवाले इससे लाभ उठा लेते हैं। अब भारतको चाहिये कि वह सरसों और लाहीका तेल भारतमें ही तेल की मिलों द्वारा निकला कर साफ करावे और सरसोंका तेल और खली बृटेनके बाजारमें बेंचें। इससे उसे अधिक लाभ होगा।

तिल—भारतमें तिलका उपयोग बहुत पुराना है इसीसे संस्कृत शब्द तेलकी रचना हुई है। तिल दो प्रकारका होता है जिसमें एकको काला तिल और दूसरेको सफेद तिल कहते हैं। काला

तिल श्रेष्ठ होता है। उसका तेल उत्तम और गुणकारी होता है। इन तिलोंमें तेल भी अधिक निकलता है और औषधिके काममें भी यही तेल आता है। सफेद तिल और उसका तेल खाने और मिठाइयोंके काममें आता है इन दोनों ही प्रकारके तिलोंका तेल सुगन्धित तेल बनानेके काममें आता है। सरसोंकी फसल नष्ट हो जानेपर तिलकी माग बढ़ जाती है। यह खानेके काममें भी आता है अतः भारतकी निम्न-श्रेणीकी जनतामें इसका बहुत प्रचार है। यही कारण है कि मारिशस, सीलोन, जावा, प्रभृति देशोंमें बसे हुए भारतीय श्रमजीवियोंमें इसकी माग सदैव बनी रहती है। इसकी खली खादके काममें आती है

तिलकी माग प्रधान रूपसे फ्रास, बेलजियम, अस्ट्रिया हंगरी, जर्मनी, और इटलीके बाजारमें रहा करती है। इन देशोंमें जैतूनके तेलके स्थानमें तिलके तेलसे साबुन बनाया जाता है। फ्रान्सके आइल मिलवाले तिल न खरीद कर सस्ती मूंगफली खरीदते है और मूंगफलीका तेल पेरकर तिलके तेलके स्थानमें उसे काममें लाते है। सस्ती होनेसे मूंगफली और नारियलकी गरी भी यहांके तिलसे विदेशके बाजारमें प्रतियोगिता करती हैं। चीनसे भी तिल विदेशके बाजारोंमें आने लगा है।

भारतसे बाहर जाने वाले तिलके लिये बेलजियम, फ्रान्स, जोगोस्लाविया और इटलीके बाजार हैं, जहा इसकी यथेष्ट माग रहती है।

मूंगफली —भारतमे सबसे अधिक मूंगफलीकी उपज मद्रास और बम्बई प्रदेशमें होती है। मद्रास प्रदेशकी मूंगफली पाण्डेचेरी द्वारा विदेश भेजी जाती है खासकर फ्रान्सके कारखानोंके लिये तो इसी बंदरसे रवाना होती है। मद्रास प्रदेशसे मूंगफली कलकत्ता और रंगून भी जाती है यहांके आइल मिलोंमें इसका तेल निकाला जाता है। भारतके विभिन्न भागोंमें मूंगफलीकी [illegible] रूपमें माग रहती है। इसका तेल सरसों और तिलके तेलमें मिलानेके काममें आता है। इसकी [illegible] जानवरोंको खिलाई जाती है पर सूखी खली गन्ने, गोभी आदिके खेतोंमे खाद देनेके काममें आती है।

संसारमें मूंगफली और उसके तेलके बाजार मुख्यतया फ्रान्स, बेलजियम, जर्मनी, इटली और अस्ट्रिया हंगरी हैं।

पश्चिम अफ्रीकाके सेनेगाल प्रदेशकी मूंगफलीमें अधिक तेल निकलता है अतः उसकी माग [illegible] अधिक है। मार्सेलीज और बोर्डोकी तेलकी मिलें इसे चावसे खरीदती है। प्रथम तो जैतूनके [illegible] स्थानमें तिलका तेल व्यवहार किया जाता था पर सस्ते मालकी खोजने तिलके तेलमें मूंगफलीका [illegible] मिला देना शुरू कर दी इसका फल यह हुआ कि अब बिलकुल मूंगफलीका तेल ही काममें [illegible] है। मूंगफलीके तेलसे साबुन तैयार किया जाता है। साफ किया हुआ तेल जैतूनके तेलमे

मिलानेके काम आता है। मूगफलीके निर्गन्ध तेलका नकली मक्खन बनाया जाने लगा है। इस तेलके नकली मक्खनको दक्षिण योरोपके लोग बड़े प्रेमसे खाते हैं। इसी निर्गन्ध तेलकी वानस्पतिक चर्बी भी बनायी जाने लगी है। चर्बीकी मांग संसारमें अत्याधिक है अतः पशुओंकी चर्बीके स्थानमें इस तेलकी चर्बीका प्रसार भी अवश्य ही अधिकतासे होगा। इसीलिये मूगफलीके तेलको अच्छा अवसर हाथ लगेगा। अब कुछ समयसे अमेरिका भी मूंगफलीके तेलका व्यवहार करने लगा है और फलतः भारतके लिये उसे नवीन बाजार समझना चाहिये।

भारतको चाहिये कि वह मूंगफली न भेजकर मूगफलीका तेल ही विदेश भेजा करे। भारतमें ही भारतीय तेलकी मिलोंमे मूगफलीका तेल निकाला जावे और फिर उसे निरगन्ध और साफ कर ढंगसे विदेशके बाजारोंमें भेजा जावे। इस प्रकार मूगफलीका तेल भेजनेसे कई प्रकारका लाभ तो भारतको होगा ही पर जहाजपर स्थान कम घेरनेके कारण किराया भी कम लगेगा और साथ ही खली भी बच रहेगी जो खादके काममें आयेगी।

विनौला - संसारभरमें सबसे अधिक बिनौला संयुक्त राज्य अमेरिकामें उत्पन्न होता है पर वहासे बिनौला विदेश नहीं भेजा जाता। हा उसके स्थानमे बिनौलेका तेल और उसकी खली ही अमेरिका विदेशके बाजारमे भेजता है।

बिनौलेका सबसे बड़ा बाजार बृटेन है। अतः सबसे अधिक बिनौलेकी खरीद बिक्री यहीं होती है। बृटेनके बाजारमें अमेरिकाके बिनौलेका तेल और खली तो आती ही है पर मिस्रका बिनौला भी यथेष्ट परिमाणमें खरीदा जाता है। इसी बाजारमें खरीदा हुआ मिस्रका बिनौला यहासे जर्मनी जाता है। अमेरिकावाले बिनौलेका छिलका निकाल कर उसका तेल निकालते हैं अतः यह तेल सर्व श्रेष्ट माना जाता है फलतः जर्मनी अमेरिकाके बिनौलेके तेलको खूब खरीदता है।

योरोपमें दूध देनेवाले पशु घरोंमें रखकर खिलाये जाते हैं और उन्हे बिनौलेकी खली ही अधिक खिलायी जाती है। जर्मनी मिस्रके बिनौलेकी खली बेंचता है पर वह भारतकी खलीसे कहीं अधिक मंहगी होती है। अंग्रेज लोग पशुओंको खिलानेके लिये बिनौलेकी सस्ती खली खरीदते है अतः जर्मनीकी खलीकी अपेक्षा भारतकी सस्ती खलीको अच्छा अवसर मिलता है। बिनौलेका तेल साबुन बनानेके काममें आता है। इसका निर्गन्ध तेल प्रतिउपयोगीकी भाँति जैतूनके तेलके स्थानमे काम आता है। इसके तेलकी वानस्पतिक चर्बी भी तैयार की जाती है। बिनौलेके छिलकेसे लिखनेका कागज तैयार किया जाता है। खली जानवरोंको खिलाने और खादके काममें आती है। अमेरिकावाले बिनौलेसे एक प्रकारका आटा भी तैयार करने लगे हैं जिसको वे गेहूंके आटेके साथ मिलाकर काममे लाते हैं।

भारत यदि स्वदेशमें ही बिनौलेका तेल तैयार करावे और साफ तथा निरगन्ध कर उसे घर-

खर्च के काममे ले तो लाभ अधिक हो सकता है और सस्ती खली विदेश भेज सकता है।

अरण्डी—इसका पौधा विचित्र प्रकारका होता है। वह भूमिकी नाइट्रोजन नामक वस्तु-को खा-खा कर बढ़ता है। इसके पौधे प्रायः गन्ने, हल्दी, अदरख आदिके खेतोंमे छायाके लिये लगाये जाते हैं। पर आसामवाले अण्डीरेशम के कीड़ोंको खिलानेके लिये इन्हे लगाते हैं। निज़ाम स्टेट और बम्बई प्रान्तमे पैदा होनेवाली अरण्डीकी उपजका अधिकांश भाग बम्बई बन्दरसे विदेशके लिये रवाना किया जाता है इधर कलकत्तेके पासकी तेलकी मिलोंमे बंगाल, आसाम, बिहार, उड़ीसा और संयुक्त प्रान्तमें उत्पन्न होनेवाली अरण्डीका तेल निकाला जाता है। इसी प्रकार मद्रासकी तेलकी मिलें उस प्रदेशमे उत्पन्न होनेवाली अरण्डीका तेल निकालती है।

अमेरिकामें अरण्डी उत्पन्न होती है पर उसका तेल वहींकी खपतके लिये पूरा नहीं होता अतः भारतसे वहा अरण्डी जाती है। अरण्डीकी खेतीका प्रसार जावा, इण्डोचाइना, आलजीरिया और ब्रैजीलमे भी हुआ है और इन स्थानोंकी अरण्डी भारतकी प्रतियोगिता करनेके लिये विदेशकी बाजारोंमें सदा तैयार रहती है।

१९ वीं शताब्दीके मध्यकाल और अन्तकाल तक भारतसे अरण्डीका तेल ही विदेश भेजा जाता था पर सन् १८८८-९ से तेलका निर्यात् कम होने लगा और अरण्डी अधिक जाने लगी। इसका प्रधान कारण केवल इतना ही है कि कलकत्तेकी मिलोंका तेल विदेशी मिलोंके तेलकी अपेक्षा कम अच्छा होता है। अरण्डीकी सबसे अधिक खपत ब्रूटेनमें होती है। ब्रूटेनमे 'हल' नामक औद्योगिक नगर तेलकी मिलोंका प्रधान केन्द्र माना जाता है। यहीं सब स्थानोंकी अरण्डीको आश्रय मिलता है। इसी नगरसे अरण्डीका तेल जर्मनी, बेलजियम, फ्रांस और इटलीको जाता है। इनका नाम खपतके हिसाबसे क्रमानुसार ऊपर दिया गया है। अरण्डीका तेल मशीनोंमे चिकनाहट बनाये रखनेके काममें लुब्रीकेन्ट आइल (Lubricant) के स्थानमें व्यवहार किया जाता है। चमड़ेके सामानको सूखनेसे बचानेके काममे आता है। युद्धकालमे वायुयानोंकी मशीनोंमे इसका तेल बहुत अधिक कामका सिद्ध हुआ है। इसका साफ और निर्गन्ध तेल औषधिके काममे आता है। प्रसिद्ध लाल तेल (Turkey red-Oil) भी भारत की हो अरण्डीका बनता है। भारत यदि चाहे तो अरण्डीके तेलपर अपना एकाधिपत्य जमा सकता है। अरण्डीकी खली जहरीली होती है अतः पशुओंके कामकी नहीं है पर आलू और गन्नेके लिये तो सर्वश्रेष्ट खाद मानी जाती है। इसकी खलीकी गैस भी वहा बनायी जाती है जहा कोयला कम और मंहगा मिलता है। भारतको चाहिये कि वह अरण्डी न भेज कर अरण्डीका तेल ही विदेश भेजा करे और इस प्रकार खली बचाकर भूमिका नाइट्रोजन उसको पुनः सौंप दे।

नारियलकी गरी—भारतमे नारियल गंगा और ब्रह्मपुत्र नदीकी घाटी तथा कारोमण्डल

और मालावारके समुद्रो तटपर बहुतायतसे उत्पन्न होता है। मालावार किनारेमें तो इतना अधिक नारियल उत्पन्न होता है कि कालीकट और कोचीन नामक बंदरोंसे बहुत बड़े परिमाणमें विदेश भेजा जाता है। कोचीनका नारियलका तेल बहुत प्रसिद्ध है। पर यह तेल जो कोचीनके तेल नामसे प्रख्यात है इसी किनारेसे २०० मील दूरके लङ्का द्वीप समूहसे आता है और यही तेल वास्तवमें उत्तम माना जाता है।

तेलहन मालमें नारियलकी गरीमें सबसे अधिक तेल निकलता है जो नीचेके अंकोंसे स्पष्ट है।

(१) नारियलकी गरीमें	६०	प्रतिशतसे	६५	प्रतिशततक	तेल है।
(२) मूंगफलीमे	४०	„	४५	„	„ „
(३) अलसी सरसों तिलमें	३०	„	३५	„	„ „
(४) बिनौला	१३	„	१८	„	„ „

योरोपमें नारियलका तेल साबुन बनानेके काममें अधिक आता है। फ्रान्सवाले सौन्दर्य्य-वर्द्धक शृंगारकी वस्तुएं और पोमेड आदि इसी तेलसे बनाते हैं। नकली मक्खन बनानेके काममें भी नारियलका तेल व्यवहार किया जाता है। बिस्कुट आदि बनानेके काममें असली मक्खनके स्थानमें योरोपवाले इसी तेलको प्रयोग करना अधिक पसन्द करते हैं। नारियलकी गरी भारत और योरोप दोनों ही स्थानोंमें मिठाईबनानेके काममे आती है। दक्षिण पश्चिम योरोपमें वानस्पतिक चर्बी का व्यवहार बढ़ रहा है अतः इस प्रकारकी चर्बी बनानेके काममें भी यह तेल व्यवहार किया जाता है।

संसारके बाजारोंमें नारियलकी गरी प्रधान रूपसे फिलिपाइन द्वीपपुंज, जावा, लङ्का और भारतसे बिकनेके लिये आती है। भारतसे विदेश जानेवाली नारियलकी गरीके खरीदारोंमें जर्मनी, फ्रान्स, बेलजियम, रूस, ब्रूटेन, तथा हालैंड हैं। इनमें सबसे बड़ा खरीददार जर्मनी है। संसारभरमें सबसे अधिक नारियलकी गरी जर्मनी और फ्रान्स ही खरीदते हैं। यही दो देश भारतकी गरीके लिये भी प्रधान बाजार हैं।

नारियलकी गरीके अतिरिक्त नारियलकी जटा रस्से, नारियलका तेल और नारियलकी खली भी भारत विदेश भेजता है। खेद है कि नारियलका तेल भारतसे विदेश बहुत कम जाने लगा है। यहासे तेलके स्थानमें गरी ही अधिक बाहर जाती है। अतः तेल पेरनेवालोंको चाहिये कि तेल पेरते समय जितनी भी नारियलकी गरी काममें लें वह सब निर्दोष और बेदाग होनी चाहिये और पेरते समय ध्यान रखें कि गरी या तेलपर कूड़ा कचरा और मिट्टी न पड़ने पावे। भारतका सौभाग्य ही है कि नारियलके समान विचित्र पौधा यहा बहुत अधिक होता है। नारियलका अंग प्रत्यंग किसी न किसी काममें अवश्य ही उपयोगमें आता है।

संसारमें तैल मिश्रित वानस्पतिक वस्तुओंकी मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि तेलहन मालकी माग जोरोंसे बढ़ रही है और भारतसे तेलहनका निर्यात भी अधिक परिमाणमें होने लगा है। पर भारतके सम्मुख एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उपस्थित है कि वह तेलहन माल विदेश भेजे या स्वयं अपने स्वदेशी मिलोंमें तेलहन मालसे तेल और खली तैयार करकर विदेशके बाजारोंमें एकाधिपत्य जमानेकी ओर पूर्णरूपसे प्रयत्नशील हो? इस प्रश्नका हितकर उत्तर तो उसकी विवेक बुद्धिपर ही निर्भर है। पर हम तो यही कहेंगे कि स्वदेशकी मिलोंका उपयोग कर भारत अपने कच्चे तेलहन मालको तेल और खलीके रूपमें लाकर विदेशके बाजारपर अपना पूरा प्रभाव जमा अपने प्रतियोगियोंको मुंह तोड़ उत्तर दे।

खाल और चमड़ा

खाल शब्दसे भेंड़ और बकरीके चमड़ेका बोध होता है और चमड़ा शब्द गाय भैंस आदि अन्य पशुओंकी खालका सूचक माना जाता है।

इस व्यापारके प्रधान स्वरुप दो है। एक तो देशके विभिन्न प्रान्तोंके बीच होनेवाला पारस्परिक व्यापार और दूसरा देशसे संसारके अन्य देशोंके साथ होनेवाला अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार है। भारतमें खाल और चमड़ेका प्रान्तीय व्यापार उतने ही महत्व का है जितना कि उसका यह विदेशी व्यापार माना जाता है। अतः भारतमें ही आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार खाल और चमड़ा कमानेका प्रयत्न होना चाहिये। इसके लिये खाल और चमड़ेकी उत्तमता पर सबसे अधिक ध्यान रखना चाहिये। यदि भारतसे उत्तम प्रकारकी खाल और चमड़ा कमाकर विदेश भेजा जाय तो भारतको इस व्यवसायमें आशातीत सफलता मिल सकती है।

भारतसे विदेश जानेवाली खाल और चमड़ेका प्रधान खरीदार संयुक्त राज्य अमेरिका है। अतः अमेरिकाके बाजारमे ही भारतके इस मालकी सबसे अधिक माग रहती है। इसके बाद फिर जर्मनी और फ्रांसके बाजार है जिनमें इस मालकी माग होती है। पर जर्मनीने भारतसे खाल और चमड़ा कच्चे पदार्थके रूपमे मंगाना बंद कर दिया है क्योंकि भारत सरकारने इस पर संरक्षण कर बैठा दिया है अतः मंहगा माल जर्मनी खरीदनेके लिये तैयार नहीं है। यदि कमाया माल भेजा जाय तो वहा उसकी माग बढ़ सकती है। अतः संयुक्त राज्य अमेरिकाके बाद बृटेन और फ्रान्स ही भारतके इस मालके खरीदार माने जाते है।

चावल

साधारणतया भारतके सभी प्रान्तोंमे चावल उत्पन्न होता है पर विशेष रुपसे आसाम, बंगाल, लोअर बर्मा तथा मद्रास प्रान्तमे ही यह पैदा होता है। भारतसे विदेश जानेवाला बंगाली चावल

प्रधानतया लोअर बर्माका ही चावल है। लोअर बर्मासे चावल कलकत्ते आता है जहां वह उसना (Steamed) किया जाता है और फिर वहासे कोलम्बो भेजा जाता है। भारतसे योरोपको भी बहुत बड़े परिमाणमे चावल भेजा जाता है पर वहा वाले इसे खानेके काममे नहीं लाते। वहा इस चावलसे शराब उतारी जाती है।

भारतके चावलको योरोपके बाजारोंमे श्याम और कोचीन चाइनाके चावलसे प्रतियोगिता करनी पडती है। भारतका चावल जनवरीसे जून तक योरोपके बाजारोंमे पहुंचता है और इसी बीच श्याम, कोचीन चाइना तथा जावा प्रभृति देशोंसे चावल योरोप आता है। अतः मालके आधिक्यके कारण बाजारमें भाव गिर जाता है। भारतके व्यापारियोंको चाहिये कि वे धीरे धीरे माल भेजें और जब पूर्वीय देशोंका चावल योरोप जाना बंद हो जाय तब यहासे वे चावल वहा भेजें।

योरोपमें मक्का और आलूसे भी शराब उतारी जाती है अतएव भारतके चावलको इनसे भी मुठभेड़ करनी पड़ती है। भारतका चावल मुख्यतया जर्मनी खरीदता है और उस पर पालिश कर उसे पुनः बेंचता है।

भारतसे बाहर जानेवाले चावलका आधा भाग योरोप जाता है और शेष लंका, जावा, फिलिपाइन द्वीप पुंज, जापान तथा भारतीय प्रवासियोंके क्रीड़ास्थल पूर्व अफ्रीका, मारीशस, केप उपनिवेश, नेटाल तक पहुंचाता है पर कभी कभी तो वेस्ट इण्डीज और दक्षिण चीन तक पहुंचता है। फलतः यही सिद्ध होता है कि संसारमें जहा कहीं चीनी और भारतीय श्रमजीवी जाते हैं वहीं भारतका रंगूनी चावल पहुंचता है।

भारतीय चावलके खरीदारोंमे सीलोन, जर्मनी, हालैंड, अस्ट्रिया हंगरी, स्ट्रेटसेटलमेन्ट, जापान और बृटेन है। यह नामक्रम मांगकी अधिकताके अनुसार है

गेहूं

भारतमें गेहू मुख्यतया पंजाब और संयुक्त प्रान्तमें पैदा होता है। तथा साधारणतया मध्य भारतके देशी राज्यों, बम्बई प्रान्त, और विहार तथा मध्य प्रदेशमें गेहूंकी खेती होती है। पंजाब और संयुक्त प्रान्तके विस्तृत गेहूंके खेतोंकी सिंचाई नहरों द्वारा की जाती है।

भारतसे गेहूं की निकासी सबसे अधिक परिमाणमे मई मासमें होती है। पर साधारणतया अप्रैल और जून मासके बीच विदेश भेजा जाता है। भारतसे विदेश जानेवाले गेहूंमें से ½ गेहूं करांची बंदरसे विदेश भेजा जाता है और शेष बम्बई और कलकत्तेसे रवाना होता है। योरोपमे भारतके गेहूंका प्रधान बाजार बृटेन है। जहां इसे आस्ट्रेलिया और कनाडाके गेहूंके साथ प्रतियोगिता

[illegible] पड़ती है। भारतके गेहूंमें गर्द और कूड़ा अधिक रहता है अतः यहांके गेहूंमें २ प्रतिशत कचरा [illegible] लिया जाता है।

भारतसे बाहर जानेवाले गेहूंका ८० प्रतिशत भाग केवल बृटेन ही अपने खर्चके लिये खरीद [illegible] है। बृटेनको लगभग ६० लाख टन गेहूंकी प्रतिवर्ष आवश्यकता रहती है और भारतमें ६० लाख से [illegible] लाख टन तक गेहूंकी उपज होती है।

गेहूंके बाजारोंमें बृटेन, बेलजियम, फ्रान्स इटली और जर्मनी है। खरीदके परिमाणके अनुसार नाम क्रमसे ऊपर दिया गया है।

चाय

भारतकी चायने संसारके बाजारमें अपना एकाधिपत्य जमा रक्खा है। पर स्वयं भारतमें [illegible] सारा व्यापार अंग्रेजोंकी मुट्ठीमें है। उन्होंने भारत सरकारसे अपने इस व्यापारके लिये [illegible] अन्त तक सभी सुविधायें प्राप्त कर रक्खी हैं। अतः इस व्यापारको भारतीयोंका व्यापार [illegible] मानना उचित नहीं है।

भारतकी चायके खरीदारोंमें बृटेन, रूस, कनाडा, और आस्ट्रेलिया प्रधान है। भारतकी चायको सीलोनकी चायसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है।

काफी

काफीका व्यापार भी भारतमें विदेशियोंके हाथमें है और भारत सरकारसे इस उद्योग [illegible] सब प्रकारकी सुविधा मिली हुई है। भारतसे बाहर जानेवाली काफीको ब्रेजिलकी काफीसे [illegible] करनी पड़ती है। इसके प्रधान खरीदार बृटेन और फ्रान्स हैं। इन्हीं खरीदारोंसे जर्मनी, [illegible] बेल्जियम और संयुक्त राज्य अमेरिका अपनी आवश्यकतानुसार काफी खरीदते हैं।

[illegible]

सूती माल

भारतकी मिलोंमें जितना सूतीमाल तैयार होता है उसमेंसे सूत, कोरा कपड़ा, छींट और रंगीन कपड़ा ही विदेश जाता है।

सूत – इसकी मांग स्वयं भारतमें ही रहती है। भारतसे सूत चीन भी जाया करता था पर वहां जापानका सूत अधिक आने लगा और भारतके लिये प्रतियोगितामें खड़े रहना बड़ा कठिन हो गया अतः इस सम्बन्धमें चीनके बाजारसे भारतके पैर उखड़ गये। अब पूर्वमें स्ट्रेट सेटलमेन्टका बाजार, और पश्चिममें फारसकी खाड़ीके पासका भूभाग, अदन तथा लेवान्तके बाजार ही ऐसे स्थान हैं जहा भारतका सूत जाता है और उसकी वहां मांग भी अच्छी है। भारतके सूतको विदेशोंमें बहुत कम सफलता मिल सकती है। क्योंकि सभी स्थानोंमें उसे भयंकर प्रतियोगिताका सामना करना पड़ता है। लेवान्त और कृष्ण सागरके पासवाले भूभागमें इटलीका सूत भी आता है अतः भारतीय सूतके लिये वहां उसके साथ प्रतियोगिताका प्रश्न उठ खड़ा होता है। मिस्रके बाजारमें उसे बृटेनसे प्रतियोगिता करना पड़ता है। अब कुछ समयसे अमेरिका भी सूतके बाजारमें आया है और वह आगे बढ़ रहा है।

कोरा कपड़ा—भारतके हितकी दृष्टिसे यहांके कोरे कपड़ेके लिये सर्वश्रेष्ठ बाजार स्वयं घरका ही बाजार है। फिर भी बम्बईकी देखरेखमें फारस, फारसकी खाड़ीके बंदरों, अदन, पूर्वीय अफ्रीका के तटवर्ती भूभाग और मारिशसके बाजारोंमें संगठित उद्योग द्वारा भारतकी मिलोंका कोरा कपड़ा बेंचा जा सकता है। इसी प्रकार बृटिश अफ्रीका, फ्रेंच अफ्रीका और जर्मन अफ्रीकाके बाजारोंमें भी इसके बेंचनेका प्रयत्न किया जा सकता है। इस दृष्टि विशेषके अनुसार अदन बंदरने अवश्य ही बम्बईके महत्वको पूरा धक्का दिया है फिर भी बम्बईकी मिलों और उसके बन्दरसे अवश्य ही लाभ उठाया जाता है। भारतके कोरे कपड़ेके लिये पूर्व अफ्रीका, मिस्र, मारिशस, अदन, फारस, फारसकी खाड़ी परके बंदर तथा श्याम आदि स्थान आशाप्रद बाजार माने जाते हैं।

छींट और रंगीन कपड़ा—इस प्रकारका भारतीय मिलोंका बना माल प्रधानतया स्ट्रेट सेटलमेन्टमें अधिक बिकता है। क्योंकि इस बाजारमें इस मालकी अच्छी मांग रहती है। इस बाजारमें ऐसे मालका प्रायः ५० प्रतिशत भाग भारतीय मिलोंका होता है। यह माल प्रायः मद्रासके बंदरसे रवाना होता है। इसके बाद सीलोनके बाजारमें भी भारतके रंगीन कपड़ेकी मांग रहती है। इनके अतिरिक्त फारस, श्याम, पूर्व अफ्रीका, अदन और फारसकी खाड़ीके बंदरोंमे भी भारतके इस मालकी अच्छी मांग रहती है।

उपरोक्त विवेचनसे स्पष्ट है कि कपड़ा और सूतके लिये भारतका बाजार ही पर्याप्त प्रधान क्षेत्र है। पर यहा भी संसारके सबसे जबरदस्त पूंजीपति ब्रूटेनसे प्रतियोगिता उसकी है।

अफीम

अफीमके सम्बन्धको लेकर राष्ट्र संघकी देखरेखमें एक उप-समिति संगठितकी गयी थी और औषधिके लिये जितनी अफीमकी आवश्यकता समझी जाये उसीके अनुसार अफीमकी खेती करानेकी व्यवस्थाकी जाय और अधिक खेती पर कड़ा नियंत्रण रखा जाय आदिउपायोंसे अफीमके व्यवहारको रोकनेकी आयोजना करनेका काम उसे सौंपा गया था। पर इस काममें कमेटीको यथेच्छ सफलता नहीं मिल सकी। कारण कि राष्ट्रोंका पारस्परिक अविश्वास कोई मानवहितकर काम करने नहीं देता।

भारतमे अफीमकी पैदावार मुख्यतया पटना, बनारस, इन्दौर, ग्वालियर, भूपाल तथा मेवाड़में होती है। पटना और बनारसकी ओरके मालको बंगाली अफीम कहते है और शेपको माल्वेकी अफीमके नामसे पुकारते है। सन् १९११ ई० से पटनाके पास अफीमकी खेती बन्द कर दी गयी है। और अब बंगाली अफीम कहलाने वाला माल बनारसहीमें होता है। इस पर सरकारी नियंत्रण उसी प्रकार चला आ रहा है जैसा कि मुसलमान शासकोंने आरम्भ किया था। अफीम तैयार करनेकी सरकारी फैक्ट्री गाजीपुरमे है। जहां तैयार माल बक्सोंमें बंद कर कलकत्ता भेजा जाता है और वहांके बाजारमे सरकार उसे नीलाम करती है। कलकत्तेसे ही यह अफीम विदेश भेजी जाती है।

मालवा अफीम प्रायः देशी राज्योंकी उपज है। भारत सरकारका यह नियंत्रण राज्योंके अन्दर नहीं है पर ज्यों ही यहाकी अफीमके बक्स ब्रुटिश भारतमें प्रवेश करते हैं सरकार १४० रतल वजनी अफीमके बक्स पर ८० पौंडका कर वसूल करलेती है। यह अफीम बम्बई बंदरसे विदेश जाती है। भारतमे जितनी अफीमका खर्च है उससे कहीं अधिक अफीम भारतसे विदेश जाती है।

अफीमका प्रधान खरीदार चीन था पर सन् १९०६ में वहाकी सरकारने अफीमके विरुद्ध आवाज उठायी और १० वर्षके अन्दर उसे बिलकुल रोक देनेके लिये आयोजन तैयार किया। भारत सरकारने भी वहाकी सरकारके प्रति सहानुभूति दिखायी और फल यह हुआ कि सन् १९१३ ई० से चीनके साथ अफीमका व्यापार पूर्ण रूपसे बंद कर दिया गया जिससे मालवाकी अफीमके व्यापारका एक प्रकारसे अन्त हो गया। अब भारतकी अफीमका बाजार स्ट्रेट सेटलमेन्ट है यहींसे पूर्वीय देशोंको अफीम जाती है।

नील

भारतका नीलका व्यापार बहुत पुराना है पर १७ वीं शताब्दीमें योरोप वालोंने भारतसे नील

मंगाना बंद कर दिया और फल यह हुआ कि भारतसे नीलका बाहर जाना बंदसा हो गया। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने नीलके व्यवसायकी ओर ध्यान दिया और सन् १७८० ई० और १८०२ ई० के बीच नीलका व्यापार पुनः चमक उठा और इसके साथ ही नीलकी खेती और उसके व्यवसायका केन्द्र बंगालके स्थानमे विहार बन गया। पर सन् १८९७ ई० में जर्मन वैज्ञानिकोंने रासायनिक उपायोंसे नीलका प्रतिउपयोगी पदार्थ तैयार कर लिया और इस प्रकार भारतके नीलके व्यवसायको सदाके लिये प्राणघातक धक्का पहुंचा। भारत सरकारके सारे प्रयत्न विफल हो गये थे पर योरोपीय महासमरने इस व्यवसायमें पुनः नवीन जीवनका संचार कर दिया और इसी लिये यह आज भी जीवित है। इसके बाजार पहले बृटेन, आस्ट्रिया हंगरी, फ्रान्स, रूस, मिस्र, संयुक्त राज्य अमेरिका, टर्की, फारस और जापान थे।

लाख और चपड़ा

लाखका व्यापार भी भारतके पुराने व्यापारमे से है। इस व्यापारमें भी भारतका एकाधिपत्य है। इसके प्रतिउपयोगी पदार्थको खोज निकालनेमें संसारके मस्तिष्कने कुछ उठा नहीं रक्खा पर प्रकृति प्रदत्त गुणोंका एक पदार्थमें समिश्रण करना सम्भव नहीं हो सका। कलकत्ता और मिर्जापुरमें लाखके कितने ही कारखाने हैं जहां चपड़ा तैयार होता है। आसाम, बंगाल, और बर्माके जंगलोंमे इकट्ठी की गयी लाख कलकत्तेके कारखानोंमें गलाई जाती है और इससे चपड़ा बना कर कलकत्तेके ही बंदरसे विदेशको भेजते हैं। मध्य प्रदेश, विहार उड़ीसा और यू० पी० की लाख मिर्जापुर और कोटाके कारखानोंमें गलाई जाती है और वहीं उससे चपड़ा तैयार किया जाता है। संसारमें लाख और चपड़ेके प्रधान बाजार संयुक्त राज्य अमेरिका, बृटेन, और जर्मनी माने जाते है। इन बाजारोंमें इसकी बड़ी मांग रहती है। इससे वहांके कारखाने फ्रेंच पालिशके समान श्रेष्ट वार्निश, ग्रामोफोन रेकार्ड, लीथोकी स्याही तथा बिजलीका सामान तैयार करते हैं। भारतको चाहिये कि वह अपने निर्यातपर पूरा ध्यान दे और अच्छेसे अच्छे ढंगसे उत्तम माल विदेशके उपयुक्त बाजारोंमें भेजे।

भारत और संसारके अन्य देशोंके साथ उसका व्यापारिक सम्बन्ध

यों तो संसारके सभी देशोंसे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध जुड़ चुका है पर इनमें केवल ६ ही ऐसे देश हैं कि जिनसे भारतका गहरा व्यापारिक सम्बन्ध है। ये ही संसारके वे प्रधान बाजार हैं जिनमें भारतके कच्चे मालकी यथेष्ट परिमाणमें बिक्री होती है और साथ ही उस कच्चे मालके मूल्यके

विनिमयमें उन देशोंके औद्योगिक केन्द्रों में तैयार किया गया माल भी वैसे ही पर्याप्त परिमाणमें यहां आता है। इनके नाम क्रमशः बृटेन, जर्मनी, जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, चीन, बेलजियम, इटली और आस्ट्रिया हंगरी अर्थात् वर्तमान जूगोस्लाविया आदि है। अतः इन्हीं ६ प्रधान देशोंके सम्बन्धकी हम यहां चर्चा करेंगे।

भारत और बृटेन

व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे संसार भरमें केवल भारत ही एक ऐसा अनोखा बाजार है जिसमें एक महाजन समस्त बाजारपर अपना एकाधिपत्य जमाये बैठा है। यह पूंजीपति स्वयं बृटेन है जिस की हथेलीमें भारतके समस्त आयात व्यापारको 'बदर समान' ही मानना चाहिये। बृटेनके प्रभावशाली औद्योगिक केन्द्रोंके तैयार मालका भारत सबसे बड़ा बाजार है, जहां वहांके कारखानोंका तैयार माल आकर बिकता है। भारत आज सर्वरूपेण परतंत्र है अतः बृटेन राजनैतिक अनुकूलताके कारण भारतके बाजारमें अन्य देशोंके मालकी अपेक्षा अधिक सुविधाके साथ अपने मालको बेंचता है। यही एक सबसे अधिक दृढ़ कारण है कि बृटेन आज संसारमें इतना ऊंचा स्थान प्राप्त कर सका है। भारत कच्चे मालका घर है अतः यहांका कच्चामाल सरलतासे कौड़ीके मोल बृटेनके कारखानोंमें पहुंचाया जाता है और वहांसे तैयार मालके रूपमें पुनः भारतके बाजारमें वही माल रुपयेके मोल बिकनेके लिये आता है। इस प्रकार राजनैतिक वर्चस्वके कारण भारतके कच्चे मालसे कौड़ीका रुपया बनाया जाता है।

राजनैतिक बागडोर हाथमें लिये हुए बृटेन भारतके बाजारमें सब प्रकारकी औद्योगिक एवं व्यापारिक सुविधायें काममें ला रहा है।

व्यापारिक सुविधाओंमें प्रथम श्रेणीकी मानी जानेवाली रेल सम्बन्धी सुविधापर उसका पूरा अधिकार है। भारतकी रेलवे कम्पनियोंका संचालन बृटिश मंत्रणाके अनुसार बृटिश पूंजीपति कर रहे हैं। ये कम्पनियां बृटेनके हित साधनमें निमग्न हो भारतमें कामकर रही है। भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहांसे बहुत बड़े परिमाणमें कच्चा माल बाहर भेजा जाता है। बृटेन जलयान संचालन उद्योगमें सबसे आगे माना जाता है अतः भारतका समस्त कच्चामाल इसीके जहाजोंपर दूसरे देशोंको भेजा जाता है। इस प्रकार रेलवे कम्पनियोंकी भांति ही बृटिश जहाजी कम्पनियां भी भारतकी जेबपर पल रही है। इतना ही नहीं भारतकी सभी प्रधान बैंकों और ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंमें बहुत बड़ी बृटिश पूंजी लगी हुई है इसका परिणाम यह हुआ है कि भारतके आयात और निर्यात व्यापारपर बृटिश पूंजीका एकाधिपत्यसा जम गया है। बृटेनके बड़े बड़े पूंजीपतियोंने भारतमें बड़ी बड़ी पूंजी लगाकर व्यापारकी फर्में खोल रक्खी हैं। और यहांका सारा व्यापार अपनी मुट्ठीमें कर रक्खा है।

बृटेनसे भारतमें सूती, कपड़ा, सूत, शक्कर, लोहा, फौलाद, मशीनरी, औषधियाँ, रासायनिक द्रव्य, रेशम, रेशमी माल, तेल, हार्डवेर, शराब, कागज, कागजके तख्ते, नमक, मोटर, साइकल, तथा रेलवेका सामान आदि कितनी ही प्रकारकी वस्तुएँ आती हैं।

भारतसे बृटेन जानेवाले मालमें चावल, गेहूं, रुई, अलसी, विनौला, अगण्डी, कमोयी खाल, कमाया चमड़ा, जूट, जूटका माल, चाय, चपड़ा और अभ्रक आदि मुख्य हैं।

भारत और जर्मनी

योरोपीय महासमरके विभिन्न कारणोंमें जर्मनीकी व्यापारिक उन्नति भी अपना एक विशेष स्थान रखती है। भारतके बाजारमें जर्मनीको जो व्यापारिक सफलता मिली वही उसके प्रति अन्य प्रभावशाली राष्ट्रोंको उकसाकर रणस्थलमें उतारनेके लिये प्रधान कारण बनी। महासमरके पूर्व जर्मन मालने भारतके बाजारमें ऐसा प्रभाव डाल रक्खा था कि सभी राष्ट्र अपना अपना माल लिये बाजारमें हाथपर हाथ रख बैठसे गये थे। विदेशी व्यापारकी दृष्टिसे भारतके बाजारमें राजनैतिक सुविधा सम्पन्न बृटेनके बाद जर्मनीका ही स्थान माना जाता था। ऐसी दशामें जर्मनीके इस बढ़े-चढ़े हुए व्यापारके प्रसारका प्रधान रहस्य जानना भी अवश्य ही शिक्षाप्रद है। अतः यहांपर हम इस पार्श्व विशेष पर प्रकाश डालना चाहते हैं।

भारतके व्यापारिक क्षेत्रमे जर्मनीने स्वयं ही प्रवेश किया और इस कार्यमे वहाकी राष्ट्रीय सरकारने बहुत बड़ी सहाय प्रदानकर उसके सत् साहसको प्रोत्साहित किया। जर्मनीने भारतके व्यापारिक क्षेत्रमें प्रवेश करते ही उसके और भारतके विभिन्न बंदरोंके बीच नियमित रुपसे चलने वाली जलयान कम्पनियोंका सुदृढ़ संगठन किया और इस प्रकार जर्मन जहाजी कम्पनियोंकी शाखायें भारतके औद्योगिक केन्द्रोंसे सम्बन्ध रखनेवाले समुद्रतटवर्ती बन्दरोंमें स्थापित हुईं। इसके बाद ही जर्मन बैंकों (Deuts-che Asiatische.) की स्थापना भी उसने भारतमें की और इस प्रकार प्रारम्भिक प्रवन्ध कर उसने बम्बई कलकत्तेके समान भारतके प्रधान केन्द्रोंमें अपनी कम्पनियाँ खोलीं। इन कम्पनियोंका काम जर्मन कारखानोंके तैयार मालको बेचना और उनके लिये भारतका कच्चा माल खरीदना मुख्य रूपसे रहा। इस प्रकारका व्यापारिक संगठन कर जर्मनीने भारतके बाजारपर अधिकार जमाया और अपने सभी प्रतियोगियोंको उन्नतिके विस्तृत मैदानमें बहुत पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया।

भारतकी उपजमेंसे नीचे लिखे हुए पदार्थ जर्मनी जाते हैं -

जूट, रूई, चावल, कमाया चमड़ा, तेलहन माल, जैसे तीसी, सरसों, लाही, नारियलकी गरी आदि। युद्धके पूर्व कच्चा चमड़ा भारतसे जर्मनी अधिक परिमाणमें भेजा जाता था पर अब बिल्कुल

बन्द है। इसका कारण प्रथम तो यह है कि भारतमें चमड़ा कमानेके अच्छे कारखाने खुल गये हैं अतः चमड़ा यहीं कमाया जाता है और दूसरा कारण यह है कि कच्चे चमड़ेपर एक प्रकारका निर्यातकर भारत सरकारने लगा रखा है। बृटिश साम्राज्यसे बाहर होनेके कारण जर्मनी कर लगे हुए चमड़ेको खरीदनेमें आगे नहीं आना चाहता है। जर्मनीसे भारत आनेवाले मालोंमेंसे कितना ही ऐसा माल है जो भारतके बाजारमें अपने प्रतियोगियोंको आश्चर्य चकित कर देता है। उनमेंसे कुछ इस प्रकार हैं। कटलरी, जैसे कैंची उस्तरे चाकू, कांचका सामान, मिट्टीके बर्त्तन, वैज्ञानिक तथा डाक्टरी औजार, रासायनिक पदार्थ, रंग आदि।

जर्मनीके मालकी विशेषताओंमें उसका सुडौलपन, दीर्घकालीन टिकाऊपन और उसपर भी उसका सस्तापन आदि प्रधान है। इन्हीं गुण विशेषके कारण जर्मनीका माल भारतमें लोकप्रिय हो गया है। यह तो हुआ भारत और जर्मनीका व्यापारिक सम्बन्ध पर इसी प्रसंगमें हम जर्मनीकी अन्य बातोंको भी दे रहे हैं क्योंकि उनका सम्बन्ध भारतके व्यापारसे बहुत निकटतम है।

जर्मनीकी उपज

गेहूं, ओट, राई और जौ प्रायः सभी भागोंमें उत्पन्न होते हैं। जर्मनीके पूर्वीय भागमें आलू बहुत अधिक उत्पन्न होता है। यह खानेके उपयोगमें तो आता ही है पर उससे कितनी ही अन्य वस्तुयें भी वहांके कारखाने तैयार करते हैं और साथ ही यह शराब चुआनेके काममें भी आता है। राइनकी घाटी शराबके लिये प्रसिद्ध है। इनके अतिरिक्त जर्मनीमें हेम्प नामक सनकी जातिका एक पौधा होता है। तम्बाकूकी खेती भी यहा खूब होती है। जर्मनीके खनिज पदार्थोंमें कोयला, लोहा, जस्ता, तांबा, सीसा, चाँदी, आदि प्रधान हैं। फिर भी यहा चाँदी, सीसा और जस्ता योरोपके अन्य देशोंकी अपेक्षा अधिक परिमाणमें निकाला जाता है। सीसा और जस्ता जर्मनीके सालेशिया प्रान्तमें, तांबा मान्स फील्डमें, तथा चाँदी सैक्सनीमें निकलती है। जर्मनीमें बहुत बड़े जंगल है जिनमें उत्तम प्रकारकी लकड़ी निकलती है। वहाकी सरकार इनकी यत्नपूर्वक रक्षा करती है।

जर्मनीके उद्योग धन्धे

यहाका उद्योग धन्धा उच्च श्रेणीका है। यहा सूती, ऊनी और रेशमी कपड़ा तैयार होता है। लोहा और फौलादका सामान बनाया जाता है। कांच और चीनी मिट्टीके बर्तन तथा दूसरे सामान बहुत अच्छे बनते हैं। यहा शक्कर और शराब भी बहुत बड़े परिमाणमें तैयार की जाती है। लोहा और फौलादका सामान पूर्वीय प्रशियामें, और मुख्यतया एसेन (Essen) नगरमें बनता है। कपड़ेके बड़े बड़े मिल बर्मेन, और इबर्फेल्ड (Barmen & Eber feld) मे है। पर मुख्यता रेशमी और ऊनी माल तैयार करनेकी मिलें बर्मेन (Bermen) में है। रेशम और मखमल क्रेफेल्ड (Krefeld)

नामक स्थानका बहुत प्रसिद्ध है। जर्मनीमें रूईका सबसे बड़ा और प्रसिद्ध बाजार ब्रेमेन (Bremen) माना जाता है। वहांपर आज भी हाथके करघों पर कपड़ा बहुत अधिक बुना जाता है। जर्मनीके ब्लैक फौरेस्ट नामक स्थानमें घड़ियाँ, मेईसेन (Meissen) में चीनीके बर्तन, और बर्लिनमें पियानों बाजे बहुत उत्तम बनते हैं।

जर्मनीके प्रधान बंदर हैम्बर्ग और ब्रेमेन (Bremen) हैं। इन बंदरोंसे जर्मनीके कारखानोंका तैयार माल विदेश जाता है और अन्य देशोंका माल इन्हीं बंदरोंपर आकर उतरता है। जर्मनीका व्यापारिक सम्बन्ध भारतके अतिरिक्त दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका, पूर्वीय एशिया, तथा प्रशान्त महासागर स्थित द्वीप समूहसे भी है।

जर्मनीकी व्यापारिक नीति

जर्मनीके औद्योगिक उत्कर्षको वहांके खनिज वैभव, रेलवे लाइनों, जहाजी और बीमा कम्पनियों तथा बैंकों आदि राष्ट्रीय संस्थाओंसे तो सहाय मिली ही है पर सबसे अधिक प्रोत्साहन वहांकी राष्ट्रीय सरकारने अपनी अनुकरणीय नीतिसे दिया है। जर्मनीमें औद्योगिक शिक्षाका प्रबन्ध यथेष्ट है जिसके कारण रासायनिक सिद्धान्तोंका औद्योगिक क्षेत्रमें व्यवहारिक प्रयोग किया जा सकता है। फलतः जर्मनीकी व्यापारिक नीति प्रोत्साहन और संरक्षणकी प्रतिमूर्त्तिसी बन गयी है जिसे वहाकी सरकार वात्सल्य जनित स्नेह भावसे चला रही है। ऐसी दशामें भारत यदि जर्मनीसे संघनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित न कर सका और पारस्परिक लाभका उपभोग न कर सका तो वास्तवमे यह भारतकी बहुत बड़ी भूल मानी जायेगी।

जर्मनीके प्रधान औद्योगिक नगर

बर्लिन,—यहा छपायीका काम बहुत अच्छा होता है। इसके सिवा यहां इञ्जिन, रेलवेका सभी प्रकारका सामान, सीनेकी मशीनें, पीतलके बर्तन और रासायनिक द्रव्य भी बनते है।

हैम्बर्ग—यह जर्मनीका संसार प्रसिद्ध बंदर है। इसी बंदरपर बृटेनसे लोहा, कोयला, ब्रेजिलसे काफी, चिलीसे कच्चे खनिज रासायनिक पदार्थ; पेरुसे अनाज, और संयुक्त राज्य अमेरिकासे पेट्रोल, आदि लाकर उतारे जाते है जो यहींसे जर्मनीके सभी स्थानोंको भेजे जाते है। इसी बंदरसे जर्मनीके कलकारखानोंमें तैयार होनेवाला सभी प्रकारका सामान विदेश भेजा जाता है। यहा धातुके बर्तन और चमड़ेका सामान तैयार करनेके बड़े २ कारखाने है।

म्यूनिच—यह भी जर्मनीका प्रसिद्ध औद्योगिक केन्द्र है। यहा सभी प्रकारकी रंग साजी और मुख्यतया कांचपर बहुत अच्छा काम होता है। ढ़लाईका काम, लकड़ीकी खराद और नकाशीका काम भी यहां उत्तम बनता है। बवेरियाकी प्रसिद्ध शराबका यही प्रधान केन्द्र है।

लिपझिक—यहा प्रतिवर्ष संसार प्रसिद्ध तीन औद्योगिक मेले लगते हैं। जहा संसारके सभी महत्वपूर्ण केन्द्रोंके व्यापारी और कलाकौशल प्रवीण लोग हजारोंकी संख्यामें आ आकर भाग लेते हैं। यहां किताबोंका काम बहुत बड़ा व्यापार होता है। प्रेस सम्बन्धी सभी प्रकारका माल तैयार होता है। बाजे और वैज्ञानिक समान बहुत बड़े परिमाणमें तैयार होता है।

भारत और जापान

इन दोनों देशोंके बीच व्यापारिक मेल-जोल १९ वीं शताब्दीके अन्तिम कालसे बढ़ना आरम्भ हुआ था। पर रूस जापान युद्धके बादसे विजयी जापानने भारतसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करनेकी ओर विशेष ध्यान दिया और जर्मनीकी व्यापारिक नीतिका अनुकरण कर भारत और जापानके बीच राष्ट्रीय सरकारकी सराहनीय सहायसे जापानी जहाजी सर्विस स्थापित की। इसप्रकार दोनों देशोंके बन्दरोंका नियमित रूपसे सम्बन्ध जोड़, जापानने व्यापारिक संगठनकी ओर अपना दृष्टिकोण डाला। फलतः थोड़े ही समयमें भारतके प्रधान व्यवसायी केन्द्रों और बंदरोंमें जापानने अपनी बैंक, बीमा कम्पनियां और बड़ी बडी फर्में खोल दीं। इन जापानी फर्मोंकी शाखायें देशके विभिन्न नगरोंमें फैल गयीं। जापानने अपनी भारतवाली फर्मों द्वारा जापानके कारखानोंका तैयार माल बेचनेका सुप्रबन्ध किया और अपने कारखानोंके लिये आवश्यक कच्चा माल खरीदनेका काम भी इन्हींसे कराने लगा। फलतः जापानने भारतमें अपना व्यापार सुदृढ़ जमा लिया और शान्तिके साथ उन्नति करता गया। कि इसी बीच योरोपीय महासमर छिड़ गया और अनायासही जापानको सुअवसर मिल गया। जापानकी राष्ट्रीय सरकारने वात्सल्य भावसे जापानको व्यवसायिक प्रोत्साहन दिया और कलकत्ता बम्बईकी जापानी बैंकोंने जापानके राष्ट्र हितको सम्मुख रख कर ही जापानी कम्पनियोंको अच्छी सहायता दी। भारतस्थित जापानी फर्मोंने भी पूरी सहायता पहुंचायी।

भारतीय व्यापारमें जापानका स्थान कच्चा माल खरीदनेवालोंमें बहुत बड़ा है। पर तैयार माल बेचनेवालोंमें इसका वह स्थान नहीं है जो बृटेन, जर्मनीका माना जाता है। जापान भारतसे चावल और रुई बहुत बड़े परिमाणमें खरीदता है और इनके विनिमय स्वरूप रेशम, रेशमी माल, सूती बनियान, मोजे, खिलौने, रंग, वार्निश, कागज, और कपूर तथा काचका सामान भारत भेजता है।

जापानी उद्यम

जापान एक द्वीप समूह है जो एशियाके पूर्वीय किनारेकी ओर समुद्रमें फैला हुआ है। सन् १९१० ई० की संधिके अनुसार कोरिया नामक देश भी इसी साम्राज्यान्तर्गत माना जाता है। जापानका मुख्य खाद्य प्रधानरूपमें चावल माना जाता है और गेहूंका उपयोग यहां बहुत ही

कम होता है। यहा नील और तम्बाकूकी खेती अधिक होती है। पर चाय, गन्ना और शहतूतकी खेती भी कुछ कम नहीं होती है। जापानके विस्तृत जंगलोंमें मूल्यवान लकड़ी उत्पन्न होती है। जापान सरकार यत्नपूर्वक जंगलोंका संरक्षण करती है। जापानकी खानोंमे तांबा और चाँदी ही अधिक निकलती है। वहां कोयला, लोहा और गन्धककी खाने भी बहुत है।

जापानका उद्योग धन्धा

जापानने उद्योग धन्धमें अच्छी सफलता प्राप्त करली है। वहाकी सरकार आत्मरक्षाकी नीतिको काममें लारही है अतः सैनिक आवश्यकता पूर्तिके लिये स्वतन्त्र रूपसे अपना काम चलाने की ओर उसका पूरा ध्यान है। यही कारण है कि प्रचुर धन व्यय कर उसने लोहे और फौलादके कारखाने स्थापित किये है। जापानमे कागज, कांच और सीमेन्ट बनानेके कितने ही बहुत बड़े कारखाने हैं जहा बहुत बड़े परिमाणमें उक्त सामान तैयार होता है। वहा दियासलाईके भी कितने ही कारखाने हैं और यही कारण है कि जापान दियासलाईके व्यापारमें बहुत आगे बढ़ा हुआ है। वहा कपड़ेकी मिलें, रंग और सभी प्रकारकी वार्निश तैयार करनेके कारखाने भी है। वहा चीनी मिट्टीके वर्तन और कपूर भी तैयार होता है। वहां उद्योग धन्धेकी सुविधाके लिये रेलवे लाइनोंका जाल-सा फैला हुआ है। वहाकी नदियों और नहरोंके द्वारा माल एक स्थानसे दूसरे स्थानको भेजा जाता है। जापानके सभी औद्योगिक केन्द्रोंको रेलवे लाइनोंसे जोड़ा गया है और उनका सीधा सम्बन्ध समुद्र-तटवर्ती बन्दरोंसे स्थापित कर दिया गया है।

जापानकी व्यापारिक नीति

आधुनिक युगके कटु अनुभवने स्पष्ट रूपसे सिद्ध कर दिया है संसारमें कि भीषण रक्तपात-का कारण व्यापारिक प्रतियोगिता हुआ करती है। अतः अपने विस्तृत व्यापार वाणिज्यकी रक्षाके लिये सभी राष्ट्र सदैव सतर्क रहते हैं। जापान भी इस सत्यका अपवाद नहीं है इसीलिये वह भी सामरिक शक्ति संचय करनेमें लगा हुआ है।

योरोपीय महासमरके समय जापानने अनुमानतया ७०००००० पोण्ड अर्थात् १०,५०,००,०००) रु० के लगभग बचत कर संग्रह किये है। अतः वह अपने व्यापारको सुदृढ़ करने, फैलाने और रक्षा करनेके लिये उक्त रकम भी लगा सकता है। युद्धके समय सैन्यके लिये गोला बारुद और भोजनकी आवश्यकता होती है यही कारण है कि उसने लोहा और फौलाद तैयार करनेके लिये बहुत बड़े बड़े कारखाने खोले हैं। खाद्य सामग्री जुटानेके उद्देश्यसे कोरिया और फार्मोसा द्वीपमें वह धानकी बहुत बड़ी खेती करने लगा है। इस प्रकार आवश्यकताके समय वह बिना किसीपर आश्रित रहे ही अपनी समस्या सुलझा सकनेमे सफल मनोरथ होगा।

जापान अपने देशमे और चीनके अधिकाश भूभागमें कल-कारखाने बढ़ाता जा रहा है। परिणाम यह हुआ है कि चीनकी वर्तमान मिलोंमें ½ मिलें जापानकी हो गयी है। जापान अपने औद्योगिक विकासको ही अपना एकमात्र लक्ष्य माने हुए है अतः वह उद्योग धन्धोंके उत्कर्ष की ओर पूरी शक्तिसे काम कर रहा है। वहाकी बडी बड़ी फर्में भारत और चीनमें कच्चे मालकी पारस्परिक खरीद विक्रीमें लगी हुई हैं।

जापानका दूसरे देशोंसे व्यापार

जापानका प्रधानतया व्यापार संयुक्तराज्य अमेरिका, चीन, ग्रेट ब्रूटेन, भारत और फ्रांससे है। वह उपरोक्त देशोंको रेशम, रेशमी माल, सुती कपड़ा, तांबा, चाय, चटाई, कपूर, चीनी मिट्टीके बर्तन आदि भेजता है और दूसरे देशोंसे रुई, कपड़ा, लोहा, फौलाद, चावल, खली, ऊन, ऊनी कपड़े शक्कर, पेट्रोलियम आदि मंगाता है। अमेरिका सबसे अधिक माल जापानसे ही खरीदता है और साथ ही अपने यहाका सबसे अधिक माल भी जापानको ही बेंचता है। बूटेन जापानसे रेशमी माल मंगाता है और उसके विनिमयमे मशीनरी वहा भेजता है। भारतसे रुई जापान बहुत अधिक जाती है पर उसका कपडा तैयार होकर बहुत कम परिमाणमें भारत आता है। पर सूत कातकर जापान चीनके बाजारमें भारतके सूतसे प्रतियोगिता करता है।

भारत और संयुक्तराज्य अमेरिका

सयुक्तराज्य अमेरिकाने जर्मनी या जापानकी भांति भारतसे व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करनेका प्रयत्न योरोपीय महासमरके पूर्व कभी नहीं किया था। उसका उद्देश्य कभी भी भारतमें व्यापारिक अड्डा जमानेका नहीं था। अतः भारत और अमेरिकाके बीच व्यापारिक सम्बन्ध स्थापनमें व्यापारिक प्रतियोगिताको लक्ष्यमें लाकर उसने अपना हाथ कभी नहीं डाला। फिर भी उसका व्यापारिक सम्बन्ध भारतसे अधिक गहरा होता जारहा है और यदि वर्तमान प्रगति अधिक समय तक स्थायी रही तो सम्भव है कि आगे चल कर अमेरिकाकी व्यापारिक प्रतियोगिता दूसरे देशोंकी आंखका कांटा बन जाय और संसारमे नवीन समरकी भेरी बज उठे। भारतीय बाजार संसारके सभी औद्योगिक राष्ट्रोंको आकर्षित कर रहा है अतः अपने अपने स्वार्थ साधनमें सभी रत देखे जाते हैं।

योरोपीय महासमरके पूर्व संयुक्त राज्य अमेरिकाका व्यापारिक सम्बन्ध सीधा भारतसे न था उस समय आयात निर्यात सम्बन्धी सभी प्रकारके व्यापारका प्रधान क्षेत्र उसके लिये लन्दनका बाजार ही था। लन्दनके बाजारसे ही अमेरिका अपना व्यापार भारतसे करता था। पर योरोपीय महासमरके अनुभवने अमेरिकाकी नीतिमें भारी परिवर्तन कर दिया और युद्धके बाद ही अमेरिकाने भारतसे व्यापार शुरू किया फलतः भारतके साथ सीधा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित करनेके लिये उसने आव-

श्यक व्यापार संगठन करना आरम्भ कर दिया तो भी उसका एक मात्र उद्देश्य अमेरिकन कारखानोंके मालकी खपतके सम्बन्धमें भारतीय बाजारका अध्ययन करना था। अमेरिकन कारखानोंके बने मालकी खपत भारतमें कैसे की जाय यह बात भी जाननेके लिये वह प्रयत्नशील है पर भारतके कच्चे मालको अमेरिकन कारखानोंके लिये खरीदनेका उसने कभी भी विचार नहीं किया।

संयुक्त राज्य अमेरिकाकी उपज

यहांकी प्रधान उपज रुई है तथा दूसरा स्थान मक्काका है और इसके बाद तम्बाकू और आलूका नम्बर आता है। यहाके पालतू जानवरोंमें भेड़ और सुअर प्रधान हैं। इनके ऊन और मांसका व्यापार अमेरिका करता है। यहांके खनिज पदार्थोंमें लोहा, ताम्बा, सोना, चांदी और मिट्टीका तेल प्रधान हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके उद्योग धन्धे।

यहांके औद्योगिक विकासको व्यवहारिक विज्ञानसे बहुत अधिक सफलता मिली है। मशीनरी और बिजलीके सामानमें यह देश बहुत आगे बढ़ा हुआ है। मोटरके कारबारमें भी यह देश बहुत आगे बढ़ा हुआ है और अपना विशेष स्थान रखता है। यहाके प्रधान औद्योगिक केन्द्र न्यूयार्क, ओहियो, मीचीगान और न्यू जर्सी नामक स्थान हैं। जहां बिजलीके बड़े बड़े कारखाने, कपड़ेकी मिलें, रेशम और ऊनकी फैक्ट्रियां हैं। यहांके कारखाने मांस, चमड़ा, चर्बी, रबर और रबरका सामान, तम्बाकू और सिगरेट, मोटर, आदि भी तैयार करते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिकाका आयात् और निर्यात्।

संयुक्त राज्य अमेरिका अपने यहांके कारखानोंका तैयार माल जैसे बिजलीका सामान, मशीनरी, चमड़ेका सामान, रबरका सामान, तम्बाकूकी सिगरेट, सूती, रेशमी तथा ऊनी कपड़ा, फौलाद आदि विदेश भेजता है। यहांकी उपजका अधिकांश भाग जैसे रुई, कोयला, लोहा, मिट्टीका तेल, तांबा आदि भी बाहर भेजा जाता है। और दूसरे देशोंसे कच्चा चमड़ा, कच्ची खाल, कोको, काफी, चाय, गन्ना, रबर, तेलहन माल, आदि मंगाये जाते हैं।

भारतसे जूट और कच्ची खाल तथा कच्चा चमड़ा अमेरिका जाता है। जूटमें भी गनी क्लाथ अर्थात् हैसियन ही अधिक जाता है शेष जूट और बोरे कम परिमाणमें अमेरिका जाते हैं। चपड़ा, मैंगनीज और बिनौला यहासे अमेरिका जाते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके प्रधान औद्योगिक नगर।

न्यूयार्क—यहां कपड़ेकी मिलें हैं। छपाई और बेल बूटेका काम अच्छा होता है। यहा सिगरेटके भी अच्छे कारखाने है।

शिकागो—यहा बिजलीका सामान, मशीनरी, धातुका ढला हुआ सामान आदि तैयार होते हैं।

फिलाडल्फिया—यहा कपडे की बड़ी बड़ी मिलें हैं। बिजलीका सामान और मशीनरी भी तैयार होती है।

सेन्ट लुइस—यहा मोटरें, जूता और चमड़े का सामान तैयार करनेके बड़े २ कारखाने हैं।

बाल्टीमोर—यहा तांबेकी ढलाईका काम, मिट्टीके तेलके साफ करनेका काम तथा टीनका माल तैयार होता है।

बोस्टन—जूते, कटलरी, धारदार हथियार, मशीनरी आदि तैयार करनेके कारखाने है।

पिट्सबर्ग—लोहा, फौलादऔर मशीनरी तैयार करनेके कारखाने हैं।

सान फ्रान्सिस्को—यह बहुत बडा बन्दर है एशियाके विभिन्न देशोंका माल यहीं आकर उतरता है और रेलके मार्गसे अमेरिकाके विभिन्न औद्योगिक केन्द्रोंको जाता है। इसी प्रकार अमेरिकाके कारखानोंका बना माल इसी बन्दरसे एशियाके अन्य केन्द्रोंको भेजा जाता है।

संयुक्त राज्य अमेरिकाके प्रधान बन्दर न्यूयार्क और सानफ्रान्सिस्को है।

भारत और फ्रांस

भारतका व्यापारिक सम्बन्ध फ्रासके साथ उतना ही पुराना है जितना कि उसका बृटेनसे है। पर जहा बृटेनका व्यापारिक सम्बन्ध उसके साथ आरम्भसे आजतक शृङ्खलाबद्ध रूपसे चला आ रहा है वहा फ्रासका व्यापारिक सम्बन्ध टीपू सुलतानके अन्तके साथ ही सन् १७९९ ई० में एकाएक टूट गया। हा उसका थोडासा व्यापारिक सम्बन्ध फिर भी भारतके साथ बना रहा पर यह भी बृटेनकी मारफत ही रहा। लन्दनके बाजारमे ही फ्रास भारतका माल खरीदता और भारतके हाथ वहीं अपना माल भी बेचता रहा। इस प्रकारकी व्यवस्था योरोपीय महासमरके पूर्वतक विशेष रूपसे रही पर इसके बाद बृटेनसे मैत्री हो जानेके कारण फ्रासने भारतके साथ अपना गहरा व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित किया जो आज भी उन्नति कर रहा है। भारतसे मुख्यतया तेलहन माल, जूट, [illegible] और [illegible] अधिक परिमाणमे फ्रांस जाती है। तेलहन मालमें अधिकाश भाग मूंगफली और [illegible] रहता है और अवशेष भागमे तिल, सरसों, लाही और बिनौला होते है। गेहूं और [illegible] भी भारतसे कुछ थोड़ेमे परिमाणमे फ्रान्स जाते हैं।

फ्रान्समें उपज

[illegible] सबसे ज्यादा खेती होती है और इसके बाद आलूकी खेतीका नम्बर आता है। [illegible] और अंगूर भी पैदा होते हैं। [illegible] और संतरेके अच्छे बगीचोंकी भी फ्रान्समें कमी नहीं है।

फ्रांसके उद्योग धन्धे

फ्रांसमें रेशमके कीड़े पालनेका बहुत बड़ा काम होता है। रेशमके कपड़े की यहां बहुत बड़ी बड़ी मिलें हैं। शराब तैयार करनेके भी अच्छे कारखाने हैं। सभी प्रकारकी आमोद प्रमोदकी वस्तुएं बनानेका उद्योग धन्धा यहा ऊंची श्रेणीका है।

फ्रान्सके प्रधान औद्योगिक नगर

पेरिस—यहा जेवर, सोने चाँदी अर्थात् गंगा जमुनी काम ऊंचे दर्जेका तैयार होता है। सभी प्रकारका ललित कला सम्बन्धी काम यहा बनता है। इस नगरका संसार प्रसिद्ध शेयर बाजार Stock Exchange महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थान माना जाता है।

लियान्स—यह नगर संसार भरमें सर्वश्रेष्ठ रेशमी माल तैयार करनेका केन्द्र माना जाता है। यहाका साटन, मखमल तथा रिबन (फीता) संसारमें अद्वितीय माने जाते हैं। यहांके कारखानोंके लिये इटली और चीनसे रेशम खरीदकर मंगाया जाता है।

मार्सेलीज—यह संसारका महत्वपूर्ण प्रभावशाली बंदर है। भूमध्यसागरमें इस बंदरका स्थान सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यहा लोहा गलाने, साबुन बनाने, शकर तैयार करनेके बड़े बड़े कारखाने हैं। यहाके कितने ही कारखाने इंजिन और मशीनरी तैयार करते है।

बोर्डो—यहाकी शराब संसार सुप्रसिद्ध है। यहा ऊनी और सूती कपड़ेके बड़े कारखाने है।

लिले—यहा उच्च कोटिके कपड़े, फीता किनारी, दस्ताने, मोजे, बनियान, तैयार करनेके कारखाने हैं।

फ्रांसमें कौनसा माल कहा तैयार होता है

ऊनी माल – लिले, रुन, राडवाई, तथा सेडन

सूती माल – रुन, लिले, राडवाई, तथा सेन्ट क्विन्टिन

रेशमी माल – लियान्स

भारत और लोकतंत्र चीन

ये दोनों ही देश संसारकी अत्यन्त प्राचीन सभ्यताके थाती है। इन दोनों देशोंका पारस्परिक व्यापार सम्बन्ध भी बहुत पुराना है। जिसे सभी इतिहास मर्मज्ञ भली प्रकार जानते हैं। गत शताब्दीमे भारत और चीनका सम्बन्ध अफीमके व्यापारके सम्बन्धमे अधिक गहरा हो गया था। पर जबसे अफीमका व्यापार बंद हो गया तबसे इन देशोंके पारस्परिक व्यापारमे शिथिलता भी आगयी है। यहासे चीन जानेवाले मालमे प्रधान रुपसे सूत और बोरे होते है।

चीनकी उपज

यहाकी प्रधान उपज चाय और चावल हैं जो मुख्यतया दक्षिण और दक्षिण पूर्वीय चीनमें अधिक उत्पन्न होते हैं। गन्ना, कपास और नीलकी खेती चीनके दक्षिणी भूभागमें होती है। अफीमकी खेती भी इसी दक्षिणी भूखण्डमे होती है। चीनमे बांसके जंगल भी अधिक हैं।

चीनके उद्योग धन्धे

चीनवाले स्वभावतया बड़े कलाकौशल प्रवीण होते हैं। इनके यहा बहुत पुराने समयसे कलाकौशल सम्बन्धी उन्नति होती आ रही है। यहा रेशमके कीड़े बहुतायतसे पाले जाते हैं अत: रेशम सुलझाने और रेशमी कपड़ा बुननेका बहुत बड़ा काम होता है। चायकी पैदावारके कारण यहा चाय तैयार करनेके कितने ही कारखाने भी है। यहा बांसका कागज अधिक बनाया जाता है। कपूरके वृक्षोंसे कपूर तैयार करनेका काम भी होता है। चीनी मिट्टीका सुन्दर और मनमोहक सामान भी यहा तैयार होता है। लकडी और हाथी दातकी खरादका काम भी उत्तम होता है। यहा प्रतिका उत्कृष्टका काम तैयार किया जाता है। यहाके उद्योग धन्धेको यहाकी नदियों और नहरोंसे बहुत अधिक सुविधा मिली है। यही कारण है कि यहाका सारा व्यापार नावों द्वारा ही होता है। यहाकी बस्ती नदियोंके किनारे किनारे ही है। यहा १००० वर्ष पूर्व शाही नहर खोदी गयी थी जो ७०० मील लम्बी है शंघाईसे तीनसीनतकका सभी व्यापार इसी जलमार्गसे होता है। चीनका अधिकांश व्यापार जापानके साथ होता है बृटेन तथा बृटिश साम्राज्य और संयुक्त राज्य अमेरिकासे कम परिमाणमें होता है। चीनसे रेशम, रेशमी कपडा, चाय, चीनी, रुई और खाल विदेश जाती है और इसके विनिमय स्वरुप सूती माल, अफीम, धातु और पेट्रोलियम बाहरसे आते हैं।

चीनकी राजनैतिक परिस्थितिके कारण वहाका सभी व्यापार बृटिश पूंजीपतियोंके हाथमे था पर जबसे चीन प्रजातंत्रने जोर पकड़ा है तबसे बृटेनके हाथसे बहुत कुछ व्यापारिक सुविधायें निकल गयीं है। नवीन जागृतिके पश्चात् उसने चुंगी आदि सभी आवश्यक विभागोंको अपने हाथमे ले लिया है। पर अब भी जापान, अमेरिकाके समान कितने ही राष्ट्र वहा अपना अपना व्यापार फैलानेके लिये दौड़ धूप कर रहे हैं।

चीनके प्रधान औद्योगिक नगर

पेकिन—यह संसारका अत्यन्त प्राचीन नगर है और व्यापारकी दृष्टिसे संसारके महत्त्वपूर्ण नगरोंमे गिना जाता है। शाही नहरके एक सिरे पर होनेके कारण नावोंसे माल यहा आता है। इस नगरका बंदर तीनसीन है अतः शाही नहर द्वारा आने जानेवाला माल इसी बंदर पर उतरता है। यहासे रेलवे लाइन भी निकली है। यहांसे योरोप और रूसके लिये माल ले जानेवाले

कारवा रवांना होते हैं। यह भी एक 'ट्रिटी पोर्ट' है अतः विदेशी व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र है।

कैन्टन—यह नगर दक्षिणी चीनका प्रसिद्ध बंदर है। इसके समीपी भूभागकी उपज इसी बंदरसे होकर विदेश जाती है तथा इस भूभागके लिये आनेवाला माल भी यहीं उतारा जाता है। इस बंदरसे रेशमी माल, चाय, और चीनी बाहर जाती तथा रुई और अफीम बाहरसे आती है। यहा रेशम और कपड़ेकी कई मिलें हैं।

शंघाई—यह चीनका एक बहुत बड़ा 'ट्रिटी पोर्ट' है जो उत्तरी समुद्रतट पर यागटिस्कियाग नदीके मुहाने पर बसा हुआ है। यह विदेशी व्यापारका प्रधान केन्द्र है।

हांग कांग—यह संसारके प्रसिद्ध बंदरोंमें है। पर बृटिश प्रभावमें है।

भारत और बेलजियम

बेलजियमका आकार प्रकार जितना छोटा है उतना ही उसका औद्योगिक व्यापार बढ़ा चढ़ा हुआ है। भारतके साथ इसका व्यापारिक सम्बन्ध कुछ कम महत्वका नहीं है। इसके बड़े बड़े कारखानोंकी आवश्यकता पूर्ति भारत अपने कच्चे मालसे करता है। यही कारण है कि भारतके कच्चे मालका बेलजियम सदासे एक विशेष खरीदार रहा है और वहांके कारखानोंका बना हुआ माल भारत भी खरीदता रहा है। इस प्रकार इन दोनों देशोंके बीच पारस्परिक व्यापार आज भी पूर्ववत् चला आ रहा है। भारतसे रुई, तेलहन आदि बेलजियम जाते हैं। यहांसे गेंहू और कच्चा मैंगनीज भी जाता है। और बेलजियमसे बेल, फीता, ऊनकी लच्छी, ज्वैलरी, सेन्ट, हार्डवेर, काचका सामान आदि भारत आते हैं।

बेलजियमकी उपज

यहा ओट, राई, गेहूं, आलू, जौ और चुकन्दरकी खेती होती है। खानोंसे यहा कोयला, लोहा, जस्ता, सीसा, और तांवा निकलता है। पर खेतीकी उपज पर्याप्त नहीं होती अतः गेंहू आदि खाद्य पदार्थ बाहरसे आते हैं।

बेलजियमके उद्योग धन्धे

यहाका प्रधान उद्योग धन्धा कृषिकी उपज और जंगलकी पैदावारसे अधिक सम्बन्ध रखता है। खान खोदने, पत्थर निकालने और कारखानोंके काममें यहाकी अधिकाश जनता लगी रहती है। यहां काचके कारखाने, कपड़ा बुननेकी मिलें, तथा फीता किनारी तैयार करनेकी कितनी ही फेक्टिरया चल रही हैं। यहां शकर और शराब तैयार करनेके कारखाने भी हैं।

बेलजियमके औद्योगिक केन्द्र

ब्रूसेलस—यहा फीता किनारी, कागज, खिड़कियोंके कांच, आदि बनानेके कारखाने हैं। लोहा, फौलाद, हार्डवेर आदि यहा तैयार होते हैं।

ऐन्टवर्प—यह यहाका प्रधान बंदर है। इसका किला प्रसिद्ध है। यहासे हार्डवेयर, रंग, वार्निश, काचका सामान आदि वाहर जाते है। जवाहिरात का व्यापार भी यहा अच्छा होता है।

घेन्ट—यहा सूतकातने और कपड़ा बुननेकी बहुत बड़ी मिलें है। यहांकी फूलोंकी सजावट बहुत मशहूर है।

लीज—यह नगर लोहेके औद्योगिक क्षेत्रका केन्द्र है।

भारत और इटली

भारतका इटलीसे बहुत पुराना व्यापारिक सम्बन्ध रहा है। रोमन सम्राट प्रायः भारतकी मलमलके कुछ समयतक प्रधान खरीदार रहे हैं। यहासे स्थल मार्गसे माल जाया करता था। पर समयकी गति आज कुछ और है अतः इटलीसे भारत कपडा आता है और भारतका कचा माल इटली अपने कारखानोंके लिये खरीदता है। यही कारण है कि भारतके कच्चे मालका इटली एक बड़ा खरीदार माना जाता है।

भारतसे रुई, जूट, चमड़ा, खाल, तिल तथा अल्सी आदि इटली जाते है और वहाकी मिलोंका बना माल जैसे रेशमी माल, शराब, जैतूनका तेल, और फीता किनारी आदि भारत आता है।

इटलीकी उपज

यहाकी प्रधान खेतीमें फलोंकी संख्या अधिक रहती है। अंगूर, जैतून आदि फल विशेष रूपसे होते है यहा लोहा, सीसा, जस्ता, तांवा और मैंगनीजकी खानें हैं। तथा ऐन्टीमनी, गंधक, फिटकरी, चांदी और सोना भी निकलता है।

इटलीके उद्योग धन्धे

यहा फलोंका आधिक्य है अतः कई प्रकारकी शराव तैयारकी जाती है। जैतूनका तेल तैयार करनेकी मिलें भी यहा है। रेशम सुलझाने और बुननेके कितने ही कारखाने हैं। इनके अतिरिक्त सूती और ऊनी कपड़ेकी भी बहुत सी मिलें है। काचका सामान और फर्श पर जड़नेका संगमरमर तथा चीनी मिट्टीके नलिया और खपड़े भी यहांके कारखाने तैयार करते हैं। बेलबूटा तथा फीता किनारीकी फेक्ट्रियां भी है।

इटलीके औद्योगिक नगर

नेपल्स—यहा रेशमी माल तैयार करनेके कारखाने हैं। यहांसे सूखे फल, शराव और संगमरमर तथा मूंगा विदेश जाता है।

वेनिस—यहां काचका सामान, सोने चांदीके गंगा-जमुनी वर्तन आदि तैयार करनेके कारखाने हैं। रेशमी कपड़ा, मखमल और फीता किनारी बनानेकी भी यहा कितनी ही मिलें हैं।

मिलान—यहां पर रेशमके बड़े बड़े कारखाने हैं।

भारत और अस्ट्रिया हंगरी

इन दोनों देशोंके बीच अधिक काल तक व्यापारिक सम्बन्ध स्थायी नहीं रह सका अस्ट्रिया हंगरीने जर्मनीकी भांति ही भारतमें अपनी फर्में स्थापित कर व्यापारिक संगठन करनेका प्रयत्न किया था पर इसका संगठन अधिक कालतक न टिक सका। प्रथम यहासे भारतके लिये बहुत सी शक्कर जाया करती थी पर ज्यों ही शक्करके व्यापारको रोका गया त्यों ही उसके व्यापार सम्बन्धी आयोजनको बहुत बड़ा धक्का लगा। भारतसे प्रायः रुई, जूट, चावल, चमड़ा खाल और तेलहन माल अस्ट्रिय-हंगरीको जाता है और वहांसे ऊनी, सूती, तथा रेशमी माल यहां आता है। इसी प्रकार खरादी हुई लकड़ी, शराब और शराबकी भट्टियोंका बना माल भी यहासे आता है। यहां गेंहू, जौ, राई, मक्का तथा आलू आदिकी खेती प्रधान रुपसे की जाती है। यहांकी खानोंसे लोहा, नमक, सीसा, जस्ता, और कोयला निकलता है। यहा खेती सम्बन्धी धन्धा भी अच्छा होता है जंगल लगाने और पशुपालनके लिये अच्छा उद्योग होता है। यहा ऊनी माल तैयार करनेके कारखाने, लकड़ीके कारखाने और यंत्र तैयारकरनेकी फैक्ट्रिया भी हैं।

भारतीय मालके लिये उपयुक्त नवीन व्यापारिक क्षेत्र

हम अन्यत्र लिख चुके हैं कि हमारे शासकोंकी नीतिविशेषके कारण भारत आज कच्चा माल उत्पन्न करनेवाला क्षेत्र बन गया है। यही मुख्य कारण है कि हमने भारतके वास्तविक व्यापार अर्थात् कच्चे मालके व्यापारके सम्बन्धमें विस्तृतरूपसे प्रकाश डालनेकी वहा चेष्टा भी की है। अब इस प्रसंगपर हम भारतके सभी निर्यात् मालके सम्बन्धमें अपने पाठकोंके सम्मुख कुछ ऐसे विचार व्यक्त कर रहे है जिससे वे यह भी जान सकेंगे कि इस प्रकारके मालके लिये संसारके कौन कौनसे बाजार उपयुक्त हैं जहा भारतका कच्चा माल और भारतमे तैयार किया गया पक्का माल सरलतासे बिक सकता है। यह विषय वास्तवमे भारतके लिये जितना प्रयोजनीय और आवश्यक है उतना ही भारतीय व्यापारियोंके लिये गम्भीर और साथ ही हितकर भी है। क्योंकि भारतके कच्चे मालके निर्यात्के साथ साथ भारतीय उद्योग धन्धोंके जीवन मरणका प्रश्न भी इसीमे मिला हुआ है।

संसारके बाजारोंमे आजकल पाश्चात्य जगत्के कलकारखानोंका तैयार माल अपनी मनमोहक सजधजके साथ मंत्र मुग्धकारी प्रभाव डाल रहा है। इतना ही नहीं उसके समुन्नत स्वरूपने तो संसारमें

एक विचित्र प्रकारका विचार-प्रवाह दौड़ा दिया है जिससे जनसाधारणकी विचार-पद्धतिमें ही आश्चर्यकारी परिवर्तन हो गया है और वे लोग इस मालको सर्वश्रेष्ठ स्थान देनेपर तुल बैठे है। अतः संसारके सभी राष्ट्रोंके विचारशील केवल इसी एक उधेड़बुनमें लगे हुए है कि कोई न कोई नवीन बाजार खोज निकाले और वहा अपने व्यापार वाणिज्यका प्रसार करें। स्वराज्योपभागी स्वतंत्र राष्ट्र अपनी अपनी सरकारोंसे राष्ट्रोचित सहायता प्राप्तकर पारस्परिक व्यापार प्रतियोगिताकी अणुमात्र चिन्ता न कर नवीन बाजारोंकी खोज लगा अपना अपना व्यापार सुदृढ़ रीतिसे फैला रहे हैं। ऐसी परिस्थितिमें बेचारे पराधीन दीन भारतका क्या सामर्थ्य जो वह पारस्परिक व्यापार प्रतियोगिताके प्राण संघातक संघर्षके सम्मुख खड़े होनेका स्वप्नमे भी साहसकर सके। फिर भी आत्मरक्षाका प्रश्न एक ऐसा प्रश्न है कि जिसके सम्बन्धमे सभी एक मतसे स्वीकार करते है कि लोग ऐसी स्थितिमे सब कुछ करनेपर उद्यत हो जाते है। अतः भारतके सम्बन्धको लेकर नवीन बाजारोंके सम्बन्धमें चर्चा करना कुछ अनुचित और अस्वाभाविक न होगा।

भारतके लिये यदि कोई नवीन बाजार खोज निकाले जा सकते है तो स्याम, पूर्व अफ्रिका, फारस, पैलेस्टाइन, और ईराक ही ऐसे स्थान हैं जहां संगठित रीतिसे चलाये जानेवाले भारतीय व्यापार को सरलतासे सफलता मिल सकती है। अतः भारतका हित इसीमें है कि भारतीय व्यापारी सभी राष्ट्रोचित उपायोंसे उपरोक्त बाजारोंमे अपना व्यापार संगठितरूपसे जमावें और उसके प्रसारके लिये प्रयत्न करें।

इस स्थलपर हम उपरोक्त बाजारो के सम्बन्धको लेकर विस्तृत विवेचन करेंगे और साथ ही वहा भारतका कौन कौनसा माल चल सकेगा और भारतको वहासे कौन कौनसा माल मंगानेमें लाभ होगा आदि आवश्यक बातोंपर भी यथासाध्य प्रकाश डालनेकी चेष्टा करेंगे।

पूर्व अफ्रीका—अफ्रीका महाद्वीपके इस भूभागके अन्तर्गत कीनियां, यूगैण्डा, टङ्गैनिका, झंझीबार और पेम्बा माने जाते हैं। इनके सुविस्तृत स्वरूपका सांकेतिक परिचय यह है:—

१—कीनियांका क्षेत्रफल २,५०,००० वर्ग मील है।
२ युगंण्डा „ १,६६,१६६ „
३- टङ्गैनिका „ ३,८५,००० „
४—पेम्बा „ ३६६ „
५—झंझीबार „ ६२५ „

क्षेत्रफलके बाद इस भूभागकी जनसंख्याका विश्लेषण भी कर देना आवश्यक है। यहाकी जनसंख्याके संख्याके अनुसार विभिन्न जातियोंका कौनसा स्थान है यह स्पष्ट रीतिसे जान लेनेसे

सरलतया अनुमान किया जाता है कि कौनसा माल किस प्रकारके रहन सहनके अभ्यासी कितना व्यवहार कर सकते है। क्योंकि जाति विशेषके रहन सहन और सामाजिक जीवनक्रमसे तज्जनित आवश्यकताओंका सहज अनुमान लगाया जा सकता है

पूर्व अफ्रीकाके देश वहांकी जनसंख्या

	योरोपियन	एशियायी	अरब	अफ्रीकन	कुल जोड़
१—कीनियाँ	९, ६५२	२५, ८८०	१०, १०२	२३, ९९७००	२४, ४५, ३३४
२—यूगेण्डा	१, २६९	५, ६०४	×	३९, ६४, ७३'१	३०, ७१, ६०८
३—टङ्गैनिका	२, ४४७	१०, २०९	४७८२	४१, ०७०००	४१, २४, ४३८
४—झंझीबार और पेम्बा	२७०	×	×	१९७०००	१९, ७२, ७०

इस प्रकार उपरोक्त संख्यासे स्पष्ट है कि पूर्व अफ्रीकामें कुल ९८,३८,६५० व्यक्ति निवास करते हैं। क्षेत्रफल और जनसंख्याके बाद यदि कोई और प्रधान विषय है तो उस बस्तीका व्यापार है। अतः इसके आयात्के कुछ उपलब्ध अङ्कोंको जहां हम नीचे उद्धृत करते हैं वहां भारतसे आने और भारत जानेवाले मालके अङ्क भी साथ ही दे रहे हैं। इससे जहां वहांके व्यापार वाणिज्यका स्वरूप स्पष्ट होगा वहां उसके साथ भारतके व्यापारका कैसा सम्बन्ध है यह भी सुबोध रीतिसे समझमें आ जायगा।

व्यापारका स्वरुप	कीनियां	टङ्गैनिका	झंझिवार और पेम्बा
१, कुल आयात्	६९१२, ००० पौण्ड	१४, ३१, ००० पौण्ड	२१, ५०, ००० पौण्ड
भारतसे आनेवाला माल	१२, ७०, ००० „	२, ९२, ००० „	७, ००, ००० „
२, कुल निर्यात्	५०, ६१, ०००	१०, ९०, ०००	२१, ५०, ०००
भारत जानेवाला माल	१२, ३८, ०००	१, ०६, ०००	४, २०, ०००
३, कुल व्यापार (आयात निर्यात)	१, १९, ७३, ०००	२५, २१, ०००	४३, ००, ०००
भारतसे कुल व्यापार	२५, ०८, ०००	३, ९८, ०००	११, २०, ०००

उपरोक्त अङ्क पौण्डमें दिये गये हैं। और कीनियांके अङ्कोंमें यूगेण्डाके अंक भी सम्मिलित दिये गये है। इस भूभागमें जितना भी माल भारतसे आता है उसमेंसे प्रधान रूपसे कपड़ा ही आता है। अतः भारतसे कितनेका कपड़ा इस देशमें आता है यह नीचेके अङ्कोंसे स्पष्ट है।

कपडा आता है	कीनिया यूगेण्डा	टंगैनिका	झंझीवार पेम्बा
भारतसे	३,६३,५०० पौंडका	२,००००० पौंडका	१६७,००० पौंड
अन्य देशोंसे	१३,५३,५०० ”	५,८८,००० ”	४,५०,००० ”

इस भूभागसे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध किस स्थितिमें है यह बात तो उपरोक्त दिये गये उपलब्ध अंकोंसे स्पष्ट होजाता है अब हम इस सम्बन्धकी आवश्यक बातोंकी चर्चा करेंगे।

इस देशमें भारतसे प्रायः कपड़ा, चावल, गेहूं और आटा, जूटके बोरे, चाय, घी, ऊनी माल, इमारती लकड़ी, चमड़ा और चमड़ेका सामान, लोहा और फौलाद, लोहेका सामान और हार्डवेयर, जूते, सीमेन्ट और कितनी ही अन्य आवश्यक वस्तुएं आती हैं और इस देशसे भारतको रुई, लौंग, हाथी दांत, पेन्सिल बनानेके कामकी लकड़ी, खाद आदि अन्य वस्तुएं जाती हैं। इन सभी वस्तुओंका स्पष्ट स्वरूप महत्वके अनुसार हम क्रमानुसार नीचे दे रहे हैं।

भारतसे आनेवाला माल

कपड़ा

भारतसे जितना भी माल यहा आता है उसमेंसे सबसे अधिक कपड़ा होता है। उस कपड़े में भी रंगीन बानेकी अधिक मांग रहती है। कीनियाँ और यूगैण्डामें जितना भी भारतसे कपड़ा आता है उसमें रंगीन बाना ७५ प्रतिशत खपता है इसी प्रकार टैङ्गनिका ८० प्रतिशत तथा जञ्जीबार और पेम्बामें ७० प्रतिशत इसकी खपत होती है।

रंगीन कपड़ेके बाद महत्वपूर्ण मांग सूती कम्मलकी रहती है। इस देशके बाजारमें भारतके सूती कम्मलको हालैण्डसे आनेवाले ऐसे ही कम्मलोंसे प्रतियोगिता करनी पड़ेगी। क्योंकि हालैण्डका यह माल अधिक आने लगा है।

भारत जूटके रेशोंको भी सस्ते कम्मल बनानेके काममें ले सकता है। कम्मल सस्ते और सुन्दर होने चाहिये।

चावल, गेहूं और आटा।

भारतसे आनेवाले मालमें महत्वकी दृष्टिसे इनका स्थान दूसरा है। इस प्रकारके उपरोक्त तीनों ही आनेवाले खाद्य पदार्थोंके कुल परिमाणका मूल्य अनुमानतया ३८८,००० पौण्ड था जिसमेंसे २,८०,००० पौण्डके चावल, तथा १,८४,८०० पौण्डका गेहूं और आटा इस देशमें आया। पर इस प्रकारके मालपर यहाकी सरकारने अधिक चुंगी लगा रक्खी है अतः भारतको सम्भवतः इस व्यापारसे लाभ बहुत ही कम होगा।

जूटके बोरे

इस देशमें बाहरसे आनेवाले बोरोंका मूल्य साधारणतया १,८९,००० पौण्ड होता है जिसमेंसे १,६१,००० पौण्ड मूल्यके बोरे सीधे भारतसे ही यहा आते है। बोरेके व्यापारमें सबसे अधिक ध्यान देनेकी बात तो यह है कि बीचमें बहुतसे लोग खाने वाले भी रहते है इसलिये माल तेज पड़

जाता है। सस्ता माल बेचनेके लिये भारतको चाहिये कि वह अफ्रीकामें अपने एजेन्ट रक्खे और उन्हींके द्वारा वहांके आर्डर सीधे ले ले। अफ्रीकासे जो लौंग विदेश जाती है वह चटाइयोंमें लपेट कर भेजी जाती है पर अब वहां उत्पन्न होने वाले सिसल नामक रेशेसे लौंग भेजनेके लिए बोरे बनानेकी चेष्टा हो रही है यदि सफलता मिल गयी तो बोरेकी खपतका एक मात्र आधार उनका सस्तापन ही रहेगा। अतः भारतीयोंको इस ओर भी ध्यान देना चाहिये और सस्ते मूल्यपर बोरे बेचनेका प्रयत्न करना चाहिये। क्योंकि अफ्रीका ज्यों ज्यों उन्नति करता जायगा त्यों त्यों वहांकी उपज भी वृद्धि करती जायगी और इस प्रकार बोरोंकी बगबर मांग जारी रहेगी।

चाय

भारतसे लगभग ३६००० पौण्ड मूल्यकी चाय सीधे तौरपर अफ्रीकाके इस भूभागमें जाती है।

घी

बाहरसे लगभग ६२००० पौण्डका घी यहां आता है। जिसमें २८७०० पौण्डका घी तो भारतसे ही आता है। इसलिये भारतके घीके लिये यहां पर्याप्त क्षेत्र है। भारतसे आने वाला घी प्रथम टेङ्गनिकामें उतरता है और फिर यहांसे पूर्व अफ्रीकाके अन्य भागोंको जाता है। कीनियाके पहाड़ी प्रदेशमें कुछ योरोपियन घी तैयार करने लगे हैं। इनका घी शुद्ध अधिक होता है अतः इन्हे सफलता की बहुत बड़ी आशा हो चली है।

अफ्रीकाके इस भूभागसे घी भारत भी जाता है। जो अनुमानतया १६००० पौण्ड मूल्यका होता है।

ऊनी माल

यहा आनेवाले ऊनी मालमें ऊनी कम्बल और कालीन भी सम्मिलित मानना चाहिये। सभी देशोंसे कुल ऊनी माल ६४१०० पौण्डका यहा आता है। जिसमेंसे २२६०० पौण्डका माल भारतसे यहां आता है। अतः भारतको इस ओर अच्छी सफलता मिल सकती है पर यहांकी सरकारने इस मालपर बड़ी जबर्दस्त चुंगी लगा रक्खी है, ऐसी दशामें जूटके रेशोंका नकली ऊन तैयार करके सस्ता माल अवश्य ही मुनाफेसे यहां भेजा जा सकता है।

इमारती लकड़ी

यहां लगभग ५२००० पौण्डकी इमारती लकड़ी विदेशसे आती है जिसमेंसे १९००० पौण्डकी यह लकड़ी भारतसे आती है। इसीसे स्पष्ट है कि भारतकी लकड़ीको यहा अच्छा अवसर है। पर कीनियां और यूगेण्डाकी सरकारने बाहरसे आनेवाली इस प्रकारकी लकड़ीपर ५० प्रतिशतकी चुंगी लगा रक्खी है।

चमड़ा और चमड़ेका सामान

इस प्रकारका कुल सामान ५७८०० पौ० का यहा आता है जिसमेंसे १७६०० पौण्डका माल भारतसे आता है। ज्यों ज्यों यहाके लोग सभ्य होते जाते हैं त्यों त्यों जूते पहिननेका अभ्यास भी लोगोंको अधिक होता जाता है। इस प्रकारके कम कीमत और मजबूत मालके लिये यहा पर्याप्त क्षेत्र है। भारत इस व्यापारसे अच्छा लाभ उठा सकता है।

लोहा और फौलाद

इस प्रकारके मालकी यहा बहुत अधिक मांग है पर भारतसे बहुत ही कम ऐसा माल आता है। इस प्रकारका कुल माल यहां १,८८,००० पौण्डका आता है। जिसमें भारतसे केवल ६३०० पौण्डका ही यह माल यहा आता है। यदि भारतीय व्यापारी मुनाफेसे यह माल यहां भेज सकें और निश्चित एवं इच्छित अवधिके अन्दर भेज सकें तो अवश्य ही लाभ हो सकता है और भारतीय व्यापारकी बहुत अधिक वृद्धि हो सकती है।

लोहेका सामान और हार्डवेर

यहा यह माल प्रायः १,३०,००० पौण्डका आता है। जिसमेसे भारतसे ५००० पौण्डका ही माल आता है। यदि यहावालोंकी मांगके अनुसार और सस्ते भावपर माल भारतीय व्यापारी भेज सकें तो अच्छे लाभकी आशा है।

सीमेन्ट

यहा सीमेन्टकी खपत दिन प्रति दिन बढ़ रही है। विदेशसे लगभग ८५०० पौण्डकी सीमेन्ट यहा आती है जिसमेंसे भारतसे केवल ११०० पौण्डकी ही आती है। भारतकी सीमेन्ट बोरियोंमें भरकर यहा आती है जिससे यहा वालोंको हानि उठानी पड़ती है। यदि बोरोंके स्थानमें सीमेन्ट पीपोंमें भरकर भारतसे यहा भेजी जाय तो सीमेन्टके व्यापारमें भारतको अवश्य ही अधिक लाभ हो।

अन्य वस्तुएं

उपरोक्त मालके अतिरिक्त यहां कितनी ही अन्य प्रकारकी वस्तुओंकी अधिक मांग रहती है। यदि भारतीय अपने कारखानोंमें यह माल तैयार कराकर यहा भेज सकें तो भारतीय कारखानोंको अच्छा सुअवसर मिल जाय। इन वस्तुओंमें कुछ चलतू चीजोंका परिचय इस प्रस प्रकार है :—

(१) लोहेके सादे और कांटेदार तार (२) इंजिन आदि खेती सम्बन्धीयंत्र। (३) तिजोरी सांडें। (४) तम्बाकू सिगरेट और सिगार। इसी प्रकार खेलके समान साबुन, मोजे बनियान, कागज, स्टेशनरी, तांबे पीतलके बर्तन, अलम्यूनियमके बर्तन तथा सुगन्धित इत्र आदि।

भारतीय मालके लिये उपयुक्त नवीन व्यापारिक क्षेत्र

अफ्रीका वालोंमें आधुनिक सभ्यताका ज्यों ज्यों प्रसार होगा त्यों त्यों उनकी आवश्य-कतायें बढ़ेंगी, और परिणाम स्वरूप वहांके बाजार भी अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचेंगे। वहांकी सरकार उन लोगोंको कच्चा माल उत्पन्न करनेके लिये प्रोत्साहित कर रही है। ऐसी परिस्थि-तिमें भारतीय कल-कारखानोंके लिये उन्नति करनेका स्वर्ण सुअवसर है। इससे भारतके औद्योगिक विकासमें अधिक सहायता मिलेगी।

भारत जानेवाला माल

इस निवन्धके आरम्भमें दिये अंकोंसे ज्ञात हो जायगा कि यहांके निर्यातका २१ प्रतिशत माल भारत जाता है। यों तो यहांसे काफी, शक्कर, तिल, नारियलकी गरी तथा गन्ना आदि भारत जाते ही है पर इनमेंसे कुछ मुख्य वस्तुएं नीचे दी जाती है।

रुई

यहां कपास बहुत उत्पन्न होती हैं। जो प्रायः प्रतिवर्ष ३३,६७,००० पौण्डकी विदेश जाती है। जिसमेंसे ११४२,००० पौण्डकी भारत जाती है। जापानवाले यहां पहुंच चुके हैं और उन्होंने अपनी जीनिङ्ग तथा प्रेसिङ्ग फैक्ट्रियां भी खोल दी हैं। ये लोग यूगेण्डामें कपासकी खरीद करते हैं और अपनी जीनिङ्ग फैक्ट्रियोंमें उससे विनौला निकाल कर अपनी ही प्रेसिङ्ग फैक्ट्रियोंमें गांठ बाधते हैं। तथा अपनी बीमा कम्पनियोंमें बीमा कराकर अपनी ही जहाजी कम्पनियों द्वारा गाठोंको जापान भेज देते हैं। भारतको चाहिये कि वह भी जापानका अनुकरण कर लाभ उठावें।

लौंग

यहांसे कुल लौंग प्रायः ७,६५,००० पौण्ड मूल्यकी विदेश भेजी जाती है। जिसमेंसे ३,१६,००० पौण्डकी तो भारत जाती है। पर जहाजी कम्पनियां विदेशी है अतः भाड़ा अधिक लग जाता है।

हाथी दांत

यहांसे कुल हाथी दात १,४५,००० पौण्डका विदेश जाता है। जिसमेंसे १,०२,००० पौण्ड का भारत भेजा जाता है। इन वस्तुओंके अतिरिक्त पेन्सिल बनानेके योग्य लकड़ी, गुड़, सुअरका मास, खानेकी पनीर, सूखा मांस और खाद आदि भी भारत भेजे जाते है। यह सभी जानते हैं कि व्यापार व्यापारसे ही बढ़ता है अतः यहाके कच्चे मालको खरीदने और उसके विनिमयमें भारतके कारखानोंके बने मालको यहा भेजनेमे भारतीय राष्ट्रकी श्रीवृद्धिकी पूर्ण आशा है। स्मरण रहे यहांकी सरकारने घरेलू उद्योग धन्धेको प्रोत्साहन देनेके लिये बाहरसे आनेवाले उसी प्रकारके मालपर जो स्वयं

वहां पैदा होता है संरक्षणकर बैठा दिया है। बाहरसे जानेवाली लकड़ी पर जो १५ प्रतिशत कर था। वह बढ़ाकर ५० प्रतिशत करदिया गया है और चावल, गेहूं तथा आटे पर कर बढ़ाकर १५ से ३० प्रतिशत कर दिया गया है। यदि कहींपर कर अनुचित परिमाणमें बैठा दिया जाय तो तुरन्त ही भारत सरकारको सूचित कर देना चाहिये। तथा यहांकी व्यापार सम्बन्धी जानकारीके लिये इण्डियन ट्रेड कमीशन इन ईस्टको मुम्बासाके पतेपर लिखकर पूंछना चाहिये।

भारतकी औद्योगिक अवस्था

भारतकी आर्थिक स्थितिका पूरा भार कृषिपर है। उसके जनसमाजका ७० प्रतिशत भाग केवल किसान ही है। संसारके अन्य देशोंकी खेतीके साथ भारतकी खेतीकी तुलना करते ही स्पष्ट हो जाता है कि भारतकी अवस्था वास्तविक रीतिसे अत्यन्त शोचनीय हो गयी है। अभी कुछ दिन पूर्व यहांकी इण्डियन शुगर कमेटीने संसारके अन्य गन्नेके केन्द्रोंके साथ भारतकी तुलना करते हुए लिखा था कि भारतमें प्रति एकड़ गन्नेसे जितनी शक्कर निकलती है वह परिमाणमें क्यूबामें उत्पन्न होनेवाले प्रति एकड़ गन्नेसे निकलनेवाली शक्करकी अपेक्षा परिमाणमें ३ कम होती है। और जावाकी उपजसे ३ कम तथा हवाई द्वीपकी उपजसे ६ कम होती है। इसी प्रकार चावल, गेहूं, कपास, आदिकी उपज भी कम होती जाती है। यदि आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार भारतमे खेतीका कार्य आरम्भ कर उसे व्यावसायिक रूप न दिया गया तो अवश्य ही महान अनर्थका सूत्रपात हो जायगा। इसके लिये जनसाधारणमें प्रारम्भिक वैज्ञानिक शिक्षाका प्रसार देशी भाषाओं द्वारा किया जाना चाहिये। इसका फल यह होगा कि जनताकी अभिरुचि उस ओर जायगी और भारतमे खेतीकी अवस्थाका सुधार होगा।

इसी प्रकारकी अवस्था भारतके उद्योग धन्धोंकी है। यदि इस ओर कुछ उन्नति हुई है तो वह भी अन्य देशोंके उद्योग धन्धोंकी तुलनामें नहींके समान ही है। भारतका विस्तृत आकार प्रकार, और उसका प्रचुर प्राकृतिक अक्षय रत्नभण्डार, होते हुए भी अगणित भारतीय जनताका रोटी [illegible] उसके उद्योग धन्धोंकी कारुणिक अवस्थाका वास्तविक चित्र आंखोंके सम्मुख [illegible] है।

भारतके प्रधान उद्योग धन्धोंमें रुई और जूटका काम सर्वप्रथम माना जाता है। इसके बाद [illegible] कारखाने, इंजिनियरिंग वर्कशाप, चमड़ेके कारखाने, लोहा गलानेकी भट्टियाँ और लोहा [illegible] कारखाने, शक्करकी मिलें, आदि कलकारखाने ऐसे हैं जो भारतकी औद्योगिक उन्नतिका उदा- [illegible] इसी प्रकार सोना, कोयला, अभ्रक आदि कई प्रकारकी खाने और हरे भरे

चायके बगीचे भी गिने जाते हैं। पर ये सभी विदेश की पूंजीसे चल रहे हैं और व्यर्थ ही इनको बीचमें डालकर भारतकी नकली समृद्धिका जोरसे डिमडिमा पीटा जा रहा है। वास्तविक बात तो यह है कि देशका जन समाज केवल श्रमजीवी है जो एड़ी चोटीका पसीना एक कर रहा है और विदेशी पूंजीपति स्वयं भारतके उद्योग धन्धेपर अपनी पूंजीके बल चैनकी वंशी बजा रहे हैं।

भारतके उद्योग धन्धेमें थोड़ीसी पूंजी भारतीयोंकी भी है अतः भारतीय व्यापारियोंको इस ओर विशेष ध्यान रखनेकी आवश्यकता है। आज जो भारतीय व्यापारी, विदेशी पूंजी-पतियोंके कलकारखानोंके तैयार मालको भारतमें खपानेके लिये एजेन्ट, बैनियन और ब्रोकर बन उन्हें पैसा पैदा करा रहे हैं उन्हें चाहिये कि वे स्वयं सम्मिलित शक्तिसे भारतके उद्योगधन्धेको उन्नत अवस्था-पर पहुंचानेमें प्रयत्नशील हो जायं और भारतीय कल कारखानोंमें तैयार होनेवाले माल को विदेशके बाजारमें खपानेके लिये विदेशवालोंको अपना एजेन्ट, बैनियन और ब्रोकर बनावें। पर यह कार्य तभी सम्भव है जब भारतीय व्यापारी व्यापारिक संघ बना कर सामुहिक शक्तिसे व्यापारिक क्षेत्रमें उतर पड़ें। जब तक यथेष्ट पूंजी लेकर भारतीय उद्योग धन्धोंको न अपनाया जायगा तब तक पूंजीके बलपर इत-राने वाले विदेशी व्यापारियोंसे प्रतियोगिता करनेमें हमें सफलता न मिल सकेगी। पूंजी संग्रह करनेका एक ही मार्ग है। और वह यह है कि भारतके बड़े बड़े भारतीय व्यापारी संघरूपमें मिल कर बड़े बड़े व्यापार सम्बन्धी सेन्डीकेट अथवा व्यापारिक संघ खोलें और फिर प्रतियोगिताके मैदानमें आवें। स्मरण रहे आजके युगमें ऐसे व्यापारिक संघोंका बहुत बड़ा महत्व है। अमेरिकामें बड़े बड़े व्यापारियोंने मिलकर सेन्डीकेट खोले हैं। जर्मनीके अन्दर भी ऐसे ही संघोंका स्थापन जोरोंसे किया जा रहा है। फ्रान्स और बृटेनकी बड़ी बड़ी फर्मोंने मिलकर एक बहुत बड़ा व्यापारिक संघ स्थापित किया है। अमेरिकन, बृटिश, तथा फ्रेंच कम्पनियोंने मिलकर ईराकमें तेलकी कम्पनीके नामसे एक बहुत बड़ा व्यापारिक संघ खोला है। यही कारण है कि हम इस उपायको काममें लानेका परामर्श भारतीय व्यापारियोंको दे रहे हैं। यदि वे लोग ऐसे व्यापारिक संघोंकी स्थापना कर भारतके उद्योग धन्धेकी उन्नतिमें लग जांयगे तो निश्चयही वे भारत राष्ट्रका बहुत बड़ा हित करनेकी श्रेय प्राप्त करेंगे। क्योंकि अपनी अपनी वैयक्तिक सामर्थ्यसे काम लेनेका अब युग नहीं रहा।

भारतीय व्यापारियोंको चाहिये कि वे इस प्रकारके व्यापारिक संघ बना कर भारतके औद्योगिक क्षेत्रपर अपनी पूरी शक्ति लगा दें। वर्तमान विद्युतशक्ति सञ्चालनकारी सुविधाओंको अधिक शक्तिशाली बनाकर अधिकसे अधिक शक्ति उत्पन्न करानेकी ओर उन्हें ध्यान देना चाहिये। कोयलेके सहारे तथा बेकार जानेवाले इन अगणित जल प्रपातोंसे उत्पन्नकी जा सकनेवाली विद्युत शक्तिके

सम्बन्धमें हाइड्रो एलेक्ट्रिक (Hydro electric) आयोजनको काममें लानेका प्रयत्न भी यहां किया जाना चाहिये। इतना ही नहीं उन्हें देशके श्रमजीवी वर्गको प्रबुद्ध करानेकी चेष्टामे भी संलग्न होना चाहिये। उचित पारिश्रमिक, और रहन सहनकी सुविधाओंका प्रबन्ध कर उनके लिये 'टेकनिकल स्कूल' स्थान स्थानपर खोल कर देशी भाषाओं द्वारा व्यावहारिक शिक्षा देनेका सुप्रबन्ध भी करना चाहिये। देशके औद्योगिक केन्द्रोंका आधुनिक पद्धतिके अनुसार संगठन किया जाना चाहिये। यांत्रिक सहायतासे कलकारखाने चलानेकी सुविधाओंपर ध्यान देना आवश्यक है और साथ ही स्थान स्थानपर बैंकोंकी व्यवस्था भी करना चाहिये। यदि इस प्रकारसे सुसंगठित हो कार्य किया जाय, जो अव्यवहारिक या असम्भव कदापि नहीं है तो अवश्य ही मनचेती सफलता मिल सकती है।

ऐसा करनेसे भारतकी रत्नगर्भा भूमिके कच्चे मालसे अच्छेसे अच्छे ढंगपर देशकी पूंजीसे देशके कारखानोंमें देशी भाइयोंकी सहायतासे सस्ता, सुन्दर और टिकाऊ पक्कामाल बनाया जा सकेगा। भारतीय व्यापारिक वर्गके सामुहिक रूपसे काम करनेसे भारतके किसानोंके कच्चे मालकी मांग बढ़ेगी अतः उन्हें आर्थिक लाभ होगा और उसके बल वे अपना जीवन क्रम सुधारनेमें सफल होंगे। इसी प्रकार कल कारखानोंकी उन्नतिके साथ ही किसानोंके समान ही श्रमजीवी भी पेट भर भोजन करेंगे और शरीरपर सुन्दर कपड़े पहन सकेंगे। अपना और अपनी सन्ततिका भविष्य सुधारनेमे सफल मनोरथ होंगे। देशकी आवश्यकता स्वयं देश पूरी करनेमें समर्थ होगा और क्रमानुसार भारत राष्ट्र एक शक्तिशाली राष्ट्र बनकर अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करनेमें अवश्य ही यशस्वी होगा।

अब हम इसी सिलसिलेमें भारतके कतिपय महत्वपूर्ण उद्योग धन्धोंके सम्बन्धमें यहां कुछ लिख रहे हैं जिन्हें हाथमें लेकर हमारे भारतीय व्यपारी अच्छा लाभ उठा सकते हैं।

शक्कर—भारत गन्नेकी खेतीका घर है। गन्नेकी खेती यहासे अधिक संसारके अन्य किसी भी भूभागमे नहीं होती। पर उपजकी दृष्टिसे मानना पड़ेगा कि भारतके गन्नेसे बहुत ही कम परिमाणमें शक्कर निकलती है। भारत सरकारकी कृषि सम्बन्धी रहस्यमय नीतिको भारतके किसान समझनेमें सर्वथा असमर्थ हैं। न मालुम सरकारका कृषि विभाग यहाके किसानोंको भारतीय भाषाओं द्वारा कृषि सम्बन्धी ज्ञान-दान कब देगा और कब यहाके किसान खेतीकी ओर ध्यान देनेकी अभिरुचि दिखावेंगे। लगभग १० लाख टन शक्कर प्रति वर्ष जावा और मारिशससे भारत आती है। भारतसे बहुत बड़े परिमाणमें प्रतिवर्ष गुड़ विदेश भेजा जाता है। गुड़ खरीदने वाले देशोंमें फीजी द्वीपपुंज, स्ट्रेट सेटलमेन्ट,और सीलोन ही प्रधान हैं। भारतसे गुड़ प्रायः विजगापट्टम, कोकोनाड़ा, तूतीकोरिन, और बम्बईके बन्दरोंसे बाहर भेजा जाता है। गुड़का व्यापार भी महत्वका माना जाता

है। इस सम्बन्धकी सभी प्रकारकी जानकारीके लिये इण्डियन शुगर प्रोड्यूसर्स ऐसोसियेशन कानपुरसे पत्रव्यवहार किया जा सकता है।

मोम बत्तियाँ—बाजारमें बिकनेवाली मोमबत्तियाँ स्टीराइन(Stearine) या पैराफीन बैक्स नामक पदार्थसे बनती हैं। भारतमें मोमबत्ती बनानेका सबसे बड़ा काम होता है। यहां मोमबत्ती तैयार करनेका प्रधान केन्द्र सिरियाम (Syriam) माना जाता है। यह नगर रंगूनके पास है। यहीं साफ किये हुए पेराफीन वैक्सको गला कर मोमबत्तियां बनाई जाती हैं। साधारण शक्तिकी मशीन प्रति १५ मिनटमें ३६० मोमबत्तियां तैयार करती है। इस स्थानके अतिरिक्त कलकत्ता, मद्रास, मैसूर और बड़ोदामें मोमबत्तीके कारखाने हैं। भारतसे विदेश जाने वाली मोमबत्तीका ९० प्रतिशत भाग रंगूनके बंदरसे बाहर जाता है और शेष माल बम्बईके बंदरसे रवाना किया जाता है। भारतकी मोम-बत्तियां चीन, सीलोन, न्यूझीलैण्ड, बृटेन, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, श्याम और फारस जाती हैं।

तम्बाकू—भारतमें सबसे अच्छी तम्बाकू रंगपुरमें पैदा होती है। यहासे तम्बाकूकी पत्ती अदन, हांगकाग, फ्रान्स, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, हालैण्ड, जर्मनी बहुत बड़े परिमाणमें भेजी जाती है। फ्रान्स सबसे अधिक भारतकी ही तम्बाकू खरीदता है और इसके बाद अदन तथा स्ट्रेट सेटलमेन्टका स्थान खरीदारोंमें महत्वका माना जाता है। भारतसे तम्बाकूकी पत्ती रंगपुर, बम्बई, कलकत्ता और नागापट्टमसे विदेश भेजी जाती है। सिगरेट और सिगारके रूपमें तम्बाकू बहुत बड़े परिमाणमें विदेशसे भारत आती है। योंतो सिगार सबसे अधिक मलाया पेनिनसुलामें तैयार होती है पर फिलिपाइन और हवानासे बहुत बड़े परिमाणमें सिगरेट भारत आते हैं। भारतमें भी बीड़ी, सिगरेट आदिके कारखाने खुल रहे हैं। मुंगेरमें सबसे बड़ा कारखाना खोला गया है जो अच्छी उन्नतिकर रहा है। दक्षिण भारतमें तैयार होनेवाला माल बम्बई बंदरसे मैसोपोटामिया और पूर्व अफ्रीका भेजा जाता है क्योंकि उसकी वहा अधिक मांग है।

खादके कारखाने—चाय और काफीके बगीचोंमें खादकी सदैव बहुत बड़ी मांग रहा करती है। देशकी खादके अतिरिक्त प्रति वर्ष लगभग १० हजार टन खाद विदेशसे भारत आती है। भारतके किसानोंके पास न तो वैसी उपजाऊ और मूल्यवान भूमि ही है और न मंहगी खाद खरीदनेके लिये उनके पास पैसे ही है अतः वे बेचारे किसी प्रकार ताजी खादसे काम चलाते हैं। मछली और हड्डीकी खाद प्रायः २० हजार टन प्रति वर्ष भारतसे सीलोन और स्ट्रेट सेटलमेन्ट जाती है। फ्रांस वाले हड्डीके चूरेसे काले बटन बनाते है इसलिये वहा इसकी अच्छी मांग रहती है। भारतके बड़े बड़े नगरोंके कसाई खानोंसे ब्लड मील (Blood meal) के नामसे सूखा खून भी विदेश जाता है। इसी प्रकार अलसी, अरण्डी, मूंगफली आदि तेलहन मालकी खली भी खादके रूपमे विदेश चली

जाती है। जो वास्तवमें बहुत ही हानिकर है। भारतकी खाद भारतके लिये होनी चाहिये। पूसा और इसी प्रकारके अन्य केन्द्रोंमें प्रान्तीय कृषि विभागके रसायन विशेषज्ञ नवीन प्रकारकी खाद तैयार करनेकी पद्धतिया खोज रहे है।

नारियलकी जटा—दक्षिण भारतके कोचीन नामक बंदरसे नारियलकी जटा बहुत बड़ी तादादमें विदेश चली जाती है। नारियलके जटाके रेशेसे लच्छियाँ तैयार होती है जिनसे रस्से बनाते है। इन्हींके बिछौने भी बनाये जाते है। थैले भी इन्हीं रेशोंसे तैयार होते है जो चमड़ा कमानेके काममें आनेवाली छालके भरनेके काम आते है। यह उद्योग धन्धा मलाबार प्रदेशका घरेलू धन्धा है। यहाके बने हुए मालका निर्यात् ऐलेपी, कोचीन और कालीकट नामक बन्दरोंसे होता है। कोचीन और कालीकटमें कुछ गाठ बाधनेके प्रेस भी है जहा जटाके रेशेसे तैयारकी गयी लच्छियोंको ३ हंडरवेट वजनी गाठके रूपमे बांध कर विदेश भेजा जाता है।

मक्खनकी डेरी—भारतसे मक्खन और घी विदेश जाता है। जो सम्भवतः ८ लाख पौंड वजनके परिमाणसे होता है। यों तो प्रायः बम्बई बंदरसे भी यह माल बाहर जाता है पर करांची बंदर इसके निर्यात्का प्रधान केन्द्र है। भारतके इस मालकी माग महत्वके अनुसार इस क्रमसे विदेशोंमें है। सीलोन, स्ट्रेट सेटलमेन्ट, झंझीबार, पूर्व अफ्रीका, फारसकी खाड़ीके तटवर्ती बंदर और बृटेन।

संसारके प्रधान व्यवसायिक मार्ग और उनका भारतसे सम्बन्ध

एक स्थानसे दूसरे स्थानको माल भेजने और वहासे माल मंगानेके लिये प्रत्येक व्यवसायीको संसारके प्रधान व्यवसायिक मार्गोंकी यथेष्ट जानकारी रखना अत्यन्त आवश्यक है। यदि व्यापार वाणिज्यके क्रमागत ऐतिहासिक विकासका खोजपूर्ण अध्ययन किया जाय तो पता लग जायगा कि भौगोलिक सत्यका महत्व कितना रहस्यमय है। इसी सत्यके आधार पर यह भी जाना जा सकता है कि कौनसी वस्तु किस प्रकारकी विशेष परिस्थितिके कारण अनुकूल या प्रतिकूल जल वायुको पाकर कब और कहा उत्पन्न होती है। किस स्थान विशेषकी कौनसी आवश्यकताये है और उनकी पूर्तिके लिये कितने परिमाणमे वहाकी उपज पर्याप्त होती है तथा आवश्यकतासे अधिककी वस्तुयें कहा और कब भेजी जाती है। इसी परिस्थिति वैचित्र्यके कारण आरम्भमें व्यापार वाणिज्यका अंकुर जमा था। अतः भौगोलिक सत्यके व्यवहारिक स्वरूपकी सार्थकताके आधार पर मानना पड़ेगा कि सभी देशोंके वैदेशिक व्यापार वाणिज्यका सम्बन्ध उनके आर्थिक उत्कर्षसे बहुत ही सन्निकट है। फलतः यह स्वयं

सिद्ध हो जाता है कि देशकी आर्थिक अभिवृद्धि भी स्वयं प्रकृति प्रदत भौगोलिक सुविधाओं तथा वहांके बसने वाले जन समूहकी मनोवृत्तियोंसे बिलकुल घुली-मिली रहती है।

संसारके व्यापार वाणिज्य सम्बन्धी उत्कर्षमें उसकी जलराशिका बहुत बड़ा हाथ माना जाता है। यही वह सुगम मार्ग है कि जिसके कारण संसारके दूर देश भी एक दूसरेसे मिले जुले माने जाते हैं। आधुनिक सभ्य संसारके उन्नति शील राष्ट्रोंकी समता करने वाले राष्ट्रको आज उन्नत जलराशिके तटवर्ती भूभाग पर अपना आधिपत्य रखना अनिवार्य सा हो गया है। यदि इस अटल सत्यकी दृष्टिसे देखा जाय तो यह भारतका सौभाग्य ही है कि वह तीन ओर समुद्रसे घिरा हुआ है। यद्यपि भारतके समुद्रतटवर्ती बंदर गाह उच्चकोटिके नही माने जाते है फिर भी वे किसी प्रकार निरर्थक भी नहीं ठहराये जा सके हैं। ये सब प्रकारसे विदेशी व्यापार वाणिज्यके लिये उपयुक्त हैं। यही कारण है कि शताब्दियों पूर्वसे भारतका व्यापारिक सम्बन्ध विदेशोंसे बराबर चला आ रहा है।

भारत छोटासा देश नहीं है यह एक विशाल महाद्वीप है। यहा प्रकृति विभेदके कारण नाना प्रकारके पदार्थ उत्पन्न होते है जिनके लिये अन्य देशोंके लोग सदा लालायित रहते हैं। और साथ ही भारतवाले भी दूसरे देशोंमे होनेवाली कितनी ही वस्तुओंके लिये इच्छुक रहते हैं।

समुद्र मार्गसे होनेवाले व्यापार वाणिज्य दो प्रकारके होते हैं। इनमेंसे एक तो वह है जो यात्रियों और डाकके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित करता है और दूसरा वह जो स्वयं अपना अस्तित्व रखता है। इन दोनोंहीको भाफसे चलनेवाले द्रुतिगतिगामी जलयान आश्रय देते है। ये जलयान सीधेसे सीधे मार्गको सम्मुख रखकर चलते है पर स्थान स्थानमें इन्हें कोयला लेनेके लिये ठहरना पड़ता है। इन्हीं विश्राम स्थलोंको बंदर कहते है। इस प्रकार आरम्भमें बंदरोंकी स्थापना हुई और कोयला चढ़ानेके समय मिलनेवाले अवकाशमे यात्रियोंको चढ़ाने तथा मालको लेनेका काम भी आरम्भ हुआ फलतः व्यापार वाणिज्यको भी अनायास ही सुविधा मिल गयी और लोगोंको भी अधिक सुविधा हो गयी। इस प्रकार व्यापार वाणिज्यका जन्म और उसकी वृद्धि हुई अतः भारतके सम्बन्धको लेकर अब हम नीचे संसारके प्रधान व्यापारिक जलमार्गों और उससे सम्बन्ध रखनेवाले स्थल मार्गोंकी चर्चा करेंगे।

उत्तर अटलान्टिक महासागरका व्यवसायी मार्ग यद्यपि भारतके वैदेशिक व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे विशेष महत्वका नही है फिर भी संसारके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे वह अवश्य ही बड़े महत्वका है। यही वह महत्वपूर्ण जलमार्ग है जो संसारके उच्च कोटिके दो सुदूरवर्ती भूखण्डोंको सुगमतासे समीप लाकर मिलाता है। इसी मार्गसे अमेरिकाके कच्चे पदार्थ जैसे रूई, गेहूं, अनाज तथा विभिन्न प्रकारकी धातुएं जहाजमें भरकर बृटेनके समान ही योरोपके अन्य औद्योगिक

देशोंमें पहुंचाई जाती हैं तथा इन पदार्थोंके विनिमय स्वरूप इन औद्योगिक केन्द्रोंमें तयार होनेवाले मालको जहाज द्वारा अमेरिकाके बाजारमें पहुंचाया जाता है।

इसी प्रकार भारतके वैदेशिक व्यापारकी दृष्टिसे यदि कोई महत्वपूर्ण मार्ग माना जा सकता है तो वह भूमध्यसागरका ही जलमार्ग है। इस मार्गसे भारत और योरोपके विभिन्न प्रगतिशील केन्द्रों का पारस्परिक सम्मिलन सहजमें हो जाता है। इतना ही नहीं योरोपके कारखानोंका बना माल जहाजपर लादकर भारत लाया जाता है और वहांसे वह सुदूर सिंगापुर होते हुए चीन, जापान और अस्ट्रेलियातक पहुंचाया जाता है।

हम ऊपर लिख आये हैं कि भारतका वैदेशिक व्यापार नवीन नहीं है वरन भारत तो बहुत प्राचीनकालसे संसारके सुदूर देशोंसे व्यापार वाणिज्य करता चला आ रहा है। यही एक प्रधान कारण है कि भाफसे चलनेवाले जहाजोंसे इसे अधिक प्रोत्साहन मिला और आज उसका व्यापार बहुत बढ़ गया है। यहाकी उपजका अधिकांश भाग निर्यातके रूपमें सुदूर देशोंको जाता है और वहाके कारखानोंका बना हुआ माल भारतमें निर्यातके विनिमयमें आयातके रूपमें आता है। भारतके पश्चिमीय प्रदेश एवं सिन्धु नदीकी घाटीमें उत्पन्न होनेवाला गेहूं करांचीके बंदरसे विदेश भेजा जाता है और खान देश, वरार तथा मालवा, और गुजरातकी रूई बम्बईके बंदरसे विदेश भेजी जाती है। इसी प्रकार मध्यभारतका तेलहन दाना भी बम्बई बंदरसे विदेश भेजा जाता है। बंगाल, आसाम तथा विहार उड़ीसाके उपजाऊ भूभागकी उपज जैसे जूट, चावल, चाय, अभ्रक, कोयला आदि कलकत्ते के बन्दरसे बाहर भेजे जाते हैं और इन पदार्थोंके मूल्यके विनिमयमें सूती माल, यंत्र सामग्री, रेलवेका सामान, आदि कितनी ही वस्तुएं मुख्यतया वृटेन और साधारणतया योरोपके अन्य औद्योगिक भूभागोंसे भारत आती हैं। यह सब व्यापार वाणिज्य इसी सुपरिचित भूमध्यसागरके जलमार्गसे आता जाता है। यदि भारतसे हम योरोपके लिये इस जलमार्गसे चलें तो भारत छोड़नेके बादही सबसे प्रथम अदनका सुप्रसिद्ध बंदर आयेगा। अदनका बंदर एक प्रभावशाली एवं मार्केका बंदर है जहा दूर देशोंका माल उतारा-चढ़ाया जाता है। यह वही महत्वपूर्ण बंदर है जहांसे अरब और पूर्वीय अफ्रीका का आयात और निर्यातका व्यापार होता है। अदनके बाद दूसरा महत्वका बंदर सैय्यद बंदर है। यहा भूमध्य-सागर और श्यामसागरके समुद्रतटवर्ती प्रदेशोंका माल चढ़ता उतरता है। सैय्यद बंदरके बाद सिक-न्दरिया और फिर फ्रान्सतटवर्ती मार्सेलीज नामक बंदर आयेगा। सिकन्दरिया, मिस्र, पैलेस्टाइन तथा एशियामाइनरकी उपजके निकासका प्रधान बंदर है। इसी बंदरसे योरोपका माल उपरोक्त भूखण्डोंमें प्रवेश करता है। मार्सेलीज बंदर बड़े महत्वका बंदर माना जाता है। यहा पेरिस आदि कितने ही केन्द्रोंसे माल विदेश भेजनेके लिये आता है। मार्सेलीजके समान ही महत्वका एक दूसरा

बंदर इटलीमें है जिसे ब्रिंडसी कहते हैं। इस बंदरका भी सम्बन्ध पेरिस आदि योरोपके कितने ही केन्द्रोंसे है।

योरोपके विभिन्न औद्योगिक केन्द्र व्यापारिक जलमार्गकी सुविधाके लिये वहांके बंदरोंसे नहरों और रेलवे लाइनोंके द्वारा परस्पर जोड़से दिये गये हैं। फ्रांसकी राजधानी पेरिस एक बहुत बड़ा रेलवे जंकशन है। यहांसे रेलवे लाइनकी एक शाखा दक्षिण पश्चिम योरोपमें आर्लियन्स तथा बोर्डो-तक जाती है और वहांसे दक्षिणकी ओर आगे बढ़ती हुई स्पेनकी राजधानी मैड्रिडतक पहुंचती है। इस प्रकार रेलवे लाइन द्वारा स्पेन और फ्रांस जहां मिल जाते हैं वहां पेरिस और मैड्रिड भी एक दूसरे से सम्बद्ध माने जाते हैं। इसी प्रकार पेरिससे एक दूसरी रेलवे लाइन रोनकी उपजाऊ घाटीसे होती हुई फ्रांसके औद्योगिक केन्द्र डीजन और लियान्सको पारकर मार्सेलीज बंदर पहुंचती है। डीजनसे दूसरी रेल लाइन निकलती है और वह आल्पस नामक संसार प्रसिद्ध पर्वतश्रेणीको पारकर इटलीमें प्रवेश करती है और भूमध्य सागरतटवर्ती औद्योगिक केन्द्र मिलानको मिलाती है। इस प्रकार ब्रिण्डसी नामक बंदर तकका सम्बन्ध जुड़ जाता है और ओरियन्टल एक्सप्रेस नामक लाइन पेरिस और कुस्तुन्तुनियाका सामीप्य सम्बन्ध संस्थापित करती है। हमारे इस विवेचनसे पाठक सहजमें समझ गये होंगे कि कि भूमध्य सागरका प्रसिद्ध जलमार्ग अन्तराष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे कितने महत्वका है और साथ ही उसका भारतसे कैसा सम्बन्ध है। यह तो हुआ पश्चिमीय जल-मार्गका विवरण, अब हम भारतके वैदेशिक व्यापार वाणिज्यकी दृष्टिसे पूर्वीय जलमार्गकी चर्चा करेंगे।

पूर्वीय जलमार्गको पूर्व एशियायी जलमार्ग भी कहते हैं। भारतसे चलनेके बाद सबसे महत्वपूर्ण बंदर सिंघापुरका बंदर है। सिंघापुर छोड़नेके बाद, हागकांग, कैन्टन, सिंघाई, याकोहामा, कोबी, टोकियो आदि संसार प्रसिद्ध बंदर एवं औद्योगिक केन्द्र क्रमशः आते हैं। सिंघापुरसे ही एक दूसरी लाइन जावा जाती है और वहांसे जहाज आस्ट्रेलिया जाते हैं। इसी पूर्वीय जलमार्गसे भारत जूट, चाय, चावल, रुई, अफीम, अनाज आदि पदार्थ पूर्वीय देशोंको भेजता है जो उपरोक्त बंदरोंपर उतारे जाते हैं। इसी प्रकार इन पूर्वीय देशोंका माल इन्हीं बंदरोंपर चढ़ता है और भारत आता है। इस मालमें मुख्यतया शक्कर, सूतीमाल, रेशम तथा रेशमी माल ही होता है। इस जलमार्गका प्रथम बंदर उपरोक्त क्रमके अनुसार सिंघापुरका है। यहां व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र है। इसके बाद जावाका प्रधान बंदर बतानिया आता है जो पूर्वीय देशोंकी यात्रा करनेवाले जहाजोंका विश्राम स्थल है। इसके बाद दक्षिण चीनका हांगकांग और पूर्वीय चीनका शिंघाई नामक बंदर बड़ाही महत्वका माना जाता है। इसी जलमार्गपर नागासाकी और याकोहामा नामक जापानके प्रसिद्ध बंदर भी आते हैं।

सिंघापुरसे एक तीसरी शाखा भी गयी है जो इण्डोचाइना, उत्तर बोर्नियो और फिलिपीन द्वीपको जाती है। आस्ट्रेलियाके लिये सीधे कोलम्बोसे ही जहाज जाते हैं जो आस्ट्रेलियाके पर्थ ऐडिलेड तथा मेलबोर्न बंदरकी यात्रा करते हैं। पर इसके अतिरिक्त भी सिंगापुरसे जहाज जाते हैं जो आस्ट्रेलियाके सिडनी बंदरमें प्रवेश करते हैं।

ये तो हुए भारतके पश्चिमीय तथा पूर्वीय व्यापारी जलमार्ग अब इसी सम्बन्धमें यह भी समझ लेना चाहिये कि अमेरिकाका इस देशसे कैसा सम्बन्ध है।

भारतके कलकत्ता नामक नगरसे जहाज माल लेकर ४५ दिनमें न्यूयार्क पहुंचता है और वहांसे डाकपत्र आदि लेकर २८ दिनमें कलकत्ता पहुंचता है।

भारतसे पूर्वीय जलमार्ग द्वारा जापानके प्रसिद्ध बंदर याकोहामा तथा टोकियोतक पहुंचनेके सम्बन्धमें हम चर्चा कर चुके हैं। अब जापानसे अमेरिकातककी चर्चा करनेसे ही काम चल जायगा। जापानके याकोहामा और टोकियो नामक नगरसे जहाज छूटकर अमेरिकाके पश्चिमीय समुद्रतटवर्ती संसार-प्रसिद्ध बंदर सान फ्रान्सिस्को पहुंचता है। और वहांसे पनामा नहरके रास्तेसे न्यूयार्क पहुंचता है। पर यात्री और अन्य आवश्यक माल सान फ्रान्सिस्कोसे रेलवे द्वारा न्यूयार्क पहुंचता है। इसी प्रकार पश्चिमीय मार्गसे अमेरिकाका सम्बन्ध इङ्गलैण्डके लिवरपूल नामक बंदरसे है। यहींसे जहाज अमेरिकाको छूटते हैं और अटलान्टिक महासागर पारकर न्यूयार्क जा पहुंचते हैं। इस प्रकार भारत और अमेरिकाका सम्बन्ध दोनों ही जलमार्गों द्वारा हो जाता है।

भारत अफ्रिकाके बीच होनेवाला व्यापार प्रायः बम्बईसे ही अधिक होता है। बम्बईसे जहाज मुम्बासा नामक अफ्रिकाके बंदरको जाते हैं और वहासे समस्त देशको माल जाता है। कोलम्बोसे भी मैडागास्कर होते हुए जहाज अफ्रिकाके डर्बन और केपटाउन नामक बंदर पहुंचते हैं। आशा है उपरोक्त विवरणसे पाठक संक्षिप्त रूपमें संसारके सभी व्यापारिक जलमार्गोंसे परिचित हो जायगे।

विदेशी हुण्डी।

संसारके प्रभावशाली भागों और भारतके व्यापार वाणिज्यसे उनके संघनिष्ट सम्बन्धकी चर्चा करते हुए हम पहले पर्याप्त प्रकाश डाल चुके हैं। अब हम व्यापार वाणिज्यसे सम्बन्ध रखने वाले दूसरे महत्वपूर्ण विषयकी यहां सैद्धान्तिक चर्चा करेंगे। यह महत्वपूर्ण विषय विदेशी हुण्डीका है। इसका सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यसे इतना निकटतम है कि इसके बिना व्यापार वाणिज्य जीवित ही नहीं रह सकता।

योरोपीय महासमरके पूर्व विदेशी हुण्डीकी ओर जन साधारणका ध्यान विशेष रूपसे नहीं गया था पर उसके बादकी अनिश्चित परिस्थितिके कारण उसे इस ओर ध्यान देनेके लिये बाध्य होना

पड़ा। योरोपीय महासमरने संसारकी सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितिको ही डांवा डोल नहीं कर दिया है वरन उसने शताब्दियों के कष्ट सहन द्वारा बनाये गये आर्थिक प्रभावको भी चूरचूर कर डाला है फल यह हुआ है कि संसारके विनिमयको ऐसा प्राणघातक धक्का लगा कि उसका युद्धके पूर्वकी परिस्थितमें आजाना आज सर्वथा असम्भव सा मालूम हो रहा है। मालके मोल की स्थिरता, स्वाभाविक क्रमानुसार विनिमयका अनुपातिक नियमन, अन्य सीमावद्ध परिवर्तन आदि सभी विशेषतायें आज कान कहानी सी हो रही है। यह सब कुछ हो गया और अन्य देशों की सरकारोंने अपने २ देशके अर्थशास्त्रियों और राजनीति विशारदों के सहयोगसे अपने २ देशके विदेशी विनिमयका नियमन कर लिया है अतः वहाकी अवस्था फिर भी बहुत कुछ सुधर चली है। पर भारतकी अवस्था अभीतक सुधारकी ओर अग्रसर नहीं हुई। क्यों कि जब तक विदेशी विनिमयके पीछे तत्कालिक समस्या सुलझानेके लिये स्वर्णमुद्राका बल नहीं रहता तब तक विनिमय समस्या सदा अव्यवहारिक ही रहती है। यही कारण है कि भारत आज तक अपनी विदेशी हुण्डीको स्वराष्ट्रहितका नहीं बना सका। भारत सरकार जबतक सोनेके सिक्के के स्थानमे कागजके नोट छापकर काम निकालती रहेगी और जबतक भारतके ऋणकी सीमा निश्चित न कर देगी तब तक विदेशी हुण्डीकी समस्या देश हितकी दृष्टिसे सुलझ नहीं सकती। वास्तवमें यह बड़े ही परितापका विषय है कि भारतमें राजनीति और अर्थ नीतिकी पारस्परिक खिचड़ी बना दी गयी है कि जिसके कारण अर्थशास्त्र सम्बन्धी नियमों की अवहेलना कर राजनैतिक प्रवाहमें डूबी हुई एक विचित्र प्रकारकी नीतिका अवलम्ब लिया गया है जिसके प्रतिफल स्वरूप भारतका आर्थिक वातावरण क्षुब्ध हो उठा है।

भारत और विदेशी हुण्डी

भारतीय व्यापारियों को विदेशी हुण्डीकी ओर विशेष रूपसे ध्यान रखना चाहिये। अतः हम विदेशी हुण्डीके बाजारकी चर्चा कर देना आवश्यक समझते है। यह वह बाजार है जहां विदेशी हुण्डीके दलाल इकट्ठे होकर विभिन्न देशों केबीच होनेवाले पारस्परिक व्यापारके कारण उत्पन्न होनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय लेन देनको सुलझाते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सम्बन्धी लेन देनमें काम आनेवाली विदेशी हुण्डिया इसी प्रकारकी उलझनों को सुलझानेके लिये तैयार की जाती है। इस प्रकार मालके मोलका पारस्परिक विनिमय निश्चित किया जाता है। इसी निश्चित विनिमयके अनुसार एक देशके मालका मूल्य दूसरे देशके मालके रुपमें चुकाया जाता है यदि कहीं माल देनेपर भी पूरा मूल्य न चुकाया जा सका तो शेष मूल्य सोना भेजकर चुकाया जाता है। इस प्रकारके व्यापारका सबसे बड़ा बाजार आजकल लन्दन माना जाता है। बृटेनका सिक्का सोनेका है अतः सभी देशोंका विनिमय उसी सिक्केके आधारको लेकर निश्चित किया जाता है।

भारत कृषि प्रधान देश है अतः यहांसे कच्चा माल विदेश भेजा जाता है और अन्य देशोंका बना हुआ तैयार माल भारतके कच्चे मालके विनिमयमें भारत आता है। उदाहरणार्थ भारतसे एक व्यक्ति बृटेनको जूट भेजता है और दूसरा व्यक्ति बृटेनसे भारत मोटर मंगाता है ऐसी स्थितिमें जूट और मोटरका मूल्य वसूल करनेके लिये रुपये तो एक देशसे दूसरे देश नहीं भेजे जाते हां केवल मालका पारस्परिक बदला ही दोनों देशोंके बीच हो जाता है। जूट भेजनेवाला व्यक्ति अपने कागज लेकर बैंकमें उपस्थित होता है और कहता है कि मैंने जो जूट बृटेन भेजा था उसका मूल्य मुझे मंगा दो। इसी प्रकार मोटर खरीदनेवाला व्यक्ति भी बैंक जाता है और कहता है मैंने जो मोटर मंगायी है उसका मूल्य बृटेन भेज दो। इन दोनों प्रकारके व्यापारसे यदि कोई बात स्पष्ट होती है तो यह कि एक व्यक्ति निर्यातका मूल्य भारत मंगाना चाहता है और दूसरा व्यक्ति आयातका मूल्य भारतसे बाहर भेजना चाहता है। ऐसी स्थितिमें बैंक आयातके मूल्यको जमा करानेवाले व्यक्तिसे मोटरका मूल्य ले लेता है और निर्यातका मूल्य मंगानेवालेको जूटका मूल्य चुकाता है और उससे ही कह देता है कि वह बृटेनके अपने आढ़तियेको सूचित कर दे कि जूटका मूल्य उसे मिल गया इस प्रकारकी व्यवस्था कर लेनेपर यहांका बैंक अपनी लन्दनवाली शाखाको सूचित करता है कि जूटके आढ़तियेसे मिली हुई रकम मोटर भेजनेवालेको दे दी जाय क्योंकि मोटर खरीदनेवालेने भारतमें उसका मूल्य चुका दिया है जो जूटवालेको जूटके भुगतानमें दे दिया गया है। बृटेनका बैंक ऐसा ही करता है और इस प्रकार मालका मोल दोनों ही व्यापारियोंको यथा समय मिल जाता है। इसी प्रकारके व्यापारिक साधनका नाम विदेशी हुण्डी है। इसमें एक व्यक्तिका जूट दूसरे व्यक्तिकी मोटरसे हस्तान्तरित हो जाता है।

अब दूसरा महत्वका यह प्रश्न है कि मोटर मंगानेवाला व्यक्ति बैंकमें कितने रुपये मोटरके जमा करे कि जिसको पाकर बैंक जूट भेजनेवाले व्यक्तिको रुपयेके रूपमें जूटका मूल्य चुकावे। स्मरण रहे कि मोटरका मूल्य पौण्डके रूपमें है।

यदि विदेशी हुण्डीका भाव युद्धके पूर्ववाला रहता तो १) रु० १६ पेंसके बराबर होता है। ऐसी दशामें १ हजार पौण्ड मूल्यकी मोटरके लिये मोटरके खरीदारको १५०००) रु० जमा करने पड़ते और १५०००) रु० जूटवालेको जूटका मोल मिलता क्योंकि जूटवालेने भी बृटेनके बाजारमें १ हजार पौण्डका जूट बेच रक्खा था। परन्तु आजकल वर्तमानमें १) रु० का मूल्य १६ पेन्सके स्थानमें १८ पेंस स्थिर कर दिया गया है अतः १६ पेंसके हिसाबसे १ हजार पौंडकी मोटरके लिये १५०००) के स्थान पर १८ पेन्सके भावसे उसे १३,३३३)रु० ही देने पड़े और जूट वालेको १ हजार पौंड मूल्यके जूटका मूल्य भी १५०००) रु० के स्थान पर १३,३३३) रु० मिला। इस प्रकार यदि [illegible] में हानि जूटके व्यापारी ही की हुई। क्योंकि मोटर वालेको तो बृटेनमें १ हजार

पौंड मिल ही गया पर यहांके कच्चे मालके व्यापारीको १५०००) रु० के स्थान पर केवल १३,३३३) मिले। इस प्रकार उसे प्रति १ हजार पौंड पर १६६७) रु० की हानि रही।

वर्तमानमें भारतसे विदेश इतना अधिक कच्चा माल जाने लगा है कि उसके विनिमयमें जो भारतकी आवश्यकताके लिये तैयार माल विदेशसे आता है मूल्यमें कम होता है। अपनी आवश्यकता भारत विदेशके बने हुए मालको मंगा कर पूरीकर लेता है फिर भी उसे और देशोंसे कच्चे मालका मूल्य लेना ही रह जाता है। यह शेष मूल्य उसे सोनेके रूपमें मिलना चाहिये था पर लन्दन स्थित भारत सचिव भारतकी ओरसे कौंसिल बिल नामक सरकारी कागज बेंचकर यह शेष रकम भी वहीं वसूल कर लेते हैं। युद्धके पूर्व भारतमें सोनेका सिक्का था अतः अन्तर्राष्ट्रीय लेन देनके भुगतानमे बहुत बड़ी सुविधा रहती थी पर अब १८ पेंसकी हुंडीके भावने भारतके व्यापारको जहां हानि पहुंचायी थी वहां सोनेके सिक्केके अभावने तो उसका सब काम ही तमाम कर दिया है। ऐसी दशामें शेष रकम जो सोनेके रूपमें भारतको मिलनी चाहिये थी वह भी भारत सचिव कौंसिल बिल बेंच कर वसूल कर लेते है और भारतको देखने और समझनेके लिये कागज़ ही मिलते है। कौंसिल बिलका सम्बन्ध यों तो व्यापारियोंकी रकमसे ही है पर भारत सचिवके आफिसका व्यय भार भी उसी पर जुड़ा रहता है अतः भारतकी ओरसे भारतके मालका शेष मूल्य तो वह लन्दनमें ही वसूल कर लेते हैं और साथ ही अपना खर्च भी निकाल लेते हैं। भारतको जो कौंसिल बिल मिलते हैं वह केवल हुंडी हैं जिनका रुपया कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रासकी सरकारको चुकाना पड़ता हे। जब बाजारमें कौंसिल बिलोंकी माग नहीं रहती तब विदेशी विनिमयका भाव भी गिरने पर आ जाता है अतः ऐसी परिस्थितिको सम्भालनेकी दृष्टिसे भारत सरकार 'रिवर्स कौंसिल बिल' नामक भारत सचिव पर हुंडी करके बाजारमें बेचती है और इस प्रकारसे रकम वसूल कर विदेशी हुंडीका भाव १८ पेन्स पर सचेष्ट हो स्थिर रखती है।

उपरोक्त विवेचनसे पाठक भली भाँति समझ गये होंगे कि विदेशी हुंडी, कौंसिल बिल तथा रिवर्स कौंसिल बिल क्या है और उनका भारतके व्यापारसे कितना अधिक सम्बन्ध है। साथ ही वे यह भी समझ गये होंगे कि १८ पेन्सके विदेशी विनियमके कारण भारके कच्चे मालके व्यापारको कितनी हानि हो रही है। ऐसी दशामें व्यापारियोंको चाहिये कि मालका मोल स्थिर करते समय वे इन सब बातोंका पूर्ण ध्यान रक्खें और साथ ही मालका मूल्य चुकाते समय भिन्न भिन्न देशोंके सिक्कोंका पारस्परिक भाव भी ध्यानमें रक्खे और जिस प्रकारके सिक्केके रुपमें मूल्य चुकानेमे सुविधा हो उसीसे भुगतान करें।

हुण्डीके सम्बन्धमे अन्य व्यवहारिक बातोंपर हम यहा कुछ भी न लिखेंगे क्योंकि सभी बातोंको हमारे पाठक भली प्रकार जानते हैं। हमने तो ऊपरके पृष्ठोंमें केवल सैद्धान्तिक दृष्टिसे ही

विचार व्यक्त किये हैं। संसारके विभिन्न देशोंमें व्यवहृत सिक्कोंके अनुमानित विनिमयका भाव नीचे दिया है। पाठक अपने यहाके स्थानिक बैंकोंसे भाव पूछ लिया करें।

विदेशी सिक्कोंका चलतू भाव

आस्ट्रेलिया—यहाके सिक्के बृटेनके सिक्केके समान होते हैं।

अस्ट्रिया—(वर्तमान जूगोस्लाविया) हंगरी का प्रधान सिक्का क्रोन है जो चांदीका होता है। १०० हेलर=१ क्रोन १ क्रोन=१० पेन्स

१, २ और ५ क्रोनतकके सिक्के चादीके होते है और १० तथा २० क्रोनके मूल्यके सिक्के सोनेके होते हैं।

३ बेलजियम—यहाका प्रधान सिक्का फ्रांक है फ्रांसके सिक्कोंके समान हैं।

फ्रांस—यहाका प्रधान सिक्का फ्रांक है।
१०० सेन्टिमूस=१ फ्रांक
१ फ्रांक=९ ३/१० पेन्स

जर्मनी यहाका प्रधान सिक्का मार्क है।
१०० फेनिङ्ग=१ मार्क
१ मार्क=२१ ३/५ पेन्स

इटली—यहाका प्रधान सिक्का लिरा है।
१०० सेन्टिसिमी=१ लिरा
१ लिरा=९ ३/५ पेन्स

स्वीडन—यहाका प्रधान सिक्का क्रोन है।
१०० ओर=१ रिक्स डेलर या क्रोन
१ क्रोन=१ शि० १½ पेन्स

रूस—यहाका प्रधान सिक्का रूबल है जो चांदीका होता है।
१०० कोपेक=१ रूबल
१ रूबल=[illegible] शि० १½ पेन्स

हालैण्ड—यहाका प्रधान सिक्का फ्लोरिन है।
१०० सेन्ट=१ फ्लोरिन
१ फ्लोरिन=१ शि० ८ पेन्स

डेनमार्क—यहाका प्रधान सिक्का क्रोन है।
१०० ओर१ क्रोन
१ क्रोन१ शि० १½ पेन्स

नार्वे—यहाका प्रधान सिक्का क्रोन है। यहाके सिक्के डेनमार्कके सिक्कोंके समान होते हैं।

फारस—यहाका प्रधान सिक्का क्रान है।
२० शाही=१ क्रान
१ क्रान=१० पेन्स

संयुक्त राज्य अमेरिका—यहाका प्रधान सिक्का डालर है। १०० सेन्ट=१ डालर
१ डालर=४ शि० १½ पेन्स

विदेशी सिक्कोंका चलतू भाव

चीन—यहांका प्रधान सिक्का यूयान है।
१ यूयान=१ शि० ८ पेन्स

बृटेन—यहांका प्रधान सिक्का पौण्ड है।
१२ पेन्स=१ शि० २० शि०=१ पौण्ड

जापान—यहांका प्रधान सिक्का येन है।
२०० सेन=१ येन १ येन=२ शि० ½ पेन्स

भारत—यहांका सिक्का रुपया है
१ रुपया=१८ पेन्स

ऊपर दिये गये विभिन्न देशोंके सिक्कोंका मूल्य विदेशी विनिमयकी सुविधाके लिये हमने बृटेनके व्यवहृत सिक्के पौ० शि० पेन्सके रुपमें ही देनेकी चेष्टा की है।

संसारमें विदेशी हुण्डीका सबसे बड़ा एवं प्रधान बाजार लंदन है। अतः वहां चलने वाले सिक्कोंके साथ अन्य देशोंके सिक्कोंका पारस्परिक विनिमय यहां दिया गया है।

निर्यातके सम्बन्धमें अन्तिम निष्कर्ष

पहलेकी अपेक्षा भारतके निर्यात व्यापारमें अवश्य ही वृद्धि हुई है पर इसमें अधिक पूंजी विदेशियोंकी ही लगी है। भारतकी साधारण जनता विदेशी पूंजीके बल चलनेवाले भारतके निर्यात् व्यापारको उन्नतिकी ओर बढ़ानेमें अपना खून पसीनेकी भांति बहा रही है। भारतके कच्चेमालके प्रधान खरीदारोंके साथ भारतका व्यापार स्वतंत्र रूपसे सीधा चलने लगा तो फिर बृटेनको बीचमें हाथ डालकर अकारण उसका भार अधिक करनेकी आवश्यकता ही न रह जायगी और साथ ही भारतकी उपजको संसारके बाजारोंमें घूम घूम कर बेंचनेके कामसे भी बृटेन सहज ही छुटकारा पा जायगा। ऐसा करनेसे भारत भी सीधे मार्गसे अपनी बेचीं हुई उपज का मूल्य वसूल कर इकट्ठा कर सकेगा और बृटेन आदिसे तैयार माल मंगानेके लिये रुपया संग्रह कर लेगा और भुगतान भी समयपर दे सकेगा।

योरोपवाले अपने कारखानोंसे पक्का माल तैयार करनेके लिये कच्चे मालपर सर्वरूपेण निर्भर रहते है। यह कच्चा माल सारा का सारा ही बाहरसे योरप आता है। अतः कच्चा माल उत्पन्न करने वाले देशोंको अपना माल सस्ते भावपर बेच डालना वास्तवमें प्राण संघातक ही सिद्ध होगा। क्योंकि उन्हे अपना सस्ता माल बेच कर मंहगा माल तो खरीदना ही पड़ेगा। पर बड़े ही खेदकी बात है कि भारतके शुभेच्छु बनने वाले कितने ही ऐसे लोग हैं जो भारतको बलात् 'इम्पीरियल प्रिफरेन्स' नामक कड़ी जंजीरसे जकड़ कर कस रहे हैं और चाहते है कि इस नीतिके अनुसार वह अपनी नीति संकुचित करले और एक सीमावद्ध क्षेत्रमें ही अपना कच्चा माल बेचा करे तथा अपनी आवश्यकताकी पूर्तिके लिये तैयार माल भी उसी निश्चित परिमित क्षेत्रसे खरीदा करे पर यहां हम इस विवादको विस्तृत रूपसे छेड़ना नहीं चाहते पर इस सम्बन्धमें इतना तो अवश्य ही कहेंगे और भारत राष्ट्रके हितकी दृष्टिसे जोर देकर कहेंगे कि भारतके निर्यात्के सम्बन्धमे विदेशी बाजारोंको सोमावद्ध करनेमे भारतके औद्योगिक

विकाससे कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। हां कच्चे मालका मोल कम करनेसे माल उत्पन्न करने और बेंचने वालोंकी जेबपर जो हमला करनेका घातक परिणाम होगा वह अवश्य ही इसी नीतिका प्रतिफल सिद्ध होगा।

भारतमें तैयार किये जानेवाले और बाहर भेजे जानेवाले मालकी क्वालिटी अवश्य ही अच्छी होनी चाहिये। इससे विदेशके बाजारोंमें उसे प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और साथ ही भारतके घरेलू उद्योग धन्धोंको भी उत्थानकी ओर बढ़नेके लिये बल मिल जायगा। अन्तमें इस प्रसंगपर हम यही कहेंगे कि भारतका पक्ष सुदृढ़ है। क्योंकि उसके पास यथेष्ट माल है। और वह जहां चाहे उसे बेंच सकता है। रह गयी इम्पीरियल प्रिफरेन्सकी बात जो वास्तवमें भारतकी वर्तमान परिस्थितिमें अवश्य ही प्राणघातक है फिर भी शान्ति और सुविधाकी दृष्टिसे आयात का सम्बन्धी लाभ भी इससे उठाया जा सकता है।

भारत की गृह सम्पत्ति

Commercial Products of India.

जूट
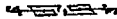
जूट

संसारके औद्योगिक क्षेत्रमें रेशेदार पदार्थोंकी उपयोगिताकी दृष्टिसे रुईका स्थान सबसे श्रेष्ठ है। इसके बाद यदि किसी रेशेदार पदार्थका स्थान है तो वह जूटका। जूट एक प्रकारके पौधोंके रेशोंको कहते है। ये पौधे एशिया, अफ्रीका और अमेरिकाके विस्तृत भूभागमें मिलने वाले कई प्रकारके पौधोंसे बहुत कुछ मिलते जुलते हैं। फिर भी ये पौधे खेतोंमें बोये जाते हैं और जंगली हालतमें भी मिलते हैं। अतः दोनोंमें यदि कोई प्रकट अन्तर है तो केवल इतना ही, नहीं तो दोनों प्रकारके पौधोंमें बनस्पति शास्त्रकी दृष्टिसे कोई विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। जंगली पौधोंका व्यवसायिक क्षेत्रमें कोई स्थान नहीं है। केवल खेतमें बोये जाने वाले पौधोंके रेशे ही कामकी वस्तु सिद्ध हुए हैं और इन्हींको जूट शब्दसे सम्बोधित किया जाता है। संसारकी विभिन्न भाषाओंमें जिन जिन शब्दोंसे इस रेशेदार पदार्थको सम्बोधिन किया जाता है वे सभी एक ही सूत्रसे निकले हुए प्रतीत होते हैं।

जूटके नाम

अंग्रेजी भाषामें 'जूट' और उसके साहित्य में इसके लिये (Jews mallow) 'जूज मैलो' शब्द भी प्रयोग किया गया है। फ्रेंच भाषामें 'जूट' या Mauve des Juifs अथवा Corde Textile कहते हैं। जर्मन भाषामें इसे जूट कहते है। इसी प्रकार भारतकी देशी भाषाओंमें इसके लिये 'पाट,' झूट; झोटो; झूटो, आदि शब्द भी आये हैं। संस्कृत साहित्यमें इसके लिये 'पाट' जूट और जटा शब्दका प्रयोग पाया जाता है। सम्भवतः संस्कृत भाषाके 'झट' शब्दसेही इसकी उत्पति हुई होगी। इस सम्बन्धमें बाबू रमेशचंद्रदत्त और कैम्ब्रिज विश्व विद्यालयके प्रसिद्ध अध्यापक

स्कीटका भी यही मत है। कॅम्ब्रिजकी फिलासोफिकल सोसाइटीमें व्याख्यान देते हुए प्रो॰ स्कीटने एक वार इस शब्दकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें प्रकाश डाला था। आपने संस्कृतके 'भट' शब्दकी विस्तृत व्याख्या कर सिद्ध किया था कि इस शब्दसे स्वाभाविक तीन अर्थ निकलते हैं जिनसे अंग्रेजी भाषामें व्यवहृत जूट शब्दके अर्थका पूरा बोध हो जाता है।

जूटके प्रकार और उनका देश विशेषसे सम्बन्ध

हम पहिले लिख चुके हैं कि ये पौधे दो प्रकारके होते हैं जिनमेंसे एक वे जो जंगलोंमें स्वेच्छासे उत्पन्न होते हैं और दूसरे वे जो खेतोंमें बोये जाते हैं। जंगली पौधोंके सम्बन्धमें हम चर्चा करना उपयुक्त नहीं समझते क्योंकि व्यवसायिक क्षेत्रमे इनका कोई मूल्य नहीं है। हम केवल खेतोंमें बोये जाने वाले पौधोंकी ही यहा चर्चा कर रहे है। ये पौधे भी दो प्रकारके होते हैं। इनका आकार प्रकार सामान्यतया एक सा होता है और दोनोंमें एक हीसे फूल भी आते हैं। अतः इनकी आकृतिको वाह्य दृष्टिसे देखकर दोनोंके पारस्परिक अन्तरको पहिचानना कठिन है। इनके फलोंको देख कर ही पौधोंके अन्तरको पहिचाना जा सकता है।

जिन देशोंमें इन पौधोंकी खेतीकी जाती है उनकी चर्चा करते हुए ब्रेसचनीडरने अपना मत व्यक्त किया है। आप (Brelsch neider) का मत है इस जातिका एक पौधा चीनके निङ्गपो Ning-po के विस्तृत मैदानमे अधिकतासे पाया जाता है। इसके रेशेसे चीनवाले चावल और अन्य प्रकारके अनाज भरनेके लिये बोरे बनाते हैं। इसी प्रकार टिनसिन (चीन) Tientsin के मैदानमें उत्पन्न होनेवाले पौधेमें यह एक प्रधान है। इसकी लम्बाई भी बहुत होती है। चीन स्थित क्यू Kew के वनस्पति उद्यानमें रक्षित रक्खे गये पौधों और उनके रेशोंसे प्रकट रूपसे सिद्ध होता है कि आजकल जूटके मिलने वाले पौधे टिनसिनमे मिलनेवाले पौधोंकी ही जातिके हैं।

भारतमें मिलनेवाले जूटके पौधे यदि कहीं प्रधान रूपसे मिलते हैं तो बंगाल और आसाममें। भारतका यह भूभाग चीनकी कितनी ही विशेषताओंका विचित्र संग्रहालय है। यहाकी भौगोलिक साम्य अवस्थाके अतिरिक्त यहांके लोगोंकी कितनी ही रस्म रिवाजें भी वहाकी रस्म रिवाजोंसे बहुतकुछ मिलती हैं। खान पानमें भी साम्य भावकी पर्याप्त झलक है। जल वायुकी समानता यहाकी एक सा प्रभाव डालती है। ऐसी दशामे वनस्पति शास्त्रके विशेषज्ञोंकी मतानुमोदित तर्क पद्धतिके बल कहा जा सकता है कि हो न हो बंगालमें उत्पन्न होनेवाले पाटके पौधे चीनसेही लाये गये हों। कलकत्तेके रोयल बोटेनिकल गार्डन नामक वनस्पति उद्यानके संस्थापक और संचालक श्रीयुत राक्सबर्ग Mr. Roxburgh का मत है कि लाल रंगका पाट बंगालमें अधिक उत्पन्न होता है। इस पौधेके बीज चीनके कैन्टन नगरसे मंगाये गये थे।

चीनमें उत्पन्न होनेवाले पौधेके रेशेसे तैयार होनेवाला जूट भी ऊंची श्रेणीका होता है। इसके सम्बन्धमें रमफियस Rumphius का मत है कि बंगाल, अराकान, और दक्षिण चीनमें जूट अधिक उत्पन्न होता है। बंगालकी चर्चा न कर चीनके सम्बन्धमें आप लिखते हैं * कि इस रेशेसे उत्तम सफेद सूत ऐंठा जाता है जो रुइके सूतसे कहीं अधिक मजबूत होता है परंतु यह प्रायः झुका हुआ रहता है। इसपर चूनेके पानीका प्रयोग किया जाता है'। रही इसकी उपजकी बात वह भी सरकारी कागजोंसे पता चलता है कि सन् १९०३ ई०में अकेले टिनसिन (चीन) से ४० हजार हण्डर-वेट जूट विदेश भेजा गया था।†

इतने प्रमाणिक परिशीलनके पश्चात भी यह सिद्ध नहीं किया जा सकता है कि क्यूके वनस्पति उद्यानमें रक्षित नमूनेके पाटके पौधे भारत, मलाया, चीन या जापान किसी भी देशमें जंगली अवस्थामें पाये जाते हैं। ऐसी अवस्थामे औद्योगिक क्षेत्रमें जिनकी उपयोगिता प्रमाणित हो चुकी है उन्हीं दो प्रकारके बोये जाने वालों पौधोंकी चर्चा होती है।

जूटपर वैज्ञानिक दृष्टि

'जूट' के सम्बन्धमें वैज्ञानिक खोज करनेवालोंमें क्रास और बीवान ही ऐसे वैज्ञानिक हैं कि जिन्होंने सबसे अधिक परिश्रम किया है। आप लोगोंने अपनी खोजका तत्त्वांश प्रकाशित करते हुए सन् १८८९ई० के 'जर्नल आफ दि केमिकल सोसाइटी' (Journal of the chemical Society) नामक प्रतिष्ठित पत्रमें जो मंतव्य व्यक्त किया था उसके आधारपर ही हम यहां कुछ बातों की चर्चा प्रसंगवश कर देना उचित समझते है। 'जूट' की रासायनिक सारिणी $C_{12}, H_{18} O_9$ अर्थात् C= 47 0; H=6 0, O=17·0 है। इसमें सेल्यूलूजका अंश ७८-८० प्रतिशत और गैर-सेल्यूलूजका २०-२२ प्रतिशत है। रसायन शास्त्रसे अनुराग रखनेवालोंके लिये यह विश्लेषण इस प्रकार है। सेल्यूलूज $3\ C_6\ H_{10}\ O_{15}$ और गैर सेल्यूलूज $C_6\ H_6\ O_3$ है।

'जूट' बहुत ही सुकुमार वस्तु है। इस पर दुर्बल रासायनिक पदार्थका प्रभाव भी बिना पड़े नहीं रहता। पानीमें भींगनेके बाद उष्णता और वायुका संसर्ग जहां एक बार पहुंचा कि यह खराब हो गया। पौधेके डंठलमें ६ से २० तक जूटके रेशे मिलते हैं जो परिमाणुवादके सिद्धान्तानुसार परस्पर मिले हुए पाये जाते हैं। जूटके रेशेकी लम्बाई वैज्ञानिकोंने १.५ से ३ मीलीमीटरतक निश्चित की हैं। जूटके जिन रेशोंका रंग गहरा और तम्बाकूके समान होता है उनमें 'आयोडीनके' अंशका आभास रहता है। और जिनपर गहरा पीला रंग रहता है उनमें ऐनी लाइन सल्फेटका अधिक अंश माना

* देखिये *Commercial products of India by Sir George Watt*

† देखिये *Board of Trade Journal* की सन् १९०३ के २९ अक्टूबर वाली प्रति।

जाता है। जूटके जिन रेशोंपर बैंजनी रंग मालूम पड़ता है उनमें फ्लोरोगल्यूकोल और हाईड्रो-क्लोरिक एसिड (Phloroglucol & Hydrocloric acid) का अंश पाया जाता है। गहरे * अल्कलीजके पानीमें जूटके रेशे भिगोने पर उनमें कौतूहलपूर्ण परिवर्तन देखा जाता है। उपरोक्त संमिश्रित पदार्थोंका सम्पर्क होते ही जूटके रेशे फूल उठाते हैं और कोमल हो जानेके बाद लहरदार घुंघराली आकृतिके हो जाते हैं जो देखनेमें† ऊनके समान मालूम होते हैं। इस प्रयोगके किये हुए रेशोंको 'मरसराइज्ड' रेशे कहते हैं।

जूट में सेल्यूलूजका भाग उसी परिमाणमें मिलता है कि जिस परिमाणमें वह इसी प्रकारके फ्लैक्स आदि अन्य पौधोंके रेशोंमें पाया जाता है। 'जूट' में ९.९३ प्रतिशत जलका अंश पाया जाता है। उबाले जानेके बाद जूट ११ प्रतिशत खारका भाग निकाल देता है अर्थात् जूट का वजन इतना कम हो जाता है। यदि 'जूटको कास्टिक सोडा (1% Na_2O) में डालकर ५ मिनटतक उबाला जाय तो उसका वजन १३.३ प्रतिशत कम हो जायगा और १ घन्टेतक उबाला जाय तो १८.३ प्रतिशत वजन कम हो जायगा। यदि 'जूट' को चमकदार बनानेके लिये मरसराइज करनेकी विधिके अनुसार सल्यूशन आफ कन्सेन्ट्रेटेड अल्कलीज (33% Na_2O) में उबाला जाय तो वह ११.० प्रतिशत वजनमें कम हो जायगा। इस खारमें उबालनेसे रेशे मुलायम और चमकदार हो रेशमके समान मालूम होते हैं। जूटमें कार्बनका अंश ४७ प्रतिशत हैं। यदि इसपर रासायनिक प्रयोग किये जांय तो यह टसर और ऊनकी नाईं मालूम हो सकता है। जूट और सनमें वैज्ञानिक दृष्टिसे‡ अन्तर आवश्य हैं।

जूटका व्यवसाय क्षेत्रमें प्रवेश

व्यवसाय क्षेत्रमें 'जूट' का प्रवेश तीन रूपसें होता है जो इस प्रकार हैं।

छुट्टा जूट ३० से ४० सेरतकके गट्ठोंमें बांधकर बाजारमें बिकनेके लिये आता है और कम्पनीवाले गाठ बाधनेके लिये उसे बाजारमें खरीदते हैं जूट प्रेसमे ले जाकर बांध डालते हैं।

(२) 'कच्ची गाठ' के रूपमें भी जूटका व्यवसाय होता है। कच्ची गाठ कभी कभी हाथसे

---

* Solution of Consentrated Alkalies

† देखिये Cross, Bevan, Kely and Watt, Report on Indian Fibres, 80

‡ इनके वैज्ञानिक विश्लेषणका परिमाण इस प्रकार है

	जूट	सन
Water (Hygroscopic)	9 93	9 60
Aqueous extract	0·36	2 82
Fat and wax	0·08	0 55
Incrusting and Pigment Matter	24 41	6 41
Cellulose	64 24	80 0

सनमें जहां सेल्यूलूजका ८० प्रतिशत अंश है वहां पाटमें उसका ६४ ही प्रतिशत है

दँबा दबाकर बांधी जाती है और नहीं तो यंत्र द्वारा जूट प्रेसमें बांधी जाती है। जो हाथसे बांधी जाती है वह कच्ची गांठ ३½ मनके लगभग वजनमें होती है और जो यंत्र द्वारा बांधी जाती है वह कच्ची गांठ ३½ से ४ मनतक की होती है। कच्ची गांठ विदेश नहीं जाती।

पक्की गांठ—वजनसे ४ सौ रतलकी होती है। यह यंत्र द्वारा ही बांधी जाती है। और इसका आकार भी नियमित रहता है। पक्की गांठका आकार १०½ घन फुटका होता है। विदेश भेजनेके लिये ही यह ऐसी बांधी जाती है।

जूटकी गॉठ और श्रेणी

रेशे सूख जानेके बाद गट्ठे बांधकर जूट पासकी बाजारमें बिक्रीके लिये लाया जाता है। खरीदार लोग जूटको मोल लेकर पासके जूट प्रेसमें गांठ बांधनेके लिये भेज देते हैं। वहां जूटकी छटाई ऊंच नीच श्रेणीके अनुसार की जाती है। जूटकी श्रेणी स्थिर करनेका आधार प्रायः उसकी चमक, मुलायमपन, रंग और रेशोंकी बारीके ऊपर रहता है। जूटके सम्बन्धमें प्रायः यह रुढ़ि—सी पड़ गयी है कि जिसमें फूल देरसे निकलें अर्थात् सितम्बरमें वह उत्तम, और सबल माना जाता है। सबसे अच्छा माल वह माना जाता है जो उपरोक्त गुणोंके साथ ही लम्बा भी अधिक हो। इस प्रकार मालको छांट लेनेके बाद उसके दोनों शिरे काटकर अलग कर दिये जाते हैं और केवल बीचका भाग जूटके रुपमें गांठ बांध डाला जाता हैं इसके बाद व्यवसायियोंके संकेत चिह्नको डालकर उसकी व्यवसाय सम्बन्धी श्रेणी भी स्थिर कर दी जाती हैं। गांठ बांध जानेके बाद दो प्रकारका माल रह जाता है। जो निकम्मा और टुकड़ाके नामसे सम्बोधित किया जाता है।

निकम्मा—वह माल है जो किसी कारणसे खराब हो गया हो या अधिक टूट गया हो। अथवा बार बार जोड़नेके कारण उसपर गांठें अधिक पड़ गयी हों। इस प्रकारका जूट नीचेकी श्रेणीका माल बनानेके काममें आता है।

टुकड़े—यह वह जूट है जो गांठ बांधते समय दोनों शिरोंके काट डालनेपर निकलता है या अच्छा माल चुननेके समय खराब समझकर अलग कर दिया जाता है। इस प्रकारके जूटसे छाटे गये अच्छे टुकड़े बोरे बुनते समय बानेके रुपमें काम आते हैं। रद्दी टुकड़ोंका कागज बनता है। फिर भी व्यवहारकी दृष्टिसे इन दोनों प्रकारके जूटमें और अच्छे जूटमें कोई विशेष अन्तर नहीं होता क्योंकि आधुनिक युगकी समुन्नत यंत्र सामग्री द्वारा भद्दे से भद्दे प्रकारके जूटका अच्छा माल तैयार किया जाता है।

भारत और जूटके औद्योगिक स्वरुपका विकास

जूटकी उपयोगितासे भारतीय बहुत प्राचीन कालसे परिचित थे पर जूटके औद्योगिक उत्कर्षका भारतमे आरम्भकाल बृटिश शासनकालके आरम्भसे ही माना जाता है। अतः जूटके

औद्योगिक जीवनकी आयु भी उतनी ही मानी जाती है कि जितनी बृटिश शासनकाल की।

जबसे योरोपकी जलयानकलाने अपनी उन्नतिकी और भिन्न २ देशोंमें उत्पन्न होनेवाले मालका अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रारम्भ हुआ तबसे उस मालको इधर उधर भेजनेके लिये चट्टी, बोरे, तथा जूटके बने हुए पदार्थोंकी मांग बढी। इससे भारतकी जूटकी खेती तथा बोरेके व्यवसायको बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला। ज्यों ज्यों मालकी मांग बढ़ी त्यों त्यों मालका मोल भी बढा और व्यवसायकी उन्नतिकी सीमा न रही। यह परिस्थिति १६ वीं शताब्दीके आरम्भ कालकी है। योरोपमें यांत्रिक शक्तिका चमत्कार फैल चुका था अतः वहांवाले मानवीय पौरुषकी लम्बी दौड़में मानवकरबलकी मानव मस्तिष्क बलसे होड़ लगानेपर तुल गये।

भारतके बढते हुए जूट व्यवसायको लूटनेके पूंजीलोलुप व्यवसायी न देख सके और उन्होंने इस ओर विशेष रुपसे ध्यान देना आरम्भ कर दिया। जूटकी खेती करनेमें वे सर्वथा असमर्थ थे अतः यंत्रों द्वारा जूट कातने और बुननेकी चेष्टामें उन्होंने अपनी सम्पूर्ण सामर्थ्य लगा दी। उधर रुससे आनेवाले हेम्प और फ्लैक्सके रेशोंके स्थानपर दूसरे प्रकारके रेशोंको व्यवहारमें लानेकी चेष्टा धीरे धीरे जोर पकड़ रही थी। इस प्रकार दूनी चेष्टासे उद्योग आरम्भ हुआ। भारतमें काम करने वाली ईस्ट इण्डिया कम्पनीके एजेन्ट स्थान स्थानसे जो रेशे संग्रहकर वैज्ञानिक परीक्षाके लिये ब्रिटेन भेजते थे उन रेशोंमें जूट प्रधान रुपसे परीक्षाका लक्ष्य माना गया फलतः सर्वप्रथम रस्से आदि बनानेके लिये ही जूट उचित समझा गया। इस प्रकार थोड़ा थोड़ा जूट कभी कभी ब्रिटेन पहुंचने लगा। और जूटके मिलनेपर उसके कातने और बुननेके सम्बन्धमें खोज करनेकी सुविधा वहांवालोंको अनायास ही मिल गयी।

संसारमें बोरोंकी मांग बढी। भारतीय अपना पल्ला जोरदार समझकर अच्छा लाभ उठा रहे थे कि योरोपसे यंत्रों द्वारा तैयार होनेवाले सस्ते बोरोंका प्रसार आरम्भ हुआ। जिस विश्व बाजारमे भारतीय जूटके मालका एकमात्र राज्य था उसमें दूसरे भी घुसे और बातकी बातमें भारतके इस उद्योगको भारी धक्का पहुंचा। ज्यों ज्यों भारतके बने हुए बोरोंकी मांग कम होने लगी त्यों त्यों जूटके उद्योगमे लगे हुए किसानोंकी चिन्ता बढने लगी। जूट कातने और बुननेवाले बेकार हो गये। उन्होंने देखा कि यंत्रोंका सामना करनेमे कोई बुद्धिमानी नहीं अत. जूटकी खेतीमें ही सारी सामर्थ्य लगा देनेपर वे उद्यत हो गये। भारतीयोंके उद्योगका चौपट होना स्काटलैण्डके कारखानोंको और सुदृढ़ बनाना था। यहां काम बन्द हुआ और वहा काम और बढ़ गया। जूटकी मांग भी साथ ही बढ़ी। यहांके किसानोंकी खेती चमकी और स्काटलैण्डके कारखानोंकी आवश्यकता पूरी हुई। यहांकी सारी शक्ति स्काटलैण्डके कारखानोंको समुन्नत करनेके लिये लगा देनी पड़ी।

डंडीका उद्योग .मजबूत हो उन्नतिके ऊंचे शिखर पर जा पहुंचा। यह अवस्था सन् १८५४ ई० तक रही। अभी तक योरोपियन ढंग पर भारतमें कारखाने खोलनेका विचार किसीने नहीं किया था। परन्तु क्रीमिया युद्ध और अमेरिकन सिविल वारसे डंडीके ऐश्वर्यको कल्पनाकी दौड़से अधिक सम्पत्तिशाली हुआ देख भारतकी सस्ती मजदूरी और स्वल्प धन साध्य उद्योगकी ओर लोगोंका ध्यान जाना कुछ आश्चर्यकी बात न थी। अतः सीलोनके काफीके एक प्रसिद्ध व्यापारी मि० जार्ज आकलैंडने भारत आकर सेरामपुरके पास इशरामे 'दि इशरा यार्न मिल्स' नामसे पहिला कारखाना सन् १८५४ ई० में खोला। यहां जूट कातनेका कार्य आरम्भ हुआ। सफलता मिलना निश्चित थी अतः कारखाना शीघ्र उन्नति करने लगा। आज यही वेलिङ्गटन मिल्सके नामसे प्रख्यात है। सन् १८५७ ई० में बोर्नियो द्वीपकी एक कम्पनीने, जिसका नाम बोर्नियो कम्पनी लि० था एक कारखाना और खोला जो आज बारानगर मिल्सके नामसे प्रसिद्ध है। सन् १८६३-६४ ई० मे गौरीपुर जूट फैक्टरी की स्थापना हुई। इसके बादसे ही जूट कातने और बुननेके व्यवसायने भारतमें भी उन्नति करनी आरम्भ की और थोड़े ही समयमे कलकत्तेके पास बहुत बड़ी संख्यामें जूट मिल खुल गये। फल यह हुआ कि भारतका बना हुआ माल भी जोरोंसे विदेश जाने लगा। जिसका प्रमाण सन् १८६९-७० ई० के व्यवसायी अङ्कोंसे मिलता है। उस वर्ष ६,४४१,८६३ बोरे विदेश भेजे गये थे। इस प्रकार डंडीसे प्रतियोगिता करनेका विस्तृत क्षेत्र खुल गया। भारतके कारखाने घरकी मांग तो पूरी करते ही थे पर वे विदेशको भी माल भेजतेथे। यह होते हुए भी जूटकी माग कम नहीं हुई। इस प्रकार भारतमें जूट मिल स्थापित करनेका कार्य आरम्भ हुआ और इसकी उन्नति इतनी अधिक हुई कि गत ६० वर्षोंमें इनकी संख्या केवल कलकत्तेमें ही ८४ की हो गयी। ये ८४ जूट मिल ५९ कम्पनियोकी देख रेखसे संचालित होते हैं। प्रथम जूट मिलमें जहा प्रति दिन ८ टन माल तैयार होता था वहां आज प्रति दिन ४९०० टन माल तैयार होता है और ८ हजार मीलसे अधिक लम्बा जूटका माल बुना जाता है। इस प्रकार भारतकी जूट मिलें अपनी उन्नति करती जा रही हैं।

भारतके जूट प्रेस

माल बनानेके लिये जूटको कारखानों तक पहुंचानेकी सुविधाकी दृष्टिसे जूटकी गांठ बांधनेकी आवश्यकता होती है। इस लिये भारतमें जूट प्रेस भी बहुत बड़ी संख्यामें हो गये हैं। इन जूट प्रेसोमें दो प्रकारकी गाठें बांधी जाती हैं जो कच्ची और पक्की गांठके नामसे प्रसिद्ध हैं। कच्ची गांठ केवल एक स्थानसे दूसरे स्थान तक माल पहुंचा देनेके लिये होती है यह व्यवस्था स्वदेशके अन्दरकी है। परन्तु विदेश जानेवाले जूटकी गाठ तो पक्की ही बांधी जाती है। इसका वजन ४०० रतलका होता है और बारदानके साथ ४०५ रतलकी होती है फिर भी जहाज पर नियमित स्थान घेरनेके लिये

उसका आकार सदा ऐसा रहता है कि जिससे जहाज पर वह अधिकसे अधिक ५४ घन फुटका स्थान घेर सके।

भारतका जूट व्यवसाय

जूटका निर्यात सन् १८२८ ई० से आरम्भ होता है उस वर्ष ३६४ हण्डरवेट जूट विदेश गया और फिर माग बढ़ती गयी और परिणाम यह हुआ कि गत १०० वर्षोंमें इसका परिमाण बहुत बढ़ गया। इसकी क्रमशः उन्नतिका अनुमान नीचे दिये गये अङ्कोंसे सहजमे हो जाता है।

जूटका निर्यात

भारतने जूट इस परिमाणमे विदेश भेजा :—

सन	हण्डरवेट (जूट गया)
१८२८	३६४
१८३७-३८	६७,४८३
१८४७-४८	२३४,०५५
१८५७-५८	७१०,८२६
१८६७-६८	२,६२८,११०
१८७७-७८	५,३६२,२६७

उपरोक्त अङ्कोंसे स्पष्ट है कि विश्वके बाजारमें भारतके जूटकी कितनी अधिक माग है। यह क्रम ५० वर्षका है। गत ५० वर्षोंमें जहा ३६४ हण्डरवेटसे जूटका निर्यात ५३,६२ २६७ हण्डरवेट हो गया शायद मूल्यमें भी महान अन्तर मिलेगा। अर्थात् जहा ३६४ ह० भेजकर भारतने विदेशसे ६२०) रु० प्राप्त किये वहा ५३,६२,२६७ ह० जूट भेज कर ५ करोड़से अधिककी रकम वसूलकी।

गत आठ वर्षोंके अंकोंसे जूटके गाठोंका अनुमान हो जायगा।

सन्	गांठ विदेश गयी
१९२०-२१	२३,४३,००३
१९२१-२२	२६,६७९५३
१९२२-२३	२६,०१,५६३
१९२३-२४	३७,७१,२३८
१९२४-२५	३३,२२,०५२
१९२५-२६	३५,१६,७९२

जूट निर्यातके भारी परिमाणको देखते हुए भी यह कुछ कम आश्चर्य नहीं है कि विदेशी जूट भी भारत आता है। यह प्रायः सीलोनसे आता है और इसे बंगाल प्रान्त खरीदता है। बृटेन, हाङ्गकाङ्ग, स्ट्रेटसेटलमेन्ट, तथा इटलीसे यहां टाट आता है। जूटकी बनी हुई किर्मिच बम्बई वाले बृटेनसे मंगाते हैं।

बंगाल और जूटका उद्योग

जूटके औद्योगिक स्वरूपका पूर्ण अनुभव मिल जानेपर यह सहजमें सिद्ध हो जाता है कि जहां भारतके सम्पत्ति भण्डारका जूट एक बहुमूल्य रत्न है वहां वही जूट बंगालप्रान्तकी उपज और आय का अत्यन्त प्रयोजनीय अंग भी है। बंगाल प्रान्तमें जूटके औद्योगिक विकासका शैशवकाल सन् १८२८ ई० से आरम्भ माना जाता है। इसके पूर्व इस प्रान्तमें जूटकी खेती अवश्य होती थी परन्तु उसकी उपज केवल प्रान्तकी ही आवश्यकताकी पूर्ति करनेके कामकी मानी जाती थी। इसके बाद जहां इसका निर्यात् आरम्भ हुआ कि पलक मारते इसने विश्व बाजारमें अपनी उपयोगिताका रहस्य प्रकट कर दिया। इसकी मांग क्रमशः बढ़ने लगी और प्रान्तके जूट व्यवसायकी उन्नतिका पहिया उन्नतिके पथपर द्रुत गतिसे दौड़ चला। आज इसकी यह अवस्था है कि यह पदार्थ प्रान्तकी आय का ही नहीं वरन समस्त भारतकी आयका प्रधान कारण हो रहा है। इसकी आयसे असंख्य जनताका भरणपोषण होता है। देश विदेशके व्यवसायियोंके पेट भरे जाते हैं। जूटकी बढ़ती हुई मांग और उसका अनमोल भाव पर बिकना तथा इन्हीं कारणोंसे बंगाल प्रान्तमें इसकी खेतीका अत्यधिक प्रसार होना आदि बातें कभी विचारवानोंसे छिपायी नहीं जा सकतीं। संसारके औद्योगिक क्षेत्रमें जूटके वर्तमान गौरव गर्वित स्थानका आभास प्रान्तके व्यवसाय सम्बन्धी प्रकाशित किये जानेवाले अनुमानित अंकोंसे ही स्पष्ट हो जायगा। भारतके सम्पूर्ण निर्यात्का ¼ वां भाग केवल जूटके निर्यातका है अतः बंगाल प्रान्तका जूट भी भारतकी आयका बहुत बड़ा भाग है। इसी प्रकार प्रान्तमें होनेवाली जूटकी खेतीमें भी आज आकाश पातालका अन्तर दिखायी देता है। उपलब्ध अंकोंके अनुसार यह भी जाना जा सकता है कि जहां बंगाल प्रान्तमें एक समय सन १८७६ से १८८० ई० के बीच जूटकी खेतीका औसत ८,६१,६७१ एकड़ भूमिका था वहां अब जूटकी खेतीका बंगाल प्रधान क्षेत्र माना जाता है। जहां सन १८२८ ई० में इस प्रान्तने ३६४ हण्डरवेट जूट विदेश भेज कर ६२०) वसूल किये थे वहां बादके ५० वर्षमें ही यह प्रान्त अपना जूट विदेश भेजकर ५ करोड़से अधिककी रकम वसूल करने लग गया था और आजकी तो बात ही क्या है। सन् १९२६–२७ मे इस प्रान्तने जूटके द्वारा ७८ ¼ करोड़से अधिककी रकम विदेशसे वसूल की। जहा सन् १८५५ ई० मे इस प्रान्तमें १ जूट मिल था वहां आज सन् १९२८ ई० मे जूट मिलोंकी संख्या ८४ है जो ५४

कम्पनियों द्वारा संचालित की जाती है। इनमें ४८०० टन माल प्रतिदिन तैयार होता है जिसकी लम्बाई ८ हजार मीलसे अधिककी बैठती हैं। इसी प्रकार जहां सन् १८६६ ई० में इस प्रान्तके जूट मिलोंमें केवल ६८४१ करघे काम करते थे वहा आज जूट मिलोंमें काम करनेवाले करघोंकी संख्या देखकर स्तम्भित रह जाना पड़ता है। केवल कलकत्तेकी जूट मिलोंमें जहां सन् १८५६ ई०में १६२ करघे थे वहा सन् १६२७ में करघोंकी संख्या ५०,३५४ की थी और इनमें १०,५८,०१० तकुए काम करते थे। इन जूट मिलोंमें काम करनेवालोंकी संख्या ३२५००० के करीब है। प्रान्तकी जूट मिलोंमें ५,२००००००० पौण्डकी पूंजी लगी हुई है। यहांके मिलोंमें काम करनेवाले भारतीयोंको ३५ लाखसे अधिककी रकम मासिक पारिश्रमिकके रूपमें मिलती है। यह है एक चलन् दृष्टिसे जूटका महत्व अतः इस महत्वपूर्ण अंगके प्रान्तसे सम्बन्ध रखनेवाले पार्श्वका परिचय देना उचित समझते हैं।

व्यवसायकी दृष्टिसे जूटके नाम	जूटकी जातियोंके स्थानीय नाम
डौरह्	१. सूत पाट, २. उधय पाट
नारायणगंज	धाल सुन्दर
सिराजगंज	वरुन
उत्तरिया	१ असुआ (शीघ्र) (२) हेडती (देरीका)

किसान लोग पौधेके रंगके अनुसार बीजको नहीं छाटते। वे तो एक खेतमें भिन्न भिन्न जाति और रंगका पाट बोते हैं। उनका उद्देश्य फसलके तैयार होनेवाली अवधिसे रहता है वे जल्दी जल्दी तैयार होनेवाले बीज अलग और देरसे तैयार होनेवाले बीज अलग बोते हैं। पौधेके रंग, पत्तियों और शाखोंके क्रम, और फलोंकी दृष्टिसे जूटकी जातियां इस प्रकार होंगी:—

(अ) तीता पाट

हलका हरा—बम्बइया, सिराजगंजका धड़ा पाट, मैमन सिंहका वरुन या बडा पाट, ढाका का धलेश्वर, और उत्तर बंगालका हेडती (सफेद)।

बैंजनी मायल—(छोटी अवस्थामें हलका हरा और युवा .बैंजनी भायोली) अवस्थामें फरीदपुरका अमोनिया, सिराजगंजका देशवाल,

बैंजनी—फरीदपुरका मेघनाल या नलपाट, ढाकाका अग्निश्वर।

(ब) मीठा पाट

हलकाहरा—ढाकाका भंगी या देवनलिया। फरीदपुरका सतनाला, भंगी या बोमी।

गुलाबी मायल —मैमन सिंहका निलेता या तलाह और सिराजगंजका तोशा।

गुलाबी गहरा—हुगलीका देशी लालपाट, फरीदपुरका नलबागी।

जूटकी दोनों ही जातियोंमें जल्दी और देरसे तैयार होनेवाले २ प्रकारके पौधे मिलेंगे। प्रायः देखा जाता है कि देरसे तैयार होनेवाले पौधे अधिक जूट उत्पन्न करते हैं। नीची भूमिमें पानी भर जानेकी आशंका रहती है अतः ऐसी भूमिमें जल्दी तैयार होनेवाली जातिका जूट बोया जाता है।

जल्दी तैयार होनेवाली जातियां

तीता पाट

मैमनसिंहका असुआ	रंग पौधा (हरा, बैंजनी)
रंगपुर और जलपाईगोड़ीका माधा	,, ,, ,,

मीठा पाट

ढाकाका वंगी	,, (हरा)
फरीदपुरका सतनला	,, (हरा)
सिराजगंजका तोशा	(गुलाबी मायल)

देरसे तैयार होनेवाली जातियां

तीता पाट

मैमनसिंहका वरुन या बड़ा पाट	रंग पौधा (हरा)
सिराजगंजका ककया बम्बई	,, (हरा)
सिराजगंजका देशवाल	,, (मिलवा)
फरीदपुरका अमोनिया	,, (मिलवा)
फरीदपुरका कमरजनी	,, (हरा)
रंगपुरका हेवती	,, (हरा, बैंजनी)
फरीदपुरका नलपाट	,, (बैंजनी)
ढाकाका कजला	,, (बैंजनी)

मीठा पाट

हुगलीका देशी लाल पाट	,, (गहरा गुलाबी)
ढाकाका देवनलिया	,, (हरा)
त्रिपुराका हल बेलाती	,, (हरा)
मैमन सिंहका नयीलता	,, (हरा)

बंगालका जूट व्यवसाय

जूटका भौगोलिक क्षेत्र

बंगालके भौगोलिक क्षेत्रमें वैज्ञानिक सिद्धान्तोंके आधारपर जूट उत्पन्न करनेवाले भूभागको दो प्रधान विभागोंमें विभाजित किया जा सकता है। एक तो प्रान्तका वह भूभाग जिसके बीचसे गंगाजी अपनी सहायक नदियोंके साथ बहती हैं और दूसरा वह जहासे ब्रह्मपुत्र नद अपने सैन्य समूहको साथ ले प्रवाहित होता है। इस प्रान्तके जिस भूभागसे गंगाजी निकलती है वह भाग समुद्री सीमाकी तुलनात्मक ऊंचाईकी दृष्टिसे नीचा है। अतः यहांपर बाढ़का पानी भरा रहता है और दूसरे गंगाजीका पानी भी मट मैला रहता है। ऐसी दशामें यहां उत्पन्न होनेवाला जूट व्यवसायकी दृष्टिसे नीच श्रेणीका होता है। परन्तु ब्रह्मपुत्रकी ओरका भूभाग ऊंचा है और उसका जल भी स्वच्छ और कहीं अधिक विमल रहता है अतः यहाका जूट ऊंची श्रेणीका होता है। जूटके रेशेपर भूमि और जलवायुका प्रभाव बिना पड़े नहीं रहता। अतः यह विभेद नीचे ढंगपर अधिक स्पष्ट हो जाता है।

गंगाजीके कछारका जूट	ब्रह्मपुत्रनदके कछारका जूट
१ मजबूत	१ मजबूत
२ मोटा और खुरदरा	२ बारीक और मुलायम
३ छोटा	३ लम्बा
४ पीलापन लिये हुए	४ सफेद
५ पपड़ीदार	५ बिना पपड़ीका साफ
६ कम चमकीला	६ चमकदार
	७ अधिक वजन सहन करनेवाला। ऐंठन सहन करनेवाला।

भौगोलिक परिस्थितिके अनुसार नीचे लिखे ढंगसे जूट उत्पन्न करनेवाले क्षेत्रका स्पष्ट रुप प्रकट होता है।

(अ) गंगाका कछार

मदारीपुर | जेसोर | हुगली | पुरनियां

(ब) ब्रह्मपुत्रका कछार

अपर ब्रह्मपुत्र, लोअर ब्रह्मपुत्र, पुराना ब्रह्मपुत्र, | मेघना | उत्तरी

जूटका व्यवसायिक क्षेत्र

बंगाल प्रान्तके जूट उत्पन्न करनेवाले भूभाग व्यवसायकी दृष्टिसे ५ बड़े भागोंमें विभाजित किये जा सकते हैं। नारायनगंज, सिराजगंज, उत्तरिया, दौवरा, देशी।

नारायन गंजी—जूट बंगाल प्रान्तके उस भूभागमें उत्पन्न होता है जो पुराने ब्रह्मपुत्र नदसे सींचा जाता है। बंगाल भरमें कोई ऐसा स्थान नहीं कि जहांका पानी पुराने ब्रह्मपुत्र नदके समान स्वच्छ और विमल हो। इस भूभागमें उत्पन्न होनेवाले जूटका रंग बाजारमें आनेवाले सभी प्रकारके जूटसे अच्छा माना जाता है। यहां बरसाती पानी भरा रहता है। अतः यहांके जूटमें पपड़ी और मोटापन भी इसी कारणसे मिलता है परन्तु यहांकी ऊंची भूमिमें पैदा होनेवाला जूट सर्वोत्तम माना जाता है। यहां उत्पन्न होनेवाले जूटका ३० प्रतिशत तो हैशियन यानी अच्छे बारीक मेलके माल बनानेके योग्य होता है। यह भूमि मैमनसिंह ढाका तथा त्रिपुराके जिलोंके अन्तर्गत है। यहाकी प्रधान जूट मंडी नारायनगंज और चांदपुर हैं।

सिराज गंजी—जूट बंगाल प्रान्तके उस भूभागमें उत्पन्न होता है कि जहां होकर नयी ब्रह्मपुत्र अथवा जमुना नदी बहती है। इसका पानी पुराने ब्रह्मपुत्रकी अपेक्षा कम स्वच्छ है। फिर भी इस भूभागमें उत्पन्न होनेवाले जूटका ३० प्रतिशत हैसियन जूट होता है। यहांकी प्रधान जूट-मंडी सिराजगंज है जहां मैमनसिंहके पूर्वीय भागका तथा पबना, बोगरा, कूचविहार, रंगपुर, और गोलपाराका माल आता है।

उत्तरिया—जूट बंगाल प्रान्तके उस ऊंचे भूभागमें उत्पन्न होता है जहांसे ब्रह्मपुत्र नद प्रवाहित होता है। इस ऊंची भूमिमें तालाबोंके पानीमें जूट धोया जाता है। अतः गंदला और रंगीन हो जानेके रण जूटके रंगपर भी उसका प्रभाव पड़ता है जिससे यह नीचेकी श्रेणीका माना जाता है। यहां उत्पन्न होनेवाले जूटका ३० प्रतिशत हैशियनका माल माना जाता है। यह भूमि राजशाही बोगरा, रंगपुर, जलपाई गोड़ी, दीनाजपुर, माल्दा, तथा पुरनियां जिलोंके अन्तर्गत है। यहाकी प्रधान जूटकी मंडियां हल्दीबारी, दोमर, किसनगंज, कसबा, और फार्बेसगंज हैं।

दौवरा—जूट बंगाल प्रान्तके उस भूभागमें उत्पन्न होता है जहासे गंगाकी सहायक नदियां प्रवाहित होती हैं। इनका जल गंदला रहता है और यही कारण है कि यहांके जूटका रंग भी मटमैला रहता है। दौवरा जूट बहुत मजबूत होता है परन्तु पपड़ीदार होता है। यह मुख्यतया बोरे बनाने और रस्से बनानेके काममें आता है। फरीदपुर जिलेके मदारीपुर, बरहमगंज, और अंगरिया नामक स्थान दोवरा जूटकी प्रधान मंडी है।

देशी—जूट बंगाल प्रान्तके उस ऊंचे भूभागमे उत्पन्न होता है जो कलकत्ते के समीप है। यह

मीठा पाटकी जातिका है। यहां ऊंची भूमि होनेके कारण तालावके जलसे काम लिया जाता है। इन नालाबोंमें भागीरथी, दामोदर और रुपनारायन नदियोंका जल रहता है जो प्रायः वर्षाऋतुमें गंदला रहता है। यहांका जूट अधिक प्रमाणपर काले रंगका होता है। यह थैले बनानेके काममें आता है। यह भूमि मुख्यतया हुगली और २४ परगनेके अन्तर्गत है। हुगली जिलेका बद्धियाबही और २४ परगनेका बेलगछिया नामक स्थान इस जूटकी प्रधान मंडी हैं।

एक विभागमें उत्पन्न होनेवाला जूट सब एक ही श्रेणीका नहीं होता। भूमिके ऊंचे नीचेपनका प्रभाव भी उसपर पडता है जैसे 'जाथ' और 'जिला' जूटमें अन्तर माना जाता है। दोनों एक ही विभागके अन्तर्गत उत्पन्न होते हैं। परन्तु 'जाथ' जूटका रेशा बारीक, मजबूत, लम्बा, चमकदार और दूधके समान उज्वल होता है और 'जिला' जूटका रेशा मोटा, खुर्दरा, और नीची श्रेणीका होता है। इसका कारण यह है कि 'जाथ' ऊंची भूमिमें उत्पन्न हुआ जूट है और "जिला" नीची तथा समतल भूमिकी उपज है।

जूट व्यवसायकी दृष्टिसे दो प्रकारका है गंगाजीके कछारका और ब्रह्मपुत्रके कछारका।

१ गंगाके कछारमें ४ किस्में।

१ मदारीपुर	२ जेसोर,	३ पुरनिया,	४ देसी

२ ब्रह्मपुत्रके कछारमें ४ किस्में।

१ नाथ	२ जिला	३ उत्तरी	४ लोशा

स्मरण रहे कि उपरोक्त प्रकारोंका सम्बन्ध गांठ बांधनेके समय होनेवाली रेशेकी छटनीसे पृथक् नहीं रहता। क्योंकि उपरोक्त प्रकारोंमें किसी भी प्रकारके रेशोंमेंसे रेशोंकी श्रेणीके आधारपर छटनी नहीं होती है। जैसे जाथ या जिला जूटके प्रकारमेंसे नं० १,२,३ आदि श्रेणियोंका माल अलग२ छांटकर बांधा जाता है।

जूटके रेशे और व्यवसायकी दृष्टिसे उनकी श्रेणीका चुनाव।

व्यापारी दृष्टिमें जूटके रेशोंका चुनाव उनकी मजबूती, लम्बाई, रंग, चमक और बारीकीके आधारपर किया जाता है। यह ६ प्रकारके रेशोंकी श्रेणीमें विभाजित किया जा सकता है।

१ हैसियन ताना, २ हैसियन बाना, ३ बोरेका ताना, ४ बोरेका बाना ५ निकम्मा और ६ टुकड़ा।

हैसियन ताना वाले जूटका रेशा मजबूत, लम्बा, स्वच्छ, बारीक, चमकीला और चांदीके समान सफेद होता है; इसे कातनेके काममें लेते हैं। यह माल सर्वोत्तम माल माना जाता है।

हैसियन बाना वाला रेशा पहिले प्रकारके रेशेसे कुछ नीचेकी श्रेणीका होता है। इसकी मजबूती तो वैसी ही है केवल लम्बाई और चमक कुछ कम होती है।

बोरेका ताना वाला रेशा मजबूत, लम्बा और बे दाग होता है। यह मोटा और खुर्दरा होता है।

बेरेका बाना वाला रेशा कमजोर और भद्दे रंगका होता है।

निकम्मा और टुकड़ा ये दो प्रकारके रेशे नीची श्रेणीके होते हैं।

प्रान्तकी प्रधान जूट मंडियां।

नरायण गञ्ज, ढाका, सेराजगञ्ज, मदारीपुर इस प्रांतकी प्रधान जूटकी मंडियाँ हैं।

'जाट नामक जूटकी मंडियॉ

	मैमनसिंह,	
	शम्भूगंज	(मैन सिंह)
भैरव बाजार	जमालपुर	"
करीमगंज	शेयरपुर	"
निकली	पियारपुर	"
	बालीपारा	"
	देवगंज	"
	गौरीपुर	"
	ढाका	
	कोरद	(ढाका)
	नारायणगंज	(ढाका)
	अखऊरा.	(त्रिपुरा)

देशी नामक जूटकी मडी

बद्रियाबही
शिबराफुली
बेलगछिया
क्रिस्टगंज
चंदीतल्ला
बदुरिया
चांदुरिया
मगराहाट

जिला जूटकी मण्डी

इलाशिन, बल्लाह, 'नागा, पनीबारी, सिरानाबारी, नन्दनपुर, शटूरिया, बहादुराबाद, भैरवबजार, बेनानायी, सोमा, बिलासीपारा, बबुआ पारा, केदारपुर, जमुरकी, रतनगंज, मिरजापुर, पोगवारी, आदि। मैमन सिंह जिलेमें, श्रीनगर, तारपासा, लोहागंज, धिओर, कंचनपुर, कालीगज, वैरा, शिदोर, नारायण गंज ;आदि ढाका जिलेमें। नगरबाड़ी, तकलिया, बेरह पवना जिलेमें, देवान ताला, फूलछड़ी, पवना बोगरा जिलेमे। चादपुर, चटलपारा, आशूगज त्रिपुरा जिलेमें चीलमारी रंगपुर जिलेमे है। चौमुहानी जिला नोआखाली में है।

उत्तरी जूटकी मण्डी

हल्दी बाड़ी, डोमर, निलूफमारी, सैदपुर, रंगपुर, कुरीग्राम, दुग्वानी, तुलसीघाट, नालडंगा,

अलीपुर रंगपुर जिलेमें, शुकनपुकुर, महीमगंज, संत्लाहार, चिलहट्टी, जैपुर हाट, बोगरा जिलेमें, दीनाजपुर, जाफरगंज, मीरगंज, दीनाजपुर जिलेमें, जलपाई गोड़ी, सिलीगोड़ी, सिल्ली गोड़ी जिलेमें राजशाही, रानीनगर, अतराई राजशाही जिलेमें। कूचबिहार और माथाभांग कूच बिहारमें है।

मदारीपुर जूटकी मण्डी

बाहमगञ्ज, मदारीपुर, गोडाला, राजोर, खेजूर तला, पटर हाट, इदिलपुर, फरीदपुर, खानखाना पुर पांचुरिया, ग्वालन्दो, राजबाड़ी, बेलगाछी, पगशा आदि फरीदपुर जिलेमें उस्मानपुर, कुमरखाली कुस्टिया नदिया जिलेमें।

नान-स्टैण्डर्ड जूटकी मंडी

किसनगंज, कस्बा, बारसोई, फार्बेसगञ्ज पुरनिया जिलेमें। अजीमगंज, मुर्शिदाबाद जिलेमें तथा जेस्सेर

कलकत्ता बाजारके अन्तर्गत माने जानी वाली मंडी जिनमें छुट्टा जूट आता है वे ये हैं।

हाटखोला, अल्टाडांगा, शामबाजार, बाघबजार, चितपुर और फुलबगान है।

जूट सम्बन्धी कुछ व्यवहारिक जानकारी

जूट कारटिङ्गस—छुट्टे पाटमें टुकड़ोंको बटकर मिला देते हैं। छुट्टे जूटका लेन देन कलकत्ता बाजारमें मन पर होता है जो ८२ रतल ४ औन्स ६ ग्रेनका होता है। कंट्राक्ट करते समय गांठके अन्दरवाले मालके सम्बन्धमें यह पहिले ही निश्चित हो जाता है कि गांठमें कितने प्रतिशत अच्छा हेसियन वाला माल होगा और कितने प्रतिशत अच्छा बोरेका माल होगा। इसी प्रकार कितने प्रतिशत टुकड़े रहेंगे।

छुट्टे माल और गांठ बंद मालमें श्रेणियाँ अलग अलग रहती हैं। जो इस प्रकार समझना चाहिये। छुट्टे मालमें - ५ श्रेणियाँ।

ढील और कच्ची गाँठ—श्रेणी नं० १—इसमें सब माल उत्तम श्रेणीका हैसियनके योग्य रहता है।

श्रेणी नं० २—इसमें २० प्रतिशत उत्तम श्रेणीका तानेके योग्य और ६० प्रतिशत बोरेके योग्य तथा २० प्रतिशत टुकड़ा बाना रहता है।

श्रेणी नं० ३—इसमें ७० प्रतिशत बोराका ताना और ३० प्रतिशत बोरा बाना।

श्रेणी नं० ४—इसमें ४० प्रतिशत बोराका ताना और ६० प्रतिशत बोरा बाना रहता है।

इन ५ के अतिरिक्त ५ वीं श्रेणी वही है जो टुकड़ा और निकम्मा माल होता है इसकी गाठ भी अलग बंधती है और इस पर R' S का चिह्न रहता है।

पक्की गांठ—पूर्वीय जूट ढाका या नारायनगंजीके नामसे आता है। उत्तरका माल सिराज-गंजी कहलाता है फिर भी देशी और तोसा अपने पुराने ही नामसे विकते हैं। इनकी पक्की गांठ ४०० रतलकी होती है इसका आकार ५२ घन फुटके स्थानको घेर लेता है। ये गांठे जूटके दोनों शिरे काट कर बांधी जाती हैं। इन पर जो मार्के रहते हैं वे प्रायः रोपुस, दौरह, मैंक्षोज, लाइटविङ्गस और हार्ट कहाते हैं। जिनके सम्बन्धमें कुछ स्पष्टीकरण इस प्रकारका है।

जूटके छुट्टे मालके बाजारमें जैसे किसी व्यापारीका विशेष प्रकारका मार्का चालू माना जाता है और उसकी गांठके अन्दरका माल संदेहसे नहीं देखा जाता उसी प्रकार पक्की गांठोंका हिसाब भी वैसा ही रहता है। मिलोंको जो पक्की गांठे सप्लाईकी जाती हैं उनके कन्ट्राक्ट पर भी यह व्यक्त नहीं किया जाता कि गांठ पीछे कितने प्रति कौनसे नं०की श्रेणीका माल रहेगा। फिर भी पक्की गांठके मालमें देखा जाता है कि देशी प्रेसोंकी अपेक्षा विदेशी प्रेसोंकी बंधी गांठें कुछ अधिक भाव पर बिकतीं हैं। इसका कारण स्पष्ट है कि उनमें कुछ अधिक सरस माल रहता है।

जूटके बाजारमें पक्की गांठोंका माल अच्छा माना जाता है पर इसमें भी एम० ग्रुप या क्रैक्स (M,Group cracks)मार्केका माल सर्वोत्तम माना जाता है। इसपर लाल रंगका चिह्न(मार्का) रहता है।

एम ग्रुप या लाल मार्के—में स्टैण्डर्ड क्वालिटी, स्पेशल सुपीरियर क्वालिटी, एक्सट्रा फाइन क्वालिटी आदि आती हैं। इसीके अन्तर्गत सिराजगंजी मालमें वेरी सुपीरियर, एक्सट्रा तथा सुपरफाइन आदि क्वालिटी आती हैं।

ढाका या नारायनगंजी—में जिसे डायमण्ड भी कहते हैं। नं०२ और ३ की श्रेणीका, माल बराबर भागमें रहता है। ढाकाकी गांठमें सुपीरियर, सुपर फाइन, एक्सट्राफाइन, गुड़, मीडियम आर्डिनरी तथा मैमनसिंही क्वालिटी भी रहती है। नारायनगंजीमें वेरी सेलेक्टेड और ग्यारेंन्टीड आदि क्वालिटी रहती हैं।

देशी—यह प्रायः नं०१, २ और ३की श्रेणीके मालकी मिलवां गाठ होती है जिसमें नं० १ और ३ का माल बराबरके परिमाणमें आता है। यह माल देशी नं०३ या देशी नं० ४ के नामसे बिकता है। इसमें एक मीडियम देशी भी होता है। इसकी गांठमें प्रायः १० से २० प्रतिशत नं० १ की श्रेणी-का,६० से ८० तक नं० ५ की श्रेणीका और १० से २० प्रतिशत तक नं० ३की श्रेणीका माल रहता है। भिन्न २ ट्रेड मार्कके आधार पर इसमें भी सुपीरियर सफेद, भूरा तथा हलके रंगका माल आता है।

तोसा—यह प्रायः देशीकी भाँति २० प्रतिशत नं० १की श्रेणीका, ६० प्रतिशत नं० २ की श्रेणीका और २० प्रतिशत नं० ३ की श्रेणीका माल गाठमें रहता है। इसमें गुड सुपर ब्रान्ड, एक्सट्रा फाइन, गुड कल तथा रेडका होता है।

मैंङ्गोज—इसमें अच्छे जूटके टुकड़े और उत्तरके साधारण मालको मिला कर गांठ बांधते हैं। यह बोरे बनानेके काम आता है इसपर △ मार्क आता है। इसमें सुपीरियर और गुड यह दो क्वालिटी आती हैं।

लाइटनिङ्ग—यह मैंगोजके समान होता है। इसपर चक्कर O का मार्क रहता है। इसमें सुपीरियर और गुड दो क्वालिटी आती हैं।

हार्टस—यह टुकड़ोंकी नीची क्वालिटीका माल होता है।

जूटकी लच्छी और टाट

जूटकी गाँठें जूट प्रेसमें बन्धती हैं। जूट मिलमें जूट काता जाता है और वहीं उसकी लच्छी बनाई जाती हैं और उसीके अन्तर्गत फैक्ट्री विभाग अर्थात् बुनाई खानेमें जूट बुना भी जाता है और उसके टाट तथा बोरे बनते हैं।

जूटकी कताई और लच्छी

जूटके रेशोंसे लकड़ी आदि कचरा निकाल लिया जाता है और फिर यंत्र द्वारा उसे मुलायम करते हैं। मुलायम करनेके लिये गर्म जल और ब्लीचिङ्ग आइल (Bleaching Oil) नामक तेलसे उसे तर कर दिया जाता है। और उसी हालतमें रेशे २४ घन्टेतक पड़े रहते हैं। इस अवधिमें तेल जूटके रेशोंमें पूर्णरूपेण व्याप्त हो जाता है। यदि आवश्यकता समझी गयी तो उसके टुकड़े टुकड़े कर डाले जाते हैं। जिस नं० का सूत तैयार करना होता है उस नम्बरपर यंत्रको ठीक लगा देते हैं। यंत्रमें रेशे साफ करने, धुनने और कातनेकी क्रिया स्वयं होती रहती है। यंत्रके पास खड़ा हुआ मनुष्य केवल यंत्रको रेशे पहुंचाता रहता हैं और इस प्रकार यंत्र द्वारा जूटका सूत अर्थात् जूट यार्न (Jute Yarn) तैयार हो जाता है।

सूतका नम्बर प्रायः सूतकी वजनके आधारपर ही रहता है जिसे अंग्रेजीमें स्पिण्डल कह कर चिन्हाङ्कित करते हैं। इसका पारस्परिक सम्बन्ध इस प्रकार है।

९० इञ्च=१ सूत

१२० सूत (३०० गज) = १ लच्छी

२ लच्छी = १ हीर

६ हीर = १ मुट्ठा (३६०० गज)

४ मुट्ठा = १ स्पिण्डल (Spyndle) या १४४०० गज।

जूटकी लच्छीका नम्बर जाननेके लिये १४४०० गज नापकर लच्छिया ले ले और फिर उन्हें तौल डालें और उक्त लम्बाईकी लच्छियाँ वजनमें जितने रतल हों उतना ही लच्छोंका नम्बर मानें।

भारतमें प्रायः २ रतली नम्बरका जूट यार्न ही अधिक काममें आता है। यहासे बोरेका कपड़ा बहुत कम परिमाणमें विदेश जाता है। अधिकांश भागके लिये बोरे यही काटकर सिये जाते है।

हैसियन या टाट—जूटका कपड़ा अर्थात् टाट प्रायः सादी या सरल टुइल बिनावटका होता है। कभी कभी टाटमें दुरसुती बिनावटका माल भी आता है। हैसियन माल जूटके कपड़ेमे सर्वोत्तम माना जाता है। यह एक सूतके तानेपर साधारण बिनावटका माल रहता है। यह कपड़ा नियमितरूपसे १ गजमें ४० इंच चौड़ा तथा १०½ औंस वजननीट बैठता। इसके हैसियन बोरे बनते है जो बृटेन, रूस, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, सैण्डविच द्वीपपुंज, आस्ट्रेलिया, मिस्र और दक्षिण अफ्रीकामें बहुत जाते है। हैसियन शब्दके अन्तर्गत हैसियन कपड़ा (टाट) और हैसियन गनी (बोरे) दोनों ही आते है। संयुक्त राज्य अमेरिका प्रायः हैसियन कपड़ा (टाट) ही अधिक जाता है। वे लोग अपनी सुविधा और रुचिके अनुकूल बोरे वहीं तैयार करते हैं।

जूटकी निकासी

भारतमें प्रायः जूट सितम्बर माससे ही बाहर जाने लगता है पर पूरी फसलकी निकासी प्रायः अक्टूबर और नवम्बर मासमें जोरोंसे विदेशके लिये होती है। और दिसम्बरमें कम पड़ जाती है। विदेशवाले अपने आर्डर सीधा कलकत्तेके शिपर्सके पास भेजते हैं और कभी कभी बृटेनकी मार्फत भी सौदा होता है। कलकत्तेके गनी बाजारमें इनडायरेक्ट कन्ट्राक्ट नहीं होते।

जूटपर निर्यात् कर

भारतसे बाहर जानेवाले विभिन्न प्रकारके कच्चे तथा अर्ध तैयार या तैयार मालपर कितना कर लगता है इस सम्बन्धमें सन् १९१६ ई० के ऐक्ट ४ टैरिफ अमेन्डमेन्टके सेड्यूल ३ में विस्तृत विवेचन मिलेगा।

निर्यात् कर कच्चे जूटपर	और	*तैयार जूट पर कर*
टुकड़ेपर ॥=) प्रति गाठ		बोरे १०) रु० प्रति टन (२२४० रतल)
दूसरे प्रकारके जूटपर २।) प्रति गाठ		हैसियन १६) रु० प्रति टन (२२४० रतल)

इसके अतिरिक्त कलकत्ता इम्पूवमेन्टके निर्यात् कर इस प्रकार है।

जूट =) प्रति गांठ और बोरा ।॥) प्रति गाठ

निम्न लिखित देशोंको छोड़कर और कहीं भी जूटपर आयात कर नहीं देना पड़ता।

रूस	·८५ शि० प्रति रतल	पर्शिया	·१४ शि० प्रति रतल
सर्विया	४४ शि० ,,	मैक्सिको	१०२ शि० ,,
बलगेरिया	२२ शि० ,,	रोमानियां	०४५ शि० प्रति रतल

हैसियनकी साइज और वजन

कलकत्तेकी जूट मिलोंमे तैयार होनेवाले हैसियनकी साइज कई प्रकारकी आती है अतः हम कलकत्तेकी बाजारमें चालू कतिपय साइजोंका विवरण नीचे दे रहे हैं।

चौड़ाई		वजन
४० इंच	=	७ औंस, ७½ औंस, ८ औंस; ९ औंस; १० औंस, १०½ औंस ११ औंस और १२ औंस तक
४५ इंच	=	११ औंस इसी मेलमे (Ex ७½–४०; ८–४०; १०–४०) भी आता है।
५० इंच	=	१० औंस
३७ इंच	=	Ex १०–४०
३६ इंच	=	Ex ७½–४०; ८–४०; ९–४०, १०–४०; १२–४०,
३२ इंच	=	Ex ७½–४०

ऊपर दिये गये Ex १०–४० का अर्थ यही है कि हैसियनका वजन १० औंस और चौड़ाई ४० इंच की है। अतः जहा Ex के साथ अंक हो वहा इसी आधारसे अर्थ व्यक्त होता है।

बोरोंकी साइज और वजन

कलकत्तेकी जूट मिलोंमें तैयार होनेवाले बोरोंकी साइज और वजन कई प्रकारका आता है। अतः कलकत्तेके बाजारमें चालू बोरोंका विवरण हम नीचे देते हैं।

प्रकार बोरा	आकार		वजन
गेहूंके बोरे	३६ ×२२	(इंचमे)	१२ औंस
फीजी पैकेट	३६×२२	”	१५ औंस
”	३६×२२	”	१६ औंस
चोकरके बोरे	५०×२६	”	२० औंस
	४६×३०	”	२० औंस
	४६×३०	”	१७ औंस
अङ्गरेजी चोकरके बोरे	४६×२७	”	१८ औंस
काटन पैकेट	८५×४५	”	३ रतल
	८५×४५	”	३½ रतल

जूट

हैसियन बैग	५६×२८	(इंचमें)	EX ८–४०
आलूके थैले	४५×२६	”	१$\frac{३}{४}$ रतल
आस्ट्रेलियन ऊनके थैले	५४×२७×२७	”	११$\frac{१}{२}$ रतल
” ” ”	५४×२७×२७	”	१०$\frac{३}{४}$ रतल
” ” ” (सिडनी)	५८×२७×२७	”	१० रतल
केप ऊन पेन्स	५४×२७×२०	”	८ रतल
सस्ते थैले (चीप पैक्स)	५४×२७×२७	”	५ रतल
	” ” ”	”	५$\frac{१}{२}$ रतल
	” ” ”	”	६ रतल
	” ” ”	”	६$\frac{१}{२}$ रतल
न्यूमीलैण्ड कार्न सैक	४८×२६$\frac{१}{२}$	”	२$\frac{९}{१६}$ रतल
आस्ट्रेलियन ” ” (ट्टइल)	४१×२३	”	२$\frac{१}{२}$ रतल
” ” ” ”	४८×२६$\frac{१}{२}$	”	२$\frac{५}{१६}$ रतल
” ” ” ”	३६×२६$\frac{१}{२}$	”	१$\frac{१}{२}$ रतल
लिबरपुल (ट्टइल)	४४×२६$\frac{१}{२}$	”	२$\frac{१}{२}$ रतल
इग्लिश कार्न सैक (ट्टइल)	५३×२७	”	३ रतल
काफीके थैले (ट्टइल)	४०×२६	”	२$\frac{१}{२}$ रतल
”	४०×२८	”	३ रतल
इजिप्शियन ग्रेन सैक	३०×६०	”	५ रतल
”	३०×६०	”	४ रतल
”	” ”	”	३$\frac{१}{२}$ रतल
”	” ”	”	३$\frac{१}{४}$ रतल
मिस्रके शक्करके थैले (ट्टइल)	४८×२८	”	२$\frac{१}{२}$ रतल
क्यूबा ” ” ” (”)	४८×२८	”	२$\frac{१}{२}$ रतल
” ” ” ” नं०२ (”)	४४×२६$\frac{१}{२}$	”	२$\frac{१}{२}$ रतल
” ” ” ” नं०B(”)	” ”	”	२$\frac{१}{४}$ रतल
” ” ” ” ” B(”)	” ”	”	२ रतल
सादे अनाजके बोरे	४०×२८	”	२$\frac{१}{२}$ रतल

वजनी अनाजके बोरे	४०×२८ (इंचमें)	२½ रतल
” ” ”	३६×२६½ ”	२½ रतल
अनाजके सादे हल्के बोरे	४०×२८ ”	२ रतल
सादे दोहरी तहके आटेके बोरे	५६×२८ ”	२¼ रतल
नमकके बोरे (दुरसुती)	४५×२६ ”	५½ रतल
नमकके बोरे	३६×२५ ”	२ रतल

बोरेके बाजारमें इन डायरेक्ट कन्ट्राक्ट नहीं होता। बोरेकी सबसे अधिक मांग आस्ट्रेलियामें रहती है। इससे कम क्रमशः संयुक्त राज्य अमेरिका, चिली, वृटेन, चीन, जावा, मिश्र और वेस्ट इण्डीजमें रहती है। वृटेनसे बोरे अर्जेन्टाइन रिपब्लिक, क्यूबा, और ब्रेजील भेजे जाते हैं।

हेशियन—से (गनी क्लाथ) के नामसे अमेरिका सबसे अधिक माल मंगाता है। इसके बाद क्रमशः अर्जेन्टाइना रिपब्लिक, कनाडा, वृटेन, और आस्ट्रेलियाका नाम आता है।

कलकत्तेके बाजारमें यहांकी जूट मिलोंका बना गनी क्लाथ या हेशियन नीचे लिखे साइज और वजनका आता है। लम्बाई १ गजकी है।

गनी क्लाथ या हेशियन

प्रकार	आकार	वजन
बारीक (ट्वल सैकिङ्ग)	२२ इञ्च चौडा	१४ औंस
साधारण(” ”)	२२ ” ”	१५ ”
	२७ ” ”	१४ ”
	२७ ” ”	१६ ”
	२७ ” ”	२१ ”
	३६ ” ”	१६ ”
	३६ ” ”	१७½ ”
	३६ ” ”	२४ ”
	३० ” ”	१७ ”
दुरसुती माल	२९ ” ”	२८ ”
” ” ”	४४ ” ”	२४ ”
एक सूत माल	३६ ” ”	२८ ”

चाय

इतिहास

ऐतिहासिक दृष्टिसे चायका विवेचन करते समय स्वीकार करना पड़ेगा कि इसका प्राचीन इतिहास भी एक प्रकारसे आधार हीन ही है। फिर भी जो कुछ लिखा जा सकता है वह केवल प्रचलित दन्त कथाओंके आधार पर ही। इतना होते हुए भी संसारमें चायकी ख्याति सबसे प्रथम चीनसे हुई माननी पड़ेगी। चीनके प्राचीन पुस्तकालयोंमें प्रवेशकर यथेष्ट अनुसन्धानके बाद सम्भव है कि भविष्यमें इस ऐतिहासिक रहस्य पर कुछ प्रकाश डाला जा सके। योरोपीय विद्वान ब्रेटूस-चनेडियरका मत है कि चीनी भाषाके प्राचीन कोष हू-य (Rh-ya) मे चायके पौधेकी चर्चा आयी है। उस ग्रन्थमें उसे 'किया और क' उ-टू (Kia and k'u-tu) कह कर सम्बोधित किया गया है। चीनी भाषामें क-उ के अर्थ कड़वेके होते हैं। आपका कहना है कि चीनी भाषाका आधुनिक 'च' अक्षर वहांके प्राचीन चीनी साहित्यमें व्यवहृत ट'+उ के उच्चारणमें गड़बड़ हो जानेसे ही उत्पन्न हुआ है। अर्थात पुराने टू (ट'+उ) (T'u) का उच्चारण बिगड़ कर वर्तमान च'+अ (Ch'a) के समान बोला जाता है। उच्चारणकी यह गड़बड़ी * सम्भवतः २०२ वर्ष मसीह सन् ईस्वीसे पूर्व और २५ वर्ष सन ईस्वीके बादके युगमें हुई मानी जाती है। फिर भी इस उच्चारणका व्यवहारिक प्रयोग साधारणतया ७ वीं और ८ वीं शताब्दीसे ही होने लग गया था। इसी प्रकार चीनी भाषामे चायके पौधेके लिये 'मिङ्ग' शब्दका प्रयोग होता है। मसीह सन् से पूर्व लिखे गये चीनी भाषाके ग्रन्थोंमें चायके सागकी चर्चा भी मिलती है जिसे 'मिङ्ग ट'+साई' कह कर सम्बोधित किया गया है। चायके † सागमे कोई अधिक विशेषता नहीं है क्योंकि इस युगमे भी शान और वर्माके निवासी चायकी गिरी हुई पत्तियोंको संग्रह कर साग बना कर खाते है। ऐसी दशामें यह भी सम्भव है कि उस युगमे चीन वाले भी चायकी पत्तीका साग बना कर खाते रहे हों।

---

* देखिये सन् १८८२ ई० का प्रकाशित *Botanical Sinensis vol ii page 20 and 130*

† देखिये *Commercial products of India by Sir George watt.*

चीनके पुराणोंमें सम्राट चीनङ्गकी चर्चा आयी है और ग्रन्थकारोंने उन्हें कृषि शास्त्र तथा वनस्पति शास्त्रका जनक माना है। सम्राट चीनङ्गका काल पुराणोंके अनुसार मसीह सन् से २७३७ वर्ष पूर्वका माना जाता है। पुराने चीनी ग्रन्थोंके अनुसार स्थिर किया जा सकता है कि इन्हें चायके चमत्कारका पूर्ण रूपेण अनुभव हुआ था। इसके अतिरिक्त चीनी भाषाके काव्य ग्रन्थोंमें जिनका सम्पादन कनफ्यूशशने मसीह सन् से ५५० वर्ष पूर्व किया था चायकी चर्चा पायी जाती है। चीनका प्राचीन इतिहास बताता है कि मसीह सन् की ४ थी शताब्दीमें तत्कालीन सम्राटके श्वसुर वैङ्ग मेङ्ग चाय पीनेके बड़े प्रेमी थे। वे अपने मिलने वालोंको भी चाय पिलाते थे परन्तु लोग चाय पीनेके उतने अभ्यस्त न थे अतः वे कड़वी कह कर उसे थूक देते थे। ब्रेट्स चिनेयडर(Brets-chneider)लिखता है कि १० वीं और १३ वीं शताब्दीके बीच चीनी भाषामें 'चाय' पर एक निबन्ध प्रकाशित हुआ था जिसमें लिखा गया था कि सम्राट वेन-टी * (Emperor wen-ti) को शिरकी पीड़ा सदा बनी रहती थी। अतः किसी भारतीय बौद्ध भिक्षुने सम्राटको चाय (मिङ्ग-Ming) की पत्ती उबाल कर पीनेकी सलाह दी थी। इस प्रकार औषधिके रुपमें वहा चायका प्रथमवार व्यवहार किया गया। कैम्फर (Kaempfer) नामक एक विद्वानने एक स्थान पर उपरोक्त प्रकारकी घटनाकी चर्चा करते हुए एक जापानी जनश्रुतिका उल्लेख किया है। उक्त विवरणसे पता चलता है कि जापानमें चायका प्रचार करनेवाला व्यक्ति दर्म नामके किसी भारतीय नरेशका तीसरा पुत्र था।

उपरोक्त दोनों प्रमाणोंसे यह तो स्थिर हो ही जाता है कि चीन और जापानमें चायका प्रचार जहा अत्यन्त प्राचीन है वहां उसके प्रसारमें भारत वालोंका भी हाथ रहा है। फिर भी १६ वीं शताब्दीकी खोजके आधार पर यह सत्य है कि हिमालयके† पूर्वीय पार्श्व पर अनादि कालसे चायके पौधे पाये जाते हैं। और चीनी भाषाके पुराने ग्रन्थोंमे चायके प्रमाणोंकी चर्चा कर उसे क+टु (K'a-tu) शब्द से सम्बोधित किया गया है जो वास्तवमें संस्कृत भाषाके कटु शब्दका ही अर्थ व्यक्त करता है ऐसी दशामें कमसे कम यह तो स्वीकार ही करना पड़ेगा कि भारत वाले चायसे प्राचीन कालसे ही परिचित थे।

चीन, जापान, और भारतके सम्बन्धको लेकर चायके विषयमें विचार करने पर प्रकट रूपसे यही मानना पड़ेगा कि चायका व्यवहार अत्यन्त प्राचीन है पर प्रथम उसका व्यवहार औषधिके रूपमें ही आरम्भ हुआ था। चायके व्यापक व्यवहारका प्रमाण हमें ८ वीं शताब्दीके पूर्वका नहीं मिलताहै।

---

* सम्राट वेन-टीका शासनकाल सन् ५८९ ई० से ६०५ ई० तक माना जाता है।

† *The tea plant must be wild in the Mountainous region which separetes the plains of India from those of China -De Condolle* देखिये *Tea* नामक ग्रन्थ लेखक *A, Ibbetson*

हम देखते हैं कि * टैङ्ग राजवंशके शासनकालमें लोयू (Lo-yu) नामक एक इतिहासकार हो गया है उसने अपने ग्रन्थोंमें चायकी उपयोगिताकी चर्चा की है। ६ वीं शताब्दीमें चायका व्यवहार उतना व्यापक नहो पाया था परन्तु ८ वीं शताब्दीमें उसने पूरी उन्नतिकी। चायके व्यवहारने यहां तक व्यापक रूप धारण कर लिया कि उसपर चीन सरकारने †कर लगा दिया। यह घटना चीन सम्राट टिह् सुंगके शासनकालके १४ वें वर्षकी है। अरबके यात्रियोंने भी लिखा है कि ९ वीं शताब्दी के मध्य कालमें चीनवाले चायके पूरे अभ्यासी हो गये थे। ९ वीं शताब्दीमें चीनकी यात्रा करने वाला सुलेमान नामक एक ‡ मुसलमान यात्री लिखता है कि, 'किसी पेड़की पत्ती उबालकर पीनेके चीनी लोग बड़े अभ्यस्त हो गये हैं। वे लोग उसे 'साख' कहते हैं.। 'मार्को पोलो'को प्रकाशित करते समय रम्यूसियोने (Ramusio) भूमिका लिखते हुए सन् १५४५ ई० में लिखा था कि 'हाजी मोहम्मद नामक फारसके किसी व्यापारीसे मैंने चाय पीनेकी चर्चा सुनी थी'। सन १५६० ई० में गैसपर-ड-क्रूजने लिखा था कि § चीनी लोग अपने मित्रोंको चीनी मिट्टीके प्यालोंमें चाय देते थे। बटेविया निवासी डा० बानटियस सन् १६३१ में लिखते हैं कि ‖ चाय कभी कभी तो इतनी कड़वी हो जाती है कि उसमें शक्कर मिलानेकी आवश्यकता पड़ जाती है। गार्सिया-डे-ओर्ट लिखता है कि ¶ 'चाय गर्मागर्म पी जाती है'।

जापान

जापानमें चायका प्रसार कैसे हुआ और कब हुआ यह ठीक नहीं कहा जा सकता। कैम्फरके मतानुसार यह कहा जा सकता है कि जापानको चायकी चाट किसी भारतीय यात्रीने बतायी थी जिसका नाम दर्म था। परन्तु लिखित आधारके अनुसार यह प्रमाणित होता है कि ९ वीं शताब्दी में प्रथम बार पुरोहित मियोये चायके पौधेको चीनसे लाये और जापानके दक्षिणी द्वीप कियू-शियू में उसकी खेती करानी आरम्भ कर दी। चाय पीनेका व्यापक व्यसन १३ वीं शताब्दीसे जापानमें आरम्भ होता है।

---

* इस राजवंशका शासनकाल सन् ६१८—९०६ ई० के बीचका माना जाता है

† यह घटना सन्—७९३ ई० की है।

‡ *The people of China are accustomed to use as a beverage an infusion of the plant, which they call Sakh 'It is considered very wholesome This plant (leaves) is sold in all cities of the Empire'*—देखिये Reinaud का सन् १८४५ ई० में प्रकाशित *Relat des. voy faits par les Arabes et les Persians dans l Inde et a la China vol 1 page 40*

§ देखिये *Purcha's Pilgrimage Vol in Page 180*

‖ देखिये *His nat et, med Ind 1631*

¶ देखिये *Linscholen* लिखित *D. Christ Exp in Sin vol 1 page 68*

योरोप

योरोपमें चायके प्रसारका श्रेय डच लोगोंको ही है। जब डचलोग वैन्टम नगरमें (जावा) स्थायी :रूपसे निवास करने लगे तो उनका सम्पर्क चीनी लोगोंसे हो गया और वे लोग भी चाय पीनेके अभ्यस्त हो गये। अतः उन्होंने हालैण्डमें चायका प्रसार किया और यहींसे लार्ड 'आर्लिं-ङ्गटन आदि चाय इङ्गलैंड ले गये। यह घटना १७ वीं शताब्दीके मध्यकालकी कही जाती है। इसकी चर्चा करते हुए मि० ए० इबेट्सन महाशय अपने 'टी' नामक ग्रन्थमें लिखते हैं कि महारानी एलिजाबेथके शासनकालमें किसी अंग्रेज दम्पत्तिको इंग्लैंडमें कुछ चाय मिल गयी। उनलोगोंने उसे उबाल डाला और उसके पानीको फेंक दिया और उबाली पत्ती रोटीके साथ खा गये। अर्थात् उस समय इग्लैंड वाले चायके व्यवहारसे बिलकुल अपरिचित थे। इसीके बाद चायका व्यवहार वहां भी बढ़ चला। यही क्यों चायके एकमात्र व्यापारी मि० थामस गार्वे चाय पिलानेकी दूकान खोलनेकी चिन्ता करने लगे और सन् १६५९ ई० में आपने एक्सचेंञ्ज ऐले (लण्डन) में गर्म चाय बेचनेकी प्रथम दुकान खोलदी। उस कार्यसे चायके सम्बधमें इग्लैंडमें एक प्रकारकी हलचल सी मच गयी। पेपीजने ता० २८ सितम्बर सन् १६६० ई० के दिन अपनी डायरीमें यह भी लिख दिया कि मैंने चायका एक प्याला मंगाकर पिया। चाय मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं पी थी। बृटेनकी सरकारने सन् १६६० ई० में चायपर कर भी बैठा दिया। यह कर तैयार की गयी चायपर प्रति गैलन ८ पेन्सके हिसाबसे लगाया गया था। भारतमें व्यवसाय करनेवाली ईस्ट इण्डिया कम्पनीने सन् १६६४ ईस्वीमें बृटेन सम्राट् चार्ल्स द्वितीयको ४० शि० प्रति पौण्डवाली १ पौंड २ औंस चाय भेंट स्वरूप प्रदान की। इसके २ वर्ष बाद अर्थात् १६६६ ई० में २२¾ रतल उत्तम चाय सम्राट्को भेंट की। इस समय इंग्लैण्डमें चाय पीनेका प्रचार पर्याप्त हो चुका था फिर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनीका चायके व्यवसायकी ओर अभी तक ध्यान नहीं था। वह तो केवल भेंट करनेके लिये कभी कभी विदेशसे चाय मंगा लिया करती थी। इंग्लैण्डमें चायकी माग बढ़ती गयी फिर भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी सन् १६७७ ई० तक चुपचाप बैठी रही। इंग्लैण्डवालोंकी आवश्यकता पूर्तिके लिये जावामें चायकी खरीद होती रही परन्तु सन् १६८६ ई० मे जब डच लोगोंने जावासे अंग्रेजोंको निकाल बाहर कर दिया तब ईस्ट इण्डिया कम्पनीको चायका व्यवसाय करनेपर बाध्य होना पड़ा। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इंग्लैण्डकी मागको पूरा करनेके लिये सूरत और मद्रासके बाजारसे चाय खरीदना आरम्भ किया।

भारत

भारतमें चायके व्यवसायका वर्तमान प्रचलित ढंग कबसे आरम्भ होता है यह कहना अवश्य

ही कठिन है। परन्तु पाश्चात्य विद्वानोंके मतानुसार इसका आरम्भ १७ वीं शताब्दीके मध्यकाल से होता है। इस सम्बन्धकी चर्चाका उल्लेख करते हुए लिखा गया है कि उस समय तक भारतभरमें साधारणतया चायका व्यवहार व्यापक हो गया है। इतना ही नहीं भारतमें रहनेवाले अंग्रेज और डच दोनों ही चायका व्यवहार जोरोंसे करते थे और यहाके रहनेवाले फारस निवासी चाय न पीकर कहवा पीते थे।

भारतमें जहां चायका प्रसार हो रहा था वहां इंग्लैण्डमें चायकी मांग दिन प्रति दिन बढ़ती जाती थी जावासे अंग्रेज निकाले जा चुके थे अतः इंग्लैण्डकी मांग पूरी करनेके लिये केवल दो ही बाजार थे सूरत और मद्रास, जहां चाय खरीदी जाती थी। ऐसी दशामें भविष्यका विचारकर बृटेनकी सरकार चिन्तित थी। उसने भावी अनिष्टसे बचनेके उद्देश्यसे ईस्ट इण्डिया कम्पनीको भारतमें चायकी खेती करानेका परामर्श दिया। इस समय कम्पनीके हाथमें यदि कोई लाभका व्यवसाय था तो वह चाय का था। कम्पनी भारतके सूरत और मद्रासके बाजारमें चाय खरीदती और इंग्लैण्डके बाजारमें मनमाने लाभपर बेंचती थी। ऐसी दशामें कम्पनीने भी चायकी खेती करानेकी ओर ध्यान देने में लाभ समझा। क्योंकि सन् १७८७ ई० में ही उसने भारतकी बाजारोंसे खरीदकर इंग्लैण्डमें २,००,००,००० रतल चाय खपाकर बेशुमार लाभ उठाया था। बृटिश सरकारके आदेशानुसार ईस्ट इण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने भारतमें चायकी खेती करानेके कार्यका सन् १७८७ ई० में आरंभ कर दिया और आवश्यक व्यवस्था करनेकी आज्ञा तत्कालीन गवर्नर जेनरल वारेन हेस्टिङ्गको—दे दी। उसी वर्ष सर जोसेफ बैङ्कर्सकी देख-रेखमें चायकी खेती करानेके सम्बन्धमें एक आयोजना तैयार करायी गयी। इसमें चायकी खेती करानेके लिये आवश्यक सभी पार्श्वों पर पूर्णरूपेण विचारकर प्रकाश डाला गया और साथ ही खेतीके उपयुक्त केन्द्रोंका भी निर्देश कर दिया गया। इस सम्बन्धमें धीरे धीरे खोज हो ही रही थी कि सन् १८२० ई० में आसामके प्रथम कमिश्नर मि० डेविड स्काटने आसामसे कुछ पत्तियां कलकत्ते यह कहकर भेजी कि आसामवाले इसे जंगली चाय कहते हैं। अतः इसकी जाच की जाय। उधर सन् १८३४ ई० में उस समयके गवर्नर जेनरल लार्ड वेन्टिकने जनवरी मासकी ता० २४ को एक प्रस्ताव पासकर चायकी खेती करनेका प्रबन्ध भार उठा लिया और मैंचिन्टोश एण्ड कम्पनी नामक फार्मके मि० जी० जे० गार्डनको चीन भेजा तथा डा०एन० वालिचकी देख रेखमें एक कमेटी बनाई। डा० एन० वालिचने आसाम कमिश्नरकी भेजी हुई पत्तियोंके सम्बन्धमें प्रथम ही संदेह किया था और इसी कारण वे लंदनकी लीनियन सोसाइटीके पास निर्णयके लिये भेजी जा चुकी थी। उधर चीनसे बीज मंगाकर कमायू जिलेमें प्रयोगात्मक खेती आरम्भ कर दी गयी। इसी बीच लन्दनकी सोसाइटीने निर्णय देदिया कि वे पत्तियां निसंदेह चायकी ही हैं। फिर क्या था डा०

म्न० वालिच अपनी कमेटीके साथ जोरोंसे काम करने लगे और फल यह हुआ कि सन् १८३७ ई० में आपकी कमेटीने भारतके पूर्वीय भूभागमें चायके सुविस्तृत क्षेत्रको खोज निकाला। इसका प्रधान श्रेय कमेटीके सदस्य जेनकिन्स और चार्लटनको ही है।

१९ वीं शताब्दीके आरम्भतक पूर्वीय देशोंसे व्यवसाय करनेका अधिकार केवल भारतकी ईस्ट इण्डिया कम्पनीहीको था। अतः कम्पनी व्यापारसे अच्छा लाभ उठा रही थी लेकिन दूसरी कम्पनियोंको यह फूटी आंख न भाता था और लोग इसकी स्वतंत्रताके बाधक हो रहे थे। फलतः सन् १८३४ ई०से ईस्ट इण्डिया कम्पनीके हाथसे चायके व्यापार करनेकी स्वाधीनता छिन गयी। जिससे मुक्तद्वार व्यवसाय हो जानेके कारण लोग दौड़ पड़े। भारतके पूर्वीय भूभागमें चायकी खेती आरम्भ हो चुकी थी उसके परिणाम स्वरूप सन् १८३६ ई० में भारतकी १ रतल चाय लन्दन भेजी गयी। सन् १८३७ ई० मे भारतकी ५ रतल चाय लन्दनके बाजारमें गयी और सन् १८३८ ई० मे इसका परिमाण इतना बढ़ गया कि १० छोटे बक्सोंमें भरकर भेजी गयी सन्० १८३९ ई० में भारतकी चायके ९५ बक्स भेजे गये और सन् १८४० ई० में भारतकी चायके नीलामका प्रबन्ध भी नियमित रूपसे आरम्भ होगया।

सीलोन

इस द्वीपमें चायकी खेतीका कार्य आरम्भ करनेके लिये डच और अंग्रेज दोनों ही उत्सुक थे और दोनोंही ने उद्योग किया था परन्तु सन् १८७३ ई० तक उन्हें सफलता न मिली। सन् १८७० ई०में काफी की पत्तीमें बीमारी लग जानेके कारण नेटालके समान यहा भी इसकी समस्या उपस्थित हो गयी। यहां भी चायकी खेतीके उत्थानका युग यहींसे आरम्भ होता है।

सबसे प्रथम सन् १८३९ ई० में चायकी खेतीका प्रयोग यहां किया गया। सन् १८६७ ई० में मेसर्स ऐ० ग० डन्कम एण्ड को० ने यूलकोन्डूरा में चायका बगीचा लगाया। इस प्रकार उन्नति होती गयी और सन् १८७७-७८ की घटनाके कारण नयी पूंजीके आनेसे इस उद्योगको अच्छा बल मिला। और सन १८९७ ई० मे तो हम देखते है कि यहा चायकी खेतीने ऐसी उन्नतिकी कि उस वर्ष ३ लाख ५० हजार एकड़ भूमिमें यह बोई गयी। उसी समयसे वहां क्रमशः इसकी उन्नति होती जाती है।

उपरोक्त विवरणसे पाठक समझ गये होंगे कि चायने किस प्रकार अपना प्रसार किया और आज सभ्य समाजमें यह किस लोक प्रियताकी दृष्टिसे देखी जाती है।

चायके बीज

चायके बीज अण्डाकार और कठिन छिलके वाले होते हैं। बीजके लिये रक्खे गये पौधोंको स्वाभाविक ढंग प्राकृतिक नियमानुसार बढ़ने दिया जाता है। वे बढ़कर ३० से ४० फीट तक ऊंचे वृक्ष

हो जाते हैं। इन वृक्षोंमें प्रायः सितम्बर मासमें सुन्दर फूल निकलते हैं जो देखनेमें सफेद अथवा कुछ गुलावी मायल निकलते हैं। इनमें कुछ सुहावनी सी एक प्रकारकी गन्ध भी होती है, फूल साधारणतया एक अथवा गुच्छेके रूपमें पत्तीके उद्गम स्थानके पास निकलते हैं। फूलोंके बाद फल निकलते हैं जो आकारमें गोल होते है। फलके भीतर तीन आवरण रहते हैं जिनमें एक एक बीज होता है इस प्रकार एक फलमें तीन बीज होते हैं। फल सामान्यतया नवम्बर मासमें लगते हैं और एक वर्ष बाद पक कर तैयार होते हैं जिनके बीज चायकी खेतीके काममें आते हैं। ये एक वर्ष बाद नवम्बर मासमें तैयार हो जाते हैं और फिर चुन कर संग्रह कर लिये जाते है। बीजमें तेलका भी अंश रहता है।

चायके बीज चायकी खेती करनेके काममें आते हैं अतः जहां वे पैदा होते है वहा पर्याप्त प्रमाणमें खेती करनेके काममें आते है और शेष दूसरे देशोंको निर्यातके रूपमे खेतीके लिये भेजे जाते हैं।

चायके पौधे

चायका पौधा स्वभावसे ही झाड़ीकी जातिका पौधा होता है। यदि वह समय समय पर कलम न कर दिया जाय तो वह बढ़ कर ३० से ४० फिट ऊंचा वृक्ष हो जाता है। परन्तु खेतीकी दृष्टिसे वे समय समय पर क़लम कर दिये जाते हैं और उनसे नवीन सुकोमल पत्तियाँ और किलंगे निकल आते हैं। जो उसमें सघन पत्तियोंके समूहको विकसित कर देते हैं और यह हरे भरे पौधे प्रचुर पत्तियोंके भण्डारको बढ़ानेके कारण होते है।

चायकी पत्ती

स्थान और परिस्थितिका संयोग पाकर विभिन्न जातिके चायके पौधोंकी पत्तियाँ भिन्न भिन्न आकार प्रकारकी होती है। फिर भी साधारणतया वे लम्बी और पतली एवं कम चौड़ी होती हैं। उनके किनारे प्रायः दन्त पंक्तिके आकारसे प्रतीत होते हैं। पत्तियोंमें बहुत सूक्ष्म छिद्र रहते हैं जिनमें एक प्रकारका तेल ऐसा पदार्थ रहता है जो चायके स्वादको चित्त प्रिय बनाता है। नव विकसित कोमल पत्तियोंकी नीची सतह पर रोंयेसे होते है जो आयु पाकर विलीन हो जाते है। कुछ पत्तियाँ घुंघराली होती है और इनमें तेलका अंश अधिक रहता है। इस तेलके आधिक्यके कारण ही चायके स्वादमें अधिक विशेषता उत्पन्न हो जाती है जिससे उत्तम प्रकारकी चाय तैयार होती है।

चायकी जातियां

चायकी प्रधान जातियोंमें व्यवसायकी दृष्टिसे आसामी, लूशानी, नागा, मनीपुरी, वर्मी तथा शान, यानान एवं चीनी यही प्रख्यात है। इनकी पत्तियोंके आकार प्रकारमें ही भिन्नता होती है। जो स्थान और परिस्थितिकी भिन्नताके कारण चायमें भारी अन्तर उत्पन्न कर देती है। स्मरण

।है उपरोक्त जातियोंका सम्बन्ध केवल खेती फार्मके उत्पन्न किये जानेवाले पौधोंसे ही है। जंगली अवस्थामें मिलनेवाले पौधोंकी चाय किसी काम की नहीं होती और न वे उतनी प्रचुर संख्यामे पाये ही जाते हैं।

वर्मा और शान—की चायकी पत्तियां मनीपुरी चायकी पत्तियोंसे बहुत कुछ मिलती है। इसकी पत्तियाँ कुछ छोटी और मोटी होती हैं।

यानान और चीनी—इस प्रकारकी चायको विस्तृत क्षेत्र चीनकी सुप्रसिद्ध नदी याङ्ग-टस-कियाङ्गकी तराईमें फैले हुए हैं। इन क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाली समस्त चाय शंघाई और मिङ्गप्पोके वन्दरोसे विदेश भेजी जाती है।

भारतीय चायके प्रकार

यों तो संसारमें व्यवसायकी दृष्टिसे बोई जानेवाली चाय चार प्रकारकी होती है पर भारतमें उत्पन्न होने वाली चायकी कितनी ही उपजातिया है जो क्रमानुसार, आसामी, लूसाई, नागा पहाड़ी मनीपुरी वर्माशान, यानान चीनीके नामसे सम्बोधित की जाती है। आसामी चायमें दो भेद हैं एक प्रकारकी चायको तो लिंगलो और दूसरी को वाजालोना कहते हैं।

आसामी—चायकी पत्तियाँ ६से ७½ इञ्च तक लम्बी और २½से २¾ इंच तक चौडी होती है। पत्तीके बीच वाली मोटी नसके दोनों ओर सोलह सोलह नसें होती हैं। इस जातिके पौधे भारतकी चाय उत्पन्न करने वाले माने जाते हैं इनकी चाय सबसे उत्तम होती है। इस जातिकी चायकी चर्चा करते हुए सन् १६८६ ई० में आविंगटन (Ovingtons) ने लिखा है कि इसकी तीन उपजातियाँ होती हैं जो विङ्ग, सिङ्गलो और बोहे नामसे सम्बोधित की जाती है। इनमेंसे सिङ्गलो तो आज भी आसामी चायमें सर्वोच्च मानी जाती है।

लूसाई—चायका दूसरा नाम कच्छारकी चाय भी है। यह चाय अल्प परिमाणमें उत्पन्न होती है और इसीलिये कोई कोई इसे मनीपुरकी जातिकी चाय मानते है। इसकी पत्ती भारतीय चायकी पत्तियोंमें सबसे बडी होती है इसकी लम्बाई १२ से १४ इञ्च तक और चौड़ाई लगभग ७½ इञ्चके होती है। बीचवाली मोटी नसके दोनों ओर २८ से २४ तक प्रत्येक ओरके हिसाबसे नसें होती हैं।

नागा—चायकी पत्तियाँ लम्बी और कम चौड़ी होती हैं। इसकी लम्बाई ६ से ६ इञ्च तक और चौडाई २ से ३½ इञ्च तक होती है। बीच वाली प्रधान नसके दोनों ओर १६ से १८ तक प्रत्येक ओरके हिसाबसे नसें होती हैं।

मनीपुर—चाय की पत्ती दलदार और मोटी होती है। इसकी पत्ती ६ से ८ इञ्च तक

और २ से ३½ इञ्च तक चौड़ी होती है। बीच वाली मोटी नसके उभय ओर २२ नसें होती हैं। यह जंगली अवस्थामें मिलती है। इसके बीज मूल्यवान होते हैं।

उपरोक्त प्रकारकी चायके अतिरिक्त चायकी और भी कई जातियाँ होती हैं जिनमें बोहिया, स्ट्रिक्टा और मलाका की चाय अधिक प्रख्यात नाम है।

चायकी खेती

विशेष प्रकारकी पद्धतिसे तैयार किये गये चायके पौधोंके बीजसे चायकी खेती की जाती है। संग्रह किये हुए बीजको एक विशेष प्रकारके व्यवस्थित क्षेत्रमें बोया जाता है। यह क्षेत्र ३ फीट से ५ फीट तकका एक छोटा टुकड़ा होता है। इसपर अधिक देखरेख रक्खी जाती है। इसे ऊपरसे घासफूससे ढक दिया जाता है और साथ ही स्वच्छ वायु और पर्याप्त प्रकाशके आनेके लिये प्रबन्ध कर दिया जाता है। इसके सिवा भूमिपर इस ढंगसे क्यारी बना दी जाती हैं कि जिससे पौधोंकी जड़ोंमें पानी बराबर पहुंचता रहे पर वहां देर तक न ठहरे। बीज के लिये ४से६ इंचकी दूरीपर एक इंचका गहरा गड्ढा कर उपरसे खाद और उर्वरा मिट्टी डालकर भर दिया जाता है पश्चात् उसमें बीज भी बोया जाता है। ४० रतल बीजमें १० हजार पौधे अंकुरित होते हैं और इनसे २से २½एकड़ जमीनतक बोई जा सकती है। नवम्बर और दिसम्बर मासमें बोये गये पौधे मई और जून तक बगीचेमें लगाने योग्य हो जाते हैं। कभी २ लोग नवम्बर और दिसम्बरमें साल भरके पुराने पौधे ही बगीचेमें लगा देते हैं। बगीचेकी भूमि नवीन होती है और पहले हीसे जलाकर साफकर रक्खी जाती है। नवीन भूमिके अभावमें गोबरकी खाद काममें आती है। इसके अतिरिक्त नाइट्रोजनका अधिक भाग रखनेवाली दूसरे प्रकारकी खाद भी काममें लायी जाती है। कभी कभी तो सूखे रक्त की भी खाद दी जाती है। बगीचोंमें पौधे लगाते समय एक पौधेको दूसरे पौधे से ४ से ५ फीटके अन्तर पर लगाया जाता है।

नवअंकुरित पौधोंको कड़ी धूप, कड़ाके की ठंढक और अत्याधिक ऊष्णतासे बचानेके लिये उन पर घास फूससे छायाकर दी जाती है। वर्षाऋतुमें घासफूसका आवरण निकाल डाला जाता है। पौधे ज्यों ही ८ इंच तक ऊंचे हुए कि बगीचेमें उपरोक्त क्रमानुसार वे लगा दिये जाते है। एक पौधेके लिये. साधारणतया ४½ फिट लम्बा और इतनाही चौड़ा क्षेत्र छोड़ दिया जाता है। पौधा लगानेके लिये जो गड्ढा तैयार किया जाता है वह १५ से १८ इंच तक गहरा होता है। इसमें छर्रेदार गीली मिट्टी भरकर स्थान बराबर कर दिया जाता है। पौधा लगाते समय कुछ मिट्टी निकालकर फिर पौधा लगाते हैं। प्रथम वर्ष पौधा १५ से १८ इंचतक ऊंचा हो जाता है और दूसरे वर्षके अन्ततक वह ४ से ६ फीट तक ऊंची झाड़ीके समान हो जाता है। तीसरे वर्ष पौधोंको भूमिसे आठ इंच ऊपर रखकर शेष भागको कलम कर दिया जाता है। तीसरे वर्षके अन्ततक उसमें फिरसे सीधी

छड़के आकारका डंठल निकलता है और २ से ३ फीट तक ऊंचा हरा भरा पौधा बन जाता है। और पत्ती चुनने योग्य हो जाता है। इस अवस्थामें पहुंचकर एक पौधा २० वर्ग फीट क्षेत्र घेर लेता है।

चायकी खेतीके उपयुक्त जलवायु

जिस स्थानकी वायुमें उष्णता और जलका अंश अधिक रहता है उसमें खेती की जासकती है। जहां थोड़े थोड़े समयके अन्तरपर जोरकी वर्षा हो और पौधोंकी जड़पर पानी न रुका रहे वहा खेतीके उपयुक्त क्षेत्र माना जाता है। जिस प्रकारके जलवायुमें, समशीतोष्ण प्रधान प्रदेशवाले जंगल लहलहा उठते हैं और दलदली भूमिपर भी पौधे पनप जाते हैं वहां चायकी खेती सुगमतासे की जा सकती है। जिस भूमिमें गहराई तक उपजाऊपन हो और पानी पड़ते ही भूमिमें प्रवेश कर जाय तथा शेष जल पौधेके जड़परकी मिट्टी बहाये बिना शीघ्र बह जाय। दोरस मिट्टी जिसमें उसे मुलायम रखने भरके लिये कुछ अंश रेतीका भी रहे जो धूप लगते पपडी बनकर न सूख जाय और न पानी पड़ते ही कीचडमें बदल जाय।

चायकी पत्ती चुननेका समय

भारतमें प्रायः अप्रैल माससे चायकी पत्तियोंकी चुनाई आरम्भ होती है। चायके पौधोंको कलम कर देनेके बाद और शीतकालीन अवकाश ले चुकनेके बाद नयी पत्तियां निकलने लग जाती है और उसी समयसे प्रथम चुनाई आरम्भ कर दी जाती है। पौधेके प्रधान डंठलपर छ पत्तियां भरी पूरी निकल आती हैं तब प्रथम चुनाई आरम्भ होती है। प्रधान डंठलको छोड़कर पौधेकी और शाखोंपर की ऊपरवाली दो पत्ती तोडी जाती हैं इसके ७ से ६ दिन बाद दूसरी चुनाई आरम्भ होती है इसमें केवल दो ही पत्ती छोडी जाती है। तीसरी बारकी चुनाईमें एक पत्ती और चौथीमे सब तोड़ ली जाती है। अन्तिम बारकी चुनाईका समय लगभग अक्टूबरसे दिसम्बरके बीच आता है।

चाय बनाना

फेक्टरीमें पत्तियां तौली जाती हैं और फिर वे बांसकी छिछली टोकरियोंमें फैला दी जाती है जहा वे १८ से ३० घन्टे तक पडी रहती हैं। वैसी अवस्थामें दिन चढ़ते ही उनका पानी मर जाता है और वे मुरझा जाती है। इसके बाद बडे बडे कड़ाहोंमे डालकर उन्हे आंच दी जाती है। फिर वे बेलनके नीचे दबा दी जाती है जिससे पत्तियोंकी नसें टूट जाती हैं तथा पत्तीके छिद्रोंमे भरा हुआ तैल समान पदार्थ पत्ती भरमें फैलकर मिल जाता है। इतनी विधिका अनुभव पा जानेके बाद वे किसी ठंढे स्थानमें १ से २ इंच मोटी तहोंमें फैला दी जाती है। जहा वे २ से ३ घन्टे तक वैसी ही अवस्थामें पड़ी रहती है। इस प्रकार तैयार की गयी पत्ती चायके नामसे सम्बोधित की जाती है।

चायकी श्रेणी

इसका निर्णय चायकी पत्ती तोड़ते समय ही किया जाता है और उसीके अनुसार चायकी श्रेणी स्थिर की जाती है। चायकी श्रेणी चीनी नाम संस्कारके अनुसार सम्बोधित की जाती हैं जैसे फ्लावर आरेञ्ज पीको, आरेञ्जपीको, ब्रोकेनपीको, पीको, पीको सूचाङ्ग, फैनिङ्ग और चायका चूर्ण (Tea dust) आदि श्रेणियां मानी जाती हैं। इन्हींके अनुसार चायकी श्रेणी निर्धारित कर उसे निर्वात् टीनमें वंद किया जाता है और फिर वह बाजारमें बिकनेके लिये भेजी जाती है। जिस श्रेणीके चायमें जितनी अधिक थीन रहती है वह उतनी ही उत्तम मानी जाती है। उत्तम श्रेणीकी चायमें थीनका भाग अधिक होनेसे उसका मूल्य भी औरोंकी अपेक्षा अधिकही होता है।

चायका वैज्ञानिक विश्लेषण

चायके रसायन सम्बन्धी विवेचनमें चायकी उत्तमता को ध्यानमें रखना पड़ता है। चायको उत्तम श्रेणीका बनानेवाले पदार्थोंमें तेल सा चिकना पदार्थ, टैनिन तथा थीन यही तीन प्रधान रुपसे पाये जाते हैं। चायके अन्दर जो एक प्रकारकी प्रिय गन्ध सी मिलती है वह चायकी पत्तीमें पाये जानेवाले तेलके कारण है। परन्तु चायको स्फूर्तिदायक गुण देनेवाली वस्तु बना देनेका श्रेय थीन नामक पदार्थको ही है। चायमें थीन पायी जाती है और इसीके कारण चाय पीनेसे कुछ समयके लिये एक प्रकारको स्फूर्तिका संचार हो उठता है। स्नायुमें एक प्रकारकी चेतन शक्ति सी दौड़ जाती है। थीन वही पदार्थ है जो इसी प्रकारके अन्य पेय पदार्थों जैसे काफी, कोको और कोलानट, आदिमें पायी जाती है। तेल और थीनके अतिरिक्त चायमें टैनिन भी पाया जाता है टैनिन भूखको कम कर देती है और पाचनशक्तिको शिथिल कर देनेमें सिद्धहस्त है। इसीलिये अनुभवकर देखा गया गया है कि गर्म पानीमें अधिकसे अधिक १० मिनट तक ढकन बंद कर चाय उबालनेसे थीनका पूरा अंश उतर आता है पर देरतक गर्म की जानेसे टैनिनका अंश उतर आता है जो पाचन शक्तिको बलहीन कर भूख वंदकर देता है। चायका रसायन सम्बन्धी विश्लेषण इस प्रकार हैं।

१ जल	५०	प्रतिशत
२ मास बनानेवाले पदार्थ	१८००	,,
१ थीन	३००	,,
२ कैसीन	१५००	,,
३ गर्मी देनेवाले पदार्थ	२५·७५	,,
१ आरोमैटिक आइल	०७५	,,
२ शक्कर	३००	,,
३ गोंद	१८००	,,
४ चर्बीके तेल	४००	,,
४ टैनिन एसिड	२६२५	प्रतिशत
५ लकड़ीका अंश	२०००	,,
६ खनिज द्रव्य	५००	,,
कुल	१००००	

उपरोक्त विश्लेषणसे स्पष्ट हो जाता है कि चायमें जहां मांस बनानेवाले पदार्थ १८ प्रतिशत और शरीरमें गर्मी पहुंचानेवाले २५-७५ प्रतिशत हैं वहा पाचन शक्तिको कमजोर कर भूख बंद कर देनेवाला टैनिन नामक पदार्थ भी २६-२५ प्रतिशत मिला हुआ है। ऐसी दशामें टैनिनको दूर रखनेके लिये जो उपाय काममें लाया जाता है वह ध्यानमें रखना अवश्यक है। १० मिनटके भीतर चायके उत्तम * तत्त्वांश निकल आते हैं अतः इसी अवधिके भीतर चाय छानकर पीनेसे टैनिनका अंश न उतर पायेगा। एक ही पौधेसे भिन्न भिन्न समयपर पत्तिया तोड़कर परीक्षा की गयी है और सिद्ध हुआ है कि सुकोमल नवजात पत्तियोंमें थीन नामक शक्ति वर्द्धक पदार्थ पुरानी अथवा मोटी और कड़ी पत्तियोंकी अपेक्षा कहीं अधिक पाया जाता है। और पुरानी पत्तियोंमें टैनिन पदार्थका ही भाग अधिक रहता है। शुद्ध चायमें कितने ही प्रकारके दूषित पदार्थ मिलाये जाते थे परन्तु अब अधिक कड़ाई रक्खी जानेके कारण यह कार्य बहुत कम हो गया है।

हरी चाय के सम्बन्धमें भी पहिलेलोगोंमें पूरा भ्रम फैला हुआ था परन्तु रावर्ट फ्वारच्युनके द्वारा रहस्योद्घाटनके कारण बहुत कुछ यह भ्रम दूर हो गया है। इन्होंने लिखा है कि मैं स्वयं चीनके उस प्रदेशमें गया जहा हरी चाय बनायी जाती है। वहा जाकर मैंने देखा कि आसमानी रंगको पीसकर लोग पहिलेहीसे तैयार रखते हैं और जब अन्तिमबार कड़ाहोंमें चायकी पत्तिया भूंनी जाती हैं तब उतारनेके ५ मिनट पूर्व चम्मचसे पत्तियोंपर रंग छिड़क दिया जाता है। इसके बाद पत्तिया खब तेजीसे चलायी जाती है जिससे रंग सब जगह मिलकर चायमें जज्ब हो जाता है।

संसारमें चायकी मांग

संसारमें सबसे अधिक चायके पीनेवालोंमें बृटेनके लोग हैं। यहा चायकी खपत सबसे अधिक होती है। परिमाणकी दृष्टिसे चायकी खपतमें जहा ग्रेट बृटेनका सबसे ऊंचा स्थान है वहां दूसरे स्थानपर रुस आता है। और तीसरा स्थान संयुक्त राज्य अमेरिका माना जाता है। इन तीनके बाद फिर हालैण्ड, आस्ट्रेलिया, कनाडा, जर्मनी, और न्यूजीलैण्ड आदिका स्थान क्रमानुसार आता है। बृटिश साम्राज्यान्तर्गत उत्पन्न होनेवाली चायकी प्रतियोगितामें यदि कहींकी चाय खड़ी हो सकती है तो वह चीनकी है। परन्तु संसारकी आवश्यकताका ५० प्रतिशत भाग केवल भारत पूरा करता है। ऐसी दशामें संसारकी मांगके शेष ५० प्रतिशतके साथ ही चीनकी प्रतियोगिताका प्रश्न उठ खड़ा होता है पर दूसरे देशोंमें बृटिश साम्राज्यकीही चायकी अधिक मांग रहती है। संयुक्त राज्य अमेरिका और

* चाय कोई भोजनका पदार्थ नहीं है जो खाकर पचाया जा सके। उससे तो कुछकालके लिये शरीरमें एक प्रकारकी स्फुर्तिका सचार हो जाता है और निकटवर्ती वातावरण चैतन्यमय प्रतीत होने लगता है। यह सब चायमें पाये जानेवाले थीन *Theine* अथवा *Methyl Theobromine* का प्रभाव है। इस पदार्थकी बैज्ञानिक मार्फिया $C_8H_{10}N_4O_2+H_2O$ है।

कनाडा तो वहुत पुराने वृटिश साम्राज्यकी चायके पीनेवाले हैं और अब आस्ट्रेलिया भी चीनकी चायको छोड़कर साम्राज्यकी चाय पीने लगा है।

चाय और स्वास्थ्य

चायसे मनुष्यके स्वास्थ्यपर क्या प्रभाव होता है इस विषयमें भारी मतभेद है परन्तु चायके व्यापक व्यवहारको देखकर यह सहसा कहा नहीं जा सकता कि चाय स्वास्थ्यके लिये सर्वथा हानिकारक ही है। हा एक प्रकारका व्यसन कहकर सम्बोधित करनेवाले आदर्शवादी लोगोंसे इस सम्बन्धमें हमारा भी अधिक मतभेद नहीं है पर वैज्ञानिक दृष्टिसे इसकी परीक्षा कर लेनेमें हमें कोई आपत्ति भी नहीं है। 'इन साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाका' मत है कि चायके सम्बन्धमें अभीतक कोई ※ विश्वासोत्पादक अधिकार युक्त रासायनिक विश्लेषण नहीं किया गया अर्थात् चायके सम्बन्धमें अभीतक इस ओर पर्याप्त वैज्ञानिक खोज नहीं की गयी। ऐसी दशामें यह कहना कि इसमें विषके अतिरिक्त और कुछ सार वस्तु ही नहीं है यह एक प्रकारसे भारी भ्रम फैलाना है। परन्तु उपलब्ध रासायनिक खोजके आधारपर चायके तत्त्वोंकी यदि विवेचना की जाय तो पता चलेगा कि उसमे कौनसा ऐसा तत्त्व है कि जिससे चायकी उपयोगिताकी ओर लोगोंका ध्यान जाता है। चायमें एक प्रकारका तेलसा चिकना पदार्थ होता है जो चायको स्वादिष्ट बनाकर उसमे एक प्रकार का चित्तप्रिय गन्ध उत्पन्न करता है और † दूसरा प्रधान तत्त्व थीन है जिसे आजकल रसायनशास्त्री कैफीन कहते हैं। चायमें मिलनेवाले प्रधान स्वास्थ्यवर्द्धक गुणका यही पदार्थ प्रधानजनक माना जाता है। अतः यही चायकी पत्ती का उत्तमांश है। उत्तम ‡ श्रेणीकी चायमें इसी थीन नामक पदार्थका अंश अधिक पाया जाता है और इसीसे वह उत्तम श्रेणीकी चाय मानी जाती है। नीचेके श्रेणीकी चायमें उत्तम श्रेणीकी अपेक्षा कम 'थीन' रहती है और इसी कारण वह नीची श्रेणीकी चाय मानी जाती है। क्योंकि चायकी उत्तमता उसके गुणोंपर ही निर्भर रहती है और चायमें जो गुण हैं वह थीनके ही कारणसे हैं। थीनसे स्नायुमें स्फूर्तिका संचालन तत्कालिक होता है और यही उसका प्रधान गुण है। वह मनुष्यकी मुर्झाई हुई प्रकृतिको

※ *The chemistry of the completed teas of commerce does not appear to have been subjected to adequate scientific study. There can not be said to have to any standard or recogniged analysis,* देखिये *Encyclopædia Britannica*

† *The second of the important constituents of Tea is the Coffeine or Theine, to which almost the whole of the stimating power of the Tea seams to be due. From medical point of view it is the most important substance Encyclopædia.*

‡ *The Higher-priced grades of Tea certainly contain more Coffeine than the lower. Encyclopædia Britannica*

उत्फुल्लितकर उसमें चैतन्यताकी जान फूक देती है। यह पदार्थ थोड़े [१] परिमाणमें शक्ति-संचारक और लाभकारी होता है। चायमें थीनका अंश ३ से ६ प्रतिशत ही रहता है जो उसे लाभकारी कार्य करनेमे समर्थ बनता है। अतः चायका यह पदार्थ स्वास्थ्यके लिये कोई हानिकारक वस्तु नहीं है। चायमें यदि कोई हानिकारक वस्तु प्रधान रूपसे है तो वह टैनिन है। परन्तु १० मिनट [२] तक चायकी पत्तीको उबालनेसे केवल थीनका ही अंश पानीमें उतर आता है। अतः इतनी अवधिमें चाय छानकर पी ली जाय तो टैनिनके अनिष्टकारी प्रतिफालसे सहजमें रक्षा की जा सकती।

भारतमें चायका उद्योग

भारतमे चाय की उन्नति किस प्रकार हुई इसकी चर्चा की जा चुकी है। सन् १८४० ई० में ५ लाख पौंडकी पूंजीसे आसाम कम्पनी नामक एक चाय कम्पनी की स्थापना हुई। इस कम्पनीने शिव-सागरका सरकारी बगीचा खरीद लिया और उसी वर्ष दार्जीलिङ्ग तथा चटगांवके जिलोंमें प्रयोगात्मक कृषि आरम्भ किया। कच्छारमे पहिला बगीचा सन् १८५५ ई० में लगाया गया। इधर चायकी खेती की वृद्धि आरम्भ हुई उधर सट्टेबाजोंने चायका सट्टा आरम्भ कर दिया। इससे व्यापारको धक्का लगा फिर भी काम जारी रहा और कुछ समयमें सुरमा और ब्रह्मपुत्र की घाटियोंके विस्तृत क्षेत्रमें चाय के बगीचे लहलहा उठे। परन्तु यहाका प्रबन्ध ठीक न था। लोग व्यवसायके लिये चायके बगीचे नहीं लगाते थे। वे तो बगीचा तैयारकर थोड़े लाभ पर उसे बेच देते थे। फल यह हुआ कि सन् १८६५-७ ई० में चायकी खेतीको भारी धक्का लगा। आसाम कम्पनीकी स्थापनाके बाद कुछ ऐसी कठिनाइयां उपस्थित होगयीं कि चायकी खेतीके काम में उन्नति न दिखायी दी। कम्पनीके शेयरका भाव भी गिर गया परन्तु आसाममें चायके पौधेका पता लग जानेके कारण कुछ जीवन संचार हुआ और १५ वर्ष बाद आशाका आभास हुआ। उधर सट्टेबाजीने जो जोर किया तो सन् १८६५ में सरकारने चायके उद्योगसे अपना हाथ हटा लिया और कठिनाईयोंकी घटा घिर आयी। फलतः भयङ्कर उथल पुथल हो गयी। चायकी कम्पनियों और बगीचोंके व्यवस्थापकोंकी अयोग्यता और अदूरदर्शिताका अवश्यम्भावी परिणाम सामने आया, इनकी अनुभव हीनता अपना रंग दिखा गयी। जिसने कितनी ही कम्पनियां टूटीं और कितने ही बगीचे मिट्टीके मोल बिक गये। कुछ समय पश्चात् फिर नवीन कम्पनियोंका जन्म हुआ और पुनः व्यवसाय की व्यवस्था आरम्भ हुई और कुछ ही समय बाद

---

[१] *In large quantities it is a poison, but in smaller quantities it acts as a stimulant.*

[२] *Experiment has shown that an infusion of the leaf for ten minutes is sufficient to extract all the valuable theine and a longer period merely results in an [illegible] of tannin which in excess is well known to seriously impede digestion*

(Tea by A. Ibbetson)

उन्नतिके लक्षण स्पष्ट प्रतीत हो चले। अभीतक चाय एक पेय पदार्थ माना जाता था। परन्तु अब वह व्यवसायकी वस्तु मानी जाने लगी। उत्तर पूर्वीय भूभागके अधिकांश बगीचोंके एजेन्ट कलकत्तेमें रहते हैं। जो उन बगीचोंकी व्यवस्थाका प्रबन्ध संचालन करते और उन्हे आर्थिक सहायता देते रहते हैं। प्रत्येक बगीचेके साथ ही उसका निजका चाय तैयार करनेका एक छोटासा कारखाना भी रहता है। पत्ती चुन जानेके बाद कई ऐसे प्रयोग किये जाते हैं कि जिनके न करनेसे चाय के खराब हो जानेकी आशंका रहती है। सुव्यवस्थित कारखानोंमें आधुनिक यंत्र सामग्री रहती है जिनपर काम करनेवाले अपने विभागके विशेषज्ञ होते हैं।

आज भारतमें ४२७८ से अधिक चायके बगीचे हैं जिनमें आवश्यकतानुसार सुव्यवस्थित छोटे छोटे कारखाने हैं। जहां चायकी पत्तियोंसे चाय तैयार की जाती है और व्यवसायकी दृष्टिसे चायकी विभिन्न श्रेणियोंके अनुसार उसे छांटकर निर्वात (air light) डब्बोंमें बन्दकर दिया जाता है। इस समय आसाम और बंगाल प्रदेशान्तर्गत ब्रह्मपुत्र तथा सुर्माकी घाटीके सुविस्तृत क्षेत्रमें, दार्जिलिङ्ग, जलपाई गोड़ी, तथा चटगांवके मैदानमें चायके बगीचे लहलहा रहे हैं। नेपाल और संयुक्तप्रांतके देहरादून, अल्मोड़ा और कुमाऊं, गढ़वाले के जिलोंमें भी चायकी खेती होती है। पञ्जाब प्रांतके कांगड़ा, माण्डी राज्य तथा सिरमर और शिमलेके पहाड़ी भूभागमें भी चाय पैदा होती है। बिहार-उड़ीसा के छोटानागपुर जिलेमें भी चायकी खेतीका उद्योग सन् १८५३ ई० से होता चला आ रहा हैं और आज मद्रास प्रदेशके विनाद और निलगिरि और ऐनामलीज तथा ट्रैवनकोरमें चायकी अच्छी खेती होती है।

चायका व्यवसाय

भारतकी चायकी मांग आरम्भसे ही अधिक होती आयी है परन्तु सन् १९०७ ई० से सभ्य संसारने भारतकी चायको सर्वश्रेष्ठ करार दिया है। आज भारतकी चाय अत्यन्त लोकप्रिय हो रही है। चीनकी अन्ध परम्पराके कारण वहांवाले नवीन पद्धतिके अनुसार कार्य नहीं करते अतः चीनकी चायका स्थान धीरे २ गिरने लगा है। आजकल इसकी चायका निर्यात बहुत कम हो गया है।

संयुक्तराज्य अमेरिका और कनाडाके अंग्रेज निवासी 'इंग्लिशब्रेकफास्ट टी' कह कर चीनकी चाय प्रायः प्रातः काल पीते हैं इस लिये वहा वाले चीनकी काली चाय थोड़े परिमाणमें खरीदते हैं। चीनकी हरी चायकी खपत संयुक्त राज्य अमेरिका, मध्य एशिया और दक्षिण अफ्रीकाके निवासियोंमें होती है। चीनमें चायकी खेती प्रायः सभी लोग करते हैं और परिवारकी आवश्यकताके लिये रखकर शेष चाय बेंच देते हैं जो कारखानोंमे तैयारकर विदेश काली चाय या हरी चायके रूपमें

भेजी जाती है। इसमें भी कुछ भाग रख लिया जाता है जिसकी टिकिया और ईंटे बनाई जानी है। इस कामके लिये भारत, सिलोन, और जावासे चीनमें चाय मंगायी जाती हैं। हैंकाऊमें कुछ ऐसे भी रूसी कारखाने है जो चायकी ईंटें तैयार करने का काम करते है। इसी प्रकार सू-चाऊमें भी कई कारखाने हैं जो चायकी ईंटे बनाते है। ईंटे काठके सांचेमे डालकर दबाई जाती है और पत्थरके समान कड़ी कर दी जाती है। फिर उनको कागजमें लपेट दिया जाता है। इसी प्रकार एक स्थानसे दूसरे स्थान तक लेजानेकी सुविधाकी दृष्टिसे गोली ईंटे १२ की संख्यामें एक दूसरेके ऊपर रखकर जमायी जाती हैं जो सूख जानेपर एक कठिन पिण्डका स्वरूप धारण करलेती है। इस प्रकारके पिण्डमे ६० से ७० रतल तक वजन हो जाता है। ये ईंटे ऊंटोंमें लादकर रूस भेजी जाती हैं और कुलियां द्वारा तिब्बत जाती है।

जापानकी चाय उत्तर अमेरिकावालोंमें खपती है पर अब वे भारतीय चायकी अधिक पसन्द करनेलगे हैं अतः जापानकी चाय की मांग कम हो गयी है। दूसरी ओर जापानी लोग चायके स्थानमें शहतूतकी खेती करनेलगे हैं और वे चायकी अपेक्षा रेशम द्वारा अधिक धन कमाते हैं।

चायका नीलाम, नमूना और बिक्री

जिस प्रकार लन्दनकी फ्लीट स्ट्रीट नामक गली संसारके पत्रकारोंका बहुत बड़ा अड्डा और वहांकी डाउनिंग स्ट्रीट नामक गली साम्राज्य प्रसार लोलुप लोगोंका जमघट मानी जाती है उसी प्रकार वहांकी मिनसिंग लेन नामक गली चायकी प्रधान मण्डी है। संसारके विभिन्न केन्द्रोंसे यहां चाय आती है और परीक्षा हो चुकनेके बाद खुली नीलाम द्वारा बेंची जाती है। जहाज परसे उतर तेही राज्यके चुंगी विभागके इंस्पेक्टरके सम्मुख चाय तौली जाती है और गुदाममे सजाकर रख दी जाती है। लन्दनके व्यापारी अथवा अढ़तिये माल रवाना होनेकी सूचना पाते ही दलाल नियुक्त कर देते हैं जो माल आ जानेका समाचार पाते ही वहांके बड़े बड़े व्यापारियोंको सूचित करते हैं कि अमुक दिन इतने नंबर अमुक प्रकारकी चायका नीलाम होगा। दलाल लोग नीलामकी नोटिस तो निकालते ही हैं पर साथ ही छपे हुए सूचीपत्र भी प्रकाशित करते हैं जिसमे नीलाम और चायके सम्बन्धमें सभी ज्ञातव्य बातोंका समावेश रहता है। निश्चित तारीखके दिन चुंगी वाले चायके बंडलोंको नीलामके लिये [illegible] कर देते हैं। खरीदार लोग अपने प्रतिनिधि चुंगीके गोदाम पर भेजते हैं जो वहासे चायके नमूने ले आते हैं। नमूने परीक्षाके लिये भेजे जाते हैं। परीक्षाका निष्कर्ष तथा चायको मूल्य स्थिर कर [illegible] खरीदारके पास भेज देते हैं। खरीदार लोग जहा तक उसे खरीद सकते है वहां तक [illegible] सूचीपत्र पर अपने दलालके पास भेज देते हैं। जब नीलाम आरम्भ होता है तब [illegible] पसन्दकी हुई चायको पूर्व भेजे गये संकेतके अनुसार जान लेता है और उसी समय
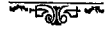
यह भी जान लेता है कि वह कितने मूल्य पर उसे खरीद सकता है। खरीदारोंके लगाये गये मूल्य परसे ही नीलाममें मूल्यका बढ़ना आरम्भ होता है। नीलामके बाद खरीदार बेंचने वाले दलालसे मालके नमूने निकालनेकी लिखित स्वीकृति लेलेता है और उसे बता कर चुंगी घरसे नमूना निकालता है। दूसरे दिन खरीदार पुनः परीक्षा करवा कर निश्चय कर लेता है कि उसने प्रदर्शनमें रक्खे गये मालमेंसे अपने पूर्व निश्चित नमूनेके ही अनुकूल माल खरीदा है कि नहीं। वह अपने फुटकर व्यापारियोंकी आवश्यकतानुसार मालका परिमाण और श्रेणी निश्चित करता है और चुंगी घरसे माल उठाकर सीधा अपने ग्राहकोंको पहुंचा देता है।

फसलके दिनोंमें भारतीय चायका नीलाम सप्ताहमें दो बार होता है अर्थात सोमवार और बुधवारको। सीलोनकी चायका नीलाम मंगलवारको, चीनकी चायका बुधवारको और जावाकी चायका गुरुवारको होता है। चाय संदूकोंमें भर कर बाहर भेजी जाती है। संदूकका वजन ८० से ११० रतल तकका होता है। भारतके बगीचोंसे बाहर जाने वाली चाय दो प्रकारसे जाती है एक तो सीधी लंदनको जहा वह नीलामकी जाती है और दूसरी कलकत्तेको जहा नीलाममें बिक जानेके बाद जहाज पर लाद कर विदेश भेजी जाती है। कलकत्तेकी बाजारमें मई माससे चायका सप्ताहिक नीलाम आरम्भ होता है और जनवरी या फरवरीतक जारी रहता है।

भारतसे चाय स्थल सीमा पार कर अफगानिस्तान और फारस भेजी जाती है। और शान (बर्मा) राज्यसे कुछ चाय टिकियाके रूपमें तिब्बत और नेपालके मार्गसे भारत आती है।

पूंजी—भारतमे चायका व्यवसाय करने वाली ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंमें अनुमानतया २ करोड ८० लाख पौण्डकी पूजी लगी हुई है। कलकत्तेमें नीलामके बाद कम्पनीको जहाज पर माल चढा देने पर शिपिङ्ग डाक्यूमेन्टके आधार पर बैंकसे रुपये मिल जाते हैं। कलकत्तेमें चायका भुगतान खरीदके १० दिन बाद होता है। कोई कोई बगीचे वाले अपने बगीचोंकी उपज पहिलेहीसे बेच देते हैं।

चाय की लुगदी

चायकी लुगदीसे व्यवसायमें काम आने वाला कैफीन caffeine नामका रासायनिक पदार्थ निकाला जाता है। अतः भारतसे चायकी लुगदी भी विदेश भेजी जाती है। इसकी खरीद ग्रेट बृटेन तथा अमेरिका वाले करते हैं। भारतमें भी चायके बगीचोंके साथ कैफीन तैयार करनेकी व्यवस्था का प्रबन्ध हो रहा है।

लुगदीका निर्यात् सन् १९२०-२१	में	६५७१,५५९	रतल मूल्य	७९२०७	पौण्ड
१९२१-२२	„	३१,२४,८४८	रतल मूल्य	३५,७०५	„
१९२२-२३	„	१६,२२,८१८	रतल मूल्य	१४,१६६	„

चायके बीजका निर्यात

भारतकी चाय सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो चुकी है अतः यहांकी चायके बीजकी मांग भी संसारके बगीचोंमे बहुत अधिक रही है। परन्तु भावमें उतार चढाव होते रहने तथा वर्षों यहांकी चायके बीजका प्रसार निरन्तर होते रहनेके कारण आज कल मांग कम हो गयी है।

सन् १८९५-९६ में	३२ ३८	हण्डर वेट	यह माल जावा सुमात्रा और सीलोन गया था
२५ वर्ष बाद सन् १९१५-१६ में	२७ ५५	हण्डर वेट	„ „ सीलोन सुमात्रा गया था
५ „ „ „ १९२०-२१ में	८८०	हण्डरवेट	„ „ जावा सीलोन और सुमात्रा गया था

चायकी खेती और उपज

भारतमें चायकी खेतीका प्रसार और उपजकी उन्नति किस प्रकार हुई यह इन अंकोंसे स्पष्ट हो जायगा।

सन्	१८९०	३,४४,८२७	एकड़	११ २०,३६,४०६ रतल
१० वर्ष बाद „	१९००	५,२२,४८७	एकड़	१९,७४,६०,६६४ रतल
१० वर्ष बाद „	१९१०	५,६३,४४९	एकड़	२६,१९,२७,५९२ रतल

चायका निर्यात

सन् १९००-०१	में	१९०३०.४९० रतल	मूल्य	६३,६७२८६	पौं
„ १९०५-०६	में	२१४२२३७८८ रतल	मूल्य	५८९८४०२	पौंड
„ १९१०-११	मे	२५४३०१०८९ रतल	मूल्य	८२७६९१२	पौंड
„ १९१५-१६	मे	३३८१७०२६२ रतल	मूल्य	१३३२०७१५	पौंड
„ १९२०-२१	में	२८ ७११८४९ रतल	मूल्य	८०९९८४३	पौंड

अभ्रक

अभ्रकके आकर्षक आभाससे अनन्त कालतक मानव-समाजका अपरिचित रहना अनुमानके अखाड़ेकी अनहोनीसी बात है। उसकी चमक दमक उसका रंग ढंग और उसकी सर्वोपरि उपयोगिताको देखकर अनुमान करना ही पड़ता है कि मानव समाज बहुत प्राचीन समयसे अभ्रकसे परिचित था। मानव-समाज ज्यों ज्यों भूगर्भ विद्या उन्नति करता गया त्यों त्यों उसे अभ्रकके सम्बन्धमे नित नये रहस्योंका पता लगता गया। अभ्रकके कितने ही प्रकार सामने आये और उनके व्यापक गुणोंका प्रसार हुआ। इसी क्रमानुगत उन्नतिके कारण आज अभ्रक दश प्रकारका खोज निकाला गया है। अभ्रककी चर्चा करते समय आज लोग अभ्रक न कहकर अभ्रक समूहसे ही उसे सम्बोधित कर अपनी जानकारीका परिचय देते हैं। लेकिन यहा हम अपने पाठकोंके सम्मुख अभ्रकके केवल उन्हीं प्रकारोंकी चर्चा करेंगे जिनका व्यवहार व्यवसायिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण माना जाता है और इसी लिये उनकी खानोंमें रातदिन काम होता रहता है। ये अभ्रक दो प्रकारके हैं। इन दोनोंमेंसे एकको मिसकोवाइट माइका (Miscouite mica) और दूसरेको फ्लोगोपी (Phlogopi mica) कहते हैं। अभ्रकके इन दोनों प्रकारोंसे मानव-समाज बहुत प्राचीन समयसे पूर्ण रूपेण परिचित है।

वसुन्धराके विशाल भूगर्भसे निकलनेवाले अभ्रक भण्डारका तृतीय पंचमांश भाग रत्नगर्भा भारतसे निकलता है अर्थात् संसारमें निकाले जानेवाले अभ्रकका ६० प्रतिशत भाग भारतकी खानोंसे निकाला जाता है। अतः भारतके इस मूल्यवान पदार्थके सम्बन्धमें लिखना नितान्त आवश्यक है। इतना ही नहीं भारतमें निकलनेवाले अभ्रककी खानें प्रायः उसके पूर्वीय भूभागमें है जहाकी खानोंसे निकाला गया, अभ्रक संसारके देशोंको कलकत्तेसे भेजा जाता है। ऐसी दशामें जब हम अपने इस भागमें भारतके पूर्वीय भूभागका परिचय दे रहे हैं तब अभ्रकका विस्तृत विवेचन करनेपर बाध्य हैं।

आधुनिक युगकी वैज्ञानिक खोजजनित समुन्नत कलाकौशलमें विद्युत शक्तिका कितना व्यापक हाथ है यह किसी भी जानकारसे छिपा नहीं है। विद्युत शक्ति संचारके आश्चर्यजनक चमत्कारोंको यशस्वी बनानेमें यदि कोई पदार्थ सहयोग देता है तो वह एकमात्र अभ्रक है। अभ्रकके प्राकृतिक गुणोंने उसकी अतुलनीय उपयोगिता सर्वरूपेण प्रमाणित करदी है। वह विद्युत शक्तिके लिये

जिस प्रकार प्रभावशून्य सिद्ध करता है उसी प्रकार अग्निके प्रचण्ड प्रकोपको भी तृणवत समझता है। यह है आधुनिक युगके विज्ञान विशारदोंकी अटल खोज और इसी सैद्धान्तिक बलपर ये लोग अभ्रकके इस गुणपर रीझे हुए है। परन्तु भारतके प्राचीन विज्ञान वेत्ताओंने इससे आगे भी हाथ मारा है। जिस अभ्रकको आजके वैज्ञानिक अग्निप्रभाव शून्य मान बैठे है उसी अभ्रकको भारतके पुराने रसायनशास्त्रियोंने भस्मीभूत कर डाला है और उसकी ऐसी भस्म बना डाली कि जिसका पुनरोत्थान न हो सके। अतः भारतके सम्बन्धमें अभ्रकसे परिचित होनेका प्रश्न उठाना ही अनावश्यकसा प्रतीत होता है। फिर भी आधुनिक विद्वानोंके मतानुसार हम यहांपर प्रसंगवश अभ्रकका ऐतिहासिक विवेचन कर देना ही उचित समझते है।

अभ्रकका ऐतिहासिक विकास

अमेरिका

पूर्वकालीन युगमें अमेरिकाके आदि निवासी रेड अमेरिकन लोग अभ्रकसे परिचित थे। अभ्रककी उपयोगितासे वे लोग उस समय भी लाभ उठाते थे। अपने समयकी सजावट और आमोद-प्रमोदमें वे लोग अभ्रकका उपयोग तो करते ही थे पर मनुष्योंके शवके साथ ही अभ्रकको भी भूमिमें उसे समाधि दे देते थे। जैसा कि अमेरिकाके ओहियो जिलेमें पायी गयी पूर्वकालीन समाधियोंसे विदित होता है। अमेरिकाकी 'ऊपर लेक' नामक प्रसिद्ध झीलके तटपर पायी गयी प्राचीन वस्तुओंमें पत्थरके कुछ ऐसे भी औजार मिले हैं जिनसे अनुमान होता है कि किसी युगमे लोग इनका व्यवहार पत्थरकी चट्टानोंसे अभ्रक निकालनेके समय करते रहे होंगे।

योरोप

अभ्रकका परिचय योरोपवालोंको भी पुराने ही युगमें मिला था और वे लोग भी इसे कई प्रकारसे काममें लाते थे।

रोम

रोम साम्राज्य संसारके प्राचीन साम्राज्योंमें से है। यहां वाले अभ्रकसे बहुत पहिलेसे परिचित थे। आधुनिक युगकी म्यूनिसिपेलिटियोंके समान उस समय नगर संस्थाये न थी कि जो मार्गों पर प्रकाशका प्रबन्ध करती अतः घरसे बाहर जानेके लिये प्रकाश ले जानेकी आवश्यकता रहती थी पर वायुके झकोरोंसे दीपककी रक्षा करनेके लिये उन्हें सदैव चिन्ता रहती थी उस समय शीशा तो बनाया नहीं जाता था ऐसी दशामें वे लोग अभ्रकके तख्तोंसे शीशाका काम लेते थे। इस प्रकारके प्रकाशदान रोमके इतिहास प्रसिद्ध हरक्यूलेनियम (Herculaneum) में आज भी रक्षित पाये जाते है। इतना ही नहीं शीशेके अभावमे अभ्रकका काम लिया जाना यह इतिहास प्रसिद्ध बात है।

प्लीनीका मत है कि शयनागार व स्नानागारकी खिड़कियोंमें भी अभ्रकके आइने लगाये जाते थे। इसी प्रकार शीतकालीन केलि भवनों * और सिंहासनोंपर भी अभ्रकके शीशेका शृंगार होता था। सेनीका नामक एक योरोपियन इतिहास मर्मज्ञका मत है कि घरोंकी खिड़कियोंमें तो अभ्रकके आइने जडे जातेही थे पर मधुमक्खीके छत्ते भी अभ्रकके बनाये जाते थे जिनमें निवास करनेवाली मक्खियोंको पालकर उनकी शिल्पक्रियाका लोग कौतुक देखा करते थे। यही क्यों उसका तो यह भी कहना है कि विशेष महोत्सवोंपर भूमिपर भी अभ्रकके टुकड़ोंका छिड़काव कर दिया जाता था।

यूनान

यूनानवाले भी अभ्रकसे प्राचीनयुगमें ही परिचित हो चुके थे। वे लोग उसकी उपयोगिताभी जानते थे। अभ्रकके पर्त्तोंसे प्रकाश पुंज बिना प्रयास प्रवेश कर जाता है यह बात भी यूनानी जानते थे। मध्यकालीन युगके यूनानी लेखक एग्रीकोला (Agricola) का कहना है कि प्लिनेके मतानुसार उस समय भी यूनानी भाषामें अभ्रकके लिये कई एक शब्द थे जो अभ्रकके विभिन्न प्रकारोंके पारस्परिक अन्तरकी सूक्ष्म खोज तक की पहुंचके सूचक हैं। ऐग्रीकोला 'Cat's gold' 'Cat's silver' or, ice' नामसे भी अभ्रकका ही अनुमान करता है। प्राचीन कालमें योरोपमें कानराड गेन्सर नामक एक प्रकृति शास्त्रज्ञ हो गया है उसने वनस्पतियों और पशुओंके सम्बन्धको लेकर जहां अपने ग्रन्थोंमें खोज पूर्ण वैज्ञानिक चर्चा की है वहां उसने भूगर्भ विद्या विषयक विस्तृत विवेचन भी किया है। उसके ग्रन्थोंसे-जो बहुत पुराने हैं-यह भी पता चलता है कि वह व्यक्ति षटकोण आकृतियुक्त सुघड़अभ्रक के तत्वोंसे पूर्णरूपेण परिचित था। वह लिखता है कि हैले (Hulle) नामक स्थानमें अभ्रककी खानें थीं। इतना ही नहीं उसका मत था कि अभ्रक† औषधिके रूपमें सेवन करनेसे ‡ उन्माद और कुष्टको दूर करता है। बोइियस (B.Ö etias) लिखता है कि उस समय स्त्रियां अपने मुंहपर अभ्रकका चूर्ण मलतीं थीं जिससे उनके मुंहकी शिकन दूर हो जाती थी।

अभ्रकका औद्योगिक विकास

अभ्रकके व्यवहारिक उपयोगके बाद उसके रंगोंके अनुसार उसके अनेक प्रकारोंका निश्चय सन् १७४७ई०में योरोपीय विद्वान § वेलेरियसने किया। उसका कहना है कि अभ्रक कई प्रकारका होता है जैसे सफेद, पीला, लाल,हरा,काला,मटमैला,रेखाखचित, आकृतिवाला, लहरदार, और गोलार्ध आकारका

---

* *Also Martial Epigr VIII-14*

† इस सम्बन्धमें एग्रीकोलाका मत है कि शराबके साथ अभ्रक सेवन करनेसे पेचिशकी बीमारी दूर होती है तथा इसके मलहमसे नासूर अच्छा होता है।

‡ "*Ad lunaticum et, Spumantem morbum* Konrad Gesner

§ *Wallerius, in 1747, mentions '—Varialio alba, flava, rubra, viridis, nigra, squamosa, radians fluctuons, Hemisphaerica.*

इत्यादि। इसी प्रकार जर्मन विद्वान * जान वेकमानने सन् १७६६ ई० में अभ्रककी उपज और उपयोगिताकी विस्तृत विवेचना की है। उस विवरणसे यह भी पता चलता है कि उस समय जर्मनीमें कहासे अभ्रक आता था और किस किस काममें आता था। कुछ समय बाद शीशा बनानेकी विधि खोज निकाली गयी और इस सम्बन्धमें अभ्रकका आनेवाला उपयोग कम परिमाणमें होने लगा। सन् १८७० ई० के लगभग वैज्ञानिकोंने एक प्रकारके चूल्हेकी योजना की जिसमें अभ्रकका उपयोग होने लगा। इस प्रकारके चूल्होंका प्रचार जर्मनीमें भी हो गया। स्मरण रहे कि चूल्हेके आयोजनके पूर्व साइबेरियाका अभ्रक योरोपके बाजारकी आवश्यकताको पूरी करता था परन्तु सन् १८६८ ई० में उत्तर करोलिना की अभ्रकवाली खानें खोज निकाली गयीं और उनसे अभ्रक बाजारमें आने लगा। चारों तरफसे लोग इस क्षेत्रमें टूट पड़े और मनमानी खुदाई आरम्भकी गयी। यह क्रम वर्षोंतक जारी रहा पर सन् १८८४ ई० से भारतके संसारकी बाजारोंमें अभ्रक भेजना आरम्भ कर देनेपर बाजारमें अभ्रकका भाव बहुत गिर गया। इसके दो वर्ष बाद सन् १८८६ ई० में कनाडाने भी अपने यहाकी खानोंका माल भेजना आरम्भ कर दिया। परिणाम यह हुआ कि भाव और भी बैठ गया।

कनाडामे फास्फेटकी खानों से असली मालके साथ अभ्रक अवश्य निकलता था परन्तु उपेक्षा साथ वह फेंक दिया जाता था। पर अमेरिकामें विद्युतके उद्योगके सन् १८९० ई० में स्थापित होनेके बाद अमेरिकावालोंने कनाडावालोंको प्रलोभन दे प्रोत्साहित किया और फल यह हुआ कि वहा भी अभ्रककी निकासी आरम्भ हो गई। इसी प्रकार संसारमें ज्यों ज्यों उद्योग धन्धोंने उन्नति की त्यों त्यों अभ्रककी माग बढ़ती गयी और इसी ढंगसे अभ्रकके व्यवसायका औद्योगिक विकास क्रमानुसार होता गया पर विद्युत शक्ति संयुक्त कलाकौशलकी उन्नतिसे अभ्रकके व्यवसायको सबसे अधिक बल मिला और आज वह उस उद्योगके साथ ऐसा घुल मिल गया है कि विद्युतशक्तिकी कल्पना होते ही अभ्रककी उपयोगिताका मानचित्र आखोंके आगे अमिट रूपसे अंकित हो जाता है।

अभ्रकके भौतिक गुण

खानोंमे अभ्रक चद्दरोंके रूपमें पाया जाता है जो छोटी सी छोटी आकृतिसे लगाकर भारीसे भारी आकारमे पायी जाती हैं। सामान्य श्रेणीके बड़े आकारवाले पर्तका अभ्रक आन्टेरियो (कनाडा) प्रान्तके सिडनहम स्थानके पासवाली लेसी खान नामक खानोंसे निकलता है। इन खानोंसे अधिकसे अधिक ७ फीटकी लम्बाईका अभ्रक का तख्ता देखा गया है और अभ्रकके ढेले जो यहा बड़ेसे बड़े निकाले गये हैं उनका वजन ३० हजारसे ४० हजार रतल तक तौला गया है। अभ्रकके एक तख्तेकी

* विस्तृत विवेचनके लिये देखिये *Encyclopædia by Johan Beckmann, published in Gottingen* 17[illegible]
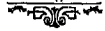
लम्बाई ६ फीट और चौड़ाई ४ से ६ फीट तक की भी देखी गयी है। कनाडाकी खानोंसे निकाले जाने-वाले अभ्रकके तख्तेकी मोटाई ४ से ६ इंच तक हुआ करती है। जर्मन पूर्वीय अफ्रीकामें निकलने वाले अभ्रकके तख्ते भी बड़े आकारके निकलते हैं। यहांके बड़े से बड़े तख्तेकी लम्बाई ८८ सेन्टी मीटर और चौड़ाई ७८ सेन्टीमीटर तथा मोटाई १५ से २५ सेन्टीमीटर तक पायी गई है परन्तु इन सबसे अधिक लम्बा चौड़ा और मोटा तख्ता भारतमें पाया गया है जिसने संसारमें मिले हुये सभी अभ्रकके तख्तोंके आकारको नीचे गिरा दिया है।

खानसे बाहर निकाले जानेवाले अभ्रकके तख्ते खानमें सुडौल आकारमें नहीं पाये जाते हैं वे प्रायः बेडौल ही पाये जाते है। इन तख्तोंमें भी बहुतसा इतर पदार्थ सम्मिलित पाया जाता है जो अभ्रकके भावका मूल्य कम कर देता है। अभ्रकके तख्तोंका आकार कई कोनेवाला होता है अतः यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि वे कितने पार्श्ववाले माने जांय। इनके तख्तोंके पर्तोंमें कभी कभी कई प्रकारके अन्य पदार्थ भी दिखाई दे जाते हैं। कभी कभी इनकी तहोंके बीचमें हिंगुलकी लाइनें भी दिखाई दे जाती हैं। इसी प्रकारके अन्य पदार्थोंकी अभ्रकके पर्तोंके बीचमें जब प्रचुरता हो जाती है तो उनकी विद्युत सम्बन्धी उपयोगिता बिलकुल शून्य हो जाती है क्योंकि हिंगुलके समान गुण धर्म वाले पदार्थ विद्युत शक्तिके शोषक माने गये हैं। कभी कभी ये पदार्थ त्रिधारके रूपमें देखे जाते हैं जो परस्पर ६० डिग्रीका कोण बना कर एक दूसरेको काटते हुए निकल जाते हैं। अभ्रकके तख्तेके पर्त इतने पतले, नियमित एवं सुव्यवस्थित रूपसे क्रमानुसार सटे हुए देखे जाते हैं कि एक तख्तेसे सैकड़ों पर्त निकाले जा सकते है जो आकार प्रकारमें तख्तेके समान ही होंगे चाहे वे कितने ही अधिक पतले क्यों न हो जाय। अभ्रकके तख्तेके पर्त इतने पतले-तक निकाले गये है कि उनकी मोटाई एक मीलीमीटरका षट सहस्त्रांश तक मापी गयी है। कठिन (Hard) गुण धर्मवाले अभ्रकके पर्त बहुत ही पतले निकाले जा सकते हैं।

यदि अभ्रकका बेदाग तख्ता किसी छपे हुए कागज पर रख दिया जाय और फिर उसके बीचसे देखा जाय तो अक्षर कुछ उभड़े हुए और दोहरे दिखाई देंगे। यही अभ्रककी विशेषता कही जाती है। यों तो कई और भी पदार्थ ऐसे है जिनमें देखनेसे अक्षर दोहरे दिखायी देते है पर अभ्रकके समान इस रहस्यको सुस्पष्ट दिखानेवाला और पदार्थ नहीं है। यदि ध्यान से देखा जाय तो पता चलेगा कि अभ्रकके तख्तेमें एक या दो पार्श्व ऐसे भी होते हैं कि जिनकी ओरसे देखनेपर अक्षर दोहरे न दिखाई देंगे। इन्हीं विशेष पार्श्वोंको आधार मानकर अभ्रकके तख्ते की परीक्षा की जाती है। ये पार्श्व कोणके रूपमें परस्पर मिलते हैं और अभ्रकके विभिन्न प्रकारोंमें ये कोण भिन्न भिन्न अन्तरके होते है। परन्तु कोणकी डिगरी उसके तापमानके आधारको लेकर पायी जाती है

यदि किसी अन्धेरे कमरेमें एक निश्चित ओरसे प्रकाश डाला जाय और उसके सामने कागजका एक ऐसा टुकड़ा खड़ा किया जाय कि जिसमें छोटासा छेद हो फिर उस टुकड़ेकोदूरसे किसी छोटे अभ्रकके टुकड़ेके भीतरसे देखा जाय तो कागजके उस छेद पर ६ किरण वाला सितारासा दिखायी देगा। इन किरणोंके परस्पर मिल जानेसे जो कोण बनते हैं वे ६० डिगरीके होते हैं।

अभ्रकके रंगकी परीक्षा डाइक्रास्कोप (Dechrosedqe) नामक यंत्रको लगाकर की जाती है। रंग अभ्रककी मोटाई पर बहुत कुछ निर्भर करता है। यही कारण है कि रंगकी परीक्षा निश्चित मोटाईसे जो १ से २ मीलीमीटर तक की होती है—की जाती है। इतने ही मोटे अभ्रकके तख्ते का जो रङ्ग परीक्षासे निश्चित किया जाता है वही रङ्ग व्यवसायमें माना जाता है और उसी रङ्गके अभ्रकके नाम से वह सम्बोधित भी किया जाता है।

अभ्रककी कठोरताकी परीक्षा अन्य प्रकारकी धातुओं पर अभ्रकके टुकड़ोंसे बनाईजाने वाली रेखाओंसे की जाती है। इसकी परीक्षित कठोरताके अधारपर अभ्रकका नाम क्रम इस * प्रकार है।

अम्बर अभ्रक, स्फटिक, भारतीय अभ्रक, हरा मद्रासी और कलकत्ता अभ्रक, लाल भारतीय अभ्रक, कठोर हरा या बादामी अभ्रक, हरा बादामी और पीला पूर्वीय अफ्रीका का अभ्रक और हरा संयुक्त राज्य अमेरिकाका अभ्रक है।

उपरोक्त नाम क्रमसे पता चलता है कि पहिला कोमल और दूसरा उससे कठोर तथा तीसरा दूसरेसे भी अधिक कठोर होता है। अम्बर नामक अभ्रकमें भी व्यवसायी दृष्टिसे कठोरताके आधार पर तीन विभेद माने जाते हैं जैसे स्वच्छ पारिदर्शक कोमल अम्बर अभ्रक, दूसरा मध्यम श्रेणीकी कठोरता वाला रेखायुक्त अम्बर अभ्रक तथा तीसरा कठोर अम्बर अभ्रक होता है।

अभ्रकके गुरुता गुणका निर्णय भी कुछ सरल नहीं है। अभ्रक और जलके समान भारके अनुसार पारस्परिक गुरुताका निश्चित स्वरूप निकालना भी कठिन कार्य है। अभ्रककी तहोंके बीच वायुकी तहें रहती हैं अतः तुलनात्मक गुरुता निकालनेमें कठिनाई पड़ती है। जलभारकी तुलनात्मक गुरुताके अनुसार अभ्रक, अल्यूमिनियम, चूना और संगमरमरकी गुरुता समान रूपकी मानी जाती है।

विद्युत चमत्कारको व्यक्त करनेवाले पदार्थोंमें अभ्रकका सबसे ऊंचा स्थान है। अभ्रक अपनी रगड़में विद्युतशक्ति उत्पन्न कर देता है और स्वयं विद्युतशक्तिका शोषण न करनेवाला होनेके कारण उसमें संचित स्वरूपका अनुभव करनेका अवसर देता है। अभ्रकके दो टुकड़े परस्पर रगड़नेसे

* Table of hardness by a leading London mica expert

भी विद्युतशक्ति उत्पन्न होती है। यदि अन्धेरे कमरेमें अभ्रकके तख़्तेके टुकड़े२ करके रख दिये जाय तो तीखे किनारों पर हरेरीमायल प्रकाश सा दिखाई देगा। यही प्रकाश उस अवस्थामें अधिक स्पष्ट होगा जब उसे तोड़कर तेजीसे रगड़ दिया जाय। यह प्रकाश रगड़से उत्पन्न होनेवाली बिजलीका होता है।

अभ्रक गर्मी भी बहुत अधिक सहन कर सकता है। ४०० से ६०० डिग्री तम गर्म करनेपर भी उसकी पारिदर्शक त्रिशेता और विद्युतशक्तिके प्रपि उदासीनताके गुणका अस्तित्व उसमें पाया जाता है। ६०० से १००० डिग्रीकी गर्मीसे उसकी चमक और अधिक बढ़जाती है औ। बह चांदीके समान मालूम होने लगता है इससे भी अधिक गर्मी पाकर वह पिघल जाता है। और फिर भी अधिक गर्मी पाकर वह उबलने लगता है तथा भूरे या पीले रंगका कांच जैसा हो जाता है।

अभ्रकका रासायनिक गुणधर्म

रसायन शास्त्रके अनुसार अभ्रक अल्मूमिना और अन्य 'खारदार पदार्थोंका सम्मिश्रण है। इसमें मैग्नेशिया और आइरन आक्साइड नामके पदार्थ भी कभी २ सम्मिलित पाये जाते हैं। अधिकाश में इन्ही पदार्थोंकी मात्राके अनुसार ही अभ्रकके प्रकार निश्चित किये जाते हैं। अभ्रकके एक प्रकारको अङ्गरेजीमें बियोटाइट कहते हैं जिसमें मैग्नेशियाका अंश १० से ३० प्रतिशत तक पाया जाता है। मिस्कोह्वाइटकी अपेक्षा इसमें लोहेका अंश अधिक होता है। मिस्कह्वाइटमें अल्मूमीना और सीलीसिक एसिडका भाग अधिक पाया जाता है। इसमें जलका भाग १५ प्रतिशत रहता है परन्तु बियोटाइटमें जलका भाग ७ प्रतिशत ही रहता है। इसी तरह अभ्रकके अन्य प्रका।ोंमें जलका अंश कम पाया जाता है। अभ्रकमें सोडियम और पोटैशियमका भाग भी पाया जाता है। अभ्रकके तत्वांश विवेचनके समान गम्भीर विषयका यहां विस्तृत रूपसे लिखना आवश्यक प्रतीत नहीं होता अतः इस विषयसे अनुराग रखनेवालेको रैमेल्सवर्ग, टस्चेरमार्क तथा क्लार्कके※ सिद्धान्तोंका मनन करना चाहिये।

जिस अभ्रकमें मैग्नेशियाका अंश अधिक होता है वह यदि जोरदार गंधकके तेजाबमें डाल-कर गर्म किया जाय तो वह गलकर विलीन हो जाता है और प्यालीमें सफेद सिलिका रह जाती है। अभ्रक और तेलका संयोग भी चमत्कारिक होता है। अभ्रकका सम्पर्क तेलसे हुआ नहीं कि तेल उसकी तहोंमें प्रवेश करने लगा और उसके परिमाणुओंकी पारस्परिक आकर्षणकारी शक्तिको नष्टकर उसे चूर चूर कर डालता है। रसायन शालाओंमें अभ्रक कृत्रिम रीतिसे भी बनाया गया है। इसी कार्यमें

※ *Tschermak, Proceedings of the Academy of Vienna V I 76, July issue and Vol 78, June issue Further Zeitschrift fur krystallographic, II, 1878, 14 and III, 1879, 122 Rammelsberg, Ann d Phys U Chemie, N F Vol IX 1880 113 and 302 Clark, American Journal of Science Vol. 38, 1889 284*

जर्मन रासायनिक डाल्टर (Doltar)सफल हुए थे। आपने प्लेटिनमकी प्यालीमें स्वाभाविक सिलि-केट्सको सोडियम फ्लाउराइड और मैग्नेशियम फ्लाउराइडके गर्मी पहुंचाकर पिघला डाला और साथ इस प्रकार अभ्रक बना लिया। आपने ऐनडाल्यू साइटको पोटेशियम सिलिको फ्लाउराइड और अल्यूमीनियम फ्लाउराइडके साथ पिघलाकर भी अभ्रक तैयार किया था। इस दूसरे प्रकारवालेकी चमक पहिलेवालेकी अपेक्षा कहीं अधिक उत्तम हुई थी। यह सीपके समान उज्वल और चमकीला था।

भूगर्भ शास्त्रानुसार अभ्रकका अस्तित्व

भूगर्भमें अभ्रककी अधिकता का अन्त नहीं। अभ्रक ग्रनाइटकी जातिवाले पत्थरोंमे पाया जाता है। बालूकी रेतमें व उत्तप्त तरल पदार्थमे अभ्रकके परिमाणु प्रचुररूपमें पाये जाते हैं इस तरह अभ्रक सभी स्थानोंमें देखा गया है परन्तु उद्योग धन्धेके योग्य व्यवसायमें काम आनेवाला अभ्रक बड़े बड़े तख्तोंके रूपमें बहुत कम पाया जाता है। व्यवसायके काममें आने योग्य अभ्रक भारत, कनाडा संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मन पूर्व अफ्रीका, ब्रेजिल अर्जेन्टाइना, नार्वे, साइबेरिया, दक्षिण अफ्रीका, जापान और चीनमें पाया जाता है। यह नाम सूची उपजके परिमाण क्रमानुसार दी गयी है।

भारत

भारतके विस्तृत भूगर्भमें अभ्रक सभी स्थानोंमें पाया जाता है। परन्तु आधुनिक व्यवसाय प्रधान युगमें औद्योगिक क्षेत्रके कामका अभ्रक सीमाबद्ध क्षेत्रमें ही मिलता है। इस प्रकारके अभ्रकमें दो * जातियोंका ही अभ्रक † मुख्य माना जाता है और हर्षका विषय है कि इन बहुमूल्य दोनों जातियोंकाही अभ्रक ‡ भारतमे मिलता है। अतः यहाका अभ्रक इस दृष्टिसे महत्वका है। इन दो जातियोंमे भी भारतके इस पूर्वीय भागमे पाया जाने वाल अभ्रक तो संसार भरमें सर्वोच्च श्रेणीका माना जाता है। इतना ही क्यों अभ्रककी श्रेणीका जहा महत्व है वहां अभ्रकके तख्तेके बड़े अकारका महत्व तो और भी बढा हुआ है। जो टुकड़ा जितना अधिक बड़ा होता है उतना ही अधिक मोलका वह माना जाता है इस दृष्टिसे संसारमे अभी तक पाये गये अभ्रकके टुकडोंमें

* दो जातियोंमें एकको मस्कोदुवाइट और दूसरेको फ्लोगोपाइट कहते हैं।

† *We shall rather concern ourselves only with those which have great technical importance and therefore extensively mined From earliest times these have been the moscovite and the phlogopite species*

‡ *Practically all the mica mined in India is moscovite, though small quantities of phlo-[illegible]ed in Travancore Hand Book of Commercial information*

By C W E Cotton, C I E, I C S

भारतकी "इनीकुर्ती"* नामक खानमें पाया गया टुकड़ा सबसे बड़ा था। मतलब यह कि उद्योग धन्धेके काममें आनेवाला अभ्रक ही भारतमें अधिक मिलता है। औद्योगिक, दृष्टिसे यह सर्वोच्च श्रेणीका माना जाता है और परिमाणमें भी संसार भरकी खानोंसे निकलनेवाले कुल अभ्रकके परिमाणसे कहीं अधिक केवल भारतमें ही निकाला जाता है।

खानोंसे अभ्रक निकालनेका काम भारतमें अत्यन्त प्राचीन समयसे अखण्डित रूपसे चला आ रहा है। सन् १८२६ ई० में डा० बेलोब्रेटनने पटना और दिल्लीके पास अभ्रककी खानें काम करती हुई देखीं थी। डाक्टर साहब (Dr. Belo Bretn) का कहना है कि इन खानों पर ५ हजार श्रमजीवी काम करते थे। डा० मैक्लेलैण्ड (Dr Mo clolland) ने लिखा है कि सन् १८४९ ई० में इन खानोंसे ८ लाख पौण्ड वजनका अभ्रक निकाला गया था। भारतमें सबसे प्रथम अभ्रकका निर्यात् बंगालसे आरम्भ हुआ और उसी वर्ष कलकत्तेसे ७५०७ रतल अभ्रक विदेश गया। तबसे आज तक बराबर भेजा जा रहा है।

संसार भरकी खानोंसे निकलनेवाले अभ्रकका ६० प्रतिशत भाग भारतकी खानोंसे निकाला जाता है। भारतमें अभ्रकके दो कटिबंध माने जाते हैं और इन्हीं में भारतकी अभ्रककी मुख्य २ खानें भी हैं। उत्तर पूर्वकी ओर वाला अभ्रक कटिबन्ध १२ मील चौड़ा और ७० मील लम्बा है। इस कटिबन्धका फैलाव मुंगेर, हजारीबाग, तथा गयाके जिलोंमें है और भरा तथा चम्पारन तक फैला हुआ है। यहां वाली अभ्रककी खानोंमें गत ५० वर्षोंसे बराबर काम होता चला आ रहा है। गत योरोपीय महासमरने अभ्रकके उद्योगको बहुत बड़ा प्रोत्साहन दिया फिर भी भारतमें कुछ ही ऐसी खाने हैं जिन पर आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार काम होता है। नहीं तो यहांकी अधिकाश खानों पर पुराने ही ढंगसे काम होता है। इस अभ्रक कटिबन्धके अतिरिक्त भारतमें एक और अभ्रक कटिबन्ध है जो मद्रास प्रदेशान्तर्गत नेलोर जिलेनें फैला हुआ है। इसके पूर्वीय पार्श्व पर हलके दर्जेका अभ्रक निकलता है। इसके प्रधान खण्ड चार हैं जो गूदूर,रापुर,आत्माकुर और कवालीके नामसे विख्यात हैं। इस कटिबन्धकी प्रधान खानें रापुरमें हैं। ये खाने प्रायः चौड़े मुंह वाली है। भारतके इन दो प्रधान अभ्रक कटिबन्धोंके अतिरिक्त मद्रासके सालेम और मलाबार जिलोंमें तथा भारतके मध्यभाग अजमेर, किशनगढ़, सिरोही, टोंकमें भी अभ्रक निकलता है। सन् १९१७ ई० में उदयपुरके पास खोजकी गयी थी और गंगापुरके उत्तर नानसामें अभ्रककी खानका पता चला था। ट्रावनकोरमें भी मुलायम जातिका अभ्रक मिलता है।

* *But all earlier records were broken by finding of a crystle in the Ini Kurti mein in India which measured 10 ft over the clevage surface and 15 ft over the lieves (Mica its history, production and utilisation by Hans Zailles*

अभ्रकके दो प्रकार

व्यवसायके काममें आनेवाले अभ्रककी * दो जातियाँ हैं। इनमेंसे एकको ✣ मस्कव्हाइट और दूसरेको फ्लोगोपोइट कहते है। भारतमें इन्हीं दोनों जातियोंका अभ्रक पाया जाता है।

औद्योगिक महत्वकी दृष्टिसे अभ्रकके गुणधर्म

अभ्रकसे जितने ही अधिक पतले और सुडौल पर्त निकाले जासकें उतना ही अधिक मूल्यवान वह माना जाता है। पर्त तभी तक पतलेसे पतले और सुडोल निकलते जायगे जब तक उसमें कडाई रहेगी अन्यथा वह चूर चूर हो जायगा। इन दो विशेपताओंके अतिरिक्त उसमें लचीलापन न हुआ तो भी औद्योगिक दृष्टिसे वह अधिक कामका नहीं है। अतः यह तीन गुण आर्थिक दृष्टिसे अभ्रककी विशेपताको बढ़ाते हैं। खानसे अभ्रक सुडौल आकृतिका नहीं निकलता खानसे निकालनेके बाद उसके बेडौल पर्त निकाल फेंके जाते है और फिर किनारे काटकर उसके ढंगदार टुकड़े बनाये जाते हैं। इतना करनेके बाद तब कहीं अभ्रककी श्रेणी और प्रकारका पता लगता है। अभ्रकके टुकडोंको सुडौल करनेमें ही भारतमें ६० प्रतिशत मालकी क्षति होती है और तब जाकर वह बाजारमें विक्रीके योग्य बनाकर लाया जाता हैं। अतः उपरोक्त तीन गुणोंका अभ्रकमे पाया जाना उसकी विशेपताको बढानेवाला माना जाता है।

अभ्रककी श्रेणी

अभ्रक स्वच्छ और छींटेदार दो प्रकारका होता है। इन्हीं दोनोंको देखकर अभ्रककी श्रेणी निश्चित की जाती है बाजारमें दो तरहकी पद्धतिके अनुसार निश्चित की गयी श्रेणियाँ आती हैं जिनमेंसे एकको अमेरिकाकी घरेलू पद्धतिके अनुसार निश्चित किया गया कहा जाता है और दूसरी पद्धति है बृटिश अधिकारियोंकी। प्रत्येक पद्धतिके अनुसार किसमें कितनी श्रेणियाँ होती हैं यह यों स्पष्ट होगा:—

अमेरिकन ढंगपर

१ स्वच्छ
२ कमदागी
३ अधिक दागी

बृटिश अधिकारियोंके ढगपर

१ स्वच्छ (सरकार द्वारा निश्चित किये गये स्वच्छताके परिमाणके अनुसार)
२ कम दागी (...... ....)
३ दूसरे दर्जेका बेदाग
४ " " " कुछ पर कुछ दागी
५ सामान्य दागी
६ साधारण रीतिसे पूरा दागी
७ दागी, ८ ज्यादा दागी, ९ काले दागवाला

* इन दोनोंका तत्त्वांश विश्लेषण जानके इच्छुक रसायन शास्त्र प्रेमियोंके लिये इनकी रसायनसारिणी यों है। *Muscovite mica* = $Al_3 Kh_2 Si_3 O_{12}$ *Phlogopite mica* = $Almg_3 Kh_2 Si_3 O_{12}$

✣ रूसके मास्कोविया स्थानवाली खानेसे इस प्रकारका अभ्रक निकलता है इसीसे मस्कव्हाइट कहते हैं।

अभ्रककी कटाई छंटाई

विक्रीके लिये तैयार किये जानेवाला अभ्रकका टुकड़ा खानसे निकाले जानेके बाद काटा और छांटा जाता है। टुकड़ेपरके पर्त एक एक कर निकाले जाते है ताकि वह सुडौल और चौरस मालूम हो। इस प्रकार जब ठीक ढंगका टुकड़ा हो जाता है तब उसके पर्त निकालना बंद करदिया जाता है और उसके किनारोंको हाथसे ही तोड़कर सम कर दिया जाता है तथा टूटे टुकड़े तोड़कर फेंक दिये जाते हैं। इस प्रकार सुधारे गये टुकड़ोंका ढेर लगा दिया जाता है। फिर चाकूसे उन टुकड़ोंके किनारे काटकर ठीक किये जाते हैं। भारतकी पूर्ववाली खानोंमें कटाईका काम हंसियेसे लेते हैं हंसियेसे काटनेमें किनारे पर्तदार या फटते नहीं हैं और कटे हुए टुकड़ोंसे पर्त भी सरलतासे निकाले जा सकते हैं। इस प्रकार काटे गये अभ्रकको अमेरिकावाले 'कच्चा अभ्रक' मानते हैं, जिससे कर लगाने की सुविधा हो जाती है।

अभ्रकके टुकड़ोंका आकार

अभ्रक खानसे निकाले जानेके बाद काटा और फिर छाटा जाता है तब कहीं उसकी श्रेणीका अनुमान होता है। इतना हो जानेपर भी व्यवसायकी सुविधाके लिये उसका आकार बनाकर निश्चित किया जाता है और फिर श्रेणीके अनुसार भिन्न २ आकारका अभ्रक अलग २ छांटा जाता है।

अमेरिकावाले अभ्रकके आकारका निर्णय समकोण चतुर्भुजके रूपमें करते हैं। एक टुकड़ेमें जितना बड़ा समकोण चतुर्भुजाकार उपयोगी टुकड़ा सुडौल और चौरस निकाला जा सके उतना ही बड़ा अभ्रकके उस टुकड़ेका आकार मानते हैं। सबसे छोटे आकारवाला अभ्रकका टुकड़ा जो बाजारमें बिकता है वह समकोण चतुर्भुजाकार १½×२ इंचका होता है। इससे बड़ा दूसरा आकार २×२ इंचका होता है और फिर क्रमशः २×३ इंच ; ३×६ इंच; ३×४ इंच, ४×६ इंच; ६×६ इंच ; ६×९ इंच, ८×१० इंच और इससे बड़े,ठीक ढंगसे काटे गये टुकड़ेमें भी समकोण चतुर्भुजाकार टुकड़ा निकालनेके लिये इच्छित आकारसे कुछ बड़ा टुकड़ा लेना पड़ता है। जैसे २×३ इंचकी आकृतिवाले समकोण चतुर्भुजके लिये २×३ इंचसे बड़ा टुकड़ा लेना पड़ता है। जिस आकारका चतुर्भुज चाहिये उससे १½ गुना बड़ा टुकड़ा लिया जाता है। अतः २×३ इंचके लिये ३×४½ इंचका टुकड़ा होना चाहिये। इस प्रकार ३×४½ इंचके बड़े टुकड़ेमे केवल २×३ इंचका ही अच्छा टुकड़ा माना जाता है। ऐसी दशामें यही उस टुकड़ेकी वास्तविक साइज है कि जिसका मूल्य दिया जाता है।

उपरोक्त सबसे छोटे दो आकारोंमें एकको व्यवसायी लोग पंच(Punch) कहते हैं। इसमें १½×२ का समकोण चतुर्भुज नहीं निकालता परन्तु इससे वे पहियादार गोलाकृतिका टुकड़ा निकालते है जिसका कर्ण यदि छीटेदार माल हुआ तो १½ इंच और स्वच्छ हुआ तो १⅛ इंचका होना है।

दूसरेको वर्तुलाकार अभ्रक कहा जाता है। यह पंचसे बड़ा होता है अर्थात् समकोण चतुर्भुज औ पंचके बीचवाले आकारका होता है।

इस प्रकार आकारके अनुसार सबसे छोटा टुकड़ा पंच, उससे बड़ा वर्तुलाकार और फिर समकोण चतुर्भुजाकारका होता है। पंच और वर्तुलाकारका माप निश्चित है परन्तु समकोणकी माप भिन्न भिन्न प्रकारकी होती है जैसे छोटा और बड़ा।

कनाडा—में अम्बर नामक अभ्रक इसी प्रकारसे छांटा जाता है पर अमेरिकाकी घरेल पद्धतिके अनुसार मिलनेवाली साइजसे यह कुछ भिन्न होता है। इसके ये प्रकार हैं।

१×१ इंच	२×३ इंच	४×६ इंच
१×२ „	२×४ „	५×८ „
१×३ „	३×५ „	

भारत—में आकारके अनुसार छटाईका काम उपयोगी क्षेत्रवाले टुकड़ेके आकारपर ही निर्भर रहता है। टुकडेकी अधिक लम्बाई बढ जाने और चौड़ाईके घट जानेको आशंकासे आकार निर्धारित करनेके लिये प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। कलकत्तेके बाजारमें अभ्रकके टुकड़ेका आकार इस प्रकारसे रहता है:—

१	एक्स्ट्रा स्पेशल	६० से ७० वर्ग इंच तक
२	स्पेशल	४८ से ५९$\frac{3}{4}$ „ „ „
३	ए वन (A–I)	३६ से ४७$\frac{3}{4}$ „ „ „
४	नम्बर १	२४ से ३५$\frac{3}{4}$ „ „ „
५	„ २	१४ से २३$\frac{3}{4}$ „ „ „
६	„ ३	१० से १३$\frac{3}{4}$ „ „ „
७	„ ४	६ से ९$\frac{3}{4}$ „ „ „
८	„ ५	३ से ५$\frac{3}{4}$ „ „ „
९	„ ६	१ से २$\frac{3}{4}$ „ „ „

व्यवसायिक दृष्टिसे अभ्रकके प्रकार।

अम्बर अभ्रक—यह प्रधानतया कनाडाका अभ्रक है। यह कठोर नहीं होता वरन इस प्रकारका अभ्रक कोमल गुणवाला ही होता है। यह बिजलीसे संचालित कम्यूटेटर नामक यंत्रमें काम आता है। इसके टुकडे सुडौल आकृतिके नहीं आते। इसकी छटाई हाथोंसे बेडौल भागको मसल कर की जाती है। जो टुकड़े बाजारमें बिकनेके लिये आते हैं उनकी मोटाई ·००५ से ·०५० इंच तक की होती है।

कोमल स्फटिक काँति वाला भारतीय अभ्रक—यह अभ्रक प्रधानतया भारतमें ही उत्पन्न होता है। यह उत्तम श्रेणीका माना जाता है। यह बिजली और बेतारके तारके काममें आता है। इसके टुकड़े तरतीबदार पर्तवाले होते हैं। यह देखनेमें सुडौल और चौरस आकृतिका होता है। बाजारमें बिकने वाले इस अभ्रकके टुकड़ेकी मोटाई ·०१० से ·०'५० इंच तककी होती है।

गुलाबी मायल स्वच्छ अभ्रक—यह अभ्रक भी भारतीय खानोंमें निकलेने वाले अभ्रकसे ही छांट कर निकाला जाता है। ऐसा निर्दोष अभ्रक संसारके अन्य किसी भी भागमें नहीं पाया जाता। यह सर्वोच्च श्रेणीका माना जाता है। यह औरोंकी अपेक्षा अधिक कठिन होता है। यह अभ्रक चूल्हों और अत्यधिक ऊष्णता एवं विद्युत शक्तिके केन्द्रीय स्थानोंमें लगाया जाता है। इसके टुकड़ोंकी मोटाई '०१० से '०५० इंच तक की होती है।

अभ्रकके कृत्रिम तख्ते और अभ्रकका बना माल

खानोंके पास जो कटाई और छटाईका छोटा २ चूरा पड़ा रह जाता है उसका व्यवसायिक उपयोग खोज निकाला गया है। अमेरिका वालोंने अभ्रककी खानोंके पास अभ्रकका चूरा पीसनेके लिये चक्किया लगा रक्खी हैं। इन्हीं चक्कियोंमें अभ्रक पीसा जाता है और बॉयलर आदिमें लगाने योग्य फिरकियां भी इसीकी जमायी जाती हैं।

अभ्रकके छोटे छोटे तख्ते जमाकर तैयार करनेकी व्यवस्था भारतमें भी की गयी है। छोटे आकारके अभ्रकके टुकड़ोंसे तेज चक्कूके द्वारा पर्त निकाल डालते हैं और फिर चपड़ेको स्पिरिटमें गला कर तैयार करते हैं। इसी लसलसे पदार्थसे अभ्रकके पतले और छोटे छोटे टुकड़ोंको एक पर एक रखते है और पत्तोंके बीचमें चपड़ेका गोंद देकर जोड़ते हैं। इस प्रकार आवश्यक और इच्छित आकार प्रकारके तख्ते जमा कर तैयार कर लिये जाते हैं। इस प्रकारसे जमाये गये अभ्रकके 'बोर्ड' अभ्रकके कपड़े तथा अभ्रकके कागज बाजारमें बिकने आते हैं। इसे मैकनाइट (micanite) के नामसे सम्बोधित करते हैं। यह काम सबसे अधिक बिहारप्रान्तीय अभ्रकके औद्योगिक केन्द्र कोडरमामें बनता हैं। इसी प्रकार ई० आई० रेलवे कम्पनी अपने जमालपुरके कारखानेमें भी तैयार कराती है।

संसारके अभ्रक पैदा करने वाले देश

अभ्रक सबसे अधिक भारतमें उत्पन्न होता है। इसके बाद इसके केन्द्र कनाड़ा, संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रेजील माने जाते है। इस व्यवसायमें भारतका एकाधिपत्य ही मानना चाहिये इसे * भारत सरकार भी स्वीकार करती है।

* *India is, therefore, the principal producer in the world and may thus be able to fix the prices of an article for which there is a great and steady increasing demand,* Edgar Thurston

Reporter on economic products to the Government of India

सरकारी नियन्त्रणका प्रधान कारण

अभ्रककी उपयोगिताका जहा पारावार नहीं है वहा सबसे अधिक महत्वका गुण इसमे यही है कि यह गोला बारूदके काममें आता है अतः यौरोपीय समरके समय सरकारने अपने नियन्त्रणमे अभ्रकको भी ले लिया था पर गत १९१९ के अक्टूबर माससे यह नियन्त्रण उठा लिया गया है।

अभ्रककी उपयोगिता

प्राचीन कालमें अभ्रकका उपयोग खिड़कियों और लालटेनोंके कांचके स्थानमें किया जाता था और जहा अत्यन्त ऊष्ण द्वारा उत्पन्न होनेवाले प्रकाशपुंज मात्रका उपयोग इष्ट रहता है वहां आज भी काचके स्थानमें अभ्रककाही उपयोग किया जाता है। इसपर क्षणिक तापमानके प्रवल, उतार चढावका लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ता अतः अभ्रकका उपयोग कई प्रकारके (Anthracite stoves and Gas asbestos stove) विलायती चूल्होंमें काम आता है। तेल और गैसकी वत्तियोंके 'वर्नर' भी इसीके बनते है। जहां पानी और तूफानसे आग लग जानेका भय रहता है वहा अभ्रकके संयोगसे संयुक्त प्रकाश पुंजसे काम लिया जाता है। प्रकाश पारिदर्शक तथा ऊष्ण प्रतिवन्धक होनेके कारण अभ्रकके तख्तेके पर्दे जली हुई भट्ठियोंके मुंहपर रहते हैं। कारखानों और रसायनशाला तथा प्रयोगशालाओंमें ऊष्णताके प्रकोपसे बचकर प्रेक्षणीय प्रतिक्रियायें देखनेके लिये भी अभ्रकसे काम लिया जाता है। फोटोफोन तथा टेलीफोनके प्लेटोंपर प्रतिध्वनि अंकित करानेका काम भी अभ्रक देता है। इसके १ इंच चौड़े तथा ४ से ८ इंच लम्बे तख्ते डायनामों तथा मोटरोंके विद्युत शक्ति संचारी केन्द्रोंपर काम देते है। अभ्रकमें जलके संचय करनेकी सामर्थ्य रहती है अतः यह खेतोंमें खादका काम भी देता है। इसे ग्रेफाइट या ग्रीजके साथ मिलाकर गाड़ियोंमें तेल देनेका काम भी लिया जाता है। काला अभ्रक औषधिके काम भी आता है।

लाख

—:o:—

बीसवीं शताब्दीके विज्ञान प्रधान समुन्नत युगमें लाखकी व्यापक उपयोगिताका प्रत्यक्ष अनुभव सहजमें हो जाया करता है। बिजलीके सामानमें, वार्निशके काममें, बोलते हुए ग्रामोफोनके रेकार्डमें, बीमा पार्सलकी मोहरमें, लीथोकी स्याहीमें, नकली रबड़की ढलाईमें, बटन और जूतेके साजमें लाखका प्रकट दर्शन होता है। इतना होते हुए भी जिस भारत देशमें यह उत्पन्न होती है उसमें इसकी उपयोगितासे लाभ नहीं उठाया जाता। यों तो लाखपर भारतका एकाधिपत्य है पर इस पदार्थको वह किस प्रकार उपयोगमें लाता है यह प्रश्न उठते ही मूक रह जाना पड़ता है। जिस प्रकार रूई, जूट, आदि का उपयोग स्वयं भारत व्यापक रूपसे करता है उसी प्रकार वह लाखसे लाभ नहीं उठाता। अन्य कच्चे पदार्थोंके समान ही लाख और चपड़ा भी कौड़ी मोलपर निर्यात्के रुपमें विदेश भेज दिया जाता है और योरोप और अमेरिकावाले इसकी उपयोगितासे लाभ उठाते है।

भारतके सभी प्रान्तों किसी न किसी प्रमाणमें लाख उत्पन्न ही होती है अतः इसकी चर्चा भी यहां कर देना आवश्यक है।

लाख नामका उपयोगी पदार्थ कई प्रकारके वृक्षोंपर पाया जाता है। चिपकनेवाले लसलसे पदार्थ रालके रूपमें यह वृक्षोंकी पतली टहनियोंपर देखा जाता है। यह एक छोटेसे कीड़ेके कार्य कौशलके प्रतिफल स्वरूप उत्पन्न होता है। लाखमें गोंदके समान रालका गुण और लाल रंगके समान विशेष प्रकारके रंगका गुण समानरूपसे होता है। इसके चिपकानेवाले गुणका प्रत्यक्ष अनुभव गलमें मिलता है और रंगदार पदार्थका चमत्कार इससे तैयार किये जानेवाले महावरमे दिखलायी देता है।

इतिहास

भारतमें जितने भी छोटे छोटे उद्योग धन्धे शताब्दियों पहलेसे चले आ रहे हैं उन सबमें लाख के समान पुराने बहुत कम है। लाख यों तो सभी प्रकारके वृक्षोंपर उत्पन्न होती है पर पलासके वृक्षपर यह अधिक परिमाणमें पायी जाती है। भारतके प्राचीन साहित्यमें पलासका पर्य्यायवाची शब्द लाक्षतरु है। अतः लाक्षतरु शब्दसे ही लाखके औद्योगिक स्वरूपकी प्राचीनताका अनुमान बहुत कुछ किया जा सकता है। इतना ही नहीं लाखोंकी संख्यामें छोटे छोटे कीटाणु सामुहिक रुपसे लाख उत्पन्न

करते थे यह भी इसी शब्दसे स्पष्ट हो जाता है। भारतकी प्रायः * सभी भाषाओंके प्राचीन साहित्यमें पलासको लाक्षतरुके नामसे ही सम्बोधित किया गया है पर संसारकी अन्य † भाषाओंके प्राचीन साहित्यमें लाखका कहीं भी पता नहीं चलता।

हम ऊपर लिख आये हैं कि लाखके दो गुण हैं और दोनों ही से लाभ उठाया जाता है। प्राचीन भारतमें लाखके रंगवाले गुणकी अपेक्षा यदि इसके अन्य किसी गुणको अधिक महत्व था तो वह राल था। इसी गुणको यहांवाले प्रधानता देते थे और यह अवस्था मध्यकालीन युगतक बराबर रही जैसा कि सन् १५९० ई० की आइने अकबरीसे स्पष्ट हो जाता है। परन्तु आश्चर्य है कि योरोपमें लाखका प्रवेश रंगके रूपमें हुआ। रंगवाला गुण उतने महत्वका न उस समय माना जाता था और न आज ही। ऐसी दशामें लाखके हीन गुणको ही योरोपवालोंने क्यों अपनाया यह भी एक पहेली ही है। लाखका निर्यात सन् १८१४ ई० से आरम्भ हुआ और वह भी कोचीनियल नामक रंगदार पदार्थके प्रतियोगीके रूपमें।

योरोपमें लाल रंगके प्रसारकी चर्चा करना प्रसंगवश आवश्यक प्रतीत होता है। पुराने समयमें यूनान और रोमनिवासी लाल रंगकी वस्तुएं एक दूसरे प्रकारके कीड़ेसे उत्पन्न होनेवाले पदार्थसे तैयार करते थे कुछ लोगोंका यह भ्रम था कि ये रंग लाखसे ही तैयार किये जाते थे। टामलिसन्स साइक्लोपीडिया (Tomlinsons Cyclopædia) के आधारपर डा० वालफरका मत था कि कोचीनियल नामक लाल रंगके पूर्व यूनान और रोमवाले लाखसे ही लाल रंग तैयार करते थे और ब्रूसल्स तथा फ्लीमसका पक्का लाल रंग भी लाखसे ही तैयार किया जाता था। परन्तु डा० बर्डवुडने इस भ्रमको दूर करते हुए लिखा है कि वे लोग जो लाल रंग तैयार करते थे वह एक दूसरे प्रकारके (Kirmij) कीड़ोंसे पैदा होनेवाले पदार्थसे तैयार करते थे। जो दक्षिण फ्रांस, स्पेन, इटली तथा कैनाडा द्वीपमें ओक जातिके वृक्षोंपर उत्पन्न होता था और उसे निकालकर अलग कर लिया जाता था। इस अलग निकाले गये पदार्थको दाने या फल कहते थे (Grains or Berries) और इसीसे रंगका काम लिया जाता था। सम्भव है कि रंगीन मालके व्यवसायमें पक्के रंगसे रंगे गये मालको दानों (Grains) के आधारपर ही Engrained कहा जाने लगा हो। रंग उत्पन्न करनेवाले कीड़ोंके सम्बन्धमें चर्चा करते हुए यूनान और रोमन भाषाके पुराने साहित्यमें काकस Coccus

* *But as far as I have been able to discover lac finds no place in the literature of ancient Greece, Rome, Egypt, Persia or Arabia* Sir George Watt

† *Sir William Jones* के आधारपर *Dr Birdwood* ने लिखा है कि हिन्दुओंके प्राचीन साहित्यमें लाखके लिये ६ शब्द हैं पर ये लोग साधारणतया इसके लिये लाक्ष शब्दका ही व्यवहार करते हैं जो बहुसंख्यक कीटाणु समूहके स्वरूपकी ओर संकेत करता है।

शब्दका प्रयोग पाया जाता है। इसी प्रकार करमेस Kermes (Karmij) के अरबी भाषामें पाये जानेवाले पर्य्यायवाची शब्दके अर्थ छोटे कीड़ोंके होते हैं। इस करमेस शब्दसे इटैलियन और फ्रान्सीसी लोगों द्वारा लाल रंगके बोधक क्रिमसन Crimson शब्दकी उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार देखा जाय तो 'काकस' शब्दसे करमेस और करमेससे क्रिमसन शब्दकी उत्पत्ति हुई प्रतीत होती है (Coccus, Kermes, Crimson) आजकल अंग्रेजीमें लाल रंगके लिये जिस क्रिमसन Crimson शब्दका प्रयोग किया जाता है उसकी उत्पत्तिके आधारको देखते हुए यही स्थिर करना पड़ता है कि लाल रंगकी उत्पत्तिमें कीटाणुके कार्यकौशलका रहस्य भी छिपा हुआ है लैटिन भाषामें इसी रंगको Vermiculus कहते हैं जिसके तात्विक अर्थ कीटाणु समूहके होते हैं। इसी लैटिन शब्दसे फ्रेंच लोगों द्वारा अंग्रेजीके Vermillian शब्दकी रचना हुई है। इसी प्रकार लाख Lac शब्दसे अंग्रेजी भाषामें Lake शब्द की रचना हुई हैं। जिस प्रकार यूनानी साहित्यका काकस Coccus अरबीका करमेस Kermes और लैटिनका Vermiculus शब्द सब एक ही प्रकारसे कीटाणु ,समूहकी ओर संकेत करते हैं उसी प्रकार संस्कृत शब्द 'लाक्ष' भी कीटाणु समूहके कौतुकमय कौशलका ही सूचक है।

उपरोक्त विवेचनसे यही स्पष्ट होता है कि पाश्चात्य भाषाओंमें लाखके लिये व्यवहार होने-वाले शब्दोंका सम्बन्ध लाखके हीन गुण अर्थात् उसके रंगसे ही है। परन्तु भारतमें लाखके दूसरे गुण-की उपयोगितासे भी लाभ उठाया जाता था। इसका प्रमाण आइने अकबरी है जिसमें राजमहलोंमें की जानेवाली लाखकी वार्निशकी चर्चा पायी जाती है।

भारतमें लाखका उद्योग अत्यन्त प्राचीन समयसे शृङ्खलाबद्ध चला आरहा है। भारतका यह घरेलू उद्योग धन्धा संसारके प्राचीन उद्योग धन्धोंमें माना जाता है। लाख प्रायः पलास वृक्ष परही अधिक उत्पन्न होती है। इसका पूर्ण अनुभव भारतको बहुत प्राचीन समयसे था अतः संस्कृत साहित्यमें पलास वृक्षका पर्य्यायवाची शब्द लाक्षतरु है लाक्षतरुसे लाखके सम्बन्धमें दोनों प्रधान बातोंका संकेत हो जाता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि लाखों कीटाणु समूह पलास वृक्षपर आश्रय ले एक प्रकारका लाल रंग वाला लसलसा रालके समान गोंद तैयार करते हैं। यही कारण है कि भारतके कर्मकाण्डियोंने पलासकी उन डालियोंका छूना निषेध कर रक्खा है कि जिनपर रक्तवर्णका आवरण आजाता है। महा-भारतके समान प्राचीन ग्रन्थमें भी लाक्षभवनकी चर्चा आयी है। भारतके इस प्राचीन उद्योग धन्धेकी ख्याति अन्य विदेशोंमें कब और कैसे पहुंची, इसका कोई विश्वासोत्पादक प्रमाण तीसरी शताब्दीके मध्यकालीन युगके प्रथमका नहीं मिलता है पर सन् २५० ई० मे एलियन (Æline) नामक पाश्चात्य विद्वानने सबसे प्रथम इसकी चर्चा की है इसका ऐतिहासिक प्रमाण अवश्य ही मिलता है। इसने लिखा है कि भारतमे एक ऐसा भी कीड़ा होता है जो रंगके काममें आनेवाले पदार्थको उत्पन्न करता है। इसके

बाद शताब्दियों तक इतिहासमें लाखकी कहीं चर्चा तक नहीं मिलती। हां आइने अकबरीमें लाखे और लाखके संयोगसे तैयार की जानेवाली वार्निशकी बातका सम्बन्ध आया है। सन् १५९० ई०में अकबरने दर्वाजों और राजप्रासादोंके फाटकोंपर पोती जानेवाली लाखकी वार्निशके सम्बधमें नियम बनाये थे। इसके कुछ ही समय बाद पुर्तगालके सम्राटने जान ह्यूग्लेन वानलिनचोटन(John Huyglen Von Linschoten) नामक एक डच जानकारको लाखकी वैज्ञानिक खोजकरनेके लिये भारत भेजा था। इस डच जानकरने अपना अनुभव सन् १५९६ ई०में प्रकाशित कराया और वही सन् १५९८ ई०में पुस्तकाकार प्रकट हुआ। आबूहनीफा नामक जानकारने लाखको औषधिके काममें व्यवहार करनेकी सलाह दी है। डा० केयरनेर* सन् १७८१ ई० में लाखके कीड़ोंका विस्तृत विवरण प्रकाशित कराया था। सन् १७९० ई० में डा० राक्सबर्गने † इन कीड़ोंका जीवन वृत्तान्त लिखा था। इसके बाद सन् १८०० ई० में डा० बुचानन हैमिल्टनने भारतकी लाखकी खेती की विस्तृत चर्चा प्रथम बारकी थी। सन् १८६१ ई० में डा० कार्टनने कीड़ोंकी शरीर रचना पर प्रकाश डाला था।

इस प्रकार उपरोक्त विवेचनसे प्रकट होता है कि भारतकी लाखके गुण, उसकी विशेषता, और उसकी उपयोगिताका पूर्ण अनुभव विदेशी लोग शताब्दियोंमें कर पाये थे।

लाखकी उपजके प्रधान केन्द्र

संसारमे सबसे अधिक लाख भारतमें उत्पन्न होती है। भारत ही वह देश है कि जिसने संसारमें सबसे प्रथम लाखकी खेती आरम्भ की थी। यही कारण है कि लाखपर भारतका अटल एकाधिपत्य अविच्छिन्न रूपसे बराबर चला आ रहा है। भारतके अतिरिक्त इण्डो-चाइना, अनाम और कम्बोडियामें भी लाखकी खेती होती है पर निश्चित सीमाके अन्दर। लाखकी उपयोगिताका अनुभव कर जापानने फर्मोसा द्वीपमें और जर्मनीने दक्षिण पूर्व अफ्रीकाके अमानी नामक स्थानमें लाखकी खेती करानेका शिरतोड़ प्रयत्न किया पर सफलता न मिली। इसी प्रकार मिस्रवाले भी अपने प्रयत्नमें विफल मनोरथ हो गये। लाखका प्रति उपयोगी पदार्थ मैडागास्कर द्वीपमें पाया जाता है पर बहुत कम परिमाणमे। फलतः यह भारतकी प्रतियोगितामें कभी भी नहीं टिक सकता है।

लाखकी वैज्ञानिक परीक्षा

आधुनिक जगतकी व्यापक वैज्ञानिक खोजका ही प्रतिफल है कि लाखकी उपयोगिताका वर्तमान चमत्कार संसारपर प्रकाश हो सका है। अतः लाखकी चलतू वैज्ञानिक परीक्षाकी चर्चाकर देना ही उचित है।

* देखिये *Philosophical Transactions Vol: LXX page 574*
† देखिये *Asiatic Researches Vol II page 360—366*

बेनडिक्ट, अन्सर, टसचिर्च, फार्नर आदि विज्ञान विशेषज्ञोंका मत है कि लाखमें कितने ही अन्य प्रकारके तत्त्व सम्मिलित हैं। इन वैज्ञानिकोंके मतानुसार लाखका वैज्ञानिक विश्लेषण यों है।

लाख
- ६५ से ८० प्रतिशत राल (Rasin)
- ६ से १० प्रतिशत लालरंगके तत्त्व (Red colouring matter)
- ४ से ६ प्रतिशत लाखका मोमी पदार्थ (Lac wax)
- २ से ५ प्रतिशत तक काष्टांश, जलांश, तथा धूल मिट्टी।

उपरोक्त वैज्ञानिक विश्लेषणके सम्बन्धमें डा० ई० सचमिडट (Dr. E. Schmidt) का * मत है कि लाखमें सारकोसाइन (Sarcosine) नामक पदार्थ भी रहता है।

चपड़ा सभी प्रकारकी ऐलकोहलमें तथा कास्टिक पोटास, सोडा और अमोनियांमे घुल जाता है।

कच्ची लाख धोकर तैयार किये गये लाखके बड़े दानोंमें रालका अंश प्रायः ७५ से ९० प्रति शत रहता है। इन्हीं बड़े दानोंसे तैयार किये गये चपड़ेमें ८० से ९० प्रतिशत तक राल रहती है। कारण जहां चपड़े † में लाल रंगकी रंगीन वस्तु और न घुलनेवाला पदार्थ (Alluminous) घटता है वहां राल (Resinous Matter) की वृद्धि होती है। गर्म ऐकुअस, बोरैक्स, सोल्यूशन—ऐलकलाइन—कार्बोनेट और अमोनियांमें घोलकर इसकी वार्निश बनती है।

लाखकी औद्योगिक परीक्षा

जो लाख देखनेमें खूब चमकीली और आकारमें बड़ी मोटी और दलदार होती है वही उत्तम लाख मानी जाती है। उत्तम लाख प्रायः वह होती है जो अण्डे देनेके बाद ही रंगीन कीटाणुके रहते ही काट ली जाती है। कीटाणुओंके अण्डे खाकर साफ कर देनेके बाद काटी गयी लाख नीची श्रेणीकी लाख मानी जाती है।

लाखसे चपड़ा तैयार करनेकी विधि

टहनियोंपरकी लाखको साफ कर स्वच्छ लाख तैयार की जाती है। इसकी विधि हम लिख चुके हैं। इस स्वच्छ लाखसे चपड़ा तैयार होता है जिसकी विधि हम नीचे दे रहे हैं।

उत्तम स्वच्छ लाख देखनेमें मसूरकी दालके समान चमकदार होती है। इस लाखको चौवरी लाख कहते हैं। यह लाख धूपमें सुखाकर साफकी जाती है। इसके बाद हरताल पीसकर

---

* देखिये जर्मन भाषाको *Pharmaceutische Chemie II Page 2*

† देखिये *Lac & Lac Industries* नामक *Mr. G. Watt* का ग्रन्थ जिसमें *Dr. Hooper's* के *Chapter on the Chemistry of lac* नामक शीर्षकमें लाख और चपड़ा।

पानीमें मिला इसी साफ चौवरी लाख पर छिड़का जाता है और लाखको मसल मसलकर छिड़की गयी हरतालको सब जगह बराबर कर दिया जाता है। प्रति मन लाखपर प्रायः पावभरसे आधा सेर तक हरताल देते हैं। लाखमें हरताल मिलाकर चपड़ा बनानेसे चपड़े का रंग सोनेके समान पीला चमकदार दिखायी देता है। इस प्रकारके चपड़ेकी मांग बाजारमें अधिक रहती है अतः लाखमें हरताल देकर चपड़ा बनाया जाता है।

चपड़ा बनानेके लिये एक विशेष प्रकारकी थैली तैयार की जाती है जिसकी लम्बाई ३०से ४५ फीट तक की होती है इसका मुंह ३ इंच तक चौड़ा होता है। यह दोहरे कपड़ेकी होती है। हरताल मिली हुई चौवरी लाखको इसी लम्बी थैलीमें भर दिया जाता है और फिर यह भरीहुई थैली एक बड़ी भट्टीके पास रखी जाती है। भट्टी ५ फीट लम्बी और अण्डाकार होती है इसमें धधकता हुआ कोयला भरा रहता है। इसी धधकती हुई भट्टीके समाने चपड़ा बनानेवाला कारीगर लाखसे भरीहुई लम्बी थैलीको हाथमे लेकर बैठता है और चतुराईसे थैलीको घुमा घुमाकर उसके अन्दरकी लाखको पिघलाता है और साथ ही थैलीको निचोड़ निचोड़कर पिघली हुई लाखको थैलीसे बाहर टपकाता जाता है। दूसरा आदमी जो वहीं उपस्थित रहता है निचोड़कर निकाली गयी लाखको एक मिट्टीके चिकने बर्तनमें भरता है। इस बर्तनमें गर्म पानी भरा रहता है अतः पिघली लाख गुड़के पातके समान कुछ ऐंठ सी जाती है। पानीसे लाखके पत्ताको निकालकर भट्टीके सामने चद्दरकी भांति हाथ और पैरकी सहायतासे खींच खींचकर बढ़ायाजाता है इस क्रियासे बड़े २ पतले तख्ते तैय्यार हो जाते है। इसीका नाम चपड़ा होता है। ४० सेर लाखमें २० सेर चपड़ा बनता है।

लाख और चपड़ेमें अन्य पदार्थोंकी मिलावट

असली मालमें काल्पनिक लाभके लिये अन्य पदार्थ मिला दिये जाते है पर इससे व्यवसायको बहुत बड़ा धक्का लगता है। साथ ही मालकी उपयोगितामें भी अन्तर पड़ जाता है और फल यह होता है कि औद्योगिक क्षेत्रको असहनीय अघात पहुंचता है। इसको रोकनेके लिये सभी जानकार प्रयत्न कर रहे हैं।

(१) कभी कभी गर्म लाखके ढेर पर बालू छोड़ दी जाती है। इस प्रकार लाखका वजन तो अवश्य ही अधिक हो जाता है पर लाख बहुत ही खराब हो जाती है। यह बालू फिर नहीं निकाली जा सकती।

(२) वजन अधिक करनेके लिये कभी २ बबूलकी कूटी हुई बहुत बारीक छालको लाखमें मिला देते है। छालका रंग ही ऐसा होता है कि वह सहजमें पहिचानी नहीं जा सकती।

(३) कहीं कहीं लोग लाखमें एक प्रकारका गोंद भी मिला देते हैं।
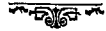
(४) लाखमें कभी २ लोग काले नमकके कंकड़ भी मिला देते हैं।

यही कारण है कि बाजारमें साधारणतया मिलनेवाली लाखमें उपरोक्त प्रकारके पदार्थ मिले हुए पाये जाते है। इसके सिवा (५) महुएकी मींगी (६) कलीका चूना, और (७) धानकी भूसी भी किसी अंशमें कभी कभी मिला दी जाती है।

चपड़ा बनाते समय राल और हरताल तो मिलाया ही जाता है पर वजन बढ़ानेके लालचसे लोग लाखकी थैली ही में गुड, या शक्कर मिला देते हैं कभी कभी लाखका चूरा भी मिला दिया जाता है पर भट्टीके सामने चपड़ेका तख्ता बनाते समय।

लाखके प्रकार

व्यवसायकी दृष्टिसे लाखकी कई किस्में होती हैं जो बाजारमें मिलती हैं इनमेंसे लाख छड़ी जिसे व्यापारी स्टिक लैक (Stick-lac) कहते हैं इसमें तीन प्रकारकी लाख सम्मिलित रहती है। इसका ऊपरी भाग लाखकी राल का होता है। लाखके दानोंके अंदरके भागमें जहां कीड़े केलि करते हैं लाखका मोम (Lac Wax) रहता है। कीड़ोंके शरीर मिश्रित लाखमें लाखका रंग होता है। इस प्रकार स्टिक लाखके अन्दर तीन प्रकारसे लाख पाई जाती है।लाखके कुल प्रकार यों हैं।

१ स्टिक लाख	५ मुलम्मा	लाखके व्यवसायिक भेद।
२ बिडली	६ कीरी	
३ कच्ची चौवरी	८ पसेवा	
४ पक्की चौवरी		

इनके अतिरिक्त फाइन आरेञ्ज, लिवरी, गार्नेट-देशी लीफ, और बटन लाख भी होती है।

१ स्टिक लाख—लाखकी छोटी २ टहनियां

२ बिडली—लाखका चूरा जिसमें मिट्टी, और लकड़ियां भी होती है।

३ कच्ची चौवरी—बिना धोई दानेदार लाख

४ पक्की चौवरी— धोई दानेदार लाख

५ मुलम्मा—एक बारकी धोई बारीक लाख जिसमें कचड़ा और बालू भी रहती है।

६ कीरी—चपड़ा बनाते समय थैलेमें जो लाख बच रहती है और मैलाकाट कर निकाली जाती है। इसकी टिकियाँ बनाई जातीं है।

७ पसेवा—चपड़ा बनानेके बाद जो लाख थैलेमें लगी ही रह जाती है। यह लाख पिघला कर लकड़ीके समान लम्बी कर ली जाती है और गर्म पानीमें उबाल कर सोडेकी सहायतासे अलग कर ली जाती है।

चपड़ेके प्रकार

चपड़ेमें हरताल मिलानेसे उसका रंग सोनेकासा चमकीला हो जाता है और राल (Resin) मिलानेसे चपड़ा जल्दी पिघलने वाला हो जाता है। चपड़ेके प्रायः तीन भेद प्रधान हैं (१) चपड़ा (२) बटन लैंक, (३) गार्नेट लैंक।

१ चपड़ा—लाख पिघला कर तैयार किया जाता है इसमें राल और हरताल मिला रहता है।

२ बटन लैंक—लाख पिघलाकर जब तख्ते बनाये जाते है तो उसे चपड़ा कहते हैं पर जब उस पिघली हुई लाखको चिकनी जगह पर बूद बूद कर टपका देते है तो वह बटन लाख कहलाती है।

३ गार्नेट लैंक - आसाम और वर्माकी 'स्टिक लैक' से स्पिरिट द्वारा यह चपड़ा तैयार किया जाता है इसका रंग स्याही मायल लाल होता है। इसमें प्रायः १० प्रतिशत राल रहती है।

चपड़ाकी श्रेणी और व्यवसायिक मार्क

व्यवसायकी दृष्टिसे बाजारमें आनेवाले चपड़ेमें टी० एन० (T, N.) कालिटीका चपड़ा अच्छा माना जाता है। यही कारण है कि यह माल बाजारमें सबसे अधिक आता है। यह चपड़ा प्रायः पलासकी लाखसे वनता है और देखनेमें चमकदार नारंगी रंगका होता है।

(१) T N. (टी० न)
(२) स्टैण्डर्ड
(३) सुपर फाइन

इनमें से नं० २ और नं० ३ का माल प्रायः T. N. से ऊची श्रेणीका होता है।

इनके अतिरिक्त कितनी ही कम्पनियोंका माल उनके विशेष मार्कोंके अनुसार भी बाजारमें विशेष श्रेणीका माना जा कर चालू है।

लाख और चपड़ेकी उपयोगिता

लाखपर भारतका एकाधिपत्य है। पर वह इसका उपयोग किस प्रकार करता है यह जानकर सभी विवेकशील व्यक्तियोंको महान खेद होगा। भारतमें उत्पन्न होनेवाली रुई, जूट, अभ्रक, चाय, राल आदिका जैसा उपयोग भारत करता है वह तो सभी जानते हैं पर लाख और चपड़ेके सम्बन्धको जान कर अवश्य ही उसकी कारुणिक अवस्थापर तरस आती है। ये दोनों ही पदार्थ भारतसे कच्चे मालकी भांति विदेश भेजे जाते है और योरोप तथा अमेरिका वाले उसकी उपयोगितासे बहुत बड़ा लाभ उठाते हैं।

बिजलीके सामानमें, सभी प्रकारकी वार्निश तैयार करनेमें, ग्रामोफोनके रेकार्ड बनानेमें, जहां लाखका उपयोग होता है वहां ईट बनाने, मोहर लगाने, बटन बनाने, अभ्रकके पर्त आदि जड़ने,

आदिके काममें भी लाखका प्रयोग होता है । लाखसे लीथोकी स्याही तैयार होती है। नकली रबड़ बनाई जाती है और जूतेका साज तैयार होता है। इसके साथ ही लाखसे लाल रंग भी तैयार होता है जिसे लाखका रंग कहते हैं।

लाखका रंग

लाखके रंगके सम्बन्धमें लोगोंका अनुमान है कि भारतमें तो इसके रंगका व्यवहार बहुत पुराने समयसे था ही पर योरोपमें लाखका प्रवेश लाखके * रंगके कारण ही हुआ था। टामलिन्सन्स साइक्लोपीडिया (Tomlinsons Cyclopædia) के आधारपर डा० वाल्करने लिखा है कि लाखके कीड़ोंका रंग योरोप वाले भी पहिले व्यवहारमें लाते थे। यूनान और रोमके निवासियोंका क्रिमसन नामक लाल रंग और ब्रूसेल्स तथा फ्लीमिसका पक्का लाल रंग भी लाखका ही रंग होता था पर इस सम्बन्धमें सर जार्ज बर्डवुडका मत उपरोक्त डाक्टरके मतसे भिन्न है वे इसे लाखके कीड़ोंके स्थानमें इसी प्रकारके दूसरे कीड़ों (Kirmig) का रंग बताते हैं। फिर भी यह निश्चय है कि योरोपमें लाखने यदि प्रवेश किया तो अपने लाल रंगके ही कारण। योरोप वाले कोचीनियलसे लाल रंग तैयार करते थे पर जब यह पदार्थ मैक्सिकोसे आना बंद हो गया तो उन्होंने लाखसे लाल रंग तैयार करनेकी युक्ति निकाली और इस प्रकार लाखके रंगका व्यवहार योरोपमें आरम्भ हुआ। योरोप वाले इस रंगसे सैनिकोंकी पोषाक रंगते थे। पर कोलतारके रंगका प्रचार बढ़ते ही लाखके रंगको भारी धक्का लगा और थोड़ी ही अवधिमें लाखके रंगका व्यवहार सदाके लिये बंद हो गया। कोलतारके रंग (Aniline dyes) के समान सस्ता और कोई रंग नहीं होता अतः लाख और कोचीनियल दोनों ही प्रकारके रंगका व्यवसाय सदाके लिये रुक गया।

भारतमें पुराने समयसे लाखके रंगका व्यवहार होता आया है। पर वर्तमान युगमें लाखके रंगका वह पूर्वकालीन व्यापक प्रसार भारतमें भी नहीं रह सका। हां यहां लाखके रंगसे † महावर तैयार किया जाता है जिससे हिन्दू ललनाये अपने पैरोंकी लाल लाल सुकोमल एड़ियोंको लाल करती हैं। महावर बनानेकी सहज विधि यह है कि लाखको पानीमें घोल दिया जाता है और फिर इसके रंगीन पानीमें रूई भिगो दी जाती है जो फिर सुखा ली जाती है। इसी सूखी हुई रंगीन रूईको महावर कहते हैं

भारतमें लाखका व्यवसाय

भारतमें अत्यन्त प्राचीन समयसे लाखका व्यवसाय होता चला आरहा है पर इसका

---

* भारतसे लाख, लाल समुद्र तटवर्ती अफ्रीकन बन्दर अदूलो (*Aduli*) जाती थी और वहांसे अरब व्यापारी उसे योरोप भेजते थे जहां यह अरेबियन या इथोपियन रोजन रालके नामसे बिकती थी।

† देखिये *Materia Medica of Hindus by Dr U. C. Dutt, Page, 279*

लिखित ऐतिहासिक प्रमाण सबसे प्रथम सन् १७८१ ई० का मिलता है। उस समय डा० केयरने लिखा * था कि बंगालमें गंगाके दोनों किनारों परके जंगलोंमें लाख होती है। जो ढाकाके बाजारमें बिकती है उस समय १२ शि० में १ हण्डरवेट लाख बिकती थी। ढाकाके बाजारमें आसामकी लाख भी आती थी। सन १८७६ ई० में रांचीके पास दोरन्दा छावनीमें रांची लैक कम्पनी † नामक एक कारखाना था जहां चपड़ा और लाखका रंग बनाया जाता था। इस कारखानेमें लोहारडांगा रामपुर तथा सम्भलपुर जिलोंसे लाख आती थी। इस कारखानेमें कुसुमकी लाखका चपड़ा और पलासकी लाखका रंग तैयार होता था। इसी प्रकार ‡ बीरभूमि जिलेके इलमबाजारमें, दुमका तहसीलके केसरी तालुकेमें, नदिया तालुकेके कैनजोर गांवमे, और आजी तालुके के आशमहानो स्थानमें भी लाखका अच्छा व्यवसाय होता था।

भारतके लाखका निर्यात

योंतो भारतसे विदेशमे लाख अत्यन्त पुराने समयसे जाही रही है पर आधुनिक ऐतिहासिक प्रमाण पद्धतिके अनुसार पुराने समयके निर्यात् अंक उपलब्ध नहीं है अतः जबसे ऐसे प्रमाण मिलना सुसाध्य होता है तभीसे हम इसके निर्यातकी चर्चा करते है।

लाखकी उपयोगिताका रहस्य ज्यों ज्यों योरोपवालों पर प्रकट हुआ त्यों त्यों उन लोगोंने इस ओर देना आरम्भ किया। यही कारण है कि बंगालके कासिमबाजार नामक स्थानमें रहनेवाले मि० ब्राउन नामक एक § योरोपियनने सन् १७९२ ई० मे लाखके निर्यातके सम्बन्धमें लिखा था कि यदि बोर्डकी इच्छा हो तो कुछ लाख योरोप भेजी जाय। लाख कलकत्तेमें मिल सकती है। इसके बाद योरोपमें कोचीनियलका भाव चढ़जानेके कारण सन् १८१३ ई० से भारतसे योरोप लाख जाना ‖ सम्भव हुई सन् १८२० ई०में २ लाख रुपयेकी लाख योरोपमें गयी थी और सन् १८२४-२५ मे यह तादाद ७ लाखकी हो गयी। पर कोलतारके रंगका प्रचार होते ही भारतकी लाखकी माग योरपमे कम हो गयी। फिर भी इसके दाल्दार गुणके कारण चपड़ेका निर्यात बहुत शीघ्रतासे बढ़नेलगा और आज वह बहुत अधिक परिमाणमें भारतसे विदेश जाता है।

पहिले भारतसे लाख ब्रूटेन जाती थी और वहासे योरोपके अन्य स्थानोंको भेजी जाती थी पर स्वैज नहरके खुल जानेसे भी भारतसे ही सीधी अन्य देशोंको अब जानेलगी।

---

* देखिये *The Agricultural Ledger, 1901—no. 9 Page 217*
† देखिये *The statistical Reporter Vol II, nov. 1876 Page 406—7*
‡ *The Indian Forester Vol. VII 1882 Page 274-70*
§ देखिये *Oriental repository Vol II Page 580*
‖ देखिये *Review of the external commerce of Bengal by H H H Wilson*

आजकल भारतमें लाखके व्यवसायका प्रधान केन्द्र कलकत्ता माना जाता है। बर्मा और मद्राससे जैसे लाख कलकत्ता आती है वैसे मध्य प्रदेश और आसामसे भी लाख कलकत्ते ही आती है।

भारतमें लाखके केन्द्र

भारतके सभी भूभागोंमें लाख उत्पन्न होती है पर प्रधानतया नीचे लिखे केन्द्रोंमें बहुत अधिक परिमाणमें पायी जाती है।

मिर्जापुर (यू० पी०), बलरामपुर और झालदा (मानभूमि जि०) पकौड़ कोटल पोखर (सन्थाल प्रगना) दूलियन, प्रतापगंज (मुर्शिदाबाद जि०) इमामगंज (गया जि०) उमरिया (रीवां राज्य) कोटा (बिलासपुर) गोंदिया (सी० पी०) डाल्टन गंज (पलामू जि०)

योंतो पलास, कुसुम, बबूल, बेर, और गोंद पर लाख अधिक लगती है पर बंगालमें बेर पर, आसाममें अरहर और पीपलपर, बर्मामें पीपल और पलासपर, बिहार-उड़ीसामें पलास और कुसुमपर, संयुक्त प्रान्तमे पलास पर, मध्य प्रदेशमें पलासपर, मध्य भारतमें पलास और कुसुम पर, पजाबमें बेरपर सिन्धमें बबूल पर ही अधिक होती है।

ऊपर लिखे गये केन्द्रोंमें और उनके आसपास लाख बहुत अधिक होती है और उन्हीं केन्द्रों में संग्रह कर वहींके चपड़े के कारखानोंमें गलाई जाती है तथा वहीं चपड़ा भी बनता है। यही चपड़ा कलकत्ता, रंगून, कारांची, बम्बई और मद्रासके बन्दरोंसे संयुक्तराज्य अमेरिका, बृटेन, जर्मनी, फ्रान्स तथा अन्य देशोंको भेजा जाता है। भारतसे यह माल स्टिकलैक, बड़ा दाना लाख, लाख और चपड़ा, और बटन चपड़ाके रूपमें विदेश जाता है।

स्मरण रहे उपरोक्त केन्द्रोंके व्यापारी लाख खरीदकर चपड़ा तैयार कराते हैं पर इनमेंसे अधिकांश व्यापारी स्वयं शिपर नहीं होते जो चपड़ा विदेश भेजते हों। फिर भी दो व्यापारी ऐसे भी हैं जो लाख खरीदकर अपने कारखानोंमें चपड़ा तैयार करते हैं और स्वयं चपड़ा भी विदेश भेजते है। इनके नाम ये है:—

१ मेसर्स ऐनजिलो ब्रदर्स—काशीपुर चौबीसपरगना

२ ,, जे० जी० गाल्सटाउन—कलकत्ता।

थोड़ी लाखका व्यापार

जहां कमसे कम परिमाणमें लाख होती है वहां उसकी वार्निश बनाई जा सकती है और वार्निशका व्यापार लाभके साथ चलाया जासकता है। वार्निश इस प्रकार बनती है।

(१) मैथीलेटेड स्पिरिट १० औन्स (२५ तो ०), सफेदराल (Rosin) १ औं० (२½ तो०), पक्की लाख १ औंस, ड्रैगून ब्लड (अदरंग या हिरदुखी) ½ औं० (४ मासा)।

(२) पक्की लाख ३ औंस (७½ तो०), मैथीलेटेड स्पिरिट—२० औं० (५० तो०) और थोडा पकाया हुआ अलसीका तेल।

लाखका आयात

भारतमें विदेशसे भी लाख आती है। यह प्रायः श्याम और इण्डोचाइनासे स्टिकलैकके रूपमें आती है जो चपड़ा तैयार करनेके लिये होती है।

व्यवसायका ढंग

भारतसे प्रायः T. N. मार्केका ही चपड़ा विदेश जाता है। लन्दनमें भारतके चपड़ेके नमूनेको स्टैण्डर्डका स्वरूप दिया जाता है और T. N. के आधारपर मालकी सूचना दी जाती है। न्यूयार्कमें लन्दनके आधारपर N. Y. T. N. का मार्का बनता है जिसमें T. N. का ३ प्रतिशत करदा काटकर N. Y. जोड़ा जाता है। लाखमें मिलावटकी रोक जोरोंसे हो रही है। बृटेनका कन्ट्राक्ट C. I. F. पर और अमेरिकाका C. F. पर होता है। चपडा संदूक या दोहरे बोरोंमें भरकर २ मन या १½ हंडरवेट वजनसे भरा जाता है। बाजारमें मनका वजन चलता है। बृटेनको हण्डरवेटके हिसाबसे और अमेरिकाको रतलपर चपड़ा भेजा जाता है।

कोयला

संसारकी अन्तर्राष्ट्रीय रीति नीतिमें आश्चर्यजनक उथलपुथल करनेकी यदि किसी पदार्थमें शक्ति है तो वह कोयला और लोहेमें ही। इन दो पदार्थोंके समान आजके युगमें कोई अन्य पदार्थ ऐसा उपयोगी नहीं माना जाता। यही मुख्य कारण है कि संसारके सभी राष्ट्र कोयला और लोहेके राशि भण्डारको अपने २ हाथमें लेनेकी चिन्तामें सदा चूर रहते हैं। इन्हीं दो पदार्थोंकी उपजको लेकर अमेरिका और बृटेनकी पारस्परिक मुठभेड़की आशंकाका जन्म हो चुका है। अस्तु यह दोनों ही पदार्थ अपना विशेष स्थान अवश्य रखते हैं और इसीलिये हम भारतके सम्बन्धको लेकर कोयलेके विषयमें कुछ लिख रहे हैं।

इतिहास

पत्थरके कोयलेके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि मानव-समाजने कबसे इसकी उपयोगिताका अनुभव कर इसे काममें लाना आरम्भ किया। फिर भी इतना तो अवश्य ही अनुमान किया जा सकता है कि जब संसारमें पत्थरका कोयला इतने प्रचुर परिमाणमें मिलता है तो अवश्य ही मानवीय पौरुषने कोयलेपर प्राचीन समयमें ही विजय प्राप्त की होगी और उसी कालसे इसका व्यवहार करना आरम्भ कर दिया होगा। जिस समयसे मानव समाजमे धातुका व्यवहार चला उसी समयसे पत्थरके कोयलेका उपयोगमें आना माना जा सकता है। यह समय अनुमानतया मसीह सन् से १ हजारसे ८ हजार वर्ष पूर्व तकका हो सकता है। सबसे प्रथम सन् ईस्वीसे * ३०० वर्ष पूर्व यूनानके थियोफ्रेटस (Theophratus) नामके एक व्यक्तिने पत्थरके कोयलेको काममे लाना आरम्भ किया था। इसके बाद दूसरा ऐतिहासिक प्रमाण रोमन वैभव कालीन युगका मिलता है। जिस समय रोमन लोगोंने बृटेनपर आक्रमण किया था उस समय बृटेनमें कोयला भी खानसे निकाला जाता था। पर कोयलेके उपयोगका प्रमाण सन् ८५२ ई० के पूर्वका नहीं मिलता। कोयलेका प्रसार ३ सौ वर्षतक साधारण रीतिसे होता रहा। इसके बाद ही कुछ उन्नति हुई और कार्यारम्भ हुआ।

* देखिये *Coal Industry by A. T. Shuklick of Ohio*

सबसे प्रथम बृटेनमें ही पत्थरके कोयलेका काम आरम्भ किया गया। सन् १२३९ ई० में प्रथमवार खानसे कोयला निकालनेका लैसेन्स बृटेनमें ही लिया गया। उस समय बृटेनवाले पत्थरके कोयलेको समुद्रका कोयला (Sea Coal) कहते थे। कुछ समय बाद ही खानोंसे कोयला निकालनेका काम आरम्भ कर दिया गया और काम जोरोंसे चल पड़ा। इस कोयलेके जलानेसे दुर्गन्ध और धुआं बहुत पैदा होता था इससे सन् १३०६ ई०में इसका जलाना लन्दनमें निषेध करार दिया गया। फल यह हुआ कि बृटेनके सम्राटकी आज्ञानुसार खानसे कोयला निकालना भी कानूनके विरुद्ध करार दिया गया। कुछ समय बाद ही यह आज्ञा उठा ली गयी और सन् १३२५ ई० में बृटेनने प्रथम बार निर्यात्‌के रूपमें अपना कोयला फ्रांस भेजा। फिर क्या था कोयलेका निर्यात् आरम्भ होते देर थी कि कोयलेकी माग बढ़ी और फल यह हुआ कि कुछ ही समयमें यह व्यापार बृटेनके प्रधान व्यापारमें माना जाने लगा। बृटेनसे कोयला बाहर जाता और उसके विनिमयमें विदेशसे अनाज बृटेन आता था। इसी बीच इग्लैंडका न्यूकैसल नामक बंदर पत्थरके कोयलेके निर्यात्‌का प्रधान बंदर बन गया और इसी बन्दरसे फ्रांस, जर्मनी, हालैंड, आदिको कोयला भेजा जाने लगा। इसके साथ ही इग्लैण्डमें कितनेही कोयलेके केन्द्र स्थापित होगये। उधर १३ वीं शताब्दीमें जर्मनीमें कोयलेका काम आरम्भ हुआ और इसी शताब्दीमें फ्रांसमें भी यह काम आरम्भ किया गया और साथ ही १६ वीं शताब्दीमें पेरिसके व्यापारियोंने भी कोयलेकी ओर ध्यान दिया इस प्रकार योरोपमें पत्थरके कोयलेके व्यापारने अच्छी उन्नति की और फलतः सभी योरोपीय इस व्यापारकी ओर अधिक अनुराग दिखाने लगे। भारतमे रहनेवाले योरोपियन समुदायने भी भारतमें कोयलेकी खानें खोज निकालनेका भारी यत्न किया और उन्हींके उद्योगका यह फल है कि भारतमे कोयलेके व्यापारको इतनी सफलता मिली।

भारतमें कोयलेके व्यापारका सूत्रपात

इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं कि भारतवासी पुराने समयसे पत्थरके कोयलेसे परिचित थे पर न तो वे उसे काममें ही लाते थे और न पत्थरका कोयला भारतमें खानसे ही निकाला जाता था। अतः भारतमें कोयला व्यापारकी वस्तु भी नहीं माना जाता था। भारतमें कोयलेका उद्योग आरम्भ करनेवाले योरोपियन ही हैं और इन्हींकी आवश्यकतानुसार कोयलेका उद्योग आरम्भ भी हुआ है।

भारतमें रहने वाले योरोपियन समाजकी आँखें भारतमें कोयलेकी खान खोज निकालनेके लिये इधर उधर तेजीसे घूम रहीं थीं कि वारेन हेस्टिङ्गके समयमे ईस्ट इण्डिया कम्पनीके दो कर्मचारियों ने कोयलेकी खान खोज निकालनेकी आज्ञा मागी और फल यह हुआ कि सन् १७७४ ई० में उन्हें इच्छित आज्ञा पत्र अर्थात् लैसेन्स भी मिल गया। ये दोनोंही अपने काममे जुट पड़े और कुछही समय

बाद इनमेंसे मि० एस०जी० हीटलीने बंगाल प्रान्तर्गत वीरभूमि जिलेमें कोयलेकी खान खोज निकाली। अब व्यवस्थित रूपसे कोयला निकालनेका काम इन्हीं दोनों हिस्सेदारों अर्थात् मि० एस०जी हीटली और मि०जान समरने आरम्भ कर दिया। पर लार्ड कार्नवालिसकी सरकार इस उद्योगकी ओरसे उदासीन ही रही अतः इन्हें इच्छित* सफलता भी प्राप्त न हो सकी। सन् १७७७ ई०के एक ऐतिहासिक प्रमाणके आधार पर पता चलता है कि मि० फारग्यूहर और मोथेने उक्त सन् में तोप ढालने और गोला बारुद बनानेके लिये सरकारसे आज्ञा मांगी थी जिसके सम्बन्धमें उन्होंने अपने प्रार्थना पत्रमें लिखा था कि झरिया जिलेके इस स्थानके पास वाले भूखण्डमें मेसर्स समर एण्ड हीटलीकी कोयलेकी खाने है और पास ही लोहेकी खानोंसे लोहा भी निकलता है। उपरोक्त प्रमाणसे यही सिद्ध होता है कि उक्त कम्पनीकी कोयलेकी खाने झरिया जिलेमें थी जहा उनके पास ही लोहेकी खाने भी थीं। इस प्रकार दोनों ही प्रति सहायक पदार्थोंकी उन्नति साधारणतया एक साथ ही आरम्भ हुई।

एक ओर कोयलेका उद्योग उन्नतिकी ओर धीरे धीरे बढ़ ही रहा था कि दूसरी ओर ईस्ट इण्डिया कम्पनीके डायरेक्टरोंने सैनिक सामग्रीकी ढलाईके कामके लिये भारतीय कोयलेकी जांच करानेका काम आरम्भ किया उस समय यहाके गवर्नर जनरल अर्ल आफ मिन्टो थे। आपने भारतके पत्थरके कोयलेकी जाच करायी। पर विधि विहित ढंगसे परीक्षा न हो सकी और यह प्रश्न ज्योंका त्योंहीं पड़ा रहगया। सन् १८१४ ई० में गवर्नर जेनरल मार्कुइस आफ वेलस्लीके सम्मुख भी भारतके पत्थरके कोयलेका प्रश्न पुनः उठ खड़ा हुआ। आपने समुचित व्यवस्था कर यहाकी खानोंके कोयलेकी परीक्षा करायी।

यहाके गवर्नर जेनरल अर्ल आफ मिन्टो तो भारतके कोयलेकी परीक्षा करा कर चुप हो बैठ गये थे पर कलकत्तेके कोयलेके व्यापारी निराश हो इस व्यापारसे उदासीन नही हुए। वरन वे अपने पूर्ववत् उत्साहसे कोयलेके व्यापारमें लगे ही रहे। कोयलेकी खानोंसे कोयला नावों पर लाद कर दामोदर नदीके जलमार्गसे बराबर कलकत्ते आता रहा और इतना ही नहीं दिन प्रतिदिन यह व्यापार जोर पकड़ता गया फलतः तत्कालीन गवर्नर जेनरल मार्कुइस आफ वेलस्लीको वाध्य हो कर भारतके कोयलेकी पुनः परीक्षा करानी पड़ी। विद्वान विशेषज्ञ मि०रुपर्ट जोन्सने सन् १८१५ई०में अपनी परीक्षा की † रिपोर्ट प्रकाशित कर भारतके कोयलेके पक्षमें अपनी अनुकूल सम्मति प्रकट की। सरकारने भी आपकी परीक्षा सम्बन्धी रिपोर्टका समुचित सत्कार किया और आपको खानोंसे कोयला निकालनेके लिये ४ हजार पौंडकी पूजी भी दी। सरकारी खानोंसे कोयला निकालनेका काम मि० रुपर्ट जोन्स भली भाँति चला न सके और अन्तमे सन् १८२० ई० मे आप पूर्ण रुपसे निराश हो

* देखिये *Journal of the Asiatic Society of Bengal* 1842 Vol XI Page 811-33

† देखिये *Asiatic researches* 1833 Vol XVIII Page 163-70

बैठ गये। फिर भी कलकत्तेके व्यापारी पूर्ववत् अपने कार्यमें बराबर डटे रहे। उसी वर्ष उन्होंने कोयला निकालनेके व्यवहारिक क्षेत्रमें साहसके साथ प्रवेश किया और फलतः रानीगंजके कोयला क्षेत्रमें कार्यारम्भ किया गया। सन १८३६ ई० इसी खानसे ३६ हजार टन कोयला निकाला गया. सन् १८५४ ई० में ईस्ट इण्डियन रेलवे कम्पनीने अपनी रेलवे लाइन भी इसी कोयला क्षेत्रसे निकाल कर इस खानके समीप ही रेलवे स्टेशन भी बना दिया। इससे खान खोद कर कोयला निकालनेके कामको बहुत बड़ा प्रोत्साहन मिला। इसके बाद ही कलकत्तेमें जूट मिलोंकी स्थापना होने लगी अतः भारतीय कोयलेकी खानोंका भाग्य ही पलट गया और सन १८५७-५८ ई० के बादसे इस कार्यने जोरोंसे उन्नति करना आरम्भ कर दी जो नीचे के * अंकोसे स्पष्ट है।

सन् १८५८ ई में २,९३,४४३ टन	सन् १८९८ ई० में ४६,०८,१९६ टन
„ १८६८ „ ४,५६,४०३ टन	„ १९०८ ई०में ९७,८३,२५० टन
„ १८७८ „ ९,२५,४९४ टन	इसमें ८८ प्रतिशत कोयला बंगालकी खानोंका है

इसी प्रकार खानोंकी संख्यामें भी वृद्धि हुई है जो नीचेके अंकोंसे स्पष्ट है।

सन् १८८५ ई० में कोयले की कुल खाने ९५ थीं जिन में से ९० बंगाल में थीं।
„ १९०० ई० में „ „ „ „ २८६ „ „ „ „ २७१ „ „ „
„ १९०६ ई० में „ „ „ „ ३०७ „ „ „ „ २७४ „ „ „

उपरोक्त ऐतिहासिक विवेचनसे स्पष्ट हो जाता है कि संसारमें पत्थरके कोयलेसे मानव समाज परिचित अवश्य था पर सबसे प्रथम पत्थरके कोयलेकी खानोंका उद्योग बृटेनसे आरम्भ हुआ था और धीरे धीरे भारतमें इस उद्योगने अपनी जड़ जमा ली। आज भारतमें कोयलेका काम जोरोंसे हो रहा है।

जहा कुछ जानकारोंका मत है कि कोयलेका उद्योग धन्धा सर्व प्रथम योरोपमें आरम्भ हुआ था वहा कितने ही लोगोंका मत है कि योरोपवालोंकी अपेक्षा † चीन वाले शताब्दियों पूर्व ही कोयले और गैसके व्यवहारसे परिचित थे।

पत्थरके कोयलेकी खोज तो बहुत पुराने समयमे हुई थी परन्तु उद्योग धन्धोंमें इसकी व्यवहारिक उपयोगितासे लाभ उठानेका काम बहुत पीछेसे आरम्भ हुआ था। और आज तो संसारमें कोयले और लोहेको ही प्रधान अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त है सभी राष्ट्र अपनी आत्मरक्षाके लिये इन्हीं दोनों पर निर्भर करते हैं।

---

* देखिये *Moral and Material progress of India 1905 6 Page 6 114*

† *"The Chinese ...... used Coal and Gas heating centuries before these things were used in Europe" H G, Wells* (देखिये *Out line of History by H G Wells Vol. I page, 635*)

पत्थरके कोयलेकी उत्पत्ति

कोयलेकी खानोंका जन्म दलदली भूप्रदेशके सघन जंगलोंके आकस्मिक भूगर्भमें धंस जाने से ही होता है अतः वृक्षोंके प्रधान वानस्पतिक तत्त्वोंका किसी न किसी रूप तथा किसी न किसी अंशमे कोयलेमें निहत रहना अनिवार्य है। रासायनिक परिवर्तन ही एक ऐसा प्रधान अवलम्ब है कि जिसे ले वानस्पतिक जगत फलता फूलता है। यह रसायनिक परिवर्तन प्रधान रूपसे सूर्य्यके प्रकाशमें वृक्षोंकी जड़ों द्वारा पहुंचने वाले नमकीन द्रव्यों,चतुर्दिक प्रसरे हुए वातावरणमें सम्मिश्रित कार्वन डाइअक्साइड (Corbon dioxide) और जलांशके संयोगसे ही हुआ करता है। इसी परिवर्तन कालमें वृक्ष शक्कर और स्टार्च जैसे पदार्थोंकी उत्पत्ति करते * है। और अन्तमें उनका परिवर्तित स्वरूप सेलीलूज और लिग्नों सेलीलूज बन जाता है। जिस क्रमसे यह परिवर्तन होता है उसकी कुछ रूप रेखा इस प्रकार है।

भूकम्पनका होना, वृक्षोंका गिरना और दलदली भूमिमें उनका धंस जाना, ऊपरसे पानी का जाना, पानीमे प्रकट एवं अप्रकट रूपसे तैरनेवाली बालुकाका पानीकी पेंदीपर बैठना और बालूके ढेरकी रचना उन्हींपर करना इस प्रकार दबे हुए वृक्ष-समूहको जल मिश्रित उत्तप्त भूगर्भमें सदाके लिये समाधिस्त कर देना। समाधियोंपर मिट्टीका जमा होना, नवीन वृक्षोंका उन्हींपर अंकुरित हो उठना, उनका फूलना फलना और फिर भूकम्पनकी ध्वनिके साथ ही पुनः भूगर्भमें समा जाना। उसपर मिट्टीके ढेरकी पुनः रचनाका होना और पुनः नवीन वनराशिकी उत्पत्तिका क्रमारम्भ होना। फलतः दलदली भूभागमें पायी जानेवाली मेथेन गैस (Methane) और कार्बन डाईअक्साइड नामक गैस जोरोंसे अपना अपना कार्य करनेमें जुट पड़ती हैं। साथ ही भूगर्भकी उत्तप्त अवस्था और चतुर्दिक दबाव आदि स्वाभाविक शक्तियां सब मिल सामुहिक रूपसे उस भूगर्भमें दबी हुई बनराशि पर शीघ्रतासे अचूक रासायनिक कार्य करके उसके स्वरूपको परिवर्तित कर उसके बाह्य आकार प्रकारको कुछका कुछ कर देते हैं। फलतः इसके वानस्पतिक मूल तत्त्वोंमें भी परिवर्त्तन होकर प्रथम तो लकड़ीसे सेल्यूलूस (Cellulose) के रूपमें और पश्चात् क्रमानुसार पत्थरके कोयलेके रूपमें वह बनराशि प्रकट होती है।

---

* भूगर्भमें वृक्षराशिके दब जानेसे किस क्रमके अनुसार रसायनिक परिवर्तन होता है वह जानकारोंके लिये हम नीचे दे रहे हैं।

लकड़ीका मूलस्वरूप—*Wood* = 49 0G | 6 0H | 45·00|

Wood tissue = 49 66c | 5· 74H | 44 60 O

क्रमशः परिवर्तित स्वरूप—*Ligno Cellulose* = $C_{12}H_{18}O_9$ = 47 05C | 5 88H | 47 05O |

Cellulose = $C_6H_{10}O_5$ = 44·40C | 6 20H | 49 40O

भारतमें पत्थरके कोयलेके केन्द्र

भारतमें निकलनेवाले पत्थरके कोयलेका ६७ ½ प्रतिशत भाग ऐसी पद्धतिकी खानोंसे निकलता है कि जिनके कोयलेको गोंडवाना सिस्टम (Gondwana System) का कोयला कहते है। भारतके प्रधान कोयला क्षेत्रोंमें रानीगंज और झरिया ही दो ख्याति प्राप्त क्षेत्र हैं। भारतकी खानोंसे निकलनेवाले: पत्थरके कोयलेका ८३ प्रतिशत माल इन्हीं दो क्षेत्रोंसे निकलता है। इनमेंसे रानीगंज तो वर्दवान जिलेमें है जहांकी खानोंमे सबसे प्रथम निकालनेका काम सन् १८२० ई०में आरम्भ हुआ था। दूसरा झरियाका कोयला क्षेत्र है जो वर्तमानमें विहार उड़ीसा प्रदेशमें है। यहाकी खानोंमे कोयला निकालनेका कार्य सन् १८९३ ई० में आरम्भ हुआ था। इन दो प्रधान कोयला क्षेत्रोंके अतिरिक्त हैदराबाद राज्यके सिंगरेनी स्थानमें भी कोयलेकी बड़ी खान है जहा कोयला निकालनेका कार्यारम्भ सन् १८८७ ई० में हुआ था। भारतमें कोयलेके यही तीन बड़े क्षेत्र है। इनके अतिरिक्त वर्धा, और पेंचकी घाटी सी॰ पीमे, उमरिया रीवां राज्यमें; माकुम आसाममें और झेलम जिला पंजाबमे भी कोयलेकी खाने है जहा कोयला निकाला जाता है। इनका स्पष्ट स्वरूप इस प्रकार है:—

वृटिश भारत आसाम, बंगाल, विहार उड़ीसा, पंजाव, बलूचिस्तान, मध्य प्रदेश आदिमें ही कोयलेकी खाने है।

देशी राज्य—हैदराबाद, बीकानेर और रीवांमें कोयलेकी खाने है।

भारतकी कोयलेकी खानें और उनका भविष्य

हम अन्यत्र दे चुके हैं कि भारतमें कोयलेकी खानोंका उद्योग क्यों और कैसे आरम्भ हुआ और साथ ही कैसे २ इस क्षेत्रमें उन्नति हुई और कोयलेकी खानोंकी संख्यामें वृद्धि हुई। भारतके कोयलेके व्यवसायके सम्बन्धमे लार्ड * कर्जनने जो विचार झरियाकी कोयलेकी खानोंको देख कर कहा था वह अवश्य ही ध्यानमें रखने योग्य है। आपने कहा था कि सिंघापुर और स्वेज नहरके बीचका ही एक मात्र ऐसा क्षेत्र है कि जहां भारतके पत्थरके कोयलेकी मांग बहुत अधिक बढ़ सकती है। और आपने आशा की थी इस विस्तृत क्षेत्रपर भारतका कोयला अवश्य ही अपना अधिकार जमाने के लिये शिरतोड़ प्रयत्न करेगा।

---

* *Indian Coal can hardly be expected to get beyond Suez on the west or Singapore on the east At those points you come up against English Coal on the one side and Japanese Coal on the other But I wish to point out that there is a pretty extensive Market between, and I think that Indian Coal should make a most determined effort to capture it*

Lord Courzon

22nd January 1903

भारतमें खानोंकी खोदाईका कार्य सन्तोषप्रद नहीं कहा जा सकता। यहांकी खानोंमें काम करनेवाले श्रमजीवी प्रायः किसान होते हैं जो बेकारीके समयमें खानोंपर काम करने आते हैं। ये लोग काम करनेकी इच्छासे खानोंमें नहीं आते वरन् आवश्यकता और परिस्थितिसे बाध्य होकर वहां आते हैं ऐसी दशामें माल यथेच्छ परिमाणमें नहीं निकलता। यहांकी खानोंमें प्रायः सभी यांत्रिक व्यवस्था कर दी गयी हैं पर कोयलेका भाव कमजोर रहनेके कारण इस उद्योगमें विशेष रूपसे लाभ नहीं होता। इसकी अवस्था सुधारनेके लिये आवश्यक तो यह है कि भारतके घरेलू उद्योग धन्धोंको प्रोत्साहन दिया जाय। इससे कम कीमतके भारतीय कोयलेकी खपत अधिक होने लगेगी और कोयलेकी अधिक खपतके कारण खानवालोंको भी अच्छा लाभ रहेगा साथ ही कारखानेवालोंको भी कम कीमती कोयलेसे अच्छी सुविधा मिलेगी। इस प्रकारकी व्यवस्थासे विदेशके मंहगे कोयलेका आना भी रुक जायगा।

कोयलेकी प्रधान खानें

भारतकी प्रधान खानोंमें रानीगंज और झरिया ही की खाने मानी जाती है। रानीगंज कलकत्तेसे लगभग १४० मील दूर है। इन खानोंसे कोयला रेलवे और स्टीमरोंके द्वारा कलकत्ते आता है। रानीगंजसे ४० मील दूर झरियाका कोयला क्षेत्र है इन दोके बाद गिरिडिहकी खानका स्थान माना जाता है। इन तीनों ही खानोंका कोयला परिमाणमें एकसे एक बढ़कर निकलता है। यह भारतकी कोयलेकी कुल उपजका ६७ प्रतिशत माना जाता है। इस औद्योगिक कार्यसे २ लाखके लगभग श्रमजीवी पलते हैं। फिर भी अभी श्रमजीवियोंकी मांग कम नहीं हुई। क्योंकि कभी कभी आदमियोंकी कमीके कारण माल भी कम निकलता है। इन खानोंमें सभी प्रकारका काम करनेके लिये आधुनिक यंत्र सामग्रीकी सुविधा की गयी है। विद्युत शक्ति संचालनकारी केन्द्रोंकी स्थापना भी की गयी है। तथा कोयलेसे दूसरे प्रकारके उपयोगी पदार्थ तैयार करनेकी व्यवस्था भी की गयी है।

कोयलेका निर्यात्

प्रायः भारतीय व्यापारियोंका कोयला विदेशके लिए कलकत्तेसे ही रवाना होता है भारतके कोयलेके प्रधान खरीददारोंमें सीलोन और स्ट्रेट सेटलमेन्ट ही अधिक ख्याति प्राप्त हैं। इनके बाद सुमात्रा और सबाङ्गका स्थान माना जाता है ये दोनों ही जहाजी बन्दरोंमें सुदूर पूर्वकी यात्रा करनेवाले जहाजसे कोयला लेते हैं।

यद्यपि आधिकाश कोयला कलकत्तेसे ही विदेश जाता है फिर भी बंकर कोल कोयला कलकत्ता, बाम्बे, करांची, रंगून और मद्रासके बन्दरोंसे भी वाहर जाता है। इस प्रकारके कोयलेकी खपत जलसेनामें ही अधिक होती है।

कोक पत्थरके उस कोयलेको कहते हैं जिससे गैस निकाली जाती है। इस प्रकारका

कोयला भारतमें प्रायः निम्नश्रेणीके कोयलेसे बिहार और उड़ीसाके कोयला क्षेत्रमें तैयार किया जाता है। भारतसे यह कोयला सीलोन और स्ट्रेटसेटलमेन्ट को बहुत थोड़े परिमाणमें जाता है शेष अधिकांशकी खपत मेसोपोटेमियोंमें होती है।

कोयलेका आयात्

विदेशसे आनेवाले कोयलेमें सबसे अधिक कोयला क्रमानुसार बृटेन, नेटाल, पोर्तुगीज पूर्व अफ्रीका, जापान, हालैण्ड और आस्ट्रेलियासे भारत आता है। आश्चर्य है कि कम किरायेके कारण भारतके वाजारमें देशी कोयलेसे प्रतियोगिता करनेमें दूर देशोंका कोयला सफल होता है।

भारतमें कोयलेका व्यवहार

भारतके वाजारोंमें उपलब्ध पत्थरके कोयलेका ३०८ प्रतिशत भाग तो रेलवे कम्पनियाँ व्यवहारमें लाती है और २२५ प्रतिशत छोटे छोटे घरेलू उद्योग और घरेलू काममें व्यवहार होता है। १२.०३ प्रतिशत कोयलेकी खानों और उनसे सम्बन्ध रखनेवाले कामोंमें खर्च किया जाता है। १२ प्रति शत लोहा गलानेकी भट्टियों और पीतल तथा अन्य प्रकारकी धातुके कारखानोंमें खर्च होता है। कपड़ेकी मीलोंमें ५ ६ प्रतिशत तथा जूट मिलोंमें ४·७ प्रतिशत खर्च होता है। भारतमें लगभग २,००,८२,००० टन कोयला (देशी व विदेशी) उपलब्ध रहता है। भारतके कोयलेका ६० प्रतिशत [illegible]की रेलवे कम्पनियों और कारखाने खपाते हैं।

[illegible]यलेकी उपयोगिता

कोयलेके सम्बन्धमें निज मत व्यक्त करतेहुए एक* वैज्ञानिकने कहा था कि कोयला वास्तवमें पदार्थोंकी दृष्टिसे सर्वोपरि ही है। विज्ञानकी उन्नति और कलाकौशल सम्बन्धी सुधार, भाफ और कोयलाके महत्वपूर्ण प्राधान्यकी और वृद्धि करेंगे।

उपरोक्त वाक्य उस समय अर्थात् सन् १८६५ ई०में चाहे मनो जगतकी लम्बी दौड़ही क्यों न माने गये हो पर आज तो हम देखते हैं मानो समाजका कोई भी ऐसा अग नहीं जिसे कोयलेने समुन्नत करनेमें प्रशंसनीय भाग न लिया हो। कोयला प्रकाश, उष्णता, और शक्ति-संचारकी प्रधान शक्ति है। सभी प्रकारके औद्योगिक जीवनका कोयला एक प्रधान आधार है। कोयलेसे गैस तैयार होती है और गैस निकालकर बचेहुए कोयले अर्थात् कोकसे टार और गैस बनती है। कोक कोयलेकी भांति जलता भी है। टारसे जलानेका एक प्रकारका तेल (Fuel oil) और मोटर स्पिरिट बनती है। अतः कोयलेकी काया पलटका परिणाम इससे तैयार किये जानेवाले रङ्गोंमें, गैस निकाले गये कोकमे, और संघातक पदार्थों रचनामें मिलेगा।

* "*Coal in truth stands not beside, but entirely above all other Commodities*........*The progress of Science and the improvement in the arts, will tend to increase the Supermacy of Steam and Coal W S Jevons* देखिये (*The coal Question 1865 by W Stanly Jevons*)

लोहा

—:०:—

दूसरी चीजोंकी तरह भारतमें लोहेका उद्योग की बहुत पुराना है खनिज लोहेको साफकर फौलाद बनानेकी चाल यहां बहुत पुराने समयसे चली आ रही है। हजारो वर्षोंसे अस्त्र शस्त्र यहां बनते रहे हैं।

पर मसीह सन्के १५० वर्ष पूर्वसेही ऐसे प्रमाण मिलने लगते हैं कि जिनके आधारपर बंगाल प्रान्तका लोहा सम्बन्धी विषय स्वतंत्र रूपसे लिखा जा सकता है। इस अवधिके बीचके निर्मित मंदिर जो आज भी अधिकांशमें सुरक्षित अवस्थामें पाये जाते हैं इस बातका प्रचुर प्रमाण देते है कि उस युगमें इस प्रान्तवाले लोहेसे किस प्रकारसे परिचित थे। बिहार उड़ीसा प्रदेशान्तर्गत उदयगिरिका पहाड़ी मंदिर, बुद्ध गयाके मंदिर और अमरावती गुम्मजमें पर्याप्त चिन्ह पाये जाते हैं। इन मंदिरोंमें कितनी ही प्रस्तर प्रतिमायें हैं जो योद्धाओंको तलवार फेरते, कटार, बर्छी, धनुषबांड़ आदि लिये हुए प्रदर्शित करती हैं इन प्रतिमाओंके हाथमें परशु और ढाल भी हैं। इनके आकार प्रकारसे हम उस समयके अस्त्र-शस्त्रोंके आकार प्रकारका अनुमान अनायास ही कर सकते हैं। उस समय अस्त्र-शस्त्र लोहेके बनाये जाते थे। यह मंदिर बंगालमें है अतः इन अस्त्रशस्त्रोंकी आकृति उन्ही अस्त्र शस्त्रोंकी सी है जो उस समय बंगालमें व्यवहार किये जाते थे। अंकुश और रथोंके पहियेकी हालें तो उस समय लोहेकी ही बनती थीं।

इस कालके इतिहासके लिये जहां हमें मंदिरोंमें पाये जानेवाले प्रमाणोंपर निर्भर रहना पड़ता है। वहां मुर्शिदाबादके नवाबके पासकी 'पिशे' बल्लम नामक एक बर्छी भी इसका प्रमाण है जिसके एक ओर विष्णु और दूसरी ओर गरुड़के चित्र अङ्कित है यह फौलादकी बनी हुई है। इसे लोग विक्रमादित्यकी बताते हैं। फल पर बने हुए कामकी रूप रेखा आश्चर्यजनक रीतिसे उड़ीसाके मंदिरोंमें मिलनेवाली कारीगरीसे मिलती है। यह काम बंगालका बना हुआ है। इसके लिये उसे उचित गर्व हो सकता है।

उड़ीसा प्रदेशीय भुवनेश्वर और कनारकके मंदिर ऐसे हैं कि जिनपर प्रशंसनीय चित्रकारी कीगयी है। इनको देखकर बंगालमें पाये जानेवाले लोहेके प्राचीन अस्त्रशस्त्रोंके सम्बन्धमें बहुत कुछ खोजकर अध्ययन किया जा सकता है। उस समयके इन हथियारोंकी तुलनात्मक विवेचना यदि अन्य राष्ट्रोंके हथियारोंके साथ की जाय तो विचित्र समानता दिखाई देगी। इन मंदिरोंमें अंकित चित्रोंमें

कुछ ऐसे भी मिलेंगे कि जिनका आकार प्रकार अधिकांशमें रोमन हथियारोंसे मिलता है। नैपाली और भूटानी कुकुरीके आकारके छोटे खंजर भी मिलेंगे जो सूचित करते हैं कि इस भूभागमें उस समय लोहेके उद्योग धन्धे की कितनी उन्नति हो चुकी थी। कनारकके मंदिरमें इन चित्रोंके अतिरिक्त लोहेके विशाल खम्भे भी मिलेंगे जो आज भी अपने अतीत गौरवकी स्मृति दिला रहे हैं। इस मंदिरकी प्राचीनताके सम्बन्धमें फरग्यूसन साहबका मत है कि इसका निर्माण ९ वीं शताब्दीके अन्तमें हुआ होगा परन्तु स्टरलिङ्गका मत है कि यह सन १२४१ के लगभग बनाथा। इस मंदिरके प्रवेश द्वारके पास ही पत्थरोंके बीच ११६ इंच मोटा और २३ फीट लम्बा एक लोहेका स्थम्भ है, जो सूचित करता है कि उस समयभी हिन्दू लोहेके गुणधर्म और उसकी उपयोगितासे पूर्ण रूपेण परिचित थे। वे लोहेके उद्योगमें सराहनीय उन्नति कर चुके थे। इसी समयकी बनी 'बचउलीतोप' नामक एक विशाल तोप नवाब मुर्शिदावादके इमामबोड़े और महलके बीचवाले मैदानमें रक्खी है। इस प्रकार लोहेके खम्भ और स्थूलकाय तोपें जब ढालकर बनाई जाती थीं तो उस समय हिन्दू लोहा गलाने और उसे मनमानी आकृतिमें ढालनेकी कलासे अपरिचित न थे यह कहना अनावश्यक है। यही क्यों बल्कि पुराणमें लिखा है कि चुम्बक परमाणु प्रधान लोहेके वर्तनोंके व्यवहारसे कई प्रकारके रोग दूर हो जाते हैं।

यवन शासनके आरम्भके साथ ही इस प्रान्तमें बहुतसे नवीन परसंकृति जनित परिवर्तनोंका समावेश भी हो चला और शनैः २ इस उद्योग धन्धेमें भी कई उलट फेर हो गये। मुसलमानोंके साथ जो कारीगर इस प्रान्तमें आये उन्होंने अपने ढंगकी बातोंका प्रसार किया और फलतः यहां आज बङ्गाल की विशेषताको व्यक्त करनेवाला एक भी औजार नहीं है। पटना, मुंगेर, ढाका, मुर्शिदाबाद, बर्दमान आदि स्थानोंमें बननेवाले सभी हथियारों पर फारस, अरब आदिकी पूरी छाप बैठ गयी। क्योंकि हथियारोंके प्रेमी मुसलमान शासक इस ओर विशेष ध्यान देते थे। हथियारोंके कारखानों पर शासकोंकी वैयक्तिक देखरेख रहती थी। स्वयं अकबर सबल शासक होते हुये भी हथियारोंका चतुर कारीगर था, यही कारण था कि योरोप तकके[illegible] कारीगर यवन सम्राटका शस्त्रागार देखनेके लिये आनेको बाध्य किये जाते थे। बङ्गाल प्रान्तमें यवन शासनका आरम्भ सन् १४८० के बादसे होता है और १७ वीं तथा १८ वीं शताब्दीके मध्यकालमें इस प्रान्तके लोहेके औद्योगिक क्षेत्रमें [illegible] परिवर्तन हुए। जहां लोहेकी बन्दूकें बनती थीं वहां भारी तोपें भी ढाली जाने लगीं जैसे [illegible] 'जहानकोश' नामक तोपपर अङ्कित लेखसे विदित होता है।

[illegible] of Europe were induced to come[illegible] the construction [illegible]

[illegible] सन् १६३७ई में बनी थी। वहांके जनार्दन

१८ वीं शताब्दीके बने हथियार आज भी पाये जाते हैं अतःउनके सम्बन्धमें सब बातें स्पष्ट ही हैं। इस समयके हथियारोंका अच्छा संग्रह* महाराज बर्दवानके महलमें है इसी प्रकार मुर्शिदाबादके नवाबके यहां भी कितने ही पुराने हथियार हैं जो पटना,मुंगेर और बर्दमानके कारीगरोंके बनाये हुए हैं। प्रसिद्ध बर्दमानीतेगा भी यहां है। इन स्थानोंके अतिरिक्त बांकुड़ा जिलेके विष्णुपुर नामक स्थानके पास जंगलमें जो १२ ½ फीट लम्बी तोप पड़ी हुई है वह भी बताती है कि विष्णुपुर राज्यका उस समय कितना गौरव था। इसी प्रकार खुलना जिलेके प्रतापनगर नामक स्थानमें भी हथियार बनाये जाते थे। उपरोक्त प्रमाणोंसे स्पष्ट हो जाता है धनुषबाणसे लगाकर बड़ी बड़ी तोपें तक यहां वाले सरलतासे ढाल लेते थे। यह उद्योग इस प्रान्तमें बहुत पुराना है लोग हथियार खम्भे और रोगसे मुक्त होने तकके काम में लोहेके गुणधर्मसे भिज्ञ थे। उसकी उपयोगिताको पहिचानकर उन्होंने उससे भारी लाभ भी उठाया।

लोहेके उद्योगकी वर्तमान अवस्था

प्रान्तमें, लोहेके उद्योगकी गिरी हुई अवस्थाने वर्तमान पाश्चात्य पद्धतिके आधारपर ही अपनी उन्नति स्थापित कर रक्खी है। यहांके देशी लोहार आवश्यकता की पूर्तिके परिमाण भर ही काम बनाते हैं और शेष समय बेकार काटते हैं। जब वह कामपर बैठते हैं तो बहुत थोड़ा काम कर पाते हैं और जो कुछ माल वे तैयार भी करते हैं वह न तो मजबूतीमें कोई विशेषता रखता है और न उसको मनमोहक स्वरूप ही दे पाते हैं। प्रायः देखा जाता है कि उनका माल साधारणतया योरोपके बने हुए मालकी भद्दी नकलके अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। वर्तमानमें यदि इस प्रान्तमें कोई स्वरूप इस धन्धेका है तो आधुनिक पाश्चात्य पद्धतिपर काम करने वाले बड़े कारखाने। जहां पर्याप्त परिमाणमें लोहा गला कर साफ किया जाता है और आवश्यकतानुसार भिन्न २ प्रकारका माल बनाया जाता है। योरोप और अमेरिकाके बड़े बड़े कारखानोंकी दृष्टिसे इस प्रान्तके ये कारखाने बहुत ही छोटे और कम संख्यामें है परन्तु जितने अल्पकालमें इन्होंने उन्नति कर अपनी उपयोगिता सिद्ध की है उसे देखते हुए भावी समुन्नत युगका आशामय स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

यहांके कारखानोंके बने हुए मालकी उत्तमताके सम्बन्धमें इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भारत सरकार भारतके जिन नौ प्रामाणिक कारखानोंसे माल खरीदती है उनमेंसे सात तो केवल इसी प्रान्तमें हैं इस प्रान्तके प्रधान लोहेके कारखानोंमेंसे कुछके नाम ये हैं:—

कर्मकार' नामक कारीगरने बनाया था। इसकी लम्बाई १० फीट है और वजन २१२ मन है। यह १८ सेर बारूदसे दागी जाती है।

* यहां बर्दवानसे ८ मील दूर कमरपारा नामक गांवके बने हुए ख्याति प्राप्त इतिहास प्रसिद्ध हथियार भी हैं। जैसे अङ्गरेजोंके विरुद्ध महाराजा त्रिलोकचन्द्र बहादुर द्वारा उठाये गये हथियार भी हैं।

टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्स—टाटानगर (इसका विस्तृत परिचय बिहार-उड़ीसा प्रान्तमें देखें)

१ बंगाल आइर्न एण्ड स्टील कम्पनीज वर्क्स—बाराकार
२ मेसर्स बर्न एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हवड़ा
३ मेसर्स जेसप एण्ड को० ब्रिज वर्क्स एण्ड फाउन्ड्री—हवड़ा
४ मेसर्स जेसप एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्कस—कलकत्ता
५ मेसर्स जेसप एण्ड को० ऐलिङ्ग स्टाक वर्क्स—गार्डन रीच, कलकत्ता,
६ ई० आई० आर० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क-शाप—जमालपुर
७ ई० आई० आर० वर्क शाप—लिलुआ
८ ई० बी० स्टोर रेलवे इञ्जिनियरिङ्ग वर्क शाप—कचरापारा
९ गवर्नमेन्ट गन एण्ड शेल फैक्ट्री—काशीपुर और ईशापुर
१० गवर्नमेन्ट राइफल फैक्ट्री—ईशापुर
११ मेसर्स जे० एच० किङ्ग एण्ड को० इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हवड़ा
१२ हुगली डाकिङ्ग एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग को० लि०—हवड़ा
१३ बी० आई० एस० नेवीगेशन कम्पनी डाक्स एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग वर्क शाप—हवड़ा
१४ गैनजेस इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—हवड़ा
१५ मेसर्स टर्नर, मोरीसन एण्ड को० शिपबिल्डिङ्ग यार्ड्स—शालीमार

उपरोक्त बड़े कारखानोंके अतिरिक्त कितने ही छोटे छोटे कारखाने भी हैं जहां भिन्न भिन्न प्रकारका काम होता है। इन बड़े कारखानोंमेंसे कुछका संक्षिप्त परिचय हम यहा दे रहे हैं। जो इस प्रकार है।

बंगाल आइरन एण्ड स्टील वर्क्स—बाराकार

यह कारखाना ई० आई० आर० की ग्रैण्डकार्ड लाइनपर आमनसोलके पास है। यहां लोहा गलानेकी भट्ठी और ढालनेके साचे हैं जहा लोहेकी गलाई और ढलाईका काम होता है। इन भट्ठियोंमें काम आनेवाला कोयला (Coke) झरियासे आता है। यह कोयला गैस निकाल लेनेके बाद काम देता है और इसी लिये इसे 'कोक' कहते हैं। भारतके कोयले और कोक दोनोंमें ही यह बुराई है कि इनमें राख ज्यादा होती है जो पिघले हुए तरल लोहेको हानि पहुंचाती है। खानसे निकाले गये कच्चे मालमें लोहेका अंश अनियमित* परिमाणमें पाया जाता है। पर आधु-

* काली माटी के कच्चे मालमें ६५ प्रतिशत लोहा रहता है।

निक पद्धतिके अनुसार कई प्रकारका कच्चा माल एक साथ ही भट्ठीमें गलाया जाता है। इस कारखानेमें भी यही व्यवस्था है। इस काममें लगनेवाला चूना सतनासे कम्पनी मंगाती है।

इस कारखानेमें मुख्यतया पाइप और बड़े आकारके पहलूदार लौह खम्भ ढाले जाते हैं। यहां फौलाद और चद्दर बनानेकी भी व्यवस्था है। कारखानेमें काम करनेवाले श्रमजीवी वर्गके लिये रहनेका प्रबन्ध भी कम्पनीकी ओरसे है। स्वच्छ जल और डाक्टरोंकी व्यवस्था भी उनके लिये अच्छी है

मेसर्स बर्न एण्ड को० लि० वर्क्स—हवड़ा

यह कारखाना हुगली नदीपर हवड़ाकी ओर है। नदीका विस्तृत पाट जहाज बनाने और माल उतारने तथा चढ़ानेके काममें अच्छी सुविधाका सिद्ध हुआ है। इस कारखानेका काम चार विभागोंमें विभक्त है। एक विभागमें गलाने, ढालने और इंजिनका काम होता है। दूसरेमें लोहेके पुल और बड़े २ गार्टर्स बनाये जाते हैं। तीसरेमें रेलके डब्बे बनाते हैं और चौथेमें जहाज बनानेका काम होता है। यह कारखाना बहुत बड़ा है। इसकी लम्बाई १२०० फीट है। यहां सभी प्रकार मज़बूत और अच्छा माल तैयार होता है।

मेसर्स जेसप एण्ड को० वर्क्स

इस कम्पनीके तीन बड़े बड़े लोहेके कारखाने हैं। इसका :—

१ हवड़ावाला कारखाना पुल बनाने और इमारती सामान तैयार करनेका काम करता है। यहां लोहा गलानेकी भट्ठी भी है। इस कारखानेमें उपरोक्त प्रकारका सभी सामान तैयार होता है। कारखानेमें आधुनिक यंत्रों और सुविधाओंकी प्रचुरता है।

२ कलकत्तेके फोनिक्स वर्कसमें इंजिन बनानेका काम होता है। यहां सभी प्रकारके साधारण इंजिन और जूट प्रेस वगैरः तैयार किये जाते हैं।

३ रोलिङ्ग वर्क्स गार्डन रीच कलकत्ते वाले कारखानोंमे पहिये,और धुरेको छोड़कर डब्बोंके सभी भाग बनाये जाते हैं। रेलवे कम्पनियोंके आर्डर भी यह कारखाना लेता है। यहांतक कि जो भाग यहां बनाने नहीं दिये जाते वे भाग भी रेलवे बोर्डने विशेष स्वीकृति प्राप्तकर आवश्यकता पर इस कारखानेसे बनवाये हैं।

गवर्नमेन्ट गन एण्ड शेल फैक्ट्री काशीपुर और ईशापुर

इस कारखानेके आकार प्रकारका अनुमान इसीसे हो जायगा कि इसमे ६ हजारसे अधिक श्रमजीवी काम करते है। इस कारखानेमे बंदूक और राइफलें तथा गोले बनते है। इसमे फौलादको तैयार करनेका विशेष रुपसे प्रबन्ध है। योरोपीय युद्धसे इस कारखानोंकी अच्छी उन्नति हुई है।

यहां कितने ही कारीगर तैयार किये गये हैं जो प्रान्तके कितने ही कारखानोंमें फैले हुए हैं। कारखानेके मजदूरोंके लिये रहनेका भी यहां अच्छा प्रबन्ध है।

गवर्नमेन्ट राइफल फैक्ट्री ईशापुर

यह कारखाना भी सरकारी गन एण्ड शेल फैक्ट्रीके पास ही है। यहांका काम ऊंचे दर्जेकी कारीगरीका है कि जिसे भारतीय अच्छे ढंगसे कर रहे हैं।

ई. आई. आर. वर्कशाप जमालपुर

यहां रेलवे सम्बन्धी लोहेकी पटरियोंको छोड़कर शेष सभी प्रकारका काम तैयार होता है। इसके लिये उत्तम श्रेणीकी यांत्रिक व्यवस्था की गयी है। यहां बड़ी २ भट्ठियां हैं जहां लोहा गलाया जाता है और ढलाईका काम होता है। यहां फौलाद ढालनेकी भी व्यवस्था है। लोहेकी चद्दरें भी तैयार की जाती है। कारखाना ६६ एकड़ भूमिपर फैला हुआ है।

ई. आई. आर. रोलिङ्ग स्टाक वर्कस लिलुआ

यह कारखाना २०० एकड़ भूमिको घेरे हुए है। यहां चद्दर बनानेका काम होता है। इसमें ४ हजारसे अधिक मजदूर काम करते है।

औद्योगिक शिक्षाकी सुविधायें

प्रान्तके विद्यालयोंमें लोहेकी औद्योगिक शिक्षाके प्रसारके लिये अभीतक यथेष्ट सुविधायें नही हैं। प्रान्तके कारखानोंमें कार्य दक्ष हो कितने श्रमजीवी उन्नति कर गये हैं परन्तु स्कूल और कालेजोंमें इस प्रकारकी .शिक्षा देनेका अभीतक पर्याप्त प्रबन्ध नहीं हो पाया है। फिर भी अभीतक जो कुछ भी इस ओर किया गया है उसमेंसे प्रधान सुविधाओंकी चर्चाही मात्र हम करेंगे। शिवपुरके सिविल इंजिनियरिंग कालेजमें मैकेनिकल इंजिनियरिङ्ग विभाग है। जिसमें लोहेके गलाने, लोहारका काम करने और खराद आदि चढ़ानेका प्रबन्ध है। यहाकी शिक्षा पद्धति ही ऐसी बनायी गयी है कि सभी विद्यार्थियोंको यह काम सीखना पड़ता है। इसके अतिरिक्त यहा कुछ ऐसे भी विद्यार्थी आते हैं जो मिस्त्रीका काम सीखते है। इस कालेजसे संबद्ध निम्नलिखित स्कूल और कालेज भी है जो भिन्न २ स्थानोंपर हैं और जहां भिन्न २ स्थानोंके विद्यार्थी आकर शिक्षा पाते है।

ढाका इंजिनियरिङ्ग कालेज, वर्द्धवान टेकनिकल स्कूल, भागलपुर स्कूल, ढाका कालेजियट स्कूल, रंगपुर टेकनिकल स्कूल, पबना टेकनिकल स्कूल, कोमिला टेकनिक स्कूल, बेरीसाल टेक्निकल स्कूल, मेमनसिंह स्कूल (वी क्लास) और विक्टोरिया स्कूल करसियांग।

रेशम

वस्त्र बनानेके काममें आनेवाले सभी प्रकारके रेशेदार तन्तुओंमें रेशम सबसे श्रेष्ट माना गया है। यह औरोंकी अपेक्षा अधिक मजबूत, मुलायम और चमकीला होता है। रेशम एक विशेष प्रकारके कीड़ोंकी लारसे उत्पन्न होता है। ये कीड़े वयस्क होनेपर अपने मुंहसे सटे हुए दो छिद्रों-मेंसे गोंदके समान चिपचिपी लार निकालते हैं। जो अपने कौतूकपूर्ण विशेष गुणके कारण वायु और प्रकाशका संसर्ग होते ही सूखकर कठिन हो जाती है और रेशमके नामसे संसारमें सम्बोधित की जाती है।

इतिहास

रेशम उत्पन्न करनेवाले कीड़े चीनके समशीतोष्ण भूभागमें बहुतायतसे पाये जाते हैं। फिर भी इस भूभागके समीपवर्ती अन्य भूखण्डमें इस प्रकारके कीड़ोंका होना कुछ असम्भव नहीं है इस स्थिर निर्णयको आधार मान मनो वैज्ञानिकोंने इसकी खोजमें अपनी पूरी सामर्थ्य लगा दी और फल यह हुआ कि हिमालय पर्वतके दोनों किनारोंपर इनका पता मिल गया। इनका मत है कि हिमालयकी पर्वत श्रेणीमें मिलनेवाले कीड़े न कहींसे आये और न किसी मानवी शक्तिने इन्हें आश्रय ही दिया। वरन ये तो प्रकृतिकी मोद भरी गोदमें अनादिकालसे क्रीड़ा करते आ रहे है।

चीन

रेशमके औद्योगिक विकासका प्रधान श्रेय चीनको दिया जाता है। उसीने इसे सर्व प्रथम आश्रय दे उत्साहित किया श्रीयुत हाल्डे नामक एक पाश्चात्य पण्डितने सन १७३६ ई० में 'चीनका इतिहास' नामका एक ग्रन्थ प्रकाशित किया था। उसमें आपने लिखा है कि मसीह सन् से ३ हजार वर्ष पूर्व चीनमें रेशमके कीड़े पाले जाते थे और उनसे रेशम तैयार की जाती थी। इसके बाद कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता कि क्रमशः उन्नति किस प्रकार हुई। मसीह सन् के २६५० वर्ष पूर्व चीनके प्रसिद्ध सम्राट हिवङ्गटीकी धर्मपत्नी सिलिंगने इस ओर अधिक अनुराग दिखाया। वह स्वयं रेशमके कीड़े पालने और रेशम तैयार करनेका काम करती थी। उसीने रेशमके तन्तुओंको सुलझवाकर कपड़े बुनवाये। चीनवालोंका विश्वास है कि उसने एक प्रकारके ऐसे करघेका आविष्कार

किया कि जिसपर रेशम बुनी जाने लगी। अस्तु चाहे जो हो पर यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि चीनवालोंने इस उद्योगमें अच्छी उन्नति की। उन्होंने इस कलाको अति गोपनीय मान रक्खा था और यही मुख्य कारण है कि इसका प्रसार और देशोंमें बहुत देरसे हो पाया।

जापान।

'गोपनीय रस रहे पुरातन बात भली है' के अनुसार चीनवाले कब किसीको इस नवीन कलाका पता देने लगे? जापानको कानोकान इसकी कुछ भी सूचना नहीं मिली। निहोंगी (Nihongi) नामक जापानके एक प्राचीन इतिहास ग्रन्थसे पता चलता है कि कोरियाको पारकर रेशमकी चर्चा सन् ३०० ई० में जापान पहुंची। फिर क्या था कुछ कोरियावाले जापानकी ओरसे चीन भेजे गये। वहां से वे लोग रेशमकी कलामें परम प्रवीण चार चीनी युवतियां ले आये। इन युवतियोंने वहा वालोंको इस कलाकी शिक्षा दे थोड़े ही समयमें कार्य्यपटु बना दिया। जापनवालोंने इनके सम्मानार्थ सेटसू (Settsu) प्रान्तमें एक मन्दिर निर्माण कराया। उस समय जापानने जिस कलाको इस प्रकार आरम्भ किया था वही आज उसके लिये कामधेनु हो रही है। स्वशासित देशोंकी शोभा देने योग्य राष्ट्रीय व्यवसायका आज वह एक सुदृढ स्तम्भ हो रही है।

खोतान

प्राचीन इतिहास ग्रन्थोंमें सीरिया और भारतके बीचका भूभाग खोतान प्रदेशके अन्तर्गत माना जाता था। यह भूखण्ड भी हिमालय पर्वत श्रेणीके पश्चिमी किनारेसे सटा हुआ है अतः रेशमके कीड़े यहां भी पाले जा सकते हैं। चीन अपने बाबापन्थी अन्धविश्वासमें लीन बैठा था कि वहा की एक राजकुमारीकी शादी खोतानमें हुई। इसे रेशमी वस्त्र बहुत प्रिय थे अतः उसने इस कलाका प्रसार अपने पतिके यहा करनेकी ठानी। सन् ४१६ ई० में जब वह वहांसे आयी तो शहतूतके बीज और रेशमके कीड़े अपने केशपाशमें छिपाकर लेती आयी। इसी समयसे मध्य एशियामें रेशमका औद्योगिक प्रसार आरम्भ होता है। इसके डेढ़ सौ वर्ष बाद रेशमकी कलाका ज्ञान फारस यूनान और रोमको हुआ। खोतानमें इस उद्योगने अच्छी सफलता प्राप्त की जिसे देखकर योरोप वालोंके भी मन चल गये। उस समयकी राजनैतिक परिस्थितिने योरोपवालोंको रेशमकी चाहके कारण स्वतंत्र रूपसे इस औद्योगिक क्षेत्रमें उतरनेके लिये बाध्य कर दिया।

योरोप

रेशमकी कलाका योरोपमें कब और कैसे प्रसार हुआ यह प्रमाणिक रीतिसे नहीं कहा जा सकता। इसके लिये पुरातत्ववेत्ताओंमें भारी मत भेद है। * सर थामस हर्बर्ट ने सन् १६७७ ई० में

* देखिये *De Bello, Gothico II 17 m yaler*

लिखा था कि सिकन्दरके जीवनकालके कुछ दिन पूर्व सेरे अथवा शीजियो-सीरिका;—भारतकी ओर झुका हुआ सीरियाका भूभाग-से ही पहिले पहल रेशमके कीड़े फारस लाये गये। योरोप वाले सम्राट जस्टिनके पूर्व रेशमके कीड़ोंसे परिचित न थे। फारस वालोंने ही इन्हें सम्राटको उपहारमें दिया था। यह घटना बैंभनटियम नगरकी है। इस प्रकार योरोपमें इस कलाका प्रसार हुआ। दूसरा मत श्रीयुत डिबेलो नामक एक रोमन लेखकका है। आपका कहना है कि सन ५३० ई० के लगभग कुस्तुन्तुनियाके सम्राट जस्टीनियम (Emperor Justiniam) ने सेरिन्द् (Serind) से रेशमके कीड़े ले आनेके लिये एक भिक्षुसे अनुरोध किया। इस मार्गका अनुसरण करनेका कारण राजनैतिक था। फारसवाले इस उद्योगमें अच्छी सफलता प्राप्त कर चुके थे और वे ही प्रायः योरोपवालोंको रेशमी वस्त्र पहुंचाते थे। परन्तु रोम और फारसमें कभी भी न बनती थी। अतः रोम वाले अपने शत्रु पक्ष पर रेशमके लिये आश्रित रहना ठीक न समझते थे। अतः एक भिक्षु द्वारा कीड़ोंका मंगाया जाना उचित और नीतियुक्त माना गया।

भारत

रेशमके कीड़ोंके विशेषज्ञोंने स्थिर किया है कि हिमालय पर्वत श्रेणीमें ११ हजार फीटकी ऊंचाईतक ये कीड़े अनादिकालसे मिलते हैं। अतः भारतमें रेशमके औद्योगिक विकासके लिये यथेच्छ विस्तृत क्षेत्रका मिलना कितना स्वाभाविक है यह अवश्य ही युक्तियुक्त है। फिर भी पाश्चात्य पुरातत्ववेत्ताओंकी विचार पद्धतिकी चर्चा यहां संयोग वश कर देना अनुचित न होगा। उन लोगोंका मत है कि सम्भवतः एशियाके मध्य भागसे ये कीड़े यहां लाये गये हों। पेरीप्लस (per plus) के सम्बन्धको लेकर कहा जाता है कि ये कीड़े बैकट्रियाके समीपवर्ती भूभागसे सिन्धु नदीकी ओर लाये गये और इन कीडोंसे उत्पन्न होनेवाली रेशम उस समयके समुन्नत व्यवसाय केन्द्र बारीगला-जिसे आजकल भड़ोच कहते हैं—में विकनेके लिये लायी गयी। अस्तु चाहे जो हो पर हिन्दुओंके प्राचीन ग्रन्थ वेदोंमें भी रेशमकी चर्चाकी गयी है।

उपरोक्त ऐतिहासिक विवरणसे स्पष्ट हो जाता है कि रेशमके कीड़ोंका प्रसार संसार भरमें किया गया और जहा जहां शहतूतके वृक्ष उपज सकते थे वहा वहां रेशमके व्यवसायने अच्छी उन्नति की।

रेशमके कीड़े

रेशमके कीड़े दो प्रकारके होते है एक पालनू और दूसरे जंगली। पालनू कीडे वे हैं जो घरोंमें शहतूतकी पत्ती खिलाकर पाले जाते है जंगली कीड़े घरोंमे पाले नहीं जा सकते। वे जंगलमे ही रहते है और वहींके वृक्षोंकी पत्ती खा कर रेशम उत्पन्न करते है।

रेशमके कीड़ोंकी गणना अण्डज योनिमें की जाती है। प्रथम ये अण्डेके रूपमें उत्पन्न होते हैं। अण्डे फूटनेके बाद ये छोटे छोटे कीड़ोंके रूपमें प्रकट होते हैं। फिर ये वृक्षकी पत्ती खा कर बढ़ने लगते हैं और युवा अवस्थाको प्राप्त होते हैं। तदनन्तर वे अपने मुंहसे रेशम निकाल कर अपने चारों ओर एक प्रकारका वेष्टन बना कर उसीके अन्दर बन्दीकी तरह बन्द हो जाते हैं और कुछ समय बाद उस जालको काट कर वे तितलीके रूपमें बाहर निकलते हैं। इसके उपरात प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक नियमानुसार मादी तितली नर तितलीकी सहायतासे अण्डे देती है और तब अपनी लीला समाप्त कर मर जाती है। उपरोक्त कौतुक पूर्ण परिवर्तनके आधार पर ही रेशमके कीड़ोंकी जातिया स्थिरकी गयी हैं। वर्षमें एक बार परिवर्तन क्रमको पूरा करने वाले कीड़ोंकी एक जाति मानी गयी है। वर्षमें दो बार परिवर्तन क्रमको करने वालोंकी जाति दूसरी मानी गई है। इस प्रकारके कीड़े प्रायः चीनमें ही अधिक पाये जाते हैं। वहीं से ऐसे कीड़ोंका प्रसार योरोपमें हुआ है। कुछ ऐसे कीड़े भी पाये जाते हैं जो वर्षमें तीन बार काया पलटका करिश्मा दिखाते हैं। परन्तु इन कीड़ोंमें कुछ ऐसी भी जातिया हैं जो वर्षमें चार बारसे आठ बार तक अपना कलेवर बदलते हैं। इस प्रकार कीड़ोंकी जातिया निश्चितकी गयी हैं। चीन, जापान और योरोपमें मिलने वाले पालतू कीड़ोंमें प्रायः वर्षमें दो बार काया पलटने वाले ही कीड़े अधिक मिलेंगे परन्तु भारतमें तीन बारसे लगा कर आठ बार कौतुक दिखाने वाले कीड़े भी मिलते हैं। जंगली कीड़ोंमें टसर, मूंगा और अण्डी यह तीन प्रकारके ही कीड़े पाये जाते हैं।

कीड़ोंका भोजन

'पालतू' कहे जाने वाले रेशमके कीड़ोंका एक मात्र खाद्य पदार्थ शहतूतकी पत्तिया हैं। अन्य प्रकारके वृक्षोंकी पत्तियाँ खिलानेके प्रयोग असफल सिद्ध हुए हैं। जंगली कीड़े शहतूतके अतिरिक्त अन्य प्रकारके वृक्षोंकी पत्तिया खाकर भी जीवित रहते है और रेशम उत्पन्न करते हैं। ये कीड़े जिन वृक्ष विशेषकी पत्तिया खाकर जीवित रहते हैं उनमे महुआ, कचनार, सेमर, करौंदा, मालकांगनी, बेल, जामुन, कामरूप, अरंडी, सागौन, अर्जुन, जंगलीबदाम, असन और बेरके नाम अधिक उल्लेखनीय हैं।

कीडे

अण्डोंके ऊपर रक्खे हुए ढक्कनका मुंह खुला रहता है और उसपर चलनीके समान छिद्र-दार एक कागज रख दिया जाता है। अण्डे फूटते ही उनमेसे कीड़े निकल कर घूमने लगते हैं। उनकी भूख बढ़ जाती है और वे उसे शान्त करनेके लिये दौड़ पड़ते हैं। नवजात कीड़े छोटे छोटे छिद्रोंके द्वारा बाहर निकलते हैं। ऐसा करते समय कीड़ेके शरीरपर लगा हुआ अण्डेका दूषित पदार्थ छिद्रोंके

किनारोंपर साफ होकर रह जाता है। कीड़े जहां पाले जाते हैं वह स्थान विस्तृत और हवादार होता है। वहां प्रकाशके पर्याप्त प्रवेशका प्रबन्ध रहता है। इस प्रकार वह स्थान साफ सुथरा रहता है। वहांकी वायु समशीतोष्ण एवं स्निग्ध रहती है। उस स्थानका तापमान नियमित और नियंत्रित रहता है। ६२° फ० से ७८° फ० तककी उष्णता कीड़ोंको हानिकार नहीं होती। इससे अधिक उष्णता वे सहन नहीं कर सकते। कम उष्णतामें वे अवश्य ही जीवित रह सकते हैं। जितनी कम उष्णता होगी उतना ही अधिक समय वे वयस्क होनेमें लगायेंगे। परन्तु कम उष्णतामें वे अधिक स्वस्थ और सबल होते हैं। उनका कोष्ठ बड़ा और रेशम भी अच्छी होती है।

कोष

उपरोक्त परिवर्तन क्रमको पारकर कीड़े अपनी युवा अवस्थामें प्रवेश करते हैं और उसी समयसे रेशम उत्पन्न करनेकी तैयारीमें लग जाते हैं। इसकी सबसे अच्छी पहिचान यह है कि वे खाना छोड़ देते हैं। पालनेवाले उनके रहनेके स्थानमें कुछ नकली झाड़ियां बनाकर खड़ी कर देते हैं। कीड़े इन्हीं झाड़ियोंके आसपास घूमने और चढ़ने लगते हैं। वे अपने मुंहसे एक प्रकारकी लार निकालकर अपने चारोंओर लपेटने लगते हैं। इन कीड़ोंकी इस लारमें यही एक विचित्र विशेषता है कि वायु और प्रकाशके सम्मिलित सम्पर्कमें आकर वह कठिन और चमकीली हो जाती है और रेशम-का नाम ग्रहण करती है। कीड़ा जिस समय रेशमका तार निकालने लगता है उस समय पालनेवाले एक कीड़ेको दूसरे कीड़ेसे दूर हटाकर रेशमके तारको उलझनेसे बचाते हैं। असावधानीसे रेशम परस्पर मिलकर उलझ जाती है और वही फिर नीचे श्रेणीकी करार दी जाती है। तीन चार दिनमें कीड़े अपना काम पूराकर कोषको बंदकर बंदीकी भांति उसीमें बन्द हो जाते हैं। दो तीन दिनके बाद कोष इकट्ठे कर लिये जाते हैं और गर्म पानीमें डालकर व्यवसाय योग्य बना लिये जाते हैं। यदि गर्म पानीकी क्रियामें विलम्ब हो जाय तो कोषका बन्दी कीड़ा अपनी काया पलटकर तितलीके रूपमें बाहर निकल आता है। ऐसा करनेसे रेशमके तन्तु कट जाते हैं और वे पुनः सुलझाये नहीं जा सकते। अतः रेशम नष्ट हो जाती है और व्यवसायको भारी क्षति पहुंचती है।

कुछ कोष ऐसे भी रख छोड़े जाते हैं जिन्हें गर्म पानीमें डाला नहीं जाता। वे बीज मानकर अलग कर दिये जाते हैं। अवधि समाप्त होनेपर उनसे बन्दी कीड़ा मटमैली तितलीके रूपमें अपना कलेवर बदलकर बाहर निकलता है। बीजवाले कोष समूहको इकट्ठाकर ६६° फ से ७२° फ तककी उष्णतामें रखते हैं। यहां वे ११ से १५ दिन तक जानकारोंकी देखरेखमें रक्खे जाते हैं। इस अवधिके समाप्त होते ही बन्दी कीड़ा कोषकी रेशमको इधर उधर हटाकर तितलीके रूपमें बाहर निकल आता है।

तितली

रेशमकी तितलीका रंग मटमैला होता है और वह देखनेमें बहुत ही भद्दी होती है। नर तितली देखनेमें छोटी और दुर्वल होती है और मादीका शरीर अपेक्षा कृत बड़ा और हृष्टपुष्ट होता है। कोयसे निकलते ही नर और मादी परस्पर एक दूसरेको ढूढनेमें वियोग विह्वलतासे उतावले हो जाते हैं। दोनोंमें मेल होते ही प्राकृतिक नियमके अनुसार मादी गर्भवती हो जाती है। इस समय बड़ी सावधानीसे काम लिया जाता है। नर तितली उड़ा दी जाती है और गर्भवती मादी तितली प्रकाश रहित सुरक्षित स्थानमें पाली जाती है। कुछ समय बाद वह अण्डे देती है जो उपरोक्त पद्धतिके अनुसार पाले पोषे जाते हैं।

यह है रेशमके कीड़ोंकी जीवनचर्या और रेशम नामक बहुमूल्य वस्तुकी उत्पत्तिका संक्षिप्त इतिहास।

कीड़ोंकी बीमारी

रेशमके कीड़ोंमें जितने प्रकारकी बीमारियां फैलती हैं वे प्रायः सभी सांसर्गिक स्वभावकी होती हैं ऐसी दशामे इस प्रकारकी बीमारियोंके रोकनेका सबसे सरल उपाय यही है कि सूक्ष्मदर्शी यंत्रसे परीक्षाकर रोग प्रपीड़ित अण्डों आर कीड़ोंको स्वस्थ अण्डे और कीड़ोंसे अलगकर देना चाहिये।

कुछ बीमारियाँ ऐसी भी होती है जो कीड़ोंके मर जानेके बाद प्रकट होती हैं। रासा (Rasa) नामकी बीमारी प्रायः वर्षा ऋतुमें ही होती है। जिस समय कई दिनतक पानीकी झड़ी लगी रहती है उस समय कीड़ोंको पानीकी भीगी पत्तियां खिलायी जाती हैं। भींगी पत्तियाँ स्वभावतया हानिकर होती हैं और कीड़ोंमें रोग उत्पन्न करदेतीं है। झड़ी लगे रहनेमें यदि उष्णताने भी जोर पकड़ा तो बीमारी भयंकर रूपसे फूट निकलती है। इस लिये शहतूतकी झाड़ियों की पत्तियां न खिला-कर वृक्षकी पत्ती खिलाना बुद्धिमानी है।

कीड़ोंकी बीमारीका प्रभाव कीड़ों द्वारा उत्पन्न होनेवाली रेशमकी जातिपर भयंकर रूपसे पड़ता है। रोग प्रपीड़ित कीड़ोंकी रेशम बहुत ही नीचेकी श्रेणीकी होती है।

रेशम कैसे उत्पन्न होता है

अण्डे—रेशमके कीड़ेका अण्डा आकारमें बहुत ही छोटा होता है। १ ग्रेन वजनमें लगभग १०० अण्डे चढ़ जाते हैं। अण्डेकी लम्बाई १ मीलीमीटरके करीब होती है। ये देखनेमें कुछ चपटे और मटमैले रंगके होते हैं। पानीको आधार मानकर निकाला गया इनका गुरुत्वाकर्षण १०८ डिग्रीका होता है। अण्डे स्वतन्त्र स्थानपर रक्खे जाते हैं। जिस समय तितली अण्डे देने लगती है उस

समय उसे कपड़ेपर बैठा देते हैं और वह उसी कपड़ेपर घूम घूमकर अण्डे देती है। अण्डे एक ढकन के नीचे सुरक्षित रखकर सिरजे जाते हैं।

कीड़ेकी जीवनचर्यापर एक वैज्ञानिक दृष्टि

रेशमके कीड़ोंके अण्डोंका वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार यदि विश्लेषण किया जाय तो उसमें प्रधान रूपसे मिले हुए पदार्थ ये होंगे:—

१.	फास्फोरिक एसिड	५३८	प्रतिशत
२.	पोटैशियम	२९५	"
३.	मैग्नेशियम	१०५	"
४.	कैल्शियम	६·४	"

अण्डा रखनेके बादसे ही ऑक्सीजनके सूखनेका काम आरम्भ हो जाता है और परिणाम यह होता है कि अण्डेका कार्बोनिक एसिड और जल कम हो जाता है। यही कारण है कि फूटनेके समय अण्डेका वजन कम पड़ जाता है। इसी प्रकार अण्डेका रंग भी क्रमशः बदलने लगता है। इसका रंग पहिले भूरा मालूम होता है, फिर नीला, बैंजनी, पीला और अन्तमें फूटनेके समय तक बिलकुल सफेद हो जाता है। यह प्रकट परिवर्तन शीतकालकी अपेक्षा ग्रीष्मऋतुमें अधिक स्पष्ट दिखायी देता है।

एक ग्रैम वजनके अण्डेके समूहसे १ हजार २ सौ से १ हजार ५ सौ तक कीड़े उत्पन्न होते हैं। अण्डा जहा आकारमें १ मीलीमीटर लम्बा होता है वहा उससे उत्पन्न होनेवाला कीड़ा ३ मीलीमीटर लम्बा होता है और कीड़ेका वजन १½ मीलीग्रामका होता है। कीड़ा बढ़ने लगता है और ३३ से ३८ दिनतक उसकी लम्बाई ९ सेन्टीमीटरकी हो जाती है। इसी प्रकार इस ९ सेण्टी-मीटर लम्बे कीड़ेका वजन ५ ग्रामके करीब बैठता है।

इस कीड़ेके मुंहसे सटे हुए दो छोटे छेद होते है। जब यह युवाअवस्थामें प्रवेश करता है तो ये दोनों छेद कुछ सूज जाते हैं। इनकी बेचैनीसे उकता कर वह पत्ती खाना छोड़ देता है। उस समय मुंहमें पहिलेसे पहुंची हुई पत्तियोंको पचानेमें ही वह लगा रहता है। पाचनकार्य समाप्त करनेके बाद वह अपना मुंह इधर उधर खुजलाता है और परिणाम यह होता है कि मुंहसे सटे हुए उन सूजे हुए दोनों छिद्रोंसे एक एक बूंद पोटैशियम जो विशुद्ध होता है टपक पड़ता है। यदि इस व्यथित अवस्थामें उसको तोला जाय तो उसका वजन १ ग्रामके लगभग घटा हुआ मिलेगा। वह प्रपीड़ित अवस्थामें अपना शिर इधर उधर घुमाता है और जहा कहीं उसे रुकावट अनुभव हुई कि वह उसीको पकड़ कर चढ़ जाता है और अपने उन्हीं छिद्रोंसे लारकी भांति तरल पदार्थ निकाल कर रेशमकी

रचनामें लीन हो जाता है। यह लार जो ऐसी परिस्थितिमें सूजे हुए छिद्रोंसे निकलती है प्रकाशमें आकर ज्यों ही वायुके झोंकेका अनुभव करती है त्यों ही सूखकर कठिन हो जाती है और रेशम तन्तु कहाती है। यह तन्तु फाइब्रोइन (Fibroin) का बना होता है और रेशमके गोंद सेरीसिन (Sericin) का खोल इसपर चढ़ा रहता है। इस खोलपर एक प्रकारके रंगकी रेखा भी रहती है। यह रंगदार पदार्थ कीडेके उन्हीं छेदोंके मुंहपर रहता है। तरल पदार्थके बाहर आते ही यह रंग उसकी ऊपरी तहपर चढ जाता है। सफेद तन्तु पीलेकी अपेक्षा कम लचीले होते हैं परन्तु उनसे कहीं अधिक मोटे और मजबूत होते हैं।

कोप बनानेका पूरा कार्य कीड़ा २४ घन्टेमें समाप्त कर डालता है और वहीं बन्दी बन बैठ जाता है। यदि कोपको ऐसे समयमें देखा जाय तो कीड़ा मृत प्रायः और रंगमें सफेद मालुम होगा। आकार उसका छोटा हो जायगा पर श्वासोच्छ्वास नियमित रूपसे जारी रहेगा। कोषमें बन्द हो जानेके तीन दिन बाद यदि कोपको खोल कर कीड़ा देखा जाय तो वह भारी काया पलटके कारखानेकी वस्तु सा प्रतीत होगा। न तो वह आकार प्रकार और न वह रूपरेखा। सभी बातें बदली हुई मिलेंगी। वहा होगा सिर्फ मांसका एक सुकोमल पिण्ड। जिसे देख न तो कीड़ेकी स्मृति जागृत होगी और न तितलीकी आकृतिका ही भान होगा। जब वह मासका पिण्ड सूख और सिकुड़ कर बादामके आकारका हो जाता है तब पिण्डका ऊपरी छिलका कुछ कठिन सा हो जाता है और पतला भी पड़ जाता है। इसीके अन्दर धीरे धीरे पखने और तितलीकी आकृतिका प्रतिबिम्ब दिखायी देने लगता है। ऊपरी छिलका फट जाता है और तितली निकल कर उसी कोषमे रहती है। इसका शिर कोपके अन्दर वाली छतसे टकराता है और इसके मुंहसे (Alkaline acid) तेजाबी बूंदे टपक पड़ती हैं जिससे हालकी जमी हुई रेशम मुलायम हो जाती है और गोंद वाली जाली इधर उधर हट जाती है तथा तितली मार्ग पा बाहर निकल आती है। उस समय उसके पंख और शरीर भीगे हुए रहते हैं पर १५ मिनटके अन्दर ही वे सूख जाते हैं। इसके बाद ही संयोग वश सृष्टिकी रचनाका कार्य आरम्भ हो जाता है। मादी तितली लगभग ७ सौ अण्डे देती है जिनसे पुनः प्रकृतिकी चक्की चल पड़ती है। यह है विकासवादका एक कौतुक पूर्ण उदाहरण।

जंगली रेशमके कीड़े

उपरोक्त ढंग तो पालतू कीड़ोंका है, परन्तु जंगली कीड़ोंसे रेशम इकट्ठा करनेकी रीति बिल्कुल भिन्न है। ये कीड़े घरोंमें पाले नहीं जा सकते। अतः इनकी देख रेख करना भी कुछ कम कठिन नहीं है। अगस्त मासमें जंगली लोग इनका बीज इकट्ठा कर रखते हैं और समयपर लोग जंगलोंमें छोड़ देते हैं। जंगलमें जहां कीड़ोंके खाने योग्य वृक्षोंकी सुविधा होती है वहीं उपयुक्त स्थान

देखकर खूब साफ कर लिया जाता है। बीजके लिये रक्खे गये कोषको वहां ले जाकर उन्हीं पेड़ोंकी डालियोंपर सावधानीसे बांध दिया जाता है। पालनेवाले भी वहीं अपनी झोपड़ी डाल कर रात दिन इनकी रक्षामें तत्पर रहते हैं और शेष कार्य वही विकासवादकी विचित्र पद्धतिके अनुसार कीड़े स्वयं कर लेते हैं।

कोषकी रेशम

रेशमकी उत्तमताका आधार कोषकी रचना पर ही मुख्यतया निर्भर रहता है। वैज्ञानिक पद्धतिके अनुसार पाले गये कीड़ोंके कोषका रेशम उत्तम होता है और इसी प्रकार आधुनिक युगकी सुधरी हुई पद्धतिके अनुसार सुलझाया हुआ रेशम ही सर्वोत्तम माना जाता है। इस लिये कोषको इकट्ठा करनेके समय उसके वाह्य आकार प्रकारको देख कर ही कार्य न करना चाहिये। जिस प्रकारकी लालन पालन पद्धतिके अनुसार कीड़ोंने कोषकी रचना की हो उसी प्रकारकी पद्धति द्वारा तैयार किये गये कीड़ोंके कोषको एक जगह इकट्ठा किया जाय और फिर उनके तारोंको मिलाकर सुलझाया जाय। इसमें भी रेशमकी लच्छियोंका रंग देखकर ही उनके बण्डल बांधे जाने चाहिये। एक रंगकी सभी लच्छियां एक बण्डलमें इकट्ठी करनेसे रेशमको रंगनेका सुभीता होता है। क्योंकि कौनसे रंगकी रेशमको कौनसे रंगमें रंगनेमें सुविध होगी यह निश्चित करना सरल होता है।

रेशम सुलझानेका ढंग

प्राचीन ग्रन्थोंमें रेशम सुलझानेका विवरण जिस प्रकारका मिलता है उससे उस समय इसके उद्योगने जैसी उन्नति की थी उसका अनुमान कर लिया जा सकता है। चीनमें इस कलाको अच्छी उन्नत अवस्थामें लाया गया और रेशम सुलझाने उसे ऐंठने तथा रंगनेकी व्यवस्था की गयी। यही क्यों रेशम बुननेकी रीति निकाल कर उसके कपड़े भी बुने गये। और आश्चर्य है कि उन प्राचीन ग्रन्थोंमें जिस प्रकारकी पद्धतिसे रेशम सुलझानेकी चर्चा मिलती है उसी प्रकारके यंत्र आज भी चीनमें कार्य करते हुए मिलेंगे।

रेशम सुलझानेका काम जापानवालोंने सन् ३१० ई० में आरम्भ किया। जिस समय योरोपमें रेशमकी कलाका प्रवेश सन् ५५५ ई० मे हुआ उस समय हाथसे रेशम सुलझानेकी प्रथा थी।

कोषसे रेशमका तार या तो किसी चोंगीके या तकुएके समान किसी लकड़ीके डंडेपर निकाल कर लपेट लिया जाता था। उसपरकी फटकी आदिको साफ कर हाथसे ही ऐंठन चढ़ाई जाती थी। इस पुरानी परिपाटीमे परिवर्तन करनेका उद्योग करने वाला एक फ्रान्सीसी यंत्रकार था। इसका नाम वाकैन्सन (Mr. Vancanson) था। इसने आर्डेची प्रान्तके पोन्ट-उ-आनिन्स

स्थानमें सन् १७५० ई० में एक उद्योग शाला स्थापित की और वहीं खोजका कार्य आरम्भ किया गया। इस समय तक इस उद्योगमें पूर्ववालोंका ही प्रधान स्थान रहा। १९ वीं शताब्दीके आरम्भ से योरोपवालोंने इस ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया और थोड़े ही दिनोंमें वैज्ञानिक पद्धतिका जन्म हुआ। इसकी व्यवहारिक कार्य शैली और परिणामकारी सफलताको देख कर पूर्वीय देशवालोंने भी इसी पद्धतिका अनुसरण किया। तबसे यही सुधरी हुई परिपाटी संसारके समुन्नत देशोंमें पायी जाती है।

आज कल इस कार्यशैलीमें भी दो प्रकारके ढंग हो गये हैं जिनमेंसे एकको फ्रान्सीसी और दूसरेको इटैलियन कहते हैं।

फ्रान्सीसी पद्धतिके अनुसार दो तारसे चार और छ तार तक एकमें मिले हुए होते हैं और इटैलियनके अनुसार सुलझाई गयी रेशममें एक तारसे आठ तार तक एक ही में मिले हुए आते हैं। आज कल अमेरिकामे इस उद्योगमें भी बिजलीसे काम लिया जाने लगा है।

कच्ची रेशमकी वैज्ञानिक परीक्षा

साधारण कुसियारीका वजन १५ से ५० ग्रेन तक होता है। इसमेंसे $\frac{1}{6}$ भाग तो शुद्ध कुसियारी होती है और उसमेंसे भी केवल आधी ही अच्छे ढंगसे सुलझाई जा सकती है शेषमें कूड़ा करकट रहता है। अतः यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता कि रेशमका एक कीड़ा कितना लम्बा रेशमका तार उत्पन्न करता है। फिर भी देखा गया है कि ५०० मीटरसे १२०० मीटर तक लम्बा तार निकलता है। जिसका वजन औसत कुसियारी पर १ किलोग्राम शुद्ध रेशमका बैठता है। रेशमके तारकी मोटाईके सम्बन्धमे लीक (Leek) नगरके सर थामस वार्डलेका मत है कि [illegible] से [illegible] इंच तकका मोटा तार होता है। स्मरण रहे यह पालतू कीड़ेकी रेशमका प्रमाण है पर जंगली कीड़ेकी रेशमका तार [illegible] से [illegible] इंच तक मोटा होता है।

रेशममें १० से १५ प्रति शत जलका भाग रहता है। यदि उसे २५० °F तक तपाया जाय तो वह अपना जलांश छोड़ देता है। यही कारण है कि जलांश रहित सूखी रेशम पर बिजली का तात्कालिक प्रभाव होता है। इसलिये रेशमके तंतु मुलायम रखनेके लिये उन पर ग्लैसरीनका प्रयोग किया जाता है। रेशमपर आक्-साइड आफ लेड (Ovside of Lead) का कुछ भी प्रभाव नहीं होता पर उसको यह काला कर देता है। नाइट्रिक एसिडमें रेशम घुल जाता है पर ऊनपर इस एसिडका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। पिक्रिक एसिडमे रेशम चमकदार पीले रंगकी हो जाती है पर अन्य प्रकारके तन्तुपर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता है। सूक्ष्मदर्शी यंत्रसे देखनेपर रेशम [illegible] समान नम और सीधी प्रतीत होती है पर दूसरे रेशे वैसे नहीं मालूम होते। इन्हीं कारणोंसे रेशमको ऊन तथा रुई आदिसे सहजमें पृथक किया जा सकता है।

रेशमके तारोंकी परीक्षा

रेशममें जलांश अधिक रहता है पर बाहरसे वैसा प्रतीत नहीं होता अतः खरीदारको चाहिये कि रेशमके तारोंकी नमीकी जांच वह प्रथम ही करले। रेशमको वजन करनेके प्रथम सुखा देना चाहिये और फिर ११ प्रति शत उसकी वजनसे जलका अंश निकाल कर रेशमका वजन मानना चाहिये। योरोप अमेरिकामें रेशमके तारोंको नमी जांचनेके लिये स्वतंत्र रूपसे स्थान निश्चित कर दिये गये हैं। इन स्थानोंमें व्यक्त वजन ही सच्चा और वास्तविक वजन माना जाता है। इन स्थानोंको * कण्डिशनिङ्ग हाउस (Conditioning House) कहते हैं। संसारके किन २ देशोंके किन किन स्थानोंपर ऐसे भवन है उनका विवरण नीचे दिया जाता है।

फ्रान्समें— लियान्स, सेन्ट इटने, पेरिस, अवेनस, अविगनान, प्राइवस, मार्सलोज, बैल्टेन्स, नाइम्स, रुबे, और अमीन्स।

इटली—मिलैनों, टारिनों, बर्गामों, लेको, पूडाइन, फिरेनझे, ब्रेशिया, ऐनकोना, पेसारो, जिनेवा, कामों।

जर्मनी—क्रेफेल्ड, इबेर फेल्ड

स्वीट्झलैंण्ड—झूयूरिक

जापान—याकोहामा

चीन—शंघाई

अमेरिका—न्यूयार्क

रेशमकी उबलनेवाली परीक्षा

बुनने की रेशमकी उबालकर परीक्षा करनी पड़ती है। इससे तारपर लगा हुआ गोन्द छूट जाता है। साथ ही यह हलकी भी हो जाती है और साफ हो जानेके कारण उसपर रंगतेही चमक आजाती है। योरोपमें उबालकर रेशम साफकी जाती है और सुखाकर वेंची जाती है। कौनसी रेशम उबालनेके बाद कितनी अनुमानतया कम हो जाती है यह नीचे अनुसार जानना चाहिये।

जापानी सफेदका—१८	से	२१	प्रतिशत	वजन	कम	हो	जाता	है।
जापानी पीलीका—२१	से	२३	"	"	"	"	"	"
इटैलियन सफेदका—२०	से	२२	"	"	"	"	"	"
इटैलियन पीलीका—२०	से	२३	"	"	"	"	"	"

* विस्तृत जानकारीके लिये देखिये।
The Value of condition is Publishad by United States testing Company of New York

चीनी (भाफद्वारा सुलझाई हुईका)—२० से २३ प्रतिशत वजन कम हो जाता है।
कैन्टनका —२० से २३ " " " " " " "
टसरका —८ से १४ " " " " " " "

इस प्रकारकी सभी परीक्षा उपरोक्त कनडिशनिङ्ग भवनोंमें होती है पर वहां रेशमके ढेरकी कुछ ही गाठे परीक्षार्थ भेजी जाती है अतः पूर्ण रूपसे उसे परीक्षित नहीं माना जाता। विशेष प्रकारकी परीक्षा तो इन्स्पेक्टर लोग ही करते हैं। इनकी परीक्षा प्रमाणिक मानी जाती है। तारोंपर एक प्रकारकी काजी देकर उन्हें कड़ा किया जाता है। अतः रेशमके सम्बन्धमे जहा उबालने, नमी दूर करने, और ११ प्रतिशत जलांश माननेकी परीक्षा होनी आवश्यक रहती है वहां तारों पर की गयी काजीका हलका पन, तार लपेटनेका रंग, रङ्गोंके अनुसार रेशमकी छटाई और टेरोंका मेल तैयार किया जाना भी देखना आवश्यक ही रहता है। रंगके अनुसार छाटी गयी रेशमसे कारखाने वालोंको रंगके सम्बन्धमे सुविधा मिल जाती है और वे सरलतासे जान लेते हैं कि कौनसे टेरकी रेशममे कौनसा रंग सरलतासे चढानेमे सुविधा रहेगी।

फ्रान्सकी रेशम — हलकी या गहरी पीली होती है।
इटली " " " " " " "
स्पेन " " " " " " " "

जापान—ऊमेन, रिकूमेन, वुशीपूकी रेशम—मलाईकी भांति सफेद
" सिनसीपू, मिनो, शिमोशा — साधारण रूपसे सफेद
" कोशू — मटमैली सफेद
चीन— शंघाईकी रेशम — बिलकुल सफेद
कैन्टन की रेशम — सफेदी मायल मलाईका रंग
लीवान्त—मकदूनिया की रेशम — हलकी पीली,
एड्रियानोपल " " — बिलकुल सफेद
बल्गेरिया " " — मलाईका रंग
ब्रूसा " " — सफेदीमायल मलाईके रंगकी।
सीरिया " " — सुनहरी पीली
परेशिया " " — हरी मायल
भारत—बंगाल " " — सोनेके समान चमकदार पीली।

अत उपरोक्त प्रकारकी सभी परीक्षाओंके बाद ही रेशमकी श्रेणी निश्चित की जाती है

और श्रेणीके अनुसार ही यह भी निश्चय किया जाता है कि किस श्रेणीकी रेशम किस प्रकारके काममें सकती है।

रेशमके औद्योगिक केन्द्र

योरोपमे रेशमकी उपजके प्रधान केन्द्र इटली और फ्रान्स माने जाते हैं।

इटली—संसारमें उत्पन्न होनेवाली रेशमकी दृष्टिसे इटलीका स्थान बड़े महत्वका माना जाता है। रेशम सुलझानेके यहा १०३६ से अधिक कारखाने है। जहा अनुमानतया एक करोड़से एक करोड़ बीस लाख रतल कच्ची रेशम सुलझाई जाती है। यहा प्रतिवर्ष १ करोड़ २० लाख रतल कुसियारी विदेशसे आती है जिसको सुलझाकर रेशम तैयार की जाती है।

यहावाले कुसियारीकी छंटाई इस प्रकार करते हैं।

१ खुली कुशियारी—जिसमे कीड़ेका काम अधूरा रह जाता है।

२ मुन्दी कुशियारी—जिसमें कीड़ा काम समाप्त करनेके पहिले ही मर जाता है।

३ गंदी कुशियारी—जिसमें कीड़ा मर जानेसे दुर्गंध आती है।

४ अधरी कुशियारी—जो काती जाती है।

५ दोहरी कुशियारी—जिसमें दो कीड़ोंका काम उलझ जाता है।

इटलीमें कुशियारीका मूल्य दो प्रकारसे होता है। एक तो प्रत्येक स्थानका चेम्बर आफ कामर्स मूल्य स्थिर कर देता है और दूसरे बाजारका सेरीकल्चरल एसोसियेशन। रेशमके व्यवसाय सम्बन्धी सभी झगड़ोंका फैसला यहाका सिल्क एसोसियेशन करता है।

रेशमके उद्योगको प्रोत्साहन देनेके लिये यहां सब प्रकारकी सुविधायें हैं। रेशमके कारखानोंमें काम करनेवालोंके जीवनका बीमा रहता है। मिलानोंके सेरिका एसोसियेशनकी ओरसे रेशम सम्बन्धी औद्योगिक शिक्षाके लिये सायंकालके क्लास है और कमो (Camo) नगरमें रेशमके कीड़े पालनेकी शिक्षा देने तथा रेशमकी औद्योगिक शिक्षाका एक आदर्श कालेज भी है।

फ्रांस—संसारमे उत्तम रेशम और उत्तम रेशमी माल तैयार करनेमें फ्रान्स प्रधान केन्द्र माना जाता है। यहाके कारखानोंके लिये कुशियारी प्रायः यूनान, तुर्की, बल्गेरिया, सीरिया, तथा ककेशियासे ही अधिक परिमाणमें आती है और मार्सेलीज नामक बन्दरके बड़े २ गुदामोंमें भरी रहती है। यहां अनुमानतया १६१ रेशमके कारखाने हैं। फ्रांसके रेशमका प्रधान औद्योगिक केन्द्र लियान्स (Lyons) है।

रेशमका सबसे अधिक परिमाण तो अमेरिकामें मिलता है पर मालकी उत्तमता, मालका मानव अभिरुचि जनित मनमोहक रंगढंग, एवं मालकी तड़क भड़क आदिके सम्बन्धमें फ्रान्सका

स्थान संसारमें सर्वोच्च है। फ्रान्सके रेशमी मालका भण्डार लियान्सके करघोंमें भरा रहता है। फ्रांसके निर्यात्‌में बहुत बड़ा हिस्सा रेशमी मालका रहता है।

अमेरिकाके समान बड़ी बड़ी पूंजीसे हजारों मनुष्यों द्वारा चलनेवाले बड़े बड़े कारखानोंका लियान्समें पूर्णतया अभाव ही मिलेगा। यहा तो केवल तैयार मालके व्यापारियों और मिलवालोंके पारस्परिक सहयोगके बलपर ही सारा काम होता है। लियान्समें व्यापारियोंके कारखाने नहीं है वे लोग अपने आर्डर जुलाहोंको देते है और डिजाइनके अनुसार अच्छे से अच्छा माल उनसे लेते हैं। शेष समयमें लियान्सके व्यवसायी संसारमें फैशनके उतार चढ़ाव तथा जन-समाजकी ऊँची नीची अभिरुचिका अध्ययन किया करते हैं और इस अनुभवके अनुसार माल तैयार कराते । इस काममे इन व्यापारियोंको मालका डिजाइन तैयार करनेवाले कारखानेवाले जुलाहे रंगसाज और तैयार मालको बाजारमें बेचने योग्य सजधज एवं रूप रंगका स्वरूप देनेवालोंका पारस्परिक सहयोग मिलता है। अतः लियान्सके व्यवसायी अपने प्रतियोगियोंसे सदैव बाजी मार लिया करते हैं। लियान्स नगरमें आज कल १५ हजारसे अधिक करघे नकाशीदार माल तैयार करनेका काम कर रहे हैं। यह अवस्था केवल नगर ही की नहीं है वरन आसपासके गावोंमें भी किमखाप वगैरः बराबर तैयार होता है। यहाके रंगसाज बड़े ही अनुभवी और उच्च श्रेणीके माने जाते हैं। यहांका मनमोहक माल पेरिसके बाजारमें अपनी निराली छटाके साथ दिखायी देता है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष इंग्लैण्ड, रूस, जर्मनी, अमेरिका आदि देशोंके हजारों व्यापारी माल खरीदनेके लिये स्वयं पेरिसमें आकर वहांकी गलियों में चक्कर काटा करते हैं। लियान्स नगरके समीप ही सेन्ट इटने है जहा सभी प्रकारके रेशमी फीते बहुत अधिक तैयार होते हैं।

रेशमी मालमें लियान्सका सामान अभी तो सर्वोत्कृष्ट माना जाता है यहांके कौशलपूर्ण रेशमी मालका अच्छा संग्रह अजायब घरमें (Art musium of lyons) है। जिसे देखकर मंत्रमुग्ध हो जाना पड़ता है।

लीवान्त —इसके अन्तर्गत यूनान, बलगेरिया, सीरिया, ककेशिया, पर्शिया तथा साइप्रेस माने जाते हैं। यहा रेशम यथेष्ट रूपमें पैदा होता है पर यहांके व्यवसायपर योरोपवालोंका ही पंजा है। यहांकी कुसियारीका आधेसे अधिक भाग इटली और फ्रान्सको चला जाता है। यहां कुसियारीकी फसल जूनके अन्तमे तैयार होती है अर्थात्‌ जापानकी फसलके ३ सप्ताह बाद और कैन्टनकी फसलके ६ सप्ताह बाद। कुसियारीसे रेशमके तार सुलझानेका काम जुलाईसे आरम्भ होता है। यहां कुसियारीके प्रधान बाजार ये हैं। ब्रूसा, मौउडानियां, इस्मिद, अदा बाजार, बिलेजिक, ऐड्रियानोपल, सलोनिका, वनाऊम, वेरूथ, और सिमिर्ना। इन बाजारोंके पास ही रेशम सुलझानेके कारखाने हैं। भद्रा

माल लोग घरमे रख लेते हैं और अच्छा विदेश भेजते हैं। तुर्कीके ब्रूसा स्थानमें रेशम सुलझानेका बहुत बड़ा काम होता है। सीरियाके रेशमके कारखानों पर लियान्स और जर्मन व्यापारियोंका पंजा है।

जापान—चीन और जापानने रेशमके व्यवसायमें महान उन्नतिकी है। यहां रेशम सुलझाने का योरोपियन पद्धतिके अनुसार काम होता है। इन दोनों ही देशोंकी सारी रेशम संयुक्तराज्य अमेरिका खरीदता है। अतः यहांकी रेशमकी बिक्रीका प्रधान बाजार न्यूयार्क है।

जापान मे रेशम उत्पन्न करनेके प्रधान केन्द्रोंमें हाचीओजी, हामासाकी, गवाकी समस्त घाटी तथा कोशूकाई प्रान्त माने जाते हैं। इन स्थानोंमें रेशमके कीड़े पालनेका काम जोरोंसे होता है। कोफू, याजीमा, बकाऊ, कोसेइशा, कानानशा, क्यूपोशा, हकुरेइशा, कोयोकान, फुसोशा, असा-हिशा, यामाटोगूमी, यवाटा, कुसानगीशा, तथा मित्सूबीशीमें रेशमकी लच्छियाँ बनानेका काम जोरोंसे होता है। जापानमें रेशमका प्रधान बाजार याकोहामा माना जाता है। वहींके रूखको देख कर देशके सभी रेशमके औद्योगिक केन्द्र रेशमका सौदा करते है। फसलमें यहाके कारखाने प्रायः प्रातःकालसे रातके ११ बजे तक काम करते है। यहांके कारखानोंके लिये कुसियारी अन्य देशोंसे भी बहुत बड़े परिमाणमें आती है। ये कारखाने रेशमकी लच्छियाँ तैयार करके अमेरिकाके हाथ बेंचते है।

चीन—की रेशमका प्रधान बाजार शंघाई है जहां कई प्रकारका रेशम बिकनेको आता है। यहांके कारखानोंका समस्त प्रबन्ध भार यूरोपियनों पर ही है। यहांका अधिक माल लियान्स के कारखानोंमें खपता है अतः यहांके बाजारका रुख लियान्सके बाजार पर निर्भर रहता है। यहांकी रेशमकी तीन प्रधान श्रेणियाँ हैं। जिन्हें क्रमानुसार चाइना एक्सट्रा, सटलीस, और हैङ्गचाऊ कहते है। यहां टूसा नामक जंगली रेशम भी होती है जो अमेरिका जाती है।

उपरोक्त प्रकारकी ३ श्रेणियोंके अतिरिक्त ऊपङ्गस, वानचेउस, ऊङ्गईस, पचाउस, सफेचाङ्ग आदि कई तरह की रेशम और भी होती है। इनका रंग पीला और माल मोटा होता है।

कैंटन—यह स्थान चीनके दक्षिणी प्रदेशकी रेशमके व्यवसायका प्रधान केन्द्र है। चीनके दक्षिणी भूभागके सभी रेशम उत्पन्न करने वाले केन्द्रोंका माल यहीं परीक्षार्थ आता है। फिर भी मैकाओ नामक केन्द्रका रेशम यहां नहीं आता है। विदेशी व्यापारी स्वयं ही मेकाओ जाकर रेशमका सौदा करते हैं। यह नगर पुर्तगाल वालोंके हाथमें है। यहाके कारखाने आधुनिक सुधरी हुई पद्धतिके अनुसार काम नहीं करते। यहांका जलवायु कुछ ऐसा विचित्र है कि कारखानोंमें सदा आग जलानी पड़ती है। यहाकी रेशमको अमेरिकाका सिल्क ऐसोसियेशन अच्छी रेशम नहीं मानता।

कैन्टन की रेशम गर्ददार और कमजोर होती है। तथा उसका रंग सफेदी मायल होता है और तार कमजोरीके कारण सहजमें रंगा भी नहीं जा सकता।

काङ्गटुङ्ग—प्रान्तमें प्रायः ५ सौ ऐसे कारखाने हैं जहा रेशम सुलझानेका काम होता है। यहा यूरोप भेजी जाने वाली रेशम एक विशेष प्रकारसे सुलझाई जाती है और अमेरिका भेजी जाने वाली दूसरी पद्धति से।

इण्डो चाइना—यह भूभाग फ्रान्सके शासनान्तर्गत है। यहा पाश्चात्य पद्धतिके अनुसार कीड़ोंका पालन करना आरम्भ किया गया है। इसी प्रकार रेशम सुलझानेके कारखानोंकी भी पूरी व्यवस्था पाश्चात्य पद्धतिके अनुसारकी गयी है। यहांके नाम-डिङ्ग (Nam Ding) और टाइबिङ्ग (Tai Bing) नामक स्थानोंकी रेशम कैन्टनकी रेशमसे अच्छी होती है। यहांकी रेशमकी फसल वादेके सौदेकी भाँति पहिले ही बिक जाती है। यहांकी रेशमकी प्रतिष्ठा और माग लियान्स (फ्रान्स) के रेशमके कारखानोंमें बहुत है।

भारत—यहांका रेशम प्रायः ४ प्रकारका होता है जिसे क्रमशः शहतूती मूंगा अण्डी और टसरके नामसे पुकारते हैं।

शहतूती—रेशम उत्तम प्रकारकी रेशम होती है। इसे पालतू रेशमके कीड़े शहतूतकी पत्ती खाकर पैदा करते हैं। यह प्रथम श्रेणीकी रेशमके अन्तर्गत मानी जाती है। भारतमें प्रायः शहतूती रेशम मैसूर राज्य और उसीके समीप कोयंबतूर जिलेके कोलेगाल तालुकेमें, बंगालके मुर्शिदाबाद, माल्दा, राजशाही और वीरभूमि जिलेमें, काशमीर और जम्मूकी झेलमघाटीमें, तथा इसी भूभागके पञ्जाब प्रान्त और सीमान्त प्रदेशमे अधिक उत्पन्न होती है। मैसूर और बंगालमें फ्रेञ्च और जापानी रेशम विशेषज्ञोंकी देखरेखमें काम चलाया गया है। काश्मीरमें भी पाश्चात्य पद्धतिके अनुसार रेशमका उद्योग आरम्भ किया गया है। इस प्रकार बैंगलोर और श्रीनगरमें योरोपियन लोगोंकी देखरेखमें रेशम सुलझानेके बड़े कारखाने काम कर रहे हैं। मुर्शिदाबाद जिलेमें ५ बड़े बड़े कारखाने हैं जहा भारतीय पुराने ढंगसे रेशम सुलझाई जाती है। अकेले काशमीरसे प्रायः २ लाख रतल रेशम विदेश जाती है।

मूंगा—रेशम शहतूती रेशमके कीड़ेके समान पालतू कीड़ेकी रेशम होती है। यह देखनेमें सुहाविनी चमकदार सुनहरे रङ्गकी होती है। यह मजबूत रेशममें मानी जाती है। यह साधारणतया आसाममें अधिक होती है। पर प्रधान रुपसे आसामके पूर्वीय भाग, नागा पहाड़ीके पास, त्रिपुरा जिले तथा ब्रह्मामे उत्पन्न होती है। इसी प्रकार कुमायूं और कागड़ाकी घाटीमें भी मूंगा रेशम उत्पन्न होती है। इस रेशमके बीज कामरुपके बाजारमे बिकते है। इसका प्रधान बाजार गोहाटी डिब्रूगढ़ (आसाम) हैं।

अरण्डी – रेशमके कीड़े अर्धपालतू होते हैं वे अरण्डीके पत्ते खाते हैं। इनकी कुसिया-रीसे रेशम सुलझाया नहीं जासकता अतः इसका रेशमी तार कातकर निकाला जाता है। यह पूर्वीय बंगालमें अधिक उत्पन्न होती है और बाजारमें आसाम सिल्कके नामसे बिकती है। इसका सूत कम चमकीला और मटमैले रंगका होता है, पर मजबूत बहुत होता है, इसका प्रधान बाजार गोहाटी और डिब्रूगढ़ है।

टसर—रेशम वास्तविक रूपसे जंगली रेशम है। यह विहार उड़ीसा और मध्य प्रदेशमें अधिक उत्पन्न होती है। टसर प्रायः पीली, मटमैली, भूरी और हरी मायल भी देखी जाती है। टसरके धोने, कातने और रंगनेकी युक्ति भी है जिससे यह चायना सिल्ककी भांति चमकीली वन जाती है, इस प्रकारकी रेशमके प्रधान बाजार भागलपुर, विलासपुर, चांपा, आदि है।

संसारके किस बाजारमें कौनसी रेशमकी मॉग रहती है

भारतीय रेशम—यहांकी रेशमकी अधिक मांग यहींके करघोंके लिये रहती है। पर उत्तम श्रेणीकी रेशम फ्रान्स, इटली और बृटेनके कारखानेवाले खरीदते हैं।

जापानी – अमेरिकन मिलोंमें जापानी रेशमकी मांग रहती है। वहांके आधेसे अधिक खरीदार तो ऐसे है जो दूसरी रेशम छूते तक नहीं।

चाइना—मोटामाल तैयार करनेवाले रेशमके कारखाने ही इसे अधिक खरीदते है। यह मोटी इटैलियन रेशमसे अच्छी होती है।

टैस्टलीस—रेशमसे सीनेकी रेशमका सूत तैयार करनेवाले अधिक खरीदते हैं। यह रेशम मोटे मेलकी रेशम होती है।

टूसह—यह रेशम जंगली होती है। कालीन बनानेवाले ही इस रेशमको खरीदते है। यह रेशम कुछ तो काटन मिलवाले, कुछ मिलानेके लिये, तथा विजलीके तार वनानेवाले मिल भी खरीदते है। इसी प्रकार नकली शन्टुङ्गस तथा नकली पौजी तैयार करनेवाले भी इसे खरीदते हैं।

कैराटन—क्रेप (Crepe de chine) तथा मखमल तैयार करनेवाले मिल खरीदते हैं। इसे जापानी रेशमी सूतके साथ मिलानेका काम करनेवाले भी खरीदते हैं।

पीली इटैलियन—यह रेशम अमेरिकावाले ऊँचे दर्जेका माल तथा साटन तैयार करनेके लिये खरीदते हैं। इस रेशमके वेलन भरकर सूती मिलोंके हाथ बेचे जाते है।

सफेद इटैलियन—लीवान्त भूभागकी कुशियारीसे यह रेशम इटलीमें तैयार की जाती है। ऐड्रीयानोपलकी अच्छी रेशम चीनी रेशमकी भाँति होती है और उसीके समान बिकती है। तुर्कीकी रेशम यदि मोटी और सस्ती जापानी रेशमकी भाँति हो तो इसकी भी मांग बढ़ सकती है।

भारतमें रेशमका व्यवसाय

भारतमें रेशमका व्यवसाय बहुत पुराने समयसे होता आया है। इसके उद्योग धन्धेका प्रधान केन्द्र बंगाल ही रहा है। यही कारण है कि भारतमें रेशमके व्यवसायकी चर्चा छिड़ते ही बंगालके विस्तृत औद्योगिक क्षेत्रका सहसा स्मरण हो आता है। बंगाल प्रान्तसे ही रेशमके कीड़े पालने, रेशम सुलझाने तथा रेशम बुननेकी कलाने भारतके अन्य प्रान्तोंमें प्रवेश किया। इस्वी सन् की दूसरी शताब्दीमे भारतका रेशम और रेशमी माल योरोपके रोम नगरको जाता था। रोम सम्राट्, यूरोपके धनकुबेरों, तथा ख्याति प्राप्त महापुरुषोंको संसारके किसी भी भागका रेशम सन्तुष्ट नहीं कर सकता था। क्योंकि वे भारतके मालपर ही लट्टू थे। बगदादके खलीफा लोग भी भारतकी ही रेशमका उपयोग करते थे। यह आरम्भ कालीन युगकी चर्चा है मध्यका लीन युगमें भी भारतके रेशमका व्यवसाय अच्छो उन्नत अवस्थामें था। नूरजहां ऐसी वेगमको भी भारतीय रेशमके कपड़ेकी धुनसी सवार थी, जब वह अपने प्रथम पतिके साथ बर्द्ववानमें रहती थी तो वीर भूमिका वना हुआ उच्च श्रेणीका रेशमी माल व्यवहार करती थी। बंगालके रेशमके उद्योगको प्रोत्साहन देनेके लिये उसने अधिकारियोंको रेशमी परिधानाच्छादित रहनेकी आज्ञा निकाली थी। इसीके वादका ऐतिहासिक प्रमाण बताता है कि उस समय माल्दाके किसी व्यापारीने तीन जहाज रेशमी माल रूसको भेजा था। अकेले माल्दा से प्रतिवर्ष ५० जहाज रेशमी सूती माल योरोप में आ जाता था। ट्रैवर्नियरका कहना है कि कासिम बाजारसे २२ लाख रतल रेशमकी लच्छियां विदेश गयीं थी। भारतसे डच लोग प्रतिवर्ष ७० लाख रतल रेशमकी लच्छियां जापान और वृटेन भेजते थे। पर आज उसी बंगाल प्रान्तमे रेशमके उद्योगका एक प्रकारसे अन्त हो चुका है। एक वह भी समय था जब इस प्रान्तके रेशमी उद्योगके समान अतुल वैभवका परिचय प्रथम बार पा* डच और अंग्रेज अपनेको कृतार्थ मान बैठे थे। और एक दिन आज है भारत रेशमी मालके लिये विदेशपर निर्भर रहता है। एक दिन वह था जब यहाका माल कड़े प्रतिवन्धके होते हुए भी वृटेनके बाजारमें अपने प्रतियोगियोंको मुंह की खिलाता था इस प्रतियोगिताका विवरण † सर जार्ज

* इस घटनाका मनोरजक विवरण देखिये *Early Annals of the English in Bengal By C R. Wilson*

† *A law was passed by which all wrought Silk mixed stuff and figured Calicoes—the manufactures of Persia, China, and East Indies was forbidden to be worn or otherwise used in Great Britain It was practically designed for the protection of the Spitalfields Silk Manufacture but proved of little or no avail against the prodigious importation and tempting cheapness of Indian piece-goods at that time (Industrial India by Sir George Birdwood)*

वर्डउड अच्छे ढंगसे दिया है। और आज वही बंगाल प्रान्त और साथ ही भारत देश आज इस कलासे अनभिज्ञ हो अपनी सामाजिक* रुढ़ियोंका पालन करनेके लिये भी असमर्थ है।

भारतमें रेशमके व्यवसायकी वर्तमान अवस्था

संसारकी देखा देखी भारतीयोंने भी अपने उद्योग धन्धेकी ओर निगाह उठाकर देखना आरम्भ कर दिया है। इस समय भारतमें कितने ही स्थानों पर रेशमके कीड़े पाले जाते हैं और आधुनिक पद्धतिके अनुसार यहाके कारखानोंमें रेशम सुलझानेकी व्यवस्था की गयी है। ये केन्द्र प्रधान रूपसे मैसूर राज्य, मध्य प्रदेश, विहार उड़ीसा, बंगाल और आसाममें है। यहांकी रेशम भारतके कारखानोंके काम आती है और विदेश भी भेजी जाती है। विदेशके खरीदारोंमें क्रमानुसार फ्रान्स, इटली, बृटेन और श्याम है। कराची, बम्बई, और कलकत्तासे रेशम विदेश जाती है और मद्रासमे मैसूरका वेस्ट सिल्क तथा कुसियार वाहर जाते हैं।

भारतमें रेशम बुननेके भी कारखाने हैं। यहाके औद्योगिक केन्द्र मुर्शिदाबाद तंजोर,बनारस, सूरत, अमृतरस, चिंगलेपट, मदुरा, और मण्डाले ही माने जाते हैं। इन केन्द्रोंके कारखानोंमें भारतकी रेशमके अतिरिक्त शंघाई और जापानसे भी रेशम बुननेके लिये आती है। विदेशी रेशमकी खपतका अनुमान इस प्रकार है बम्बई प्रान्तमें प्रति वर्ष ८ लाख रतल, और मद्रासमें ८ लाख रतल (जिसमें कोयमबतूर जिलेके कोलेगालनगरमे ३६०००० रतल, मैसूरसे ३००,००० रतल बंगालसे ४०००० रतल और चीनसे Via तूतीकोरिन और बम्बई १ लाख रतल) रेशमकी खपत है। इसमेसे बहुतसा सामान भारतमें विकता है और शेष फारसकी खाड़ीसे विदेश जाता है।

उन्नतिके उपाय या पतनके कारणोंका मनन

आधुनिक युगकी व्यापार नीतिका झुकाव माल तैयार करने वालों और माल बेंचने वालोंमें पारस्परिक अभिन्न सहयोग संस्थापनकी ओर है। इस सिद्धान्तकी दृष्टिसे भारतके औद्योगिक जीवनकी दशा अत्यन्त शोचनीय है। जहा दूसरे देश अपने उद्योग धन्धेकी रक्षा करनेके लिये बाहरसे आनेवाले माल पर अत्याधिक कर बैठा देते हैं और कच्चे मालको देशसे बाहर नहीं जाने देते हैं वहा भारतमें व्यापारिक क्षेत्रमें मुक्तद्वार नीतिसे काम लेना उचित और भारत राष्ट्रके लिये 'हितकर' माना गया है। कर वृद्धिकी बातका प्रमाण बृटेनमें जाने वाले भारतीय कपड़े पर बृटिश सरकार द्वारा लगाया गया अत्याधिक कर है औरकच्चा माल वाहर न भेजनेके सम्बन्धमें रेशमकी कुसियारी विदेश न जाने पावें इस उद्देश्यसे

---

* ऋगवेदमें लिखा है कि "क्षौम वसने...... ...मधीयताम्" अर्थात् विवाहके अवसर पर कन्या अग्निकी साक्षी देते समय रेशमी परिधान कर आसन पर बैठे। हिन्दुओंमें पूजाके समय रेशमी वस्त्र पहिनना सर्वोत्तम माना गया है। कहीं कहीं भोजन करते समय रेशमी वस्त्र धारण करना अनिवार्य लिखा है। साथ ही विदेशी रेशमी वस्त्रका व्यवहार करना निषेध बताया गया है।

जापान सरकारका कानून है। जापान सरकारने एक कानून पास किया था जिसके सम्बन्धमे लिखा है कि—The yamamai is so highly prized in Japan that by law, capital Punishment may be meled out to any person Exporting the soed cocoons or eggs कुसियारी विदेश भेजने वालेको प्राण दंड तक दिया जाता था।

भारतमें रेशमके व्यवसायमें भी अवस्था तो यह है कि यहा रेशमके बीज तक कोई संचित नहीं रखता और न किसीका ध्यान ही इस ओर है। इसके प्रतिकूल यहा बाजारमें सरकार और प्राइवेट फर्में कुसियारी बीज वेचती है। कीड़े पालनेवाले इसे बिना परीक्षा किये खरीदते है। बीमार और छूतदार अंडोंके कारण रेशमकी पूरी फसल नष्ट हो जाती है। जमीदारोंने शहतूत बोये जाने वाले खेतोंका लगान बहुत बढा रक्खा है। अतः बाध्य होकर जंगली शहतूतोंकी झाड़ियों पर रेशमके कीड़े पाले जाते हैं। यह आर्थिक उपज पर धक्का देता है और मालका मोल इतना बढ़ जाता है कि रेशम सुलझाने वाले इसे खरीद नहीं सकते जिससे विवश हो काम छोड़ बैठ जाते हैं। यह है रेशमके व्यवसायके सर्वनाशका स्वरूप।

इन सब कारणोंके अतिरिक्त देशके उद्योग धन्धेको मरणासन्न अवस्था पर ले जाने वाली भयानक शत्रु है विदेशियोंकी प्रतियोगिता जो नौकरशाहीकी मायावी 'मुक्तद्वार व्यापार' नीतिसे लालित पालित हो घूर घूर कर देख रही है।

कलकत्ता

CALCUTTA.

कलकत्ता

कलकत्ता नगर जो कुछ समय पूर्व भारतकी राजधानीके नामसे सम्बोधित किया जाता था आज भी बृटिश साम्राज्यान्तर्गत एक महत्वपूर्ण नगर माना जाता है। जन संख्याकी दृष्टिसे यह नगर भारतका प्रथम और उक्त साम्राज्यका दूसरा नगर है। समुद्री बन्दरगाहोंकी श्रेणीमें भारत स्थित बम्बई बन्दरके बाद यही माना जाता है। यहां अनुमानतया २६,५१,८४६ टन मालका वार्षिक प्रवेश माना जाता है अर्थात् ६,६२,६२,००० पौण्ड मूल्यका समुद्री व्यापार यहांसे प्रतिवर्ष होता है। यह विशाल नगर बंगाल प्रान्तके २४ परगना इलाकेमें हुगली नदीके बायें किनारेपर ३० वर्गमीलके विस्तृत क्षेत्रपर बसा हुआ है। इस नगरसे लगभग ८६ मील दक्षिणकी ओर बंगाल उपसागर हिलोरें ले रहा है। नगरके चारों ओर फैले हुए उपनगर औद्योगिक जीवनके मूर्त्तिमान नमूने हैं।

इतिहास

इस भूभागकी चर्चा यों तो महाभारतके समान भारतके प्राचीन ग्रन्थोंमें पायी जाती है पर इस नगर विशेषका उल्लेख १५ वी शताब्दीके मध्यकालीन युगतक नहीं मिलता। हां सन् १४९५ ई० के लगभग लिखी गयी बंगभाषाकी एक पद्य रचनामें इस नगरका नाम अवश्य पाया जाता है। बंग कवि विप्रदासने अपनी पद्य रचनामें लिखा है कि चांद सौदागर नामक किसी व्यापारीने बर्दवान से जहाजमें सवार होकर समुद्र तक यात्रा की थी। मार्गमें यह व्यापारी भातपारा और बरईपुरके बीच कितने ही नदी तटवर्ती गांवोंमें ठहरा था और कलकत्तेके पाससे ही गया था। उस समय इस भूभागपर किसका शासन था यह ऐतिहासिक प्रमाणके आधारपर निश्चित रूपसे नहीं कहा जा सकता परन्तु उस समयके साहित्य ग्रन्थोंके बलपर अनुमान होता है कि प्रतापादित्य नामक कोई हिन्दू राजा वहा राज्य करता था। सम्भवतः यह अकबरका सामन्त था फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि यह पूर्ण रूपसे स्वतंत्र था।

इसी प्रकार पं० राधाकुमुद मुकर्जीने अपने सुप्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थमें भारतीय जलयान कलाकी चर्चा करते हुए प्रतापादित्यके सम्बन्धमें लिखा है :—

"By far the most important seat of Hindu maritime power of the times in Bengal was that established at Chandi kan or Sagar Island, by the constructive genius of Pratapdity the redoubtable ruler of Jessore" अर्थात् उस समय बंगालमें हिन्दुओं की जल सेनाका प्रधान केन्द्र सागर द्वीपमें था। यह जेसोरके प्रतिभाशाली शासक प्रतापादित्य द्वारा स्थापित की गयी थी। उपरोक्त इतिहास विशेषज्ञने इस हिन्दू शासकके सम्बन्धको लेकर जो कुछ लिखा है उससे यही प्रतीत होता है कि प्रतापादित्यके जहाज सदैव सैनिक सजधजसे रहते थे इन्होंने तीन ऐसे केन्द्र स्थापित किये थे जहां जहाज बनाये जाते, जहाजोंकी मरम्मत की जाती तथा जहाज रहा करते थे। इनके यहां जलयान सेनामें एक पोर्तुगीज ऐडमिरल था जिसका नाम रोडा (Rodda) था। प्रतापादित्यकी* जल सेनाने आदि गंगा और विद्याधरी नदीके संगम पर मोगल सैन्यको पराजित कर दिया था।

उपरोक्त प्रमाणोंसे स्पष्ट हो जाता है कि सन् १४९५ ई० में यह नगर एक छोटेसे गांवके रूपमें था और इसके समीपवर्ती भूभाग पर प्रतापादित्य नामक एक हिन्दूराजा राज्य करता था जो पूर्ण रूपसे अपनेको स्वतन्त्र मानता था। इसके बाद ही योरोप वालोंका प्रवेश इस भूभागमें आरम्भ होता है।

सबसे प्रथम पोर्तुगीज वालों ने हुगली नदीमें सन् १५३० ई० के लगभग आना आरम्भ किया। हुगलीके पास ही प्राचीन सरस्वती नदीपर सतगाव नामक एक प्रभावशाली व्यापारी केन्द्र था अतः ये लोग वहीं आने लगे। फिर भी नदीके कम गहरी होनेके कारण इनके जहाज केवल गार्डन रीच तक ही आ सकते थे और वहांसे छोटी २ नावोंपर माल लादकर सतगाव पहुंचाया जाता था। इस प्रकारकी कठिनाइयोंके कारण ही शिवपुरके पास ही बेतौर गावमें बाजार लगने लगा और पोर्तुगीज लोगोंने इसी स्थानपर अपना अड्डा जमाया। १६ वीं शताब्दीके अन्तिम कालमें सरस्वती बिलकुल सूख गयी और सतगावका बाजार जो बेतोर बाजारके कारण पहिले ही शक्तिहीन हो चुका था सदाके लिये बन्द हो गया। यहांके कितने ही व्यापारी एवं नगर निवासी हुगली नगर में जा बसे पर ४ ऐसे परिवार थे जो वर्त्तमान फोर्ट विलियम नामक किलेके समीप गोविन्दपुर नामक स्थानमें गांव बसा कर वहीं रहने लगे। इसके कुछ समय बाद बेतोर खालीकर पोर्तुगीज लोग हुगली चले गये। इनके जानेके बाद बेतोर बाजारका व्यापार, हुगली न जाकर वर्त्तमान कलकत्तेके उत्तर सुतानटी नामक बाजारमें उठ गया। इसी सूतानटी बाजारमें सबसे प्रथम ईस्ट

* देखिये *History of Indian Shipping and Maritime Activity Page 218 by Pt Radhakumud*

इण्डिया कम्पनीके जाव कार्नाक सन् १६३६ ई० में आये और स्थानको देखकर वहीं ठहर गये। इनकी इच्छा यहां अड्डा जमानेकी थी परन्तु उस समयके मुगल शासकसे मनमुटाव हो जानेके कारण आप वहां वस न सके। पर इसी नवावने जावकार्नाकको सन् १६६० ई० में पुनः आमंत्रित किया। आपने आकर ता० २४ अगस्तके दिन वर्तमान कलकत्ता नगरकी आधार शिला रक्खी।

अभी थोडे ही दिन हुए थे कि सन् १६९६ ई० में वर्दमानके शोभासिंह नामक जमीदारने अंग्रेजोंके विरुद्ध वगावतका झगडा उठा दिया। अंग्रेज लोग क्षत्रीकी रोषपूर्ण भृकुटिसे भयातुर हो उठे और आत्मरक्षाके लिये दुर्ग निर्माण करनेकी आज्ञा नवावसे प्राप्त की। यह दुर्ग सन् १७०२ ई० में वन कर तैयार हो गया। इस दुर्गके तैयार होनेके ३ वर्ष पूर्व ही अंग्रेजोंने हुगलीके शासकसे कलकत्ता, सुतानटी तथा गोविन्दपुर नामक तीनों गांव खरीद लिये थे। अतः यह किला इन्हीं तीनोंके बीच वनाया गया। इस प्रकार यहां की वस्ती वढ़ने लगी और नगरकी उन्नतिका सूत्रपात हो गया। थोड़े ही समयमें जहाजोंके ठहरनेके घाट, अस्पताल और ईसाइयोंके गिरजाघरोंकी इमारतें भी वन गयीं। फलतः इसी वीच सन् १७०७ ई० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीने इसे एक स्वतंत्र इलाका ही घोषित कर दिया और इसका सम्बन्ध केवल लन्दनमें रहने वाले डायरेक्टरोंसे ही रह गया।

इस नव विकसित नगरपर वंगालके मुसलमान नवावकी दृष्टि सदा कड़ी रहने लगी और फल यह हुआ कि दिन दहाड़े आक्रमणोंका होना सामान्य वात हो गयी। कलकत्तेके अंग्रेजोंने कम्पनीकी ओरसे इसके विरुद्ध दिल्लीके सम्राटके पास शिकायत करनेके लिये अपने प्रतिनिधि भेजे। दिल्ली सम्राटने कम्पनीके अधिकारोंको स्पष्ट कर दिया और कम्पनीको स्थायी सम्पत्ति खरीदनेकी आज्ञा दे दी फिर भी नवावकी निश्चित मनोवृत्तिमें कुछ भी परिवर्तन न हुआ और पूर्ववत् आक्रमणोंकी आशंका वनी ही रही इसी वीच मराठोंके आक्रमण भी होने आरम्भ हो गये। ये लोग असमय आक्रमण कर वैठते थे अतः कलकत्ते वाले अपनी असहाय अवस्थासे व्याकुल हो उठे और आत्मरक्षार्थ सन् १७४२ में 'मराठा डिच' नामकी गहरी खाई खोदना आरम्भ कर दिया पर उसे पूरा न कर सके। वर्तमान सर्क्युलर रोड इसीके समीपसे गया है। कम्पनीके वढ़ते हुए व्यापार और मराठोंके आक्रमणोंसे भयभीत हो पासके कितने ही स्थानोंसे लोग आकर कलकत्तेमें वस गये। जिससे नगरकी उन्नतिको सहाय मिला।

इस प्रकारकी उन्नति करते हुआ कलकत्ता नगरका वैभव वढ़ रहा था कि सन् १७५६ ई० में वंगालके नवाव सिराजुद्दौलाने नगरपर आक्रमण कर दिया। कम्पनीकी देशी फौजने नवावके विरुद्ध पैर न जमाये और शीघ्र ही मैदानसे किनारा कर लिया। अव अंग्रेज अकेले रह गये। उनमें इतना सामर्थ्य न था कि वे नवावकी सैन्यका सामना करते ऐसी दशामें मैदान छोड़ कर वे लोग

किलेमें घुस गये। यह किला न तो इतना सुदृढ़ ही था और न किले पर चढ़ी हुई तोपें ही काम दे सकती थीं ऐसी दशामें किलेके अन्दर वाले भी अपने आपको सुरक्षित नहीं समझते थे। अतः कुछ अफसरोंको साथले किलेके पिछले द्वारसे गवर्नरने जहाजपर सवार हो हुगली नदीके जल मार्गसे भाग निकलनेमें विलम्ब न किया और किलेके शेष लोगोंके साथ हालवेलने नवाबकी फौजके सम्मुख आत्म समर्पण कर दिया। दूसरे वर्ष सन् १७५७ ई० में क्लाइव और जल सेनापति ऐडमिरल वाटसनने कलकत्ते पर पुनः अधिकार कर लिया। इसके कुछ समय बाद प्लासीका इतिहास प्रसिद्ध युद्ध हुआ और उसके बाद मीरजाफरने अंग्रेजोंको २४ परगनेकी जमीदारी दे दी और साथ ही नगरके आसपासके कितने ही गाव उन्हे भेंट दे दिये। नगरके व्यापारियों और कम्पनीके सेवकों को यथेच्छ क्षति पूर्ति भी दी गयी और कम्पनीको टकसाल स्थापित करनेकी अनुमति भी मिल गयी।

इसी समयसे नगरकी उन्नति अबाधित रूपसे हो चली। नवाबसे क्षतिपूर्ति स्वरूप जो रकम मिली थी वह गोविन्दपुरके नगरनिवासियोंको उनकी स्थायी सम्पत्तिके प्रति मूल्य स्वरूप दे दी गयी और स्थान उनसे खरीद लिया गया। स्थान खाली हो जानेपर वहां वर्तमान फोर्ट विलियम नामक किला बनाया जाने लगा। यह किला सन् १७७३ में बन कर तैयार हो गया। इसके पासका जंगल साफ कर डाला गया और फलतः वर्तमान मैदान नामक स्थान तैयार हो गया। सन् १७६६ ई० में जेनरल अस्पताल अपने वर्तमान स्थानपर उठ आया। इसके बाद ही से चौरंगीके समीपवर्ती भूभागपर योरोपियन लोगोंकी वस्ती वसनी आरम्भ हो गयी। सन् १७७३ ई० में पार्लामेन्टने एक नवीन कानूनकी रचना की, जिसके परिणाम स्वरूप कम्पनीके समस्त भारतीय कारोबारका नियंत्रण भार बंगालके सपरिषद गवर्नरके हाथमें आया और वारेन हेस्टिङ्गने मुर्शिदाबादसे कम्पनीका खजाना कलकत्तेमें ला रक्खा।

इस प्रकार कलकत्ता नगर एक छोटेसे गांवसे उन्नतिकर कम्पनीके कारोबारका केन्द्र बन गया। इसकी उन्नतिमें यहाके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनका बहुत बड़ा हाथ रहा है अतः प्रसंगवश उक्त कार्पोरेशनकी चर्चा भी कर देना आवश्यक प्रतीत होती है।

कलकत्ता कार्पोरेशन

कलकत्तेके म्युनिसिपल कार्पोरेशनका जन्म सन् १७२७ ई०में हुआ। कार्पोरेशनने एक मेयर तथा नौ एल्डरमेन इसप्रकार १० व्यक्तियोंकी एक समितिके रूपमें अपना कार्य आरम्भ किया। समितिको मेयर काल्स भूमिकर तथा नगरकर नामक दो करोंके वसूलकरने और सड़कोंकी सुव्यवस्था तथा नालियोंकी मरम्मत करनेका प्रबन्धभार इसको सौंपा गया। इस व्यवस्थाके करनेके लिये बहुत थोड़ी रकम कार्पोरेशनको दी गयी थी। अतः आर्थिक कठिनाइयोंको दूर करनेके उद्देश्यसे

सन् १७५७ ई० में नगरके मकानों पर हाउसटैक्स लगा कर फण्डकी वृद्धि की गयी। सन् १८०३ ई० में लार्ड वेलस्लीने नाली नालोंकी गन्दगी दूर करनेके सम्बन्धमें नये कानून बनाये। साथ ही बाजारों और वधस्थलोंकी स्थापना करायी। इससे कार्पोरेशनका काम उन्नतिकी ओर अग्रसर हुआ। पर कार्यकी भरमारके कारण भवन निर्माण सम्बन्धी नियम बनाने तथा राजमार्गोंके तैयार करनेके सम्बन्धमें ३० सदस्योंकी एक स्वतंत्र कमेटी टाउन इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्टके नामसे स्थापित की गयी। इस इम्प्रूवमेण्ट ट्रस्टने लाटरीकी पद्धतिसे धनसंग्रह करना आरम्भ किया और इस धनसे सार्वजनिक मार्ग आदि बनवाना प्रारम्भ किया। इस कमेटीने वर्षों तक जीवित रहकर कितने ही लोकोपकारी कार्य किये। इसीने यहाका टाउनहाल बनवाया और बेलियाघाट्टा नहर खुदायी। इसी प्रकार स्ट्रैण्ड रोड, ऐमहर्स्ट स्ट्रीट, कोलूटोला स्ट्रीट, मिर्जापुर स्ट्रीट, फ्री स्कूल स्ट्रीट, क्राइव स्ट्रीट, कनाल रोड, मैनगो लेन, वैन्टिक स्ट्रीट, कार्नवालिस स्ट्रीट, कालेज स्ट्रीट, वेलिङ्गटन स्ट्रीट, तथा वेलस्ली स्ट्रीट आदि बनवायीं। तथा नगरके चारों ओर स्कायर भी इसी कमेटीने बनवाये। सड़कोंके छिड़कवानेका प्रबन्ध भी किया। सन् १८२० ई० में नगर सुधार समितिने २५ हजारकी रकम व्ययकर सड़कें पक्की करानेका आयोजन किया पर इसी बीच इंग्लैण्डमें कलकत्तेकी लाटरीबाजीके विरुद्ध घोर आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जिससे १८३६ में इस ट्रस्टका अन्त हो गया। फलतः नगर व्यवस्थाका पूरा भार कार्पोरेशन पर पड़ा। इस प्रकार समयकी गतिके साथ कलकत्ता कार्पोरेशन भी कितने ही परिवर्तन कर तीन सदस्योंके एक बोर्डके रूपमें जा पहुंचा। इस नव संयोजित कार्पोरेशनको नगर सुधारके लिये ऋण लेनेका अधिकार भी मिला था अतः सब विधि सुदृढ़ कार्पोरेशनने अल्प अवधिमे ही अच्छी उन्नतिकर दिखायी। सन् १८६६ ई० में कार्पोरेशनने नगरके लिये वधस्थल निर्माण कराये और उनके सम्बन्धमें नियम तैयार किये। सन् १८७४ में न्यूमार्केट बनाया गया तथा नगरके प्रधान राजमार्गोंके दोनों ओर पत्थरके फुटपाथ भी पैदल चलनेवालोंके लिये बनाये गये। विडन स्कायरका उद्‌घाटन भी हुआ। इस प्रकार अनुमान तया दो करोड़ रुपया व्यय कर वर्तमान कलकत्ता नगर तैयार किया गया।

सन १८७६ ई० में नवीन कानूनके अनुसार कार्पोरेशनका आदिसे अन्त तक परिवर्तन कर डाला गया। कार्पोरेशनमें ७२ कमिश्नर होने लगे और वहांकी कार्यवाहीको नियमित रूपसे चलानेके लिये चेयरमैन और वायस चेयरमैनकी नियुक्ति की गयी। कार्पोरेशनके कमिश्नरोंमे दो तिहाई तो करदाताओं द्वारा चुने जाते और शेष सरकार द्वारा मनोनीत किये जाते थे। इस प्रकारसे संयोजित नये कार्पोरेशनने सफाई एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी सभी पुराने आयोजनोंको सफल बनाया और जलका प्रचुर प्रबन्ध कर दिया। इसी प्रकार हरिसन रोड नामक नगरका केन्द्रीय राजमार्ग भी इसी

कार्पोरेशनने निर्माण कराया। सन् १८८८ ई० में सरकुलर रोडके दक्षिण तथा पूर्वकी ओर बसे हुये विस्तृत उपनगरको भी कलकत्ता कार्पोरेशनमें सम्मिलित कर लिया गया,फलतः पहिलेके ४ वार्डोंके अतिरिक्त ७ नवीन वार्ड और जोड़ दिये गये और नगरके उत्तरकी ओर बसे हुए उपनगरको नगरमे सम्मिल-कर ३ वार्ड और बनाये गये। इस प्रकार जहा वार्डोंकी संख्यामें वृद्धि हुई वहा कमिश्नरोंको संख्या भी ७२ से ७५ की कर दी गयी जिसमे ५० निर्वाचित १५ सरकार द्वारा नियोजित तथा १० स्थानीय चैम्बर आफ कामर्स, ट्रेड ऐसोसियेशन और पोर्ट कमिश्नरकी ओरसे भेजे जाने लगे। इस प्रकार कार्पोरेशन उन्नतिकी ओर द्रुतगतिसे बढ़ने लगा। इसके पश्चात् १९२४ ई०के अप्रैल माससे नवीन एवं पुनः संशोधित स्वरूपमें कार्पोरेशनने कार्यारम्भ किया। इसके पूर्व इसकी म्यूनिसिपल सीमा १८½ वर्गमील तक थी पर संशोधनके कारण काशीपुर, चीतपुर, मानिकतल्ला तथा गार्डेनरीच आदि उपनगर भी मिला लिये गये और म्यूनिसिपल सीमामें ३० वर्ग मीलसे अधिकका क्षेत्र आगया।

इसके प्रबन्धके लिये सदस्योंकी संख्या बढ़ाकर ९० कर दी गयी और जहा सदस्य कमिश्नरके नामसे पुकारे जाते थे वहा वे कौन्सिलर कहे जाने लगे। इस संख्यामेंसे ६२ तो निर्वाचित रहते हैं जिनमेंसे १५ मुसलमान जनताके लिये रक्षित निर्वाचन पद्धति की गयी है उससे चुने जाते हैं। इसके अतिरिक्त बंगाल चेम्बर आफ कामर्स ६ सदस्य, कलकत्ता ट्रेड एसोसियेशन ४, पोर्ट कमिश्नर २ और सरकार १५ के स्थानपर १० कौन्सिलर मनोनीत करती है। इस प्रकार निर्वाचित तथा मनोनीत कुल मिलाकर ८५ कौन्सिलर्स होते है। शेष ५ स्थानोंके लिये कौन्सिलर लोग स्वयं एल्डरमैन निर्वाचित करते है। कार्पोरेशनका निर्वाचन सभी दशामें तीन वर्ष बाद होता है पर कार्पोरेशन प्रतिवर्ष अपना मेयर तथा डिपुटी मेयर निर्वाचित करता है। इस कार्पोरेशनमें वर्तमान समयमें ३२ वार्ड हैं।

जनसंख्या

कलकत्ता नगरकी जनसंख्याका विवरण सबसे प्रथम सन् १८७३ ई० में प्रकाशित हुआ था। उस समय नगरकी जन-संख्या ६,११,७८४ थी पर ज्यों २ नगरने उन्नति की त्यों २ जन संख्या भी बढ़ती गयी जो इस प्रकार है।

सन् १८८१	६,१२,३०७	सन् १९११	८,९६,०६७
सन् १८९१	६,८२,३०५	सन् १९२१	९,०७,८५१
सन् १९०१	८,४७,७९६		

नगरका औद्योगिक विकास

हम लिख आये है कि कलकत्ता नगर प्रथम एक छोटेसे गावके रूपमें था और क्रमशः

उन्नतिकर एक विशाल नगर बन गया। नगरकी रचना, उसके सुधार और तत्सम्बन्धी प्रबन्धक कमेटियाँ किस प्रकार बनी और नगरको उन्होंने किस प्रकार बनाया आदि सभी बातोंकी चर्चा की जा चुकी है। अब इस जनाकीर्ण नगरके बलपर पले हुए व्यापार वाणिज्यका विवेचन करना अनिवार्य प्रतीतहोता है।

इस नगरको बसानेमें जिन उद्देश्योंको सम्मुख रखकर उद्योग किया गया था वे सर्वरूपेण फलनः हो गये। यह नगर हुगली नदीके उस स्थानपर बसा हुआ है जहांतक समुद्री जहाज सरलतासे सदैव आ सकते हैं। इस विशेषताके कारण नगरकी उन्नतिको अच्छी सहायता मिली है। ब्रह्मपुत्र और गंगाके उपजाऊ कछारकी उपज हुगलीके जलमार्ग द्वारा नगरमें सुगमतासे आ जाती है और साथ ही वहा बसनेवाले जन-समूहकी आवश्यकताओंकी पूर्तिकी वस्तुओंको इन्हीं जलमार्गों द्वारा उनतक पहुंचाया जाता है। इस भूभागके समथल होनेके कारण रेलवे लाइनें सरलतासे निकाली गयी है और प्रान्तके आयात् और निर्यात्‌को अत्याधिक प्रोत्साहन मिलता है।

जिस समय यह नगर बसना आरम्भ हुआ उस समय इस प्रदेशके ढाका और मुर्शिदाबाद नामक नगर मुसलमानी शासन कालमें अपनी उन्नतिका पूण प्रभासे आलोकित हो रहे थे। उनके मालकी प्रशंसा यूरोप तक पहुंच चुकी थी। ज्यों ही यह नगर बसा त्योंही उपरोक्त स्थानोंका माल यहासे सीधा विदेश जाना आरम्भ हो गया। फलतः यहांके व्यापारी वर्गको प्रोत्साहन मिलने लगा और व्यापारकी वृद्धि हो चली।

इस प्रकार विदेशसे व्यापार आरम्भ तो हो चुका था पर इसी बीच यूरोपमें इंग्लैड और फ्रांसमें युद्ध छिड़ गया अतः भारतके अंग्रेजोंने यहासे माल भेज स्वदेशकी सहायता करनेका निश्चय कर लिया। युद्धमें खर्च होने वाली बारूदके लिये बिहारका 'साल्टपिटर' इसी नगरसे भेजा जाने लगा। धीरे धीरे यहासे चावल, सूती कपड़ा, शक्कर, घी, लाख, कालीमिर्च, अदरख, हर्र, टसर आदि वस्तुयें भी क्रमशः विदेश भेजी जाने लगीं। ये सभी वस्तुयें बंगाल तथा आसाममें उत्पन्न होती है अतः इन प्रान्तोंसे इन्हे विदेश भेजनेके लिये सबसे अच्छा मार्ग यदि कोई हो सकता था तो वह कलकत्ता नगरसे होकर था। इस प्रकार समीपके भूभागकी उपज इसी नगरसे विदेश भेजी जाने लगी। जिससे नगरके व्यापारमें अत्याधिक उन्नति हुई। १६ वीं शताब्दीके आरम्भमें योरोपने भाफ द्वारा यंत्र चलाने की विधि ढूढ़ निकाली। फल यह हुआ कि वहां भी माल तैयार किया जाने लगा। कुछ ही समय बाद लंकाशायरसे भाफ द्वारा तैयार किया गया सूती माल भारत आने लगा। यह माल कलकत्ता नगरमे उतारा जाता और यहींसे रेलके तथा जलके मार्ग द्वारा बंगाल और आसामके भिन्न भिन्न स्थानोंको भेजा जाता। इस कार्यसे यह परिणाम निकला कि नगरका एक बहुत बड़ा जन समुदाय इस

व्यापारमे लग गया। अतः व्यापारकी उन्नतिको अधिक बल मिला। इसी बीच जूटकी उपयोगिताका रहस्य योरोप पर प्रकट हुआ और जूटकी मांग बढ़ी। भाफसे चलने वाले जलयानोंने संसारके विभिन्न दूर देशोंको पारस्परिक विनिमय भोगी बनानेमें सबसे अच्छी सफलता प्राप्त की। फलः यह हुआ कि संसारका व्यापार इन्हींके द्वारा होने लगा। अतः इस कामके लिये जूटकी मांग और बढ़ी। जूट भारतमें ही होता है इस लिये वही संसारकी मांग पूरी करता है और भारतमें भी बंगाल तथा आसाम प्रान्तमें ही यह उत्पन्न होता है ऐसी दशामें संसारकी माग यहींसे पूरीकी जा सकती थी। इन प्रान्तोंका माल यदि विदेश जा सकता है तो कलकत्ता हो कर। ऐसी दशामें इसी नगरसे जूटका निर्यात् किया जाने लगा। धीरे धीरे जूटका निर्यात् बहुत बढ़ गया। और हजारोंकी संख्यामें यहांका जन समूह इस व्यापारमें लग गया इन प्रान्तोंमें उत्पन्न होने वाले तेलहन माल तथा चायकी माग भी यूरोपमे बढ़ी और यह माल भी इसी कलकत्ते नगरमे विदेशको भेजा जाने लगा। बंगालमें कोयलेकी खानें ढुंढ निकाली गयी और कलकत्तेसे ही कोयला भी विदेश भेजा जाने लगा। इस प्रकार जहा यह एक छोटेसे गांवसे उन्नतिकर विशाल नगर बन गया वहा इसके छोटेसे व्यापारने भी उन्नति कर अपनी अच्छी धाक बैठा ली। प्रान्तके बढ़ते हुए व्यापार वाणिज्य तथा उद्योग धन्धेने नगरकी उन्नतिको अच्छा प्रोत्साहन दिया। और यहाकी रेलवे लाइनों नदियोंमें चलने वाले जलयानों तथा नहरोंने नगरके व्यापारी वर्गको जीवन दिया।

नगरके विदेशी व्यापारने किस प्रकार अपनी क्रमशः उन्नतिकी यह नीचे दिये गये अङ्कोंसे स्पष्ट हो जाता है।

		आयात्	(लाख)	निर्यात्	(लाख)
सन्	१८७५ ई०	१६४८	„	२३५६	„
„	१८८० „	१७८०	„	२७७८	„
„	१८८५ „	२१५०	„	३३०८	„
„	१८९० „	२३४४	„	३५२३	„
„	१८९५ „	२५९५	„	३९९०	„
„	१९०० „	२८४६	„	४५५९	„

आयात्

नगरसे विदेश जाने वाले और विदेशसे यहां आने वाले मालमें कौनसी वस्तुएं प्रधान है इसकी भी चर्चा आवश्यक है। विदेशसे यहा आनेवाले मालमें सूती माल, खजाना, धातु, तेल, शक्कर, यान्त्रिक सामग्री यही छ वस्तुएं प्रधान है इनके अतिरिक्त ऊनी माल, शीशा बर्तनका माल, लोहेका बना

माल जैसे कैंची अस्तुग आदि, नमक, शराव, सिलेसिलाये कपड़े, दवाइयां तथा रेलवेका सामान है। यह माल नगर और समीपके प्रान्तोंमें रहने वाले जन समूहकी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये बाहर से यहां आता है और यहांसे रेल, नाव, तथा सड़कों द्वारा सभी स्थानोंमें यथा समय पहुंचाया जाता है। इस प्रकारके व्यापारमें नगरका पर्याप्त जन समाज लगा हुआ है।

निर्यात्

इसी प्रकार नगरसे विदेश जानेवाला माल यदि कोई है तो वह इन्हीं समीवर्ती प्रान्तोंमें उत्पन्न होनेवाला माल है। जो तैयार होनेपर रेल, नाव तथा सड़कों द्वारा नगर लाया जाता है और यहांसे जहाजोंमे भर भर विदेशको भेज दिया जाता है। इसमें जूट तथा जूटका बना माल, चाय अफीम, खाल और चमड़ा, तेलहन माल, अनाज, दाल, नील, लाख, कपास, कोयला,रेशम, साल्टपिटर, तथा तेल आदि है। फिर भी जूट, कोयला, चाय, चपड़ा आदि प्रधान हैं।

अन्तर्प्रान्तीय व्यापार

आयात् और निर्यात्के अतिरिक्त समीवर्ती कितने ही प्रान्तोंके बीच होने वाले पर प्रान्तीय व्यापारका भी यह नगर एक प्रभावशाली केन्द्र माना जाता है। नगरके समीवर्ती भूभागमें रेलवे लाइनों, नदियों और नहरोंका जाल सा फैला हुआ है जिनके द्वारा सरलतासे माल एक स्थानसे दूसरे स्थानको पहुंचाया जाता है। यही क्यों इन स्थानोंका माल जैसे अनाज, चावल, सब प्रकारकी दाल, कोयला, जूट, वोरे, मसाला, तेल, तम्बाकू, और चाय, इत्यादि यहासे रंगून, मोलमीन, अकयाव, चटगाव, मद्रास, वम्बई कराची आदि भारतके प्रधान बंदरोंको भी जाया करता है। इस प्रकार यदि देखा जाय तो यहांका सभी व्यापार इस नगरपर निर्भर करता है।

स्टीमर

इस नगरसे सम्बन्ध रखने वाले व्यापारको केवल रेलवेसे ही सुविधा मिलती हो यह बात नहीं है। यहांका बहुत बड़ा व्यापार देशी नावों और स्टीमरोंसे होता है। इस नगरके समीपीय प्रान्तमें नदियोंका सघन जाल सा फैला हुआ है। अतः कलकत्तेका माल स्टीमरों द्वारा इन्हीं नदियोंसे होकर जाता है और पुनः छोटी छोटी नावोंमे रखकर नदी तटवर्त्ती व्यापारी केन्द्रोंसे गावोंमें पहुंचाया जाता है। इसी प्रकार माल आना और जाता रहता है। इस प्रान्तमें नहरें भी गयी हैं जिनमेंसे नावें आती और जाती रहती हैं। इन्ही नहरोंके द्वारा कलकत्ता नगरसे माल लादकर नावें चल पड़ती है और उपनगरोंको पार करती हुई पूर्वीय बंगाल में प्रवेश करती हैं तथा ब्रह्मपुत्रके कछारमें भ्रमण करती हुई जाती और वहाका माल लादकर कलकत्ता आती है। यहासे मिदनापुर और उड़ीसातक नहरों और नदियोंको पारकर नावें जाती और

आती रहती है यह तो व्यापार सम्बन्धी व्यवस्था हैं साथ हो साथ ही नगरसे स्टीमार भी छूटते हैं जो माल और यात्री लेकर बङ्गाल और आसामके सुदूर नगरोंतक जाते और वहांसे आते रहते है। उडीसाकी ओर भी स्टीमर सर्विस है और स्टीमर द्वारा यात्री लोग सदा जाते आते रहते हैं।

बन्दरगाह

नगरका बंदरगाह प्रथम तो सरकारके नियंत्रणमें था पर सन् १८७० ई० से पोर्ट ट्रस्ट नामक एक स्वतंत्र बंदर विभागकी रचना कर बंदर सम्बन्धी सभी प्रकारका प्रबंध भार उसे सौंप दिया गया और तबसे यह उसी विभागके हाथमें है। जिस समय यह व्यवस्था प्रथम बार पोर्ट ट्रस्टको दी गयी उस समय केवल ६ घाट ६ माल उठानेके यंत्र और ६ माल रखनेके बाड़े थे। पर आज इस बंदरगाहकी समृद्धिको देख कर चकित सा रह जाना पड़ता है। पोर्ट ट्रस्टने मिट्टीके तेल और पेट्रोलके लिये अलग स्थान बनानेका निश्चय किया और सन १८८६ ई० में बजबजमें सुरक्षित एवं सुदृढ़ स्थान बनवाये। सन् १८८७ ई० में चायके लिये भी एक अलग स्थान बनाया सन् १८८६ ई० में पोर्ट ट्रस्टके अधिकारोंमें सरकारने वृद्धि कर दी अतः उसने अपने स्वतंत्र रीतिसे डाक यार्ड और स्टोर हाउस, वेर हाउस आदि बनवाये। इसी प्रकार अपने विभागके लिये आवश्यक वस्तुयें तैयार करनेके लिये कारखाने भी खोले। प्रबंध देखनेके लिये वैतनिक अधिकारी नियुक्त किये। जहाजोंको खींचनेके लिये 'स्टीम लाञ्च' तथा 'प्रोपेलर्स' नामक विशेष प्रकारके जलयानोंकी व्यवस्था की। मालकी नावोंको तैरते फिरनेका लैसेन्स देनेका प्रवन्ध किया, जल पुलिसकी नियुक्तिमें सहयोग दिया और नदीसे समुद्र तक जल मार्गका चार्ट तैयार कराया और साथ ही जलमार्गपर प्रकाशका भी पर्याप्त प्रबन्ध किया गया। इस प्रकार यहाके पोर्टट्रस्टने जन्म ले नगरके बन्दरका निर्माण कराया और उसे सब विधि आधुनिक जगतकी व्यवहृत व्यवस्थाके अनुसार सुसज्जित किया।

इस नगरमें मालका जलमार्ग द्वारा आना जाना यों तो बहुत पुराना है। पर उस समयके अंक उपलब्ध नहीं है अतः यह निश्चित रूपसे नहीं कहा जाता कि उस समय किस परिमाणसे यहा जल मार्ग द्वारा व्यापार होता था। पर सन् १७२७ के अंकोंसे ज्ञात होता है कि उस वर्ष १० हजार टन माल जहाजोंमे लदा था। हम यहा कुछ अंक पंचवर्षीय रिपोर्टसे उद्धृत कर रहे है उनके देखनेसे स्पष्ट हो जायगा कि इस बन्दरने किस प्रकार इस ओर पैर बढ़ाये थे।

सन्	बन्दरमे आये—		बन्दरसे गये	
	जहाज संख्या—	माल टनसे—	जहाज संख्या—	भावटन
१८८६—७—	१३८७—	१५,५३,:७५—	१४१९—	१६,२०८७७
१८९१—२—	१४४६—	१९१२६८१—	१४१६—	१८४९,९७६

सन्	बन्दरमें आये—		बन्दरसे गये—	
	जहाज संख्या—	माल टनसे—जहाज संख्या—		माल टन
१८९६—७—	१५७६—	२०,७०,७८६-	१५७९—	२०,६०,८६७
१९०१—२—	१४९९—	२८,६९,७००-	१५१४,—	२८,७३,७३०

स्मरण रहे जलयानोंमें भारी परिवर्तन हो जानेके कारण आश्चर्योत्पादक उन्नति हो गयी है। पालके स्थान वाष्प, जहाजोंके आकार प्रकारमें वृद्धि आदि कितनी ही बातें हैं कि जिन्होंने समुद्र तटवर्ती व्यापारकी वृद्धिके कारण वैदेशिक व्यापारको बहुत बढ़ा दिया है।

शिक्षा

कलकत्ता विश्व विद्यालयके प्रबन्ध संचालनका प्रधान केन्द्र इसी नगरमें है। यह विश्व विद्यालय भारतके विभिन्न विश्व-विद्यालयोंमें उच्च श्रेणीका माना जाता है। भारतके वायसराय ही इस विश्व विद्यालयके सदा चैन्सलर होते हैं। भारतके कितने ही नररत्नोंको साक्षर कर सुशिक्षासे दीक्षित करनेका इसे अवसर मिला है। इसका समस्त प्रबन्ध संचालन प्रायः बहुत समयसे भारतीयोंके हाथमें चला आता है। इसके पूर्वकी व्यवस्थाकी चर्चा करते हुए यह मानना ही पड़ेगा कि विशेष दृष्टिसे इसका इतिहास भी पुराना ही है। भारतमें शिक्षाकी व्यवस्थाका भार कम्पनीने अपने हाथमें जबसे लिया तभीसे वह अपनी प्रगतिको उत्तरोत्तर बढ़ाती गयी और परिणाम यह हुआ कि थोड़े ही समयमें उसने यत्र तत्र कई एक विद्यालय खोल दिये। इनमेंसे सबसे पुराना विद्यालय वारेन हेस्टिङ्गने सन् १७८१ ई० में खोला। इसमें मुसलमानोंको ही शिक्षा देनेकी व्यवस्था की गयी थी अतः इसका नाम मदरसा रक्खा गया। सन् १८२४ ई० यहांके संस्कृत कालेजकी स्थापना हुई और सन् १८३५ ई० में एक मेडिकल कालेज भी खोला गया। स्त्री शिक्षाके लिये सन् १८४६ ई० में बेथून कालेजका जन्म हुआ। इस कालेजका अर्थ सम्बन्धी सभी प्रकारका व्यय भार श्रीबेथूनने आजीवन उठाया पर उनके बाद सन् १८५१ ई० से सन् १८५६ ई० तक इसका व्यय भार तत्कालीन गवर्नरजेनरल लार्ड डलहौसीने उठाया। इसी समय शिक्षा सम्बन्धी नवीन नियमोंकी रचना की गयी और भारतमें विश्व विद्यालय स्थापित करनेका निश्चय किया गया। फलतः कलकत्ता विश्व विद्यालयकी स्थापना हुई और नगरके चारों ही पुराने शिक्षालय विश्वविद्यालयमें सम्बद्ध कर दिये गये। इसी समय विश्वविद्यालयके आदर्श विद्यालय प्रेसीडेन्सी कालेजकी आयोजना की गयी। सन् १८६० ई० में यहा पर सेन्ट झेवियर कालेज नामक ईसाई प्रबन्धकी देख-रेखमे चलनेवाले कालेजका जन्म हुआ। सन् १८८० ई० में यहांके शिवपुर इञ्जिनियरिङ्ग कालेजकी स्थापना हुई। इस प्रकार क्रमशः उन्नति होती गयी और शिक्षा प्रसारके साधनोंकी वृद्धि होती गयी गयी।

भाषा साहित्य प्रसारक कितने ही स्कूल और कालेज इस नगरमें खुले हुए हैं जिन्हें सभी जानते हैं। हम तो यहां सबसे प्रथम उन्हीं शिक्षालयों की सूची उद्धृत कर रहे हैं जो विशेष प्रकारकी शिक्षाका प्रसार करनेके लिये खोले गये हैं। इनमेंसे कुछके नाम धाम इस प्रकार हैं :—

१ एङ्गलोटेमिल स्कूल, २४-३ ए कालेज स्ट्रीट।

२ आर्य मिशन इन्स्टीट्यूशन, ७१ शिमला स्ट्रीट।

३ बंगाल सोशल सर्विश लीगका इण्डस्ट्रियल स्कूल—६३ ऐमहर्स्ट स्ट्रीट

४ बंगाल टेकनिकल स्कूल—पंचवटी विला, मानिकतल्ला स्ट्रीट

५ बंगाल टेकनो-केमिकल इन्स्टीट्यूट, २१—३ सरकुलर रोड

६ बंगाल वेटरनरी कालेज—बेलगछिया

७ कलकत्ता ब्लाइण्ड स्कूल, २२२ लोअर सरकुलर रोड।

८ कलकत्ता कमर्शियल इन्स्टीट्यूट, ८१ हरिसन रोड

९ कलकत्ता डम्ब एण्ड डेफ स्कूल, २९३ अपरसरकुलर रोड

१० कलकत्ता होमियो पैथिक कालेज १५० कार्नवालिस स्ट्रीट

११ कलकत्ता स्कूल आफ म्यूजिक—४३ पार्क स्ट्रीट

१२ कारमाइकल मेडिकल कालेज, ९ बेलगछिया

१३ बंगाल इञ्जिनियरिङ्ग कालेज शिवपुर हवड़ा

१४ गवर्नमेन्ट स्कूल आफ आर्ट्स २८ चौरंगी रोड

१५ इण्डियन आर्ट स्कूल—९२ बहु बाजार

१६ टाइपराइटिङ्ग स्कूल ३-१ कौन्सिल हाउस स्ट्रीट

१७ यूनिवर्सिटी ला कालेज दर्भङ्गा बिल्डिङ्ग कालेज स्ट्रीट,

उपरोक्त नाम सूचीमेंसे नं० २, ३ तथा ४ तो वे स्कूल हैं जहां लड़कोंको दस्तकारी जैसे दर्जी, लोहार, बढ़ाई आदिका काम सिखाया जाता है। नं० ७ अन्धों, नं० ९ गूंगों और बहिरोंको शिक्षा देनेके लिये हैं। नं० ६ में पशुपालनकी शिक्षा दी जाती है। नं० ८ तथा १६ में व्यापारकी शिक्षा तथा आफिसका काम सिखाया जाता है। और १४ तथा १५ मे ललित कलाकी शिक्षा दी जाती है।

यहां कितने ही कालेज हैं जहां हजारों विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं। इनमेंसे कतिपय प्रसिद्ध कालेजोंकी सूची हम नीचे दे रहे ।

१	प्रेसीडेन्सी कालेज	...	८६-१	कालेज स्ट्रीट
२	संस्कृत कालेज	...	१	कालेज स्क्वायर
३	इस्लामियाँ कालेज	...	८	वेलस्ली स्ट्रीट
४	स्काटिश चर्च कालेज	...	४	कार्नवालिस स्ट्रीट
५	विद्यासागर कालेज	...	३६	शङ्करघोष लेन
६	आसुतोष कालेज	...	१४७	रसा-रोड साउथ
७	नरसिंहदत्त कालेज	...	१२६	वेलीलियस रोड हवड़ा
८	रिपन कालेज	...	२४	हरिसन रोड
९	वेथून कालेज	...	१८१	कार्नवालिस स्ट्रीट
१०	डानीशन कालेज	...	४७	एलिगन रोड

नं ९ तथा १० में लड़कियोंके ही लिये शिक्षाका प्रवन्ध किया गया है।

११	डेविड हेयर ट्रेनिङ्ग कालेज,	२५	बालीगंज
१२	लारेटो हाउस	७	मिडिल्टन रोड

इनमें कालेज, स्कूल, शिक्षक तथा किण्डर गार्डन ये चार विभाग हैं।

स्कूल भी यहांपर बहुत है पर हम विस्तृत नाम सूची न देकर कुछ प्रसिद्ध स्कूलोंके नाम नोचे दे रहे हैं।

१	विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय	...	मछुआ बाजार स्ट्रीट
२	तिलक राष्ट्रीय विद्यालय	...	मछुआ बाजार स्ट्रीट
३	सनातनधर्म विद्यालय	...	काटन स्ट्रीट
४	हिन्दू स्कूल	...	कालेज स्ट्रीट
५	आर्य कन्या पाठशाला	..	कार्नवालिस स्ट्रीट
६	मारवाड़ी कन्या पाठशाला	...	बाँसतल्ला लेन
७	सारस्वत क्षत्री कन्या पाठशाला	...	१ शिवकृष्णदास लेन
८	लारेटो कानवेन्ट	...	एन्टाली
९	पुर मेमोरियल स्कूल	...	१६८ चितपुर रोड

नं० ५ से नं० ९ तकके वे स्कूल हैं जिनमें लड़कियोंको शिक्षा दी जाती है। इनमेंसे

प्रथम तीन तो ऐसे स्कूल हैं जिनमें हिन्दू लड़कियोंको उनकी सामाजिक पद्धतिके अनुसार पढ़ाया जाता है पर नं० ८ तथा ९ में अंग्रेज बच्चोंके साथ उन्हें शिक्षा दी जाती है।

इनके अतिरिक्त प्रारम्भिक शिक्षाके लिये नगरके म्यूनिसिपल कार्पोरेशनकी ओरसे फ्री प्राइमरी स्कूल खुले हुए हैं इनकी संख्या १९२ से अधिक है। इनमें २३०६३ बच्चे निःशुल्क शिक्षा पाते हैं। इस प्रबन्धके लिये कार्पोरेशन ४,००,५१४) रु० वार्षिक व्यय करता है।

भारतकी राष्ट्र भाषा सम्मेलनके नामसे ३७ नं० हरीसनरोड पर एक निःशुल्क विद्यालय खोला गया है जहां कोई भी भारतीय राष्ट्र भाषाका अध्ययन कर सकता है।

धर्मशालायें

नगरमें यात्रियोंकी सुविधाके लिये धर्मशालायें खुली हुई हैं। इनमेंसे प्रसिद्ध धर्मशालाओंके नाम ये हैं:—

१ पं० विनायक मिश्रकी धर्मशाला—२२६ हरीसनरोड
२ बाबू बन्नूलाल अग्रवाल धर्मशाला—१६९ हरीसनरोड
३ डूडवे वालोंकी धर्मशाला—६ मल्लिक स्ट्रीट
४ बाबू लक्ष्मीनारायण धर्मशाला—२१ बांसतल्ला
५ धनसुखदास जेठमल धर्मशाला—४४ बद्रीदास टेम्पल स्ट्रीट

आमोद प्रमोदके स्थान

कलकत्ताके नागरिकोंके आमोद प्रमोदके लिये नगरमें कितने ही थियेटर तथा सिनेमा भवन खुले हुए हैं। जहां मनमोहक एवं शिक्षाप्रद अभिनय बड़ी सजधजसे दिखाये जाते हैं। इस क्षेत्रमें श्रेष्ठ कम्पनी मेडन थियेटर्स लि० है जिसके कितने ही नाट्य मंदिर और सिनेमा घर खुले हुए हैं। इसके अतिरिक्त कई बंगाली कम्पनियां भी हैं जो बंग रंगमञ्चको प्रतिष्ठाके उच्च स्थानपर पहुंचानेमें समर्थ हुई हैं। सिनेमा घर यों तो प्रायः नगरके कितने ही स्थानों पर हैं पर न्यू मार्केटके पास वाले अधिक अच्छे माने जाते हैं। हम कुछ थियेटर्स और सिनेमा घरोंके नाम नीचे देते हैं।

हिन्दी नाट्यपरिषद

१ अल्फ्रेड थियेटर—२१ हरीसनरोड २ कोरन्थियन थियेटर—१ धरमतल्ला स्ट्रीट

बंगाली नाट्यपरिषद

१ मिनर्वा थियेटर—६ बीडेन स्ट्रीट २ नाट्य मंदिर—कार्नवालिस स्ट्रीट
३ स्टार थियेटर—कार्नवालिस स्ट्रीट ४ मनमोहन थियेटर—बिडन स्ट्रीट

सिनेमा घर

१ एल्फिन्स्टन पिक्चर पैलेस—चौरंगी। २ ग्लोब थियेटर्स—लिण्डसे स्ट्रीट। ३ पिक

चर हाउस – चौरंगी रोड। ४ कार्नवालिस थियेटर्स। ५ क्राउन सिनेमा—१३८।१ कार्नवालिस स्ट्रीट। ६ इम्पीरियल थियेटर—ताराचंददत्त स्ट्रीट। ७ सेन्ट्रल थियेटर—लोअर चीतपुररोड। ८ इम्प्रेस थियेटर—६१ आशुतोष मुकर्जी रोड, भवानीपुर।

नाट्य संस्थायें

यहां स्वेच्छानुसार नाट्यकला द्वारा अपने उद्देश्योंका प्रचार करनेके लिये कितनी ही नाट्यसमितियां खुली हुई हैं उनमें कुछके नाम नीचे दिये जाते है।

१ हिन्दी नाट्य-समिति १ नारायन प्रसाद बाबू लेन। २ हिन्दी नाट्य परिषद्—लोअर चितपुर रोड। ३ श्रीकृष्ण परिषद्—८३ लोअर चितपुर रोड। ४ बजरंग परिषद्—२०१, हरिसन रोड। ५ सरस्वती नाट्यसमिति बांसतल्ला स्ट्रीट। ६ आमात्य ड्रामैटिक क्लब—२१६ कार्नवालिस स्ट्रीट। ७ बोबाजार अवैतनिक नाट्य समाज—१५ मदनदत्त लेन। ८ कलकत्ता पारसी अमेचर ड्रामेटिक क्लब ४४ इजरा स्ट्रीट।

लोकोपकारी संस्थायें

नगरमें कितनी ही ऐसी संस्थायें हैं जिनके द्वारा अपने अपने ढंगसे सार्वजनिक हित साधनका कार्य किया जा रहा है। यहांके नागरिकोंने प्रचुर धन लगा कर अपने अपने दृष्टिकोणसे लोक सेवाका मार्ग निकाल रक्खा है। इन सभी प्रकारकी ऐसी संस्थाओंकी यहां चर्चा करना स्थानाभावके कारण सम्भव नहीं है पर कुछ विशेष प्रकारका काम करनेवाली संस्थाओंकी सूची हम नीचे दे रहे हैं। इससे इनके नाम धाम और कामके सम्बन्धमें चलतू परिचय मिल जायगा। इन संस्थाओंमे कुछके नाम ये हैं।

१ बंगाल सोशल सर्विस लीग—१० ऐमहर्स्ट स्ट्रीट

इस संस्थाका उद्देश्य है बिना किसी भेद भावके मानव समाजकी सेवा करना।

२ बंगाल ह्यूमैनिटेरियन सोसाइटी १०।१ ग्रे स्ट्रीट

इस संस्था द्वारा मानवीयताके नाते सेवा भावसे प्रेरित हो कष्ट प्रपीड़ितोंकी सहायता की जाती है।

३ कलकत्ता पिंजरा पोल सोसाइटी—५१ काटन स्ट्रीट

४ इण्डियन नर्सेस ब्यूरो—३०।१ डाक्टर लेन, ताल तोला

इस संस्था द्वारा अल्प चार्जपर परिचारिकायें रोगियोंको सेवाके लिये भेजी जाती हैं।

५ कलकत्ता जीवदया प्रसारिणी सभा—२७६ बो बाजार स्ट्रीट

६ इण्डियन रेड क्रास सोसाइटी—५ गवर्नमेन्ट लेन

७ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी—७।१ जगमोहन मल्लिक लेन

८ मातृजाति सेवक समिति—६० हरीघोष लेन स्ट्रीट

९ नित्यां हितैषी सभा—२३ मदन बराल लेन

विधवाओंकी सहायता करना इस संस्थाका उद्देश्य है।

१० श्रद्धेश्वरी-आश्रम—२६ रानी हेमन्तकुमारी स्ट्रीट,यहां बहकाई गयी अबलाओंको आश्रय मिलता है

११ रेफ्यूज—१२५ बहू बाजार स्ट्रीट, यह संस्था अनाथ एवं अनाश्रित लोगोंको आश्रय देती है।

१२ रामकृष्ण मिशन आश्रम—बारानगर

१३ सोसाइटी फार प्रोटेकशन आफ चिल्ड्रन इन इण्डिया

यह संस्था बच्चोंकी रक्षा करनेके लिये सरकारी कानूनके अनुसार खोली गयी है।

१४ चित्तरंजन सेवासदन

१५. आनन्दमाई दरिद्र भण्डार—८७ डायमन हारबर खिदर पुर

१६ अनाथ भण्डार—१२ सर पेन्टाइन लेन

१७ कलकत्ता प्रिजनर्स एड सोसाइटी-महारानी स्वर्णमयी रोड, यह संस्था जेलकी यात्रा कर चुके कैदियोंकी सहायता करनेके लिये है।

इसके अतिरिक्त नगरका म्यूनिसिपल कार्पोरेशन लोगोंकी अच्छी सेवा कर रहा है। उसने २१ वर्ष तकके बच्चोंको मुफ्तमें दूध बाटने, औषधि वितरण करने, आदिका प्रबन्ध किया है। इसी प्रकार इसकी ओरसे प्रसूति गृह खुले हुए हैं जहां निर्धन स्त्रियोंको आश्रय मिलता है। कष्ट प्रपीड़ितोंकी सहायताके लिये 'ऐम्बुलेन्स' नामक एक विशेष प्रकारकी व्यवस्थाकी गयी है जिसके द्वारा आकस्मिक दुर्घटना यथा सासर्गिक रोग प्रताड़ित व्यक्तियों, तथा आहत पशुओंकी देखभालका प्रबन्ध किया जाता है। इस प्रकारसे संक्रमग्रस्त व्यक्तियोंको रुग्नालयमें ले जानेके लिये कार्पोरेशनकी ओरसे 'ऐम्बुलैन्स कार' नामक मोटरें नियुक्त कर दी गयी हैं जो बिना भेद भावके सभीकी सेवा करती रहती है।

आग आदि भयंकर दुर्घटनाके हो जाने पर फायर ब्रिगेड आदि बुलाये जा सकते हैं जो तत्काल घटना स्थल पर पहुच लोगोंकी सेवामें लग जाते है।

अस्पताल

नगरमे कितने ही रुग्नालय व मुफ्ती दवाखाने खुले हुए है अतः यहां हम कुछ नामाङ्कित अस्पतालोंके ही नाम नीचे दे रहे हैं :—

१. एल्बर्ट विक्टर हास्पिटल—यहां सरकारी प्रबन्ध एवं देख रेखमें कोढ़ियोंकी चिकित्साकी जाती है।

२. इडन हास्पिटल—यहां बच्चों और औरतोंकी विशेष रूपसे चिकित्सा होती है।

३ मेन्टल अवजर्वेशन वार्ड—यहां पागलोंकी परीक्षा एवं चिकित्सा होती है।

४. प्रिन्स आफ वेल्स हास्पिटल—यह अस्पताल ४२ इडेन अस्पताल रोड पर बना हुआ है

५. कार्माइकल हास्पिटल फार ट्रापिकल डिसीज—यह रुग्नालय चितरंजन ऐविन्यू पर बना हुआ है। यहां यत्तमा आदि भयंकर रोगोंकी चिकत्साका प्रबन्ध किया गया है।

६. अष्टाङ्ग आयुर्वेद विद्यालय—यहां आयुर्वेदिक पद्धतिसे चिकित्सा एवं रुग्नपरिचर्य्याकी शिक्षा दी जाती है। इसके साथ अस्पताल भी है।

७. अलीपुर पोलिसकेस हास्पिटल—यहा आकस्मिक दुर्घटनाओं पारस्परिक मार पीट तथा आक्रमणकारी प्रत्याहार आदिमें घायल हुए लोगोंकी चिकित्सा पोलिसकी देख रेखमें होती है।

८. श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी हास्पिटल—११८ ऐमहर्स्ट स्ट्रीट—यह नगरके प्रतिष्ठित मारवाड़ी नागरिकोंके दान और लगाये गये रुपयेसे जनताकी सेवा कर रहा है।

९. श्री चितरंजन सेवासदन (हास्पिटल)—यह स्वनामधन्य देशबन्धु चितरंजन दासकी स्मृतिमें उनके मकानमें है। यहांका प्रबन्ध और सेवा शुश्रूषा अनुकरणीय है।

१०. प्रेसीडेन्सी जेनरल हास्पिटल—नगरका यह एक पुराना अस्पताल है। सरकारने सन् १७६८ ई० में इसे एक छोटेसे स्वरूपमें स्थापित किया था परन्तु आज यह नगरके प्रसिद्ध अस्पतालोंमें माना जाता है। यहां सैनिकोंकी चिकित्साका भी प्रबन्ध है। इसका भवन बड़ा ही मनोहर है।

११. कैम्पवेल हास्पिटल—यह प्रसिद्ध अस्पताल स्यालदह स्टेशनके पास ही है। जहां रोगियोंकी चिकित्सा तथा विद्यार्थियोंको मेडिकल स्कूल की पढ़ाईका भी प्रबन्ध किया गया है। इस अस्पतालकी विशेषता यह है कि यहा चेचक और सांसर्गिक रोगोंकी ही चिकित्सा होती है।

१२ मेयो नेटिव हास्पिटल—यह भी पुराना ही अस्पताल है। आरम्भमें २५ हजारके सार्वजनिक चंदेसे यह सन् १७९३ ई० में खोला गया था परन्तु वर्तमान भवन सन् १८७३ ई० में बनना आरम्भ हुआ। यहाका प्रबन्ध ठीक है।

१३ मेडिकल कालेज हास्पिटल—यह नगरका बहुत बड़ा अस्पताल है। राजा प्रतापचंद्र सिंहके ५० हजारके दानसे इसकी नींव पड़ी और सन् १८५२ ई० की १ दिसम्बरको खोला गया। बाबू श्यामाचरण लाहाके दानसे आखकी चिकित्साके लिये इसमें स्वतंत्र विभाग खोला गया है। इसके तत्वाविधानमे ऊपरके इडेन अस्पताल, प्रिन्स आफ वेल्स अस्पताल तथा कारमाइकेल अस्पताल चल रहे हैं। यहां डाक्टरीकी पढ़ाईका प्रबन्ध है।

पत्र-पत्रिकायें

आधुनिक जगतमें पत्र-पत्रिकाओंका मानव-समाजसे कितना गहरा सम्बन्ध है यह पाठकोंको बताना नहीं है। इसी अचूक अनुमानके बल पाठक सहज ही समझ सकते हैं कि कलकत्तेके समान उन्नत-जन-समूह संयुक्त नगरमें पत्र-पत्रिकाओंकी क्या अवस्था होना चाहिये। यहांकी जनता यथेष्ट रूपमें पत्र-पत्रिकायें पढ़ती है अतः नित नवीन पत्र-पत्रिकायें यहा निकला करती हैं। ऐसी दशामें सबकी नाम सूची न देकर हम केवल उन्हीं पत्रोंकी तालिका नीचे दे रहे हैं जो जनतामें श्रद्धाके साथ पढ़े जाते हैं।

हिन्दी

दैनिक—विश्वमित्र, स्वतंत्र, भारत मित्र,

साप्ताहिक—विश्वमित्र, श्रीकृष्णसंदेश, मतवाला, बंगवासी, हिन्दूपंच, भारतमित्र, मारवाड़ी ब्राह्मण।

मासिक—विशाल भारत, नवयुग, सरोज, मारवाड़ी अग्रवाल,

बंगला

दैनिक—वसुमती, आनन्द बाजार पत्रिका,

साप्ताहिक—वसुमती, आत्मशक्ति, अवतार,

मासिक—वसुमती, भारतवर्ष, प्रवासी, प्रवर्तक, पञ्चपुण्य,

अंग्रेजी

दैनिक—अमृतबाजार पत्रिका, लिबर्टी (फारवर्डके स्थानपर) वसुमती, बंगाली, इंगलिशमैन, स्टेट्समैन।

साप्ताहिक—कैपिटल,

मासिक—माडर्न रिव्यू, वेलफेयर,

इनके अतिरिक्त अंग्रेजी भाषामें कितनी ऐसी पत्र-पत्रिकायें निकलती हैं जिनमें अनेक विषयोंको लेकर स्वतंत्र रूपसे चर्चा की जाती है। ये प्रायः एक-एक विषयको लेकर प्रकाशित होते हैं अतः उस विषयकी जानकारीके लिये उसी विषयके पत्रोंको पढना पड़ता है इनमेंसे कुछके नाम और विषय हम नीचे दे रहे हैं।

१ ऐग्रीकल्चरल जनरल आफ इण्डिया—एक सरकारी पत्र है और इसमे कृषि सम्बन्धी सभी आवश्यक बातोंकी चर्चा रहती है। इसका वार्षिक मूल्य ६) रु० है। इसका प्रकाशन गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया सेन्ट्रल पब्लिशिङ्ग ब्राच कलकत्तासे होता है।

२ कामर्स—यह साप्ताहिक पत्र है। इसमें ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंकी रिपोर्ट, शेयर बाजारका विवरण आदि व्यापार सम्बन्धी सभी बातोंका समावेश रहता है। इसकी व्यापार सम्बन्धी सूचनायें महत्वपूर्ण होती है। यह डलहौसी स्क्वायरसे प्रकाशित होता है।

३ कैपिटल—यह वाणिज्य व्यवसाय सम्बन्धी साप्ताहिक पत्र है। यह कमर्शियल बिल्डिङ्गसे प्रकाशित होता है।

४ कमर्शियल एजूकेशन—यह अंग्रेजी मासिक पत्र है। इसमें व्यापार सम्बन्धी विषय रहता है। पो० बक्स २०२० कलकत्ता।

५ इण्डियन ट्रेड जरनल—यह सरकारी पत्र है।

६ प्रापर्टी—यह सम्पति सम्बन्धी पत्र है पता टालबट एण्ड को०३ लियान्स रेंज कलकत्ता

७ इण्डस्ट्री—यह उद्योग धन्धेका पत्र है। २२ श्यामबाजार।

८ कलकत्ता एक्सचेंज गजट एण्ड डेली ऐडवर्टाइजर।

९ कलकत्ता कमर्शियल गजट।

१० इण्डियन एण्ड ईस्टर्न—यहांसे इञ्जिनियर, मोटर, और रेलवे इस प्रकारके तीन पत्र निकलते हैं। पता ६ मैनगो लेन है।

११ बिजनेस वर्ल्ड—मासिक, राजामनीन्द्र रोड बेलगछिया।

१२ इण्डियन इन्सुरेन्स जर्नल—९७ क्लाइव स्ट्रीट

१३ बंगालको-अपरेटिव जरनल-राइटर बिल्डिङ्ग

१४ जरनल आफ सेन्ट्रल ब्यूरो आफ ऐनीमल हसबैण्ड्री एण्ड डेरिङ्ग इन इण्डिया—इस नामका पत्र सरकार निकालती है इसमें पशुपालन तथा डेरी आदिके सम्बन्धकी चर्चा रहती है।

१५ इण्डियन प्रिन्टर—पो० बक्स २१५२ कलकत्ता।

१६ इण्डियन इञ्जिनियरिङ्ग—७ मिशन रोड कलकत्ता

१७ इण्डियन जरनल आफ मेडिकल रिसर्च—यह पाक्षिक पत्र हैं। पता थैकर स्पिङ्क एण्ड को० कलकत्ता।

१८ इंडियन मेडिकल गजट—३ एस्प्लेनेड कलकत्ता

सार्वजनिक संघ

हम पहिले लिख आये हैं कि पत्र पत्रिकाओंने मानव समाजकी उन्नतिमे प्रशंसनीय भाग लिया है। समाजके विभिन्न अंगोंकी उन्नतिके लिये होनेवाले आन्दोलनोंको इन्होंने जीवन दे लालित-पालित कर सबल बनाया है और परिणाम यह हुआ कि स्थायीरूपसे काम करनेके लिये स्थान स्थान-पर संस्थायें खुल गयी है जो अपने उद्देश्यके अनुरूप काम करते हुए आगे बढ़ रही है। यहां हम

कुछ ऐसीही संस्थाओंका नाम नीचे दे रहे हैं जो अपने दृष्टिकोणसे स्थायी काम करनेमें प्रगतिशील दिखायी देती है।

विभिन्न विषयोंकी वैज्ञानिक चर्चा करनेके लिये स्थापित की गयी संस्थाओंके नाम:—

१ ऐग्रीकलचरल एण्ड हार्टीकलचरल सोसाइटी—१ अलीपुर (यह संस्था कृषि सम्बन्धी है)

२ आल इण्डिया एस्ट्रालोजिकल एण्ड एस्ट्रानोमिकल सोसाइटी—जोरासाकू (यह फलित एवं गणित ज्योतिषसे सम्बन्ध रखती है।)

३ आल इण्डिया होमियोपैथिक ऐसोसियेशन—१७२ बोवाजार स्ट्रीट

४ एन्थ्रापालोजिकल सोसाइटी आफ इण्डिया—२ वेलेस्ली स्क्वायर (यह मानव जातिकी प्राचीन खोजसे सम्बन्ध रखनेवाली संस्था है)

श्रमजीवी संघ

संसारमें जो नवीन लहर उठ रही है उसीके परिणाम स्वरूप संसारभरमें श्रमजीवी संघ खुल रहे हैं उनमेंसे कलकत्तेके कुछ संघ ये हैं:—

१ आल इण्डिया पोस्ट यूनियन—२३६ बोवाजार स्ट्रीट

२ „ „ टेलिग्राफ यूनियन— ७ मैंङ्गो लेन

३ „ „ रेलवेमेन्स फेडरेशन—१२ डलहौजी स्क्वायर

४ बंगाल ट्रेड यूनियन फेडरेशन—१२डलहौजी स्क्वायर

५ कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट इम्प्लाइज ऐसोसियेशन—२वेलेस्ली स्क्वायर

६ कलकत्ता ट्रामवेज इम्प्लाइज ऐसोसियेशन—१३३ कालीघाट रोड

७ कलकत्ता क्लर्कस यूनियन—९७ क्लाइव स्ट्रीट

८ कलकत्ता लेबर ऐसोसियेशन—घोष बागान लेन काशीपुर

राजनैतिक संघ

मानव समाज अपनी वर्तमान परिस्थितिसे सन्तुष्ट नहीं है अतः वह पारस्परिक हिताहितका विचार न कर छीनझपटका अभिनय दिखानेमें अस्त व्यस्त हो रहा है। फलतः अपने अपने हितों एवं स्वत्वोंकी रक्षाके लिये राजनैतिक संघ भी खोले गये हैं। कलकत्तेमें भी ऐसे संघोंकी की कमी नहीं है अतएव हम कुछके नाम यहा दे रहे हैं।

१ बंगाल लैण्ड होल्डर्स ऐसोसियेशन—१० ओल्ड पोस्टआफिस स्ट्रीट

२ कलकत्ता हाउस ओनर्स ऐसोसियेशन १२९ कार्नवालिस स्ट्रीट

३ बृटिश इण्डियन ऐसोसियेशन—१८ बृटिश इण्डियन स्ट्रीट

४. बृटिश इण्डियन पीपुल्स ऐसोसियेशन—२ वेलेस्ली स्क्वायर

५. इण्डियन ऐसोसियेशन—६२ बोबाजार स्ट्रीट

६. बंगाल महाजन सभा—४ राजा ब्रजेन्द्र नारायण राय स्ट्रीट

७. बंगाल सेन्ट्रल रैयत ऐसोसियेशन—६ हेस्टिङ्ग स्ट्रीट

इनके अतिरिक्त सर गर्मीसे काम करनेवाली ऐसी ही संस्थाओंमें बङ्गाल प्रान्तीय हिन्दू सभा तथा बङ्गाल प्रान्तीय मुस्लिम लीगका स्मरण दिलाना प्रसंग विरुद्ध नहीं है। इसके सिवा राजनैतिक कार्य्य को उत्तरदायी रूपसे चलानेवाली अखिल भारतीय राष्ट्र महासभाकी बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी है जिसके सम्बन्धमें सभी पाठक विशेषरूपसे परिचित हैं।

कांग्रेसकी रीति नीतिसे सर्वरूपेण सहमत न होनेवाले राजनैतिक दलने नगरमें प्रेजेन्ट एण्ड लेबर पार्टी नामक किसान मजदूर दल भी स्थानीय योरोपियन असाइलम लेनमें खोल रक्खा है। इस संस्थाकी ओरसे भी कार्य हो रहा है।

जहाजी कम्पनियाँ

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यके लिये जहाजी कम्पनियाँ खोली गयी हैं और इन्हींके द्वारा एक देशका माल दूसरे देश तक जाता है। अतः इनकी चर्चा भी आवश्यक है। हम अपने इस ग्रन्थके प्रथम भागमें भारतमें काम करने वाली बड़ी एवं प्रतिष्ठित जहाजी कम्पनियोंका ऐतिहासिक परिचय दे चुके हैं अतः उसी विषयको यहा पुनः उद्धृत करना ठीक नहीं है। ऐसी दशामें यहांपर उनकी चलतू चर्चाकर कलकत्तेके सम्बन्धको ही स्पष्ट करना चाहते है।

पी० एण्ड ओ० कम्पनी—के नामसे संसार प्रसिद्ध दि पेनिनसुलर एण्ड ओरियन्टल स्टीम नेविगेशन कम्पनीके जहाज सरकारी डाक ले भारतसे नियमित रूपसे इङ्गलैण्डको रवाना होते हैं। ये यात्री और डाक लेकर बम्बईसे जाते है और योरोपकी डाक ले भारत आते हैं। यों तो भारत और लन्दनके बीच साप्ताहिक जहाज छूटते है पर लन्दन और कलकत्तेके बीच पाक्षिक सर्विस है। इसी प्रकार कोलम्बो और कलकत्तेके बीच भी पाक्षिक सर्विस है जो इसी कम्पनीकी है। भारतमें इसकी ऐजेन्सी मैकिनन मैकेन्जी एण्ड को० के पास है। इसी कम्पनीसे सब प्रकारकी जहाज सम्बन्धी जानकारी प्राप्तकी जा सकती है। इस कम्पनीका आफिस १६ स्ट्राण्ड रोड पर है। पर विलायती जहाजके यात्री प्रायः ईडेन गार्डनके समीप वाले आउट्रम घाटपर ही चढ़ते और उतरते है। यह योरोपकी यात्रा करने वालोंके सम्बन्धकी एक मात्र प्रतिष्ठित और पुरानी कम्पनी है।

२ एन० वाई० कैशा—उपरोक्त दो कम्पनियोंमें प्रथम तो योरोप और अमेरिकाको मिलाती

है और दूसरी सुदूर पूर्वीय देशों और अमेरिकाको माल ले जाती और वहासे लाती है। इस प्रकार ये दो कम्पनियाँ संसार भरके बंदरोंको परस्पर एक सूत्रमें गूंथ देती है। पर देशके समुद्री तटपरका व्यापार जो वास्तवमें भारतीय जहाजी कम्पनियोंके लिये रक्षित रहना चाहिये किसी अंशमें देशकी एक मात्र भारतीय जहाजी कम्पनी:—

३ दि सिन्धया स्टीम नेविगेशन कम्पनी द्वारा होता है। यह कम्पनी पूर्णरूपसे भारतीय कम्पनी है। इसका हेडआफिस बम्बईमें है। तथा वहाके मेसर्स नरोत्तम मुरारजी एण्ड कम्पनी इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट हैं। यह कम्पनी भारतके सुमुद्रीतटका माल एक स्थानसे दूसरे स्थानको ले जाती है। कलकत्तेमें इसकी मैनजिङ्ग ऐजेन्सीका ब्राच आफिस क्लाइव स्ट्रीटमें है।

४. ब्रिटिश इण्डिया कम्पनी के जहाज भी कलकत्तेसे चटगांव, अकायाव, रंगून तथा सिंगापुर, चीन, जापान और इसी प्रकार कलकत्तेसे मद्रास कोलम्बो और बम्बईको जाते हैं, इस कम्पनीके मैनेजिंग ऐजेन्ट मैकेन्जी ऐण्ड को० १६ स्ट्राण्ड रोड है।

५. रिवर्स स्टीम नेविगेशन कम्पनी लि० के स्टीमर कलकत्तेसे छूटते हैं और बंगाल तथा आसामके सुदूर नगरोंको यात्री और माल लादकर ले जाते हैं। इसी प्रकार प्रान्तके अन्य स्थानोंमें इसी कम्पनीके स्टीमर यात्री और माल लेकर आया जाया करते हैं। इस कम्पनीके स्टीमर कलकत्तेके नीमतल्ला घाट और जगन्नाथ घाटसे डिब्रूगढ़ आसामके लिये खुलते हैं। इस कम्पनीके हाथमें ग्वालन्दों बहादुराबाद, अमीनगाव तेजपुर, खुलना बैरीसाल तथा खुलना नारायनगंज, आदि नामकी सर्विस है। इस कम्पनीके ऐजेन्ट मैसर्स मैकनेल एण्ड को० २ फेयर्लीप्रेस कलकत्ता है।

६. इण्डिया जेनरल नेविगेशन एण्ड रेलवे को० लि० इस कम्पनीके स्टीमर स्थानीय नीमतल्ला घाट, जगन्नाथघाट आदि घाटोंसे छूटते हैं और माल लेकर कछार, चादपुर, ढाका, सिलहट, सिलचर आदि तक जाते हैं और वहांका माल यहा पहुंचाते हैं। इसी प्रकार पश्चिमकी ओर यहांसे बनारस तक आते हैं। मेसर्स किलबर्न एण्ड को० ४ फेयर्लीप्लेस कलकत्ता इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

७. अमेरिकन इण्डियन लाइनकी कलकत्ता ऐजेन्सी मेसर्स ग्लैडस्टन विली एण्ड को० ३ कौंसिल, हाउस स्ट्रीटके पास है। इस कम्पनीके जहाज अमेरिका और भारतके बीच चलते हैं। कलकत्तेमें इस कम्पनीके जहाज १० वें दिन छूटा करते है।

८. सिटी लाइन - यह लाइन लिवरपूल कोलम्बो और कलकत्ताके बीच जहाज चलाती है। इस कम्पनीके जहाज कलकत्तेसे पाक्षिक छूटते हैं। इसके ऐजेन्ट हैं —मेसर्स ग्लैडस्टन विली एण्ड को० लि०

९ नेटाल डायरेक्ट लाइन कलकत्ता-रंगून तथा दक्षिण अफ्रीकाके बीच जहाज चलाती है।

इसके जहाज कलकत्ते से महीनेमें एक बार छूटते हैं। इसके ऐजेन्ट अण्डरसन राइट एण्ड को० कलकत्ता है।

व्यापारिक संगठन

व्यापारका सम्बन्ध मुख्यतया दो प्रकारका माना जाता है जिनमेंसे एकको घरेलू व्यापार कहते हैं और दूसरा जो वास्तवमें विदेशी है उसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारके नामसे सम्बोधित किया जाता है। इन दोनों ही प्रकारके व्यापारमें पारस्परिक कठिनाइयोंके कारण नित नयी उलझने उठा करती हैं। साथ ही बाजारके लेन देन और तज्जनित वैदेशिक व्यवहारमें भी अव्यवहारिक समस्याओंका अंकुरित हो जाना सामान्य बात है। इतनाही क्यों समय समयपर पारस्परिक हिताहितका इतना भयावह संघर्ष हो बैठता है कि स्वयं शासक शक्तिसे व्यापारी वर्गको घुटनेटेक कर सामना करनेके लिये बाध्य हो जाना पड़ता है अतः इन्ही कठिनाइयोंसे विमुक्त होने और सामुहिक रूपसे अपने हिताहितकी रक्षा कर निज स्वत्व संरक्षण पर दृढ़ हो जानेके लिये व्यापारियोंको व्यापार सम्बन्धी संघोंकी रचना करना पड़ती जाती है। इस प्रकारके व्यापारी संघोंकी कलकत्ते के समान व्यापार प्रधान नगरमें कमी नहीं है अतःयहांपर हम कुछ प्रभावशाली व्यापारी ऐसोसियेशनोंका परिचय अपने पाठकोंको दे देना उचित समझते हैं।

बंगाल चेम्बर आफ कामर्स—यह एक बहुत बड़ा पुराना व्यापारी संघ है। इसके प्रभाव एवं प्रतिष्ठाको देखते हुए मानना होगा कि यह व्यापारी संघ कलकत्ते हीका नहीं वरन समस्त भारतका एक जबर्दस्त ऐसोसियेशन है। इसमें यों तो भारतीय व्यापारी वर्गकी भी कतिपय फर्में सदस्य हैं परन्तु वास्तविक बात यह है कि यह संघ प्रधान रूपसे योरोपियन व्यापारियोंका ही है। उन्हीं लोगोंके हाथमें इसके संचालनका समस्त भार है अतः उन्हींके हिताहितका संरक्षण इसके द्वारा प्रधानतया किया जाता है। यदि देखा जाय तो यह संघ योरोपियन हितकी रक्षामें तल्लीन मिलेगा। इसको सुचारु रूपसे चलानेके लिये तथा व्यापारके विभिन्न अंगोंकी देख रेखके लिये छोटी छोटी उप-समितियाँ बना दी गयी है। इन उप-समितियोंमें विशेष प्रकारका व्यापार करनेवाले अनुभवी व्यापारी सदस्य बनाये गये हैं। और एक एक विषयके दक्ष व्यापारी चुनकर, उनकी उप-समितियां बनाई गयी हैं जो चेम्बरकी देख रेखमें उसके आदेशानुसार संगठित रूपसे नगर या समस्त देशके व्यापार को चला रही हैं।

चेम्बरने व्यापारके विभिन्न अंगोपर दृष्टि रखनेके लिये जिन विशेष प्रकारकी उप-समितियोंकी रचना की है उनकी चर्चा हम नीचे कर रहे हैं।

१ मेजरमेन्ट कमेटी—नाप जोख सम्बन्धी

३० इण्डियन जूट मिल ऐसोसियेशन—जूट मिल सम्बन्धी

३१ मोटर वेहिकल स्टैण्डिङ्ग कमेटी—मोटर सम्बन्धी।

३२ इण्डियन माइनिङ्ग ऐसोसियेशन—खान सम्बन्धी।

३३ कलकत्ता जूट फैब्रिक शिपर्स ऐसोसियेशन जूटके मालको भेजने वालेकी समिती।

३४ कलकत्ता इम्पोर्ट ट्रेड ऐसोसियेशन--विदेशी माल मंगाने वालेकी समिति।

३५ कलकत्ता शुगर इम्पोर्ट ऐसोसियेशन शक्करके व्यापार सम्बन्धी

३६ कलकत्ता कोल कमेटी—कोयलेके सम्बन्धी

३७ इण्डियन मैप मेकर्स ऐसोसियेशन—भारतके नक़शेसे सम्बद्ध

३८ रॉयल एक्स चेंज कमेटी—हुण्डी सम्बन्धी।

उपरोक्त नाम सूचीसे स्पष्ट होजाता है कि व्यापारके विभिन्न अंगोसे सम्बन्ध रखने वाली उपसमितियोंके अतिरिक्त भिन्न भिन्न व्यापारके कितने ही संघ बनाये गये है जो उक्त चेम्बरकी देख रेखमें उसके आदेशानुसार समस्त कार्य संचालन करते हैं।

इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स—यह व्यापारी संघ पूर्ण रूपसे भारतीय व्यापारी संघ है। यद्यपि यह संघ उपरोक्त संघके समान भारत व्यापी प्रभाव नहीं रखता फिर भी कलकत्ता नगरके व्यापारी वर्गमें इसकी प्रतिष्ठा एवं प्रभाव इसके अनुरूप ही है। समय समय पर इसे विदेशियोंके संगठित आन्दोलनके विरुद्ध भारतीय हित साधनके लिये भिड़ जाना पड़ता है। उस समय भारतके व्यापारकी शौच्य अवस्थाका कारुणिक दृश्य सम्मुख खिंच जाता है। इतना होने पर भी यह संस्था अवश्य ही भारतीय व्यापार वाणिज्यकी स्वत्व रक्षामें सदैव सतर्क पायी जाती है।

इस संघने भी व्यापारके विभिन्न अंगप्रत्यङ्गों पर पूरी दृष्टि रखनेके लिये छोटी छोटी अनेक समितियाँ बना कर अनुभवी दक्षः व्यापारियोंका सहयोग प्राप्त कर उन्हे दायित्वपूर्ण काम सौंप रक्खा है। अतः हम उनमेसे कुछ प्रयोजनीय उपसमितियों और ऐसोसियेशनोंकी नाम सूची नीचे दे रहे।

१ कलकत्ता राइस मर्चण्ट्स ऐसोसियेशन—चावलके व्यापारियोंका संघ।

२ इण्डियन जूट ऐसोसियेशन लि०—भारतीय जूट व्यापारी संघ

३ एक्सचेञ्ज एण्ड बुलियन ब्रोकर्स ऐसोसियेशन—हुण्डीके दलालोंका संघ

४ इण्डियन स्टील ऐजेण्ट्स ऐसोसियेशन—भारतीय फौलादके व्यापारियोंका संघ

५ कलकत्ता किराना ऐसोसियेशन--किरानेके व्यापारियोंका संघ

६ गनी ट्रेडर्स ऐसोसियेशन—बोरेके व्यापारियोंका संघ

७ बंगाल जूट डीलर्स ऐसोसियेशन—जूटके व्यापारियोंका संघ
८ फाइनेन्स कमेटी—अर्थ सम्बन्धी
९ पीस गुड्स कमेटी—कपड़ा सम्बन्धी
१० यार्न कमेटी—सूत सम्बन्धी
११ कॉटन मिल कमेटी —कपड़ेकी मिलोंका संघ
१२ इन्सुरेन्स कमेटी—बीमा सम्बन्धी
१३ कोल कमेटी कोयला सम्बन्धी
१४ वीट सीड्स ऐसोसियेशन—अनाज सम्बन्धी
१५ ट्रान्सपोर्ट कमेटी—माल ढोनेके सम्बन्धका संघ
१६ हार्डवेअर एण्ड इञ्जिनियरिङ्ग—इञ्जिनियरोंके सम्बन्धका संघ
१७ ड्रगिस्ट एण्ड केमिस्ट—दवावाले व्यापारियोंके सम्बन्धका संघ
इसी प्रकार कितनी ही उपसमितियाँ हैं जिनका संचालन भारतीय व्यापारियोंके हाथमें है
इस संघका कार्यालय १३५ केनिङ्ग स्ट्रीटमे है।
३ मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स—इसका आफिस २०३-१ हरिसन रोड पर है।
इसका काम भी अनुभवी व्यापारियोंके हाथमे है।
अब हम शेष व्यापारी संघोंकी नाम सूची दे रहे हैं।
४ रॉयल एक्सचेंज—२ क्लाइव स्ट्रीट
५ ब्रोकर्स एक्सचेंज—२ क्लाइव स्ट्रीट
६ इण्डियन साइकल ट्रेडर्स ऐसोसियेशन—५०।६ धरमतल्ला
७ मोटर इण्डस्ट्रीज ऐसोसियेशन—१०।११ केनिङ्ग स्ट्रीट
८ बंगाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स—२० स्ट्राण्ड रोड
९ बंगाल मुस्लिम ट्रेड्स ऐसोसियेशन—८२।८ कोल्हू टोला स्ट्रीट
१० कलकत्ता ट्रेड्स ऐसोसियेशन—२४ डलहौसी स्क्वायर

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज

कलकत्ता और उसके आसपास वाले उपनगरोंकी फैक्टरी और इण्डस्ट्रीजकी नाम सूची हम सरकारी रिपोर्टके आधार पर नीचे दे रहे हैं:—

कपड़े और सूतकी मिलें

१ बंगलक्ष्मी काटनमिल—सेरामपुर हुगली
२ रामपुरिया काटन मिल सेरामपुर „
३ श्रीराधाकृष्ण काटनमिल्स—१२५ ओल्ड गूजरी रोड सल्किया हवड़ा
४ जाजोदिया काटन मिल—गिरीश घोष स्ट्रीट बेलूर „
५ विक्टोरिया काटन मिल्स—गूज़री सल्किया „
६ न्यू इण्डिस्ट्रीज़ लि०—ग्रैण्ड ट्रङ्क रोड सल्किया (उत्तर) „
७ बारिह काटन मिल्स कम्पनी—बोरिह (म्यूलमिल्स) „
८ बारिह काटन मिल्स कम्पनी—बोरिह (रिङ्ग मिल्स) „
९ न्यूरिंग मिल फूलेश्वर उलूबेरिया „
१० केशोराम काटन मिल्स—४२ गार्डन रीच २४ परगना
११ बनवार काटन मिल्स नं०१ श्यामनगर „
१२ बनवार काटन मिल्स नं० ४ (रिंग मिल्स) श्यामनगर „

मोजे बनियानके कारखाने

१ टालीगंज होजियरी फैक्टरी २४ परगना —२८ रोसा रोड (दक्षिण) „
२ एन० बोसकी बेलिया घट्टा होजियरीफैक्टरी—बेलिया घट्टा „
३ पारजोर होजियरी मिल्स लि०—बनारस रोड सल्किया हवड़ा

जूटमिल्स

१ लडलो जूट मिल—चंगेल „
२ फोर्ट ग्लास्टर मिल्स (३ मिलें) फोर्ट ग्लास्टर „
३ न्यूसेन्ट्रल जूट मिल्स—३६ जय बीबी लेन गूज़री „
४ गैनजेस जूट मिल्स (२ मिलें) ४७३ ग्रैण्ड ट्रङ्क रोड शिवपुर „
५ हवड़ा जूट मिल्स (३ मिलें) रामकृष्टोपुर शिवपुर „
६ डेल्टा जूट मिल्स—मानिकपुर „
७ नेशनल जूट मिल्स—राजगंज „
८ लोरेन्स जूट मिल्स—चकासी „

९ बेलवेडियर जूट मिल्स—संक्रेल हवड़ा
१० बाली जूट मिल—बाली „
११ फोर्ट बिलियम जूट मिल्स—(२ मिलें) „
१२ अमेरिकन जूट मिल—शाहगंज हुगली
१३ नार्थब्रूक जूट मिल—चम्पदानी „
१४ श्यामनगर नार्थ जूट मिल भद्रेश्वर „
१५ चम्पदानी जूट मिल्स—चम्पदानी „
१६ डलहौजी जूट मिल चम्पदानी „
१७ वेलिङ्गटन जूट मिल्स—रिश्रा „
१८ इण्डिया जूट मिल्स (२ मिलें)— ८ स्टैण्ड रोड सेरामपुर „
१९ इण्डिया ट्रस्ट मिल्स नं० ३—सेरामपुर „
२० ऐंगस जूट मिल्स—भद्रेश्वरी „
२१ विक्टोरिया जूट मिल्स (२ मिलें) तेलिनी पाड़ा „
२२ प्रेसीडेन्सी जूट मिल—रिश्रा „
२३ इम्पायर जूट मिल—टीटागढ़ २४ परगना
२४ जगदल जूट मिल(न्यू)—जगदल „
२५ फेलविन जूट मिल—टीटागढ़ „
२६ यूनियन जूट मिल (उत्तर)—स्यालदा „
२७ यूनियन जूट मिल (दक्षिण)—बदरटोला „
२८ हुकुमचंद जूट मिल—हाली शहर „
२९ चेविट जूट मिल—बजबज „
३० बेवरली जूट मिल—श्यामनगर „
३१ ओरियन्ट जूट मिल—बजबज „
३२ कैलेडोनियन जूट मिल्स—बजबज „
३३ लोथियन जूट मिल्स—बजबज „
३४ बजबज जूट मिल्स (नं०१और२) बजबज „
३५ बारानगर ईस्ट जूट मिल— २४ परगना आलम बाजार
३६ बारानगर साउथ जूट मिल— आलम बाजार „
३७ कमरहट्टी जूट मिल्स—(२ मिलें A B)
३८ क्लाइव जूट मिल्स (नं०-१ और २) गार्डनरीच „
३९ हुगली जूट मिल (अपर) गार्डनरीच „
४० अलबियन जूट मिल्स—बजबज „
४१ बेलियाघट्टा जूट मिल— १३४ बेलियाघट्टा रोड „
४२ रिलायन्स जूट मिल्स—भातपारा „
४३ श्यामनगर जूट मिल्स (२ मिलें)गरुलिया „
४४ गौरीपुर जूट मिल्स (नं० १ और २) गोरीपुर „
४५ कनकीनारा जूट मिल्स (ए और बी) कनकीनारा „
४६ ऐंग्लो इण्डिया अपर मिल—कनकीनारा „
४७ ऐंग्लो इण्डिया मिडिल मिल—जगदल „
४८ ऐंग्लो इण्डिया लोअर मिल जगदल „
४९ नार्थ ऐलाइन्स जूट मिल्स—जगदल „
५० सोरा जूट मिल्स—सोरा „
५१ टीटागढ़ जूट मिल्स (नं० १ और २) टीटागढ़ „
५२ स्टैण्डर्ड जूट मिल्स—टीटागढ़ „
५३ किनीसन जूट मिल्स (नं० १ और २) टीटागढ़ „
५४ खरदा जूट मिल्स (नं० १ और २) खरदा „

५५ अलेक्जेण्ड्रा जूट मिल—जगदल २४ परगना
५६ आकलैण्ड जूट मिल—जगदल „
५७ नयीहट्टी जूट मिल्स—नयीहट्टी हाली शहर „
५८ लैन्स डाउन जूट मिल्स—दक्षिणदरी „
५९ मेघना जूट मिल्स (उत्तर)जगदल „
६० बिड़ला जूट मिल्स—श्यामगंज „
६१ नदिया जूट मिल (उत्तर)—नयीहट्टी „
६२ नदिया जूट मिल (दक्षिण)—नयीहट्टी „
६३ क्रेग जूट मिल—श्यामनगर „
६४ मेघना जूट मिल—जगदल „

रेशमका मिल

१ बैंगाल सिल्क मिल—ऐरिफ रोड उल्टाडागा „

मशीनरी सम्बन्धी कारखाने

१ इण्डियन मोटर टैक्सी केब कम्पनी—३३ ऐलैण्ड रोड बालीगंज
२ स्टुअर्ट कम्पनीका कारखाना—३८।१ पण्डितिया रोड बालीगंज
३ फ्रेञ्च मोटरकार कम्पनीका कारखाना—२३४-३ लोअर सरकुलर रोड
४ जी मैकनूजी कम्पनीका मोटरका कारखाना-२०८ लोअर सरकुलर रोड
५ थार्नी क्रैफ्ट लि०—४८ डायमण्ड हारबर रोड अलीपुर
६ गोल्डबर्ज ब्रदर्स पेरिस गैरेज—१२ मिडिल रोड इंटाली
७ विकर्स एण्ड को०मोटरका कारखाना—२३३।४लोअर सरकुलर रोड
८ एम० टी० लि०—५९-६० चौरंगी
९ ईवान जोन्सका मोटरका कारखाना—२०८ लोअर सरकुलर रोड
१० वालफर्ड ट्रान्सपोर्ट लि०—हाइड रोड खिदिरपुर
११ रगबी इञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स—१८२ लोअर सरकुलर रोड
१२ ऐलेन वेरी कम्पनीका कारखाना—६२ हजारा रोड बालीगंज
१३ स्पेन्स लि०—मोटर मरम्मत—२३ कानवेन्ट इन्टाली
१४ ए० ई० हेजेन एण्ड को०—मोटर मरम्मत १० डेकर्स लेन
१५ वाल्टर लाकी एण्ड को०—१४ बृटिश इण्डिया स्ट्रीट
१५ स्टुअर्ट कम्पनीका कारखाना—३ मैंगो लेन
१७ ग्रे कवेल कम्पनी „ „—४४ फ्री स्कूल स्ट्रीट
१८ जी० एफ० जेलस मोटर इंञ्जिनियरिङ्ग वर्क्स ४६।४ वेलस्ली स्ट्रीट
१९ इण्डो-बृटिश मोटर इण्डस्ट्री—७३६ फ्री स्कूल स्ट्रीट
२० मैथ्यू एण्ड टर्नबुल मोटर रिपेअर वर्क्स-६२ इलियट रोड
२१ रुसा इञ्जिनियरिंग (गैरेज) वर्क्स—३ मिशनरोड
२२ ए० मिल्टन एण्ड को० का कारखाना—१५६ धरमतल्ला स्ट्रीट

२३ ग्रेट इण्डियन मोटर वर्क्स—
१५८-५६ धरमतल्ला स्ट्रीट

जहाज और बंदरके कारखाने

१ किङ्गजार्ज डाक—१४ ब्रेसब्रिज रोड गार्डन रीच
२ कलकत्ता पोर्ट कमिश्नर्स आर लेण्ड वर्कशाप खिदरपुर
३ पोर्टकमिश्नर्स वर्कशाप—गार्डन रीच रोड

बिजलीके कारखाने

१ पी० डब्लू० डी० इलेक्ट्रिक इंजिनियरिङ्ग वर्क्स—ट्रेजरी बिल्डिङ्ग
२ वेल्डिङ्ग फैक्ट्री हैल्फील्ड (इण्डिया) लि० १४ रानीस्वर्णमयी रोड
३ हवड़ा इञ्जिनियरिङ्ग को०—७७ कालेज रोड शालीमार
४ लिलुआ इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन—ई० आई० आर० लिलुआ
५ हवडा ट्रान्सफार्मर्स हाउस—ई० आई० आर लिलुआ
६ इण्डिया इलेक्ट्रिक वर्क्स —६० बालीगंज
७ बृटिश इण्डिया इलेक्ट्रिक कन्स्ट्रक्शन को० ६ बजबज रोड
८ रुसा इञ्जिनियरिङ्ग कम्पनी—२० हेश्याम रोड भवानीपुर
६ ई० बी० आर० इलेक्ट्रिक शाप—बीजपुर-कचरापाढ़ा
१० काशीपुर पावर स्टेशन—२८ झील रोड काशीपुर
११ गौरपुर पावर स्टेशन – नयीहट्टी
१२ भातपारा पावर हाउस—श्यामनगर
१३ खिदरपुर पावर हाउस (बी० एन० रेलवे) खिदरपुर
१४ बी० एन० आर० का सन्तरा गाछी पावर हाउस सन्तरागाछी

पीपे रंगनेके कारखाने

१ गंगा टीनिङ्ग फैक्टरी—५ राजा राजकिशन स्ट्रीट
२ टैंक स्टोरेज को०—बजबज

इसी प्रकार स्टेंडर्ड, वर्मा, इण्डो वर्मा एसियाटिक पेट्रोलियम आदि तेलकी कम्पनियोंके इसी प्रकारके कारखाने अपने २ नामसे बजबज में हैं।

जूट प्रेस

१ सन जून प्रेस— ३ काशीपुर रोड
२ ओशन जूट प्रेस—१४ नवावपट्टी रोड चितपुर
३ अटलस जूट प्रेस—३ कालीप्रसन्न सिंघी स्ट्रीट काशीपुर
४ सूरज जूट प्रेस—१ गन फैक्ट्री रोड काशीपुर
५ लक्ष्मी जूट प्रेस—२२ झील रोड काशीपुर
६ काशीपुर हाइड्रालिक जूट प्रेस— १५ A रतन बाबू रोड काशीपुर
७ गैनूजेस जूट प्रेस—चितपुर काशीपुर
८ कैम्पर डाउन प्रेस—५ रुस्तमजी पारसी रोड कासीपुर
६ विक्टोरिया जूट प्रेस—११५ चितपुर ब्रिज रोड कासीपुर
१० ऐशक्राफ्ट प्रेस—१६ नवावपट्टी रोड चितपुर

११ हुगली हाइड्रालिक जूट प्रेस—चितपुर काशीपुर

१२ बंगाल हाइड्रालिक प्रेस—३ गन फैक्टी रोड कासीपुर

१३ यूनियन जूट प्रेस—१० दिलेरजंग रोड कासीपुर

१४ न्यू मील प्रेस—कासीपुर

१५ कलकत्ता हाइड्रालिक जूट प्रेस—१५ काली प्रसन्न सिंघी लेन कासीपुर

१६ चितपुर हाइड्रालिक जूट प्रेस—कासीपुर

१७ वेंक्टेश्वर हाइड्रालिक प्रेस—बेलगछिया डोखिनडारी

१८ स्ट्रायड बैंक प्रेस—४।५ कालीप्रसन्न सिंघी कासीपुर

१९ कनाल जूट प्रेस—२ टर्नर रोड कासीपुर

२० राली ब्रदर्स जूट प्रेस—६ रामगोपाल घोष रोड कासीपुर

२१ रली ब्रदर्स जूट प्रेस—गोबर डांगा

२२ गोला बारी जूट प्रेस—बाघ बाजार

२३ सेन्ट्रल हाइड्रालिक जूट प्रेस—२४३ अपर चितपुर, बाघ बाजार

२४ इण्डिया जूट प्रेस—१५ नीमतल्ला लेन

२५ निस्मीथ जूट प्रेस—१२४ ओल्ड घूसड़ी रोड

२६ सलकिया जूट प्रेस—५३ ओल्ड घूसड़ी रोड

२७ हनुमान जूट प्रेस—३८ घूसड़ी रोड

२८ इम्प्रेस आफ इण्डिया जूट प्रेस—५४ घूसड़ी रोड

२९ वेस्ट्स पेटेन्ट प्रेस—३२ हवड़ा रोड सल्किया

३० गूजरी जूट प्रेस—६४ रोजमेरी लेन सल्किया

३१ इम्पीरियल जूट प्रेस—२१ घूसड़ी रोड

३२ हवड़ा हाइड्रालिक जूट प्रेस—६४ रोजमेरी लेन हवड़ा

३३ राली ब्रदर्स जूट प्रेस—शिवरापुली

काटन जीनिङ्ग एण्ड बेलिंग फैक्टरी

१ कलकत्ता काटन फैक्ट्री—६० कासीपुर रोड

२ कासीपुर काटन जीनिङ्ग फैक्ट्री—२ शुगर वर्क्स लेन कासीपुर

३ हरदत्तराय गुलाबराय कापुस जिनिङ्ग मिल्स-लिलुआ

४ बालकृष्ण दास मोहता कापुस जिनिङ्ग फैक्ट्री ३४ मोहीनाथ पाग लेन सल्किया

५ जापान काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनीकी हवड़ा जीनिङ्ग, फैक्ट्री, ५२।१ गिरीश घोष लेन बेलूर

६ सोहन लाल कापुस फैक्ट्री—१५२ ओल्ड घूसड़ी रोड

७ हनुमान कापुस फैक्ट्री—१५२ओल्ड घूसड़ी रोड

८ विश्वनाथ कापुस मिल—६५ धरमोला लेन सल्किया

कंघा, चटाई आदि

जेसोर कोम, बटन एण्ड मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर राजा पी० बी० देव, राय बहादुर, राय० जे० एन० मजूमदार C. O. E. आदि हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख की है। इसके कारखानेमें कंघे, बटन तथा चटाइयां तैयार होती हैं। इसका आफिस २०।१ लाल बाजार स्ट्रीटमें है।

लाख

ऐनजिलो ब्रदर्स लि०—इसका आफिस ६ लियान्सरेंजमें है तथा चपड़ा तैयार करनेका कारखाना काशीपुर ७ रामगोपाल घोषाल घोष लेनमें है। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स टर्नर मारीसन एण्ड को० लि० है। तारका पता Angelo Bro.

२ ग्लास्टनकी जे०सी० शेलेक फैक्ट्री—इसका आफिस ५७ राधा बाजारमें है। भारतमें इसके एजेन्ट मेसर्स जे० सी०ग्लास्टन है।

खेतीके यंत्र

१ दत्त मशीन एण्ड टूल वर्क्स—इसका कारखाना ४३ मस्जिदबारी स्ट्रीटमें है। इसका दूसरा कारखाना कलकत्ता हार्डवेर मैन्यूफैक्चरिङ्ग लि० है। यहा कृषि सम्बन्धी सभी प्रकारके यंत्र तंत्र तैयार होते हैं और पुरानोंकी मरमत की जाती है।

सा मिल्स

१ बगाल सा मिल्स—यह कारखाना १७।१ कनाल ईस्ट रोड उल्टा डांगामें है। इसके मालिक चक्रवर्ती एण्ड को० तथा इसके हिस्सेदार बाबू एन० जी० चक्रवर्ती और बाबू पी० देव हैं।

एल्यूमीनियमके कारखाने

१ विक्टोरिया ऐल्यूमीनियम वर्क्स—घुसरी, सलकिया।

२ ऐल्यूमीनियम मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी—२ जेसोर रोड, दमदम।

जहाज तयार करनेके कारखाने

१ आर० एस० एन० कम्पनीका कारखाना—४३।५६ गार्डनरीच।

२ शालीमार वर्क्स—६८, फोरशोर रोड शिवपुर।

३ बर्न एण्ड को० कमर्शियल डाक—सलकिया।

४ जेसप कम्पनीकी हवड़ा फाउण्ड्री—हवड़ा।

५ जान किंग एण्ड को० का विक्टोरिया इञ्जिन वर्क्स—२३, तेलकल घाट रोड।

६ कलकत्ता लैण्डिंग एण्ड शिपिंग कम्पनी—२० हवड़ा रोड—सलकिया।

ईनमल वर्क्स

१ बंगाल इनैमिल वर्क्स—पाकटा।

२ सूर इनैमल एण्ड स्टैम्पिंग वर्क्स - ६ मिडिल रोड इन्टाली।

सीसेके कारखाने

१ कमरहट्टी वेनेस्टा फैक्टरी—कमरहट्टी

अभ्रक

१ जे० डी० जोन्सका माइका वर्क्स—४६ डाव- सन रोड।

खराद और पालिश

१ बंगाल गैलवनाइजिंग वर्क्स - ४३ मस्जिद बारी स्ट्रीट।

२ मारवाड़ गैलवनाइजिंग वर्क्स—राघो कलाई लेन, बामनगाछी।

३ इण्डियन गैलवनाइजिंग वर्क्स ४।२ घंडल पारा लेन, घुसड़ी।

बिस्कुटके कारखाने

१ श्यामबाजार बिस्कुट फैक्ट्री २ कालाचांद सन्याल लेन।

२ ए० फिरपो लि० चौरंगी।

३ लिली बिस्कुट फैक्ट्री ३, रामाकान्त सेन लेन, उल्टा डांगा।

४ ब्रूटैनिया बिस्कुट फैक्ट्री बीरपारा १ली लेन दमदम।

शराबकी भट्ठी

१ रुसा डिसटिलेरी टालीगंज।

आटेकी मिलें

१ कलकत्ता सिटी फ्लोर मिल्स २४३ अपर चीतपुर रोड।

२ यूनाइटेड फ्लोर मिल्स ३ उल्टा डांगा रोड।

३ नरिकेल डांगा रोलर फ्लोर मिल्स १७।४ कनाल वेस्ट रोड।

४ इम्पायर फ्लोर मिल्स जगत बनर्जी घाट रोड शिवपुर।

५ हवड़ा फ्लोर मिल्स, ३५ रामकिष्टोपुर घाट रोड हवड़ा।

६ हुगली फ्लोर मिल्स फ़ारेस्ट रोड रामकृष्टोपुर

७ रिफार्म फ्लोर मिल्स १४२ फोरशोर रोड शिवपुर।

वर्फ और सोडावाटर

१ लाइटफुड रिफ़्रिजेरेशन कम्पनीका कारखाना वेलिया हट्टा रोड इन्टाली।

२ कलकत्ता आइस फैक्ट्री ३ वोसं स्ट्रीट।

३ बैरन एंड कम्पनी ४ बी चौरंगी।

४ काली मजूमदार (रोड) आइस फैक्ट्री सलकिया।

५ क्रिस्टल आइस फैक्टरी २१ कैनाल स्ट्रीट

चावल मिल

१ अतुलकृष्ण दत्त राइस मिल शाहपुर टालीगंज

२ कृष्णकाली रायका शाहपुर राइस मिल बेहला।

३ गागजी साजन राइस मिल इतलहट्टा रोड

४ मदनमोहन राइस मिल चांदी टोला। टालीगज

५ बागमारी राइस मिल ३५ बागमारी रोड।

६ पोर्ट केनिंग राइस मिल केनिंग टाउन।

७ तारा राइस मिल चंडीतल्ला टालीगंज।

शकर मिल

१ काशीपुर शुगर वर्क्स ४।५ गनफाउण्ड्री रोड

तम्बाकूके कारखाने

१ अमेरिकन ईस्टर्न टोवाको कार्पोरेशन लि० १६ दमदम रोड।

२ कान्टीनेन्टल स्टोर्स ऐजेन्सी ८२ नीमतल्ला घाट स्ट्रीट।

खाद तैयार करनेकी मिल

१ बेंगाल वोन मिल्स राममोहन मल्लिक गार्डन लेन, वेलियाहट्टा

२ गैंजेस वैली वोन मिल उल्टाडागा

३ अटलस फर्टिलाइजर वर्क्स हाडड गेट

४ चितपी हट्टा वोन मिल्स ४।५ राममोहन मल्लिक गार्डन लेन

केमिकल वर्क्स

१ बंगाल केमिकल एण्ड फार्मैस्यूटिकल वर्क्स ९० मानिकतल्ला मेन रोड
२ डी वालडाई एंड को० कोनागर
३ स्मिथ स्टैनिस्ट्रीट एंड को० १८ कानवेन्द रोड

गैसके कारखानें

१ ओरियन्टल गैस वर्क्स १३।१४ कैनाल वेस्ट रोड
२ बंगाल एरेटिंग गैस वर्क्स गार्डन रीच
३ ओरियन्टल गैस वर्क्स ४२२ ग्रैंड ट्रंक रोड

चपड़ाका कारखाना

१ ऐनजेलो ब्रदर्स शेलैक फैक्ट्री ६ रामगोपाल घोष रोड कासीपुर।

कागजके कारखाने

१ टीटागढ़ पेपर मिल्स (२ मिलें) टीटागढ़।
२ इंडिया पेपर पल्प कम्पनी हाली शहर

दियासलाईके कारखाने

१ इस्टर्न इण्डिया मैच मैन्यू फैक्ट्री—४६ मुरीपुकर रोड
२ वेस्टर्न इण्डिया मैच कम्पनी—८६-५ कैनाल वेस्ट रोड
३ कलकत्ता मैच वर्क्स-डिक्सन लेन गार्डनरीच
४ एम० एन० मेहता फैक्ट्री—१०४ उल्टाडिंगी मेन रोड
५ गुप्ता मैनसोन एण्ड को०—३०२-१ अपर सर्कुलर रोड
६ बॉम्बे मैच मैन्युफैक्चरिंग को०—३२ कैनाल वेस्ट रोड

तेल मिल्स

१ हवड़ा आइल मिल्स—रामकृष्टोपुर घाट रोड
२ अक्षय आइल मिल—१३५-१ मानिक तल्ला मेन रोड
३ हातिरकुल आइल मिल—कोनागर
४ वृद्धिचंद रामकुमार आइल मिल—९ राजा राजकृष्ण स्ट्रीट
५ हृषीकेश गौरहरी घोष आइल मिल—७ बनारस रोड सलकिया
६ गोलखधनदास दुलीचन्द आइल मिल—६।३ मानिक तल्ला रोड
७ मानिकलाल साधूखा आइल मिल—२३५अपर सरकुलर रोड

पेन्ट और वार्निश

१ शालीमार पेन्ट वर्क्स—हवड़ा
२ जेनसन एण्ड निकलोन पेन्ट फैक्ट्री—गौरीपा नईहट्टी
३ मुरारका पेन्ट एण्ड वार्निश वर्क्स—सोदपुर
४ हैडफील्ड लि० का पेन्ट एण्ड वार्निश वर्क्स रानी स्वर्णमई लेन
५ वोपमैन एण्ड कैरेन लि०—६७ साउथ रोड इन्टाली
६ कलकत्ता पेन्ट, कलर एण्ड वार्निश वर्क्स—१० जोड़ाबगान स्ट्रीट

साबुनके कारखाने

१ नार्थवेस्ट सोप फैक्ट्री—६३ गार्डनरीच
२ इण्डियन सोप कम्पनी—११।१ बेचूलाल रोड इन्टाली
३ कलकत्ता सोप फैक्ट्री—बालीगंज

अलकतराके कारखाने

१ लिस्टर ऐन्टीसेप्टिक ड्रेसिङ्ग कम्पनी—
७उमाकान्त लेन दमदम

२ शालीमार टार डिस्टिलरी वर्क्स—गोबोरिया
हवड़ा

मोमजामाके कारखाने

१ सालीमार वाटर प्रूफ मैन्यूफैक्चरिङ्ग वर्क्स—
गोबोरिया हवड़ा

स्याहीके कारखान

१ हुगली इंक कम्पनी—४२७ ग्रैण्ड ट्रंक रोड

२ यू० सी० चक्रवर्ती इंक फैक्टरी—१६१ ई०
जी बेलियाघट्टा

ईंट खपड़ा सुरखी मिल

१ विक्टोरिया सुरखी मिल—७६-१ कार्नवालिस
स्ट्रीट

२ हफ्टन एण्ड सन्स सुरखी मिल—६ कैनाल
स्ट्रीट इन्टाली

चूना सीमेण्टके कारखाने

१ सिलहट लाइम वर्क्स—पंचपारा

२ कलकत्ता पाटरी वर्क्स—४४।४५ टंगरा रोड

लकड़ी और फरनीचरके कारखाने

१ मैन्स फील्ड एण्ड सन्स फरनीचर वर्क्स—
टैङ्गरा रोड इन्टाली

२ लिन्टन लि०—६, वेस्टन स्ट्रीट

३ सी० लाकरस एण्ड को०—इन्टाली

४ मार्ट पुकुर वर्क्स—४८-१ चिंगरी घट्टा रोड

५ कैनटन कार्पेन्टरी वर्क्स—१४ टैङ्गरा रोड

६ पैकिङ्ग मैटीरियल कम्पनी—१५७ अपर सरकु-
लर रोड

कांचके कारखाने

१ ग्लास कटिङ्ग एण्ड पालिशिङ्ग फैक्ट्री—ओल्ड
कोर्ट हाउस स्ट्रीट

२ कलकत्ता ग्लास एण्ड सिलिकेट वर्क्स—४।१
कुण्डू लेन बेलगाछिया

३ बेंगाल ग्लास वर्क्स—चर्च रोड दमदम

लकड़ीके कारखाने

१ बेलियाघट्टा फैक्ट्री आफ टिम्बर ट्रेडर्स लि०-१६
B. २ चालपट्टी रोड बेलियाघट्टा

२ ब्रिटेनिया बिल्डिङ्ग एण्ड आयर्न को०—१२।१
वेलेस्ली स्ट्रीट

संग तराशीके कारखाने

१ एल० ई० सैलसिकसियोनी लि० (संगमरमर)—
२० हवड़ा रोड-सल्किया

२ इण्डियन पेटेण्ट स्टोन वर्क्स—१ कनाल ईस्ट
रोड—बेलियाघट्टा

३ कट्टा स्टोन एण्ड मारबल वर्क्स—५ कट्टा रोड
खिदरपुर

चमड़ाके कारखाने

चार्ल्स बूथ एण्ड को० लेदर वर्क्स—चिंगरियाहट्टा
रोड खिदरपुर

२ इण्डिया टैनरी ५ हाइड रोड खिदरपुर

३ बेंगाल टैनरी हाइड रोड खिदरपुर

४ नेशनल टैनरी पगलाडागा साउथ कनाल रोड

५ कलकत्ता रिसर्च टैनरी कनाल साउथ रोड

ब्रशका कारखाना

१ कलकत्ता ब्रश एण्ड फाइबर फैक्ट्री १७२ बो
बाजार स्ट्रीट

ग्रामोफोन रेकार्डका कारखाना

१ ग्रामोफोन कम्पनी कारखाना १३९ बेलियाघट्टा

धोबी कम्पनी

१ बेंगाल स्टीम लाण्ड्री कं० लि०—रिची रोड बालीगंज

गोली बारूदके कारखाने

१ मेटल एण्ड स्टील फैक्ट्री इचापुर

२ गन एण्ड सेल फैक्ट्री काशीपुर

३ राइफल फैक्ट्री इचापुर

रस्सेके कारखाने

१ गैनजेस रोप वर्क्स शिवपुर

२ शालीमार रोप वर्क्स ४१ शालीमार रोड

३ घूसरी रोप वर्क्स १४९ ओल्ड घूसरी रोड

टीनका कारखाना

१ धूरसिंह टीन फैक्ट्री १४ हालसी बगान रोड

सोप फैक्टरी

१ कलकत्ता सोप वर्क्स लि०—इसका कारखाना मार्डर्निङ्ग रोड बालीगंजमें है। इसमें ४ लाख १० हजार की पूंजी लगी है। यहां साबुन, ग्लेसरीन और शृङ्गारकी सभी प्रकारकी वस्तुओंके बनानेका प्रबन्ध है।

२ इण्डियन सोप कम्पनी एण्ड बङ्गाल कार्डबार्ड वर्क्स मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी—इसका कारखाना ११ बेचूलाल रोड इन्टालीमें है।

३ नार्थ वेस्ट सोप कम्पनी लि०—इसका कारखाना ६३ गार्डन रीच रोड पर है।

शक्करके कारखाने

१ बंगाल पाम शुगर मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लि०—इसका कारखाना सल्कियामें है तथा इसके मैनेजिङ्ग ऐजन्ट मेसर्स ए० एल० कुण्डू एण्ड को० हैं।

२ ईस्ट बंगाल शुगर मिल्स लि०—इसका आफिस ३ कालेज स्कायरमें है तथा इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एस० एस० डीन एण्ड को० हैं।

रंग और मोम जामा

१ नेशनल डाई एण्ड वाटर प्रुफ वर्क्स लि०—इस कारखानेके आदि संस्थापक स्वनाम धन्य देशबन्धु चित्तरंजन दास हैं। और वर्तमानमें आपकी धर्म पत्नी श्रीवासन्ती देवी इसकी एक डायरेक्टर हैं। इसके सोल ऐजेन्ट मेसर्स सी० सी० नाम एण्ड ब्रदर्सका आफिस ७ बो बाजार स्ट्रीटमें है।

ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियाँ

हम यहां कतिपय उन्हीं ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंकी चर्चा करते हैं जिनका हेड आफिस कलकत्तेमें है और इनके डायरेक्टर मण्डलमें भारतीय सदस्य भी शामिल हैं :—

कोयलेकी कम्पनियाँ

१ [illegible] कोल कम्पनी लि०—इस कम्पनीमें श्री० जे० सी० मुकर्जी और श्री एल० सी० [illegible] डायरेक्टर [illegible] हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एच० वी० लो० एण्ड कं० लि० [illegible] हैं। [illegible] राज्यसे खरीदी गयी ६०० बीघा भूमिमें

कम्पनीकी कोयलेकी खाने हैं। ये खाने बोकरुओं और रामगढ़के बीच वाले क्षेत्रमें हैं।

२ ऐमल गमेटेड कोल फील्डस लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल राय बहादुर श्री ए० सी० बनर्जीको छोड़कर सभी योरोपियन हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स शा वालेस एण्ड को०—४ बैंक्स हाल स्ट्रीट है।

३ अरंग कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी तथा एल० सी० भंवरको छोड़कर शेष सभी योरोपियन हैं। इस कम्पनीकी कोयलेकी खानें ५०० बीघेके क्षेत्रमें फैली हुई हैं।

४ बागडिगगी कुजामा कालरीज लि०—इस कम्पनीके भारतीय डायरक्टरोंमें राय० ए० सी० बनर्जी बहादुर, सी० आई० ई, और श्री० एम० के खन्ना हैं—इसकी मैनेजिङ्ग ऐजन्सी मेसर्स एम० के० खन्ना एण्ड को० लि०—८ ओल्ड कोर्ट हाउस कार्नरके पास है। इस कम्पनीकी खानें झरियाके प्रसिद्ध कोयलेके क्षेत्रमें ३०० बीघा भूमिमें हैं।

५ बरबोनी कोल कनसर्न लि०—इसके डायरेक्टरोंमें राय बहादुर सेठ सुखलाल करनानी ओ०बी० ई० ईसनचंद्र घोष; जे० सी० बनर्जी तथा ए० सी० चटर्जी हैं। इस कम्पनीके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एच० बी० लो० एण्डको लि० है। इस कम्पनीकी खानें २२, ५०० बीघेकी विस्तृत भूमिमे है।

६ बेनाकुरी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरक्टरोंमें श्री० जे० सी० बनर्जी तथा श्री० एल० सी० झंबरको छोड़कर शेष सभी योरोपियन हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एच० बी० लो० एण्ड को० है। इसकी खाने रानीगंज स्टेशनसे ६ मील दूरपर है।

७ बंगाल भङ्गडी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें श्री कन्हैयालालजी जटियाके अतिरिक्त सभी योरोपियन है। इस कम्पनीके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि०-८ क्लाइव रो है। इसकी खाने झरियाके कोयला क्षेत्रमें ३७० एकड़ भूमिमें हैं।

८ बंगाल कोल कम्पनी लि०—इसमें सर ओंकारमलजी जटिया ही एक मात्र भारतीय डायरेक्टर हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० हैं। इस कम्पनीके अधिकारकी भूमि यों तो रानीगंज और रझाराके बीच ९०हज़ार एकड़ है पर इसमेंसे ५० हज़ार एकड़ ऐसी भूमि है जिसमें कोयला निकलता है। इसके अतिरिक्त गिरिडिह, पलामू और झरियामें भी इसकी खाने हैं।

९ बंगाल गिरिडिह कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें श्री गजानन्दजी जटियाके अतिरिक्त सभी योरोपियन हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० हैं। यह कम्पनी उपरोक्त बंगाल कोल कम्पनी लि० के अन्तर्गत ही है।

१० बंगाल नागपुर कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल श्री गजानन्दजी जटिया ही एक भारतीय डायरेक्टर हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स ऐड्रयूल एण्ड को० लि० के पास है।

११ भलगोरा कोल कम्पनी लि०—इसके डाइरेक्टर श्री जे० सी० बनर्जी, मंगनीराम बांगड़, तथा राय बहादुर सेठ सुखलालजी करनानी हैं इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० लो एण्ड को० लि० के पास है। कम्पनीके पास १२५० बीघाकी कोयलेकी खानें है। यह कम्पनी कोक भी तैयार करती है।

१२ देवली कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमेंसे केवल सर ओंकारमलजी जटिया ही एक मात्र भारतीय हैं जो डायरेक्टर मण्डलके सदस्य हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स ऐड्रयूल एण्ड को० लि० के पास है। कम्पनीकी खाने देशरगढ़ जिलेमें १०२६ बीघा भूमिमें हैं।

१३ धेमो मेन कॉलरीज लि०—इसमें महाराज सर मनीन्द्रचंद्र नान्दी के० सी० आई० ई० के अतिरिक्त सभी योरोपियन डायरेक्टर हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मैकनियल एण्ड को० २ फेयरली प्लेस कलकत्ताके पास है।

१४इक्वीटेबल कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमेंसे राय साहिब इनमचंद्र घोषको छोड़कर सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मैकनियल एण्ड को० के पास है। कम्पनीके पास १४१५४ बीघा कोयलेका क्षेत्र है।

१५ कलपहारी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया ओ० बी० ई० और महाराज सर मनीन्द्रचंद्र नांदी के० सी० आई० ई० है। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० है। इसकी खाने रानीगंजके प्रसिद्ध कोयला क्षेत्रमें ६८७ बीघा भूमिमें हैं।

१६ कास्टा कालरीज लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल श्री जे० सी० बनर्जी ही एक मात्र भारतीय हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० लो एन्ड को० के पास है। कम्पनीकी खाने १४०० बीघेमे हैं।

१७ कोमुनन्दा एण्ड नाढडी कालरीज लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर आर० एन० मुकर्जी ही एक मात्र भारतीय हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्ट मार्टीन कम्पनी ६।७ क्लाईव स्ट्रीट है। इसकी खानें झरियाके समीप १२८० बीघाके कोयला क्षेत्रमें हैं।

१८ कुआरडी कोल कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर राय साहिब ईसनचंद्र घोष, राय बहादुर सेठ सुखलाल करनानी, तथा श्री० जे० सी० बनर्जी हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी एच० बी० लो एण्ड को० लि० के पास है। कम्पनीकी खानें रानीगंजमें ३११५ बीघा भूमिमें हैं।

१९ लकरका कोल कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०७ ई० में कराई गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें बाबू बालमुकुन्दजी डागा, रा० ब० सेठ सुखलाल करनानी तथा श्री० जे० सी० बनर्जी है। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० लो एण्ड को० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ४ लाख ५० हजारकी है जो १०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४५ हजार शेयर बेंच कर लगायी गयी है। इसकी खानें ७८७ मीलके क्षेत्रमें झरियाके पास हैं।

२० न्यू सिनिडिही कोल कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९१४ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी तथा श्री ए० सी० झंवर भी हैं। इसके मैनेजिंग एजेन्ट एच० बी० लो एण्ड को० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ७५ हजारकी है। इसकी खाने रानीगंज कोयला क्षेत्रमें ४०० बीघा भूमिमें हैं।

२१ न्यू केसरगढ़ कोल कम्पनी लि० इसकी रजिस्ट्री सन् १९१२ ई० में हुई थी। इसके डाइरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी, रा० ब० सेठ सुखलालजी करनानी तथा बाबू बालमुकुन्द भी डागा हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० लो कम्पनी लि० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाख २५ हजार है जो १०) प्रति शेयरके हिसाबसे ३५ हजार शेयर निकालकर वसूल की गयी है। सन् १९२६ ई० में साउथ गोविन्दपुर कालरीज लि० तथा वेस्ट टेटूरिया कालरीज लि० भी इसमें सम्मलित कर दी गयीं है।

२२ नार्थ कजोरा कोल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९२४ में करायी गयी थी। इसके भारतीय डायरेक्टरोंमें श्री जे० सी० बनर्जी तथा श्री एल० सी० झंवर हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स एच० बी० लो कम्पनी लि० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाख ७५ हजारकी है जिसमेंसे १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे २४४०० शेयर बेचकर कम्पनी कामकर रही है। इसकी खानोंकी भूमि ४०० बीघा है जो रानीगंजके कोयलेके क्षेत्रमें हैं।

२३ परासिया कालरीज लि० की रजिस्ट्री सन् १९०८ ई० में करायी गयी थी। इसके भारतीय डायरेक्टरोंमें सर ओंकारमलजी जटिया के० टी० ओ० बी० ई०, बाबू गजानंदजी जटिया तथा बाबू कन्हैयालालजी जटिया है। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स किलबर्न एण्डको ४ फेयरली प्लेसके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ८ लाख की है जो १० रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ८० हजार शेयर निकालकर वसूल की गयी है। इसके पास ८९१० बीघे ऐसी भूमि है जहा कोयलेकी खाने हैं।

२४ पेंन्च वेलीकोल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९०५ ई० मे करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें केवल पी० सी० चौधरी ही एक भारतीय सदस्य हैं। इसकी मैनेजिङ्ग एजेन्सी [illegible]स है। इसकी स्वीकृत पूंजी १२ लाख की है।

२५ रानीगंजकोल ऐसोसियेशन लि० की रजिस्ट्री सन् १८७३ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें रायसाहिब ईसनचंद घोषके अतिरिक्त सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी किलवर्न एण्ड को० के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी है .इसका शेयर १०) रु० का है। इसकी खाने झरियामें ४७३३ बीघा भूमिमें हैं।

२६ शिमला कालरीज लि० की रजिस्ट्री सन १९२७में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें सर आर० एन० मुकुर्जीको छोड़कर शेष सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स मार्टीन एण्ड को० ६।७ क्लाइव स्ट्रीटके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाखकी है जो १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे २ लाख शेयरों द्वारा वसूल की गई है।

२७ सतपुकुरिया एण्ड आसनसोल कालरीज लि० की रजिस्ट्री सन् १९०७ ई में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमेंसे केवल सर आर० एन० मुकुर्जी ही मात्र भारतीय हैं। इसकी सोल ऐजेन्सी मेसर्स मार्टीन एण्ड को० के हाथमें है। इसकी स्वीकृत पूंजी ८ लाखकी है जो ८० हजार शेयरों द्वारा वसूल की गई है।

२८ साउथ करनपुरा को० लि० की रजिस्ट्री सन् १९२२ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें मेसर्स डी० सी० बनर्जी तथा बाबू शिवकृष्ण भट्टड़ हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स बर्ड एण्ड को० चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग के पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी है इसकी खानें ११५० बीघे भूमिमें है।

२९ सुदामदीह कोल को० लि० की रजिस्ट्री सन् १९०७ ई० हुई। इसमें बाबू कन्हैयालालजी जटिया ही एक मात्र भारतीय डाइरेक्टर हैं। इसकी मैनेजिङ्ग एजेन्सी मेसर्स ऐण्ड्रयूल कम्पनीके पास है। इसकी खानें झरिया कोयला क्षेत्रकी १०२६ बीघा भूमिमें है।

३० तालचर कोल फील्डस् लि०। सन १९२१ ई० में इसकी रजिस्ट्री करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें राजा किशोरचंद बीरवर हरिचंदन तथा बाबू राधाकृष्ण सोनथलिया भी हैं। इसके एजेण्ट मेसर्स विलियमस् ४१ एफ-१ क्लाइव बिल्डिङ्गसमें हैं। इसकी स्वीकृत पूजी २० लाख की है जिसमेंसे ४ लाख शेयर, ५) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे निकाल कर कम्पनीका काम हो रहा है। यह उड़ीसाके तालचर कोयला क्षेत्रमें १४ हजार बीघामें कोयला निकलवाती है।

३१ यूनियन कोल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१७ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें श्री डब्ल्यू० सी० बनर्जीको छोड़ कर शेष सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स विलियमसन मेगर एण्ड को० ४ मैनगोलेनके पास है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३ लाख ५० हजार

की है जो १०) रु० प्रति शेयरके हिसाव ३५ हजार शेयर निकाल कर इकट्ठी की गयी है। इसकी कोयलेकी खानें झरिया कोयला क्षेत्रकी २०० बीघा भूमिमें है।

३२ वेस्टर्न कोल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६१७ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें सर ओंकारमलजी जटिया के०टी० ओ-बी० ई० ही एक भारतीय सदस्य है। इसकी स्वीकृत पूजी २ लाखकी है जो १०) रु० प्रति शेयरके हिसाव से २० हजार शेयर वेच कर संग्रह की गयी है। इसकी खाने ८०० बीघे क्षेत्रमें हैं। इनमें अच्छी श्रेणीका माल निकलता है।

रेलवे कम्पनियाँ

१ अहमदपुर—कटूवा रेलवे कम्पनी लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १६१४ ई० में करायी गयी है। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मेकलाड एण्ड को० २६ डलहोसी स्कायरके पास है।

२ आरा सहसराम लाइट रेलवे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल सर आर० एन. मुकर्जी के० सी० आई० ई० के० सी० वी० ओ तथा राजा राधिका रमण प्रसाद सिनहाको छोड़ कर सभी योरोपियन है। इसके मेनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स मारटीन एण्ड को० का आफिस ६।७ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्तामें हैं।

३ बाँकुड़ा दामोदर रिवर रेलवे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमे केवल वावू कन्हैयालालजी जटिया ही एक मात्र भारतीय हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स मैकलाड एण्ड को० के पास है।

४ वसरत बसीरहाट लाइट रेलवे को० लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर आर० एन० मुकर्जी, के० सी० आई० ई० के० सी० वो० ओ० तथा वावू शशि शेषर वसुको छोड़ कर शेष सभी योरोपियन है। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मारटीन एण्ड को० के पास है।

५ वख्तियारपुर बिहार लाइट रेलवे को० लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर आर० एन० मुकर्जी तथा राजेन्द्रहरी सिनहाके अतिरिक्त सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मारटीन एण्ड को० के पास है।

६ वर्दवान कटूवा रेलवे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें वावू कन्हैयालालजी जटियाके अतिरिक्त सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मेकलाड एण्ड को० के पास है।

७ बंगाल प्राविन्सियल रेलवे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर वावू वी० गोस्वामी, वावू तारक नाथ मुकर्जी, वावू अटल कुमार सेन, वावू नगेन्द्र कुमार वोस, राजा मनीलाल सिंह राय तथा डा० पूर्णचन्द्र मित्र हैं। इसकी स्वीकृत पूजी ११ लाख की है। यह रेलवे लाइन तारकेश्वरसे मगरा तक जाती है। इस रेलवे कम्पनीका प्रधान आफिस मगरामें है।

८ चापरमुख सीलघाट रेलवे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर राजेन्द्र नाथ मुकर्जी

तथा सर लल्लू भाई सावल दासको छोड कर सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स मार्टीन एण्ड को० के पास है।

९ दार्जीलिंग हिमालय रेलवे कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टरोंमें केवल सर आर० एन० मुकर्जी के० सी० एस० आई० के० सी० वी० ओ० ही भारतीय हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी, गिलैण्डर्स आर्वथ नाथ एण्ड को० ८ क्लाइव स्ट्रीटके पास हैं।

१० फटूवा इस्लामपुर लाइट रेलवे को० लि०—इसके डायरेक्टरोंमें सर० आर० एन० मुकर्जी तथा सर लल्लूभाई सावलदासको छोड़ कर सभी योरोपियन हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मारटीन एण्ड को० के पास है।

अभ्रककी खानें

१ वृन्दावन इंडस्ट्रियल सेण्डीकेट लि० इसका रजिस्टर्ड आफिस ५ फेयर्ली प्लेसमें है। कम्पनीकी खाने कोडर्मा जि० हजारी बागमें है जहां अभ्रक निकाला जाता है। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स होर मिलर एण्ड को० लि० कलकत्ताके पास है।

२ छोटूराम होरिलराम लि०—इसके डायरेक्टर बाबू छोटूरामजी तथा दूरसऊ रामजी हैं। इसका रजिस्टर्ड आफिस १, २, ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीटमें है। इसकी खाने कोडर्मा जि० हजारी बागमें हैं। यह कम्पनी स्वयं ही अपने मालको विदेश भेजती है।

३ नन्द एण्ड सामन्त कम्पनी लि०—इसका हेड आफिस २९ स्ट्राण्ड रोड कलकत्तेमें है। इसकी खाने धोरखोला, देवूर, ताराघाटी, चित्रापुरमें है जहांसे अभ्रक निकलता है। अभ्रक साफ करने तथा काट कर छटाई करनेका काम इसके कोडर्मा का खानेमें होता है।

सीसाके कारखाने

१ ट्रायङ्गल लेड मिल्स कम्पनी लि०। इस कारखानेमें चाय लपेटने तथा चायके बक्सोंमें रखनेका सीसा तैयार होता है। जिसमें T. L. M. मार्का मशहूर है। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी मेसर्स मेकलाड एण्ड को० के पास है।

आटाकी मिलें

१ हवड़ा फ्लोर मिल्स लि०। इसका रजिस्टर्ड आफिस २१-रूपचंदराय-स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया के०टी० ओ० बी० ई तथा बाबू गजानंदजी जटिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाख रुपयेकी है जो १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १५ हजार शेयर निकाल कर इकट्ठी की गयी है। इसके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर बाबू रूपलालजी जटिया तथा बाबू कन्हैयालालजी जटिया हैं।

२ रिफार्म फ्लौर मिल्स लि० हवड़ा। इसका रजिस्टर्ड आफिस २१ रूपचंदराय स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टरोंमें सर ओंकारमलजी जटिया के०टी० ओ० बी० ई० बाबू गजानंदजी जटिया; तथा आर० आर० अप्पर हैं। इसके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर बाबू कन्हैयालालजी जटिया तथा चम्पालाल-जी जटिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १६ लाख ५० हजारकी है।

जूटकी मिलें

इस ग्रन्थके प्रारम्भिक विभागमें जूटके सम्बन्धमें पर्याप्त प्रकाश डालते हुए श्रृङ्खलाबद्ध परिचय दिया जा चुका है। अतः यहां उसे पुनः उद्धृत न कर केवल जूट मिलोंके सम्बन्धमें चलतु चर्चाकी जायगी।

यों तो १६ वीं शताब्दीके आरम्भ कालसे ही जूटके सम्बन्धमें महत्वपूर्ण बातोंकी खोज आरम्भ हो चुकी थी पर सन् १८२५ में स्काटलैण्डके डण्डो नामक नगरमें जूट बिननेका काम आरम्भ किया। फलतः जूटकी मांग बढ़ी और भारतमें जूटकी खेतीका प्रसार जोरोंसे हो चला। भारतमें भी जूट मिल स्थापित करनेके लिये लोग विचार करने लगे और सन् १८५५ ई० में मि० जार्ज आकलैण्ड नामक एक योरोपियनने कलकत्ताके उपनगर सिरामपुरके समीप रसड़ामें एक जूट मिल खोला और उसका संचालन करनेके लिये कलकत्तेमें सबसे प्रथम रसड़ा ट्वाइन एण्ड यार्न मिल्स कम्पनी लि० के नामसे प्रथम ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनीकी स्थापनाकी। यह कम्पनी सन् १८६८ ई० तक काम करती रही। सन् १८७२ ई० में यही मिल कलकत्ता जूट मिल्स कम्पनी लि० के नामसे तथा इसके बाद वेलिङ्गटनजूट मिल्सके नामसे काम करता रहा और वर्तमानमें यही मिल चम्पदानी जूट मिल्स कम्पनी लि० के नामसे काम कर रहा है।

रसड़ावाले मिलमें हाथके करघे थे पर सन् १८५६ ई० में जब बोर्नियो जूट कम्पनी लि० की स्थापना की गयी तब इसमें हैण्डलूमके स्थानमें पावर लूम लगाये गये। इस मिलमें बुनाई तथा कताईके विभाग अलग अलग खोले गये थे। इसे अच्छी सफलता मिली पर सन् १८७२ में मिलका नाम वर्तमान बारानगर जूट फैक्ट्री कम्पनी लि० रक्खा गया जो आज भी काम कर रहा है।

सन् १८६२ ई० में गौरीपुर तथा सिराजगंज मिल्सकी स्थापना की गयी तथा सन् १८६६ ई० में इण्डिया मिल्स खोला गया। सन् १८७२-७३ ई० में बजबज, फोर्ट ग्लास्टर, शिवपुर (वर्तमान फोर्ट विलियम मिल्स), श्यामनगर और चम्पदानी नामक मिलोंकी स्थापना की गयी। सन् १८७३-७५ ई० के बीच ओरियन्टल (यूनियन नार्थ), हवड़ा एशियाटिक, (वर्तमान सोरा), क्लाइव, बंगाल (वर्तमान बेलिया घट्टा), रुस्तमजी (वर्तमान न्यू सेन्ट्रल), हेस्टिङ्ग और गैनजेस नामके जूट मिल खोले गये। सन् १८७७ ई० में कमरहट्टी मिल खोला गया। और सन् १८८२ ई० से सन् १८८५ ई० के बीच हुगली, टीटागढ़ विक्टोरिया, और कंकनाड़ा नामक मिले खुलीं।

कलकत्ता और उपनगरके मिलोंकी संख्या बढ़ते ही नयी उलझनें भी उठ खड़ी हुई अतः सन् १८८४ ई० में इण्डियन जूट मिल्स एसोसियेशनकी स्थापना कलकत्तेमें की गयी। सन् १८८५ से १८९५ तक मिलोंकी संख्यामें कोई वृद्धि नहीं हुई पर मिलवाले अपने यहां करघेकी संख्या अवश्य बढ़ाते रहे। इसी समय भाफके साथमें बिजलीसे काम लेना आरम्भ किया गया। सन् १८८५से १९०० ई० के बीच खरड़ा, गोंडलपारा (फ्रेंच सीमामें) अलायन्स, ऐंग्लो इण्डिया, स्टेण्डर्ड, नेशनल, डेल्टा, किनीसन, और ऐराथून (वर्तमान लैण्डसडाउन) नामके जूट मिलोंकी स्थापना की गयी। सन १९०४ ई० तक डलहौसी, अलेक्जेण्ड्रा नईहट्टी, लारेन्स, वेलवेडियर, रिलायन्स, केलविन, आकलैण्ड, तथा नार्थब्रूक मिल्स खोले गये। सन् १९०४-१४ ई० के बीच ऐलबियन, ऐंगस (अमेरिकन कम्पनीका मिल) तथा इम्पायर ३ मिल स्थापित किये गये। योरोपीय महासमरके समय कैलेडियन, लेथियन ओरियन्ट, वेवर्ली, क्रोग तथा वालीमिल खुले। युद्धके बाद नदिया, मेघना, चेत्रिया, बेंजामिल (वर्तमान प्रेसीडेन्सी मिल्स) बिड़ला और हुकुमचंद मिल्सकी स्थापना हुई। सन् १९२३ ई० में लडलो तथा अमेरिकन मैन्यूफैक्चरिङ्ग नामक दो अमेरिकन मिलोंकी स्थापना हुई।

वर्तमानमें २ मिलोंकी एजेण्ट भारतीय व्यापारी फर्मे हैं। तीन मिलोंकी अमेरिकन कम्पनियां हैं तथा शेष मिलोंकी एजेण्ट योरोपियन फर्में है।

आदमजी जूट मिल लि०, हनुमान जूट मिल (प्राइवेट) अगरपाडा जूट मिल (प्राइवेट) यह मिलें भी भारतीय है।

कलकत्ता और उसके उपनगरोंके जूट मिलोंका आवश्यक परिचय इस प्रकार है।

अलबियन जूट मिल्स कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०९ ई० मे हुई थी इसके डायरेक्टरोंमें श्री डी० डी० सासुन, मि० जी० एफ० रोज तथा बाबू गजानंदजी जटिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी तो २१ लाखकी है पर १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १२ लाखकी साधारण पूंजी इकट्ठीकर काम चलाया जा रहा है। इसका हिसाव ६ मासमें होता है अतः छः माही आर्थिक विवरण अप्रेल और अक्टूबरमें प्रकाशित किया जाता है।

कम्पनीका जूट मिल बजबजके पास है। इसमें बोरेके करघे ३०० और हैसियनके ४० हैं। इस प्रकार कुल ३४० करघे है, इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रो कलकत्तेमे है।

अलेक्जेण्ड्रा जूट मिल्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०४ ई० मे हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें डी० एस० के० मेंग, मि० एस० एस० हडसन, मि० सी० ए० जोन्स तथा मि० ई० स्टउस हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी है पर १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ६ हजार साधारण

शेयर निकालकर इकट्ठी की गयी पूंजीसे काम कर रहा है। इसका हिसाब ६ मासमें होना है अतः ६ माही आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमें प्रकाशित किया जाता है।

कम्पनीका जूट मिल जगद्दलमें हैं। इसमें १०८ बोरेके करघे तथा २८८ हैसियनके करघे हैं। इस प्रकार सब मिलाकर ३९६ करघे हैं। कम्पनीके मैनेजिङ्ग एजेन्ट मेसर्स बेग डनलप एण्ड को० लि० का आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है।

३ अलायन्स जूट मिल्स कम्पनी लि०की रजिस्ट्री सन् १८९५ मे करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी है जिसमेंसे १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १५ हजार साधारण शेयर हैं। इसका ६ माही आर्थिक विवरण जुलाई तथा जनवरीमें निकलता है।

कम्पनीका जूट मिल कंकनारामें है इसमें ३२८ करघे तो बोरेके और ६७४ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १००२ करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेग डनलप एण्ड को लि० २ हेयर स्ट्रीट हैं।

४, एंग्लो इण्डियन जूट मिल्स लि० की रजिस्ट्री सन् १९१७ ई० मे हुई थी, इसके डायरेक्टरोंमें मि० ए० एल० फील्ड, मि० जे० सी० डिनाई स्मिथ तथा डी० पी० मेकंजी हैं। यों तो इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की है, पर ७६८२९००) रु० की वसूल पूंजीसे काम हो रहा है। इसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४९२०७ साधारण शेयर है। इसका हिसाब ६ माही प्रकाशित होता है अतः आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित किया जाता है।

कम्पनीका जूट मिल कङ्कनारामें है इसमें बोरेके करघे ९२८ तथा हैसियनके १५७२ हैं। इस प्रकार कुल २५०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स डकन ब्रादर्स एण्ड को० का आफिस १० क्लाइव स्ट्रीटमें है।

५, आकलैण्ड जूट कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०८ ई० में करायी गयी थी। इस कम्पनीके डायरेक्टरोंमें केवल बाबू बद्रीदासजी गोयनका ही एक मात्र भारतीय हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी यों तो ३० लाख की है पर १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबके २० हजार शेयर साधारण तौरके हैं। इसका हिसाब ६ माही होता है अतः आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित किया जाता है।

इस कम्पनीका जूट मिल जगदलमें है। इसमें ३६० बोरेके और ४५० हैशियनके करघे है। इस प्रकार कुल ८१० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स वर्ड एण्ड को० लि० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगमें है।

६, वाली जूट कम्पनी लि० के डायरेक्टर मि० जी० टी० जी० मिलने, मि० जे० टी०

फिनले, मि० जी० एच० फेयरथर्स्ट, और मि० जी० एल० रकाट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख की है जिसमे १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे २० हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका हिसाब ६ मासमे होता है अतः सितम्बर और मार्चमें आर्थिक विवरण प्रकाशित किया जाता है।

यह कम्पनी वारानगर जूट फैक्टरी खरीदनेके लिये खोली गयी थी। इसका मिल वारानगरमे है उसमे २५० वोरेके और ५७५ हैसियनके करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स हेन्डरसन एण्ड को० लि० का आफिस १०।१ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

७ वेलवेडियर जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० डी० डी० सासुन, श्री सेठ छज्जूराम जी चौधरी सी० आई० ई०, सर ओंकारमलजी जटिया, के०टी० ओ बी० ई तथा मि० जी० एफ० रोज है। इसकी स्वीकृत पूंजी २१ लाख की है इसका हिसाब छ मासमें हुआ करता है अतः जून और दिसम्बरमे आर्थिक विवरण प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल संक्रेल हवड़ामें है। इसमे २१९ वोरेके और ४३१ हैसियनके करघे हैं। इस प्रकार कुल ६५० करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रोडमें है।

८, बिड़ला जूट मैन्यूफैक्चरिंग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१९ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर बाबू घृजमोहनजी बिड़ला, राय बद्रीदासजी गोयेनका बहादुर, बाबू गजानंदजी जटिया, सेठ छज्जूरामजी चौधरी सी० आई० ई०, मि० ई० पी० गजदर तथा सेठ मगनमलजी कोठारी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाख की है जिसमें से १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ५,००,००० साधारण शेयर हैं। इसका छमाही आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्च में प्रकाशित किया जाता है।

इसका जूट मिल श्यामगंज हाट बजबज में है। इसमें ३०० वोरेके करघे तथा बाकी ५०० हैसियनके हैं इस प्रकार ८०० करघे चल रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लि० का आफिस ८ नं० रायल एक्सचेंज प्लेसमे है।

९, [illegible] जूट मिल कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७३ ई०मे करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमलजी जटिया, के०टी० ओ०बी०ई०, मि०ई०आर० हार्टले, तथा मि०जी०एफ० रोज हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २७ लाखकी है जिसमेसे १००) प्रति शेयरके हिसाबसे १८ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका छमाही हिसाब अप्रैल और अक्टूबरमे प्रकाशित होता है।

इसका मिल बजबजमें है जिसमे एण्डूयूल एण्ड का० लि० की मैनेजिंग ऐजेन्सी है। इसमें ७८१ करघे काम कर रहे हैं

१० कैलडोनियन जूट मिल्स कम्पनी लि०—की रजिस्ट्री सन् १९१५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर डेविड इज़रा,सर ओंकारमल जटिया के०टी०और मि० जे० साइम हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १९ लाख की है। इसका ६ माही हिसाब मई और नवम्बरमें प्रकाशित होता है। इसका मिल बजबजमें है जिसमें २२० करघे बोरेके और २९० हैसियनके है। इस प्रकार कुल ५१० करघे काम कर रहे हैं। इसकी मैनेजिंग ऐजेन्सी मेसर्स ऐण्डूयूल को० लि० के पास है।

११ चाम्पदानी जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९२१ में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० जे० ए० टसी; मि० डी० जे० लेकी, मि० सी० ए० जोन्स, मि० जान लांगफर्ड जेमूस तथा बाबू मुकुन्दलालजी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाख की है इसमेंसे १००) रु० प्रति शेयर के हिसाबके ५९१६४ साधारण शेयर है। इसका हिसाब ६ मासमें होता है अतः आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित किया जाता है।

इसकी दो मिलें हैं जिनमें १२१७ करघे काम कर रहे हैं। इन दो मिलोंमेंसे वेलिङ्गटन जूट मिल रसड़ामें और चाम्पदानी जूट मिल वैद्यवटीमें है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स जेमस् फिनले एण्ड को० लि० का आफिस १ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

१२ चेविया मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१९ में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया तथा मि० जे० साइम हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २६ लाख की है जिसमें से १००) रु० के भावके १६००० साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ मासमें होता है इस प्रकार अर्थिक विवरण नवम्बर और मईमें प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल बजबजमें हैं जिसमें बोरेके ५० और हैसियनके ३५० इस प्रकार कुल ४०० करघे काम करते हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्डूयूल एण्ड को० ८ क्लाइव रो में है।

१३ क्लाइव मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८९४ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेन्थाल, मि० ए० मैकुड़ो ईडिस; मि० ए०ए० हार्वे, तथा राय बद्रीदास गोयनका बहादुर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३२ लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १ लाख दश हजार साधारण शेयर है। इसका हिसाब ६ महीने पर होता है अतः ६ माही आर्थिक विवरण प्रकाशित होता है।

इसका मिल गार्डन रीचमें हैं जिसमें ४७२ बोरेके करघे तथा ३६६ हैसियनके है। इस प्रकार कुल ८६८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजण्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गमें है।

१४ क्रेग जूट मिल्स लि० के डायरेक्टर मि० डी० एस० के ग्रेग, सी० ए० जोनस, बाबू बहादुर सिंहजी सिंघी, तथा राय बद्रीदास गोयनका बहादुर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६० लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ३ लाख साधारण शेयर है। इसका हिसाब जनवरी और जुलाईमें प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल कंकनारामें है। जिसमें ८५ करघे बोरेके और १६५ हैसियनके हैं इस प्रकार कुल २५० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेग डनलप एण्ड को० लि० का आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है।

१५ डलहौसी जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०३ ई० मे हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेनुथाल, मि० डब्लू० एम० क्रैडक, मि० जी० एल० स्काट तथा राय बद्रीदास गोयनका बहादुर है। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १५ हजार साधारण शेयर है। इसका ६ माही आर्थिक विवरण प्रकाशित होता है।

कम्पनीका मिल चाम्पदानीमें है। जिसमे २२४ बोरेके करघे और ४८० हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल ७०४ करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एन्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गमे हैं।

१६ डेल्टा जूट मिल्स कम्पनी लि० के डायरेक्टर सर डेविड इजरा, सर ओंकारमल जटिया, तथा मि० जी० एफ० रोज है। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है इसका हिसाब ६ मासमे होता है। अतः इसका आर्थिक विवरण मई और नवम्बरमे प्रकाशित होता है।

इसका मिल संक्रैल हवड़ामे है जिसमें ४०० बोरेके करघे और २१० हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ६१० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रो मे है।

१७ इम्पायर जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१२ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० ए० टाउन्ज, मि० ई० स्टहूस, और मि० सी० ए० जोन्स, हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रति शेयरके हिसावसे १ लाख साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ मासमे होता है अतः ६ माही आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमे प्रकाशित होता है।

इसका मिल टीटागढ़में है जिसमे २४८ करघे बोरेके और १८८ करघे हैसियनके हैं

इस प्रकार कुल ४३६ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेण्ट मेसर्स मैकलाड एण्ड को० का आफिस २८ डलहौसी स्क्वायर वेस्टमें है।

१८ फोर्ट ग्लास्टर जूट मैन्यूफैक्चरिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७४ में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० जे० ए० आग, आनरेबल एस० जे० बेस्ट, तथा मि० जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २८ लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १४ हजार साधारण शेयर हैं। इसका हिसाब ६ महीने पर होता है अतः ६ माही आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमे प्रकाशित होता है।

इसका मिल बौरियामें हैं इसमें ६६२ बोरेके और ११०८ हैसियनके करघे हैं इस प्रकार कुल १८०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स केटलेवेल बुलियन एण्ड को० लि० का आफिस २१ स्ट्राण्ड रोडमें है।

१६ फोर्ट विलियम जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६११ ई० में करायी गयी थी। इसकी स्वीकृत पूंजी २४ लाखकी है जिसमे १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १४ हजार साधारण शेयर हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल हवड़ामें है जिसमें ३५८ करघे बोरेके और ५४२ हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ६०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स केटलेवेल बुलियन एण्ड को० लि० का आफिस २१ स्ट्राण्ड रोडपर है।

२० गैनजेस मैन्यू फैक्चरिङ्ग कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६१६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० जी० ऐवाट, आनरेबल सर जान बेल, तथा मि० पी० एच० ब्राउन है। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाखकी है जिसमेंसे ३००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे २८१०७ साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल शिवपुर हवड़ामें है जिसकी एक शाखा बासबेरिया हुगलीमें है। इसमें ७०२ करघे बोरेके और ७६८ हैसियनके है। इस प्रकार कुल १५०० करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स मैकनेयल एण्ड को० का आफिस २ फेयर्ली प्लेसमे है।

२१ गोंडलपारा मिलकी रजिस्ट्री सन् १८६२ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० वी० ई० जी० ईडिस, मि० सी० डी० एम० केलाक, सर आर० एन० मुकर्जी के० सी आई०ई० के० सी० वी० ओ० तथा मि० जी० एल० स्काट है इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाख ८० हजार रुपयेकी

है जिसमेंसे ३००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ३६०० साधारण शेयर हैं। इसका वार्षिक हिसाब ३१ दिसम्बरको होता है। इसका हेड आफिस फ्रेञ्च राज्यान्तर्गत चंद्रनगरमें है।

इसका मिल नईहट्टी (E. B. Ry.)में है जिसमें १६० बोरेके तथा २०० हैसियनके करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेण्ट मेसर्स गिलैण्डर्स अर्बुथनाट एण्ड को० कलकत्ता है।

२२ गौरीपुर कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर आनरेबल सर जान बेल, मि० ई० जी० ऐबाट, सर आर० एन० मुकर्जी, मि० सी० जी० कूपर तथा ए० एन० मैकनजी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५० लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १२ हजार साधारण शेयर हैं। इसका ६ माही हिसाब मार्च और सितम्बर मासमें होता है।

इसका मिल नईहट्टी (E. B Ry) में है जिसमें बोरेके करघे ४०६ और हैसियनके ९४८ हैं इस प्रकार कुल १३५४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेरी एण्ड को का आफिस २ फेयरली प्लेस में है।

२३ हुगली मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८१३ ई० में करायी गयी है। इसके डायरेक्टर मि० बी० ई० जी० ईडिस, मि० सी० डे० एम० केलाक, सर आर० एन मुकर्जी, और मि० जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५९६००० रु० की है इसका वार्षिक आर्थिक विवरण ३१ मार्चको प्रकाशित होता है।

इसका मिल गार्डन रीचमें है जिसमें २५४ करघे बोरेके और २०० हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ४५४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स गिलैण्डर्स अर्बुथनाट एण्ड को० का आफिस ८ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

२४ हवड़ा मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७४ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर अलेक्जेण्डर मरे के०टी० सी० बी० ई०, मि० जे० येन० आस्टिन, सर ह्यूबर्ट कार के०टी०, मि० जे० एल० स्काट, मि० डब्लू० एम० क्रीडक हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५२ लाख ५० हजारकी है। इसका ६ माही हिसाब मार्च और सितम्बर में होता है।

इसका मिल शिवपुर, हवड़ामें है जिसमें ६५२ करघे बोरेके और १०११ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १६६३ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स जारडाइन स्किनर एण्ड को० का आफिस ४ क्लाइव रोमें है।

२५ हुकुमचन्द जूट मिल्स लि० की रजिस्ट्री सन् १९१९ ई०में हुई थी। इसके डायरेक्टर सर सरूपचन्द हुकुमचन्द के० टी० बाबू गजानन्दजी जटिया, सेठ कस्तूरचन्द कोठारी, मि० जे० डब्लू०

ए० हिम्पसन, मि० डब्लू० एम० क्रैडक, बाबू पन्नालालजी भट्टड़, तथा बाबू शिवकृष्णजी भट्टर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ७० लाखकी है, जिसमें ७॥) रु० के हिसाबसे ४ लाख साधारण शेयर है। इसका ६ माही हिसाब मार्च और सितम्बरमें किया जाता है।

इस कम्पनीके दो मिल हैं जिसमें नम्बर १ जिसमें ६९५ करघे हैं हाली शहर—नईहट्टीके पास है तथा नम्बर २ में ४०६ करघे हैं। इस प्रकार कुल ११०१ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग एजण्ट मेसर्स सरूपचन्द हुकुमचन्दका ऑफिस ३० क्लाइव स्ट्रीटमें है।

२६ इण्डियन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१६ में हुई थी। इसके डायरेक्टर मिस्टर पी० एच० ब्राउने, आनरेबल सरजान बेल, सी० जी० कूपर, मिस्टर जे० वाई० फिलिप तथा मिस्टर डब्लू० एन० सी० ग्राण्ट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाखको है। जिसमें ३७५) रुपया प्रति शेयरके हिसाबसे ३९९२० साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका ६ माही हिसावका आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें होता है।

इसका मिल सेरामपुरमें है जिसमें ४७२ करघे बोरेके और ५६१ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १०३३ करघे चल रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट एजेण्ट मेसर्स मैकननमेकञ्जी एण्ड को० का का आफिस १६ स्ट्रैण्ड रोडपर है।

२७ कमरहट्टी कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७७ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर सर अलेक्जेण्डर, मि० ए० हार्वे, सेठ रामेश्वरदास नाथानी तथा मिस्टर जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाखकी है जिसमें १००) रुपया प्रति शेयरके हिसाबसे २४ हजार साधारण शेयर निकाले गये है। इसका ६ माही हिसाब जून और दिसम्बरमें होता है।

इसका मिल कमरहट्टीमें है जिसमें ४९६ करघे बोरेके और १२१४ हैसियनके है इस प्रकार १७१० करघे चल रहे है। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स जारडाइन स्किनर एन्ड को० का आफिस ४ क्लाइव रोमें है।

२८ कंकनारा कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८८२ मे हुई थी। इसके डायरेक्टर रेसर सर अलेक्जेण्डर मरे, मि० जी० एल० स्काट,मि० ए० हार्वे तथा बाबू रामेश्वरजी नाथानी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख की है जिसमें १०० रु० के हिसाबसे ३० हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके हिसाबका ६ माही विवरण जून और दिसम्बर में प्रकाशित किया जाता है।

इसका मिल कंकनारामें है जिसमें २६० करघे बोरेके और १२६१ करघे हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १५२१ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स जारडाइन स्किनर एण्ड को०का आफिस ४ क्लाइवरोमें है।

२६ केलविन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६०७ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० ए० टाउलर, मि० जी० एल० स्काट, तथा बाबू छोटेलाल कानोडिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २२ लाखकी है। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल टीटागढ़में है जिसमें ३४६ करघे बोरेके और २६० हेसियनके हैं इस प्रकार ६३६ करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स मेकलाड एण्ड को० का आफिस २८ डलहौसी स्क्वायरमें है।

३० खरडा कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८६५ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० ए० ई० मिचेल, मि० ई० निसिम, तथा सी० ए० वाइल्ड हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ५४ लाखकी है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४५ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका हिसाब ६ माही होता है अतः इसका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित किया जाता है।

इसकी मिल खरड़ामें है जिसमें ५१५ करघे बोरेके और ८५५ हेसियनके हैं इस प्रकार कुल १३७० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्टका आफिस २२ स्ट्राण्ड रोडपर है।

३१, किनीसन जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८६६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ए० हार्वे, मि० जी० एल स्काट, मि० ई० सी० बेनथाल हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १५ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बर मासमें प्रकाशित होता है

इसका मिल टीटागढमें है जिसमे ५७४ करघे बोरेके और ६४७ हेसियनके हैं। इस प्रकार कुल १२२१ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स एफ० डब्लू० हीलगर्स एण्ड को का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग में है।

३२, लैन्सडाउन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १६१४ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेनथाल, मि० जी० एल० स्काट, मि० ए० में ढडी, ईडिस, तथा राय-बहादुर हजारीमल डूडवेवाले हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३२ लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १७ हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल दक्षिण दरीमें है जिसमे ३४७ करघे बोरेके और ५२३ हेसियनके हैं। इस प्रकार कुल ८७० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक । बिल्डिंग में है।

३३, लारेन्स जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १६०५ ई० में करायी गयी है।

इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेन्थल ; डब्लू० एम० क्राडक, बाबू बलदेवदास वाजोरिया, तथा जी० एल० स्काट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे दस हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बर मासमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल डलूबेरियाके पास चकासी में है जिसमें ३०४ बोरेके तथा ४०० हैसियनके करघे हैं। इस प्रकार कुल ७०४ करघे काम कर रहें हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगमें है।

३४, लोथियन जूट मिल्स कम्पनी लि०की रजिस्ट्री सन् १९१६ ई० में करायी थी। इसके डायरेक्टर सर डेविड इज्रा, सर ओंकारमल जटिया तथा जे साइम हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख की है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे दश हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मई और नबम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल बजबजमें है जिसमें १०० करघे बोरेके और २५० हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ३५० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल एण्ड को० लि० का आफिस क्लाइव रो में है।

३५, येगना मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९२० ई० में करायी गयीं थी। इसके डायरेक्टर मि० पी० एच० ब्राउन, आनरेबल सर जान बेल, मि० सी० जी० कूपर०, मि० ई० जी० ऐबाट, तथा डब्लू० एन० सी० ग्रान्ट हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाख की है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ६१२३६ साधारण शेयर निकाले गये हैं।

इसका मिल जगदलमें है जिसमें ३९२ करघे बोरेके और ६१६ करघे हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल १००८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेंन्ट मेसर्स मैकिनन मेकंजी एण्ड को० का आफिस १६ स्ट्रैण्ड रोडमें है।

३६, नईहट्टी जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९०५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० डब्लू० एम० क्रेडाक, मि० जी०एल० स्काट, तथा ई० सी० बेनथाल हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख की है। जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे दश हजार शेयर हैं। इसके छमाही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरसे प्रकाशित होता है।

इसका मिल नईहट्टीमें है जिसमें २९९ करघे बोरेके और ४०१ हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल ७०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिंग ऐजेन्ट मेसर्स एफ, डब्लू ऐल्गार्न एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगसमें है।

३७ नेशनल कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १८९५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० डी० डी० सासुन, सर ओंकारमल जाटिया, मि० जी० एफ० रोज तथा बाबू रामकुमारजी बांगड़ हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ३ लाख ५० हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसका ६ माही हिसाव अप्रैल और अक्टूबरमें होता है। कम्पनीका पुनः संगठन एक बार सन् १९१७ ई० में और दूसरी वार सन् १९२४ ई० में हुआ था। और १००) रु० के शेयर १०) रु० की दरके कर दिये गये थे।

इसका मिल राजगंजमें है जिसमें ३४० करघे वोरेके तथा २७१ करघे हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ६११ करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्यूल एण्ड को० लि० का आफिस ८ क्लाइव रो में है

३८ न्यू सेन्ट्रल जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१५ ई० मे हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० विलियम ग्राहम, सर ओंकारमल जटिया, मि० जी० एफ० रोज० है। इसकी स्वीकृत पूंजी २४ लाख ५० हजार की है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १०५०० साधारण शेयर है। इसके ६ माही हिसावका आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमे प्रकाशित होता है।

इसका मिल घूसड़ीमें है जिसमें ५८६ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्यूल एण्ड को० लि० है।

३९ नार्थब्रूक जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०८ ई० में हुई थी। इसमें डायरेक्टर मि० ई० सी० वेनथाल, मि० डब्लू० एम० क्रेडाक, रायबहादुर हजारीमल डूडवावाला तथा मि० जी० एल० स्काट है। इसकी स्वीकृत पूंजी २३ लाख है जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ८० हजार साधारण शेयर हैं। इसका ६ माही हिसाव सितम्बर और मार्चमें होता है।

इसका मिल चाम्पदानीमें है जिसमें १९६ करघे वोरेके और ३४८ हैसियनके है इस प्रकार कुल ५४४ करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चाटर्ड बैंक विल्डिङ्गमे है।

४० नदिया मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९२० ई० मे करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर आनरेवल सरजान वेल, मि० ई० जी० ऐबाट, सर आर०एन० मुकुर्जी, मि० सी० जी० कूपर तथा मि० ए० एन० मैकलूजी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ७५ लाखकी है जिसमे ५०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे १३३५६० साधारण शेयर है। इसका ६ माही हिसाव सितम्बर और मार्च मासमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल कंटालपारामे है जिसमे ३९२ करघे वोरेके और ६१६ हैसियनके है। इस

प्रकार कुल १००८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स वेरी एण्ड को० का आफिस २ फेयर्ली प्लेसमें है।

४१ ओरियन्टल जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१६ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर डेविड इजरा, सर ओंकारमल जटिया, के०टी, मि० जे० साइम तथा चौधरी छज्जूरामजी सी० आई० ई० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़की है। जिसमें १००) रु० प्रतिशेयर के हिसाबसे ५० हजार साधारण शेयर निकाले गये हैं। इसके ६ माही हिसाबका विवरण मई और नवम्बरमें प्रकाशित किया जाता है। इसका मिल बजबजमें है इसमें ४५० करघे काम करते हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स एण्ड्रयूल एन्ड को० लि० है।

४२ प्रेसीडेन्सी जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १९१९ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० ए० टावलर, मि० एफ० एम० लेस्ली, मि० जे० आर० जेकब तथा बाबू छोटेलाल कानोड़िया है। इसकी स्वीकृत पूंजी २५ ला० की है जिसमें ५) रु० प्रतिशेयरसे हिसावसे ४९०८३० साधारण शेयर निकाले गये है। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण जून और दिसम्बरमें निकलता है।

इस मिलमें १५१ करघे बोरेके और २२४ हैसियनके है। इस प्रकार कुल ३७५ करघे काम कर रहे है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्द मेसर्स मैकूलाड एण्ड को० का आफिस २८ डलहौसी स्कायरमें है।

४३ रिलायन्स जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९०७ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर सर अलेक्जैण्डरमरे, मि० जे० एम० आस्टिन, मि० जी० एल० स्काट, तथा मि० डब्लू० एम० क्रेडक हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३६ ला० ५० हजारकी है। जिसमें १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ३६५००० साधारण शेयर है। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल कङ्कनारामें है जिसमें ३०० करघे बोरेके और ७०० हैसियनके है। इस प्रकार कुल १००० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट जारडन स्कीनर एण्ड को० लि० का आफिस ४ क्लाइव रो में है।

४४ शोरा जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन १८९२ ई० मे करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० ए० टावलर, मि० ई० स्टड्स, बाबू छोटेलालजी कानोड़िया, तथा सर ओंकारमल जटिया, हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १७ ला० की है जिसमे १०) रु० प्रतिशेयरके हिसाबसे ७० हजार साधारण शेयर है। इसका ६ माही हिसाब जून और दिसम्बरमे प्रकाशित होता है।

इसका मिल सोरामें है जिसमें ३७५ कुल करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मैकुलाड एण्ड को० हैं।

४५ स्टैण्डर्ड जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी० बेनथाल, मि० डब्लू० एम० क्रेडक, मि० जी० एल० स्काट तथा बाबू रामकुमार बांगड़ हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २३ ला० की है जिसमें १००) रु० प्रतिशेयरके हिसावसे १४ हजार साधारण शेयर हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण सितम्बर और मार्चमें प्रकाशित होता है।

इसका मिल टीटागढ़में है जिसमें ५९२ वोरेके करघे और ११२६ हैसियनके हैं इस प्रकार कुल १७१८ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स थास० डफ० एण्ड को० लि० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गमें हैं।

४६. यूनियन जूट कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १८७३ ई० में करायी गयी है। इसके डायरेक्टर मि० ई० सी बेनथाल, मि० डब्लू० एम० क्रेडाक, मि० जी० एल० स्काट तथा बाबू रामकुमारजी बागड़ हैं। इसकी स्वीकृत पूजी १८ लाख की है। जिसमे १००) रु० प्रति शेयरके हिसावसे १२ हजार साधारण शेयर है। इसका ६ माही हिसाव मार्च और सितम्बरमें प्रकाशित होता है।

इस मिलमें२०४ करघे वोरेके और ३०० हैसियनके हैं इस प्रकार कुल ५०४ करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्ड एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्गसमें है।

४७. बेवरली जूट मिल्स कम्पनी लि० की रजिस्ट्री सन् १९१६ ई० में करायी गयी है। इसके डायरेक्टर मि० डी० एस० के० ग्रेग, मि० एस० एस० हडसन, मि० सी० ए० जोन्स, तथा राय बहादुर बद्रीदासजी गोयनका है। इसकी स्वीकृत पूजी ४० लाख की है जिसमें १०) रु० प्रति शेयरके हिसावसे २५०,००० साधारण शेयर हैं। इसके ६ माही हिसाबका आर्थिक विवरण जुलाई और जनवरीमें प्रकाशित होता है। इसका मिल कंकनारामें है जिसमें १०० करघे वोरेके और २०० हैसियनके हैं। इस प्रकार कुल ३०० करघे काम कर रहे हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बेग डनलप एण्ड को० लि० का आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है।

इनके अतिरिक्त और भी जूट मिल्स हैं मगर स्थानाभावसे सबका परिचय यहां नहीं दिया जा सकता।

विभिन्न प्रकारकी कुछ अन्य ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंका संक्षिप्त विवरण हम नीचे दे रहे हैं।

दियासलाईके कारखाने

१ आसाम मैच कम्पनी लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १९२५ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया, के०टी० राजा प्रभातचंद्र बरुआ तथा मौलवी अब्दुल हमीद हैं।

इसकी स्वीकृत पूंजी ७ लाखकी है जिसमें ५ लाखके शेयर तो ५) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे संग्रह किये गये हैं।

इसका कारखाना ब्रह्मपुत्रके तट पर धुब्री नगरमें है जहां दिया सलाई बनती हैं। आसामके सरकारी जंगलकी लकड़ी ही इस कारखानेमें काम आती है।

इसका आफिस ८ रोयल एक्सचेंज प्लेसमें है।

सोडाका कारखाना

२ बंगाल एरेटिङ्ग गैस फैक्ट्री लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १९१७ में कराई गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें सर ओंकारमलजी जटिया के०टी०, भी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६ लाख ५० हजारकी बतायी जाती है। जिसमें से १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ६५०० शेयर निकाले गये हैं। यह कम्पनी सोडा आदि तैयार करनेके अतिरिक्त कार्बोलिक ऐसिड भी तैयार करती है और सोडा आदि बनानेकी छोटी मशीनोंका भी व्यापार करती है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल कम्पनी लि० का आफिस ८ क्लाइव रो में है।

रसायन बनानेका कारखाना

३. बंगाल केमिकल एण्ड फरमैस्यूटिकल वर्क्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९०१ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टरोंमें सर० पी० सी० राय, राय बहादुर डा० चुन्नीलाल बोस सी० आई० ई, राय बहादुर डा० हरिधन दत्त, राय साहब कुञ्जविहारी बोस आदि हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १९ लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १० हजार साधारण शेयर हैं।

इस कारखानेमें देशी बनस्पतियोंसे अंगरेजी ढंगकी दवाइयाँ तैयारकी जाती हैं। इसका कारखाना मानिकतल्ला मैन रोड पर है।

४. बंगाल पेपर मिल कम्पनी लि०—इसकी स्थापना सन् १८८९ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें केवल राय साहिब ईसनचंद्र घोष ही भारतीय हैं। इसकी स्वीकृत पूजी १४ लाख की है।

इसका मिल रघुनाथ चक रानीगंजमें है। इसमें ४ मशीने हैं जिनमें कागज तैयार होता है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बालमेयर लारी एण्ड को० का आफिस १०३ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्तेमें है।

५. बंगाल टेलीफोन कार्पोरेशन लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९२२ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर राजा हृषीकेश ला० सी० आई० ई० तथा बाबू गजानन्दजी जटिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २ करोड़की है।

गत सन् १८८२ ई० की बंगाल टेलीफोन नामक कम्पनीने सरकारसे टेलीफोन जारी करनेका लैसेन्स लिया था इसी कम्पनीकी जिम्मेदारी सम्भालनेके लिये उपरोक्त कम्पनीकी स्थापना सन् १९२२ ई० के मई मासमें हुई थी। इसका लैसेन्स सन् १९४६ ई० तक रहेगा।

६ बंगाल टिम्बर ट्रेडिंग कम्पनी लि०—इस कम्पनीकी स्थापना सन् १८९१ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें बाबू रामेश्वरजी नाथानी भी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ६ लाख की है।

यह कम्पनी इमारती लकड़ीका व्यापार करती है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स जार डाइन स्किनर एण्ड को० का आफिस ४ क्लाइव रो में है।

७ ब्रिटैनियां बिस्कुट कम्पनी लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १९१८ ई०में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर बाबू एन० सी० गुप्त तथा बाबू० टी० ला० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाख की है। यह कम्पनी सभी प्रकारके उच्च कोटिके मीठे बिस्कुट तैयार कराती है। यह कम्पनी सरकार को भी बिस्कुट देती है। इसका आफिस ओल्ड कोर्ट हाउस कार्नर पर है।

८ बृटेनियाँ इञ्जिनियरिंग कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर बाबू शिवकृष्णजी भट्टड भी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १० लाखकी है। यह रक़म १०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १ लाख साधारण शेयर निकाल कर संग्रह की गयी है।

इसके कारखानेमें बुनाईकी मशीनें, आटा पीसनेंकी मशीनें, चाय कम्पनियोंके कामकी मशीनें, तथा कोयलाकी खानों, रेलवे और ढलाई आदिकी सभी छोटी बड़ी मशीनें तैयार की जाती है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स मेक्लाड एण्ड को० का आफिस २८ डलहौसी स्क्वायरमें है।

९ कैस्यू एण्ड कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १८९५ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर बाबू कन्हैयालालजी जटिया भी है। इसकी स्वीकृत पूंजी १६ लाखकी है जो १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १६ हजार साधारण शेयर निकालकर इकट्ठा की गयी है।

कम्पनीका एक कारखाना रोसा (यू० पी०) में शक्कर साफ करने तथा सीरासे शराब चुआनेका है। इसके शराबके अन्य कारखाने आसनसोल और कटनीमें है।

१० चितपुर ह०। लिक प्रेसिंग कम्पनी लि०—इसके डायरेक्टर मि० डी० पी० खेतान, मि० बी० कालोड़िया, बाबू रंगलाल जाजोदिया, तथा बाबू मानिकलाल जाजोदिया हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४ लाखकी है जिसमें १००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४ हजार साधारण शेयर रक्खे गये हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेन्ट बिड़ला ब्रदर्स लि० है।

११ हुगली फ्लोर मिल्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९११ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० एन० एन० सरकार हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ७ लाख है।

इसका मिल रामकृष्टोपुरमें है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स शा वालेस कम्पनीका आफिस बैंकहाल स्ट्रीटमें है।

१२ हबड़ा डाकिंग एण्ड को० लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १८६३ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर मि० आर० एच० एम० रुस्तमजी, बाबू अटलकुमार सेन, तथा बाबू प्रमथनाथ प्रमाणिक हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ८ लाख है जिसमें ५००) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १६०० साधारण शेयर हैं। कम्पनीकी स्थायी सम्पत्ति हबड़ा बंदर पर है। कम्पनीके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर मि० आर० एच० एम० रुस्तमजीका आफिस ४ कमर्शियल बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीटमें है।

१३ हबड़ा आइल मिल्स कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १८६६ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया के० टी० भी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ४ लाखकी है। जो १० रु० प्रति शेयर के हिसाबसे ४० हजार साधारण शेयर निकाल कर इकट्ठा की गयी है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल कम्पनी लि० हैं।

१४ इण्डियन आइरन एण्ड स्टील कम्पनी लि०—इस कम्पनीकी रजिस्ट्री सन् १९१८ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर सर आर० एन० मुकर्जी, हृषीकेश लाहा सी० आई० ई० तथा मि० ए० बी० दावर हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १ करोड़ ५० लाखकी है। इस कम्पनीकी खानें सिंहभूमि जिलेमें है। खानसे बी० एन० रेलवे लाइनतक रेलवे गयी है। यहां खानसे लोहा निकालने तथा डब्बेमें लादनेके लिये यंत्रोंकी सुविधा है। कम्पनी प्रधानरूपसे पिग आइरन नामक लोहा तैयार करती है। आसनसोलके पास हीरापुरमें इसकी लोहा गलानेकी दो बड़ी बड़ी भट्टियाँ है। यहां लोहेकी ढलाईका काम भी होता है।

इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्न एण्ड को० का आफिस हांगकांग हाउसमें है।

१५ इण्डियन स्टैण्डर्ड वाच कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९१८ ई० में करायी गयी थी। इसके भारतीय डायरेक्टर श्रीगोपाल भट्टाचार्य तथा सर आर० एन० मुकर्जी हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी ३० लाखकी है जिसमें २५) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे ४० हजार साधारण शेयर हैं।

यह कम्पनी रेलवेके डब्बे और फौलादकी ढलाईका काम करती है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स बर्न एण्ड को० है।

१६ इण्डियन वुड प्राडक्टस कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९१९ ई० में करायी गयी थी। इसके भारतीय डायरेक्टर मि० ए० एच० मिर्जा हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी १५ लाखकी है।

यह कम्पनी नये ढंगसे कत्था तैयार करती है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स गिलैण्डर्स अर्बुथनाट एण्ड को० का आफिस क्लाइव स्ट्रीटके क्लाइव बिल्डिङ्गमें है।

१७ कारब्रिक एण्ड टाइल्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९२१ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० पी० सी० मजूमदार, बाबू हेमेन्द्रनाथ बोस, मि० बी० एन० सरकार तथा बाबू यू० एन० कार हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २० लाखकी है जिसमें १०) रु० प्रति शेयरके हिसाबसे १ लाख साधारण शेयर हैं।

ई० बी० रेलवेके ईचापुर स्टेशनके पास दो सौ बीघा भूमि कम्पनीके अधिकारमें है जहां ईंटें और खपड़े तैयार होते हैं। कम्पनीकी कोयलेकी खानें भी ७०० बीघाके क्षेत्रमें बर्दवान जिलेके नन्दी नामक स्थानके पास है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स कार एण्ड को० का आफिस सासुन हाउस ४ लियान्स रेन्जमें है।

१८ रिलायन्स फायर ब्रिक एण्ड पाटरी कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९१७ ई०में हुई थी। इसके भारतीय डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया के० टी० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी २ लाखकी है। कम्पनी सुधरे ढंगसे ईंटें तैयार करती है इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स ऐण्ड्रयूल कम्पनी है।

मदन थियेटर्स लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १९१९ ई० में करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर मि० बरजोरजी जे० मदन, जहाँगीरजी जे० मदन, अर्देशिर आर० विलिमोरिया, आदि हैं। इसकी स्वीकृत पूँजी ५० लाखकी है कम्पनीके सिनेमा, थियेटर तथा थियेटर कम्पनियाँ हैं। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स जे० एफ० मदन एण्ड को० का आफिस ५ धरमतल्ला स्ट्रीटमें है।

२० मार्शलसन्स एण्ड को (इण्डिया) लि०— इसके भारतीय डायरेक्टर सर ओंकारमल जटिया के०टी० हैं इसकी स्वीकृत पूँजी ५२ लाख ५० हजारकी है।

यह कम्पनी मेसर्स मार्शल सन्स एण्डको लि० ग्रेन्सबरो इङ्गलैण्डकी कम्पनीका भारतमें व्यापार सभालनेके लिये खोली गयी थी। इसमें खेती तथा उद्योग-धन्धोंके लिये उपयोगी मशीनोंका काम होता है। इसका कारखाना नगरसे ८ मील दूर ई० बी० रेलवेपर अगरपारामें है। इसके मैनेजिङ्ग एजेण्ट मेसर्स मार्शल लि० ९९ क्लाइव स्ट्रीटमें है।

२१ टीटागढ़ पेपर मिल्स कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १८८२ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टर राय बहादुर बद्रीदास गोयनका एम० एल० सी०, बाबू नारायणदासजी बाजोरिया ऐं० ए० बाबू जमनादासजी खेमका तथा बाबू बृजमोहनजी बिड़ला हैं। इसकी स्वीकृत पूँजी ११ लाख ३५ हजार ५ सौकी है।

इसका कागजका कारखाना टीटागढ़में है जहां ८ मशीने काम करती हैं। यहांका कागज बांस और घासमें तैयार होता है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेण्ट मेसर्स हेईलगर्स एण्ड को० का आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग कलकत्तामें है।

२२ यूनाइटेड फ्लोर मिल्स कम्पनी लि०—इसकी रजिस्ट्री सन् १६१३ ई० में करायी गयी थी, इसके डायरेक्टर एन० एन० सरकार हैं। इसकी स्वीकृत पूँजी १ लाख ५० हजारकी है। इसका आटेका मिल उल्टा डाँगामें है। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट मेसर्स शा वालेस एन्ड० को० है।

२३ वाल्टर लाके एण्ड को० लि०—इसकी रजिस्ट्री १६२० ई० में करायी गयी थी, इसके डायरेक्टर मिस्टर जे० बेनेट हार्पर हैं। इसकी स्वीकृत पूँजी ७ लाख ५० हजारकी है।

यह कम्पनी बन्दूकें, खेलका सामान, मोटर, मोटर साइकिल आदिके बेचनेका व्यापार करती है तथा इलेक्ट्रिकल इञ्जिनियर्स और कन्ट्राक्टरका काम भी करती है। इसके अतिरिक्त लोहा गलाने मशीन आदि रिपेयर करनेका काम भी करती है। इसके मैनेजिङ्ग डायरेक्टरका आफिस ४ स्प्लेनेडमें है

बीमा कम्पनियां

आधुनिक पद्धतिके आधारपर चलने वाले व्यापार वाणिज्यकी ज्यों ज्यों उन्नति होती जा रही है त्यों त्यों उसका बीमा कम्पनियोंके साथ अधिक सुदृढ़ सम्बन्ध होता जा रहा है। फिर भी व्यापारके इस प्रयोजनीय अङ्गकी पूरी बागडोर विदेशी व्यापारियोंके ही हाथमें प्रधान रूपसे देखी जाती है। इस ओर भारतीयोंका ध्यान समुचित रूपसे अभी नहीं गया, अतः भारतीय पूँजी तथा भारतीय प्रबन्धसे चलनेवाली बीमा कम्पनियाँ भी यहाँ अभी उंगुलियोंपर गिनने योग्य है। यदि भारतीय व्यापारी इस ओर ध्यान दें तो उन्हें तथा भारतीय व्यापारको भी यथेष्ट लाभ हो सकता है। अब हम नीचे कुछ ऐसी बीमा कम्पनियोंका संक्षिप्त विवरण दे रहे है जो पूर्णरूपसे भारतीय हैं:—

१ बंगाल इन्सुरेन्स एण्ड रियल प्रापर्टी कम्पनी—इस कम्पनीकी स्थापना सन् १६२० ई०में कलकत्तेमें २,५१,१५०) रु० की पूँजीसे की गयी थी। इसका आफिस हेयर स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके सभापति राय हरीन्द्रनाथजी चौधरी हैं। यह कम्पनी सभी प्रकारके बीमाका काम करती है।

२ बंगाल मर्केण्टाइल लाइफ इन्सुरेन्स कम्पनी इस बीमा कम्पनीकी स्थापना सन् १६१० ई० में ११८२२७) रुपयेकी पूँजीसे कलकत्तेमें की गयी थी। इसका आफिस २४ स्ट्राण्ड रोडमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके प्रमुख श्रीयुत जे० एम० सेन गुप्त हैं।

३ कलकत्ता इन्सुरेन्स कम्पनी—की स्थापना सन् १९२४ ई० में हुई थी। इसकी पूंजी १७६७७०) रुपयेकी है। इसका आफिस १५ हेयर स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके प्रमुख बाबू जी० सी० मुकर्जी हैं।

४ हिमालय इन्सुरेन्स कम्पनी—इसकी स्थापना सन् १६१६ ई०में कलकत्तेमें हुई थी। इसकी पूँजी ४६०६२१ रुपयेकी है इसका आफिस स्टिफेन्स हाउस डलहौसी स्क्वायरमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके सभापति राय बहादुर सेठ सुखलाल करनानी हैं।

५ हिन्दू म्यूचुअल लाइफ इन्सुरेन्स कम्पनी—इस बीमा कम्पनीकी स्थापना सन १९०१ ई० मे कलकत्तेमें हुई थी। इसका आफिस ३०६ बो बाजार स्ट्रीट में है। इसके डायरेक्टर मण्डलके सभापति बाबू जे० एन० दास गुप्त हैं।

६ हिन्दुस्तान कोआपरेटिव इन्सुरेन्स सोसाइटी—इस बीमा कम्पनी की स्थापना सन् १९०७ ई० में कलकत्ते मे हुई थी। इसकी पूंजी ८,०४,५१८) रु० की है। इसका आफिस ६(A)कार्पोरेशन स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके सभापति श्रीयुत डा० पी० के० आचार्य हैं।

७ इन्डियन इक्विटेबल इन्सुरेन्स कम्पनी—इसकी स्थापना सन् १९०८ई०में कलकत्ते मे हुई थी। इसका आफिस लालबजारमे है। इसके डायरेक्टर मण्डलके सभापति बाबू बी०डे० हैं।

८ लाइट आफ एशिया इन्सुरेन्स कम्पनी—इस बीमा कम्पनीकी स्थापना सन् १९१३ ई में कलकत्तेमें हुई थी। इसका आफिस ६ ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके सभापति बाबू जी० ए० सेन हैं।

९ नेशनल इण्डियन लाइफ इन्सुरेन्स कम्पनी—इस बीमा कम्पनीकी स्थापना सन् १९०६ ई० मे कलकत्तेमें हुई थी। इसकी पूंजी १ लाख की है। इसका आफिस ६।७ क्लाइव स्ट्रीटमें है। इसके डायरेक्टर मण्डलके प्रमुख सर आर० एन० मुकर्जी के० सी० आई० ई० के० सी० वी० ओ० हैं।

१० नेशनल इन्सुरेन्स कम्पनी—इस बीमा कम्पनीकी स्थापना सन् १९०६ ई० में हुई थी। इसका आफिस ६।७ चर्च लेन मे है। इसके प्रमुख सर आर० एन० मुकर्जी हैं।

उपरोक्त बीमा कम्पनियोंके अतिरिक्त नगरमे कितनी ही दूसरी विदेशी बीमा कम्पनिया भी है। उनमेसे कुछके नाम धाम नीचे दिये जाते है :—

१, अलायन्स इन्सुरेन्स कम्पनी लि०—२ हेयर स्ट्रीट।
२, अमेरिकन फारेन इन्सुरेन्स ऐसोसियेशन लि०—१५ क्लाइव रो।
३, अटलस इन्सुरेन्स कम्पनी लि०—४ क्लाइव स्ट्रीट।
४, भारत इन्सुरेन्स कम्पनी लि०—१३५।३६ कैनिङ्ग स्ट्रीट।
५, वृटिश इण्डिया जेनरल इन्सुरेन्स कम्पनी लि०—८ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट।
६, चाइना फायर इन्सुरेन्स को० लि०—८ क्लाइव स्ट्रीट।
७, जेनरल ऐक्सीडेण्ट, फायर, लाइफ, इन्सुरेन्स कम्पनी लि०—३ कौंसिल हाउस स्ट्रीट।
८, नोर्थ यूनियन, इन्सुरेन्स कम्पनी लि० १०१ क्लाइव स्ट्रीट।
९, स्टेण्डर्ड लाइफ, इन्सुरेन्स कम्पनी—३२ डलहौसी स्कायर।
१०,सन लाइफ इन्सुरेन्स कम्पनी आफ कनाडा—१२ डलहौसी स्क्वायर।

दर्शनीय स्थान

कलकत्ता बन्दरगाह

कलकत्तेका बन्दरगाह बहुत बड़ा है और यह संसारके प्रधान बन्दरगाहोंमें गिना जाता है। यहांका आयात निर्यात (Export & Import) एक प्रधान महत्व रखता है। कच्चा और तैय्यारी जूट, चाय, गेहूं, चावल, लाख, चमड़ा और कोयला यहांसे विदेशोंमें जानेवाली खास चीजें हैं। सूती कपड़े, धातुकी चीजें, तेल, पेट्रोल, निमक, सब तरहकी मशीनें, रेलके सामान, मोटरगाड़ियां, कागज इत्यादि अनेकों वस्तुएं विदेशोंसे आती हैं। इनके अतिरिक्त और भी विदेशी वस्तुओंके लिये कलकत्ता अच्छा बाजार है। जावाकी चीनी और बर्माका चावल भी यहां बड़े परिमाणमें आता है।

बन्दरगाहका ऐसा सुप्रबन्ध कलकत्ता पोर्ट कमिश्नरोंकी कुशलताके कारण है। इसका संगठन सन् १८७० में हुआ था। इसमें दो वेतनभुक्त कर्मचारी-चेयरमैन और डिप्टी चेयरमैन-और १४ कमिश्नर होते हैं, जिनमें ५ सरकार द्वारा निर्वाचित किये जाते हैं। नये डक और जेटियां बनवाना, उनका प्रबन्ध करना इत्यादि सब अधिकार इन्हींके हाथमें हैं। किंग जार्ज डक नामका नया डक बनाकर डकोंकी संख्या और भी बढ़ा दी गई है। इस नये डककी गिनती संसारके सबसे अच्छे डकोंमें की जाती है। गार्डनरीचमें जो नई जेटियां इस नये डकके लिये बनी हैं, वे बहुत ही अच्छी और वैज्ञानिक ढंगपर हैं। अब ऐसा विचार हो रहा है कि भविष्यमें स्ट्राण्ड रोडकी जेटियां स्वदेशके व्यापारके लिये नियत कर दी जायं और गार्डन रीचकी विदेश जाने वाले जहाजोंके लिए।

पोर्ट कमिश्नरोंके अधिकारमें यात्रियोंके उतरने चढ़नेके लिये भी अनेक घाट हैं। इनमें आऊटराम घाट और चादपाल घाट देखने योग्य है। ये दोनों घाट इडेन गार्डेनके निकट ही हैं। योरोपसे आनेवाले यात्री प्रायः आऊटराम घाटपर ही उतरते हैं। रंगून और सुदूर पूर्वसे आने जाने वाले भी यहीं चढ़ते-उतरते हैं। यहा डाक्टरी जांच और चुंगीके लिये अलग २ कार्यालय है। एक छोटा सा होटल भी है, जहासे गंगाका बडा ही आकर्षक दृश्य दिखलाई पड़ता है। चांदपाल घाट छोटे छोटे स्टीमरोंका मुख्यघाट है।

नाविक शिक्षा देनेके लिये बंगाल पाइलट सर्विस नामकी एक संस्था है, जो ब्रिटिश साम्राज्यके प्रधान नाविक शिक्षालयोंमेसे है। बहुत अधिक सतर्कता पूर्वक रहनेके कारण शोचनीय घटनाएं अब कम होती है, परन्तु पहले ऐसा नहीं था। इसी हुगलीमे सन् १६६४ मे जेम्स और

मेरी नामके दो सुन्दर जहाज नष्ट हो गये थे। गार्डनरीचमें जहाज पहुंचनेपर उसकी रक्षाका भार पोर्टकमिश्नरोंके ऊपर हो जाता है, और उस समय वे जहाज उन्हींकी आज्ञामें रहते हैं।

हुगली तटपर बसे रहनेके कारण ही कलकत्ता विदेशोंसे व्यापार करनेमें समर्थ है, और इसी व्यापारने ही कलकत्ताको इतना वैभवशाली और प्रसिद्ध नगर बनाया है। बड़े २ जहाज बड़ी आसानीसे हुगलीमें आते जाते हैं।

गवर्नमेण्ट हाउस

वर्तमान गवर्नमेंट हाउस या लाट साहबकी कोठी जनवरी सन् १८०३ ई० में लार्ड वेलेस्ली द्वारा खोली गई थी। यह एक सफेद भव्य इमारत है और उसके ऊपर एक सुन्दर गुम्बज है। यह मैदानकी उत्तरी सीमा पर है। इस भवनके मध्य भागमें दरबारका कमरा है और इसमें इस तरहकी खिड़कियां लगाई गई हैं कि सब ओर हवा आ सके। इस कोठीके बनवानेमें लगभग १३॥ लाख रुपये व्यय हुये थे। यह इमारत ६ एकड़ भूमिमें स्थित है और इसके चारों ओर फूलोंके पेड़ और सुन्दर छोटे २ मैदान बड़ी खूबसूरतीसे लगाये गये हैं। गवर्नमेंट हाउससे मैदानका दृश्य बड़ा ही मनोहर जान पड़ता है; बड़ी दूरतक केवल हरी हरी जमीन ही दिखाई देती है।

टाउनहाल

यह टाउन हाल सन् १८१३ ई० में बनकर तैयार हुआ था और इसके बनानेमे सात लाख रुपये खर्च हुये थे जो अधिक परिमाणमें जनता द्वारा लाटरीसे मिले थे। आजकल बंगाल व्यवस्थापिका सभाकी बैठक यहीं होती है। इसके अतिरिक्त बड़ी २ सार्वजनिक सभायें भी यहीं होती हैं। टाउनहाल और हाईकोर्टमे ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चित्रोंका अच्छा संग्रह है।

बड़ा पोस्टआफिस

यह सुदृढ़ इमारत स्क्वायरके पश्चिम ओर है। इस दूधके समान धवल भवनका गगन-चुम्बी विशाल गुम्बज और भारी २ खंभे वास्तवमें दर्शनीय हैं। यह सन् १८६८ ई० में खोला गया था और प्राचीन फोर्ट विलियमकी कुछ भूमिपर स्थित है। इसकी फर्शपर जगह जगह गड़े हुये पीतलके पत्तर प्राचीन फोर्टकी मोटी दिवारोंके द्योतक हैं।

कालकोठरी

बड़े पोस्ट आफिसके पास ही उत्तरकी ओर कालकोठरीका स्थान है। यह स्थान इतिहास प्रसिद्ध है। ऐसा कहा जाता है कि नवाब सिराजुद्दौलाने २० जून सन् १७५६ की रातको १८ फुट लम्बे और १५ फुट चौड़े स्थानमें १४६ अंग्रेजोंको कैद कर दिये थे। जिनमेंसे
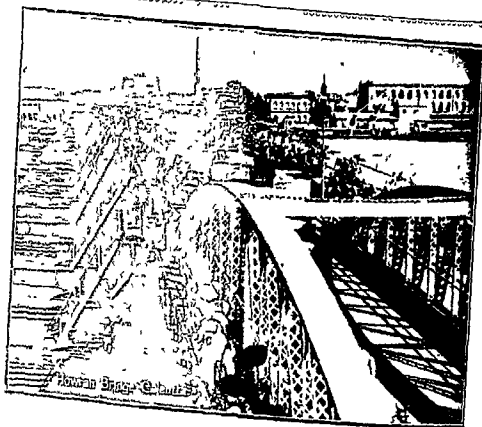
हवड़ा ब्रिज कलकत्ता
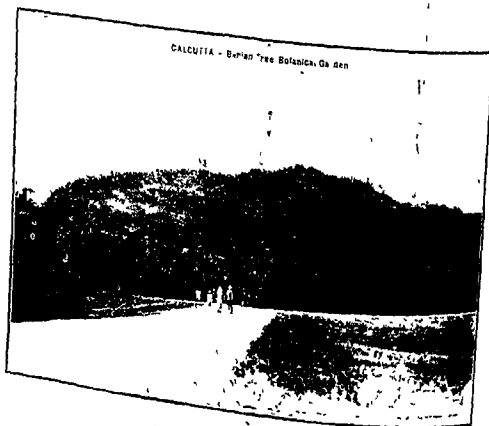
बरवृक्ष बोटानिकल गार्डन कलकत्ता

दूसरे दिन केवल २३ व्यक्ति ही जीवित निकले। उन्हीं मृतक व्यक्तियोंके स्मारकमें यह स्थान बनाया गया है।

हवड़ा पुल

यह तैरता हुआ हवड़ा पुल सन १८७४ में सर ब्रैडफोर्ड लेस्ली द्वारा २२ लाख रुपयेमें बनवाया गया था यह पुल संसारभरमें अपने ढंगका अद्वितीय है। हवड़ा और कलकत्ताके बीच केवल यही पुल है। पुलका मध्यभाग बड़े २ जहाजों और स्टीमरोंके आने जानेकी सुविधानुसार हटाया जा सकता है। कई वर्षोंसे अधिक परिमाणमें आवागमनके योग्य एक नवीन पुल बनानेका विचार हो रहा है; परन्तु धनाभावके कारण यह अभी तक कार्यरूपमें परिणित नहीं किया जा सका है।

आक्टरलोनी मानूमेन्ट

यह लाट १६५ ऊँची है और नैपाल-विजेता सर डेविड आक्टरलोनीकी स्मृतिमें सार्वजनिक चन्देसे बनवायी गयी थी। यह लाल ईंटोंकी बनी है और इसके भीतर चक्करदार सीढ़ियां हैं। जिनसे आदमी बिल्कुल ऊपर पहुंच जाता है। यद्यपि चढ़नेमें पहले कुछ कष्ट होता है। परन्तु ऊपर पहुंचकर हृदय प्रसन्न हो उठता है। यह प्रायः बन्द ही रहती है। इसमें जानेकी स्वीकृति पुलिस कमिश्नर, लालबाजारसे मिल सकती है।

न्यू मार्केट

इसे हाग मार्केट भी कहा जाता है।यह बाजार ईंटका बना हुआ है और खूब लम्बा चौड़ा है, लिण्डसे स्ट्रीटपर तो यह ३०० फीट चौड़ा है। इसमें एक बुर्ज है जिसमें एक बड़ीसी घड़ी लगी है। यह सन् १८७४ में ६॥ लाख रुपयोंके 'व्ययसे बनी थी, परन्तु तबसे इसमें और भी अधिक धन लगाया जा चुका है। आजकल यह बाजार संसारमें अद्वितीय है। इसमे ४००० दूकाने हैं और उनमें कोई भी वस्तु क्यों न हो, मिल सकती है। बाहरसे कलकत्ते आनेवालेके लिये तो यह वास्तवमें अवश्य दर्शनीय है। नानाप्रकारकी चीजें, चांदी और पीतलके बर्तन, हाथीदांतकी बहुमूल्य मूर्त्तियां, काश्मीरी लकड़ीपरके काम, दरिया, रेशम, शाल, जरीका कपड़ा, इत्यादि तरह २ की चीजें देखकर मन प्रसन्न हो जाता है इनके अतिरिक्त दवायें, लोहेकी सामग्रिया, स्टेशनरीके सामान, कितावें, तरकारी और फलकी दूकानें इत्यादि भी बहुत हैं। यद्यपि यहा .चीजें अच्छी मिलती हैं फिर भी एक अपरिचित व्यक्ति यहा बड़ी आसानीसे ठग लिया जाता है। बाजार घूमनेका सबसे अच्छा समय शामका है जब सारी दूकाने बिजलियोंके प्रकाशसे जगमगा उठती है।

अजायबघर

यह विशाल-भवन आगेसे ३०० फीट और भीतरसे २७० फीट चौड़ा है। बीचमें घासकी एक सुन्दर दालान है। अजायब घर बृहस्पतिवार और शुक्रवारको छोड़कर, सप्ताह भर १० बजे सुबहसे लेकर ४ बजे शामतक खुला रहता है। उपर्युक्त दो दिनोंमें केवल विद्यार्थी ही जा सकते हैं। प्रवेश निःशुल्क है। इसमें नानाप्रकारकी अद्भुत चीजें बड़े ही सुन्दर ढंगसे लाकर रक्खी गई हैं। प्राणितत्व, पुरातत्व, प्रकृति-शास्त्र कला, अर्थ-शास्त्र, व्यापार इत्यादि विषयक संग्रह अपूर्व हैं। ब्रह्मदेश के अन्तिम राजा थिवाका स्वर्णसिंहासन दर्शनीय है।

विक्टोरिया मेमोरियल

महाराणी विक्टोरियाका यह विराट स्मारक केवल कलकत्ता या भारतवर्षकाही नहीं वरन् संसारभरकी आधुनिक समयमें बनीं अद्भुत इमारतोंका मुकुटमणि है। यह रेसकोर्सके ठीक दक्षिणमें है और अपनी स्थितिका परिचय अपने गगनचुम्बी विशाल गुम्बजसे देता है। यह भवन केवल संगमरमरका ही बना है।

इसकी नींव १९०६ ई० में वर्तमान भारतसम्राट पंचमजार्ज द्वारा डाली गई थी और सन् १९२१ ई० में यह युवराज द्वारा खोला गया।

भारतके देशी नरेशों और धनिकोंने इसके लिये प्रचुर धन दिया था। इसका खाका सर विलियम इमर्सनने खींचा था और इसे मार्टिन कम्पनीने ७६ लाख रुपयेमें सरकार द्वारा दी हुई भूमिपर बनाया।

विक्टोरिया भवनके पास पहुंचनेपर उसके विराट आकार और सुन्दर कलाको देखकर चकित रह जाना पड़ता है। यह भवन जोधपुरके प्रसिद्ध सफेद संगमरमरका बना हुआ है। बीचका सुन्दर गुम्बज २०० फीट ऊंचा है और इसके ऊपरकी "जयलक्ष्मी" की पीतलकी मूर्त्ति १६ फीटकी है। यह मूर्त्ति ३ टन भारी होनेपर भी इस कुशलतासे रक्खी गई है कि इससे वायुपरिवर्त्तन मालूम पड़ता है।

भवनके भीतर महारानी विक्टोरियाकी एक दूसरी संगमरमरकी मूर्त्ति है, जिसमे उनके राज्या रोहणके बादका चित्र है। इसके चारों ओर महाराणीकी घोषणा भिन्न भिन्न भाषाओंमें अङ्कित है।

इस मेमोरियलमें नवीन ब्रिटिश भारतके चित्रोंका संग्रह विशेष है और इनमें भी प्राचीन कलकत्ताके चित्र तो देखने ही योग्य है। विशेष स्वीकृति मिलनेपर गुम्बजके शिखर तक पहुंचा जा सकता है। इस परसे कलकत्ता का एक अनोखा दृश्य दिखाई देता है।

विक्टोरिया भवनमें प्रवेश निःशुल्क है और यह सर्वसाधारणके लिये १० बजे सबेरेसे संध्या
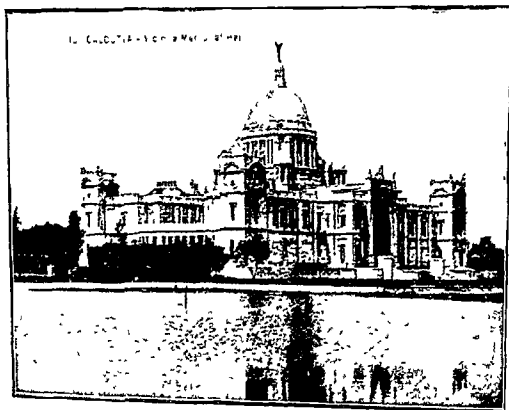
विक्टोरिया मेमोरियल, कलकत्ता
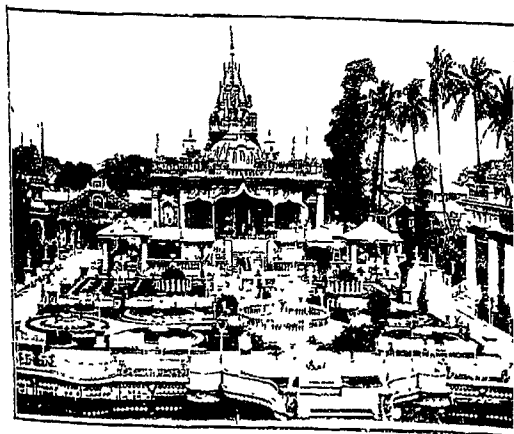
जैन मंदिर (रायबद्रीदास बहादुर) कलकत्ता

समय ५ बजे तक खुला रहता है। प्रत्येक शुक्रवारको इसमें ॥) आना प्रवेश शुल्क लगता है। यह भवन सोमवारको वन्द रहता है। चित्रोंकी दो गैलरियां ऐसी भी हैं जहा जानेमें ।) आना प्रवेश शुल्क भी लगता है।

कलकत्तेका किला

वर्तमान किलेका बनना सन् १७५० ई०में लार्ड क्लाइव द्वारा प्लासीके युद्धके बाद आरम्भ किया गया था और यह सन् १७७३ ई० में पूरा तैयार हुआ। इसके बननेमें २० लाख रुपये खर्च हुए थे। आकारमें यह एक अष्टकोणके समान है, जिसके ५ कोण कलकत्तेकी ओर और तीन गंगाकी ओर है। इसके चारों ओर एक पचास फीट चौड़ी और ३० फीट गहरी खाई है जो आवश्यकतानुसार नदीके जलसे भर दी जा सकती है। किलेमें १०००० मनुष्य रह सकते है और इसपर भिन्न २ प्रकारकी ६०० तोपें चढ़ाई जा सकती हैं। किलेके भीतर भारतीय और गोरी सेनाके लिये साफ सुथरी वारकें है। इसके अतिरिक्त इसमें तोपखाना, रसदखाना और परेड इत्यादिके लिये सुन्दर मैदान भी है। इसके अन्दर दो गिरजाघर भी है।

जियालजिकल गार्डन

यहां तरह २ के पशु, पक्षी और सर्प इत्यादि बिल्कुल स्वाभाविक ढंगपर रक्खे गये हैं। अभी हालहीमें दो चित्तेके बच्चे लाये गये हैं जो बिलकुल बकरीकी तरह रक्खे जाते हैं; उन्हे मांस नहीं दिया जाता। यहां भी सुन्दर तालाब और चित्र विचित्र पुष्प और वृक्ष बड़ी खूबसूरतीसे लगाये गये हैं। चिड़ियाखाना प्रतिदिन सूर्योदयसे सूर्यास्त तक खुला रहता है। प्रतिदिन प्रवेश शुल्क एक आना रहता है केवल रविवारको १२ बजेके बाद १) रुपया लगता है क्योंकि उस दिन वहां मिलिटरी वैंड बजा करता है।

कालीजीका मन्दिर

इसका जन्म-काल अन्धकारमें है। पर वर्तमान मन्दिर बहुत पुराना नहीं है; यह सन् १८०६ ई०में बनवाया गया था। मन्दिर जानेके पथके दोनों ओर भिखमंगोंकी लम्बी कतार चली गई है जो यात्रियोंको बड़ा तङ्ग करते हैं। मन्दिरमें पूजाके लिये नित्य प्रति अनेकों बकरे बलि किये जाते है और दुर्गापूजा तथा अन्य बड़े त्योंहारों पर तो यह संख्या बहुत अधिक हो जाती है।

जैन मन्दिर

जैन मन्दिर नगरके उत्तरमें मानिकतल्ला स्ट्रीटमें है। यहां पर सर्कुलर रोडसे आसानीसे पहुंचा जा सकता है। वास्तवमें यहा तीन मन्दिर हैं, जिनमें मुख्य मन्दिर जैनियोंके दशवें

आचार्य शीतलनाथजीका है। ये मन्दिर राय बद्रीदास बहादुर जौहरी, द्वारा सन् १८६७ ई० में बनवाये गये थे।

टेम्पुल स्ट्रीट के द्वारसे घुसते ही बड़ा सुन्दर दृश्य सामने आता है। स्वर्ग सदृश्य भूमि पर मनोहर मन्दिर बड़ाही मनोहर मालूम पड़ता है। यह उत्तर भारतकी जैन-शिल्पकलाका ज्वलन्त उदाहरण है। मन्दिरके सामने संगमरमरकी सीढ़िया बनी हैं और इसके तीन ओर चित्ताकर्षक बरामदे बने हुये हैं। दीवारोंपर रंग बिरंगे छोटे २ पत्थरके टुकड़े जड़े हुए हैं और दालान तथा छत इस खूबीसे बनाये गये हैं कि उनपरसे आंख हटानेको जी नहीं चाहता। शीशे और पत्थरका काम भी उतना ही नयनाभिराम है। छतके मध्यमें एक बड़ा भारी फानूस टङ्गा है। मन्दिरके चारों तरफ सुन्दर बगीचा बना है। जिसमें बढ़ियासे बढ़िया फौव्वारे, चबूतरे इत्यादि बने है। कोनेपर एक छोटासा तालाव है, जिसमें रङ्ग विरङ्गी सुनहली मछलिया अठखेलियां करती रहती हैं। कई आतिथ्यागार भी बने हुए हैं। बगीचेके उत्तरमें शीशमहल है इसमें दीवाल; छत, फानूस, कुर्सिया इत्यादि सभी वस्तुयें शीशेही की हैं। इसके भीतरका भोजनागार सबसे अधिक देखने योग्य है। ये मन्दिर और बगीचा अवश्य ही किसी चतुर.शिल्पीका कार्य हैं इसका नकशा स्वयं रायबहादुर बद्रीदासजीने सोचा था। यह मन्दिर नित्यप्रति सर्वसाधारणके लिये निःशुल्क रूपसे खुला रहता है। चादनी रातमें मन्दिरकी शोभा अनुपम होती है और उस समय आनेकी स्वीकृति अधिकारियोंसे मिल सकती है।

पारसियोंका शान्तिमन्दिर

यह मन्दिर बेलियाघट्टा मेन रोडमें स्थित है, जो सियालदहके पूर्वमें है। इसके चारों ओर बड़े २ खजूरके वृक्ष और तालाब हैं। चतुष्कोणके बीचमें एक सफेद पुता हुआ बुर्ज है। जो सन १८२२ में बनाया गया था। इसके पीछे दुहरी छत है और एक दूसरा बड़ा बुर्ज है। यह सन १९१२ में बना था। सीढ़ियां चढ़नेपर एक छोटा सा दरवाजा मिलता है, जहांसे केवल "नसालार" ही शवको भीतर ले जाते हैं। बुर्जका भीतरी भाग तीन हिस्सोंमें विभक्त है; इनमें एक शव आसानीसे आसकता है। पहले भागमें पुरुष, दूसरेमें स्त्री; और तीसरेमें बच्चे रख दिये जाते है। सब जगह शान्ति विराजती है। शव खुले रख दिये जाते हैं। और चील कौए मास नोच नोचकर उन्हें खा डालते हैं। हड्डिया गिरकर एक कुएमें इकट्ठी होती हैं। जहासे वे नाली द्वारा बहा दी जाती हैं। पारसी लोग अग्नि, जल, और मिट्टीको पवित्र मानते हैं इसीलिये पवित्र वस्तुओंके अपवित्र होनेके भयसे वे अपने मुर्दोंको न तो जलाते ही हैं और न गाड़ते हैं।

राजेन्द्र मल्लिककी कोठी

यह मुक्ताराम बाबू स्ट्रीटमें है और इसके दो रास्ते है, एक तो चितपुर रोडसे और दूसरा
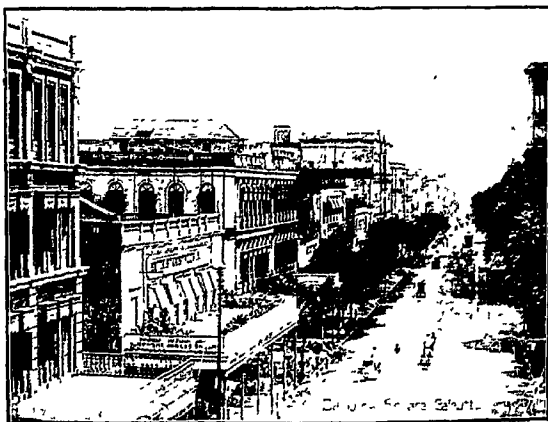
डैलहौसी स्क्वायर, कलकत्ता
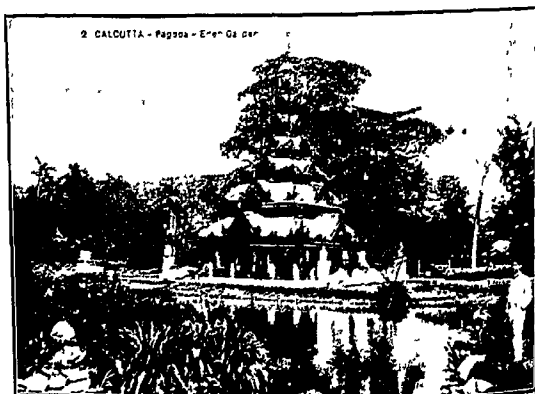
बौद्ध मन्दिर (इडेन गार्डन) कलकत्ता
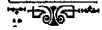
चितरंजन एवेन्यूसे यह प्रसिद्ध महल बिलकुल घनी बस्तीमें स्थित है और इसके भीतर घुसतेही एक अपूर्व दृश्य सामने आता है। सामने ही एक समाधिस्थ सन्यासी और ग्रीक देवीकी सुन्दर मूर्तियां है। बागमें एक छोटा मोटा चिड़ियाखाना भी है जिसमें नाना प्रकारके पक्षी हैं। सारस भी बहुत हैं जो बागमें इधर-उधर स्वच्छन्द विचरा करते हैं।

महलके भीतर ही अनेकों मूर्तियां और एकसे एक बढ़कर चित्र हैं। एक बड़ीसी मूर्ति है जिसमें महाराणी विक्टोरिया राज्यारोहणका वस्त्र पहने दिखलाई गई है तैल चित्रोंमें एक सर जोशुआ रीनाल्डस द्वारा और दो रूबन्स द्वारा बने हुए हैं। एकमें सेण्ट सेबैस्टियनका जीवनोत्सर्ग और दूसरेमें सेन्ट कैथरीनका विचित्र विवाह चित्रित है। दूसरे चित्रको एक सज्जनने ७५००० रुपये देकर लेनेकी इच्छाकी थी परन्तु वह अस्वीकार कर दी गयी।

इडेन गार्डेन

इडेन गार्डेन कलकत्तेकी खूबसूरत जगहोंमें है। यह गार्डेन हाईकोर्ट के दक्षिणमें, गवर्नमेंट हाउस और गंगाके मध्यमेंस्थित है। बागके भीतरके सुन्दर लाल टेढ़े मेढ़े पथ बड़ेही भले मालुम देते है, और कृत्रिम सरोवरसे तो इसकी शोभा द्विगुणित हो गई है। सबेरे शाम यहां लोगोंका अच्छा जमाव रहता है। इडेन गार्डेनके भीतरका बौद्ध-मंदिर सन् १८४५ ई० में युद्धके बाद प्रोम नगरसे यहां लाया गया था। यह बड़ाही सुन्दर है। गार्डेनके भीतर एक छोटासा साफसुथरा मैदान भी है; इसीके बीचमें बैण्ड बजानेका स्थान है। यहां पहले बैण्ड बजता था परन्तु अब कारपोरेशनने बन्द कर दिया है। जगह जगह रंग विरंगे पुष्प वृक्ष बड़े चित्ताकर्षक हैं। झीलके कमल भी अपनी शानी नहीं रखते। कलकत्ता क्रिकेट क्लबकी ग्राउन्ड यहीं है, जो भारतवर्षमें सर्वोत्तम है।

डलहौसी स्क्वायर

इस स्थानका ऐतिहासिक महत्व है और यह प्राचीन कलकत्तेका केन्द्र रह चुका है। यह गवर्नमेंट हाउसके कुछ उत्तरमें है और यहां सबसे आसानीसे ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीटसे पहुंचा जा सकता है। यह लगभग २५ एकड़ भूमिमें हैं और अपने मनोहर सरोवर और चतुर्दिककी सुरम्य विशाल अट्टालिकाओंके कारण संसार भरमें अद्वितीय माना जाता है। कलकत्ताके जन्मकालमें यह तालाव पानी पीनेके लिए सरकार द्वारा खुदवाया गया था और लोगोंको इसमें स्नान करनेसे रोकनेके लिये चारों ओर जङ्गले लगा दिएगये थे।

बोटैनिकल गार्डेन

यह सुविस्तृत और प्रसिद्ध बाग गंगाके उसपार शिवपुरमें है जो कलकत्तेसे तीन मील दूर है। बोटैनिकल गार्डेन जानेके दो रास्ते है, सड़कसे और स्टीमरसे, परन्तु सड़क खराब रहनेके कारण

लोग स्टीमर द्वारा जाना ही अधिक पसन्द करते हैं। स्टीमर एडेन गार्डेनके सामनेके चांदपाल घाटसे छूटते हैं और पहुंचनेमें केवल ४० मिनट लगते हैं।

यह बोटैनिकल गार्डेन जेनरल किड के आदेशानुसार ईस्टइण्डिया कम्पनी द्वारा सन् १७८६ में स्थापित किया गया था और जेनरल किड ही इसके प्रथम सुपरिंटेण्डेण्ट थे।

यह गार्डेन २७३ एकड़ भूमिपर बना हुआ है और नदीके सामने यह ५६०० फीट लंबा है। बागके भीतर मोटर और पैदल चलने योग्य अच्छे पथ हैं और गार्डेन पार्टी इत्यादिके लिए तो यह स्थान सर्वोत्तम है। इसमें अनेकों सायादार सुन्दर जगहें, ईंटके छोटे २ घर भी हैं जिनमें ठहरनेकी स्वीकृति सुपरिंटेण्डेण्ट द्वारा मिल सकती है।

इस गार्डेनमें सबसे अधिक दर्शनीय वस्तु बट वृक्ष है। यह विशालकाय वटवृक्ष डेढ़ सौ वर्षोंसे सिर ऊंचा किये खड़ा है। ऐसा कहा जाता है कि यह संसारमें सबसे बड़ा वृक्ष है। इसका घेरा ६०० फीटका है इसकी शाखाओंसे मोटी २ लटकती हुई ३०० जड़े पृथ्वीमें घुस गई है, जिनसे वृक्षको सहारा और पुष्टि दोनों मिलती हैं। इसका मुख्य तना पहले ५१ फीट मोटा था, परन्तु अब यह कुछ खराब होगया है और कुछ काट भी डाला गया है।

इस बगीचेमें दूसरी दर्शनीय वस्तु पाम हाऊस या शान्ति निकेतन है। यह शान्ति निकेतन अष्टकोणके आकारका है, और इसकी प्रत्येकभुजा ८५ फीट लम्बी है। इसका व्यास २१० फीटका है, बीचका गुम्बद ५० फीट ऊंचा है। इसका ढांचा लोहेका है और उसके ऊपर लोहेका ही जाल बिछा हुआ है जो घाससे छाया गया है। भीतर छोटी २ चट्टाने बनी हैं जिनके बीचके टेढ़े मेढ़े छल पथ बड़े ही सुन्दर मालूम पड़ते हैं। भिन्न २ प्रकारके पौधोंका संग्रह इतना उत्तम है कि संसारके कुछही पामहाउस इसकी समता कर सकेंगे। खजूरके पेड़ जमीनपर लगे हैं और अन्य पौधे गमलोंमें बड़ी खूबसूरतीसे सजाकर रक्खे गये हैं।

इसके अतिरिक्त विश्रामागारके सामने ही आरचिडहाउसका प्रवेशद्वार है। गरमीके दिनोंमें आरचिडके फूलोंकी बहार देखते ही बनती है और अन्य ऋतुओमे भी इसकी विचित्र पत्तियां और शाखायें बड़ी सुन्दर दीख पड़ती है। इस वाटिकामें आरचिडके अतिरिक्त और भी कई प्रकारके पौधे है।

इस बृहत् और सुरुचि पूर्ण उपवनका वर्णन इतनेमें समाप्त नहीं हो सकता। इनके अतिरिक्त इसमें भी सुन्दर अनेक मनोहर स्थान तथा पथ हैं। जगह २ छोटे तालाव इसकी शोभाको द्विगुणित कर देते हैं। इस वनस्पति-बागका नानाप्रकारके असंख्य वृक्षों तथा पौधोंका अपूर्व संग्रह जगत प्रसिद्ध है। संसारके अन्य बड़े बड़े बोटैनिकल गार्डेनोंमें भी पौधे इत्यादि यहींसे भेजे जाते है। सर जोसेफ हूकरने चीनदेशसे सबसे पहले चायका पेड़ लाकर यहीं लगाया था। और सर क्लेमेंटस

मार्खम दक्षिण अमेरिकासे कुनैनका वृक्ष लाये थे। ये दोनों ही पौधे यहां सफल रूपसे लग गये थे। गार्डेनके भीतरका बनस्पतियोंका अजायब घर देखने योग्य है।

बोटैनिकल गार्डेन सूर्योदयसे अस्त होने तक सर्वसाधारणके लिये प्रतिदिन निःशुल्क रूपसे खुला रहता है।

व्यापारिक स्थल एवम बाजार

बड़ा बाजार—हरिसन रोडका दक्षिणी हिस्सा, सूतापट्टी, पगियापट्टी, काटन स्ट्रीट, चितपुर रोडका कुछ भाग आदि बाजारोंके मिले हुए रूपको बड़ा बाजार कहते हैं। यह स्थान कलकत्तेमे व्यापारका बहुत बड़ा केन्द्र है। यहां विशेषकर मारवाड़ी व्यापारियोंकी ही फर्में हैं। यहा कपड़ा, हायफरी, फेन्सी गुड्स,जवाहरात, मेवा, पुस्तकें, दवाइयें, लोहा, पीतल आदि सभी उपयोगी वस्तुओंका व्यापार होता है। इनमें भी खासकर कपड़ेका व्यापार बहुत महत्त्व रखता है। मारवाड़ी लोग मकान बनानेके बहुत शौकीन होते हैं, अतएव कहना न होगा कि यहां भी कई आलीशान इमारतें बनी हुई हैं। इनकी सुन्दरता देखतेही बनती है। रास्ता काफी चौड़ा होनेपर भी मोटर, ट्राम, बस गाड़ियें और मनुष्योंको आवागमनकी वजहसे यहां बहुत गतिविधि रहती है। एक नयेव्यक्तिके लिये तो रास्ता पार करना जरा कठिन हो जाता है। इस बाजारके भिन्न भिन्न स्थानोंमें भिन्न भिन्न व्यापार होता है। जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

सूतापट्टी—इसका दूसरा नाम है क्रास स्ट्रीट। यहां कई बड़े बड़े कपड़ेके इम्पोर्टरोंकी आफिसें है। इसके अतिरिक्त सूत, धोती जोड़े, नैनसुख, आदि कपड़ेका व्यापार होता है। यहां पीतलके बर्तनके भी बहुत व्यापारी हैं।

मनोहरदासका कटरा यह कटरा सूतापट्टीमेंही है। यहां विशेषकर फैंसी कपड़ा, मलमल, नैनसुख, चीक, फलालेन आदि कपड़ेका थोक व्यापार होता है। कई थोक व्यापारियोंकी बड़ी फर्में यहा है। इसमें पीतल एवं लोहेका व्यापार भी होता है। जिसमें खासकर कैंची, ताला, चाकू, साकल, कुन्दे, कड़ियें आदि विशेष है।

पारखकी कोठी—यह हरिसन रोड और पगियापट्टीके मोड़पर है। यहा रंगीन छींट, रंगीन कपड़ा, नैनसुख और कोरे कपड़ाका थोक एवमं फुटकर व्यापार होता है।

सदासुखका कटला—इसमें तीन बाजार हैं। एकका नाम धोतीपट्टी,दूसरेका फेन्सी पट्टी एवम तीसरेका कटपीस पट्टी है। धोतीपट्टीमें सिर्फ धोतीका ही व्यापार होता है। फेन्सीपट्टीमें वाईल, खद्दर क्लाथ, टसर आदि फैन्सी कपड़ेका और कटपीस पट्टीमें कटपीसका व्यापार होता है। इसके तल्लोंमें बड़े बड़े व्यापारियोंकी गद्दियां है। यह कटरा बीकानेरके प्रसिद्ध सेठ सदासुख गंभीरचन्दका बनाया हुआ हैं।

पगिया पट्टी—इसमें देशी एवं विशेषकर विलायती जनानी एवं मर्दानी दोनों प्रकारके

धोती जोड़ोंका व्यापार होता है। पगिया पट्टीकी गलियोंमें चेक, दुपट्टे आदिका भी व्यापार होता है,

काटनस्ट्रीट—इसका दूसरा नाम तुलापट्टी भी है। इसमें हैसियनके हाज़रमालका सौदा होता है। कई वड़े २ हैसियन व्यापारियोंकी इसमें दुकाने हैं। रूईका कारबार भी इस बाजारमें होता है। इसी बाजारमें पगियापट्टीके सामने चीनी पट्टी (रामकुमार रक्षितलेन) है। यहां चीनीका व्यसाय एवं वायदेका सौदा होता है। पानीके सट्टेके लिये इसी बाजारमें अफ़ीम चौरस्ता मशहूर है।

आर्मेनियनस्ट्रीट—इसमें गल्ले और किरानेका ही विशेष रूपसे व्यापार होता है। इस व्यापारके करनेवाले प्रायः गुजराती सज्जन हैं। यहां कई बड़े २ गोदाम है। इसके अतिरिक्त कमीशन से काम करनेवालोंकी कई फर्मे इस स्ट्रीटमें हैं। चांदी, सोना एवं जवाहिरात और कपड़ेका व्यापारभी इस स्ट्रीटमे होता है। इसके अतिरिक्त रंग और छातेके भी बड़े बड़े व्यापारी यहां व्यापार करते हैं।

खंगरापट्टी—कासस्ट्रीट और चायना बाजारके बीचमें है। यहां रंग, दवाई, तेल, फीते मोती आदिका व्यापार होता है। इसके पासही मूंगापट्टी है। यहां नकली नगीनें, मोती, हीरे आदिका व्यापार होता है।

वोलफील्डलेन खंगरापट्टीसे क्लाईव स्ट्रीट जाते समय यह रास्तेमें पड़ती है। यहां बड़े २ केमिस्ट और ड्रगिस्टकी दुकाने हैं

क्लाइवस्ट्रीट—यह स्ट्रीट यहांके व्यापारिक स्थानोंमें सबसे बड़ी जगह मानी जाती है। यहा कई बड़े बड़े बेंकोंकी एवं बडी बड़ी युरोपियन एवं इण्डियनफर्मोंकी आफिसें हैं। इसमें केमिस्ट ड्रगिस्ट, लोहेके व्यापारी पीतलके व्यापारी आदि भी अपना व्यापार करते है। इसी स्ट्रीटमें रायल एक्सचेंज प्लेस, फ़ाइव रो आदि स्थान हैं। यहां भी कई बड़ी २ कम्पनियोंके आफिस हैं। मशीनरी मर्चेन्ट्सकी दुकानें भी है।

रायल एक्सचेंज प्लेस यह स्थान कलकत्तेके सुन्दर स्थानोंमेंसे है। यहांकी बड़ी बड़ी विशाल इमारतें देखने ही बनती है। इसी जगह शेयर और स्टाक एक्सचेंज है, यहां गवर्नमेन्ट पेपर एवं सेक्युरिटीजका बहुत बड़ा कारबारहोता है। हैसियन के वायदेका सौदा भी इसी बाजारमें होता है सैकड़ों मारवाड़ी इस बाजारमे चक्कर काटते हुए दिखलाई देते है। इसस्थान पर भी बड़े २ युरोपियन और हिन्दुस्तानी व्यापारियोंकी फर्में हैं।

चायना बाजार—इस बाजारमे कागज, स्टेशनरी, ट्रंक, चीनीका सामान, कांचके गिलास वगैरह, घमंटेके मूट केस, छाते आदि वस्तुओंका व्यापार होता है। कागजके बडे २ व्यापारी यहां व्यापार करते हैं। इसमें कुछ मारवाड़ी फर्मोंकी भी गद्दियां है।

राधाबाजार— चीना बाजारमे आगे चलने पर यह बाजार आता है इसमें कागज, मार्-चन्ट्स, घड़ियों और जवाहरात आदिका व्यापार होता है। चादीके बने हुए बर्तन भी इस बाजारमें मिलते हैं। राधा बाजार और चायना बाजारके मेलपर एक लेन गई है। इसका नाम स्लावो लेन है। यहां कांच एवं कांचका सब प्रकारका समान बिक्री होता है। यहा बड़े २ कांचके इम्पोर्टर्स की आफिसें है।
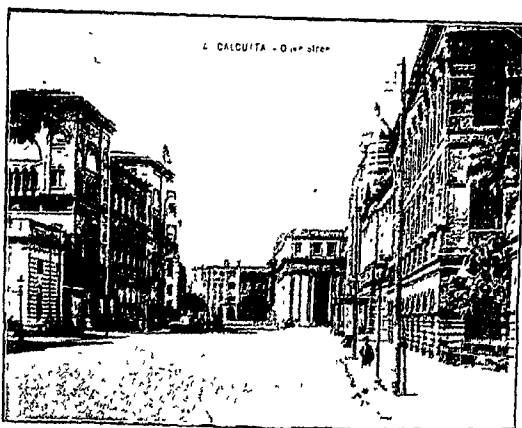
क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

चौरंगी रोड, कलकत्ता

कैनिंगस्ट्रीट—यह रास्ता स्ट्रांड रोडसे लेकर लोअर चितपुर तक सीधा चला गया है। इसमें जूट, हैसियन आदिका व्यापार करनेवाले कई व्यापारियों की आफ़िसे हैं। इसी बाजारमें खिलौने इत्र, तेल, सेण्ट, साबुन, वार्निस और पेण्ट, एल्यूमिनियम, चाकू, कैंची, चूड़िया, मनिहारीके सामान आदिका व्यापार होता है। इस बाजारमें बिस्कुट आदि भी मिलते है।

कोलूटोला स्ट्रीट—कैनिंग स्ट्रीटके सामनेवाले रास्तेका नाम है। जहां लोअर चितपुर रोडमें कैनिंग स्ट्रीट खतम हो जाती है। वहींसे यह स्ट्रीट शुरू होती है इसमें भी खिलौने छाते बिस्कुट आदिके व्यापारी व्यापार करते हैं। तमाखू और सिगरेटका व्यापार भी इस बाजारमें होता है।

अमरतल्ला स्ट्रीट—कैनिंग स्ट्रीट और आर्मेनियन स्ट्रीटके बीचमें यह रास्ता है। यहां किरानेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। यहां विशेष कर गुजराती व्यापारी रहते हैं। हायफरीका व्यापार भी इस बाजारमें होता है।

इजरास्ट्रीट—अमरतल्लाके सामने कैनिंगस्ट्रीटको क्रास करके जाना होता है। इसमें बिड़ी, एल्यूमिनियम, बिजलीके सामान आदि बेचने वालोंकी दुकानें हैं। इसमें विशेष कर गुजराती भाषा भाषी व्यक्ति रहते हैं। इसके पासही कांचकी शिशियां बेचने वालोंकी दुकानें हैं। यहां हर प्रकारकी रंग बिरंगी जिन्दा चिड़ियां भी बिकती है।

राजा उडमंड स्ट्रीट—स्ट्राड रोड और क्लाईवस्ट्रीटके बीचमें आती है। यहां इमारती सामान, नल, वारनिस और पेंट आदिका व्यापार होता है। यहां कई बड़े २ जूटके मारवाड़ी व्यापारियोंकी गद्दियां भी हैं।

स्ट्रांडरोड—यह रोड हुगली नदीके किनारे २ बहुत दूरतक चला गया है। इसके किनारे २ कई जहाजके घाट आते हैं इसी रोड पर जेटीज भी हैं। यहां बड़े २ बिल्डिंग कंण्ट्राक्टर्स, इंजिनियर्स और बिल्डिंग मटेरियल डीलर्सके आफिस हैं। इसीपर इम्पीरियल बैंक एवम पी० एण्ड० ओ० बैंक भी हैं। कुछ मेशीनरी मरचेण्ट भी इस रास्ते पर हैं।

हाटखोला—शोभाबाजारके कोने पर है। यहाँ हाजिर जूटका व्यापार होता है। हाजिर जूटके व्यापारी यहांसे माल खरीदते है। यह एक जूटकी मंडी है।

नीमतल्ला—यह स्ट्राड रोडके आखिरमें हैं। यहां लकड़ीका व्यापार होता है। कई बड़ी फर्मोंका यहां आफिस हैं। मकानके सम्बन्धी प्रायः सभी लकड़ीका सामान यहां बिकता है। जैसे किवाड़, खिड़की आदि।

चित्तरंजनएवेन्यू—यहां बड़े २ मारवाड़ी श्रीमन्तोकी आलिशान इमारतें बनी हुई हैं। यह यहांके दर्शनीय स्थानोंमें हैं। यह रास्ता सुन्दर और साफ है।

कॉलेजस्ट्रीट—इस बाजारमें पुस्तकोंकी बिक्री होती हैं। कई बुकसेलरोंकी यहा दुकाने हैं। इसके अतिरिक्त सेकण्ड हैण्ड पुस्तकें भी इस बाजारमें बहुत बिकती हैं।

चितपुररोड—यह यहाका एक मशहूर रोड है। इसमें बड़े २ सुन्दर आइना बेचनेवाले,

तस्वीरों वाले, जूतेवाले, हुक्के वाले, तमाखूवाले आदि व्यापारी व्यापार करते हैं। इसके अतिरिक्त कई व्यापारियोंकी गद्दिया भी हैं।

बेंटिक स्ट्रीट—चितपुरसे आगे यह रास्ता सीधा एस्प्लेनेड तक चला गया है। इसमें विशेषकर चायनी लोग रहते हैं। ये लोग बूट बनाते हैं। यहासे विदेशोंको बूट एक्सपोर्ट किये जाते हैं। बूट और जूतोंका यही सबसे बड़ा बाजार है।

बहूबाजार—यह रास्ता सियालदहसे शुरू होता है। इसमें फर्निचर, जनरल मरचेंटस और सिलेसिलाए कपड़ेका व्यापार होता है।

लालबाजार—यह बहूबाजारसे सीधा डलहोसीस्कायर तक चला गया है। इसमें जौहरी जनरलमरचेंट आदिकी दुकाने हैं।

डलहौसी स्कवायर—यह स्थान दर्शनीय स्थान हैं। यहा तीन ओर गव्हर्नमेंट आफिसेसहैं। इसीमें हेरीस्ट्रीट नामक एक रास्ता गया है जहा बीमा कंपनियोंके आफिस हैं। इस स्थानका विशेष विवरण दर्शनीय स्थानोंमें देखिये।

एस्प्लेनेड—यहां यूरोपियन स्टाईलकी बड़ी २ फर्में हैं इन पर फैन्सी सामानका व्यापार होता है। जैसे ग्रामोफोन, घडियां, रेडियोफोन, फैन्सी गुड्स, क्यूरियोसिटी, जवाहरात आदि यह स्थान अपनी रमाणीकताकी दृष्टिसे भी बड़ा सुन्दर है। इसके सामने ही फूटबाल ग्राउंड्स आदि हैं।

पार्क स्ट्रीट—यहां मोटर कंपनियोंके आफिस हैं। इसके अलावा, जवाहरात और जनरल सामानके बेंचने वालोंकी भी दुकाने हैं यह एक बहुत सुन्दर स्ट्रीट है। इसमें विशेष कर युरोपियन लोग रहते हैं।

चौरंगी—यह भी यहाके सुन्दर रास्तोंमेंसे एक है। यह रास्ता एस्प्लेनेडसे शुरू होकर कालीघाटतक चला गया है। इसके किनारे २ बड़ी २ युरोपियन फर्में है। रातका सीन यहां देखने योग्य होता हैं।

धर्मतल्ला—यह यहांका एक प्रसिद्ध बाजार है। यहां जनरल सामान वालोंकी दुकाने हैं। मोटरें वगैरह भी यहा बिकती है।

हग मार्केट—यह यहाके बाजारोंमें सबसे सुन्दर है। इसका विशेष परिचय दर्शनीय स्थानोंमें देखिये। यहां गृहस्थीकी सब प्रकारकी वस्तुओंका व्यापार होता है।

मिशनरो—राधा बाजारसे लालबाजारको क्रास कर सीधा जाना होता है। यहां लाख और चपड़ेका व्यापार होता है।

मेंगोलेन—मिशनरोसे आगे यह रास्ता आता है। यहां भी चपड़ेका व्यापार होता है।

मानिकतल्ला—यहां तेलकी बड़ी २ कले हैं।

सरक्यूलर रोड—यह कलकत्ताका सबसे पुराना रोड है। इस पर फुटकर सामान बेंचने वालोंकी दुकानें एवम रईसलोगोंकी कोठिया हैं।

मिल-आनर्स

MILL-OWNERS.
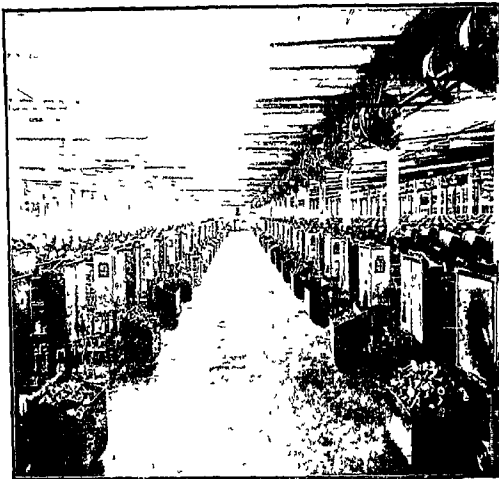
दि हुकुमचन्द जूट मिल्स (स्पीनिंग विभाग)
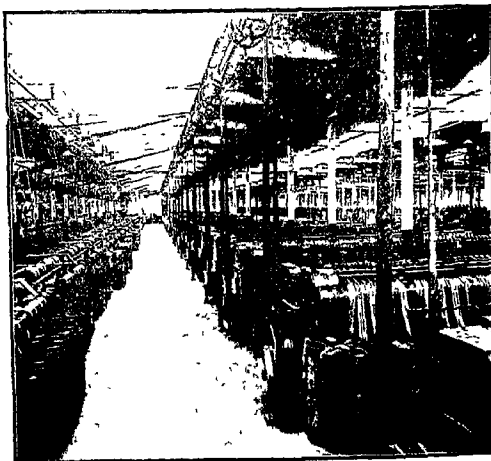
मिलआनर्स

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मके वर्तमान कुशल संचालक राजा बलदेवदासजी बिड़लाके पुत्र बाबू जुगुल किशोरजी बिड़ला, बाबू रामेश्वर दासजी बिड़ला, बाबू घनश्याम दासजी बिड़ला और बाबू बृजमोहनजी बिड़ला हैं। आप लोगोंने अपनी व्यवसाय चातुरी एवं दानशीलतासे व्यवसायिक क्षेत्रमें बहुत बड़ा स्थान पाया है। यह फर्म कलकत्तेमें जूट, हेशियन, गनी, अलसी, गल्ला, तेलहन, चांदी आदिका बहुत बड़ा एक्सपोर्ट इम्पोर्ट और व्यवसाय करती है। कलकत्तेके बाजारमें मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सका दबदबा है। इस फर्मकी प्रशंसामें जितनी लाइनें लिखी जाय उतनी थोड़ी हैं। आप लोग मारवाड़ी समाजके चमकते हुए उज्वल रत्न हैं। आपकी फर्म नीचे लिखी मिलों और कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग एजंट है।

(१) बिड़ला जूट मैन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड, कलकत्ता
(२) केशोराम काटन मिल्स लिमिटेड, कलकत्ता
(३) जयाजी राव कॉटन मिल्स ग्वालियर
(४) बिड़ला काटन स्पीनिंग एण्ड वीविङ्ग मिल्स लिमिटेड, दिल्ली
(५) जूट सप्लाई एजंसी लिमिटेड, कलकत्ता
(६) गोविंद राइस मिल्स लिमिटेड
(७) चितपुर जूट प्रेस लिमिटेड
(८) बिड़ला कॉटन फेक्टरी लिमिटेड, कलकत्ता
(९) इंडियन शीपिंग कम्पनी कलकत्ता
(१०) कॉटन एजंट्स लिमिटेड बम्बई
(११) जूट एण्ड गनी ब्रोकर्स लिमिटेड कलकत्ता
(१२) मॉडल जूट प्रेस लिमिटेड कलकत्ता
(१३) नेशनल एअरवेज लिमिटेड कलकत्ता

इस फर्मने अपने व्यवसायके संगठनके लिये संसारके सभी देशोंमे अपने एजंट नियत कर रक्खे है। लंडनमें ईस्ट इण्डिया प्रोड्यूज कम्पनीके नामसे इसकी एक ब्राच स्थापित है। इस फर्मका सुविस्तृत परिचय अनेक सुन्दर चित्रों सहित इसी ग्रंथके प्रथम भागके राजपुताना विभागमें पृष्ठ ८१ मे दिया गया है।

मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को०

इस फर्मके वर्तमान संचालक राय बहादुर सर सेठ हुकुमचंदजी एवं स्व० राय बहादुर सेठ हरिकृष्णदासजीके पुत्र बा० देवकिशनदासजी, बा० पन्नालालजी एवम् बा० रामरतनदासजीके पुत्र बा० शिवकिशनदासजी और बा० बुलाकीदासजी भट्टड़ हैं।

इस फर्मका स्थापन सन् १९१६में सर हुकुमचंदजीके हाथोंसे हुआ। आप मालवेके प्रसिद्ध धनिक एवम् कुशल व्यापारी है। आपने पहले मालवेमें तीन चार कॉटन मिल खोल कर उसमें अच्छा पैसा पैदा किया। काटन मिलमें सफलता प्राप्त कर लेनेपर आपका ध्यान कलकत्तेमें होने वाले जूटके व्यापारकी ओर गया। इसके फल स्वरूप सन् १९१९ में आपने राय बहादुर श्रीहरिकृष्णदासजीकी देखरेखमें ८० लाखकी पुंजीसे कलकत्तेमें हुकुमचंद जूट मिल्स लि० को जन्म दिया। यह मिल सन् १९२१ में ३०० लूम्ससे चालू हुई। कहना न होगा कि कलकत्तेमें यह भारतीय पहली ही मिल थी। लोगोंका विश्वास था कि भारतीय लोगोंके संचालनमें जूट मिलें तरक्की नहीं कर सकतीं। सेठ साहबने जूट मिल खोलकर इस धारणाको मिटा दिया। इस मिलने अपने सात वर्षके जीवनमें १ करोड़ २० लाख रुपया पैदा किया तथा सन् १९२१मे ३००लूम्ससे जो मिल चालू हुई थी वही सन् १९२६ से ११०० लूम्स से चल रही है।

सन् १९२० मे जूट मिलके अतिरिक्त एक स्टील फैक्टरी भी १५ लाखकी पूंजीसे स्थापित की। यह अपने व्यवसायमें भारतमें पहली ही फेक्टरी है। इसमें रेलवेके डिब्बेके उपयोगमें आनेवाली प्रायः सभी सामग्री बनती है। इस मिलने भी अच्छा लाभ उठाया है।

कलकत्तेमें सर हुकुमचंदजीके व्यवसायको चमकानेमें प्रधान हाथ रायबहादुर स्व० सेठ हरिकृष्णदासजी भट्टडका था।

राय बहादुर सेठ हरिकृष्णदासजी भट्टड़—आपका जन्म संवत् १९३१ में हुआ था। आपका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप माहेश्वरी समाजके भट्टड़ सज्जन थे। स्व० भट्टड़जी ११ वर्षकी अल्पायुमें ही कलकत्ता आये एवं २० वर्षकी वयमें अजमेरकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स सुहागमल गंभीरमलके प्रधान मध्यालक नियुक्त हुए। इस फर्मके गेलवे नाइज्ड कारोगेटेड शीटके
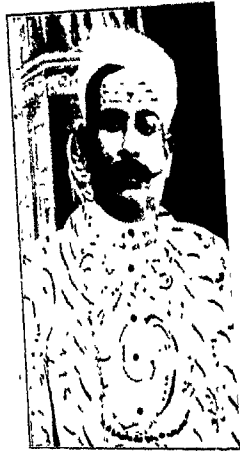
स्वर्गीय रायबहादुर हरिकृष्णदासजी भट्टड़

श्रीयुत बाबू पन्नालालजी भट्टड़

श्रीयुत बाबू शिवकिशनदासजी भट्टड़

श्रीयुत बुलाकीदासजी भट्टड
S/o रा० ब० हरिकृष्णदासजी भट्टड

श्रीयुत रतनलालजी गोयनका
S/o बाबू तोलारामजी गोयनका

हुकुमचन्द इलेक्ट्रिक स्टील डिपार्टमेंट (मशीन भाग)
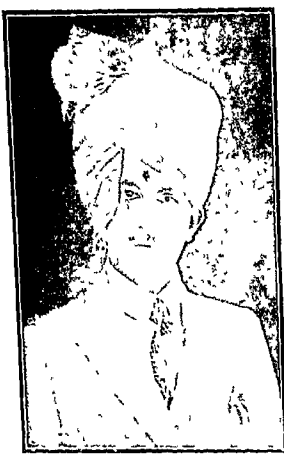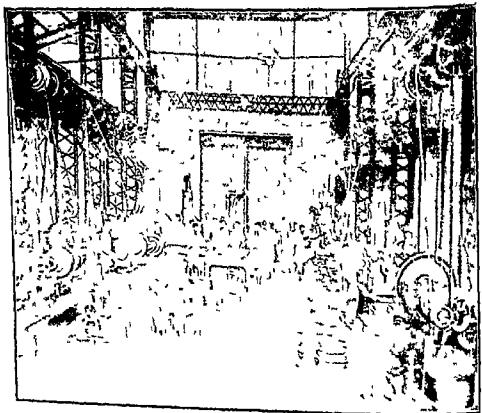
व्यापारको आपने इतना बढ़ाया, कि इस व्यवसायके आप कलकत्तेमें किंग कहलाने लगे। सन् १९१६ में जब सेठ हुकुम चन्दजीने अपनी फर्म कलकत्तेमें स्थापित की तब सेठजीने उसका कुल कारबार स्वर्गीय भट्टडजीको सौंप दिया जिसे आपने बडी ही कुशलतासे संचालित किया।

व्यावसायिक उन्नतिके साथ २ आपका व्यापारिक एवं धार्मिक जगतमें भी अच्छा हाथ रहा है। आप मारवाड़ी एसोसियेशनके वाइस प्रेसिडेण्ट एवं माहेश्वरी भवनके ट्रस्टी थे। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्सके सभापतिका आसन भी आपने सुशोभित किया था। आपको शिक्षाके कार्य्योंसे बड़ा प्रेम था। आपने सन् १९२६ मे गोखले गर्ल मेमोरियल स्कूलको २१०००) प्रदान किये थे। इसी प्रकारके हरएक सार्वजनिक कार्योंमें आप उदारतापूर्वक भाग लेते रहते थे।

आपकी ओरसे पुष्करमें एक अच्छा मन्दिर एवं वैजनाथधाममें ७५ हजारकी लागतसे शवगङ्गापर विशाल धमशाला बनी हुई है। आप हुकुमचंद जूट मिलके आजीवन चैयरमेन रहे। इस प्रकार गौरवपूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९८३ के माघ मासमें हुआ।

बाबू पन्नालालजी भट्टड़ः—आप स्व० भट्टड़जीके छोटे भ्राता हैं, तथा वर्तमानमें इस कुटुम्बका प्रधान सञ्चालन भार आप हीके ऊपर है।

बाबू रामरतनदासजी भट्टड़—आप रा०ब० हरिकृष्णदासजीके कनिष्ट भ्राता थे। आप अच्छे शिक्षित सज्जन थे। कपड़ेके व्यापारमें आपकी अच्छी निगाह थी। फर्मके कपड़े विभागमें आपने अच्छी उन्नति की थी। आपका शरीरान्त ४१ वर्षकी वयमें संवत् १९७२ में हो गया है। आपके दो पुत्र हैं, बाबू शिवकिशन दासजी और बा० बुलाकी दासजी।

बाबू देवकिशन दासजी भट्टड़—आप स्व० भट्टड़जीके पुत्र है। आप शिक्षित एवं सरल स्वभावके मिलनसार नवयुवक सज्जन हैं। हिन्दीसे आपको बड़ा प्रेम है, आप भी अपने पिता की भांति फर्मके व्यवसायमें सफलता पूर्वक भाग ले रहे हैं।

बाबू शिवकिशनदासजी भट्टड़ः—आपका जन्म संवत् १९५६ में हुआ। आप शिक्षित सज्जन है, हिन्दीसे आपको अच्छा स्नेह है। आप हुकुमचंद जूट मिलका सञ्चालन बड़ी तत्परता से करते हैं। आपके छोटे भ्राता श्रीबुलाकीदास भी व्यापारमें भाग लेने लगे हैं।

सर स्वरूपचन्द हुकुमचंद एण्ड कम्पनीमें होनेवाले व्यापारोंका परिचय इस प्रकार है:—

ऑफिस—३० क्लाइव स्ट्रीट (T. A. Kashaliwal)—यह फर्म दि हुकुमचंद जूट मिल और दि हुकुमचन्द स्टील फैक्टरी की मैनेजिङ्ग एजण्ट है। इसके अलावा यहां जूट और हेसियनका व्यापार और एक्सपोर्टका काम होता है। यह फर्म वालकन इंस्युरेंस कम्पनीकी चीफ रिप्रेजेण्टेटिव्ह है।

गद्दी—३० क्लाइव स्ट्रीट (P. A. Kashaliwal) - यहां बैंकिंग, विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट, शक्कर और आढतका व्यापार होता है।

— —

मेसर्स साधूराम तोलाराम।

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान नवलगढ़ (मारवाड़) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके गोयनका सज्जन हैं। फर्मके वर्तमान मालिक श्री सेठ तोलारामजीके पितामह श्री सेठ राधाकृष्णजी अपने आदि स्थान नवलगढ़से खुरजा (बुलन्द शहर) में आ बसे। इनके पांच पुत्र थे, जिनके नाम क्रमानुसार ये हैं—श्रीजोखीरामजी, श्रीगनेशीलालजी, श्रीगोरखरामजी, श्रीसाधूरामजी और श्रीसागरमलजी।

श्री सेठ जोखीरामजीने खुरजावाले सेठ रामकृष्णदासजीके यहां मुनीमातका काम आरम्भ किया परन्तु कुछ ही समय बाद आपने उनसे अलग हो रूई, नील, शक्कर और गल्लेका साधारण व्यवसाय आरम्भ किया। इस व्यवसायकी उन्नति क्रमशः हो चली। बाबू साधूरामजी खुरजासे कलकत्ते चले आये और खुरजाके रानीवाले सेठ हरमुखरायजी सरावगीके साझेमें 'हरमुख राय साधूराम' के नामसे व्यापार करने लगे। इस कार्यमें सेठ जोखीरामजी भी सम्मिलित थे। सेठ हरमुख रायजीने 'हरमुख राय फूलचंद' के नामसे अपना अलग व्यापार आरम्भ कर दिया। परन्तु सेठ साधूरामजी सेठ जोखीरामजी सरावगीके साथ व्यापारमें सम्मिलित रहे और 'साधूराम सदासुख' के नामसे सम्मिलित व्यापार करते रहे। परन्तु कुछ ही समय बाद साधूरामजी अलग हो गये और और अपना स्वतन्त्र व्यवसाय 'साधूराम सागरमल' के नामसे आरम्भ किया। यह फर्म मेसर्स रामजीदास लक्ष्मणदासके साथ कई प्रकारके मालका व्यापार करती रही। उक्त फर्मके साथ यह फर्म बम्बईमें रूई तथा किरासिन आइलका व्यापार करती रही। परन्तु सम्वत् १९५२ में सेठ साधूरामजीने अपनी फर्मका सम्बन्ध उपरोक्त फर्मसे तोड़ लिया और बम्बईमें भी "साधूराम सागरमल" के नामसे व्यापार आरम्भ कर दिया। सम्वत १९५५ में सेठ गनेशीलालजी तथा सेठ सागरमलजीके पुत्र इस फर्मसे अलग हो गये। इस समय शेष तीनों भाइयोंकी सन्तानें बम्बईमें "गोरखराम साधूराम" और कलकत्तेमें 'साधूराम तोलाराम' के नामसे व्यवसाय कर रही है।

सम्वत् १९५५ से इस फर्मने रूईके व्यापारकी ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया और इस व्यापारको बहुत बढ़ा दिया। इस फर्मके पास फेदल विल बुलेन तथा किलबर्न कम्पनी की सूतकी मिलोंकी मुत्सद्दीगीरी (बेनियनशिप) रही तथा बहुतकाल तक यह फर्म ऐन्ड्रयूल एण्ड

बाबू तोलारामजी गोयनका (साधराम तोलाराम)
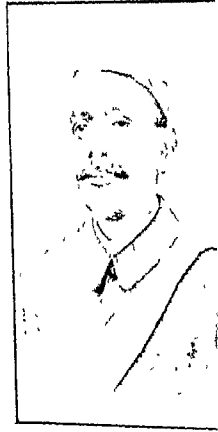
बाबू गौरीशंकरजी गोयनका (साधराम तोलारा

बाबू कन्हैयालालजी गोयनका (साधराम तोलाराम)
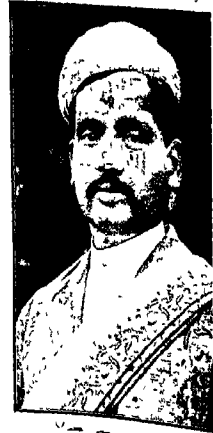
बाबू मन्नालालजी गोयनका (साधराम ...

को० के फोर्टविलियम 'फ्लावर मिलकी वेनियन रही। सन् १९१६ ई० में 'केटल विलबुलेन' कम्पनीसे इस फर्मने 'घुसड़ी काटन मिल' ७ लाखमें खरीद ली। इस मिलका नाम श्रीराधाकृष्ण मिल रक्खा। गत योरोपीय महासमरमें इस मिलको बड़ा भारी लाभ हुआ। इस समय इस मिलमे २७ हजार तकुए सूत कातनेके काम करते हैं। सन् १९२७ ई० में इस फर्मने १०॥ लाखमे सुखदेवदास रामप्रसादसे 'जाजोदिया काटन मिल' खरीद लिया और मिलका नाम बदलकर राधाकृष्ण मिल नं० २ नाम रख दिया। इस मिलमें १५७९० तकुए तथा २६७ करघे काम करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ साधूरामजीके पुत्र बाबू तोलारामजी गोयनका सेठ जोखीरामजीके पौत्र (मटरूमलजीके पुत्र) बाबू गौरीशङ्करजी तथा सेठ गोरखरामजीके पौत्र (रामचन्दजी) के पुत्र बाबू कन्हैयालालजी हैं।

श्रीसेठ तोलारामजी गोयनका

आप मारवाड़ी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आप अ० भा० मा० अग्रवाल पंचायत, श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल तथा कलकत्ता पिंजरापोलके सभापति रह चुके हैं। कलकत्तेकी प्रतिष्ठित व्यवसायी संस्था मारवाड़ी ऐसोसियेशनके सबसे पहिले सभापति आप ही थे। आपके २ पुत्र है, जिनके नाम श्रीमन्नालालजी तथा रतनलालजी हैं। ये दोनों सज्जन व्यवसायमें भाग लेते हैं।

श्रीबाबू गौरीशंकरजी गोयनका

आपका संस्कृत साहित्यकी ओर अधिक अनुराग है और स्वयं भी संस्कृतके अच्छे विद्वान हैं। आपने बनारसमें जोखीराम मटरूमल गोयनका संस्कृत महाविद्यालय स्थापित किया है, जिसमें २५० विद्यार्थी विद्याध्यन करते है। इसके अतिरिक्त संस्कृत साहित्यकी ओर लोगोंको प्रोत्साहित करने व उच्च कोटिकी शास्त्रीय खोज करानेके उद्देश्यसे आपने १॥ लाखका दान दिया है। इसके द्वारा उत्तीर्ण परीक्षार्थीको १ हजार मुद्राकी दक्षिणा और सम्मानसूचक परिधानका पुरस्कार दिया जायगा। और साथ ही सुवर्ण एवं रौप्य पदक भी दिये जायगे। आपने उपरोक्त रकम चैरीटेबल इन्डाउमेन्ट एक्ट के (Charitable Endowment Act 1890) अनुसार संयुक्त प्रान्तीय सरकारके पास संरक्षित रख दी है कि जिसकी आयसे उपरोक्त व्यवस्था की जावेगी। ये परीक्षायें सरकारी शिक्षा विभागके अन्तर्गत संस्कृत विभागकी ओरसे बनारस संस्कृत कालेजमें होंगी और सफल परीक्षार्थी को 'विषय विशेषके 'वाचस्पति'की पदवीसे सम्मानित किया जायगा। इसकी परीक्षा सम्बन्धी व्यवस्था

उक्त विभागके हाथमे रहेगी और प्रबन्ध भार एवं संचालन कार्य उक्त एक्टके अनुसार संस्थापित समितिके आदेशानुसार होगा इस समितिके आप भी एक आजीवन सदस्य हैं। आजकल आप काशीवास करते हैं, आपका गीताकी ओर अनन्य प्रेम है।

श्रीबाबू कन्हैयालालजी गोयनका

आपका भी शिक्षा प्रसारकी ओर अनुराग है। आपने फिरोजाबादमें रामचन्द्र विक्टोरिया हाई स्कूल स्थापित किया है जहा अच्छी संख्यामें विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

इस परिवारकी ओरसे चित्रकूट (बादा) खुरजा तथा रतलाममे धर्मशालायें चल रही हैं। तथा इस फर्मकी ओरसे स्वयं खुरजामे राधाकृष्ण संस्कृत विद्यालय तथा भगवान राधाकृष्णका मन्दिर स्थापित है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

१ कलकत्ता—मेसर्स साधूराम तोलाराम नं० ६ बेहरापट्टी—तारका पता (Ruiwalla) इस फर्मपर रूई व बैंकिंगका व्यापार होता है। यह फर्म राधाकृष्ण मिल्स नं० १ और २ की मालिक है।

२ वम्बई मेसर्स गोरखराम साधूराम—नं० ३६५ कालबादेवी रोड तारका पता-Pencil यहापर रूई और बैङ्किगका व्यापार होता है।

३ खुरजा—मेसर्स गोरखराम साधूराम—यहा एक काटन जिनिङ्ग और प्रेसिङ्ग फैक्टरी है तथा रूईका व्यापार होता है। यह फर्म आरम्भसे ही इस नामसे व्यापार कर रही है।

४ फिरोजाबाद (आगरा)—मेसर्स रामचन्द्र मटरूमल—यहा इस फर्मकी एक जिनिङ्ग फैक्ट्री है। यह फर्म रूईका व्यापार भी करती है।

५ अमरावती—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहा रूईका व्यापार होता है।

६ अकोला—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहा फर्मकी एक जिनिङ्ग फैक्ट्री है। और रूईका व्यापार होता है।

७ वर्धा - मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहापर फर्मकी एक जिनिंग प्रेसिङ्ग फैक्ट्री है और रूईका व्यापार भी होता है।

८ हिंगनघाट - मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहा पर एक जिनिङ्ग फैक्ट्री है। और रूईका व्यापार होता है।

९ नागपुर—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहां रूईका व्यापार होता है।

१० पाधर कुवाडा (सी० पी०)—मेसर्स साधूराम तोलाराम—यहा फर्मकी ओरसे रूईका व्यापार होता है

बाबू गोकुलचन्दजी साहब (शीतलप्रसाद खड्गप्रसाद)

कुमार कृष्णाकुमार साहब एम० ए० बी० ए
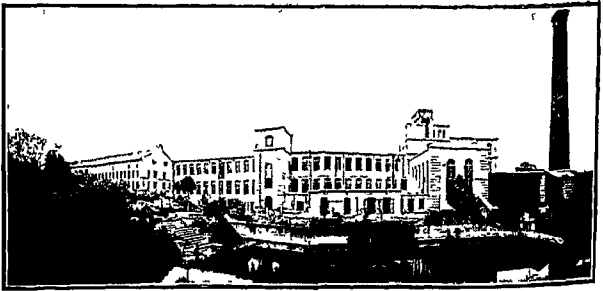
दि भारत अभ्युदय काटन मिल, हवड़ा

मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद

इस फर्मकी स्थापना सन् १८३३ ईसवीके लगभग ३० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें हुई थी। आज भी इसका हेड आफिस इसी स्थानपर है। यह फर्म एक सम्मिलित परिवारकी सम्पत्ति है, जिसके सदस्य आनरेवल राजा मोतीचंद सी० आई० ई० बनारस, बाबू गोकुलचंदजी और कुमार कृष्णकुमार एम० ए०, बी० एल० कलकत्ता और बाबू ज्योतिर्भूषणजी बनारस हैं। इन महानुभावोंकी सम्मिलित बड़ी २ जागीरें और स्थायी सम्पत्ति बनारस जिला और संयुक्त प्रान्त तथा विहार उड़ीसा प्रदेशमें है। इस फर्मके मालिकोंमेंसे बाबू गोकुलचंदजी और कुमार कृष्णकुमारजी एम० ए०, बी० एल० कौन्सिलर कलकत्ता कार्पोरेशन, कलकत्तेमें ही रहते हैं।

यह फर्म बैंकर्स, मिलआनर्स, और व्यवसायी वर्गमें मानी जाती है। इसका प्रायवेट बैंकिंग का काम बहुत ही विस्तृत है। कलकत्तेके अतिरिक्त बनारस और संयुक्त प्रांतके कितने ही स्थानोंमें इसकी गद्दियां हैं। जहा प्रायवेट बैंङ्किगका काम बहुत उन्नत रूपमें होता है। प्राइवेट बैंकिंगका कार्य करनेवाली बड़ी एवं प्रभावशाली फर्मोमें इसकी गणना होती है।

यह फर्म भारत अभ्युदय काटन मिल्स लिमिटेड हवड़ाकी मेनेजिंग एजंट है इस कम्पनीके सभी शेअर इसी फर्मके पास है। इसके अतिरिक्त "दी बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल्स लिमिटेड चौका घाट बनारस केन्ट" तथा "न्यू दरभंगा मिल्स नवसारी" (बड़ौदा) की भी यह फर्म मेनेजिङ्ग एजंट है।

इस फर्मका व्यवसाय बीज और तिलहन बानेका भी है। इस ओर भी इसका पर्याप्त लक्ष्य है। और व्यवसाय खूब बढ़ाया गया है। इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद ३० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता T. A. 'farewell'—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहापर बैंङ्किग और इतर व्यवसाय होता है।

२ मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद ३१ और ३१।१ बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्ता—यहांपर भारत अभ्युदय कॉटन मिल्स हवड़ा, बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल्स बनारस और न्यू दरभंगा मिल्स नौसारीके कलकत्ता वाले आफिस है।

इस फर्मकी मेनेजिङ्ग एजेन्सीसे चलनेवाली मिल्स ये है।

१ भारत अभ्युदय काटन मिल्स लिमिटेड हवड़ा, तारका पता हेल्प 'help'।
२ बनारस काटन एण्ड सिल्क मिल्स लिमिटेड T. A. 'Belgard' बेलगार्ड
३ दि न्यू दरभंगा मिल्स नवसारी (बड़ौदा स्टेट) T. A. 'Navmil नवमिल।

मेसर्स सूरजमल नागरमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है इस फर्मके संस्थापक बाबू सूरजमलजी जालान संवत् १९५२ मे देशसे कलकत्ता आये एवं आरम्भमें आपने यहां आकर अपने मामा सेठ "गुरुमुखराय शिवदत्तराय" के यहा रोकड़का काम किया। आपके छोटे भाई बाबू वंशीधरजी जालान भी प्रथम "हरदेवदास गुरुदयाल" के यहां मुनीमीका काम करते थे। आप दोनों भाइयोंकी व्यवसायिक बुद्धि बड़ी तीव्र है। आपने थोडी पूंजीसे ही संवत् १९६२ में अपना स्वतंत्र व्यापार करना शुरू किया। बाबू सूरजमलजी जालान, बाबू वंशीधरजी जालान, बाबू

बैजनाथजी जालान एवं बाबू नागरमलजी बाजोरियाके हाथोंसे इस फर्मकी उत्तरोत्तर उन्नति हुई। जब आपका व्यवसाय तरक्की पाता गया तब आपने जूटके व्यवसायको बढ़ानेके निमित्त विशेष रूपसे संगठन किया तथा संवत् १९६९में इण्डिया जूट प्रेसकी स्थापना की और संवत् १९७२ में "हनुमान जूट प्रेस" नामक एक प्रेस और खोला। इस प्रकार अपने व्यवसायका विशेष रूपसे संगठन कर जूटकी खरीदीके लिये आपने बंगाल प्रांतमें स्थान २ पर जूटकी एजेन्सियां स्थापित कीं। जूटके व्यापारके साथ २ आपने सनके व्यापारको भी शुरू किया तथा उसका विलायतमें एक्सपोर्ट करने लगे। जब आपका जूटका व्यापार अच्छी तरक्कीपर पहुंच गया तब आपने संवत् १९८४ मे "हनुमान जूट मिल्स" स्थापित किया। इस मिलमें आरम्भमें २६५ लूम्स काम करते थे। अभी आपने २५० लूम्स और बढ़ाये हैं। इस मिलकी मालिक सिर्फ यही फर्म है।

वर्तमानमें यह फर्म कलकत्तेके प्रतिष्ठित जूट व्यवसाइयोंमें समझी जाती है। यह फर्म पूर्वी और पश्चिमी बंगालमें जूट तथा यू० पी०, पंजाब और सी० पी० में सन खरीदीका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मकी ओरसे रतनगढ़में हनुमान वाचनालय और कलकत्तेमें हनुमान लायब्रेरी नामक दो विशाल पुस्तकालय स्थापित हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ मेसर्स सूरजमल नागरमल—६१ हरिसन रोड कलकत्ता—T. A. 'Hemp Baler'—यह फर्म हनुमान जूट मिलकी मालिक है इस फर्मपर जूट और सनकी खरीदी एवं एक्सपोर्टिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

२ हनुमान जूटमिल्स—६४ घुसड़ी रोड सलकिया—T. N. 488 हवड़ा—यह इस फर्मका जूट मिल है।

३ इण्डिया जूट प्रेस—१५ नीमतल्ला लेन स्ट्रीट कलकत्ता T. N. 35/37 B. B.—जूट प्रेस है।

४ हनुमान जूट प्रेस ओल्ड घुसड़ी रोड सलकिया T. N. 502 Hawrah—जूट प्रेस है।

मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया

इस फर्मका मूल निवास बीकानेरमें है। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रोंसहित इस ग्रंथके प्रथम भागमें बीकानेर पोर्शनमें दिया गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री सेठ हीरालालजी, बाबू शिखरचंदजी, बाबू नथमलजी और बाबू भंवरलालजी रामपुरिया हैं। कलकत्तेके कपड़ेके व्यापारियोंमें इस फर्मका प्रधान स्थान है। यह फर्म विलायती और जापानी कपड़ेके इम्पोर्टरोंमें मारवाड़ी समाजमें पहली है।

इसके अतिरिक्त सिरामपुरमें आपका एक प्राइवेट मिल है। यह मिल रामपुरिया कॉटन मिलके नामसे प्रसिद्ध है। इस मिलमें ३२४ लूम्स काम करते हैं तथा प्रतिदिन काम करनेवाले मजदूरोंकी औसत ४०० है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल हीरालाल रामपुरिया-१४९ कॉटन स्ट्रीट, तारका पता HAZANA तथा T No. 1203 B. B. है। यहा कपड़ेका इम्पोर्ट और बैंकिंग व्यापार होता है। कलकत्तेमें आपकी बड़ी बड़ी ४० बिल्डिंग्स हैं, जिनके किरायेकी बहुत बड़ी आमदनी होती है।

बा० सूरजमलजी जालान (सूरजमल नागरमल)

बा० बंशीधरजी जालान (सूरजमल नागरमल)
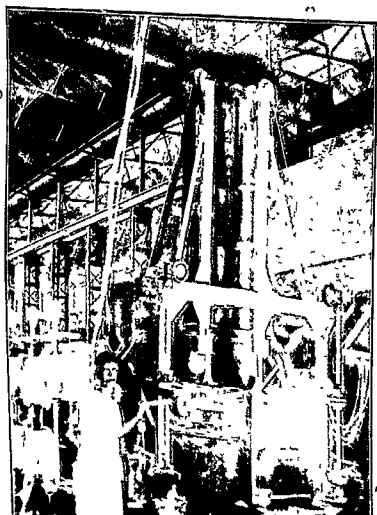
बैंकर्स

BANKERS.

बैंकर्स

बैंक

बैंक और व्यापारका बहुत ही समीप सम्बन्ध है, अतः संसारके सभी व्यापारी केन्द्रोंमें बड़ी बड़ी बैंकें स्थापित हो जाती है। इतना ही नहीं बरन संसारकी सभी प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली बैंकोंकी शाखायें संसारके बड़े बड़े व्यापारी केन्द्रोंमें रहा करती हैं। आधुनिक जगतके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारकी सुविधाके लिये बैंकोंका रहना आवश्यक ही है। हमारे प्रथम भागमें बम्बई विभागके अन्तर्गत भारतमें काम करनेवाली सभी प्रतिष्ठित बैंकोंकी विस्तृत चर्चा प्रकाशित हो चुकी है। अतः यहांपर हम उन्हीं प्रतिष्ठित बैंकोंका आवश्यक वर्णन संक्षिप्त रूपसे देंगे जिनका हेड आफिस कलकत्ते में है और शेषके नामधाम ही मात्र देकर यह विषय समाप्त करेंगे।

१ इलाहाबाद बैंक—इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वर्तमानमें यह बैंक संसारप्रसिद्ध पी० एण्ड० ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि० से सम्बद्ध है। इसकी स्थापना सन् १८६५ ई० में हुई थी, अतः यह पुरानी बैंकोंमें एक है। इसकी स्वीकृत पूंजी ४० लाख रुपयेकी है। इसकी शाखायें भारतके ख्यातिप्राप्त व्यापारी केन्द्रों, जैसे बम्बई, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लखनऊ, लाहोर, रावल पिण्डी, नागपुर, पटना आदिमें खुली हुई है। इसके लंदन स्थित ऐजेन्ट मेसर्स पी० एण्ड ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि० तथा दि नेशनल प्राविन्शियल बैंक लि० है।

२ करनानी इण्डस्ट्रियल बैंक लि०—इसका हेड आफिस कलकत्ता है। इसकी नियमित रूपसे सन् १९१९ ई० में रजिस्ट्री करायी गयी थी। इसके डायरेक्टर राय बहादुर सेठ सुखलालजी करनानी ओ० बी० ई०, सेठ चंदनमलजी करनानी, सेठ कन्हैयालालजी करनानी, बाबू लक्ष्मीचंदजी झंवर और मि० जे० एच० पेटिन्सन हैं। इसके मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट रायबहादुर सेठ सुखलालजी करनानी ओ० बी० ई० हैं। इसकी स्वीकृत पूंजी तो ५ करोड़ रुपयेकी है, पर वसूल पूंजी ६० लाखकी है, जिससे बैंक काम कर रही है।

इनके अतिरिक्त कई छोटी छोटी और भी देशी बैंकें हैं, जिनका हेड आफिस कलकत्ता है। इनके नाम धाम ये है।

३ बंगाल सेन्ट्रल बैंक लि०—१५ हेयर स्ट्रीट कलकत्ता।
४ बंगाल प्राविन्शियल कोआपरेटिव बैंक लि०—गइटर्स बिल्डिंग कलकत्ता।
५ कोअपरेटिव हिन्दुस्तान बैंक लि०—१२।२ क्लाइव रो, कलकत्ता।
६ महाजन बैंकिङ्ग एराड ट्रेडिङ्ग को० लि०—७ बी क्लाइव रो, कलकत्ता।
७ ओरियन्टल बैंक लि०—७२ जस्टिस रमेशचन्द्र रोड भवानीपुर।
८ भवानीपुर बैंकिंग कारपोरेशन लि०, आशुतोष मुखर्जी रोड, भवानीपुर।

यह तो हुई उन बैंकोंकी नामसूची जिनका हेड आफिस कलकत्तेमें है। इन बैंकोंके अतिरिक्त भारतकी अन्य प्रतिष्ठित बैंकोंकी शाखायें भी कलकत्तेमें है। उनके नाम इस प्रकार हैं।

१ इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया—इस बैंककी स्थापना भारतकी तीन प्रधान प्रान्तीय बैंकोंको तोड़कर सन् १६२१ ई० में सरकारी कानूनके अनुसार हुई थी। भारतकी यह सबसे बड़ी सरकारी बैंक है। सरकारी खजानेकी संभाल रखनेका काम इसी बैंकके पास है। समय समयपर उचित ब्याजपर यह बैंक सरकारको ऋण देती है। भारतके विभिन्न केन्द्रोंमें इसकी १८५ शाखायें खुली हुई है। इसकी स्वीकृत पूंजी ११ करोड २५ ला० है। इसका लंदन आफिस ३२ओल्ड ब्राएड स्ट्रीट E. C. Z में है। और कलकत्तेका आफिस स्ट्राण्ड रोड पर है।

२ सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया लि०—इसकी शाखा कलकत्तेमें है। यह बैंक सर्वरूपेण भारतीय बैंक है। इसके आदि संस्थापक स्वनाम धन्य श्री सर फीरोज शाह मेहता हैं। इस बैंककी प्रतिष्ठा भारतीय बैंकोंमें सबसे ऊंची है। इसके वर्तमान संचालक श्री० एस० एन० पोचखानवाला है। आप बैंकिङ्ग व्यवसायके विशेषज्ञ हैं। देशके सभी व्यापारी केन्द्रोंमें इसकी शाखायें फैली हुई हैं। इसका हेड आफिस बम्बई है। विदेशमें इसकी शाखायें—लन्दन, बर्लिन तथा न्यूयार्कमें खुली हुई है।

३ नेशनल बैंक आफ इण्डिया लि०-इसका हेड आफिस बम्बईमें है, पर इसकी एक शाखा कलकत्तेमें भी है। यह बैंक पूर्व अफ्रीका तथा यूगेण्डा सरकारको भी ऋण देती है।

४ इण्डिया बैंक लि०—इसकी शाखा कलकत्तेमें है। इसका हेड आफिस बम्बईमें है। इसका सारा प्रबन्ध भारतीयोंके हाथमें है।

यह सभी बैंकें भारतीय है अब हम कतिपय विदेशी बैंकोंकी नाम सुची दे रहे हैं।
यात्रियोंकी सुविधावाली बैंकें :—

१ पी० एण्ड ओ० बैंकिङ्ग कार्पोरेशन लि०—कलकत्ता
२ थामस कुक एण्ड सन्स लि०—कलकत्ता
३ अमेरिकन एक्सप्रेस कम्पनी—कलकत्ता

वृटेनकी बैंक

१ लायड्स बैंक लि० —कलकत्ता

हालैण्ड बैंक

१ नीदरलैण्ड्स इण्डिया कमर्शियल बैंक—कलकत्ता

२ नीदरलैण्डस ट्रेडिङ्ग सोसाइटी – कलकत्ता

अमेरिकन बैंक

१ नेशनल सिटी बैंक न्यूयार्क कलकत्ता

पूर्वीय देशोंकी ओर व्यापार करनेवाली बैंक

१ चार्टर्ड बैंक आफ इण्डिया, आस्ट्रेलिया एण्ड चाइना

२ हांगकांग शंघाई बैंकिङ्ग कार्पोरेशन

३ याकोहामा स्पेसी बैंक लि०

४ मर्केन्टाइल बैंक आफ इण्डिया लि०

और दूसरे प्रकारको बैंकोंकी शाखायें भी यहा हैं जैसे :

१ बैंक आफ तैवान लि०—कलकत्ता

२ ईस्टर्न बैंक लि०—कलकत्ता

३ ग्रिन्डले एण्ड को० लि०—कलकत्ता

४ इण्डियल इण्डस्ट्रियल बैंक लि०—कलकत्ता

५ लक्ष्मी इण्डस्ट्रियल बैंक लि० – कलकत्ता

६ पंजाब नेशनल बैंक लि०—कलकत्ता

७ चिटागांग बैंक लि०—कलकत्ता

बैंकर्स

मेसर्स अगरचंद जेठमल सेठिया

इस फर्मके मालिक मूल निवासी बीकानेरके हैं। आप ओसवाल समाजके श्वेताम्बर स्थानक वासी सज्जन हैं। इस परिवारका विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित इस ग्रन्थके प्रथम भागमें दे चुके हैं। यह परिवार भारतके उन इने गिने परिवारोंमें है, जिन्होंने जाति और धर्मकी सेवामे अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू जेठमलजी सेठिया हैं। आप सेठ भैरोंदानजी सेठिया

के पुत्र हैं। एवं अपने चाचा सेठ अगरचंदजीके यहां दत्तक आये हैं। इस फर्मपर पहिले अगरचंद भैरोंदानके नामसे व्यापार होता था। संवत् १९७७।७८ में दोनों भाइयोंका सामा अलग२ हो गया, तबसे उपरोक्त नामसे व्यवसाय होता है। इसके व्यापारको विशेष तरक्की बाबू अगरचंदजी और भैरोंदानजी दोनों भाइयोंके हाथोंसे प्राप्त हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मका कलकत्तेका पता ९७ क्लाइव स्ट्रीट है। यहां बैंकिंग और बिल्डिंगके किरायेका काम होता है तारका पता Sethia है।

मेसर्स करनीदान रावतमल

यह फर्म संवत् १९८२ से नैदर लैण्डस् इण्डिया कमर्शियल बैंककी ग्यारण्टेड ब्रोकर है। इसका ऑफिस १४६ हरीसन रोडमें है। इसका विशेष परिचय जूट बेलर्समें दिया गया है।

मेसर्स कन्हैयालाल डागा

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी समाजके बीकानेर निवासी सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस दुकानका पता ४०२ अपरचितपुर रोडमें है। यहां प्रधानतया बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका व्यापार होता है।

मेसर्स कल्लूबाबू लालचंद

इस फर्मका हेड आफिस पटना सिटीमें हैं। स्वर्गीय बाबू जयकृष्णजीके पूर्व इस फर्म पर जोरोंसे बैङ्किग व्यापार होता था। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू विनयकृष्णजी हैं। आपकी कलकत्ता दुकान ४५ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां बैङ्किग और किरायेका काम होता है। पटनेमें यह फर्म बहुत बड़ी जमीदार और सम्पत्ति शाली मानी जाती है।

मेसर्स गणेशदास दीवानबहादुर केशरीसिंह

इस फर्मके व्यापारका विशेष परिचय इस ग्रंथके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ठ १७२ मे चित्रों सहित दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर केसरीसिंह जी हैं। यह कोटा (राजपूताना) की अच्छी सम्पत्तिशाली फर्म है। भारतके विभिन्न स्थानोंमें इस फर्मकी २४ ब्रांचेज है। कई देशी स्टेट और ब्रिटिश छावनियोंकी यह फर्म ट्रेझरर है। इस फर्मकी कलकत्ता दुकानका पता १४२ कॉटन स्ट्रीटमें है। यहां हुण्डी चिट्ठी और आढ़तका काम होता है। तारका पता Modesty है।

मेसर्स गोपालदास वल्लभदास

इस फर्मका हेड ओफिस जब्बलपुरमें। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागके बम्बई विभागमें पृष्ट ४१ में दिया गया है। इस फर्ममें राजा गोकुलदासजी बहुत ख्याति प्राप्त महानुभाव हो गये हैं। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठासम्पन्न माना जाता है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू जमनादासजी मालपाणी एम० एल० ए० हैं। आपकी सी० पी० में बहुत जमीदारी है। तथा बम्बई, भोपाल, मिर्जापुर आदि प्रधान प्रधान स्थानोंमें फर्मकी १२ शाखाएं हैं। इस फर्मका कलकत्ता ब्रांचका पता ७० बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। यहां बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स चैनरूप सम्पतराय दूगड़

इस फर्मके मालिक सरदार शहर (बीकानेर स्टेट) के निवासी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म बीकानेर स्टेटकी प्रसिद्ध धनिक फर्मोंमें है। आपकी कलकत्ता दुकान आर्मोनियन स्ट्रीटमें हैं। यहां बैङ्किग व्यापार होता है।

मेसर्स जवाहरमल गंभीरमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय कई चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ट ११ में दिया गया है। राजपूताना आदिके भिन्न २ स्थानोंपर इस फर्मकी २० ब्रांचेज हैं। धौलपुर, भरतपुर एवं करोलीरियासतकी यह फर्म ट्रेजरर है। इसके वर्तमान मालिक रायबहादुर सेठ टीकम चन्दजी सोनी और आपके पुत्र कुंवर भागचन्दजी सोनी हैं। आपकी कलकत्ता दुकानका पता ३०।२ क्लाइव स्ट्रीट है। इस फर्मपर बैंकिंग, आढ़त, केरोगेटेड शीटस, पीस गुड्स और जावाशुगरका व्यापार होता है। तारकापता Met allipue

मेसर्स ताराचंद घनश्यामदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ केशवदासजी और इनके पुत्र बाबू श्रीनिवासजी और बाबू बालकृष्णजी पोद्दार तथा स्वर्गीय राधाकृष्णजीके पुत्र बाबू रघुनाथप्रसादजी, बाबू जानकीप्रसादजी, बाबू लक्ष्मणप्रसादजी और बाबू हनुमानप्रसादजी पोद्दार हैं। आपके कुटुम्बका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागके बम्बईमें पृष्ट ४८ में दिया गया है।

यह फर्म व्यापारीक समाजमें अच्छी मातवर समझी जाती है। बर्मा ओइल कम्पनीका

तेल सप्लाई करनेके लिये भारतभरकी यह फर्म सोल ऐजेण्ट है। भारतकी सभी बड़ी २ रेल्वे स्टेशनोंपर इस फर्मकी शाखाएं और एजंसियां है। सब स्थानोंपर तेल डिस्ट्रीब्यूट करनेके लिये ४ प्रधान फर्म कलकत्ता, बम्बई, मद्रास तथा करांचीमें खुली हैं। कलकत्ता फर्मका पता १८ मल्लिक स्ट्रीट में है। यहां बैङ्किग और तेलकी एजंसीका व्यवसाय होता है। तारका पता PODDAR है।

मेसर्स ताराचंद मघराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी हैं। इस फर्मका स्थापना हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके मालिक ओसवाल वैश्य जातिके रतनगढ़ निवासी हैं। इनका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पोर्शनमें दिया गया है।

कलकत्ता—मेसर्स ताराचंद मेघराज—४ नरायण बाबू लेन—यहां बैङ्किग तथा हुण्डी चिट्ठीका काम होता है।

मेसर्स तेजपाल ब्रह्मादत्त

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बिसाऊ (शेखावाटी) है। देशसे आकार यह कुटुम्ब बहुत वर्षोंसे मिर्जापुरमें ही निवास करने लगा है। सेठ तेजपालजीके पुत्र बाबू जमनादासजी मिर्जापुर आये थे। एवं जमनादासजीके पुत्र बाबू ब्रह्मादत्तजीने करीब ४० वर्षों पूर्व इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमे किया था आरम्भमें आपने शेयर, गवर्नमेंट पेपर्स एवं बैङ्किग व्यापार चालू किया, आपके हाथोंसे ही इस फर्मके व्यवसायकी उन्नति हुई। आपने अपनी फर्मकी स्थाई सम्पत्तिमें भी अच्छी वृद्धि की।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू भगवानदासजी बजाज हैं। आप सेठ ब्रह्मादत्तजीके यहां दत्तक आये हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बजाज सज्जन हैं। ऋषीकेशमें आपकी एक धर्मशाला बनी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल ब्रह्मादत्त ६८ बड़तल्ला, T. No 1849 B. B.—यहा बैङ्किग एवं आढ़तका काम होता है।

मेसर्स दिलसुखराय सागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सागरमलजी राजगढ़िया हैं। आप भाद्रा (बीकानेर स्टेट)

स्व० ब्रह्मादत्तजी बजाज (तेजपाल ब्रह्मादत्त)

स्व० दिलसुख रायजी राजगढ़िया (दिलसुखराय सागर

के निवासो अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब २५ वर्ष पूर्व स्वर्गीय दिलसुखरायजी राजगढ़ियाके हाथोंसे हुआ था। इस र्मकी साम्पत्तिक वृद्धि आप हीके हाथोंसे हुई। आरंभमें आप मामूली चलानीका काम करते थे। आपका स्वर्गवास सन् १६२८ ई०में हुआ।

बाबू दिलसुख रायजीके पुत्र बाबू सांगरमलजी राजगढ़िया हैं। आपकी ओरसे भाद्रामें धर्मशाला, मन्दिर आदि बने हैं। आप यहांकी मारवाड़ी सभा, सरस्वती विद्यालय, औषधालय पिंजरापोल आदि संस्थाओंमें सहयोग देते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स दिलसुखराय सागरमल राजगढ़िया—मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,टेलीफोन नं०237 B.B. यहां बेङ्किग व्यापर होता है।

मेसर्स देवकरणदास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० मोतीलालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके नवलगढ़ निवासी हैं। आपकी फर्मका चित्र सहित पूरा विवरण इस ग्रन्थके प्रथम भागके बम्बई-विभागमें दिया गया है। नीचे लिखा कारबार होता है—

कलकत्ता—मेसर्स देवकरणदास रामकुमार १७३ काटन स्ट्रीट—यहा बंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा कपड़ेके इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स प्राणकृष्ण ला एण्ड को०

इस प्रतिष्ठित फर्मके संस्थापक बाबू प्राणकृष्ण ला थे। आप स्वभावसे ही व्यवसाय कुशल थे। आपके यहां अफीम, नमक आदि कितने ही पदार्थोंका व्यवसाय होता था। यद्यपि आप अपने समयके अग्रगण्य व्यवसायी न थे फिर भी आपने उस समय एक ऐसी आधारशिला रक्खा कि जिसपर आज महाजनी, व्यापार वाणिज्य तथा जमीदारी आदिके विस्तृत कारबारके भव्य भवनका निर्माण किया जाना सहज हो सका है। बाबू प्राणकृष्णला के तीन पुत्र थे जिनमें सबसे बड़े महाराज दुर्गाचरण ला थे। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्तकर आपने १७ वर्षकी आयुमे व्यापारिक क्षेत्रमें प्रवेश किया और अपने पिताकी देख रेखमें काम करने लगे। आप बड़े ही कुशल और अनुभवी व्यापारी थे। आपको जे० पी० और आनरेरी प्रेसीडेन्सी मैजिस्ट्रेटके पदपर सरकारने नियुक्त किया। १५ वर्ष तक आप कलकत्ता पोर्टके कमिश्नर रहे। आप कलकत्ताके शरीफ और प्रान्तीय

कौन्सिलके सदस्य रहे। सन् १८८२ ई० और सन् १८८६ ई० में इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौन्सिल के सदस्य रहे। १८८४ में आप C. I. E. तथा सन् १८८७ में राजाकी उपाधिसे सम्मानित किये गये और सन् १८९१ आपको महाराजकी पदवी मिली। आप सन् १८९४ ई० में व्यापारसे अलग हो गये। आप सन् १९०४ ई० में स्वर्गवासी हुए।

महाराज दुर्गाचरण ला सी० आई० ई० के द्वितीय पुत्र राजा ऋषीकेश ला० सी० आई० ई० है। १९ वर्षकी आयुमे आपके पिताजीने आपको कालेजसे अलगकर स्थानीय मेसर्स केली एण्ड को० में रखदिया। आपने वहाँ व्यापारकी शिक्षा प्राप्त की। आपने अपनी फर्म का व्यापार अच्छी योग्यतासे चलाया और जमीदारीका प्रबन्ध भी किया। आप नगरकी सभी सार्वजनिक संस्थाओंमें हाथ रखते है। आप कलकत्ता कार्पोरेशन, पोर्ट ट्रस्ट, कलकत्ता इम्प्रूवमेन्ट ट्रस्ट, २४ परगना जिला बोर्ड आदिके सदस्य और समय २ पर प्रमुख भी रहे हैं। आप कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। आप लोकल वोर्ड आफ इम्पीरियल बैंक आफ इण्डियाके वायस चेयरमेन, इम्पीरियल बैंक आफ इण्डियाके गवर्नर, नेशनल चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ताके प्रेसिडेन्ट, हैं। इसी प्रकार चाइना म्यूचुअल इन्सुरेन्स कम्पनी लि०, नार्दर्न असुरेन्स कम्पनी लि०, सारा सिराजगंज रेलवे, तथा बारासंट बसीरहाट लाइट रेलवे आदिके आप डायरेक्टर हैं। ई० आई० आर और ई० बी० आर० कम्पनियोंके ऐडवाइसरी बोर्डके मेम्बर, विक्टोरिया मेमोरियल और इण्डियन म्यूजियमके मेम्बर तथा ट्रस्टी भी हैं। आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा और महाजनी मान बहुत ऊंचा है। आपके दो पुत्र हैं कुमार सुरेन्द्रनाथ ला और कुमार नरेन्द्रनाथ ला हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स प्राणकृष्ण ला एण्ड को० नं० ९६ ऐमहर्स्ट स्ट्रीट—यहा महाजनी और जमीदारीका बहुत बड़ा काम होता है।

मेसर्स प्रेमचंद जानकीनाथ सीतानाथ राय

इस फर्मके मालिकोंका बहुत ही प्राचीन इतिहास है। इनके यहा जमीदारी और महाजनीका काम बहुत पुराने समयसे होता आ रहा है। इस परिवारकी प्रतिष्ठा अकेले कलकत्ते नगरमें ही नहीं है वरन पूर्वीय और पश्चिमीय बंगाल प्रान्त भरमे समान रूपसे है। यह परिवार पूर्वीय बंगालमे हवाबलके कुण्डूबाबू और पश्चिमीय बंगालमे हटखोलाके बाबूके नामसे सुख्यात है। यह परिवार जितना सम्पत्तिशाली और विस्तृत महाजनी व्यवसाय वाला माना जाता है उतनी ही उदारता इसने अपने मुक्तहस्त दान द्वारा धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्योंके प्रति दिखाई है।

इस परिवारमें तत्कालीन प्रतिभाशाली व्यक्ति राय बहादुर स्व० सीतानाथजी राय हो गये हैं। आप सदैव सार्वजनिक कार्यों में बराबर भाग लेते रहे और इम्पीरियल तथा प्राविन्सियल व्यवस्थापिका परिषदोंके आप १२ वर्षतक सदस्य रहे। आपके ही कारण आज भाग्यकुलके राय परिवारका नाम इतना लोकप्रिय हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० राय बहादुर सीतानाथ रायके भाई राजा जानकीनाथ राय तथा राजा साहब के पुत्र कुमार नरेन्द्रनाथ राय और कुमार रमेन्द्रनाथ राय तथा स्व० सीतानाथ जीके पुत्र बाबू यदुनाथ राय और बाबू प्रियनाथ राय हैं।

इस फर्मका प्रधान व्यवसाय बैंकिङ्ग है। यह फर्म जहाजी कम्पनी 'ईस्ट बेंगाल रिवर स्टीम सर्विस' और इस कम्पनीके काशीपुरवाले इंजिनियरिङ्ग डाककी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इस फर्मने हवड़ा जिलेके चिंगाइल नामक स्थानपर 'प्रेमचंद जूट मिल्स' के नामसे एक जूट मिल अभी हालमेंही स्थापित किया है इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स प्रेमचन्द जानकीनाथ सीतानाथ राय--१०२,शोभा बाजार स्ट्रीट कलकत्ता--यहां फर्मके सुविस्तृत व्यवसायका हेड आफिस है। यहा महाजनी और जमीदारीका बहुत बड़ा काम होता है

मेसर्स बंशीलाल अबीरचन्द डागा

इस फर्मका हेड आफिस कामठी (नागपुर) है। इसके संचालक माहेश्वरी समाजके डागा सज्जन हैं। भारतवर्षकी बैंकिंग-बिजिनेस करने वाली पुरानी फर्मोंमें इसकी गिनती है। बम्बईके बैंकिंग व्यवसायके आरंभिक इतिहासमें पाश्चात्य इतिहासकारोंके आधार पर लिखित एक पुस्तकमें इस फर्मका उल्लेख है। उस ग्रन्थमें लेखकने लिखा है। कि --"गदरके समय गवर्नमेंटको आर्थिक सहायता प्रदान करने वाली पुरानी महाजनी फर्मोंमें इस फर्मका नाम उल्लेखनीय है।"

इस फर्मके हेड आफिसके अंडरमें कई कोयले और मैंगनीज़की खाने हैं। हिंगनघाटमें इस फर्मका एक प्राइवेट काटन मिल है। भारतके ३० बड़े २ शहरोंमें इस फर्मकी शाखाएं स्थापित हैं। करीब ३० काटन जिनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां इस फर्मकी ओरसे चल रही है। यह फर्म काटनका अच्छा बिजिनेस करती है। इसका पूरा विवरण इस ग्रन्थके प्रथम भागमें दिया गया है।

इस फर्मकी कलकत्ता शाखाका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स बंशीलाल अबीरचन्द रायबहादुर ४०१ अपरचितपुर रोड—इस फर्म पर प्रधान रुपसे सराफीका काम होता है। इटालियन सोसाईटी फर्मके कपड़े और संढ़ी विभागकी यह फर्म बेनियन है।

कलकत्ता—मेसर्स कस्तूरचंद हनुमान वक्स—२६ अमरतल्ला स्ट्रीट—इस फर्म पर किरानेका काम होता है।

इस फर्मके मुनीम बालमुकुन्दजी डागा हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। मारवाड़ी एसोसिएशनके आप वाइस प्रेसिडेन्ट हैं।

मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल

यह फर्म सन् १९१० ई०से ईस्टर्न बैंककी बेनियन है। और सन् १९१६ ई०से सेंट्रल बैंककी हेड आफिस और बड़ा बाजार ब्राचकी ग्यारंटेड केशियर एवं बेनियन है। इसका आफीस ४६ स्ट्राड रोडमें है, विशेष परिचय इसी भागमें ग्रेन मर्चेंट्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स बालकिशनदास रामकिशनदास

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं। आपकी फर्म पर प्रधानतया बैंकिंग आढ़त, जूट आदिका व्यापार होता है। आपका आफिस बड़तल्ला स्ट्रीटमें है।

मेसर्स बलदेवदास जुगुलकिशोर बिड़ला

इस फर्मका मालिक प्रसिद्ध बिड़ला परिवार है। आपकी उपरोक्त नामसे गद्दी १८ मल्लिक स्ट्रीट कालीगोदाममें हैं। यहां बैंकिंग व्यापार होता है। विस्तृत परिचय मिल ओनर्सके पोर्शनमें दिया गया है।

मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द सुराणा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास चुरू (बीकानेर स्टेट) है। आप ओसवाल जैन तेरापंथी समाजके सुराना सज्जन हैं। करीब ५०।५५ वर्ष पूर्व इस फर्मका स्थापन श्री सेठ मन्नालालजी सुरानाके हाथोंसे हुआ है। स्वर्गीय सेठ सुखरामदासजीके पुत्र बाबू हरिचन्ददासजीके ४ पुत्र सेठ उगरचन्दजी, सेठ रतीरामजी, सेठ मन्नालालजी एवं सेठ शोभाचन्दजी हुए। जिनमेंसे सेठ उगरचंदजी के पुत्र श्रीधनराजजीका शरीरान्त थोड़ी ही अवस्थामें हो गया था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सिरे कुंवरिजीने तथा आपके पुत्र श्री सोहनलालजीने संसारसे विरक्त होकर संवत १९६८ में जैनाचार्य पंडितवर कालूरामजी महाराजके पास जैन तेरापंथी समाजके सन्यासी (जैन-साधु) की दीक्षा ग्रहणकी। श्री सोहनलालजी, उच्चकोटिके विद्वान, संस्कृत काव्यके ज्ञाता, जैनशास्त्रोंमें पारंगत एवं बालब्रह्मचारी

बाबू मन्नालालजी सुराणा (मन्नालाल शोभाचन्द)

बाबू तिलोकचन्दजी सुराणा (मन्नालाल शोभाचन्द)

कुंवर हनुतमलजी सुराणा (मन्नालाल शोभाचन्द)

हैं। सेठ रतीरामजीके पुत्र बाबू सुगनचन्दजी, खूबचन्दजी तथा हजारीमलजी तीनों व्यक्ति सुगनचंद हजारीमल तथा हजारीमल माणिकचन्दके नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। इस फर्मका सम्बन्ध सेठ मन्नालालजी तथा सेठ शोभाचन्दजीके कुटुम्बसे है। श्री सेठ शोभाचन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९४५ मे करीब २५ वर्षकी अवस्थामें ही हो गया था। आप बड़े सत्य भाषी शांतिप्रिय सज्जन थे। आपकी धर्म पत्नीने भी दीक्षा ग्रहण की।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिकोंमें श्री सेठ मन्नालालजी सुराना तथा स्वर्गीय सेठ शोभाचन्द जी सुरानाके पुत्र बाबू तिलोकचन्दजी सुराना हैं। आपका कुटुम्ब ओसवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

बाबू मन्नालालजी सुराणा—आपने ही इस फर्मको स्थापित कर व्यवसायको तरक्की दी। आरंभमें आपने कपड़ेकी दलाली की तथा पश्चात् अपना निजका कपड़ेका व्यापार शुरू किया, एवं इस व्यापारमे अच्छी सम्पत्ति पैदा की। इधर संवत् १९७८ से आपने इस व्यापारको बंद कर दिया है।

बाबू तिलोकचंदजी सुराणा - आपके द्वारा चूरू और कलकत्ताकी स्थाई सम्पत्तिमें विशेष वृद्धि हुई। यहाकी मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्सके उत्थानमें आपका अच्छा हाथ रहा है। इस समय आप उसके वाइस प्रेसिडेंट है। इसके अतिरिक्त विशुद्धानंद विद्यालय, अस्पताल, मारवाड़ी एसोसिएशन, रिलीफसोसाइटी, पिंजरापोल आदि संस्थाओंमें अच्छा भाग लेते है। इसके अतिरिक्त ओसवाल सभाके प्रसीडेंट है। आपके ४ पुत्र हैं जिनमें श्री हनूतमलजी और हिम्मतमलजी ओसवाल नवयुवक समितिके उत्साही कार्यकर्ता है। आपलोग व्यवसायमें भी भाग लेते हैं। शेष वच्छराजजी और हंसराजजी पढ़ते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मन्नालाल शोभाचन्द १५६ हरिसन रोड T. NO 145 B. B.—इस फर्म पर बेकिंग और बिल्डिंगसके किरायेका कार्य होता है। कलकत्तेमें कई बड़ी बड़ी आपकी बिल्डिंगस हैं।

मेसर्स मगनीराम रामकुवार बांगड़

इस फर्मके व्यवसायका विशेष परिचय इस ग्रंथके प्रथम भागमें राजपूताना विभागमे पृष्ठ ९० में दिया गया है। इसके कारबारको बाबू मगनीरामजी और बाबू रामकुंमारजी बागड़ने बहुत बढ़ाया। कलकत्तेमें लाखों रुपया प्रतिवर्ष आपके यहा बिल्डिंगसके किरायेकी आमद है। आपकी फर्मपर

वेङ्किंग शेअरका व्यापार और स्थाई सम्पत्ति किरायेका काम होता है। इस फर्मका हेड आफिस ६५ बासतल्ला स्ट्रीटमें है।

मेसर्स महलीराम रामजीदास जटिया

इस फर्मके मालिक सर ओंकारमलजी जटिया के० टी० और आपके पुत्र बाबू कन्हैया लालजी जटिया, बाबू गजानंदजी जटिया और बाबू चम्पालालजी जटिया हैं। आपका कुटुम्ब मारवाड़ी समाजमें ऊंचे दर्जेका प्रतिष्ठा सम्पन्न, शिक्षित एवं व्यवसायमें आगे बढ़ा हुआ माना जाता है। आप सब सज्जन कलकत्तेकी बीसियों बडी बड़ी ज्वाइंट स्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त मशहूर विदेशी फर्म मेसस एन्ड्रू यूल कम्पनीके आप वेनियन हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके समस्त व्यापारिक समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझी जाती है। यह फर्मकई ऑइल मिल और फ्लावर मिलकी मैनेजिंग एजंट है। सर औंकारमलजी के० टी० कलकत्तेके नामी गरामी व्यापारियोंमेंसे एक हैं। आपकी ऑफिस रुपचन्दराय स्ट्रीटमें है।

मेसर्स मूलचन्दजी, हरकचन्दजी, राय विशनसिंह बहादुर दुधेरिया अजीमगजवाले

यह राजवंश मुर्शिदाबाद जिलेके अजीमगंजवाले दुधोरिया राजवंशके नामसे प्रसिद्ध है। अजीमगंजका यह राजपरिवार बहुत ही प्राचीन है। मशीह सन् ई०से १३५ और ११० वर्ष पूर्व अजमेरमें राजा चवन राज्य करते थे उन्हींसे इस राज परिवारका आरम्भ होता है। सन् १६५ ई० में दुधेर नामके राजाने जैन सिद्धान्त स्वीकार कर लिये। तभीसे इनके राज परिवारका नाम दुधोरिया राजवंश पड़ गया।

इसी राजपरिवारके कुछ महानुभाव सन् १७७४ ई० में अजमेरसे अजीमगंज आये और यहीं रहने भी लगे। श्रीहरजीमल दुधोरियाने अपने दो पुत्रोंको साथ ले यहीं कपड़ेका व्यवसाय आरम्भ किया। आपके बाद बाबू हरखचंदजी दुधोरियाने व्यवसायको बहुत ही बढ़ाया। आप अपने समयके प्रथम श्रेणीके व्यवसायी गिने जाते थे। आपने कलकत्ता, सिराजगंज, अजीमगंज, जगनीपुर तथा मैमनसिंहमें दुकानें खोलीं। इस प्रकार व्यवसाय कौशलका चमत्कार दिखा आपने सन् १८६२ ई० में लौकिक लीला समाप्त की। आपके पुत्र रायबहादुर बुद्धसिंहजी और रायबहादुर विसनचंदजीने व्यवसायको उसी प्रकार बढ़ाया और अपनी पूंजीको जमीदारी खरीदनेमें भी लगाया। आपकी जमीदारी मैमनसिंह, मुर्शिदाबाद, वीरभूम, फरीदपुर, नदिया, पुरनिया तथा राजशाही जिलेमें बहुत दूरतक हो
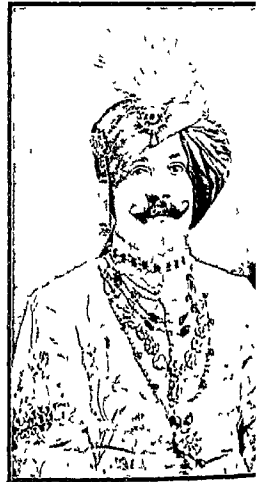
स्व० राय विशनचन्दजी दुधोरिया बहादुर

राजा विजयसिंहजी दुधोरिया ऑफ अजीमगंज

बाबू पूर्णचन्दजी नाहटा (मांजीराम इन्द्रचन्द)

बाबू ज्ञानचन्दजी नाहटा (मांजीराम इन्द्रचन्द)

गयी है इसी बीच सन् १८७७ ई० में दोनों भाई अलग हो गये और अपने अपने नामसे काम करने लगे।

वर्तमान राजा सा० के पिता रायबहादुर बिशनचंदजीका देहावसान सन् १८९४ ई० में हुआ। उस समय आपके पुत्ररत्न बाबू विजयसिंहजीकी आयु केवल १४ वर्षकी थी। स्टेटका सारा प्रबन्ध भार आपके चचा रायबहादुर बाबू बुद्धसिंहजीके हाथमें रहा। सन् १९०० ई० में आपने अपनी स्टेटका सारा भार अपने हाथमें लिया। आप आरम्भसे ही होनहार थे। आपने अपने कार्यों सेखूब यश सम्पादित किया। सरकारने आपको सन् १९०३ ई० में अजीमगंज म्युनिसिपेलिटीका म्युनिसिपल कमिश्नर मनोनीत किया। सन् १९०४ ई० की अ०भा० जैन कान्फरेन्सके बड़ौदावाले अधिवेशनमें आपके चचा राय बहादुर बुद्धसिंहजी प्रमुख और राजा सा० उप-सभापति रहे। सन् १९०६ ई०में आप अजीमगंज म्युनिसिपैलिटीके चेयरमैन निर्वाचित हुए। सन् १९०८ ई०में सरकारने आपको राजाकी उपाधिसे सम्मानित किया। आप जितने कार्यदक्ष है उतने ही दानवीर भी है। आपका झुकाव शिक्षा प्रसारकी ओर अधिक रूपसे रहता है। सन् १९१५ ई० में आप कलकत्ताके ब्रिटिश इण्डिया ऐसोसियेशनके उप-सभापति रह चुके है। आप मुर्शिदाबाद जिलाबोर्डके सदस्य, इम्पीरियल लीगकी कार्यकारिणीके सभासद, किंग एडवर्ड मेमोरियल फण्ड कमेटीके मेम्बर रहे है। इसके अतिरिक्त आप कलकत्तेके मशहूर कलकत्ता क्लबके, लेण्डहोल्डर्स ऐसोसियेशन कलकत्ताके, जैन ऐसोसियेशन आफ इण्डिया बम्बईके, आनन्दजी कल्याणजीकी पेढ़ीके, तीर्थरक्षा कमेटीके और कलकत्ता रायल टर्फ क्लबके मेम्बर है। श्रीसम्मेद शिखरके झगड़ेके लिए पटनेमें जो कान्फ्रेन्स हुई थी उसके आप प्रेसीडेन्ट निर्वाचित हुए थे। सार्वजनिक कार्योंमें इस प्रकार लगे रहनेपर भी आप अपने व्यवसायका कार्य स्वयं देखते हैं।

दुधोरिया परिवार अपनी दानवीरताके लिये सदासे प्रसिद्ध चला आ रहा है। इसके दानसे बनी हुई धर्मशालायें, औषधालय, अस्पताल तथा स्कूल आदि हैं। स्वयं राजा सा० ने जबसे कार्य भार संभाला तबसे दोनों हाथ खोलकर लाखों रुपयेका दान किया। आपने १ लाख रुपये लेडी मिन्टो फेटीके नर्सिङ्ग एसोसियेशनको, २० हजार जियागंज सप्तम एडवर्ड कारोनेशन इन्स्टीट्यूटको, ४ हजार इम्पीरियल वार रिलीफ फण्डको और ४ हजार कृष्णनगर कालेजको दान दिये हैं। इसके अतिरिक्त कष्ट प्रपीड़ित लोगोंकी सेवा और सहायता आप सदैव करते रहते हैं। सन् १९१९-२० में मैमनसिंह, ढाका, फरीदपुर इत्यादि स्थानोंमें बहुत जोरका तूफान आया था। उसमे लोग घरबार विहीन होकर महान दुर्दशा ग्रस्त हो गये थे। ऐसे कठिन समयमे मैमनसिंह जिलेमें आपने लाखों मन चावल बाहरसे मंगाकर गरीब जनताको बहुत ही सस्ते दामोंमे बेचा था। इस कठिन

समयमें सहायता पहुंचानेके उपलक्ष्में गवर्नमेण्टकी ओरसे आपको बहुत अच्छा सार्टीफीकिट और ऑनर मिला था।

इण्डियन कमीशनमें बङ्गालसे आपने जातीय सुधारके लिए पुस्तकाकार छपा हुआ मेमोरण्डम दिया था। साइमन कमीशनके रिसेप्शनमें आपका नाम सबसे अधिक उल्लेखनीय है। इस रिसेप्शनसे प्रसन्न होकर साइमन कमीशनके प्रेसीडेण्टने कमेटीकी तरफसे आपको धन्यवाद सूचक पत्र भी दिया था।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

अजीमगंज—मेसर्स मूलचन्द हरखचन्द राय विशनचन्द बहादुर—इस फर्मपर बैंकिंग और लैण्ड लार्डसका काम होता है। यहाके आप बहुत बड़े लैण्डलार्ड हैं।

कलकत्ता—मेसर्स मूलचन्द हरकचन्द, राय विशनचन्द बहादुर ७८ क्लाइव स्ट्रीट T. A Dudhoria—Phone 843 Cal.—यहांपर बैंकिंग बिजीनेस और लैण्डलार्डस का काम होता है।

मैमनसिंह—मेसर्स नेमचन्द हरकचन्द राय विशनचन्द बहादुर—यहांपर बैंकिंग और जमीदारीका बिजीनेस होता है।

जङ्गीपुर (मुर्शिदाबाद)—बैंकिंग और जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स मोजीराम इन्द्रचन्द नाहटा

इस प्रतिष्ठित फर्मके संचालकोंका मूल निवासस्थान बालूचर-मुर्शिदाबाद है। आप ओसवाल समाजके नाहटा सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व बालूचरमें सेठ नथमलजीके द्वारा हुआ था। आपके तीन पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः पंजीरामजी, मोजीरामजी एवं फर्मचंदजी थे। वर्तमान फर्मका सम्बन्ध सेठ मोजीरामजीके कुटुम्बसे है।

सेठ मौजीरामजीके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः से० गुलाबचन्दजी, सेठ गोकुलचन्दजी एवम सेठ नेमचन्दजी है। आप तीनों सज्जनोंमेसे इस फर्मके कारबारको विशेष रूपसे गुलाबचन्दजीने बढ़ाया। आप व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन थे। आपके समयमें इस फर्मकी कलकत्ता, दिनाजपुर, रंगपुर आदि स्थानोंमें शाखाएं स्थापित हुईं। आपके एक पुत्र बाबू इन्द्रचन्दजी हुए।

बाबू इन्द्रचंदजी बड़े नामी व्यक्ति हो गये है। आपके समयमें भी इस फर्मके व्यापारकी बहुत तरक्की हुई। आप ओसवाल समाजमे नवीन विचारोंके पहले ही सज्जन थे। ओसवाल समाजमें
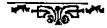
आपनेही पहले पहल इंगलैण्डकी यात्रा की। आपके साथ राय बुधसिंहजी बहादुर दुधौरिया अजीमगंज-वालोंके पुत्र बा० इन्द्रचन्दजी दुधौरिया भी विलायत गये थे। संवत् १९४६ में बिलायत यात्राकर वापस आनेपर एक बारगी ओसवाल समाजमें हलचल मच गई। परिणाम यह हुआ कि आप समाजसे अलग कर दिये गये। फिर भी कुछ समझदार व्यक्तियोंने आपको पुनः समाजमें ले लिया। मगर कुछ विरोधी भी थे जिन्होंने कलकत्तेमें इस बातके विरुद्ध आन्दोलन किया। आपको फिर समाज से अलग होना पड़ा। इस समयके पश्चात् भी भिन्न २ रूपमें यह मामला चलताही रहा। संवत् १९८० से इसका फिर ज़ोर बढ़ा और समाजमें दल बंदियां होने लगी। इसके परिणाम स्वरुप फिर एक बार ओसवाल समाजमें क्रांति पैदा हो गई। इस बार संवत् १९८५ में फिर लोगोंने आप दोनोंके कुटुम्बको अपनेमें मिलाना चाहा। राय बुधसिंहजीके पुत्र बा० इन्द्रचन्दजी दुधौरियाके बंशज जातिमें मिला लिये गये मगर आपके बंशजोंको फिर भी अलग ही रहना पड़ा। आजकल इस फर्मके मालिक विलायत यात्रा ही नहीं करते बल्कि वहीं वर्षका अधिकाश समय व्यतीत करने लग गये हैं। बाबू इन्द्रचन्दजीक संवत् १९७० मे स्वर्गवास हो गया।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक बाबू इन्द्रचन्दजीके पुत्र बाबू पूरणचन्दजी एवम बाबू ज्ञान-चन्दजी है। आपके बड़े भ्राता श्रीमहताबचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। आप शिक्षित महानु-भाव है। आपका कुटुम्ब मुर्शिदाबादमें ख्याति प्राप्त कुटुम्ब है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता मेसर्स मौजीराम इन्द्रचन्द ४७ खंगरापट्टी स्ट्रीट T No 1105 B B—यहां जमीदारी बैंकिंग तथा जूटका व्यापार होता है।

रंगपुर—मेसर्स गुलाबचन्द गोकुलचन्द इन्द्रचन्द नाहटा—यहा विशेषकर जमींदारी तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है।

दिनाजपुर—मेसर्स गुलाबचन्द नेमचन्द इन्द्रचन्द—यहा बैंकिंग एवम जमींदारीका काम होता है।

बालूचर—मेसर्स पंजीराम मोजीराम—यहा आपका मूल निवासस्थान है।

इस फर्मके मैनेजर बाबू पूरणचन्दजी सामसुखा है। और कलकत्ता शाखा पर श्रीयुत सुखलालजी पारख मुनीम और मुन्नीलालजी छाजेड़ केशियर है।

मेसर्स मालीराम रामनिरंजनदास

इस फर्मका हेड आफिस पटना सिटीमे हैं। इसकी कलकत्ता ब्रांचका पता ७१ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। यहा बेकिंग, गल्ला, जूट और आढ़तका व्यापार होता है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित पटनेमें दिया गया है।

मेसर्स रामकिशनदास चण्डीप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस भागलपुरमें है। वहां मेसर्स भूदरमल चंडीप्रसादके नामसे चित्रों सहित इस फर्मका विस्तृत परिचय दिया गया है। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस १३६ कॉटन स्ट्रीटमें है। यहा बैंकिंग और रेलवे मटीरियल्सका इम्पोर्ट होता है। तारका पता Dhandania है।

मेसर्स रामकिशनदास बागड़ी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप लोग माहेश्वरी समाजके बागड़ी सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें संवत् १९५५ में हुआ। इसके पूर्व इस फर्मका कोटा; इन्दौर, जौनपुर आदि स्थानोंपर व्यवसाय होता था। श्री सेठ रामकिशनदासजी के हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको अच्छी उन्नति प्राप्त हुई। आप बीकानेरमें बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हो गये है। आपका राज घरानेमें बड़ा सम्मान था। बीकानेरकी पोलीटिकल एजंसी के समय आप स्टेटके खजाञ्ची नियुक्त हुए थे। इसी प्रकार माहेश्वरी समाजमें भी आप बहुत ख्याति प्राप्त महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास संवत १९५७ में हुआ।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक सेठ रामकिशनदासजीके पुत्र श्री सेठ रामरतनदासजी बागड़ी, सेठ बृजरतनजी बागडी, तथा सेठ चांदरतनजी बागड़ी हैं। आप तीनो सज्जन माहेश्वरी समाजमे बहुत प्रतिष्ठित समझे जाते हैं। सेठ रामरतनदासजी बीकानेर स्टेट लेजिस्लेटिव असेम्बली के मेम्बर है। बाबू चांदरतनजी बागड़ीने अपनी पत्नी एवं पुत्रके स्मारकमें श्री भैरव रत्न मातृ पाठशाला नामक एक गर्ल स्कूल स्थापित किया है इसी प्रकारके कई सार्वजनिक कामोंमें यह कुटुम्ब हमेशा से भाग लेता रहा है। श्री सेठ रामरतनदासजीके पुत्र बाबू सोहनलालजी एवं सेठ बृजरतनजी के पुत्र बाबू सूर्यरतनजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

बीकानेर—मेसर्स रामकिशनदास रामरतनदास—यहां हेड आफिस है तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

कलकत्ता—रामकिशनदास बागडी—३२ क्रास स्ट्रीट T.A. Bagriramki बागरीरामकी—इस फर्मपर प्रधान व्यापार बेंकिंगका होता है, इसके अलावा चावल, गल्ला, गनी, हेसियन, चायका एक्सपोर्ट इम्पोर्ट, एवं कमीशन तथा व्यापारका काम होता है। इस फर्मको इसके प्रधान मुनीम बाबू शिवचंदजी बागड़ीने अच्छी तरक्कीपर पहुंचाया है। मालिकोंका आपपर अच्छा विश्वास है। आप संवत् १९५६ से इस फर्मपर काम करते हैं।

मंद्रास—रामकिशनदास चांदरतनदास यहां बैङ्किगका व्यापार होता है।

जौनपुर—रामरतनदास ब्रजरतनदास—यहां सोना चांदी एवं बैङ्किगका व्यापार होता है।

कोटा—राजरूप रामकिशनदास—यहां बैङ्किग, हुंडी, चिट्ठी तथा गल्ला,कपड़ा और अफीमका कारबार होता है।

बांदा—चांदरतनदास बागड़ी—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स सेवाराम गोकुलदास

इस फर्मका हेड आफिस जबलपुर में है। इसके व्यापारका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें पृष्ट १६१ में दिया गया है। इस फर्मके वर्तमान मालिक दीवान बहादुर जीवनदासजी एवं ऑनरेबल बाबू गोविन्ददासजी मालपाणी एम० एल० ए० है। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं अग्रगण्य है। सी० पी० के आप बहुत बड़े जमींदार हैं। आपकी कलकत्ता दुकानपर पहिले कपड़का बहुत बड़ा इम्पोर्ट व्यापार होता था, पर असहयोग आन्दोलन कालसे आपने इस व्यापारको बिलकुल छोड़ दिया है। आपकी फर्म २०१ हरीसन रोड पर है। यहां बैंकिंग और हुंडी चिट्ठीका कारवार होता है।

मेसर्स शीतलप्रसाद खड्गप्रसाद

इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी भागमें मिल मालिकोंमे फर्मके संचालकोंके चित्रों सहित दिया गया है। कलकत्तेकी बैङ्किग व्यापार करनेवाली फर्मोंमें इसका स्थान बहुत ऊंचा है। इसके मालिक ऑनरेबल राजा मोतीचन्द साहब सी०आई० ई० बनारस, बाबू गोकुलचन्द साहब, कुमार कृष्णकुमार साहब एम० ए० बी० एल० एवं ज्योतिर्भूषणजी है। आप लोगोंकी यू० पी० में बहुत बड़ी जमीदारी और कितने ही स्थानोंपर गद्दियां है। यह फर्म तीन चार मिलोंकी मेनेजिंग एजंट है। इसका बैङ्किग व्यापार बहुत बढ़ा चढ़ा है। इसके अलावा गल्लेके व्यापारकी ओरभी काफी लक्ष दिया गया है। फर्मका आफिस ३० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें है।

मेसर्स शिवरामदास रामनिरंजनदास

इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ बिहारीदासजीके पुत्र सेठ नाथूरामजी सीकर (शेखावाटी) में निवास करते थे। आप वहा अपने समयमें बहुत धनाढ्य एवं प्रतिष्ठित व्यवसायी माने जाते थे।

आपका प्रधान व्यवसाय महाजनीका था। आपका बनवाया हुआ गढ़के सामनेका त्रिहागी सागर नामक कुआं, छत्री तथा एक और दूसरा कुआँ अब भी मौजूद है। आपही के समयमें इस कुटुम्बका आगमन सीकरसे नवलगढ़में हुआ। तथा वर्तमानमें आपका कुटुम्ब नवलगढ़का निवासी कहा जाता है। सेठ नाथूरामजीकी चौथी पीढ़ीमें सेठ परसादीरामजी थे, आपने संवत् १९१५ में अपने पुत्र सेठ शिवरामदासजीको साथ लेकर व्यवसायके निमित्त पटनेकी यात्रा की। सेठ नाथूरामजीने पटनेमें आकर अपने पुत्र शिवरामदासजी एवं पौत्र मनसुखरायजीके नामसे शिवरामदास मनसुखराय नामक दुकान स्थापितकर कपड़े और अनाजका कारबार शुरू किया। इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ अतः संवत् १९१८ में आपने अपने पुत्र सेठ शिवरामदासजीको कलकत्ता भेजकर शिवरामदास मंगलचन्द फर्मका स्थापन करवाया। पटना वाली फर्मकी तरह यहां भी अनाज और कपड़ेका कारबार होता था। सेठ शिवरामदासजीने अपने व्यापारमें बहुत अधिक उन्नतिकी और आप कलकत्तेके बाजारमें अपने समयके लब्ध प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाने लगे। सेठ शिवरामदासजीके तीन पुत्र हुए जिनमेंसे सेठ मनसुखरायजी और सेठ मंगलचन्दजी स्वर्गवासी हो चुके हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामनिरंजनदासजी हैं। आपका जन्म संवत् १९२१ में हुआ। अपने छोटी वयसे ही अपने पिताजी द्वारा स्थापित पटनेकी कपड़ेकी दुकानका कार्य सम्हाला। एवं कलकत्ते आकर यहांका व्यवसाय बढ़ाया। आप ई० डी० सासुन, फारबेस केम्बल कम्पनी, कारउड कम्पनी, पेरी कम्पनी, आदि प्रतिष्ठित विदेशी फर्मोंके बेनियन नियुक्त हुए। संवत १९५७ मे आपने शॉवलेस कम्पनी के कपडे और मिट्टीके तेलकी मुतसद्दीगीरीका काम आरंभ किया। इस कार्यमे मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदासकी फर्म भी आपके साथ थी। आपने अपनी फर्म के नाममे मंगलचन्दके स्थानपर अपना निजका नाम बदल दिया, तथा वर्तमानमें यह फर्म इसी उपरोक्त नामसे व्यवसाय कर रही है।

सेठ रामनिरंजनदासजी पुराने विचारोंके वृद्ध सज्जन हैं। आप अग्रवाल गर्गगोत्रीय भुरारका सज्जन हैं। आपने नैमिषारण्य, एवं वृन्दावनमे विशाल धर्मशालाएं बनवाई, कई जगह कुएं बनवाये। बनारसमे जनाना और मरदाना आयुर्वेदिक दातव्य औषधालय, एवं पटनेमे संस्कृत पाठशाला स्थापित की, पटनेकी पाठशालामे शिक्षाके साथ २ छात्रोंको अन्न वस्त्रका भी प्रबंध है। आपने कुष्टाश्रम पुरीमे ४५ हजार रुपयोंकी रकम बिहार उडीसा सरकारको दी है। जिसके व्याजसे कुष्टियों-को निरामिश भोजन दिया जाता है। उडीसा अकालके समय आपने प्रायः १ सहस्त्र मनुष्योंको करीब ३ मासतक अन्नऔर वस्त्र दिये। इसके अतिरिक्त कलकत्तेके विशुद्धानंद सरस्वती अस्पतालमें २५ हजारका चंदा दिया एवं कलकत्ता पींजरापोलको १००० बीघा गोचरभूमि दान की हैं।
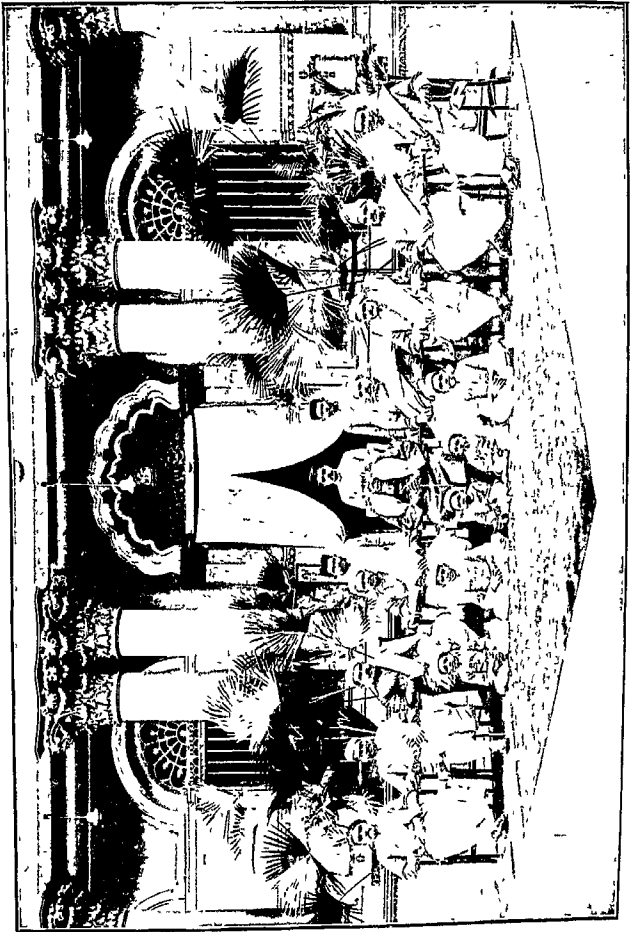
इस समय करीब १५ वर्षोंसे अपने व्यवसायका भार अपने पुत्रोंपर छोड़कर आप काशी वास करते हैं। वर्तमानमें आपके आठ पुत्र हैं जिनके नाम इस प्रकार हैं - बा० हीरालालजी नंदलालजी, राधेलालजी, लल्लूलालजी, मिश्रीलालजी, चीनीलालजी, छोटेलालजी तथा कृष्णलालजी हैं। आप सब सज्जन व्यवसायका कार्य बड़ी तत्परतासे संचालित करते हैं। आपकी फर्म कलकत्तेकी पुरानी एवं प्रतिष्ठित फर्मोंमें मानी जाती है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स शिवरामदास रामनिरंजनदास १३६ तुलापट्टी T. No. 253, 729 B. B.–यहां हेड ऑफिस है, तथा सराफी, गल्ला, तेल, जूटका व्यापार और कपड़ेके इम्पोर्टका काम होता है।

कलकत्ता—मुरारका पेन्ट एण्ड वार्निस वर्कस १३७ केनिङ्ग स्ट्रीट P. No. १००३ कलकत्ता और ८३ वारिकपुर —यहा पेंट और तेलका ऑफिस है। इसका कारखाना सैदपुरमें है।

कलकत्ता—पीताम्बर सरकार एण्ड कम्पनी ४७ वहुबाजार स्ट्रीट T. No. 1795 B. B.–ऑफिस और शोरूम है कारखाना डंगरामें है।

झरिया—शिवरामदास रामनिरंजनदास श्रीलक्ष्मीकॉलेरी—कोयलेकी खान है।

बनारस—अन्नपूर्णा ऑइल मिल बनारस छावनी—तेलकी मिल है।

बनारस—अन्नपूर्णा आयर्न फाउंडरी वर्कस मुहल्ला-नखास लोहेकी फैक्टरी है। और व्यापार होता है।

चांदूर (वगर)—मुरारका जीनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरी—काटन फेक्टरी है और रुईका व्यापार होता है।

— —

मेसर्स सदासुख गंभीरचन्द

इस फर्मका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेर पोर्शनमें पृष्ट १२८ में दिया गया है। इसका स्थापन संवत् १८९५ में बाबू सदासुखजीके हाथोंसे कलकत्तेमें हुआ। इसके वर्तमान मालिक बाबू कस्तूरचन्दजी कोठारी, बाबू दाऊदयालजी कोठारी और कुंवर भैरोंबक्सजी कोठारी हैं। कलकत्तेमें आप लोगोंकी बहुत बड़ी स्थाई सम्पति है। प्रसिद्ध सदासुखका कटरा आपका ही है। इसके अलावा इस फर्मकी बम्बई, मद्रास तथा दिल्लीमें शाखाएं हैं। जहांपर बैङ्किग, आढत और चांदी सोनेका व्यापार होता है।

———

मेसर्स सनेहीराम जुहारमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पृष्ठ ५९ में दिया गया है। बम्बई, अकोला, अमरावती, खामगाव, अमृतसर और करांचीमें इस फर्मपर रूई तथा गल्लेका अच्छा कारबार होता है। इसके वर्तमान मालिक बाबू रामकुमारजी, बाबू श्रीरामजी बाबू मुरलीधरजी आदि सज्जन हैं। आप अग्रवाल समाजके हरएक काममें अच्छा भाग लेते रहते हैं। आपको कलकत्ता फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सनेहीराम जुहारमल बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां बैङ्किग हुण्डी चिट्ठी, हेशियन, चीनी तथा रूईका व्यापार होता है।

मेसर्स लक्ष्मणदास सूरजमल

इस फर्मके मालिक बा० सूरजमलजी और बाबूलालजी जटिया हैं। आप मारवाड़ी अग्रवाल समाजके खुरजा निवासी सज्जन हैं। इस फर्मका प्रधान व्यापार सराफी, आढ़त, गल्ला तथा रूईका है इसका व्यापारिक परिचय निम्न प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मणदास सूरजमल, काटन स्ट्रीट T. A. Geathuring—यहा सराफी व्यवसाय होता है।

खुरजा (यू०पी०) मालीराम लक्ष्मणदास T. A. Jatiya—यहा इस फर्मकी एक काटन जीन प्रेस फेक्टरी है। तथा काटन, सराफी और आढ़तका काम होता है। आइस फैक्टरी भी इस फर्मकी ओरसे चलती है।

डिबाई (बुलंदशहर) मालीराम लक्ष्मणदास—यहा सराफी, आढत तथा कॉटनका बिजिनेस होता है। यहा भी आपकी एक काटन जीनप्रेस फैक्टरी है।

चंदौसी—मालीराम लक्ष्मणदास—यहा भी आपकी एक जीनप्रेस फैक्टरी है। तथा काटन, गल्ला और आढतका काम होता है।

मेसर्स रायबहादुर सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान

इस फर्मके मालिक चिड़ावा (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक बाबू सूरजमलजी वासल हैं। आपने अपने जीवनमें बहुत साधारण स्थितिको लेकर व्यापार आरम्भ किया और इतनी ऊंची स्थितिको बनाया, इससमय कलकत्तेके व्यवसायियोंमे यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित एवं सम्पतिशाली मानी जाती है। व्यवसायकी उन्नतिके साथ साथ फर्मके मालिकोंकी

स्व० रायबहादुर हरदत्तरायजी चमड़िया
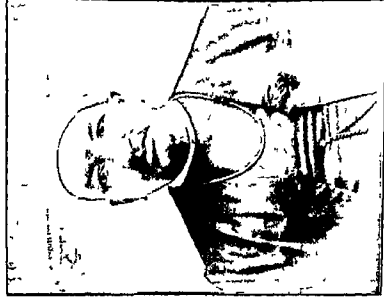
रायबहादुर रामप्रतापजी चमड़िया
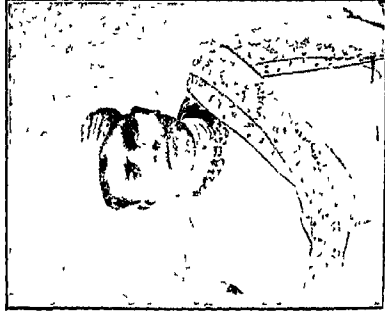
बाबू राधाकृष्णजी चमड़िया

दानधर्म और सार्वजनिक कामोंकी ओर भी अच्छी रुचि है। बद्रीनारायणके रास्तेका प्रसिद्ध लक्ष्मण झूला आपहीका बनाया हुआ है। आपकी ओरसे गयामें २ विशाल धर्मशालाएं तथा चिड़ावामें एक धर्मशाला बनवाई गई है। इसके अतिरिक्त चिड़ावेमें आपकीओरसे एक संस्कृत एवं एक अंग्रेजी पाठशाला चल रही है, वहांकी गौशालामें भी आपका प्रधान हाथ रहा है। इसी प्रकार कई धार्मिक कामोंमें आपने बड़ी रकमें लगाई हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री बाबू शिवप्रसादजी एवं बाबू गंगासहायजी हैं। आपके कुटुम्बकी अग्रवाल समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रा० ब० सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्थान बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां बैङ्किग, कपड़ेकी कमीशन एजंसी तथा दलालीका बड़ा कारबार होता है।

रायबहादुर सुखलालजी करनानी ओ० बी० ई०

राय बहादुर बाबू सुखलालजी करनानी ओ०बी० ई०ने करनानी इंडस्ट्रियल बैंकका स्थापन किया है। आप माहेश्वरी समाजके अच्छे ख्याति प्राप्त सज्जन हैं। तथा कलकत्तेकी ३।४ ज्वाइंटस्टॉक कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं। आपकी बैंक सेनेगो स्ट्रीटमें है।

मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्डसंस

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान फतहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चमड़िया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक श्रीमान रायबहादुर हरदत्तरायजी चमड़िया थे। आपके पिताजीका नाम सेठ नंदरामजी था। आप ६ वर्षकी आयुमें व्यवसायके निमित्त कलकत्ता आये। आपके बड़े भ्राता सेठ गोरखरामजी देशहीमें निवास करते थे। सेठ हरदत्तरायजी बहुत मामूली परिस्थितिमें कलकत्ता आये थे। आपने यहां आकर अफीमकी दलालीकाकाम शुरू किया, साथ ही आप अपना घरू व्यवसाय भी करने लगे। आपका व्यापार दिनपर दिन तरक्की पाता गया, कुछ समय पश्चात् आपने बम्बईमें भी एक ब्रांच स्थापित की। बम्बई दुकानके द्वारा, मालवेमें पैदा होनेवाली अफीमका शिपमेंट होता था। साथही यहां रुईकी आढ़तका काम भी होता था। आपने अपने अफीमके व्यापारको इतना बढ़ाया कि उसके लिये आपको हागकाग और शंघाईमें अपनी ब्रांचेज स्थापित करना पड़ीं, जबतक भारतमें अफीमका व्यापार होता रहा, तबतक ये शाखाएं अपना काम करती रहीं। अफीमका व्यापार बंद हो जानेके पश्चात् आपने रुई तथा

खासकर चांदीके व्यापारको बढ़ाया। इसी समय हवड़ा तथा कलकत्तामें आपने स्थाई सम्पत्ति खरीदना आरंभ किया। उपरोक्त सब व्यापारमें आपके साथ आपके भतीजे सेठ रामप्रतापजी चमड़िया भी सहयोग देते रहे।

सेठ हरदत्तरायजी चमड़िया उन महानुभावोंमेंसे है जिन्होंने बहुत मामूली परिस्थितिसे खड़े होकर अपनी व्यापार कुशलता, बुद्धिमानी एवं साहसके बलपर अच्छा मान सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त की। आपको भारत सरकारने सन् १९१४ में बांकुड़ा एवं वर्द्धमानमें बाढ़पीड़ितोंकी सहायता करनेके उपलक्षमें "रायबहादुर" को सम्मान सूचक उपाधि दी। आपके समयसे ही इस फर्मपर ई० डी० सासुन कम्पनी और जेम्स टेलर एण्ड कम्पनीकी बेनियन शिपका काम शुरू हुआ था। जो १९२६ तक होता रहा। इस प्रकार गौरवमय व्यापारिक जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९५६मे ५८ वर्षकी वयमें हुआ। आप कई वर्षोंतक हवड़ाके आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपैलिटीके कमिश्नर रहे। वर्तमानमें आपके ३ पुत्र है जिनके नाम क्रमशः श्री दुर्गाप्रसादजी, श्रीराधाकृष्णजी एवं श्रीमोतीलालजी है।

सेठ रामप्रतापजी चमड़िया भी मारवाड़ी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव है। आपको सन् १९२१में भारत गवर्नमेंटने "रायबहादुर"की पदवीसे सम्मानित किया है, आप मारवाड़ी एसोसिएशनके सभापतिका स्थान सुशोभित कर चुके है। व्यापारके साथ २ सामाजिक एवं धर्मिक कार्योंकी ओर भी आपका अच्छा लक्ष है। आपने फतहपुरमें जहां पानीकी बहुत कमी है—जनताकी सुविधाके लिये नल लगवाकर मुफ्त पानीका प्रबंध किया है। साथ ही आपकी ओरसे वहां शेखावाटी संस्कृत महाविद्यालय भी स्थापित हैं, उसमें ३ विभाग हैं। ब्रह्मचर्य्याश्रम छात्रावास, तथा विद्यालय। इसमे करीब १००।१२५ विद्यार्थी विद्याध्ययन करते हैं। यहाँ अंग्रेजी भी पढाई जाती है।

बाबू दुर्गाप्रसादजी तथा बाबू राधाकृष्णजी हवड़ेके ऑनरेरी मजिस्ट्रेट है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संस १७८, हरिसन रोड T. A. Chamria—यहा इस फर्मका हेड ऑफिस है तथा बैङ्किग, जूट और चादीका व्यापार होता है। हवडे व कलकत्तेमें आपके बहुतसे विशाल मकान बने हुए है जिनसे किरायेकी भारी आमदनी होती है।

कटिहार (बिहार)—पूर्णिया राइस मिल T. A. Chamria—यहा आपका एक चावलका बहुत बड़ा मिल है। अभी २ इस मिलमें जूट मिलके प्रेस भी लगाये जा रहे हैं।

नारायणगंज (बंगाल) मेसर्स राधाकृष्ण मोतीलाल T. A. Star—जूटका व्यापार होता है।

खेगाव (C. P.) मेसर्स हरदत्तराय रामप्रताप—यहा आपकी जीनिंग और प्रेसिंग फैक्टरी है। तथा रुईका व्यापार होता है।

जूट बेलर्स, शीपर्स और मर्चैन्ट्स

Jute Balers, Shippers

&

Merchants.

बा० रावतमलजी कोठारी (करणीदान रावतमल)
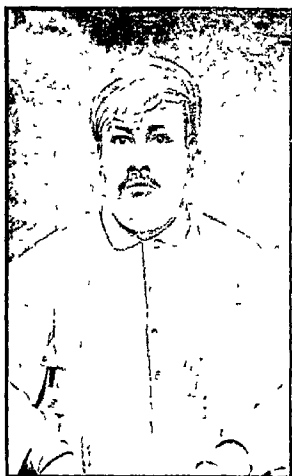
बा० पन्नालालजी कोठारी (करणीदान राव
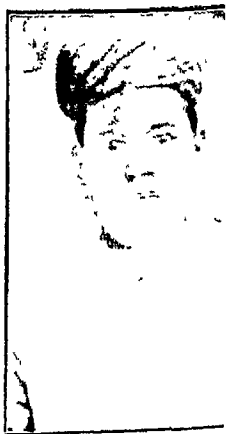
जूट बेलर्स

जूटके व्यवसायी

संसारके समुन्नत व्यवसायमें जूटके व्यवसायका स्थान बड़े ही महत्वका है। जूटका प्रधान केन्द्र जहां भारत माना जाता है वहा भारतमें इस व्यवसायका प्रधान केन्द्र कलकत्ता है। जूटकी खेती प्रायः मार्चसे मईतक होती है और जुलाईसे सितम्बरतक जूटकी फसल तैयार होकर माल बाजारमें आ जाता है। इसी प्रकार अक्टूबरसे दिसम्बरतक खूब जोरोंसे जूटकी निकासी यहां होती है। जूटके सम्बन्धमें विस्तृत विवरण हमारे इसी ग्रन्थके 'भारतकी गृह सम्पत्ति' नामक विभागमें दिया गया है। यहां इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि जूट व्यवसायिक क्षेत्रमें छुट्टा जूट, जूटड्रम कच्चीगांठ, पक्कीगांठ, हैसियन क्लाथ, और गनीके रूपमें आता है और इसी प्रकार इसका व्यवसाय होता है।

जूटका वायदेका सौदा भी जोरोंके साथ होता है। जिस प्रकार बम्बईमें कॉटनका वायदेका सोदा होता है उसी प्रकार यहां जूटका होता है। इस प्रकारके व्यवसायका प्रधान केन्द्र क्लाइव स्ट्रीट और रॉयल एक्सचेंज प्लेसमें है। व्यवसायके समय यहां बहुत गतिविधि रहती है।

यहांके जूट व्यापारियोंका संक्षिप्त, परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स करणीदान रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बीकानेर है इसके पूर्व आपके पूर्वज बरसलपुर (जैसलमेर)में रहते थे। आप माहेश्वरी समाजके कोठारी सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ करणी दानजी कोठारी बीकानेर होकर संवत् १९०० के करीब कलकत्ता आये। आपने कपड़ेकी आफिसोंकी दलाली तथा जवाहरातका व्यवसाय आरंभ किया। आपका स्वर्गवास संवत १९३५ में हुआ। कुछ ही समय बाद संवत १९३६-३७ में आपके पुत्र रावतमलजीने करणीदान रावतमलके नामसे फर्म स्थापित कर कपड़ेका कारबार शुरू किया। इसके व्यवसायको आपके हाथोंसे अच्छी तरक्की मिली।

संवत् १६५८ मे आपने अपनी फर्मपर धातु बानेका व्यवसाय आरंभ किया। आपका स्वर्गवास संवत् १६८१ मे हो गया है। आपके पश्चात् आपके पुत्र बाबू पन्नालालजी कोठारीने फर्मके कारवारको संभाला, तथा वर्तमानमें आपही फर्मके मालिक है। आपने अपनी फर्मपर संवत १६७४, ७५ में कपडे और चीनीका इम्पोर्ट व्यवसाय आरंभ किया। संवत १६८२ से आपने जूटबेलिंग और शीपिंगका कार्य आरंभ किया और संवत् १६८२ सेही आपकी फर्म नेदरलैण्ड्स इण्डिया कमर्शियल बैंककी कैश गैरिन्टयर है। सेठ पन्नालालजीके ४ पुत्र हैं जिनमें सबसे बडे मेघराजजी व्यवसायमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स करणीदान रावतमल १४६ हरिसन रोड—T. A. Kothari—यहा इसफर्मका हेड ऑफिस है। तथा बैङ्किंग, जूटकी कमीशन एजंसी तथा कपड़ा और चीनीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स करणीदान रावतमल ५५ सूतापट्टी—यहापर धोतीका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स करणीदान रावतमल ५-१ रॉयल एक्सचेंजप्लेस—यहापर जूटका ऑफिस है।

इसके अतिरिक्त जूटके समयमें बंगालमे आपकी कई ब्रान्चेज खुल जाया करती हैं।

मेसर्स गिरधारीमल रामलाल गोठी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सरदार शहर (बीकानेर स्टेट) है। आप तेरापंथी जैन समाजके ओसवाल सज्जन हैं। सर्व प्रथम करीब संवत् १६१० के सेठ चिमनीरामजी देशसे दिनाजपुर (बंगाल) आये, तथा संवत् १६१२ में आपके छोटे भ्राता सेठ चौथमलजी भी दिनाजपुर आये। चौथमलजी, मुर्शिदाबादके सेठ केशौदास सताबचंदके यहा रोकड़ एवं गोदामकी प्रधान व्यवस्थाका काम करते थे। एक बार चिमनीरामजी रथयात्राके मौकेपर सालडांगा (जलपाई गोड़ी) गये और वहाके लोगोंके आग्रहसे करीब संवत् १६१५ में वहीं बस गये। सालडांगामें दोनों भाई मिलकर गल्ला कपड़ा आदिका व्यापार करने लगे। धीरे २ आपलोगोंने अपनी बहुत बड़ी जमीदारी वहां बढ़ाई जो आज गोठी-स्टेटके नामसे मशहूर है। थोड़े समय बाद सेठ चिमनीरामजी, विवाह करनेके लिये देश गये, एवं अविवाहित अवस्थाहीमें आप देशमें स्वर्गवासी हो गये।

सेठ टीकमचंदजीके ६ पुत्र थे जिनमेसे सेठ चिमनीरामजी तो अविवाहित अवस्थामें ही स्वर्गवासी हो गये थे, तथा शेष ५ पुत्र सेठ जीवनदासजी, सेठ चौथमलजी, सेठ पांचीरामजी, सेठ पन्नाचन्दमलजी एवं सेठ हीरालालजीकी संतानें वर्तमानमे इस फर्मकी मालिक है। इन सब भाइयों

स्व॰ सेठ सरदारमलजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)
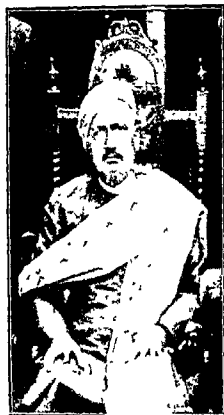
बाबू वृद्धिचन्द्रजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बा० चम्पालालजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

बा० मदनचन्दजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

बा० मिलापचन्दजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)

बा० अभयचन्दजी गोठी
(गिरधारीमल रामलाल)
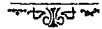
की स्थाई जमीदारी, बीकानेर स्टेट, तथा बंगालमें जलपाईगोड़ी, रंगपुर, पबना आदि स्थानोंमें अलग२ विभाजित है। केवल व्यवसाय सारे कुटुम्बका साथमें चलता है।

वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान संचालक बा० सरदारमलजी, बा० वृद्धिचंदजी एवं सेठ रामलालजी हैं। आप लोगोंका बहुत बड़ा कुटुम्ब है इनमेंसे करीब १०।१२ सज्जन फर्मके व्यापारमें भाग लेते हैं।

सेठ वृद्धिचंदजी बड़े प्रतिष्ठित एवं समझदार सज्जन हैं। आपको स्टेट कौंसिल और लेजिस्लेटिव् कौंसिलमें एक एक वोट देनेका अधिकार है, इसी प्रकार बंगाल कौंसिलमें भी जोतदार और रियाया (प्रजा) की ओरसे एक एक वोट देनेका अधिकार है। आप व्हाइसरायकी लेव्हीके भी सदस्य है। इसके अतिरिक्त आप सरदार शहरकी जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभाके ऑनरेरी सेक्रेटरी एवं कलकत्तेके जैनश्वे० तेरापंथी विद्यालय एवं सभाके उपसभापति रह चुके है।

सेठ रामलालजी कलकत्ता दुकानका संचालन करते हैं, कलकत्ता दुकानकी प्रधान उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई है। आप जूटके व्यापारकी अच्छी जानकारी रखते है।

इस कुटुम्बका शिक्षाकी ओर भी काफी ध्यान है सेठ वृद्धिचंदजीके पुत्र मदनचंदजी मेट्रिकतक शिक्षा पाचुके हैं। जैन तेरापंथी समाजमें यह कुटुम्ब अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

संवत् १९४६ में कलकत्तेमें सेठ चौथमलजीके द्वारा इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें हरख-चंद नथमलके साझेमें हुआ। संवत् १९६२ में सेठ चौथमलजी स्वर्गवासी हो गये और १९६३ से यह फर्म उपरोक्त नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार कर रही है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता - मेसर्स गिरधारीमल रामलाल गोठी १० आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां इसफर्मका हेड ऑफिस है तथा जूट बेलर्स, शीपर्स, और एक्सपोर्टका व्यापार तथा बैंकिंग काम होता है।

२ कलकत्ता — चौथमल जैचंदलाल गोठी १० आर्मेनियन स्ट्रीट — आढ़तका काम होता है।

३ सालडागा (जलपाई गोड़ी बंगाल) जीवनदास चौथमल—यहा इस कुटुम्बकी अलग २ जमीदारी है।

४ जलपाई गोड़ी (बंगाल) जीवनदास वरदीचंद - यहा भी जमींदारी है।

इनके अतिरिक्त सीजनके समयमें जूटकी खरीदीके लिये आपकी कई एजंसियां स्थापित हो जाया करती है।

मेसर्स गोगराज ज्वालाप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास फतहपुर (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके भरतिया सज्जन हैं। सेठ ज्वालाप्रसादजी करीब १७ वर्ष पूर्व देशसे यहां आये थे यहां आकर आपने जूटका कारबार आरम्भ किया। बाबू ज्वालाप्रसादजीके २ भाई और हैं जिनका नाम बाबू लूनकरनजी तथा बाबू नंदलालजी हैं। बाबू ज्वालाप्रसादजीके हाथोंसे इस फर्मके कारबारको विशेष प्रोत्साहन मिला है। आपने करीब ६ वर्ष पूर्वसे कपड़ेका इम्पोर्ट व्यवसाय भी आरम्भ किया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गोगराज ज्वालाप्रसाद ४२ शिवतल्ला स्ट्रीट T. NO. 1132 B. B.—यहां जूटका व्यापार, कपड़ेका इम्पोर्ट तथा हुंडी चिठ्ठीका काम होता है काशीपुर कॉटनजीन फेक्टरीमें आपका पार्ट है जूटसीजनमें इस फर्मकी बंगाल प्रान्तमें कई ब्रांचेज खुल जाया करती हैं।

कलकत्ता—मेसर्स गोगराज ज्वालाप्रसाद २ रायल एक्सचेंज प्लेस T.A. Bhartia, T.A. 358 Cal. यहां जूट वेलिंग और शीपिंगका काम होता है।

मेसर्स चेतराम रामविलास

इस फर्मके व्यवसायका विस्तृत परिचय किरानेके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है। यह फर्म कलकत्तेमें किरानेका लम्बे अरसेसे व्यापार कर रही है। इस व्यवसायके अलावा जूट वेलिंग तथा शीपिंगका काम भी होता है। आपके ऑफीसका पता ३३ आर्मेनियनस्ट्रीटमें है। तारका पता Geera Jami है।

मेसर्स चंदनमल कानमल लोढ़ा

इस फर्मके मालिक बाबू कानमलजी लोढ़ा हैं। आपका परिवार ओसवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। आपके व्यवसायका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथके प्रथम भागमें अजमेरके पोर्शनमें दिया गया है। आपकी कलकत्ता फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स चंदनमल कानमल १७८ हरीसनरोड, यहां जूट वेलिंग और शीपिंगका काम होता है इस दुकानमें बाबू मूलचंदजी तथा खूबचंदजी सेठिया वर्किंग पार्टनर हैं।

मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल

इस फर्मपर हेम्प और जूटशिपिंगका अच्छा व्यवसाय होता है इसका आफीस १८ मल्लिक स्ट्रीट काली गोदाममें है। विस्तृत परिचय चित्रों सहित ग्रेन मर्चेन्टमें दिया गया है।
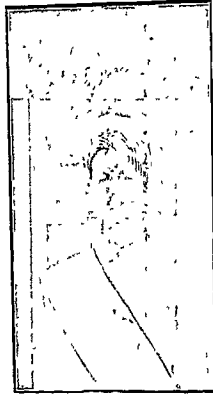
बाबू रावतमलजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)
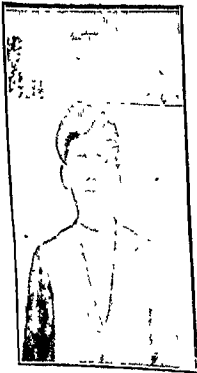
बाबू जयचंदलालजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल)

बाबू सुमेरमलजी गोठी (गिरधारीमल रामलाल।

बाबू जयदयालजी कसेरा

बाबू वासुदेवजी कसेरा

बाबू दुर्गाप्रसादजी कसेरा

श्री बाबूलालजी कसेरा
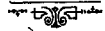
मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी

इस फर्मके मालिक मूल निवासी फतहपुर (जयपुर) के हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बा० जयदयालजी कसेरा हैं। आपके पिता भजनलालजी कसेरा बड़े धार्मिक पुरुष थे। जयदयालजीके दो भाई और हैं। जिनके नाम वासुदेवजी कसेरा और नन्दलालजी कसेरा है। इस फर्मकी विशेष तरक्की बा० जयदयालजी कसेराके हाथोंसे हुई। आरंभमें आप गल्लेकी दलालीका काम करते थे। आपने मेसर्स एटंसथॉसन नामक कम्पनीकी जिसका नाम पीछे जाकर हासन ब्रदर्स पड़ गया था, दलालीका काम किया इसमें आपको अच्छा लाभ हुआ। कुछ समय पश्चात् हासन साहब विलायत चले गये। तब आपने उनसे काशीपुर काटन जीन फैक्टरी खरीदकी। पश्चात् हवड़ा और रिलायंस मिलकी दलाली शुरूकी जो इस समय तक चल रही है। आपके साथ आपके भाईयोंका भी व्यापारमें बहुत हाथ रहा। आप सब लोग इस समय व्यापारमें भाग लेते हैं। बा० जयदयालजीके २ पुत्र हैं। दुर्गाप्रसादजी और बाबूलालजी। दुर्गाप्रसादजी व्यवसायमें भाग लेते हैं तथा बाबूलालजी पढ़ते हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी P 14 सेंट्रल एवेन्यू, नार्थ—इस फर्म पर जूट बेलर्स शीपर्स तथा डीलर्सका काम होता है। यह फर्म शॉ वालेस कम्पनी की शूगर डि० की बेनियन और ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त अमेरिकन इन्सुरंस कम्पनी लि० और मोटर युनीयन इन्स्युरंस कम्पनी लि०के मेरीन डि० की एजंसीका काम होता है। यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवनारायण मुरोदिया एण्ड को० सेंट्रल एवेन्यू—यहां शेअरका काम होता है। इस फर्ममे आपका साझा है।

कलकत्ता—काशीपुर कॉटनजीन फेक्टरी—इसमें आपका साझा है।

कलकत्ता—मेसर्स बस्तीराम द्वारका दास सेन्ट्रल एवेन्यू—यहा कपड़े तथा शक्करकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जीवनमल चन्दनमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित इस ग्रन्थके प्रथमभागके राजपूताना विभागमें पृष्ठ १९७ में दिया गया है। कलकत्तेमें इस फर्मके विक्टोरिया जूटप्रेस तथा सूरज जूटप्रेस नामक दो

जूट प्रेस और मोती बाजार तथा संजीवन बाजार नामक दो जूटके बाजार है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है। कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें इस फर्मकी बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है।

कलकत्ता—जीवनमल चन्दनमल बैंगानी ३ गन फांड्री रोड—यहां शेअर्स, बैङ्किंग व्यापार, बिल्डिंग्स, जूट प्रेस, तथा जूटमार्केटके किरायेका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवनराम जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके जालान सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें संवत् १९४१ में बा० देवीबक्षजी जालान और बाबू जीवनरामजी जालानके हाथोंसे हुई। प्रारंभमें यह फर्म फेन्सी पीस गुड्स और रेशमी मालका व्यापार करती रही। आप दोनों भाइयोंने इसकी अच्छी उन्नतिकी। आपके पश्चात् जुहारमलजी जालानने इस फर्मके कामको और भी बढ़ाया।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू जुहारमलजी और जीवनरामजीके पौत्र बाबू श्रीकृष्णजी और मक्खनलालजी तथा जुहारमलजीके पुत्र शुभकरणजी हैं।

बाबू जुहारमलजीका सम्बंध सन् १९१४ से बिड़ला ब्रदर्सके साथ हुआ। तभीसे आप बिड़ला ब्रदर्सके पीस गुड्स डिपार्टमेंटकी देख रेख करते थे। आजकल आप जूट विभागका काम देखते है। इसमें आपका अच्छा अनुभव है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीवनराम जुहारमल १८ काली गोदाम—यहां जूट, बैंकिंग और पीस गुड्सके इम्पोर्टका काम होता है।

मेसर्स थानसिंह करमचन्द

इस फर्मका हेड आफिस नारमल लुहिया लेन कलकत्तामें है। इसके मालिक ओसवाल (तेरापंथी जैन) समाजके सज्जन हैं। यह फर्म जूट बेलिंग तथा शीपिंगका प्रधान व्यापार करती है।

मेसर्स दौलतराम रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान मेंढ़सर (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके नोपानी सज्जन है। इस फर्मके स्थापक सेठ दौलतरामजी संवत् १९३४मे कलकत्ता आये संवत्१९४८

बाबू नन्दलालजी भुवालका (दौलतराम रावतमल)

बाबू रावतमलजी नोपानी (दौलतराम रावतमल)

बाबू [illegible]लालजी भुवालका (दौलतराम रावतमल)

बाबू रामेश्वरलालजी नोपानी (दौलतराम रावतमल)

में एक सज्जनके साझेमें आपने गल्लेकी फर्म स्थापित की। पश्चात् संवत् १९५५ में आपने अलग होकर बींजराज दौलतरामके नामसे अपना स्वतंत्र व्यवसाय प्रारंभ किया। कुछ समय पश्चात् बींजराजजीने भी अपना साझा अलग कर लिया। तब आपने दौलतराम रावतमलके नामसे व्यापार शुरू किया। इसमें आपने रतनगढ़ निवासी रामपतदास रामविलास भुवालकाका साझा कर लिया।

वर्तमानमें इसके संचालक सेठ दौलतरामजी एवम सेठ रामबिलासजीके कुटुम्बी हैं। इसके प्रबंधका भार बा० नंदलालजी रावतमलजी, बजरंगलालजी, रामेश्वरलालजी तथा मानमलजीपर है।

इस फर्मने संवत् १९६० से जूटका व्यापार भी प्रारंभ किया और इस ओर व्यापारको अच्छा बढ़ाया। तथा सन १९२३ से यह फर्म डायरेक्ट विलायत जूट आदिका भी एक्पोर्ट करने लगी। इस समय इसका प्रधान व्यापार जूट और गल्लेका है। बंगाल तथा बिहारमें आपकी कई स्थानोंपर खरीदीके लिये एजंसिया है। कलकत्तेसे गल्लेका एक्सपोर्ट करने वाली फर्मोंमें इसका स्थान भी बहुत ऊंचा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स दौलतराम रावतमल १७८ हरिसन रोड T. A. Gullasud T. N0 3172 B. B.—यहां जूट, गल्लेकी खरीदी और एक्सपोर्टका काम होता है। यहां इस फर्मका हेड आफिस है।

कहलगांव (भागलपुर)—मेसर्स दौलतराम रावतमल—गल्लेका काम होता है।

मेसर्स पी० जी० एण्ड० डब्लू० शाहू

इस फर्मके मालिक बशीरहाटके समीप धानकुरिया गांवके रहनेवाले हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू पतितचन्द्रजी साहुने बाबू गोविन्द चन्द्र गुन्नीके साथ इस फर्मकी स्थापना सन १८५२ ई० में कलकत्ते में की थी। इस फर्मपर घी, आटा और गुड़का काम आरम्भ किया गया और बादको बीज और जूटका व्यापार भी होने लगा। सन् १८६५ ई० मे पतित बाबूके दामाद बाबू श्यामाचरण वल्लभ भी इस फर्ममें हिस्सेदार हुए और दोनों संस्थापकोंके स्वर्गवासके बाद आपहीने फर्मके व्यापारको संभाला और अपनी योग्यता और कार्यचातुरीसे व्यापारको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया आपने जूटके व्यवसायमें अच्छा अनुभव प्राप्त किया और आपका चलाया हुआ 'वल्लभ' मार्का आज भी जूट संसारमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। आपने सन् १८९१ ई० में काशीपुरका झील प्रेस खरीदा। कुछ ही समय बाद यह प्रेस उसे २ हजार गांठ दैनिक बांधने लग गया।

इस फर्मके वर्तमान मालिक राय बहादुर देवेन्द्रनाथ वल्लभ, बाबू महेन्द्रनाथ गुनी तथा अक्षयकुमार गुनी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स—पी० जी० एण्ड डब्लू० शाहु—यहां जूट बेलर्स एण्ड शिपर्स तथा जूट डीलर्सका काम होता है। यह फर्म बैंकिंग और कमीशनका काम भी करती है।

मेसर्स प्रतापमल रामेश्वर

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० प्रतापमलजी, रंगलालजी एवम गजाधरजी बगड़िया हैं। आप सुजानगढ़ निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इसका स्थापन संवत् १९७१ में प्रतापमलजीके द्वारा हुआ। शुरुसे ही इस फर्मपर जूट बेलर्स एण्ड शीपर्सका काम होता चला आ रहा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स प्रतापमल रामेश्वर ४६ स्ट्रांडरोड T.A. Pramukha T.No. 2040 B.B.—यहां जूट बेलर्स एण्ड शीपर्स का काम होता है। जूट खरीदी बिक्रीका काम भी यह फर्म करती है।

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित प्रथम भागमें दिया जा चुका है। कलकत्ते से जूट एक्सपोर्ट करनेवाली भारतीय फर्मोंमें इसका स्थान पहला या दूसरा है। इसीप्रकार यह फर्म तेलहन, ग्रेन,चांदी, रूई आदि कई प्रकारके व्यवसाय करती है, और सब व्यापारोंमें अपना विशेष स्थान रखती है। इस फर्मके व्यवसायका ढंग बहुत संगठित है। इस फर्मके ऑफिस का पता ८ रायल एक्सचेंज प्लेस है।

मेसर्स बींजराज बालचन्द

इस फर्मके संचालक बाबू पूसराजजी कठोतिया एवम आपके पुत्र हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नम्बर १४ में दिया गया है। यहां यह फर्म बेंकिंग और शिपिंग व्यापार करती है। इसका आफिस १०४ ओल्ड चीना बाजार है। तारका पता Newpat है।

मेसर्स भीखमचन्द चोरड़िया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सरदारशहर (बीकानेर स्टेट) है। आप ओसवाल समाजके जैन तेरापंथी सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू भीखमचंद जीके हाथोंसे संवत् १९६० में हुआ। आरम्भमें आपने पाटका मिलोंके साथ व्यवसाय आरम्भ किया। संवत् १९६८ से आप जूट बेलिंग तथा शीपिंगका व्यवसाय करने लगे। इस व्यवसायसे आपने अच्छी उन्नति की है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भीखमचन्द चोरड़िया ४ राजा उडमंएड स्ट्रीट—T. No. 3458 Cal T. A. Bhiksoo—
यहा जूट बेलिंग और शीपिंगका काम होता है।

मेसर्स मंगनीराम बांगड़ एण्ड कम्पनी

इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रंथके प्रथम भागमें राजपूताना विभागमें पृष्ठ २०१ में दिया गया है। इस फर्म पर कलकत्तेमें शेअर तथा किरायेका बहुत बड़ा काम होता है। आपकी केनिल प्रेस नामक एक जूट प्रेस है। गद्दीका पता ६१ बांसतल्ला स्ट्रीटमें हैं।

मेसर्स मालमचंद सूरजमल

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्र सहित हमारे ग्रंथके प्रथम भागमें राजपूताना विभागमें पृष्ट १९९ में दिया गया है। यह फर्म जूट बेलिंग तथा हुंडी चिठ्ठीका व्यापार करती है। आसाम प्रांतमें भी इस फर्मकी ब्रांचेज हैं। कलकत्ता फर्मका पता २५१ अपर चितपुर रोड है तारका पता MalamSarju है।

मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल

इस फर्मका विस्तृत परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है। एक लम्बी अवधिसे इस फर्म पर कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार चला आ रहा है। इसके अतिरिक्त जूट बेलिंग और शीपिंगके कामकी ओर भी फर्मके संचालकोंने अच्छा ध्यान दिया है। आपका आफिस क्लाइव स्ट्रीटमें है।

मेसर्स रामदत्त रामकिशनदास

यह फर्म कलकत्तेके प्रसिद्ध व्यापारी रामचन्द्रजी हरीरामजी गोयनकाकी है। आपके यहां प्रधानतया ४० वर्षोंसे रायली ब्रदर्सकी कपड़ेकी वेनियनशिपका काम होता है। इसके अलावा जूट बेलिंग और शीपिंग व्यवसाय भी बहुत बड़े परिमाणमें इस फर्मके द्वारा होता है। आपकी गद्दीका पता ४१ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट गोयनका हाउस है। फर्मके व्यवसाय आदिका विस्तृत परिचय कपड़ेके व्यवसायियोंमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स रामदत्त गंगाबक्स कानोडिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मुकुन्दगढ़ (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके कानोड़िया सज्जन हैं। करीब २ वर्ष पूर्वसे यह फर्म जूटका व्यवसाय करने लगी है। इसके मालिक श्रीयुत गंगाबक्सजी हैं। आपका सम्बन्ध मेसर्स बिड़ला ब्रादर्ससे करीब २५ २६ साल से है। आप ही वर्तमानमे बिड़लाजीके प्रधान मुनीम हैं। बिड़ला ब्रदर्सकी उन्नतिमें आपका भी बहुत हाथ रहा है। आपकी फर्मका संचालन आपके पुत्र बा० राधाकृष्णजी करते हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदत्त गंगाबक्स १८ काली गोदाम T.A. kanodia—यहां जूट तथा ग्रेनका काम होता है।

कलकत्ता - आर० के० कानोडिया १३ क्लाईव स्ट्रीट, यहां हैसियनका काम होता है। यह कार्य इस फर्मपर करीब ५ वर्षसे चालू है।

मेसर्स शिवदयाल रामजीदास बाजोरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके बाजोरिया सज्जन हैं। संवत् १८७५ के करीब सेठ शिवदयालजीके पिता सेठ रामानंदजी व्यापारके निमित्त फतहपुरसे आगरा आये थे। आप यहां साधारण व्यापार करते रहे। आपके २ पुत्र थे, सेठ शिवदयालजी तथा सेठ हरदयालजी। सेठ रामानन्दजीका स्वर्गवास होनेके पश्चात् आपके दोनो पुत्र संवत् १९०२ में आगरेसे गाजीपुर चले गये। वहा आपने नीलके बीजोंका व्यापार आरंभ किया, कुछ समयके पश्चात् आपने गोरखपुर जिलेमें जमीदारी भी

रायबहादुर रामजीदासजी बाजोरिया
(शिवदयाल रामजीदास)

बाबू बलदेवदासजी बाजोरिया
(शिवदयाल रामजीदास)

बाबू बैजनाथजी बाजोरिया
(शिवदयाल रामजीदास)

बाबू केदारनाथजी बाजोरिया
(शिवदयाल रामजीदास)

खरीदी संवत् १६१२ में सेठ शिवदयालजी अपने व्यापारको बढ़ानेके निमित्त कलकत्ता आये; तथा यहां अपनी शाखा स्थापित की और संवत् १६४८ में आपने अपना हेड आफिस यहींपर बनाया।

सेठ शिवदयालजी व्यापारिक कामोंमें बड़े साहसी एवं मेधावी सज्जन थे। आपने इस फर्मके व्यापारको आरम्भ किया, तथा उसे अच्छी स्थितिमें पहुंचाया। संवत् १६५० में आपका ध्यान "सावायास" जिसका कि कागज बनता है, उसके व्यापारकी ओर गया। इस व्यापारमें आपने बहुत अधिक उन्नतिकी और साहब गंज आदि स्थानोंमें अपनी कई शाखाएं स्थापित कीं। आपका देहावसान संवत् १६५२ में बद्रीनारायणकी यात्रामें केदारनाथ नामक तीर्थमें हुआ, आपने अपनी यात्राके समयमें हरिद्वारमें अन्नक्षेत्रकी स्थापना की, जहां २०।२५ मनुष्य प्रतिदिन भोजन पाते हैं। आपके ३ पुत्र हुए, सेठ गौरीदत्तजी, सेठ जगन्नाथजी तथा सेठ रामजीदासजी। इनमेंसे बाबू गौरीदत्तजीका बाल्यकालहीमें देहावसान हो गया। पश्चात् दोनो भाई शिवदयाल सूरजमलके नामसे व्यापार करते रहे। संवत् १६५२ में आप लोगोंने अपनी गोरखपुरकी जमीदारी को करीब २॥ लाख रुपयेमे बेंच दिया। उसी समयमें आपने कलकत्तेकी म्युनिसिपैल्टीकी सड़कें बनवाने के लिये पत्थरका कंट्राक्ट लिया, यह काम आप १६७० तक करते रहे।

संवत् १६५७ में नेपाल गवर्नमेंटसे आपने नेपालकी तराईके पासका कंट्राक्ट लिया, तथा उस तरफ अपनी शाखाएँ स्थापित कीं। उसी साल आपने जूटबेलर्सका काम आरंभ किया और कई भागीदारोंके साथमें सलकियामें "इम्पीरियल प्रेस" की स्थापना की। बाबू जगन्नाथ प्रसादजीका देहावसान हो जानेके बाद संवत् १६७० में आप दोनोंका कारबार अलग २ हो गया। तबसे सेठ रामजीदासजी "मेसर्स शिवदयाल रामजीदास" के नामसे व्यवसाय करते है।

सेठ रामजीदासजीका अग्रवाल समाजमें अच्छा सम्मान है। आपहीके परिश्रमसे कलकत्ते मे प्रसिद्ध विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पतालकी संवत् १६७५ में स्थापना हुई। अभीतक आपने उसमें करीब २॥ लाख रुपयोंका दान किया है। मारवाड़ी ऐसोसियेशनके आप सभापति रह चुके हैं। एव अग्रवाल पंचायतकी कलकत्ता ब्रांचके वर्तमानमे आप सभापति हैं। कलकत्तेके विशुद्धानन्द विद्यालयको आर्थिक सहायता दिलानेमें आपने अच्छा परिश्रम उठाया है। सन् १६२४ में आपको रा० ब० की पदवी प्राप्त हुई है। वर्तमानमें आपके ४ पुत्र हैं जिनके नाम बाबू बलदेवदासजी, बाबू बैजनाथजी, बाबू केदारनाथजी तथा बाबू रामनाथजी है। आप चारों ही व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपके बड़े पुत्र बाबू बलदेवदासजी अ० भा० अग्रवाल पंचायतके प्रधान मंत्री तथा बाढ़ कम्पनीकी जूट मिलोंके डायरेक्टर हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) मेसर्स शिवदयाल रामजीदास १३० मछुआबाजार कलकत्ता (T. A. Hemshiper T No 1969 B. B.—यहां जूट बेलिंग, शीपिंग तथा साबे घासका व्यापार होता है। यह फर्म टीटागढ़ पेपरमिल्सको घास सप्लाई करनेकी सोल एजंट हैं इसके अतिरिक्त यहां बैंकिंग व्यापार व मारबल टाइल्सका इम्पोर्ट भी होता है।

(२) मेसर्स शिवदयाल रामजीदास ५४ राधाबाजार कलकत्ता—यहां मारबल टाइल्सकी बिक्रीका काम होता है।

(३) शिव जूटप्रेस काशीपुर कलकत्ता—यहां जूटकी पक्की गांठ बांधनेका काम होता है।

इसके अतिरिक्त शिवदयाल रामजीदासके नामसे नीचे लिखे स्थानोंपर "साबे घास" की खरीदीका काम होता है।

(१) साहबगंज (२) मिरजाचौकी (बिहार) (३) जौनपुर

(४) नगीना (बिजनौर) (५) कोटद्वार (गढ़वाल) (६) ज्वालापुर

(७) सहारनपुर (८) तुलसीपुर (गोंडा) (९) नेपालगंज (१०) बहराइच

मेसर्स स्वरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को०

इस फर्मके व्यापारका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके पृष्ट २३६ मे हम दे चुके है। यह फर्म जूट बेलिंग तथा शीपिंगका व्यवसाय भी करती है। इसके ऑफिस का पता ३० क्लाइव स्ट्रीट है। तारका पता Kashaliwal है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल

यह फर्म जूट मुकामोंसे जूट खरीदती है, बेलिंग करने तथा एक्सपोर्ट करनेका काम भी करती है। इसकी हनुमान जूट प्रेस और मिल नामक स्वतंत्र प्रेस और मिल है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थके पृष्ठ२४१ में दिया गया है। इसके ऑफिस कापता ६१ हरीसन रोड है। इस फर्मने बहुत छोटे रूपसे कार्य आरम्भ कर अपने जूट व्यवसाय में अच्छी ख्याति प्राप्त की है। फर्मके संचालकोंका जूट व्यापार की ओर अच्छा लक्ष्य है।

मेसर्स सूरजमल आसकरण

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता ही में मेसर्स जीवनमल चन्दनमलके नामसे है। इस फर्मपर यहां जूट बेलर्सका व्यापार होता है। इसका आफिस १ गन फाऊंड्री रोड में है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १९७ में दिया गया है। इस फर्मकी यहां चन्दनमल चम्पालालके नामसे एक शाखा और भी है, वहां भी जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स सोनीराम जीतमल

इस फर्मका हेड आफिस नागपुर है। इसका प्रधान व्यापार कपड़ेका है। मेसर्स टाटा-संसकी मिलोंका माल बेचनेकी इस फर्मके पास एजंसी है। इसके अतिरिक्त हेसियन तथा जूट एक्स-पोर्ट करनेका काम भी यहां होता है। इसका हेसियन जूट एक्सपोर्ट आफिस केनिंग स्ट्रीट में है। विशेष परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें इसी नामसे चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स हरगोविंदराय मथुरादास

इस फर्मपर प्रधान व्यापार हेसियन तथा गनीका होता है। जूट बेलिंग तथा शीपिंगका काम भी होता है। इस फर्मकी गद्दीका पता ७० कॉटन स्ट्रीट है। विशेष परिचय हेसियन तथा गनीके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द

इस फर्मको स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके स्थापक मुर्शिदाबादके निवासी सेठ हरिसिंहजी थे। आप ओसवाल श्वेताम्बर संप्रदायके जैन धर्मावलम्बीय सज्जन थे। जबसे यह फर्म स्थापित हुई है तभीसे इस पर उपरोक्त नामसे ही कारबार होता चला आ रहा है। संवत् १९६३ तक यह फर्म अपना कार्य करती रही पश्चात् गंगाशहरके निवासी सेठ भैरुदानजी ईसर चन्दजी चोपड़ाका इसमें साझा होगया। इसी समयसे इस फर्मकी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी।

सेठ हरिसिंहके पश्चात् इस फर्मके व्यापारका संचालन सेठ निहालचंदजीने संभाला। आपके पश्चात् आपके पुत्र श्री सेठ डालचन्दजीने फर्मके व्यापारका संचालन किया। इस समय इसके संचालक भैंरुदानजी तथा सेठ इसरचन्दजी भी होगये थे। आप तीनों सज्जनोंकी व्यापार कुशलताकाही कारण है कि आज यह फर्म यहांके जूटके व्यवसायियोंमें बहुत ऊंचा स्थान रखती है।

बा० डालचंदजी—आप जैन समाजमें बहुत प्रतिष्ठा संपन्न महानुभाव होगये हैं। आप पुराने विचारोंके सज्जन थे। आपका कई मन्दिरोंके जिर्णोद्धार एवम जैन सिद्धान्तोंके प्रचारमें प्रचुर धन व्यय हुआ है। जिस समय जूट बेलर्स असोसिएशनकी स्थापना हुई उस समय सर्व प्रथम आपही उसके सभापति नियुक्त हुए थे। स्थानीय चित्तरंजन सेवासदनमें आपकी ओरसे १००००) रु० प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त हिन्दू युनिवरसिटी आदि कई संस्थाओंको भी आपके द्वारा अच्छी सहायता प्रदान की गई थी। आपके द्वारा आपके रिस्तेदारोंको भी काफी सहायता दी गई थी। आप मृत्यु समय ३० लाख रुपैया अपने रिस्तेदारोंमें वितरण कर गये। कहनेका मतलब यह है कि आप बड़े सज्जन एवम उदार महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२७ ई०में होगया।

बा० बहादुरसिंहजी—आप सेठ डालचंदजीके एकलौते पुत्र हैं। इस समय आपही उत्तराधिकारी हैं। आपका स्वभाव सादा मिलनसार है। आपको पुरानी कारीगरीका बेहद शौक है। आपने अपने यहा पुरानी कारीगरीकी कई ऐतिहासिक वस्तुओंका बहुमूल्य संग्रह कर रखा है। जैसे सिराजुद्दौलाका सिर पेंच, बाजू आदि। आप बम्बईमें होने वाली जैन कान्फ्रेंसके सभापति रह चुके हैं। मुर्शिदाबादके आप बहुत बड़े जमींदार माने जाते हैं। आपकी बम्बई, मद्रास, बंगलोर आदि प्रांतोंमें अभ्रक, कोयला आदिकी कई खाने हैं। बम्बईमें आपकी एक एल्युमिनियमकी भी खदान है। कहनेका मतलब यह है कि यह खानदान बहुत पुराना प्रतिष्ठित एवम सम्पतिशाली है।

सेठ भैरुदानजी इसरचंदजी—आपलोग गंगाशहर (बीकानेर) के निवासी तथा ओसवाल श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय महानुभाव हैं। आप दोनों ही भाई हैं। मेसर्स हरिसिंह निहालचंदकी फर्ममें आपका साझा है। आपका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेरके पोर्शनमें दिया गया है। वर्तमानमें उपरोक्त फर्मका व्यापार इस प्रकारहै—

कलकत्ता—मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द नं० १ पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट - यहा इस फर्मका हेड आफिस है। यहा जूटका बेलिंग तथा शिपिंगका बहुत बड़ा व्यापार होता है। बैंकिंग काम भी यहा होता है।

सिराजगंज—मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द
अजीमगंज—मेसर्स निहालचन्द डालचन्द
फारबिसगंज—हरीसिंह निहालचन्द
सिमला बाड़ी—" "
भोरंगा मारी (रंगपुर)—भैरोंदान इसरचन्द

इन सब फर्मों पर जूटका व्यापार तथा बैंकिंग बिजिनेस होता है।

इसके अतिरिक्त बंगाल प्रान्तमें आपकी कई शाखाएं और भी हैं।

मेसर्स गेवरचंद दानचंद

इस फर्मका परिचय प्रथम भागमें पृष्ठ १३६ में सुजानगढ़में दिया गया है। इस फर्मकी सैदपुर, बोगड़ा तथा ग्वालन्दोमें शाखाएं है। कलकत्तेकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—गेवरचंद दानचन्द चोपड़ा नं०२ राजा उडमण्ट स्ट्रीट T. A. Gentleman — यहां जूटका घरू और आढ़तका कारबार होता है।

मेसर्स चांदमल चम्पालाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रावतमलजी पींचा है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६२ में आसकरण पांचीराम पींचाके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म जूट, बैंकिंग और कमीशन एजंसीका काम करती है। इसका आफिस नं० २ राजा उडमण्ट स्ट्रीटमें है।

मेसर्स चांदमल मूलचंद

इस फर्मके वर्तमान संचालक चांदमलजी, मूलचंदजी, एवम खूबचंदजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं १४३ में मेसर्स रूपचंद तोलाराम सेठियाके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म जूटका व्यापार करती है। इसका आफिस है १०५ पुराना चीना बाजार।

मेसर्स चेतनदास हजारीमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान श्रीडूंगरगढ़में है। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके डागा गौत्रीय सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना संवत् १९५० में हुई। इसकी स्थापना नारायणचंदजी डागाने तेजमल चेतनदासके नामसे की थी। इसकी विशेष उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप श्रीयुत चेतनदासजीके जेष्ठ पुत्र है। श्रीचेतनदासजीका स्वर्गवास संवत् १९६० में हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक नारायणचंदजी, पूरणचन्दजी, हजारीमलजी, और वालचंदजी हैं।

आपकी ओरसे श्रीडूंगरगढ़ स्टेशनपर एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है। डूंगरगढ तथा बाहर गावोंमें आपकी ओरसे कई कुए बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नउलड़ा टेया (रंगपुर)—मेसर्स चेतनदास नारायणचंद (हे. आ०) यहा बेंकिंग, जूट, तमाखू तथा जमींदारीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चेतनदास हजारीमल २ राजा उडमंट स्ट्रीट T. NO 4284 cal यहां जूट और तमाखूका व्यापार होता है।

हल्दीवाड़ी (कूच बिहार)—चेतनदास पूरणचन्द यहां जूट, और तमाखूका काम होता है।

इसके अतिरिक्त लालमनीरहाट, टीस्टा, तोष भंडार, सिली गौड़ी, प्यारपुर, जलढाका, चावड़ा हाट आदि जगहोंपर आपकी दुकानें हैं इन सबपर जूट और तमाखूका काम होता है।

मेसर्स चम्पालाल कोठारी

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ मूलचन्दजी और मदनचन्दजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६० में मेसर्स हजारीमल सरदारमलके नामसे दिया गया है। यहा इस फर्मका ऑफिस १३ ना मल लोहिया लेनमें है। यह फर्म यहा जूटका व्यापार एवम डायरेक्ट विदेशोंको एक्सपोर्ट करती है।

मेसर्स छत्तुमल मुलतानमल

इस फर्मका हेड आफिस तुलसीघाट (बंगाल) है। यहा यह फर्म ७।२ बाबूलाल लेनमें जूट और जूटकी कमीशन एजंसीका काम करती है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके बंगाल विभागमें पेज नं० ५६ मे दिया गया है।

मेसर्स छोगमल तिलोकचन्द

इस फर्मका हेड आफिस रंगपुर (बंगाल) है। यहा यह फर्म जूटका व्यापार करती है।

इसका आफिस यहां जगत सेठकी कोठी खंगरापट्टीमे है। इसका पूरा परिचय बंगाल विभागके पेज नं० २५ में दिया गया है। यहां तारका पता Udbhan है।

मेसर्स जगन्नाथ जुगुलकिशोर थिरानी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नोहर (बीकानेर) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके थिरानी सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ लच्छीरामजी एवं आपके भ्राता सेठ लखमीचंदजीके हाथोंसे करीब ६०।६५ वर्ष पूर्व किशनगंज (पुर्णिया)में हुआ था। सेठ लच्छीरामजीका स्वर्गवास संवत १९४४ में हुआ। आपके बाद इस फर्मके व्यापारको सेठ लखमीचंदजीके पुत्र सेठ रायचन्दजी ने सम्हाला आपके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारकी विशेष वृद्धि हुई, आपने बिहार प्रान्तमें जमीदारी खरीद की। आपका स्वर्गवास १९६३ मे हुआ।

सेठ लच्छीरामजीके पुत्र बाबू बींजराजजी, जोरावरमलजी, जगन्नाथजी एवं आसारामजी हुए। एवं सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र धनपतरायजी, पन्नालालजी तथा तेजपालजी है।

वर्तमानमे इस फर्मके प्रधान संचालक सेठ जगन्नाथजी(सेठ रामचन्द्रजीके छोटे भ्राता रामप्रसादजीके पुत्र) ईश्वरदासजी एवं पन्नालालजी है। आपका कुटुम्ब माहेश्वरी समाजमे अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है, नोहरमें आपकी ओरसे एक धर्मशाला एवं कुआ बनवाया गया है। वहा एक स्कूल और औषधालय भी स्थापित है। इसी प्रकार किशनगंजमें भी आपकी ओरसे धर्मशाला बनी है और अस्पताल स्थापित है। सेठ जगन्नाथजी बीकानेर लेजिस्लेटिव्ह असेम्बलीके मेम्बर है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

किशनगंज (पुर्णिया) मेसर्स लच्छीराम लखमीचंद—यह फर्म आरंभसेही इस नामसे व्यापार कर रही है, यहा आपकी बहुत सी जमीदारी है, इसके अलावा कपड़ा गल्ला तथा सराफी कारबार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जगन्नाथ जुगुलकिशोर सदासुखका कटला—जूट और चावलका व्यापार, तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता (टालीगंज) मेसर्स रामेश्वर रायरतन—इस नामसे आपकी ३ राइस फेक्टरी हैं।

पोचागढ़ (जलपाई गौड़ी) बींजराज जगन्नाथ—जमींदारी, कपड़ेका व्यापार और व्याजका काम होता है।

मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सुजानगढ़में है। आप ओसवाल समाजके सिंघी गौत्रीय सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पहिले सेठ ज्ञानचन्दजी सिंघी कलकत्ता आये थे। और मेसर्स रतनचन्द शोभाचन्दके यहां सर्व प्रथम आपने सर्विसकी। सर्विसके साथ २ आपका इस फर्ममें सामा भी हो गया था। करीब ४५ वर्षतक आप इस फर्मके साथ २ कारबार करते रहे। संवत १९५० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके २ पुत्र हुए, बाबू जीतमलजी एवं बाबू प्रेमचन्दजी। संवत् १९५७ तक आप दोनों भाई भी रतनलाल शोभाचन्द फर्मके साथ साथ काम करते रहे। उसके पश्चात् उपरोक्त नामसे आप लोगोंने अपना स्वतंत्र कारबार शुरु किया, अपनी फर्मके कारबारको आप दोनों भाइयोंने अच्छी तरक्की दी, संवत १९६४ में बाबू जीतमलजीका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमे बाबू प्रेमचन्दजी तथा बाबू जीतमलजीके चार पुत्र बाबू मालचन्दजी, बाबू अमीचन्दजी बाबू हुलासचन्दजी और बाबू भीखमचन्दजी है। आप सब व्यापारमें भाग लेते हैं। आप लोगोंकी ओरसे जमालपुरमें जीतमल प्रेमचन्दके नामसे एक पक्कीसड़क बनी हुई है, वहाकेस्कूलमे आपने बोर्डिंग हाउसका मकान बनवाया है, इसके अतिरिक्त सुजानगढके ओसवाल विद्यालयमें भी आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी गई है। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—हेड ऑफिस - मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द १०५ ओल्ड चायना बाजार—यहां जूटका अच्छा बिजनेस होता है। यह फर्म मिलोंको जूट सप्लाई करती है।

जमालपुर—मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द T.A. Sinhgi—यहा जूटकी खरीदी होती है।

मिमनावाड़ी (मैमनसिंह) जीतमल प्रेमचन्द—T. A. Singhi जूटकी खरीदीका व्यापार होता है।

ईसरगंज—जीतमल प्रेमचन्द—यहा भी जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संस

यह फर्म बेङ्किग तथा चांदी सोनेके व्यापारके अतिरिक्त जूट बेलिंग और शीपिंगका व्यवसाय भी करती है। इस फर्मका विस्तृत परिचय बैंकर्समें दिया गया है। कलकत्तेकी नामी मारवाड़ी व्यापारी फर्मोंमें यह भी एक है। इसकी गद्दीका पता १७८ हरिसन रोड है।

मेसर्स हीरालाल अग्रवाला एण्ड कम्पनी

इस फर्मका प्रधान व्यापार चपड़ेका है। सन १९२४ से इस फर्मने जूट बेलिंग तथा एक्स-

बाबू मूलचन्दजी डागा (चेतनदास हजारीमल)

बाबू जगन्नाथजी थिरानी (जगन्नाथ जुगुलकिशोर)

बाबू [illegible] बेद (मेघराज तनसुखदास)

बाबू भागमलजी बेद (मेघराज तनसुखदास)

पोटंका व्यापार भी शुरू किया है। इसके आफिसका पता ४ मिशन रो कलकत्ता है, तारका पता Shellak है।

जूट मरचेंट्स

मेसर्स आसकरण भूतोड़िया

इस फर्मका हेड आफिस २२४ हरिसन रोड है। इसके वर्तमान संचालक बाबू आसकरणजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज १४२ मे दिया गया गया है। यहांपर यह फर्म जूट, हुण्डी चिट्ठी और सराफ़ीका काम करती है। तारका पता "Bhutodia" है।

मेसर्स कस्तूरचन्द भगवानदास

इस फर्मके मालिक सरदार शहरके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य ज्ञातिके चौधरी सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ६ वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म मेसर्स किशनदयाल भगवानदास के नामसे संवत् १९५१ से काम कर रही थी। इसके भी पहले इसका स्थापन डिबरूगढ़में हुआ था। इस फर्मपर आरंभसे ही चालानीका काम होता रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक भगवानदासजी तथा झावरमलजी है। आपने इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। आपने ही इस फर्मपर जूटका व्यापार प्रारंभ किया। तथा हालहीमे श्रीगणेश जूट मिल नामक एक छोटे जूट मिलकी स्थापनाकी है। इस मिलके सफलता पानेपर छोटी पूंजीसे जूट मिल चालू करनेका अच्छा मार्ग पैदा हो जायगा।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—कस्तूरचन्द भगवानदास १७८ हरिसन रोड—यहा जूटका व्यापार तथा सराफ़ीका काम होता है।

कलकत्ता—हवड़ा—श्रीगणेश जूट मिल ६६ हवड़ा रोड सलकिया यहां आपका एक जूट मिल है।

मेसर्स कन्हैयालाल लोहिया एण्ड सन्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास चूरू (बीकानेर स्टेट) में है। आप अग्रवाल समाजके लोहिया सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० कन्हैयालालजी लोहिया हैं। आप उन सज्जनोंमेंसे

हैं जो आपने निजी परिश्रम, और अध्यवसायके बलपर बहुत साधारण स्थितिसे उठकर ऊंची स्थितिमें प्रवेश करते है। आप करीब २५ वर्ष पूर्व देशसे कलकत्ता आये, सब प्रकारकी दलालीका काम आरंभ किया करीब १०।१२ वर्षतक आप इस कामको करते रहे, इस कार्य्यमे आपने बहुत सफलता प्राप्त की। दलालीके पश्चात् आपने जूट और पीस गुड्सका बिजिनेस आरंभ किया, तथा टाटा संस लिमिटेडके बेनियन हो गये, इस समय जूटके बजारमें आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

वर्तमानमें आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल लोहिया एण्ड कम्पनी १७४ हरिसन रोड T. A. jutewala T. No 652 B. B.—यह फर्म हण्डरसन राइट कम्पनीकी बेनियन है, इसके अतिरिक्त जूट, चीनी तथा पीस गुड्सका व्यापार होता है।

मैमनसिंह मेसर्स कन्हैयालाल लोहिया एण्ड कम्पनी T. A. Lohia—जूटका व्यापार होता है।

ईसरगंज—कन्हैयालाल लोहिया एण्ड कम्पनी T. A. Lohia—जूटकी खरीदीका काम होता है।

गौरीपुर— " " " "

किशोरगंज— " " " "

नेत्रकोना— " " " "

तारपासा — " " " "

इसके अतिरिक्त जूट सीजनमें आपकी कई टेम्परेरी ब्रांचेज़ खुलजाया करती हैं।

मेसर्स कुशलचन्द चुन्नीलाल

इस फर्मका हेड आफ़िस सिराजगंज है। वहां यह फर्म करीब ८० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। यहां इसका आफिस ३६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यह फर्म यहां जूट, और हुण्डी चिट्ठीका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नम्बर १६४ में मेसर्स जीवनदास चुन्नीलालके नामसे दिया गया है।

मेसर्स कालुराम नथमल

इस फर्मका हेड आफ़िस कूचविहारमें है। यहां यह फर्म ४६ स्ट्रांड रोडमें व्यवसाय करती है। इसपर जूट, बैंकिंग और शिपिंगका व्यापार होता है। इसका तारका पता Duleeraj है—इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके बंगाल विभागके पृष्ठमें ९ दिया गया है।
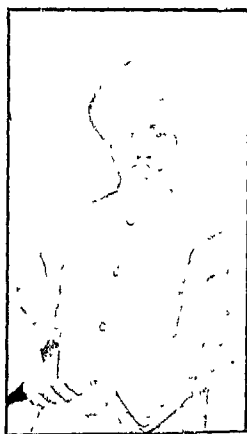
बा० प्रेमचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० अमीचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० मानकचन्दजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० धनराजजी सिंघी (जीतमल प्रेमचन्द)

बा० जयचन्दलालजी वेद (जसराज जेचन्दलाल)

बा० बींजराजजी पूंगलिया (बींजराज जैचंदलाल)

बा० [illegible] वेद (जसराज जेचन्दलाल)

बा० मगराजजी पूंगलिया (बींजराज जेचन्दल

मेसर्स जेसराज जैचन्दलाल वैद

इस फर्मके संचालक राजलदेसर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल श्वेताम्बर तेरापंथी जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। संवत् १९०५ में सेठ जेसराजजी तथा आपके बड़े भ्राता सेठ लच्छीरामजीके हाथोंसे मेसर्स खड़गसिंह लच्छीरामके नामसे फर्म स्थापित हुआ था। इस फर्मकी विशेष उन्नति आप दोनोंहीके हाथोंसे हुई। शुरूसे इस फर्मपर बैंकिंग तथा चलानीका काम होता था। संवत् १९१७ में सेठ जेसराजजीका स्वर्गवास होगया। आपके पुत्र सेठ जैचन्दलालजीका जन्म सं० १९१२ में हुआ। छोटी वयसे ही आप दुकानका काम देखने लग गये। संवत् १९३९ तक इस फर्म पर इसी नामसे व्यापार होता रहा पश्चात् सेठ जैचन्दलालजीने अपना व्यवसाय अलग कर लिया। तथा मेसर्स जेसराज जैचन्दलालके नामसे व्यापार करना शुरू किया। इसी समय नाटोर (राजशाही) में आपने अपनी एक ब्रांच स्थापित की। इस पर इस समय बैंकिंग तथा चलानीका काम होता है। संवत् १९५७ में आपने अपनी एक और शाखा दिनाजपुरमें मेसर्स बींजराज सिंचयालालके नामसे चांदी, सोना, बैंकिंग, तथा धान चावलके व्यापारके लिये खोली। संवत् १९५९ में आपने रामागढ़ी नामक स्थान पर जूटके व्यापारके लिये एक और शाखा स्थापित की। तथा इसी समयसे उपरोक्त सब फर्मों पर जूटका व्यापार शुरू किया।

कलकत्ता फर्म पर संवत् १९६५ में आपने जूटकी पक्की गाठोंके बेलिंगका भी काम प्रारंभ किया। जिसमें आपका मार्का जैचंद एम० गुप हुआ। आज कल इस मार्केको मेसर्स जे० सी० डफस एण्ड कम्पनी लिमिटेड पेक करती है। संवत् १९६७ में आपने जैपुरहाट एवम जमाल गज नामक स्थानों पर हीरालाल चांदमलके नामसे जूटके एवम धान चावलके व्यापारके लिये दो और शाखाएं स्थापित कीं।

उपरोक्त प्रायः सभी स्थानों पर आपकी स्थायी सम्पत्ति मकान, गोदाम आदि बने हुए हैं। तथा सोना तोलाके प स ल ल काबुलपुरके पाच मौजेकी जमींदारी भी आपकी है। यह सब सेठ जैचन्दलालजी द्वारा हुई है। आपका स्वर्गवास संवत् १९६९ मे हुआ। आप बड़े व्यापार कुशल एवम् मेधावी व्यक्ति थे। आपने राजलदेसरसे २ मील की दूरी पर राजाणां नामक स्थान पर एक धर्मशाला तथा कुए बनवाये हैं। बीकानेर दरबारमें आपका अच्छा सम्मान था। आपको वहांसे छड़ी चपरास भी बक्षी गयी थी।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ जयचंदलालजीके सात पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बा० बींजराजजी, सिंचयाललजी, हीरालालजी, चादमलजी, नगराजजी, इन्द्रराजमलजी एवम चम्पालालजी

हैं। आप सब लोग व्यापारमें भाग लेते है। आपके आठवें पुत्र बा० हंसराजजीका १९८२ के सालमें स्वर्गवास होगया है।

इस फर्मके मुख्य कार्यकर्ता बा० बींजराजजी है। आपका अंग्रेजी फर्मोंके साथ विशेष परिचय है। यह फर्म मेसर्स लेडलो जूट कम्पनी लि०, मेसर्स जे० सी० डफस एण्ड कम्पनी लिमिटेड आदि कई अंग्रेज फर्मोंके साथ जूट सेलिंगका व्यापार करती है। मेसर्स जे० सी० डफस कम्पनीकी तो जूट खरीदी प्रायः आपहीके यहा होती है।

इस फर्मने संवत् १९७६ में कपडेका व्यापार प्रारंभ किया। संवत् १९८३ से यह फर्म मेसर्स केट्ल बुल बुलन एण्ड कंपनी लिमिटेड (Kette well bnllen & Co Ltd) के पीस गुड्स डिपार्टमेंटकी सोल बेनियन हुई। हालहीमें इस फर्मने देशी सूतके व्यापारको भी प्रारंभ किया है। इस समय यह फर्म मेसर्स बावरिया काटन मिल कम्पनी लिमिटेड, दी डनबार मिल्स लिमिटेड, और दी न्यूरिंग मिल कम्पनी लिमिटेडके सूतकी सोल बेनियन और ब्रोकर है।

इस फर्मके संचालक शिक्षित; एवम मिलनसार व्यक्ति है। राजलदेसरमें स्टेट स्कूलके खुलवानेमें आपलोगोंने अच्छा परिश्रम किया तथा आर्थिक सहायता भी प्रदानकी। सेठ बींजराजजी, राजलदेसरकी म्युनिसिपेलिटीके वाइस चेअरमैन हैं। बीकानेर स्टेटमें आपका अच्छा सम्मान है। आप यहाकी हाईकोर्टके जूरी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जेसराज जैचन्दलाल १४२ कॉटन स्ट्रीट T.A. Capable T.No 1258 B. B. यहां इस फर्मका हे०आ०है। यहां जूट,बैंकिंग,पीसगुड्स एवं देशी सूतका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जेसराज जैचन्दलाल ११४ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका थोक तथा खुल्ला व्यापार होता है।

कलकत्ता - मेसर्स जेसराज जैचन्दलाल १४३—५ दरमाहट्टा T. No. 1259—यहां जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—२१ स्ट्रांड रोड—यहा केटलवुलके पीसगुड्स डिपार्टमेंट और तीनों सूतकी मिलोंकी बेनियनशिपकी आफिस है।

दिनाजपुर—मेसर्स बींजराज सिंचयालाल—यहा जूट और चावलका व्यापार तथा कमीशनका काम होता है।

नाटोर (राजशाही) मेसर्स जैसराज जैचन्दलाल—यहा जमीदारी, बैङ्किग, जूट एवम गल्लेका काम होता है।

बा० मोतीलालजी (तिलोकचन्द डायमल)

बा० खूबचन्दजी (तिलोकचन्द डायमल

बा० लाभचन्दजी (तिलोकचन्द डायमल)

बा० मोतीलालजी दरंभा (लछमनदास ...)

रामगढ़ी (राजशाही) मेसर्स जेसराज जयचन्दलाल—यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

जयपुर हाट (बोगरा) हीरालाल चांदमल—यहां जूट एवं चावलका व्यापार होता है।

जमालगंज (बोगरा) मेसर्स हीरालाल चांदमल—यहां जूट एवं चावलका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त सीजनके समय आपकी और भी शाखाएं खुल जाया करती हैं। लाड़नू, [मारवाड़] पेड़ा [पवना] आदि स्थानों पर आपकी अच्छी इमारतें बनी हुई हैं सोना तोला [बोगरा] के पास आपकी जमींदारी भी है।

मेसर्स तिलोकचंद डायमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बिदासर (बीकानेर) है। आप ओसवाल तेरापंथी जैन समाजके दूगड़ सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब १०० वर्ष पूर्व सेठ जेसराजजीने गोहाटीमें किया था। सेठ जेसराजजीके दूसरे भागीदार बाबू चुन्नीलालजी थे, इस फर्मके व्यापारको बाबू चुन्नीलालजीके हाथोंसे विशेष तरक्की प्राप्त हुई।

सेठ जेसराजजीके दो पुत्र बाबू तिलोकचंदजी एवं हाफमलजी हुए। तथा बा० चुन्नीलालजी के पुत्र बाबू रतनचंदजी, बाबू फतेचंदजी एवं बाबू तनसुखदासजी हैं। इन सज्जनोंमेंसे बाबू तिलोकचंदजी, बाबू हाफमलजी एवं बाबू पनेचन्दजीका कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ तिलोकचन्दजीके पुत्र लाभचन्दजी, सेठ हाफचन्दजीके पुत्र जेठमलजी, खूबचन्दजी, डायमलजी तथा सेठ पनेचन्दजीके पुत्र मोतीलालजी एवं मूलचन्दजी हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गोहाटी—मेसर्स जेसराज तिलोकचन्द लाभचन्द फांसी बाजार T. A. Dugargi—यहां सरसों पाट गल्ला और किरानेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तिलोकचन्द डायमल ७।१ बाबूलाल लेन T. A. Sinciable, Phone No 546 B.B.—यहां धोतीका इम्पोर्ट, पाटका व्यापार एवं सराफी लेन देनका काम होता है।

कलकत्ता—तिलोकचन्द डायमल क्रास स्ट्रीट—यहां धोतीका व्यापार होता है।

खारूपाटिया (आसाम) जेसराज तिलोकचन्द लाभचन्द—पाट एवं सरसोंकी खरीदीका व्यापार होता है।

मेसर्स नौरंगराय नागरमल

इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रंथमें बंगाल विभागके पेज नं० ६५ मे दिया गया है।

यह फर्म यहां जूटका व्यापार करती है। इसका आफिस ४३ कॉटन स्ट्रीटमें है तारका पता—"Nominator" है।

मेसर्स फतेहचन्द चौथमल करमचन्द

इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रंथमें बंगाल विभागके पेज नं० ६८ में दिया गया है। यहा यह फर्म जूट, हैसियन एवं बैङ्किग व्यापार करती है इसका आफिस १३ नारमल लोहिया लेनमें है। तारका पता—"Better" है।

मेसर्स बिंजराज जयचन्दलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान श्रीडूंगरगढ है। आप ओसवाल वैश्य जातिके पूंगलिया सज्जन है। कलकत्तेमे इस फर्मकी स्थापना संवत् १९६२ में हुई। इसके स्थापक बा० ताराचंदजी थे। इसका हेड आफिस डफरकामें है। वहां इसकी स्थापना संवत् १९४० में हुई। इस फर्मकी विशेष उन्नति बाबू ताराचंदजीके हाथोंमे हुई। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में हो गया।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक श्रीयुत ताराचंदजीके छोटे भाई बींजराजजी तथा ताराचंदजीके पुत्र जयचंदलालजी और उनके तीन भाई हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डफरका [भागलपुर]—मेसर्स रावतमल ताराचंद—यहा कपडा, जूट तथा घी का व्यापार होता है।

छत्तापुर [भागलपुर]—मेसर्स रावतमल ताराचंद—यहा जूट, कपड़ा और गल्लेका व्यापार होता है।

साहबगंज—मेसर्स रावतमल बींजराज—यहा गल्ला और जूटका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बींजराज जयचंदलाल २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट T. A. Bijap T. No. 666 B.B. यहा जूटका व्यापार तथा कपडेकी कमीशन एजंसीका काम होता है।

डोमार [बंगाल]—मेसर्स ताराचंद बींजराज—यहा जूट तथा तमाखूका व्यापार होता है।

फारबिसगंज [पूर्णिया]—मेसर्स बिरदीचंद नेमचंद—यहा जूट खरीदी तथा गल्ला और कमीशन एजंसीका काम होता है।

दुमदणी [जलपाई] जयचंदलाल नेमचंद—यहा जूटकी खरीदीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त मौसिममे आपकी और भी टेम्परेरी शाखाएं खुल जाया करती है।

मेसर्स मालमचंद मन्नालाल

इस फर्मका हेड आफिस तुलसीघाटमे (बंगाल) है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ५६ में दिया गया है। यहा यह फर्म जूटका व्यापार करती है इसका आफिस ६५।३ पाचागलीमें है।

मेसर्स मुरलीधर चनेचन्द

इस फर्मका हेड आफिस सैदपुरमे (बंगाल) है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके बंगाल विभागके पेज नं० ३२ में दिया गया है। यहा इस फर्मका आफिस १७८ हरिसन रोडमें है। इस पर जूटका काम होता है। तारका पता Rainforce है।

मेसर्स मेघराज ऊमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजलदेसर (बीकानेर) है। इस फर्मके मालिक श्रीयुत लच्छीरामजीके वंशज हैं। श्रीयुत लच्छीरामजी वेदके छोटे भाई मेघराजजीके तीन पुत्र थे। छोगमलजी, उमचंदजी एवम तनसुखदासजी। इनमेसे श्रीयुत छोगमलजीकी फर्म मे० मेघराज छोगमल तथा उमचन्दजीकी फर्म मेसर्स मेघराज उमचन्दके नामसे व्यापार करती है। श्रीयुत उमचंदजीका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक ऊमचंदजीके सात पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः मालचंदजी, शोभाचन्दजी, हीरालालजी, संतोषचंदजी, चम्पालालजी, सोहनलालजी, तथा श्रीचंदजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

राजशाही—मेसर्स मालचंद शोभाचंद घोड़ामारा—यहा आपकी बहुतसी जमीदारी है। तथा जूट बैंकिंग और कपड़ेका व्यापार होता है पाना नगर और सारागाव आपकी जमींदारी में है।

कलकत्ता—मेसर्स मेघराज उमचंद २६।१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Sohonmoll यहा जूट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है

कुचबिहार—मेसर्स शोभाचंद श्रीचंद—यहां जमींदारी, जूट तथा गल्लेका काम होता है।

जूटके समयमें आपकी चारमोगरिया,झावसा,मैमनसिंह, दिनाजपुर, जमालगंज आदि स्थानों पर टेम्परेरी एजंसिया खुल जाया करती है।

मेसर्स मेघराज तनसुखदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजलदेसर (बीकानेर) है। यह फर्म मेसर्स खड्गसिंह लच्छीरामके फर्ममेंसे निकली हुई है। जिसकी स्थापना कलकत्तेमे संवत् १६०५ में हुई थी यह फर्म लच्छीरामजीके भाई मेघराजजी वैदके पुत्र श्री तनसुखरायजीकी है। पहले संवत् १६५३ से यह फर्म मेघराज छोगमलके नामसे व्यापार करती रही। पश्चात् संवत् १६७०से उपरोक्त नामसे यह व्यापार कररही है।

वर्तमानमें इसके मालिक सेठ तनसुखदासजी तथा आपके पुत्र बा० भूरामलजी हैं। आप दोनोंही सज्जन एवं मिलनसार व्यक्ति हैं। भूरामलजी, उत्साही एवं व्यापार कुशल सज्जन हैं। राजलदेसर स्टेशन पर आपकी फेमिली की ओरसे धर्मशाला बनी हुई है। श्रीयुत भूरामलजीके तीन पुत्र हैं। राजलदेसरमें आपकी बहुत अच्छी इमारतें तथा नोहरे बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मेघराज तनसुखदास १६ सेनागो स्ट्रीट—यहां बैंकिंग जूट तथा कमीशन एजंसी का काम होता है।

चापाई—नवाबगंज—मेसर्स तनसुखदास भूरामल -यहां आपकी इमारतें बनी हुई हैं। तथा जूट कपड़ा बैंकिंग और गल्लेका व्यापार होता है।

जूटकी मौसिममें आपकी टेम्परेरी शाखाएं और खुल जाया करती हैं।

मेसर्स मेघराज छोगमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजलदेसर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके वैद सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ८० वर्ष हुए। सर्व प्रथम इसकी स्थापना सेठ लच्छीरामजीने की। इस फर्मपर पहले मेसर्स खडगसिंह लच्छीराम नाम पड़ता था। हिस्सारसी हो जानेसे अब उपरोक्त नामसे व्यापार होता है। सं० १६५३ सेही आप इस नामसे व्यापार करते हैं

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ छोगमलजीके पुत्र श्री० मीनालालजी तथा कालूरामजी हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मेघराज छोगमल १५ नारमल लोहिया लेन—यहां जूट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

स्व० सुखरामजी मोर (रामसहायमल मोर)

बा० रामसहायमलजी मोर (रामसहायमल मोर)
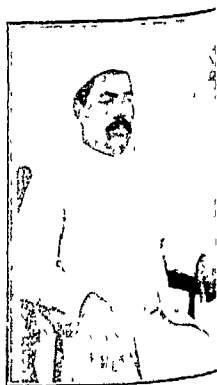
बा० मनसुखरामजी मोर (रामसहायमल मोर)

अडंगाबाद (मुर्शिदाबाद)—मेघराज छोगमल—यहां आपकी जमींदारी है। तथा कपड़े और बैंकिंगका काम होता है।

मेसर्स रावतमल पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू झूतामलजी एवम आपके पुत्र पन्नालालजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४१ में मेसर्स धरमसी माणकचन्दके नामसे दिया गया है। यहा यह फर्म जूट, बैंकिंग और आढ़तका काम करती है इसका आफिस नं० ३७।३८ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है।

मेसर्स रामसहायमल मोर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) है आप अग्रवाल वैश्य-समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ मुखरामजी मोर करीब ४५ वर्ष पूर्व देशसे कलकत्ता आये थे। आरंभमें आप अफीमकी दलालीका काम करते रहे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हो गया है।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ मुखरामजी मोरके पुत्र बा० रामसहायमलजी और भतीजे बा० मनसुखरामजी हैं। बा० मनसुखरामजीने करीब ५ वर्ष पूर्व हेसियनका काम शुरू किया। आपकी फर्म गनीट्रेड एसोसियेशनकी सब्जेक्ट कमेटीकी मेम्बर है। बा० रामसहायमलजी मोर ईस्ट इण्डिया जूट एसोसियेशनके डायरेक्टर है।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामसहायमल मोर ५ चितपुरस्पेर-T. A. M. r Co—यहा हेड आफिस है तथा हाजर रूईका व्यापार, चांदीका इम्पोर्ट, सराफी, तिसी आदिका व्यवसाय और मिलोंको जूट सप्लाईका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामसहायमल मोर ५५ क्लाइवरो—हेसियन तथा जूटका कारवार होता है।

मेसर्स कन्हैयालाल रामसहाय १७५ हरिसन रोड—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और कमीशनका काम होता है।

माणकचर (आसाम) रामसहायमल ब्रजलाल—यहा आपकी श्रीकृष्ण कॉटन जीनिंग फेक्टरी है तथा रूईका व्यापार होता है। और जूटकी खरीदी का काम होता है।

तिवरा रामसहायमल ब्रजलाल,—जूटका व्यापार होता है।

दुलीचन्दजी, बाबू छोगमलजी, बाबू भैरोंदानजी, बाबू मुकनमलजी, बाबू रेखचन्दजी, बाबू रिखबचंदजी तथा बाबू हीराचन्दजी हैं। सेठ मेघराजजीके पुत्र बाबू सुगनमलजी, रूपचन्दजी तथा अमरचन्दजी हैं। आप सब लोग व्यवसायमें भाग लेते हैं। आप लोगोंकी फर्मपर श्रीलादूरामजी धीया लाडनू निवासी करीब २६ वर्षोंसे, बाबू हरकचन्दजी दूगड़ ३६ वर्षोंसे तथा बाबू जुहारमलजी दूगड़ ५० वर्षोंसे मुनीमातका काम कर रहे हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चीलमारी (बंगाल)—मेसर्स लालचन्द अमानमल (हेड आफिस)—यहां जूट तथा कपड़ेका व्यापार और सराफी लेन देन होता है।

चीलमारी—मेघराज दुलीचंद—यहा जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लालचन्द अमानमल ४ राजा उडमंड स्ट्रीट T No 2874 Cal, T. A. Gogulanbasi—यहा जूटका व्यापार, कपड़ेकी चलानीका काम तथा सराफी लेनदेन होता है।

माणकेश्वर (धूब्री) लालचन्द अमानमल—यहा जूटका व्यापार होता है।

सोनामगंज (सिलहट) लालचन्द अमानमल—यहा जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मका हेड आफिस डिबरूगढ़ (आसाम) में है। वहां यह फर्म कई वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके डिबरूगढ़ पोर्शनमें दिया गया है। यहा यह फर्म जूट, बैंकिंग और कमीशनका काम करती है। इसका आफिस ४ दहीहट्टामें है। तारका पता है "Hukum"।

मेसर्स शंभूराम प्रतापमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० नेमीचन्दजी वेद हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६८ में दिया गया है। यहाँ इसका आफिस ७।१ मारवाड़ी लेनमें है। यह फर्म यहा जूट एण्ड कमीशन एजंसीका व्यापार करती है।

स्व० श्रीकृष्णदासजी करनानी
(श्रीकिशनदास कन्हैयालाल)

बा० अमरचन्दजी (लालचन्द अमानमल)

बा० कन्हैयालालजी करनानी
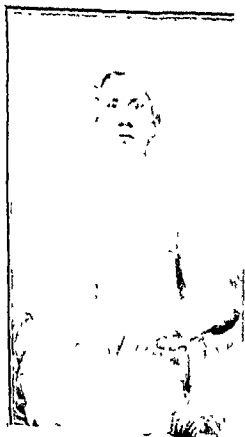
मेसर्स शोभाचंद सोहनलाल

इस फर्मका हेड आफिस डोमारमें (बंगाल) है। अतएव इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० २६ में दिया गया है। यहा इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स सूरजमल गनेशराम

इसफर्मके वर्तमान मालिक बाबू मुखालालजी हैं। आप लोसल (मारवाड़)के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके खेतान सज्जन हैं। बाबू मुखालालजी करीब २० वर्ष पूर्व देशसे खुलना आये, वहां आपने पाट, चावल और कमीशनका काम शुरू किया। आप उत्साही व्यक्ति हैं, इसलिये व्यापारकी बराबर तरक्की करते गये। संवत् १९८१ में आपने कलकत्तेमें दुकान स्थापित की।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू मुखारामजी एवं आपके छोटे भाई श्रीडेडराजजी हैं। मुखालालजीके पुत्र भूदरमलजी पढ़ते हैं। लोसलमें आपने पाठशालाके लिये एक मकान दिया है तथा गांवमें एक कुआ बनवाया है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल गनेशराम १६।१।१ हरिसन रोड—यहां जूटकी आढ़तका व्यापार होता है।

खुलना—गनेशराम मुखालाल – जूटकी खरीदी और दुकानदारीका काम होता है।

मागरा (बंगाल) मुखालाल डेडराज— „ „ „ „

विनोदपुर (जेसोर) मुखालाल डेडराज—जूटका व्यापार होता है।

दौलतपुर मुखालाल भूदरमल जूटकी खरीदीका काम होता है

मेसर्स हुकुमचंद हुलाशचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गोविंदरामजी बाबू तिलोकचन्दजी तथा बाबू रूपचंदजी नाहटा है। आप ओसवाल समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन है। बंगाल तथा आसाम प्रांतमे इस फर्मपर कई स्थानोंमें जूटकी आढ़त आदिका व्यापार होता है। इस फर्मका कलकत्तेका पता ४ दहीहट्टा स्ट्रीटमें है। यहा जूटका व्यापार, बेङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है। T. A. ENOUGH तथा T. NO. 1095 B. B. है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रोंसहित इसी ग्रन्थके राजपूताना विभागके पेज नं० १४६ में दिया गया है।

मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान एहलनाबादमें था मगर करीब ४३ वर्षोंसे आप लोग सरदार शहरमें रहते हैं। आप माहेश्वरी जातिके करनानी सज्जन हैं। करीब ७५ वर्ष पूर्व इस फर्मकी स्थापना दार्जिलिंगमें हुई थी। इसके स्थापक सेठ हीरालालजी थे। आपका स्वर्गवास होगया है आपके पश्चात् इस फर्मकी आपके पुत्र श्रीकिशनदासजीने उन्नति की। आपने करीब ४० वर्ष पहले कलकत्तेमे अपनी एक ब्राच खोली। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। आपके इस समय २ पुत्र हैं। श्रीयुत कन्हैयालालजी तथा श्रीयुत जगन्नाथजी। आप दोनों ही व्यापार करते हैं। श्रीयुत कन्हैया लालजीके चार पुत्र और श्रीयुत जगन्नाथजीके ७ पुत्र।

इस फर्मके मालिकोंकी ओरसे लुणकरनसर (बीकानेर) नामक स्थानपर एक धर्मशाला तथा कुंआ और सरदार शहरके आसपास तीन चार कुएं तथा कुंड बने हुए है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल २२८ हरिसन रोड T. A. Karnani. T. No. 2941 B.B.—यहा बैंकिंग और जूटका व्यापार तथा आयर्न शीट्सका इम्पोर्ट होता है। कमीशन एजंसीका काम भी यह फर्म करती है।

दार्जिलिंग—मेसर्स श्रीकिशनदास कन्हैयालाल—यहा बैंकिंग, किराना तथा सोने चांदीका काम होता है। यहा आपकी करनानी बिल्डिंगके नामसे एक इमारत बनी हुई है।

कलकत्ता—कन्हैयालाल रामचन्द्र—इस नामसे यहा जूटका व्यापार होता है।

जूट मरचेंट्स, बेलर्स एण्ड शिपर्स

अमेरिकनमेन्यूफेक्चरिङ्ग कम्पनी ४ लियास रेंज चौथा तल्ला
अण्डर राइट एण्ड को० २२ स्ट्राड रोड
आशाराम धृद्धिचन्द २०६ हरिसन रोड
आशाराम मिर्जामल रेसी१८ सैय्यद साली लेन
आसकरण भुतोरिया २२४ हरिसन रोड
आसकरण चोथमल ४२ आरमेनियन स्ट्रीट
इण्डिया ट्रेडिङ्ग कम्पनी ११ क्लाइव स्ट्रीट
इण्डो—योरोपियन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० सी ३ क्लाइव स्ट्रीट
उपेन्द्रमोहन चौधरी
उदयचन्द पन्नालाल ३६ आर्मेनियन स्ट्रीट
ए० डमियानो एण्ड को०
ए० एच० गजनवी एण्ड को०
ए० मैकग्रेगर एण्ड को०
ए० एम मायर एण्ड को०
ए० के० मुकुर्जी एण्ड को०
ए० सी० पाल एण्ड को० कमर्शियल बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीट
ऐंग्लो—डच कर्पोरेशन लि० ३ क्लाइव रो
ओंकारमल महादेव १५ क्लाइव रो०

करनीदान रावतमल १४६ हरिसन रोड
काकूस ब्रदर्स (डंडी) लि० १ सी हेयर स्ट्रीट
कालूराम नथमल ४६ स्ट्राण्ड रोड
केशोराम पोद्दार एण्ड को०
क्लाइव रो० ६ कन्नूलाल लेन
के० एल० चौधरी एण्ड को०
के० एन० लायर एण्ड को०
के० सी० मल्लिक एण्ड को०
खेतर सिकद्दर एण्ड को०
गनेशप्रसाद महादेवप्रसाद एण्ड को०
गनेश दास दीवान बहादुर केशरीसिंह
काँटन स्ट्रीट
गांगजी साजन एण्ड को० ७१ कैनिंग स्ट्रीट
गिलैण्डर आरबुथनाट एण्ड को०
गिरधारीमल रामलाल गोठी आर्मेनियन स्ट्रीट
गोगराज ज्वालाप्रसाद ४२ शिवतल्ला स्ट्रीट
गोपालचन्द्र दूगड़ एण्ड को०
ग्लैडस्टन विली एण्ड को०
चन्दनमल कानमल लोढ़ा १७८ हरिसन रोड
चन्दनमल चम्पालाल १ गन फाउण्डरी रोड
चन्दनमल कुन्दनमल
चन्दनमल गनेशमल
चटगांव कम्पनी लि०
चांदमल भोजराज ४ राजा उडमंड स्ट्रीट
चांदमल चम्पालाल राजाउडमंड स्ट्रीट
चांदमल ढढा सी०आई०ई०३७ कैनिंग स्ट्रीट
चिमनीराम जसवन्तमल १६ वोन फिल्डलेन

चेतराम रामविलास आर्मेनियन स्ट्रीट
चोकचन्द कालूराम
चोथमल जयचंदलाल गोठी
चौधरी एण्ड को०
चुन्नीलाल भैरवदान
चार्ल्स हास्टन एण्ड को०
छन्नालाल सोहनलाल
छोटूलाल जुहारमल
जयदयाल कसेरा एण्ड को० २ रायल
एक्सचेंज प्लेस
जयदयाल मदन गोपाल १८ मल्लिक स्ट्रीट
जयनारायण ब्रदर्स
जार्ज हेण्डरसन एण्ड को०
जापान कॉटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि०
जार्डीन स्किनर एण्ड को०
जीवनमल चन्दनमल १ गनफाउण्डरी रोड
जीवनराम जुहारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट
जीतमल प्रेमचन्द १०५ ओल्ड चीना बाजार
जूट एण्ड गनी ब्रोकर्स लि०
जेसराज गिरधारीलाल
जेसराज जयचन्दलाल १४२ कॉटन स्ट्रीट
जेम्स स्काट एण्ड सन्स लि०
जी० ए० जार्गेडी एण्ड को०
जे० थामस एण्ड को०
जे० ए० वार्नेट एण्ड को०
जे० सी० गैलस्टन
जे क्रिम नहपाइट एण्ड को० लि०

जी० एण्ड एम० फास्ट
जेम्स फिनले एण्ड को० लि०
स्कीफो एण्ड को०
टीकमचन्द सन्तोखचन्द
टीकमसी सवानसुख
टी० एल० ब्रूक्स
टी० एम० थाडियस एण्ड को०
डी० ककरानियां एण्ड को०
डी० एल० मिलार एण्ड को०
डेमिट्रियस ब्रदर्स ५७ राधा बाजार स्ट्रीट
तनसुखराय मेघराज
ताराचंद रामप्रताप ४२ स्ट्रांड रोड
थानसिंह करमचंद दूगर १५ पांचागली
थामस डफ एण्ड को० लि०
दीनबन्धु प्राणबन्धुशा चौधरी
दुलीचंद थानमल १०५ ओल्ड चायनाबाजार
दौलतराम रावत मल १७८ हरिसन रोड
टे० एच० पी० एण्ड सन्स
नार्दन बंगाल कम्पनी लि०
नारायण रंज एण्ड को०
पावल पोगोसे
प्रतापमल रामेश्वर ४६ स्ट्रांड रोड
पी० ई० गजदर एण्ड को०
पी० जी० एण्ड डब्लू शाहु
पी० एम० गिरन एण्ड को०
फतेचंद पानाचंद परमचंद
फर्रम, फार्रम मेस्पल एण्ड को०

फूलचन्द सरावगी
बद्रीदास फूलचंद
बलदेवदास रामेश्वर नाथानी
मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
बक्सीराम ऋद्धिकरन सेठिया
वर्थार्ड एण्ड को०
बिड़ला ब्रदर्स लि० ८ रायल एक्सचेन्ज प्लेस
बंशीधर बैजनाथ ६१ हरिसन रोड
बंशीधर जुगल किशोर
बिरकू मियर ब्रदर्स
बी० एन० पाल एण्ड को०
बींजराज जोरावरमल बाठिया
बृद्धिचंद्र केशरीचंद
ब्लैकवुड ब्लैकवुड एण्ड को०
बी० चन्द्या एण्ड सन्स
बी० के० राय चौधरी एण्ड को०
भागचंद नेमचन्द २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट
भीखमचन्द चोर्डिया ४ राजा उडमण्ड स्ट्रीट
भैरवदान चुन्नीलाल
महेन्द्रनाथ गुनी
मधुलाल रिखवचन्द
मर्कैन्टाइल यूनियन
मगनीराम बागड़ एण्डको० ६५ घांसतल्लास्ट्रीट
मालमचन्द सुरजमल बाग बाजार
मासे एण्ड को०
मिचेल एड को०
मित्स्यू बुपान कैशा लि०

मुलतानमल जोहारमल

मूलचन्द वाजमल

मूलचन्द तोलाराम

मैकलाड एण्ड को०

मैंगोस एण्ड को०

मोहनी मोहन एण्ड ब्रदर्स

मोहन लाल लक्ष्मीनारायण

मोरान एण्ड को० ४ लियान्सरेञ्ज

मोरगन ट्रेडिङ्ग एण्ड को०

मोरगान वकर एण्ड को। ८ क्लाइव स्ट्रीट

मोतीचन्द ऋद्धिकरन

यू० एन० बोस

एल० कोठारी एण्ड सन्स

लैंनडेल एण्ड क्लार्क लि०

लैनडेल एण्ड मोरगन

लो० एच० बी० एण्ड को लि०

लडलो जूट कम्पनी लि०

लियाल मार्शल एण्ड को०

रघुनाथदास शिवलाल ६२ क्लाईव स्ट्रीट

रतनचन्द शोभाचन्द

आर० के० मोदी

आर० टी० स्टैन ली

आर० स्टील को० लि०

राय मोहनलाल खत्री बहादुर
बांदा घाट सलकिया

रायली ब्रदर्स लि०

रामदत्त गंगाबक्ष १८ मल्लिकस्ट्रीट

रामदत्त रामकृष्णदास
१४५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट

रामनिरंजन बद्रीदास ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट

रामप्रसाद महादेव क्लाईव स्ट्रीट

रामप्रताप नेमानी

राम सहायमल मोर ७ जी० क्लाइव रो०

रामसुन्दर सिकदर

राजकुमार मुकर्जी एण्ड को०

सर स्वरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को
३ क्लाईवस्ट्रीट

सनेहीराम शिवप्रसाद

सरकीज एण्ड को०

सरकीज एम० एण्ड सन्स

सागरदत्त नेफ्यून

सासुन० ई० डी० एण्ड को० लि०

सासुन० एम० ए० एण्ड सन्स लि०

सरदारमल जेसराम

शिवराम रामरिखदास

शिवदयाल रामजीदास मछुआ बाजार

शिखरचन्द सरावगी

सिनक्लेयर मरे एण्ड को० लि०

सुरजमल नागरमल ६१ हरिसन रोड

सुरजमल आसकरण

सुरजमल लालचन्द

सुराना एण्ड को०

सेड़ा एण्ड को० लि०

सेवाराम रामऋखदास

सोभागमल शिखरचन्द
सोहनलाल दूगड़
सोवाचन्द धनराज
सोनीराम जीतमल कैनिंग स्ट्रीट
स्टाल अर्ल एण्ड को० लि०
हजारीमल मुल्तानमल
हरत्तराय चमड़िया एण्ड सन्स
१७८ हरिसन रोड
हरगोविन्दराय मथुरादास ७० काटन स्ट्रीट

हरसुखराय दुलीचन्द
हरसुखदास बालकृष्ण २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
हरसुखदास दुलीचन्द
हीरालाल अग्रवाला एण्ड को०
हीरालाल बींजराज
हीरालाल चन्दनमल
हुकुमचन्द हुलासचन्द
होअर मिलर एण्ड को० लि०

हेसियन एराड गनी
मर्चेराट्स एराड ब्रोकर्स

Hessian & Gunny
Merchants & Brokers.

हेसियन और गनी

जूटके सम्बन्धको लेकर प्रारम्भिक पोर्शनमें हमने विस्तृत रुपसे जूट, हेसियन और गनी-पर प्रकाश डाला है। यहां हम केवल इस व्यवसायकी प्रधान तालिका अर्थात् वायदेके सौदेके सम्बन्धमें चलतू चर्चा कर रहे हैं।

हेसियन और गनीके वायदेके सौदेका प्रभाव प्रायः सब प्रकारसे जूट व्यवसायके सभी अंग प्रत्यंगोंपर समानरूपसे पड़ता है। इस प्रकारके व्यापारके प्रधान स्थान कलकत्तेमें दो हैं जिन्हें हेसियन बाजार और हेसियन बाड़ा कहते है।

हेसियन बाजार—२१ नं० कैनिङ्ग स्ट्रीटको हेसियन बाजार कहते हैं। इस बाजारमें हेसियनके व्यापारी, जूटमिल मालिक शिपर्स और दलालोंकी चहल पहल रहती है। यहा दो प्रकारका सौदा होता है। तैयार मालके सौदेको पक्के मालका सौदा कहते हैं और दूसरे प्रकारका सौदा वायदेका सौदा कहाता है। यहा कमसे कम ५० हजार गज हेसियनका सौदा होता है। सौदा स्थानीय बंगाल चेम्बर आफ कामर्सके निश्चित नियमोंके अनुसार कन्ट्राक्ट करनेपर पक्का समझा जाता है। और महीनेकी अन्तिम तारीखपर जिसे 'ड्यू डेट' कहते हैं मालकी डिलीवरी होती है। इस सम्बन्धमें होनेवाले सभी प्रकारके झगड़ोंको बंगाल चेम्बर आफ कामर्स तय करता है और इसके निर्णयको मानना सभी सदस्योंके लिये अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त देशी दलालोंकी भी एक संस्था है जो व्यापार सम्बन्धी झगड़ोंको सुलझानेमें सहयोग देती है। इस बाजारमें काम करनेवाले योरोपियन दलाल अपना स्वतंत्र सौदा नहीं करते पर देशी दलाल अपने ग्राहकोंका सौदा तो करतेही हैं पर साथ ही प्रायः अपना स्वतंत्र सौदा भी करते हैं। इसी बाजारसे प्रायः संसारभरके लिये हेसियनका सौदा हुआ करता है और इसीके द्वारा वहां माल जाता है।

कलकत्ता हेसियन एक्सचेंज—इसे हेसियनका बाड़ा भी कहते हैं। यह बाड़ा १७१ हरिसन रोडपर है। इस बाड़ेमें कमसे कम १० हजार गज हेसियनका सौदा होता है। सौदे तीन तीन महीनेके वायदेके होते हैं इस प्रकार वर्षमें ४ सौदे रहते है। इस बाड़ेमे भावके डिफरेन्सका भुगतान साप्ताहिक होता जाता है और इस प्रकार तिमाही वायदेके सौदेकी मिती आती है और इसी

हुए डेटपर डिलीवरीकी रस्म अदा होती है। इस बाड़ेमें सभी प्रकारके आदमी सौदा करनेवाले होते हैं। यह कोई बात नहीं कि सौदा करनेवाले हैसियनके व्यापारसे सम्बन्ध रखते ही हों। यहांका प्रायः सभी कार्य दलालोंके उत्तरदायित्वपर होता हैं। इस बाड़ेमें २० हजार रुपयेकी जमानत देनेवाले ही रजिस्टर्ड दलाल होते हैं जो अपनी जिम्मेदारीपर सौदे करते हैं। इस बाड़ेमें लोग करोड़ों गजका सौदा कर डालते हैं। हेसियन बाजारके कितने ही व्यापारी भी इस बाड़ेमें सौदा करते हैं। यहांके सौदा करनेवाले बहुत बड़े बड़े आदमी हैं। यहां लेनेवाले और बेचनेवालोंमें अच्छा गहरा संघर्ष रहता है जिस पक्ष विशेषका संगठन अधिक चतुराईसे किया जाता है वही बाजी मार ले जाता है। इस बाड़ेमें फाटकेवालोंकी 'ली, दी' की गर्मीके कारण असाधारण घटा-बढी होती रहती है। इसका बहुत बड़ा प्रभाव हैसियन बाजारपर भी पड़ता है। यहांतक कि इस बाड़ेके खुले बिना हेसियन बाजारमें शिपर्स लोग सौदातक नहीं करते। यहाके भावको देखकरही हेसियन बाजारमें सौदा होता हैं। यह तो हैसियन बाजारकी कुंजी माना जाता है। फिर भी इससे व्यापारको बहुत बड़ी हानि पहुंची है। हेसियनके प्रतिष्ठित व्यापारी इसे बुरा समझते है और वास्तवमें फाटका बहुत ही हानिकी वस्तु है। इसका समर्थन नहीं किया जा सकता।

हैसियन और गनीके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कावरा कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० सदासुखजी कावरा हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें चांदी सोनेके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है। इसके यहांकी ब्रांच २१ कैनिंग स्ट्रीट एवम १७१ हरिसन रोडमें है। जहा हेसियन और गनीका व्यापार होता है। इसका हेड आफिस यहीं १८ मल्लिक स्ट्रीटमें रिधकरण कावराके नामसे है।

मेसर्स गिरधारी कम्पनी

इसका आफिस १२५।१२६ केनिंग स्ट्रीटमें है। T. No. 5120 Cal है। यह फर्म हैसियन ब्रोकरेजका काम करती है। इसका हेड ऑफिस ४८ स्ट्रांड रोडपर मेसर्स बलदेवराम बिहारी लालके नाममें है। विस्तृत परिचय चित्रोंसहित बैंकर्स मर्चेंट विभागमें देखिये।

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र

इस फर्मका हेड आफिस यहीं २६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म हैसियन, गनी,

और गल्लेका व्यवसाय करती है। इसके वर्तमान संचालक बा० फूलचन्दजी टिकमाणी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रोंसहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० ४४ में दिया गया है।

मेसर्स चिरंजीलाल एण्ड० कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान हेतमपुरा (हिसार) है। आप अग्रवाल जातिके सज्जन है। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्री सेठ भोलारामजीने की। आप सेठ बल्लूरामजीके पुत्र थे। इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ भोलाराम जीके छोटे भ्राता सेठ चिरंजीलालजीके हाथोंसे हुई। देशमें आपके पिताजीके हाथोंसे व्यापारको विशेष तरक्की मिली। इस समय इस फर्मके मालिकोंमें सेठ बल्लूरामजी तथा उनके पुत्र बाबू ब्रजलालजी, बाबू चिरंजीलालजी, बाबू सूरजभानजी, बाबू केदारनाथजी, एवं बाबू मातूरामजी हैं। इस फर्मका हेड आफिस भिवानी है। वहांपर सेठ बल्लूरामजी आनरेरी मजिस्ट्रेट है। श्री सेठ बल्लूरामजीने बीकानेर स्टेटमें श्रीगंगानगरके पास जमीन खरीदकर एक गांव बसाया है। एवं उसका नाम बलरामपुर रक्खा है। आपका कुटुम्ब अग्रवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। कलकत्ता फर्मका संचालन श्रीयुत चिरंजीलालजी और बाबू सूरजभानजी दोनों भाई मिलकर करते हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके गनी मर्चेन्टसमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपकी फर्म गनीट्रेड एसोसियेशनकी सब्जेक्ट कमेटीकी मेम्बर है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भिवानी—मेसर्स बल्लूराम केदारनाथ—यहां हेड आफिस है। तथा वेङ्किग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चिरञ्जीलाल एण्ड कम्पनी T.No 2183 Cal; 3096 B.B २१ केनिंगस्ट्रीट—यहां हेसियन गनीका ब्रोकर्स बिजिनेस होता है।

श्रीगंगानगर (बीकानेर)—मेसर्स बल्लूराम चिरंजीलाल—इस दुकानपर आढ़तका काम होता है।

मेसर्स छाजूराम एण्ड सन्स

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान अलखपुरा (हिसार) है। आप लोग जाट समाजके सज्जन हैं। इसके आदि संस्थापक सेठ छाजूरामजी चौधरीने लगभग ४० वर्ष पूर्व अपने नामसे हेसियनका व्यवसाय आरम्भ कर इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें की थी। पर अब उपरोक्त

नामसे यह फर्म गत सन् १९२६ ई० से व्यापार करने लगी है। इस फर्मको सेठ छाजूरामजी चौधरीने एक सच्चे स्वावलम्बी व्यक्तिकी भांति आरम्भ कर अपने असीम साहस एवं व्यापार चातुरीके बलपर बहुत उन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया है। आप स्थानीय कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंके डायरेक्टर और सार्वजनिक संस्थाओंके सहायकोंमें है। आप स्वभावके सरल और हृदयके उदार महानुभाव हैं। आपकी ओरसे हिसार [पंजाब] में दो और रोहतकमें एक इस प्रकार तीन हाई स्कूल तथा भिवानीमें एक लेडी अस्पताल चल रहा है। आपका दान निसंकोच और विवेकयुक्त हुआ करता है। आपका सम्मान सरकारने सी० आई० ई० की पदवीसे किया है।

वर्तमानमें आपके बाबू सजनकुमारजी, बाबू महेन्द्रकुमारजी तथा बाबू प्रद्युम्नकुमारजी नामक तीन पुत्र है। जिनमे बाबू सजनकुमारजी चौधरी व्यापारमें भाग लेते हैं। आप शिक्षित और स्वभावके मिलनसार है। साथ ही अपने पिताजीके समान ही होनहार भी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स छाजूराम एण्ड सन्स ९७–१०० क्लाइव स्ट्रीट तारका पता Goodwish. T. No 1415, 1416 और 656 Cal—यहां हैसियन और गनीका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स जगन्नाथ गुप्ता एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू जगन्नाथजी गुप्त है। आपका जन्म संवत् १९३९ में गुगवड़ा [गुड़गांव] निवासी सेठ पतरामजी अग्रवालके यहां हुआ। आप सन् १८९९ ई०में कलकत्ता आये और आरम्भमे आपने हैसियनकी दलालीका कार्य आरंभ किया, इस व्यवसायमें आपने अच्छी उन्नति एवं सम्पत्ति पैदा की। आप अपने विद्यार्थी जीवनसेही सार्वजनिक मामलोंमें अच्छा सहयोग लेते रहे हैं। वर्तमानमें आप गनीट्रेड्स एसोसिएशनके मंत्री हैं। एवं इस व्यवसायिक एसोसियेशनका काम आप भली प्रकार संचालित कर रहे हैं। आप सुधरे विचारोंके सज्जन हैं। सामाजिक विषयोंमे आपके विचार उदार हैं। अनाथालय, विधवाश्रम आदि संस्थाओंको आपकी ओरसे अच्छी सहायताएं मिलती रहती हैं। आप बंगाल आसाम प्रांतीय मारवाड़ी अग्रवाल सम्मेलनके स्वागताध्यक्ष एवं कलकत्ता आर्य समाजके मंत्री रह चुके हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जगन्नाथ गुप्ता एन्ड कम्पनी 7 G क्लाइव रो T. N 4593|490 Cal—यहां हैसियन गनीकी ब्रोकरी बिजिनेस होती है।
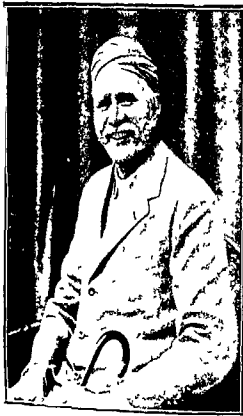
बाबू छाजूरामजी चौधरी सी. आई ई.
(छाजूराम चौधरी एण्ड सन्स)
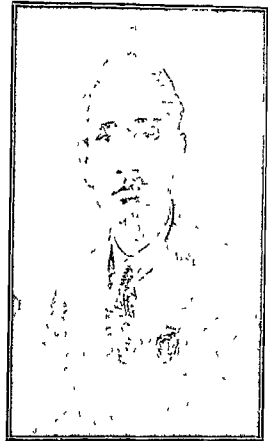
बाबू लाजनकुमारजी चौधरी
(छाजूराम चौधरी एण्ड सन्स)

मेसर्स जयलाल हरगुलाल

इस फर्मके मालिक बेरी (रोहतक) के निवासी अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन २०।२२ वर्ष पूर्व बाबू जयलालजीके हाथोंसे हुआ है। आपकी फर्म गनी ब्रोकरेजका अच्छा काम करती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—जयलाल हरगूलाल ६५ केनिंग स्ट्रीट फोन नं० १८२१, और १३५१ कलकत्ता है—यहां हेसियन और गनीकी ब्रोकरेजका काम होता है।

मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी

इस फर्मके प्रधान संचालक बाबू जयदयालजी कसेरा हैं। यहां इसका आफिस २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें है। इसके अतिरिक्त चित्तरंजन एवेन्यू नार्थमें भी आपकी फर्म है। यहां हेसियन और गनीका व्यापार होता है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित जूटके व्यापारियोंमें दिया है।

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मियानी (पंजाब) है। इस फर्मके स्थापक स्वर्गीय लाला तुलसीदासजी सब्बरवाल थे। आप बड़े प्रतिष्ठित महाशय हो गये हैं। आपके हाथोंसे तिजारतको अच्छी तरक्की प्राप्त हुई। आपके ४ पुत्र हुए। लाला किशनदयालजी, लाला हरभगवानदासजी, लाला मेघराजजी तथा देसराजजी। स्वर्गीय लाला तुलसीदासजीका स्वर्गवास संवत १९५४ में हुआ। आपके स्वर्गवासी होनेके पश्चात आपके पुत्र अलग २ होकर अपनी २ फर्मोंका संचालन करते हैं।

इस फर्मके मालिक लाला मेघराजजी सब्बरवाल हैं। इस फर्मका स्थापन संवत १९५७ में हुआ। आपने आरम्भमें अपनी फर्मपर गनीका ट्रेड शुरु किया तथा इस व्यवसायमें अच्छी तरक्की हासिल की। लाला मेघराजजी शिक्षित, समझदार एवं अनुभवी सज्जन हैं। बोरेके व्यापारमें आपकी अच्छी निगाह है।

आपके इस समय दो पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे लाला रामलुभायामल और बाबू ओंकार प्रकाश है। दोनों विद्याध्ययन करते हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता- मेसर्स तुलसीदास मेघराज ११६।१ हरिसन रोड T No 647 B.B. T A Mia-niwala—यहां बैङ्किंग, हेसियन गनी मरचैंट, श्युगरमर्चेंट, एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट और कमीशनका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स तुलसीदास मेघराज २१ केनिंग स्ट्रीट T A 5947 Cal हेसियन गनीकाकाम होता है। यह फम तुलसीदास एण्ड कम्पनीके नामसे जूट मिलोंकी ग्यारंटेड ब्रोकर्स है।

(३) बम्बई—मेसर्स तुलसीदास मेघराज ३४ न्यू बारदान गली (I A Bindhyachal—यहां बारदानका व्यापार और बैङ्किंग कामकाज होता है।

(४) करांची—मेसर्स तुलसीदास मेघराज खोटी गार्डन T A Sabbarwal—बैङ्किंग, श्यूगर और गनी मर्चेंट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

(५) मिरपुर खास (सिंध)—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—यहां वालकट ब्रदर्स को नाणा सप्लाई करनेका काम होता है।

(६) मुल्तान सिटी (पंजाब)—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—यहां भी वालकट ब्रदर्सको नाणा सप्लाई करनेका काम होता है।

(७) मांटगोमरी—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—वॉलकट ब्रदर्सको नाणा सप्लाई करनेका काम तथा बैङ्किंग वर्क और गनी मर्चेंटका काम होता है।

(८) लाहौर (पंजाब)—मेसर्स तुलसीदास मेघराज परीमहाल (T A Kismatwala) वालकट ब्रदर्सकी एजंसी है। तथा बेंकिंग एवं गनी मचेन्टका काम होता है।

(८) अमृतसर तुलसीदास मेघराज कटरा हरीसिंह T A Sabarwal —यहां बैङ्किंग गनी और श्यूगर मर्चेन्टका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी जमीदारी भी है।

(१०) लुधियाना—मेसर्स तुलसीदास मेघराज T A Sabarwal—गनी, श्यूगर मर्चेन्ट, बेङ्कर्स तथा जमीदारीका कामकाज होता है।

(११) अम्बाला-सिटी—मेसर्स तुलसीदास मेघराज—गनी मर्चेन्ट तथा बैङ्किंग व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त वॉलकट ब्रदर्सकी एजंसी है।

(१२) दिल्ली—मेसर्स तुलसीदास मेघराज नया बाजार T. A. Prakash—गनी श्यूगर मर्चेंट, बैंकर्स तथा जमीदारीका काम काज होता है।

(१३) कानपुर—मेसर्स तुलसीदास मेघराज नयागंज T A Miyaniwala—श्यूगर, गनी मर्चेंट तथा बैङ्किंग बिजिनेस होता है।

लाला किशनदयालजी सब्बरवाल (तुलसीदास किशनदयाल)

लाला योधराजजी सब्बरवाल (तुलसीदास किशनदयाल)

लाला गिरधारीलालजी सब्बरवाल (तुलसीदास किशनदयाल

(१४) सरगोधा (पंजाब)—तुलसीदास मेघराज—श्यूगर, गनी मर्चेंट तथा बैंकर्सका काम होता है।

(१५) पिंडी भाउद्दीन (पंजाब)—तुलसीदास मेघराज—यहां श्यूगर, गनी मर्चेन्ट तथा बैङ्किग व्यवसाय होता है। इसके अतिरिक्त यहां आपकी स्थाई सम्पत्ति है।

मेसर्स तुलसीदास किशन दयाल

इस फर्मके मालिक पंजाबके मियानी नामक स्थानके रहने वाले हैं। इसके संस्थापक लाला तुलसीदासजीका परिचय हम इसी भागमें अन्यत्र मेसर्स तुलसीदास मेघराजकी फर्ममें दे चुके हैं। इन्हीं लाला सा० के व्यापार कुशल बड़े पुत्र लाला किशन दयालजीकी यह फर्म है जिन्होंने अपनी विचित्र शक्तिसे इसके व्यापारको इतना ऊंचा पहुंचाया है। आप उदार एवं मिलनसार और विद्या प्रेमी महानुभाव हैं। आपने १॥ लाखकी लागतसे मियानीमें एक हाई स्कूल स्थापित कराया है जिसमें १ हजारसे अधिक क्षात्र पढ़ते हैं। आपकी कोठी बहुत ही विशाल और देखने योग्य हैं। आपकी अन्य कितनी ही विशाल इमारतें कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, करांची कानपुर आदि शहरोंमें हैं। आपके ४ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः लाला बोधाराजजी, लाला चुन्नी लालजी, लाला बिहारीलालजी, तथा लाला गिरधारीलालजी हैं। आप सभी सज्जन और उदार हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिल्ली—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल बर्न वेस्टर्न रोड, तारका पता Mianiwala—यहां फर्मका हेड आफिस है और बैंकिङ्ग, गनी तथा शक्करका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल २ रामलोचन मल्लिक स्ट्रीट T.A. Sabarwal टेली० नं० 2819 B B—यहा बैंकिङ्ग, गनी और शक्करका व्यापार होता है।

कलकत्ता - मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल २२ केनिङ्ग स्ट्रीट Phone 4643 Cal—यहां आपका आफिस है। तथा बैंकिङ्ग, गनी, और शुगरका व्यापार होता है।

बम्बई—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल माण्डवी T. A Sabarwal—यहा बैंकिङ्ग, गनी और शुगरका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल नयागंज T A Sabarwal—यहां बैंकिङ्ग,गनी और शक्करका व्यापार होता है।

करांची—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल बंदर रोड T A Bihari—यहा बैंकिङ्ग, गनी, और शक्करका काम है।

अमृतसर—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल हरिसिंहका कटरा T A Mianiwala—यहां बैंकिङ्ग, गनी और शक्करका व्यापार होता है।

लायलपुर—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल T A Sabarwal—यहां बैंकर्स, गनी मर्चेन्ट्स और शुगरका काम होता है।

सरगोदा—मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल T A Sabarwal—यहां बैंकिंग, गनी और शुगरका व्यापार होता है।

मेसर्स नन्दराम बैजनाथ केड़िया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चिड़ावा (जयपुर) खेतड़ीमें है। आप अग्रवाल समाजके गर्गगोत्रके सुप्रसिद्ध केड़िया वंशके सज्जन हैं। सबसे पहले श्रीयुत नन्दरामजी केड़िया चिड़ावासे कानपुर आये और कानपुरसे कलकत्ता आकर श्री सेठ रामचन्द्रजी गोयनकाके यहां रेलीब्रदर्सके आफिसमें कपड़ेका काम किया। करीब २० वर्ष तक वे इस कामको करते रहे। आपके तीन पुत्र हुए श्रीयुत बैजनाथजी, श्रीयुत हरजीमलजी और श्रीयुत बसन्तलालजी। इनमेंसे श्रीयुत बैजनाथजीने प्रारम्भमें बिड़लाजीके फार्म पर हैसियतकी दलाली प्रारम्भ की। यहां पर आपने करीब १० वर्ष तक काम किया। इसके पश्चात् आपने बैजनाथ केड़िया कं० के नामसे अलग कारबार प्रारम्भ कर दिया। आपने हिन्दी पुस्तक एजन्सी नामक पुस्तक प्रकाशन की संस्थाको खरीदी इस एजन्सीके द्वारा हिन्दी संसारकी बहुत सेवा की है। आपने इसके द्वारा हिन्दीके अच्छे २ लेखकोंसे मौलिक तथा धार्मिक ग्रन्थ लिखवा २ कर प्रकाशित किये। यह एजन्सी मारवाड़ीके द्वारा संचालित हिन्दीकी तमाम पुस्तकोंको सप्लाई करने वाली पहली ही दुकान है। आपने अपनी पुस्तकोंके छापनेके लिए वणिक् प्रेस नामक प्रसिद्ध प्रेसको खरीदा। इस प्रेसमें हिन्दी अंग्रेजी बंगलाकी सब प्रकारकी छपाई होती है।

श्रीयुत बाबू बैजनाथजी अग्रवाल समाजकी सुधारक पार्टीके सदस्य हैं। राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्योंमें आप बड़ी दिलचस्पीके साथ भाग लेते हैं।

श्रीयुत हरजीमलजी केड़िया बड़ी शान्ति प्रकृतिके पुरुष है। व्यवसायमें प्रधान भाग न लेते हुये भी आप सभी कार्योंमें भाग लेते हैं। आप खुश मिजाज आदमी हैं। बाहर रहना ही अधिक पसन्द करते हैं।

बाबू बसन्तलालजी उत्साही और सुधार प्रिय सज्जन है। आपका मारवाड़ी सहायक

बाबू बैजनाथजी केडिया

बाबू हरजीमलजी केडिया

बाबू बसंतलालजी केडिया

बाबू किशोरीलालजी केडिया

समिति और विशुद्धानन्द औषधालयके संस्थापनमें अच्छा हाथ रहा है। आपने व्यवसायिक क्षेत्रमें हैसियनके दलालके रूपमें प्रवेश किया था। इस व्यवसायमें आपको अच्छा अनुभव है। आजकल आप हैसियनके प्रसिद्ध अंग्रेज दलाल मोरन कम्पनीमें काम करते हैं।

बाबू हरजीमलजीके पुत्र किशोरी बाबू भी बड़े उत्साही नवयुवक हैं। आप स्पोर्टमें अधिक अनुराग रखते हैं। तैरनेमें तो आप पूर्ण पटु हैं।

इस परिवारकी ओरसे चिड़ावामें एक धर्मशाला, एक कुआं और एक शिवालय बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बैजनाथ केड़िया एण्ड कम्पनी २२ केनिंग स्ट्रीट—यहां हेसियन और गनीकी ब्रोकरीका व्यापार होता है। T No 3578 B. B.

कलकत्ता—हिन्दी पुस्तक ऐजेन्सी २०३, हरीसन रोड T. A Premashram—यहां हिन्दी ग्रन्थोंका बहुत बड़ा स्टाक रहता है और उसकी बिक्रीका काम होता है।

कलकत्ता—वणिक प्रेस १ सरकार लेन T A Premashram T No 88 B B—यहां प्रेस है और सभी प्रकारकी हिन्दी तथा अंग्रेजीकी छपाईका काम होता है।

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मका हेड आफिस नं० ८ रायल एक्सचेंज प्लेसमें है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० ८१ मे चित्रों सहित दिया गया है। यहां यह फर्म और २ कई व्यवसायोंके साथ हैसियन और गनीका भी बहुत बड़ा व्यवसाय करती है

मेसर्स भगतराम शिवप्रताप

इस फर्मके मालिक राजगढ़ (बीकानेर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस करीब ६० वर्षसे यहीं २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीट में है। यहां हुण्डी, चिट्ठी तथा हेसियनका काम होता है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू शिवप्रतापजी, बाबू रामनारायणजी तथा बाबू लक्ष्मीनारायणजी टिकमाणी है। इस फर्मका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें बंबई विभागके ५८ पृष्टमें चित्रों सहित देखिये।
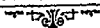
मेसर्स भोलाराम कुन्दनमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन है। इस फर्मके स्थापक सेठ भोलारामजी संवत् १९४० में देशसे कलकत्ता आये। आरंभमें आपने हैसियन वोरेकी दलालीका कामकाज आरंभ किया एवं संवत् १९५४ में आपने भूदरमल रामचन्द्रके नामसे पार्टनरशिपमें बोरेका व्यवसाय शुरू किया। इस फर्मके व्यवसायको आपने अच्छी तरक्की दी तथा इस व्यवसायमें सफलता प्राप्त करनेके बाद संवत् १९६६ में भोलाराम कुंदनमलके नामसे आप अपना स्वतंत्र व्यवसाय करने लगे। इस फर्मके व्यापारको भी आपने अच्छी तरक्की दी।

सेठ भोलारामजीकी धार्मिक कामोंकी ओर अच्छी रुची थी। आपहीके परिश्रमसे बोरोंकी बिक्रीकी बड़ी भारी लागका आना आरंभ हुआ था। जिसकी आमदनी भिवानी पींजरापोलमें व्यापारियोंकी ओरसे पहुंचाई जाती है। आप बड़े मिलनसार, तथा सरलप्रकृतिके महानुभाव थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७३ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भोलारामजीके पुत्र बा० कुंदनमलजी एवं बाबू मुत्सुद्दी लालजी डालमिया है। आप दोनों भाइयोंके हाथोंसे फर्मके व्यवसायको अच्छी वृद्धि हुई है। बाबू मुत्सुद्दीलालजी शिक्षित सज्जन है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स भोलाराम कुन्दनमल १३७ काटनस्ट्रीट—यहा बोरा तथा हैसियनका कारबार होता है

कलकत्ता - मेसर्स भोलाराम कुंदनमल १५ क्लाइवरो—यहा हैसियन बोरेका कामकाज होता है।

यहींपर मुत्सुद्दीलाल डालमिया कं० के नामसे आपका दलालीका काम होता है।

दिल्ली—मेसर्स भोलाराम कुंदनमल नया बाजार—यहा आढ़त तथा बोराका व्यापार तथा गल्लेका कामकाज होता है।

बरनाला मंडी (पंजाब) मेसर्स भोलाराम मुत्सुद्दीलाल—आढ़त तथा गल्लेका व्यापार होता है।

मानसा मंडी (पंजाब) मेसर्स भोलाराम मुत्सुद्दीलाल—आढ़त तथा गल्लाका व्यापार होता है।

चंदौसी (यू पी) मेसर्स भोलाराम मुत्सुद्दीलाल—आढ़त गल्लाका व्यापार होता है

गुनामंडी (पंजाब) मेसर्स भोलाराम मुत्सुद्दीलाल—आढ़त गल्लाका व्यापार होता है

भिवानी—मेसर्स [illegible] भोलाराम—यहां आपका खास निवासस्थान है तथा सराफी कामकाज होता है। यह फर्म बहुत पुराने समयसे व्यापार कर रही है।

स्व० भोलारामजी डालमियां
(भोलाराम कुन्दनमल)

बा० सत्यनारायणजी डालमियां
(हरगोविन्दराय मथुरादास)

स्व० राय कन्हैयालालजी बागला बहादुर (एम० पी० बागला कम्पनी)

बा० महादेवप्रसादजी बागला (एम, पी एण्ड को०)

बा० हनुमानप्रसादजी बागला (एम पी, एण्ड को०)

मेसर्स एम० डी० सोनथलिया

इस फर्मका ऑफिस २१ केनिंग स्ट्रीटमें है। यह बाबू राधाकृष्णजी सोनथलियाकी फर्म है। आपका विस्तृत परिचय शेअरके व्यापारियोंमें दिया गया है। केनिंग स्ट्रीटमें इस फर्म पर हेसियन गनीका ब्रोकर बिजनेस होता है। यहांका काम बाबू मुरलीधरजी सोनथलिया देखते हैं।

मेसर्स माहलीराम रामजीदास

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान खुरजा है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके जटिया सज्जन हैं। यह फर्म कलकत्ता नगरकी नामाकित फर्मोंमें है। यह बैंकिङ्ग बिजनेस, कमीशन ऐजेन्सीका व्यवसाय और हैसियन तथा गनीका व्यापार ही प्रधान रूपसे करती है। भारतकी प्रसिद्ध विदेशी फर्म मेसर्स एण्डयूल एण्ड को० की यह फर्म प्रधान वैनियन है। इस फर्मके मालिक सर ओंकारमल जटिया के०टी०, ओ० बी० ई० रायबहादुर तथा आपके पुत्र बाबू गजानन्दजी जटिया; बाबू कन्हैयालालजी जटिया और बाबू चम्पालालजी जटिया हैं।

सर ओंकारमल जटिया के० टी०, ओ० बी० ई० का जन्म सन् १८८२ ई० में हुआ था। अपने पूज्य पिता श्री सेठ रामजीदास जटियासे व्यापारिक अनुभवकी दीक्षा ले आपने व्यवसायिक क्षेत्रमें प्रवेश किया। आप स्वभावतया कुशाग्र बुद्धिके होनहार व्यक्ति थे अतः सहज ही आपने इस क्षेत्रमें अच्छी सफलता प्राप्त की। आपकी व्यापारिक सफलताका परिचय तो इसीसे मिल जाता है कि नगरकी प्रतिष्ठित ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियोंमें प्रायः बहुत कम ऐसी कम्पनिया होंगी जिनमें आप किसी न किसी रूपमें सम्मिलित न हों। आप स्वयं ही कितनी ही ज्वाइण्ट कम्पनियोंके डायरेक्टर हैं जिनमें हवड़ा फ्लोअर मिल्स लि०; रिफार्म फ्लोअर मिल्स लि०, बंगाल कोल कम्पनी लि० देवली कोल कम्पनी लि०, फलपहारी कोल कम्पनी लि०, पारसिया कालरीज लि०, वेस्टर्न कोल कम्पनी लि०, कैलेडोनियन जूट मिल्स कम्पनी लि०, आसाम मेंच कम्पनी लि० आदि कुछ हैं। आपकी समाजिक प्रतिष्ठा बहुत ऊंची है। आपका व्यापारियोंमें बहुत बड़ा आदर है।

आपकी फर्मका हेड आफिस २१ रुपचंद राय स्ट्रीट में है तथा फर्मका तारका पता—Kappas है।

आपका निवासस्थान भी २१ रुपचंद राय स्ट्रीटमेंही है आपका तारका पता—Yuleview है।

मेसर्स मातूरामजी डालमियां

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान भिवानी (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन हैं। कलकत्तेमें सेठ जालीरामजी ३५।४० वर्ष पूर्व आये एवं आपने आरंभसेही हैशियन तथा बोरेका कारबार शुरू किया। इस फर्मके व्यापारको विशेष तरक्की सेठ जाली रामजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। पहिले आपकी फर्म पर मथुरादास जालीरामके नामसे व्यवसाय होता था। बाबू जालीरामजीने अपनी फर्मकी ब्रांचेज अहमदाबाद एवं बलरामपुरमें भी स्थापित की। आपका स्वर्गवास करीब १॥ वर्ष पूर्व होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ जालीरामजीके पुत्र बाबू मातूरामजी डालमियां हैं। आपने अपनी फर्मकी एक ब्रांच बम्बईमें भी स्थापित की। आपकी फर्म गनी ट्रेड एसोसिएशनकी सब्जेक्ट कमिटीकी मेम्बर है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मातूराम डालमिया ६ सेंट्रलएवन्यू -यहां बोरा तथा हैसियनका कारबार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मातूराम डालमिया २१ केनिंग स्ट्रीट—यहां भी हेसियन तथा बोरेका ब्रोकर विजिनेस होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स मातूराम गूगनमल नवा माधोपुरा T. A. Dalmiya—यह कपड़े और गल्लेका व्यापार और चालानीका काम होता है।

भिवानी—मेसर्स मथुरादास जालीराम—यहां कपड़ेकी दुकान है।

बलरामपुर (गोंडा)—मेसर्स मथुरादास जालीराम - यहा गल्ला तथा आढ़तका कारबार होता है।

बम्बई—मेसर्स शिवदयालमल गूगनमल मारवाड़ी बाजार - यहां आढ़त तथा सराफी लेनदेन होता है।

— —

मेसर्स एम० पी० बागला एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक बाबू महादेवप्रसादजी बागला एवं बाबू हनुमानप्रसादजी बागला चूरू (बीकानेर) निवासी अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। आपके पिता रायबहादुर सेठ कन्हैयालालजी बागलाको बीकानेर स्टेटसे छड़ी, दुशाला एवं सेठका खिताब प्राप्त हुआ था।

रा० ब० सेठ कन्हैयालालजीने संवत् १९५५ में दिल्लीमें अपनी फर्म स्थापित की थी, वहांपर अपने बहुत जगह जायदाद खरीदी एवं हनुमान महादेव कॉटन वीविंग एण्ड स्पीनिंग मिल की स्थापना की थी। व्यवसायिक उन्नतिके साथ २ धार्मिक कामोंमें भी आपकी अच्छी रुचि रही, आपने करीब ५० हजारकी लागतसे जगदीशमें एक धर्मशाला बनवाई। इसके अतिरिक्त सुजानगढ़,

स्व० हरदत्तरायजी प्रहलादका
(मोतीलाल प्रहलादका कम्पनी)

बा० मोतीलालजी प्रहलादका
(मोतीलाल प्रहलादका कम्पनी)

बा० हनुमानबक्सजी चोखानी (हनुमानबक्स चोखानी)

बा० गोवर्धनदासजी चोखानी (हनुमानबक्स चोखानी)

इटावा, एवं चुरूके आसपास ५।६ धर्मशालाएं बनवाई, चुरूमें आपकी ओरसे धर्मशाला, मंदिर, छत्री एवं कुएं बनवाये हुए हैं।

इधर ६।७ वर्षोंसे स्व० सेठ कन्हैयालालजी बागलाके पुत्रोंने कलकत्तेमें आकर हेशियन और शेअरोंका कारबार शुरू किया। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—एम० पी० बागला एण्ड कं०-२१ केनिंग स्ट्रीट T.No 1863, 2223 Cal—यहां हेशियनका ब्रोकरेज बिजिनेस होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बागला कम्पनी ७ लियासरेंज T.A. Monopoli, T No 1513 Cal रेसिडेंसका टेलिफोन नं० 305 B B—यहां शेअर और स्टाकका व्यापार होता है।

मेसर्स मोतीलाल प्रल्हादका कम्पनी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके प्रल्हादका सज्जन हैं आप लोग रामगढ़ (सीकर) के रहने वाले हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ हरदत्तरायजीने कलकत्तेमें की थी। तथा आपही के हाथों इसे तरक्की मिली। आप सन् १९११ ई० में स्वर्गवासी हुए और फर्मके संचालनका कार्य भार आपके पुत्र बाबू मोतीलालजी पर पड़ा। आपने अपनी छोटी वयमें ही अच्छी शिक्षा प्राप्त करली थी अतः व्यवसाय संचालनमें आप सफल हो गये। आप उत्साही और होनहार युवक हैं।

इस परिवारका लोकोपकारी कार्योंकी ओर सदा ही अधिक झुकाव रहा है। यही कारण है कि रतनगढ़में आप लोगोंकी एक चेरीटेबल डिस्पेन्सरी भी चल रही हैं जहां सभी प्रकारकी सहायता धर्मार्थ दी जाती है। सेठ हरदत्तरायजी द्वारा संस्थापित रतनगढ़का प्राइमरी स्कूल बाबू मोतीलालजीके उद्योग और सहायसे आज हाई स्कूलकी पढ़ाई कर रहा है। इन दोनों ही की विशाल इमारतें भी इन्हींकी बनवाई हुई है। सेठ हरदत्तरायजीने अपनी अन्तिम 'विल' (दान पत्र) मे १ लाखकी रकम स्कूल और डिस्पेन्सरीके लिये निकाल दी थी।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मोतीलाल प्रल्हादका एण्ड को० १४।२ क्लाइव रो T.A. Prempathik T No 3268 Cal—यहां गनी ब्रोकर्सका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशनारायण हरदत्तराय १० ए चितरंजन एवेन्यू T. N. 1663 B B.—यहां काटनके एक्सपोर्ट बिजनेसका काम होता है। यह फर्म न्यू इण्डिया इन्सुरेन्स कम्पनीकी मैरिन एजेन्ट है।

मेसर्स रामस्वरूप मामचंद

इस फर्मके मालिक झमझा (जिला रोहतक) के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष सेठ दुर्गादत्तजी एवं आपके पुत्र सेठ देवीसहायजी झमझाके अच्छे ख्याति प्राप्त महानुभाव हो गये हैं।

इस फर्मको कलकत्तेमें स्वर्गीय बाबू देवीसहायजीके पुत्र सेठ रामस्वरूपजीने ३५।४० वर्ष पूर्व स्थापन किया। आरम्भसे ही आपके यहां हेसियन गनीका व्यवसाय होता आ रहा है। बाबू रामस्वरूपजीने इस फर्मके व्यवसायकी अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास करीब ५ वर्ष पूर्व हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय बाबू रामस्वरूपजीके पुत्र बाबू मामचंदजी एवं श्री मुरारीलालजी हैं। आपकी फर्म गनीट्रेड एसोसियेशनकी सबजेक्ट कमेटीकी मेम्बर है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामस्वरूप मामचन्द ४८ जकरिया स्ट्रीट—यहां आपका निवास है तथा हेसियन गनीका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स डेविड सासुन कम्पनीकी सोल ब्रोकर है इसके अलावा गार्डन स्किनर, एण्ड्रयूल कम्पनी, रायली ब्रदर्स, शॉ वालेसकम्पनी और ई० डी० सासुन कम्पनी आदि प्रतिष्ठित कंपनियोंसे इसका व्यापारिक सम्बन्ध हैं।

कलकत्ता—मेसर्स रामस्वरूप मामचन्द १३५ केनिंगस्ट्रीट —यहा आपका आफिस है। इसमें हैसियन और गनीका ब्रोकर बिजिनेस होता है

मेसर्स रामजीवन सरावगी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकों का मूलनिवास स्थान फतेपुर जयपुरमे है। आप अग्रवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें संवत् १९३२ में हुई। जिससमय इस फर्मकी स्थापना हुई उससमय गनीब्रोकर्समें या तो दो अंग्रेज कम्पनिया थीं या हिन्दुस्तानियोंमे केवल यही एक फर्म थी। मतलब यह कि गनीव्यापारके इतिहासमे इस फर्मका इतिहास बहुत पुराना है इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत बाबू रामजीवनजीने की। आप बड़े सज्जन उदार और व्यापारदक्ष पुरुष थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। आपका स्वर्गवास संवत १९७५में होगया। आपके कुल आठ पुत्र हुए जिनमेंसे इससमय छः विद्यमान है। जिनके नाम क्रमशः बाबू फूलचन्दजी, बाबू गुलजारीलालजी, बा० दीनानाथजी, बा० छोटेलालजी, बा० नन्दलालजी, और बा० लालचन्दजी हैं। आप सब बिजीनेसमें भाग लेते हैं
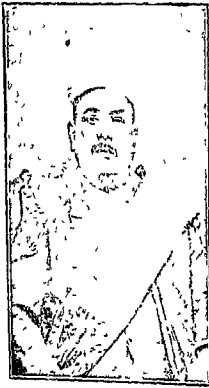
इस फर्मकी दानधर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी अच्छी रुचि रही है। प्रायः सभी सार्वजनिक कार्य्योंमें आपकी ओरसे अच्छी सहायता दी जाती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

१—मेसर्स रामजीवन सरावगी एण्ड को० १४ क्लाइवस्ट्रीट (phone 4581 Cal)—यहांपर गनी-ब्रोकर्सका काम होता है। कलकत्तेमें यही एक ऐसी फर्म है जो केवल दलाली ही करती है। निजका व्यवसाय बिलकुल नहीं करती है।

आपका मकान २५ सेण्ट्रलऐवन्यूनार्थमें है। घरका फोन न० 3034 B. B है।

मेसर्स रामसहाय मलमोर

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामसहायमलजी मोर हैं। आपका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसफर्मका आफिस २१ कैनिंग स्ट्रीटमें है। इसपर हैसियन और बोरेका व्यापार होता है।

सेठ रामकिशनदास बागड़ी

इस फर्मके मालिक बीकानेर निवासी बाबू रामरतनदासजी बागड़ी हैं। इस फर्मका आफिस ३३, क्रास स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म बैंकिंग और हैसियन तथा गनीका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बैंकर्समें दिया गया है।

मेसर्स लच्मीनारायण रामचन्द्र

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान चूरू (बीकानेरस्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके लोहिया सज्जन है। सर्व प्रथम सन् १८५७ के पूर्व सेठ नारमलजी लोहिया कलकत्ता आये और बादमें आपके छोटे भ्राता सेठ रंगलालजी लोहिया भी आ गये। आप दोनों भाई अफीम, गल्ला तथा कपड़ेका कारबार करते रहे। सेठ नारमलजीका स्वर्गवास संवत् १९४६ में और रंगलाल-जीका संवत् १९६६ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रंगलालजीके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायण एवं बाबू रामचन्द्र जी है। बाबू लक्ष्मीनारायणजीने संवत १९६८।६९ से हेसियन गनीका कारबार आरंभ किया और तबसे बराबर आप यह काम कर रहे है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र २१ केनिंग स्ट्रीट Phone 3147 Cal—यहां हेसियन गनीका ब्रोकर्स विजनेस होता है।

बाबू लक्ष्मीनारायणजीके पुत्र माणकचन्दजी तथा रामचन्द्रजीके पुत्र हनुमानप्रसादजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

मेसर्स लोयलका कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामचन्द्रजी लोयलका एवम घनश्यामदासजी लोयलका हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय शेअरके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसका आफिस ७ लियांसरेंजमें है। यहां वह फर्म हैसियन और गनीका व्यापार करती है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण वंशीधर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास भिवानी (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके कानोड़िया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक रा० ब० सेठ मुखरामजी कानोड़िया थे। आप संवत् १९४२ में देशसे कलकत्ता आये, एवं यहां आकर हरनन्दरायजी बद्रीदास फर्मकी प्रधान मैनेजरीका काम करने लगे। बोरेके व्यवसायमें आपकी निगाह अच्छी थी, फलतः आपने उक्त फर्मके व्यवसायको खूब उत्तेजन दिया। पश्चात् हरनन्दरायजी बद्रीदासके नामसे तुलापट्टीमें एक गोदाम खोला गया, जिसमें सेठ बहादुरमलजी डालमिया, सेठ मथुराप्रसादजी डालमिया, सेठ हरगोविंदरायजी डालमिया एवं रा०ब० सेठ मुखरामजी कानोडिया आदि पार्टनरके रूपमें काम करने लगे। इस फर्मने भी बोरेके व्यवसायमें अच्छी प्रगति की। तत्पश्चात् आपने संवत् १९५१।५२ से अपना स्वतंत्र व्यवसाय लक्ष्मीनारायण वंशीधरके नामसे शुरू किया। इस नामसे अभीतक आपका कुटुम्ब फर्मका व्यवसाय संचालित कर रहा है।

रा० ब० सेठ मुखरामजी व्यवसायिक कार्योंके अतिरिक्त धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्योंकी ओर भी अच्छा लक्ष रखते थे। आपको भारत सरकारसे सन् १९२१ ई०में राय बहादुरकी पदवी प्रदान की। देवघर (बैजनाथ धाम) जिला सन्थाल परगनामें नई धर्मशालाके नामसे आपकी एक धर्मशाला बनी हुई है। सन १९२१ ई० मे कलकत्तेके बाबूघाटपर जहाजसे उतरनेवाले मुसाफिरोंकी सुविधाकेलिये भी एक धर्मशालाका निर्माण कराया है। बनारसमें आपका एक अन्नक्षेत्र चल रहा है।
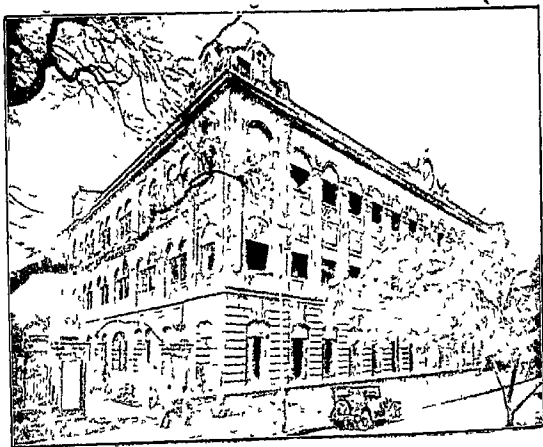
श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, कलकत्ता

वहांपर कुछ विद्यार्थियोंके पढ़नेका भी प्रबंध है। भिवानीमें श्याम संस्कृत पाठशालाके नामसे आपकी बगीचोंमें एक पाठशाला है। यहा भी शिक्षाके साथ २ विद्यार्थियोके भोजनोंका प्रबंध भी है। इसी प्रकार हरएक धार्मिक कार्योंमें आप बराबर भाग दिया करते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ आसोज १३ बदीको हुआ। सेठ मुखरामजीके २ पुत्र हुए बड़े सेठ लक्ष्मीनारायणजी एवं छोटे सेठ बंशीधरजी, इनमेंसे सेठ बंशीधरजीका संवत् १९०३में स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें आपके २ छोटे पुत्र श्री कन्हैयालालजी एवं श्रीजादूलालजी पढ़ रहे हैं।

वर्तमानमें इस कुटुम्बके प्रधान संचालक सेठ लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप बड़े समझदार सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू राधाकृष्णजी, बाबू मोतीलालजी एवं श्रीसांवलरामजी फर्मका व्यवसाय बड़ी तत्परतासे संचालित करते हैं। सेठ लक्ष्मीनारायणजीके सबसे बड़े पुत्र बाबू गौरीशंकरजीका शरीरान्त होगया है। इनके पुत्र छोटेलालजी है जो अभी पढ़ते हैं।

सलकिया (बांदाघाट) मे आपका लक्ष्मीनारायण बंशीधरके नामसे एक दातव्य औषधालय चल रहा है। इसमें नित्यप्रति ५०।६० रोगी आते हैं। यह कार्य स्वामी मोहनदासजी की अध्यक्षतामें होता है।

इस फर्मका प्रधान व्यापार बोरेका है। तथा बहुत समयसे आपलोग इस व्यापारको करते हैं। इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बंशीधर ८५ कॉटन स्ट्रीट—यहां ऑफिस है। तथा हेसियन और बोरेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण बंशीधर २ रोज रोड-हवड़ा—यहां हेड ऑफिस है। तथा हेसियन बोरेका व्यापार होता है।

अमलगोड़ा, स्टेशन गढ़बेरा (मेदिनीपुर) लक्ष्मीनारायण बंशीधर—यहा आपका एक श्रीराधाकृष्ण राइस मिल है।

कलकत्ता—सांवलदास कन्हैयालाल ७२ तुलापट्टी—हेसियन बोरेकी दुकान है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण सूरजमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास रामगढ़ (सीकर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके कानोड़िया सज्जन है। बनारसमें करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ श्रीरामजी आये थे, आप वहा गल्लेका व्यापार करते रहे। आपके ४ पुत्र हुए, बाबू लक्ष्मीनारायणजी, बाबू जगन्नाथजी, बाबू सूरजमलजी

और बाबू चान्दमलजी। इनमेंसे बाबू लक्ष्मीनारायणजी और बाबू सूरजमलजी कलकत्तेमें व्यापार करते थे। बाबू लक्ष्मीनारायणजीके कोई संतान नहीं थी, इस लिये उन्होंने अपना उत्तराधिकारी अपने छोटे भाई बाबू चांदमलजीको बनाया तथा उन्हें छोटी अवस्थासे ही कलकत्तेमें अपने पास रखने लगे। बाबू जगन्नाथजी अपने पिताजीके साथ काशीजी हीमें रहते थे। एकाएक दैव योगसे संवत १७६२।६३ में बाबू जगन्नाथजी और बाबू सूरजमलजीका एक एक मासके अन्तरसे देहावसान हो गया।

सेठ श्रीरामजी काशीके बड़े प्रतिष्ठित महानुभाव हो गये हैं, आपका जीवन, धार्मिक जगतमें, साधुतामें, सत्पुरुषोंके संगमे विशेष प्रख्यात था। आपके बड़े पुत्र लक्ष्मीनारायणजी कानोड़ियाकी इच्छा एक बहुत बड़ा धार्मिक कार्य करने की थी, अपने इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये आप एक अस्पताल स्थापित करना चाहते थे, आपने इसके लिये जमीनका प्रबन्ध भी कर लिया था। लेकिन आप अपनी इच्छा पूरी न कर सके, एकाएक घोड़ेके बिगड़जानेसे गाड़ीसे कूद पड़नेके कारण सन् १६१५ ई०में कलकत्तेमें आपकी मृत्यु हो गई। सेठ श्रीरामजीने उनकी इच्छा पूर्तिके लिये काशीमे "श्रीराम लक्ष्मीनारायण मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल" के नामसे एक विशाल अस्पतालका निर्माण कराया, जो अगस्त सन् १६१६ ई०में सर जेम्स मेस्टन (यू० पी० गवर्नरके द्वारा उद्घाटित किया गया, इस प्रकार बनारसमे एक चिरस्थाई कामकर श्रीसेठ श्रीरामजी ७७ वर्षकी आयुमें अस्पतालके उद्घाटनके २ वर्ष बाद स्वर्गवासी हुए।

इस फर्मके व्यापारकी वृद्धि सेठ लक्ष्मीनारायणजीके हाथोंसे हुई, आपने आरम्भमें कलकत्तेमें आकर रामनिरंजनदास बद्रीदासके यहां तथा हरनंद राय फूलचंदके यहा नौकरीकी, आपने हरनंदराय फूलचंदके गल्लेके व्यापारको खूब बढाया, उस समय इस फर्मका माल डंडी हेमबर्ग, आदि स्थानोंको शिपमेंट होता था, इस प्रकार नौकरी द्वारा द्रव्य और अनुभव प्राप्त करके अपने भ्राता सेठ सूरजमलजीके साथ लक्ष्मीनारायण सूरजमलके नामसे आपने एक स्वतंत्र फर्मका स्थापन किया। आपकी फर्मपर प्रधान व्यापार बोरा और ग्रेन शीड्सका होता था, सेठ लक्ष्मीनारायणजीको व्यापारिक विषयोंकी अच्छी जानकारी थी, हैसियन बोरेका व्यापार करने वाले कई बड़े बड़े आफिसोंसे आपका व्यापारिक सम्बन्ध था। आप प्रसिद्ध फर्म मेसर्स मेकलाड एण्ड कम्पनीकी जट मिलोंके डायरेक्टर थे।

सेठ श्रीरामजी एवं लक्ष्मीनारायणजीके पश्चात् इस फर्मके व्यवसाय संचालनका भार बाबू चांदमलजी एवं स्वं सूरजमलजीके पुत्र बाबू छोटेलालजी पर आया। आप लोगोंने सेठ लक्ष्मीनारायणजीके स्मारक स्वरुप अस्पतालके केपिटलमें भी वृद्धिकी। कलकत्तेके अग्रवाल समाजमें यह कुटुम्ब अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। संवत् १६८५ तक इस फर्मपर नीचे लिखे नामोंसे व्यापार होता रहा।

स्व० सेठ श्रीरामजी कानोड़िया

स्व० सेठ लक्ष्मीनारायणजी कानोड़िया

बाबू चांदमलजी कानोड़िया

बाबू छोटेलालजी कानोड़िया

बाबू रामनाथजी कानोड़िया

बाबू रामचन्दरजी कानोड़िया

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण सूरजमल—

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण कानोड़िया कम्पनी—

बनारस—श्रीराम लक्ष्मीनारायण नीलकंठ महादेव—

कानपूर—सूरजमल चांदमल—यू० पी० की ब्रांचेज—श्रीराम लक्ष्मीनारायणके नामसे जमनिया, दिलदार नगर, सकलडीहा, सैंदराजा रुधौली (फैजाबाद), सन्दोगंज [फैजाबाद]
सीतापुर डिस्ट्रिक्टमें—सिधौली, महमदावाद, कमालपुर, सहजनवां [गोरखपुर]

अभी कुछही मास पूर्व इस फर्मके मालिक बाबू चांदमलजी, बाबू छोटेलालजी तथा बाबू जगन्नाथजी की अलग २ फर्में हो गईं जिनका परिचय निचे दिया गया है। इस कुटुम्बका सम्मिलित व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स लक्ष्मीनारायण कानोडिया कम्पनी - यहां हेसियन गनीकी दलालीका बहुत बड़ा विजिनेस होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण चांदमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू चांदमलजी और आपके पुत्र बाबू रामसुन्दरजी हैं। बाबू चांदमलजी मेसर्स मेकलाड एन्ड कम्पनीके जूटमिल डिपार्टमेंटके इण्डियनसोल ब्रोकर और डायरेक्टर हैं। आपका विस्तृत परिचय ऊपर दियाजाचुका है। इस फार्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण चांदमल ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट--यहां हेसियन, गनी और गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

बनारस—श्रीराम लक्ष्मीनारायण—यहां सराफी लेन देन, गल्ला और आढ़तका काम होता है, यह फर्म पुराने ही नामसे बाबू चांदमलजीके बड़े होनेसे इनके हिस्सेमें आई है।

ब्रांचेज जमनियां, दिलदार नगर, सैदपुर, बिटरी, रुदौली, सब्दरगंज, सिधौली, महमुदाबाद, और सहजनवां

मेसर्स सूरजमल छोटेलाल

इस फर्मके मालिक बाबू छोटेलालजी कानोड़िया हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं। आप भी मेसर्स मेकलाड एण्ड कम्पनीके जूट मिल डिपार्टमेंटके इण्डियन सोल ब्रोकर और डायरेक्टर हैं। आपके कुटुम्बका विस्तृत परिचय उपर दिया गया है। वर्तमानमे आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सूरजमल छोटेलाल T No 4002 B. B. तारका पता Suraj—यहां गल्ला,बोरा, आढ़त तथा बेकिंगका व्यापार होता है।

बनारस मेसर्स श्रीराम सूरजमल,नीलकंठ महादेव—यहां गल्ला और बेकिंगका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स सूरजमल छोटेलाल नयागंज, T, A Suraj गल्ला, बेङ्किग व बोरेका व्यापार होता है।

आगरा—मेसर्स सूरजमल छोटेलाल—आढ़त और बोरेका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त यू० पी० के देहातोंमें आपकी और भी कई ब्रांचेज हैं।

मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ

इस फर्मके मालिक बाबू जगन्नाथजीके पुत्र बाबू रामनाथजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां गल्ला, बोरे और हेसियनका कारबार होता है।

बनारस—श्रीराम जगन्नाथ, नीलकंठ महादेव—यहां सराफी लेनदेन होता है।

इसके अलावा श्रीराम जगन्नाथके नामसे सकलडीहा तथा लक्खीसरायमें गल्ला और आढ़तका काम होता है।

सर सरुपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को०

इस फर्ममे इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सर हुकुमचन्दजी और बीकानेरके राय बहादुर स्व० हरिकृष्णदासजीके कुटुम्बका साझा है। इसका आफिस ३० क्लाइव स्ट्रीटमे है। कलकत्तेमें इस फर्मके अंडरमे जूटमिल,स्टील वर्क्स आदि चल रहे हैं। इसका विस्तृत परिचय मिल मालिकोंमें दिया गयाहै। सर हुकुमचन्दजीका परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें सेंट्रल इण्डिया विभागके इन्दौरके पोर्शनमें दिया गया है। यहा जूट, हैसियन, गनी आदिका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स हरनन्दराय बद्रीदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ दीनानाथजी गोयनकाके पुत्र बाबू सत्यनारायणजी गोयनका, बाबू गंगाधरजी गोयनका एवं बाबू दुर्गाप्रसादजी गोयनका हैं। आपकी फर्ममें सेठ लक्ष्मीनारायणजी कानोड़िया अब भी काम कर रहे है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

स्वर्गीय बाबू हरगोविन्दरायजी डालमियां

स्वर्गीय बाबू मथुरादासजी डालमियां

स्वर्गीय बाबू गूगलमलजी डालमिया

रायबहादुर सेठमलजी डालमियां

कलकत्ता—मेसर्स हरनन्दराय वद्रीदास—सराफी तथा चोरेका व्यापार होता है।

दिल्ली—परशुराम हरनन्दराय—हेड ऑफिस है तथा चोरेका व्यापार और सराफीका काम होता है।

कानपुर—हरनन्दराय अर्जुनदास—सराफी और चोरेका काम होता है।

लुधियाना—हरनन्दराय दीनानाथ—सराफी और चोरेका व्यापार होता है।

मेसर्स हरगोविन्दराम मथुरादास

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान भिवानी है। आपलोग अग्रवाल समाजके डालमियां सज्जन है। सर्वप्रथम इस फर्मका स्थापन करीव ५० वर्ष पूर्व सेठ बहादुरमलजीके हाथोंसे वहादरमल हरगोविन्दके नामसे हुआ था। आरंभसेही इस फर्मपर चोरेकी तिजारत होती आ रही है। सेठ बहादुरमलजीका स्वर्गवास ३० वर्ष पूर्व हो चुका है। आपके २ पुत्र हुए सेठ हरगोविन्दरामजी एवं सेठ मथुरादासजी। सेठ हरगोविन्दरामजीने विसेसरलाल हरगोविन्दके नामसे और सेठ मथुरादासजीने हरनन्दराय वद्रीदासके नामसे फर्म खोली और अपने २ चोरेके व्यापारको बहुत अधिक उन्नति पर पहुंचाया। बहुत थोड़े समयमें ही इन फर्मोंने आशातीत उन्नति की। उपरोक्त फर्मके मालिकोंकी चोरेके व्यापारकी उन्नतिके साथ २ मिल व्यवसायकी ओर लक्ष गया। फलतः सन् १९२५ में ९ लाख रुपयेमें एक लिमिटेड मिल खरीदी। इस मिलने आपके मेनेजमेंटमें बहुत अधिक तरक्की की। जिस समय आपने मिल खरीदी थी उसमें १३ हजार स्पेंडिल काम करते थे। पर वर्तमानमें आपने २३॥ हजार स्पेंडिल कर दिये हैं। सूत कातनेके साथ २ बुनाईका कार्य्य भी आपने शुरू कराया है, वर्तमानमें २५४ लूमस काम करते हैं।

करीब ८ वर्ष पूर्व सेठ हरगोविन्दरायजीने विसेसरलाल हरगोविन्दसे अपना साझा हटाकर हरगोविन्दराय मथुरादासके नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार आरंभ किया। सेठ हरगोविन्दरायजीके छोटे भ्राता सेठ मथुरादासजीका स्वर्गवास संवत् १९७७ मे होगया है। आपकी फर्म विसेसरलाल हरगोविन्दके नामसे जब व्यवसाय करती थी उस समय आपकी ओरसे भीमेश्वर और साखीगोपालमें धर्मशालाएं वनवाई गई। तथा कलकत्तेमें गंगातीरपर एक श्राद्ध घाटका निर्माण कराया गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हरगोविन्दरायजी एवं स्व० सेठ मथुरादासजीके पुत्र रा० व० सेढमलजी डालमियां हैं। सेठ हरनन्दरायजी वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपके पौत्र बाबू सत्यनारायणजी डालमिया एवं बाबू देवकीनन्दनजी डालमिया फर्मके व्यवसायमें भाग लेते हैं। तथा बड़ी तत्परतासे उसे संचालित करते हैं। रा० व० बाबू सेढ़मलजी डालमिया समझदार सज्जन है

आपको भारत गव्हर्नमेंटने सन् १९२५ ई०में रायबहादुरकी सम्माननीय उपाधिसे विभूषित किया है। आपका कुटुम्ब कलकत्ता तथा भिवानीमें बहुत प्रतिष्ठाकी निगाहोंसे देखा जाता है। अग्रवाल समाजमें होनेवाले हरएक कार्योंमें आपका अच्छा सहयोग रहता है। आपकी ओरसे सेठ हरगोविन्दरायजी डालमियाके नामसे बैजनाथजीमें एक स्कूल चल रहा है। इसी प्रकारके हर एक धार्मिक कार्यमें आप बराबर योग देते रहते हैं।

आपकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरगोविन्दराय मथुरादास ७० कॉटन स्ट्रीट—इस फर्मका यहां हेड ऑफिस है। तथा बोरेका व्यापार होता है।

श्रीवेंकटेश्वर कॉटन मिल अमृतसर—यह आपकी प्राइवेट मिल है। वर्तमानमें इसमें २२११ स्पेंडल और २५४ लूम्स काम करते हैं।

मेसर्स हरगोविन्दराय मथुरादास दुबराजपुर (बंगाल)—यहां आपकी एक राइस और एक ऑइल मिल है।

मेसर्स मथुरादास सेढ़मल चौबेकटला दिल्ली—यहांपर कपड़ेका व्यापार होता है।

श्रीवेंकटेश्वर हालीडे जूट प्रेस उलटाडांगा रोड—कलकत्ता—यहां जूट प्रेस है।

मेसर्स हरनन्दराय बद्रीदास ७० कॉटन स्ट्रीट कलकत्ता—यहा बोरेका व्यवसाय होता है।

रा० ब० बाबू सेढ़मलजी डालमियांको बागीचोंसे विशेष प्रेम है। आपने लिलुआ स्टेशनपर एक छोटासा गार्डन अच्छी लागतसे तैयार किया है। उस छोटीसी जगहमें आपने कई मनोविनोदके स्थान तैयार कराये हैं।

मेसर्स हनुमानबख्श चोखानी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर-स्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके चोखानी सज्जन है। सर्व प्रथम संवत् १९१७ मे सेठ बिहारीलालजीने गणपतराय सागरमलके नामसे कपड़ेका कारबार शुरू किया, तथा आपके छोटेभाई सेठ गणपतरायजीके हाथोंसे व्यापारको विशेष तरक्की मिली। संवत १९७० तक आप इस नामसे कामकाज करते रहे। पश्चात् १९७६ तक इस फर्मने गणपतराय हनुमान बख्शके नामसे कपड़ेके व्यापारका संचालन किया। और अब संवत १९७६ के बादसे यह फर्म हैसियन तथा गनीका व्यापार कर रही है।

वर्तमानमे इसके मालिक सेठ गणपतरायजीके पुत्र बाबू हनुमान बख्शजी एवं बाबू गोरधनदासजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हनुमानबख्श चोखानी २१ केनिंग स्ट्रीट T. No 3854 Cal—यहां हेसियन, और गनीका ब्रोकर्स बिजिनेस होता है।

कलकत्ता—हनुमान बख्श चोखानी १७१ A हरीसन रोड T No ३८५४ B B. हेसियनका कारबार होता है।

मेसर्स एच० बी० सोढानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामेश्वरदासजी, हनुमानबक्षजी और मंगलचन्दजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १२७ मे छापा गया है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यवसाय करती है। इसके अतिरिक्त नं० १४ कैनिंग स्ट्रीट वाले आफिस द्वारा यह फर्म हेसियनका एक्सपोर्ट और चीनीका इम्पोर्ट करती है। इसका कलकत्तेका आफिस नं० ५ चित्तरञ्जन एव्हेन्यूमें है। तारका पता है "Fresh"।

मेसर्स हरमुखराय दुलीचंद

इस फर्मका हेड ऑफिस हाथरस है। इस फर्मपर बम्बईमें हरमुखराय भागचंदके नामसे रुई तथा गल्लेका अच्छा व्यवसाय होता है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक लाला वंशीधरजी एवं लाला किशनप्रसादजी हैं। आप अग्रवाल समाजके सज्जन हैं।

कलकत्तेकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स हरमुखराय दुलीचंद ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट-कलकत्ता—T. A. Sekhsaria यहां हेसियन और गनीका एक्सपोर्ट एवं कमीशनका काम होता है।

गनी मरचेंट्स एण्ड ब्रोकर्स

मेसर्स अमरचन्द माधवजी कम्पनी—६ कर्बला महमद स्ट्रीट
" ओंकारमल महादेव
" कन्हैयालाल एण्ड कम्पनी
" काबरा कम्पनी १४ अपर चीतपुर रोड
" केशौजी एण्ड कम्पनी
" केशौराम पोद्दार एण्ड कम्पनी
" किरपाराम खुशीराम
" खूबीराम बलियावाला
" खुशीराम कालूराम
" खुशीराम मुरारीलाल
" गणपतराय उमरावसिंह

मेसर्स गोपीराम रामचन्द्र २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीट
" गणेश परसाद माहेश्वरी
" गोपीराम विसेस्वरलाल
" घासीराम गिरधारीलाल
" चिरंजीलाल एण्ड कम्पनी ५ सेन्ट्रल एवन्यू
" छाजूराम एण्ड सन्स क्लाइव स्ट्रीट
" डालूराम फूलचन्द
" जानकीदास एण्ड कम्पनी
" जयलाल हरगुलाल
" जयदयाल कसेरा कम्पनी ६ सेंट्रल एवन्यू
" जुगलकिशोर रामवल्लभ
" जयलाल एण्ड कम्पनी

मेसर्स जगन्नाथ गुप्ता एण्ड कम्पनी ७ क्लाइव रो
" जमनादास बैजनाथ
" जमनादास त्रिभुवनदास
" जी शंकर एण्ड कम्पनी १४।१ क्लाइव रो
" तुलसीदास राममल २२ केनिंग स्ट्रीट
" तुलसीदास किशनदयाल २२ केनिङ्ग स्ट्रीट
" तुलसीदास मेघराज
" तुलसीदास जीवनराज
" तेजपाल ब्रह्मदत्त ६७ बड़तल्ला स्ट्रीट
" दयालीराम छपारिया २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
" दत्त एण्ड सेन
" नन्दी एण्ड कम्पनी
" एन० सुन्दरदास
" प्रागदास बागड़ा
" फूलचन्द केदारमल सेन्ट्रल ऐविन्यू
" बिड़ला ब्रादर्स लि० ८ रायल एक्सचेंज प्लेस
" बालमुकुन्द ओंकारमल २१ केनिंग स्ट्रीट
" बलदेवदास रामेश्वर मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
" बैजनाथ भालोटिया १२ ए हालीडे स्ट्रीट
" बैजनाथ केड़िया कम्पनी २२ केनिंग स्ट्रीट
" भगतराम शिवपरताप २६।२ आर्मेनियन स्ट्रीट
" भोलाराम कुन्दनमल १३७ काटन स्ट्रीट
" भोलानाथ बसंतलाल
" एम०डी०कोठारी एण्ड कम्पनी क्लाइव स्ट्रीट
" एम० डी० सोनथलिया
" मोतीलाल प्रहलादका कं०
" एम० पी० बागला एण्ड कम्पनी
" मातूराम डालमिया केनिंग स्ट्रीट
" मंगलराय गिरधारीलाल २२ केनिंग स्ट्रीट
" मोहनचन्द दे
" मामराज रामभगत ७ नारायणप्रसाद बा०लेन

मेसर्स मगनीराम बागड़ ६५ बांसतल्ला
" मुसद्दीलाल डालमिया १३७ काटन स्ट्रीट
" मुकुन्दलाल विसेस्वरलाल
" मदनगोपाल देवीदत्त
" आर० के० कानोड़िया एण्ड को०
" आर० गजाधर को० लि०
" रामचन्दर सिंगी
" रामपरसाद कम्पनी
" रामस्वरूप मामचन्द २१ केनिंग स्ट्रीट
" रामजीवन सरावगी एण्ड कम्पनी
" रघुनाथदास शिवलाल
" रामसहायमल मोर ५ सेन्ट्रल ऐविन्यू २१ केनिंग स्ट्रीट
" रामनारायण गंगाविशन
" रामजीलाल परमानन्द
" रघुनाथप्रसाद पोद्दार
" लोयलका कम्पनी रायल एक्सचेंज प्लेस
" लछमीनारायण कानोड़िया कम्पनी क्लाइवस्ट्रीट
" लछमीनारायण रामचन्दर
" लछमीनारायण वंसीधर २ रोसा रोड
" लछमीनारायण बिन्नानी
" सिवबक्स बागड़ी
" सोभागचन्द अनूपचन्द
" सर स्वरूपचन्द हुकुमचन्द कम्पनी ३० क्लाइव स्ट्रीट
" रायबहादुर सेठमल श्रीकिशन काटन स्ट्रीट
" सुरजमल मोहता कम्पनी
" हरीराम दुरगापरसाद
" हरगोविन्दराय मथुरादास काटन स्ट्रीट
" हरनन्दराम बद्रीदास काटन स्ट्रीट
" हबीब एण्ड फाजूल २२ केनिंग स्ट्रीट
" एच० बी० सोढानी एण्ड को०१३५ केनिंग स्ट्रीट

शेअर मर्चेण्ट्स और ब्रोकर्स

Share Merchants & Brokers.

शेअरके व्यापारी

शेअरमार्केट

कम्पनी एक्टके अनुसार स्थापित की जानेवाली सभी ज्वाइएट स्टाक कम्पनियोंकी मूल पूंजी विभिन्न संख्यक शेअरोंमें विभाजित रहती है। इन्ही शेअरोंकी खरीद विक्रीका व्यापार शेअर बाजारमें होता है। स्थानीय शेअर बाजार शेअर एण्ड स्टाक एक्सचेंजके नामसे प्रख्यात है। यह स्थान रॉयल एक्सचेंज प्लेसमें है। यहां सभी प्रकारकी ज्वइण्ट स्टाक कम्पनियोंके शेअरोंका सौदा होता है। इस बाजारसे प्रायः सभी प्रकारके व्यापारियोंका कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य ही रहता है। क्योंकि इस व्यवसायमें प्रायः सभी प्रकारके प्रतिष्ठित व्यापारियोंका समावेश रहता है। देशके व्यवसायकी गतिविधिके अनुसार ही कम्पनियोंको हानि लाभ होता रहता है और इसीके अनुसार उनके भावमें उतार चढ़ाव होता रहता है। इस बाजारमें शेअरोंका व्यापार केवल इस एक्सचेंजके मेम्बर ही कर सकते हैं। मेम्बरीके लिये १५ हजारका कार्ड लेना पड़ता है।

इस बाजारमें काम करने वाले व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है:—

मेसर्स गणपतराय कयान एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक बाबू गणपतरायजी कयान और बा० रामनारायणजी कयान हैं। आप १५ वर्षोंसे शेअरका कारबार करते हैं। आपलोग सूरजगढ़ (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस कुटुम्बको कलकत्तेमें व्यापार करते हुए करीब १०० वर्ष हो गये पहिले यहां लालचंद बल्देवदासके नामसे व्यापार होता था।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय कयान एण्ड कम्पनी ३ जगमोहन मल्लिक लेन T. NO. 1162 BB

यहां शेअर्सका व्यापार और सराफी लेनदेन होता है।

कलकत्ता - मेसर्स गणपतराय कयाल एण्ड कम्पनी ७ लायंस रेंज T. NO 4285 Cal यहां गव्हर्नमेंट पेपर्स तथा शेअर्सका व्यापार और ब्रोकरेजका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गजानंद रामप्रताप ६ हलसी बगानरोड—यहा कनस्तर, डिब्बिया तथा टीनकी चीजें बनानेका कारखाना है इसके अलावा टीन प्लेटका इम्पोर्ट और गव्हर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है। यह फेक्टरी ३० वर्षोंसे काम कर रही है।

आगरा—मेसर्स गजानंद रामप्रताप बेलनगंज—कनस्तर तथा टीनकी चीजें बनानेका कारखाना है।

मेसर्स जी० डी० लोयलका एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूलनिवास स्थान पिलानी (जयपुर) है। आप अग्रवाल समाजके लोयलका सज्जन है। इस परिवारके पूर्व पुरुष सेठ भगवान दासजी लोयलकाने सर्व प्रथम अपना व्यवसाय बम्बईमें जमाया और उसे उन्नत बनाया। बम्बईमें आप पृथ्वीराज भगवानदासके नामसे रुईका अच्छा व्यापार करते थे। आपके दो पुत्र हुए जिनमें बाबू रामचन्द्रजी लोयलका बम्बईके कारबारका प्रबन्ध करते रहे और बाबू घनश्यामदासजी लोयलकाने लगभग १ वर्ष पूर्व कलकत्ते आकर उपरोक्त फर्मकी स्थापना कर शेअरका व्यवसाय आरम्भ किया और उसे उन्नत बनाया। आप कलकत्ता फर्मका संचालन करते हैं। इस लोयलका परिवारकी ओरसे इनके निवासस्थान पिलानीमें लोयलका अस्पताल चल रहा है जिसका संचालन शेखावाटीके प्रसिद्ध चिकित्सक डा० गुलजारीलालजी कर रहे हैं। इसी प्रकार आप लोगोंकी ओरसे वहां एक जाट बोर्डिङ्ग हाउस भी है जहां जाटोंके लड़के शिक्षा पाते और रहते हैं। कलकत्तेकी प्रायः सभी सार्वजनिक संस्थाओंको समय २ पर आपकी ओरसे सहायता मिलती रहती है। सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र बाबू चिरंजी लालजी लोयलका एक शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भगवानदासजीके पुत्र सेठ रामचन्द्रजी लोयलका और सेठ घनश्यामदासजी लोयलका हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जी० डी० लोयलका एण्ड कम्पनी ७ लियान्स रेंज R. E. P—यहां स्टाकएक्सचेंज और शेयर तथा चीनी, हैशियन और पाटका ब्रोकरेज बिजिनेस होता है।

बम्बई—मेसर्स आर० सी० लोयलका, वाड़िया बिल्डिङ्ग दलाल स्ट्रीट—यहां स्टाक एक्सचेंज तथा बुलियन और रुईका काम होता है।
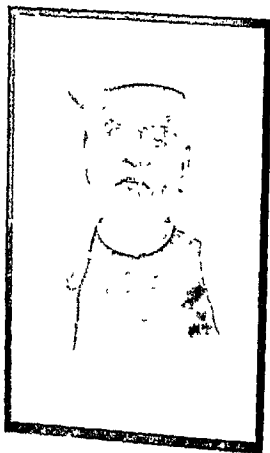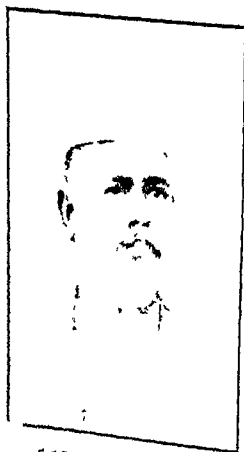
मेसर्स जुहारमल डागाएण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक श्री जुहारमलजी डागा और हरदेवदासजी डागा हैं। आप माहेश्वरी समाजके सज्जन हैं आपका निवासस्थान बीकानेर है। श्री जुहारमलजी १८।२० वर्षोंसे शेअरका कामकाज करते हैं।

बाबू जुहारमलजी माहेश्वरी पंचायतके ६ वर्षोंसे सेक्रेटरी है। स्थानीय डीडू माहेश्वरी पंचायतके विद्यालयके भी आप सेक्रेटरी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता —मेसर्स जुहारमल डागा एण्ड कं० ७ लायंसरेंज—यहां शेअर ब्रोकरेजका काम होता है

कलकत्ता—मेसर्स जुहारमल परशुराम २०१ हरिसन रोड—यहां देशी कपड़ेका कारबार होता है।

मेसर्स दामोदर चौबे एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान होलीपुरा (जिला आगरा) यू० पी० है। आप लोग ब्राह्मण समाजके चौबे सज्जन हैं। सर्व प्रथम बाबू दामोदरजी चौबे लगभग ६० वर्ष पूर्व कलकत्ते आये और थोड़े समय बादही आपने गवर्नमेंट पेपर्सका कार्य्य आरम्भ करदिया। इस व्यवसायमें ही आपने उन्नति की और फलतः आजीवन यही काम करते रहे। यों तो आपने अपने व्यवसायमें क्रमशः उन्नति प्राप्तकी परन्तु सन् १९०२ में बोअरवार नामक युद्ध छिड़जानेके कारण जब सरकारी कागजोंके बजारमें भारी उथल पुथल हुआ तब आपने उससे अच्छा लाभ उठाया और अपने व्यवसाय को सुदृढ़ बनाया। आप गवर्नमेंट पेपर्सके बड़े व्यापारियोंमें मानेजाने लगे और फल यह हुआ कि आपने व्यवसायकी उन्नतिके साथही मान और प्रतिष्ठा भी अच्छी प्राप्तकी आपको लोग गवर्नमेंट पेपरका 'किङ्ग' कहा करते थे। आपका स्वर्गवास हुए ७।८ वर्ष होगये। आपके निवासस्थानपर आपकी बहुतका बड़ी स्थायी सम्पति है जिसका सहज अनुमान इसीसे किया जासकता है कि लगभग २२ हजार रुपये सालियाना आपको सरकारी मालगुजारी देनी पड़ती है। आपके नामसे 'दामोदर मेमोरियल स्कूल' नामका एक स्कूल भी आपको निवास स्थानपर चल रहा है। अकालके समय आप सदैव अकाल प्रपीड़ितोंको सहायता देते रहे हैं।

यह सब कारबार एक सम्मिलित परिवारकी सम्पत्तिके रूपमें है। इसका मालिक बाबू दामोदरजी चौबेका भारी परिवार है। वर्तमानमे इसके प्रधान संचालक बाबू रघुवरदयालजी, बाबू बनारसी दासजी, बाबू संकरलालजी तथा बाबू पुरुषोत्तमलालजी है। बाबू दामोदरजी चौबेके दत्तक पुत्र बाबू

राधेलालजी कोआपरेटिवबेङ्क इलाहाबादके डिपुटी डायरेक्टर हैं इसी प्रकार आपके भतीजे रायसाहब बाबू जुगल किशोरजी चौबे अपने यहांके स्पेशल मैजिस्ट्रेट हैं। यह परिवार शिक्षित और प्रतिष्ठित हैं। बाबू दामोदरजी चौबेने सामान्य स्थितिमें कलकत्ता आकर व्यवसाय आरम्भ किया और अपनी प्रतिभा एवं योग्यतासे उसे सुदृढ़ एवं समुन्नत बना दिया। यहाके शेअरके व्यापारियोंमें आपकी प्रतिष्टाका द्योतक स्टाक एक्सचेंजभवनमें लगाया गया आपका चित्र है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—दमोदर चौबे एण्ड कम्पनी ७ लिआन्स रेंज T. A. Pushpolela —यहांपर शेयर और स्टाक तथा गवर्नमेंट पेपर्सके डिलर्स तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

कानपुर—पुरुषोत्तमदास बनारसीदास हेलसीरोड - यहां आढ़त और बैङ्किङ्गका काम होता है।

होलीपुरा (आगरा) चौबे जुगुल किशोर—यहां आपकी बहुत बड़ी जमीदारी और स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स देवीदत्त हजारीमल दुदवेवाले

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान दूदवा खारा (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गौत्रीय सज्जन है।

दूदवा निवासी सेठ तेजपालजीके ३ पुत्र थे, सेठ सुन्दरमलजी, सेठ लच्छीरामजी एवं सेठ देवीदत्तजी। इनमेंसे कलकत्तेमें सर्व प्रथम सेठ लच्छीरामजी आये। सेठ लच्छीरामजीके बाद उनके पुत्र सेठ बीजराजजी कलकत्ता आये। सेठ लच्छीरामजीके तीन पुत्र थे, सेठ बीजराजजी, सेठ बलदेवदासजी एवं सेठ बसन्तलालजी। एवं सेठ देवीदत्तजीके दो पुत्र हुए। सेठ हजारीमलजी एवं सेठ जगनप्रसादजी। संवत् १९३७ में सेठ बीजराजजी तथा सेठ हजारीमलजीने मिलकर बीजराज हजारीमलके नामसे गवर्नमेंट पेपर तथा शेअर्सका व्यापार और दलालीका कारबार शुरू किया, यह काम आप इस नामसे संवत् १९४५ तक करते रहे। पश्चात् सेठ बीजराजजीने अपना साझा अलग कर लिया। उसी समयसे सेठ बलदेवदासजी, सेठ बसन्तलालजी, सेठ हजारीमलजी एवं सेठ जगनप्रसादजी चारों भाई मिलकर बलदेवदास हजारीमलके नामसे कम्पनी कागज, शेअरका व्यापार और दलाली करते रहे, तथा बलदेवदास बसन्तलाल का एक अलग फर्म लच्छीराम बसन्तलालके नामसे कमीशन एजेण्ट और कपड़ा चालानीका काम करता रहा। उसके थोड़ेही समय बाद सूतापट्टीमें मेसर्स बलदेव- दास हजारीमलके नामसे कपड़ेका कारबार खोला गया। संवत् १९५७ के बाद आप सब

राय हजारीमलजी दूदवेवाला बहादुर
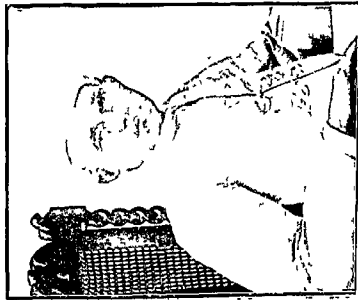
स्वर्गीय बाबू जुगन प्रसादजी दूदवेवाला

भाइयोंकी फर्में फिर अलग अलग हुई, जिनमेंसे सेठ बलदेवदासजी तथा बसन्तलालजीकी फर्म लच्छीराम बसन्तलाल एवं बलदेवदास बसन्तलालके नामसे कारबार करने लगी। सेठ हजारीमलजी तथा सेठ जगनप्रसादजीकी फर्म देवीदत्त हजारीमल तथा हजारीमल जगनप्रसादके नामसे हुई।

सन् १६१३ ई०में [संवत् १६७० में] सेठ जगनप्रसादजीका स्वर्गवास हुआ, तब दोनों भाइयोंका कारबार फिर अलग अलग हुआ, तबसे सेठ हजारीमलजीकी फर्म देवीदत्त हजारीमल तथा हजारीमल सोहनलालके नामसे हुई और जगनप्रसादजीकी फर्मका नाम जगनप्रसाद बैजनाथ पड़ा। सेठ जगनप्रसादजीके स्वर्गवासी होनेके समय बाबू बैजनाथजी नाबालिग थे, अतएव उनकी सम्पत्तिके ट्रस्टी श्री सेठ बलदेवदासजी सेठ हजारीमलजी आदि सज्जन मुकर्रर हुए। बाबू बैजनाथजीके बालिग होनेपर उनकी सम्पत्ति उन्हें सम्हला दी गई।

इस कुटुम्बकी कलकत्तेके मारवाड़ी व्यापारी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है। आपका आरम्भसेही कम्पनी कागज और शेअर्सका व्यापार रहा है, तथा इस व्यापारमें इस कुटुम्बने लाखों रुपयोंकी दौलत पैदा की है, दौलतके साथ साथ साख, सम्मान एवं इज्जत भी आपने काफी पैदा की है। इस समय इस कुटुम्बकी बलदेवदास रामेश्वर, लच्छीराम बसन्तलाल, देवीदत्त हजारीमल तथा जगनप्रसाद बैजनाथके नामसे चार बड़ी बड़ी मातबर फर्में चल रही हैं। ये फर्में शेअर बाजारके प्रधान प्रधान व्यापारियोंमें मानी जाती है।

वर्तमानमें उपरोक्त फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ हजारीमल दूदवेवाले हैं। आपकी वय इस समय करीब ६२ वर्षकी है। आप बहुत सरल प्रकृतिके महानुभाव हैं। ता० १ जनवरी सन्१६१५ में भारत गवर्नमेंटने आपको रायबहादुरके खिताबसे सम्मानित किया है। आपने मारवाड़ी एसोसियेशन, विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल तथा विद्यालय, कलकत्ता पांजरापोल आदि यहां की प्रधान प्रधान संस्थाओंके सभापतिका आसन भी सुशोभित किया है। भारतके बड़े बड़े तीर्थ स्थानोंमें आप लोगोंके दान सुशोभित हो रहे हैं जिनका विस्तृत परिचय इस प्रकारके विशुद्ध व्यापार सम्बन्धी ग्रन्थमें विषयान्तर हो जानेकी आशंकासे नहीं दे सकते फिर भी हम इतनातो अवश्यही कहेंगे कि सेठ साहबका औदार्य बहुत बढ़ा हुआ हैं आपकी धार्मिक मनोवृति ही आपको प्रत्येक कार्यमें सहयोग देनेके लिये आगे बढ़ाती है। ऐसे उच्च कोटि के व्यवसायी और इस प्रकारका मनुष्योचित स्वार्थत्याग वास्तवमें सेठजीके समान परम आस्तिककी महानताका एकमात्र प्रकट प्रमाण है आपकी कितनी भव्य एवं मनमोहक धर्मशालायें भारतके प्रसिद्ध स्थानों जैसे श्री जगन्नाथजी, श्रीबद्रिकाश्रम, श्रीद्वारिकापुरी, श्रीबैजनाथधाम, नैमशारण्य, आदिमें बनी हुई हैं। आपकी ओरसे कितनीही सड़कें,कुआं,कुण्ड आदि बनवाये गये हैं। इतनाही क्यों आपकी ओरसे लाखोंका दान

भी हुआ है जिनमें हिन्दू विश्व विद्यालयको, कलकत्तेके ट्रापिकल मेडीसन इन्स्टीट्यूटकी, विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाडी अस्पतालकी, लेडीडफारिन हास्पिटलमें प्रसूति गृह निर्माण कार्यके लिये, पुरीके अनाथालयकी, आदि दान मुख्य है। आपने मंदिरोंके जीर्णोद्धार ओर निर्माण कार्यके लिये भी बहुतसे दान किये हैं। वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स देवीदत्त हजारीमल ९ ए मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट T No. 2097 B.B.—यहा आपका रेसिडेस है।

कलकत्ता—मेसर्स देवीदत्त हजारीमल ७ लियांसरेंज (ऑफिस) T. No 2096 Cal—यहा बैङ्कर्स, लैण्डलार्डस, शेअर्स, गव्हर्नमेंट, पेपर्स स्टाकडीलर्स और ब्रोकर्सका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स जगनप्रसाद बैजनाथकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जगनप्रसाद बैजनाथ ५६मुक्तारामबाबू स्ट्रीट T No 3579 B.B—यहा रेसिडेंस है।

कलकत्ता - मेसर्स जगनप्रसाद बैजनाथ ७ लायंसरेंज (आफिस)—बैङ्कर्स, स्टॉक एण्ड शेअर डीलर्स तथा ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स नारायणदास खण्डेलवाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मिर्जापुर (यू० पी०) है। आप खण्डेलवाल जातिके सज्जन है। मिर्जापूरमें आपको फर्मपर बहुत समयसे मूलचन्द नारायणदासके नामसे व्यापार होता है। कलकत्तेमें सन् १९१४ ई०में यह फर्म स्थापित हुई। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत नारायणदासजी खण्डेलवालने की। आप बाबू मूलचन्दजी खण्डेलवालके पुत्र हैं। बाबू मूलचन्दजी, वड़े सज्जन पुरुष थे। आप बनारस जौनपुर इत्यादि यू० पी०के बहुतसे डिस्ट्रिक्टोंमें फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट रहे थे। आपका स्वर्गवास सन् १८९८ ई०में हुआ। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमसे श्रीयुत नारायणदासजी खण्डेलवाल, श्रीयुत केदारनाथजी खण्डेलवाल, और श्रीयुत कैलाशनाथजी खण्डेलवाल है। आप तीनों भाई सुशिक्षित, योग्य और उदार सज्जन है। व्यापारी समाज में इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है। यह परिवार सभी दृष्टियोंसे उन्नत है। सार्वजनिक कार्य्योंमें भी आपलोग समय २ पर अच्छा भाग लेते रहते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

हेड ऑफिस—कलकत्ता-मेसर्स नारायणदास खंडेलवाल एन्ड कम्पनी १२ मिशन रो० इस फर्मपर शेअर स्टाकका बिजिनेस होता है।

स्व० सेठ विशुनदयालजी पोद्दार
(विशुनदयाल दयाराम)

स्व० सेठ गजानन्दजी पोद्दार

श्री रा० दयारामजी पोद्दार

२ कलकत्ता—मेसर्स केदारनाथ खंडेलवाल एण्ड कम्पनी १२ मिशन रो० इस फर्मपर चपड़ेका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

३ मिर्जापुर—मेसर्स मूलचन्द नारायणदास—इस फर्मपर बैंकिंग और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास मातूलाल

इस फर्मके मालिक भिवानी (हिसार) के निवानी अग्रवाल समाजके केजड़ीवाल सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू नरसिंहदासजी केजडीवालके हाथोंसे ४० वर्ष पूर्व हुआ। शेअर बाजारमें आपकी फर्म पुरानी मानी जाती है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू नरसिंह दासजी एवं आपके भ्राता बाबू मातूलालजी हैं। बाबू नरसिंहदासजीके पुत्र बा० केदारनाथजी एवं रामकुमारजी हैं तथा बा० केदारनाथजीके पुत्र डूंगरमलजी हैं। आप सब सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता-नरसिंहदास मातूलाल ७ लियान्सरेंज--यहां शेअर एण्ड स्टाकका ब्रोकर्स बिजिनेस होता है।

मेसर्स बिशनदयाल दयाराम पोद्दार

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आप अग्रवाल जातिके पोद्दार सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना ४० वर्ष पूर्व श्रीमान् सेठ बिशनदयालजीने की। आपका स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ गजाननजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। इसके पूर्व यह फर्म बिशनदयाल गजाननके नामसे काम करती थी। इसकी विशेष तरक्की सेठ गजाननजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े सज्जन और व्यवसाय दक्ष पुरुष थे। आपका शरीरान्त सन् १९२५ ई०में होगया। अब इस फर्मके कार्य्यका संचालन श्री० सेठ गजाननजीके पुत्र श्रीबाबू दयारामजी करते हैं। आप बड़े सज्जन, उदार और व्यवसाय दक्ष पुरुष हैं। कलकत्तेके शेअर मारकेटमें इस फर्मने बहुत अच्छी उन्नति की है।

इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुची रही है। आपकी ओरसे कलकत्तेमें मारवाड़ी छात्र निवास नामक एक संस्था चल रही है। इसके लिये श्री सेठ गजाननजी १। लाख रुपयेकी रकम निकाल गये है। इसका प्रबन्ध बहुत अच्छा है। इसके अनि-

रिक्त आपकी ओरसे मारवाड़ी ब्राह्मणवाड़ी नामक एक बहुत सुन्दर इमारत सेन्ट्रल ऐविन्यूमें बन रही है। श्रीयुत दयारामजीके तीन पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमसे श्रीसत्यनारायणजी, देवीप्रसादजी, और लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब पढ़ते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

(१) मेसर्स बिशनदयाल दयाराम, ताराचन्ददत्त स्ट्रीट (T.A. Insight Phone 1785 B B)—यहांपर इस फर्मका हेड आफिस है। यहांपर बैंकिंग और शेयरका बिजिनेस होता है।

(२) मेसर्स बिशनदयाल दयाराम २ रॉयल एक्सचेंज (Phone 2207 Cal)—यहां आपका आफिस है। यहांपर भी शेअर,स्टाक और गवर्नमेण्ट पेपरका बड़ा बिजिनेस होता है। आपके यहांसे पब्लिक शेअर मार्केटकी रिपोर्ट भी निकलती है।

बम्बई—मेसर्स बिशनदयाल दयाराम ५५ अपोलो स्ट्रीट (T. A Juteshare) यहांपर कलकत्तेके शेअरोंका व्यापार होता है।

राय बहादुर बलदेवदास रामेश्वर नाथानी

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान दूदवा खारा (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय सज्जन हैं। दूदवा निवासी सेठ तेजपालजीके ३ पुत्र बाबू सुन्दरमलजी, बाबू लच्छीरामजी एवं बाबू देवीदत्तजी थे। इनमेंसे सेठ लच्छीरामजी कलकत्तेमें आये। सेठ लच्छीरामजीके पुत्र सेठ बीजराजजी, सेठ बलदेवदासजी सेठ बसंतलालजी। एवं सेठ देवीदत्तजीके पुत्र सेठ हजारीमलजी और जगनप्रसादजी हुए। संवत् १९३७ मे सेठ लच्छीरामजीने कारबार अरंभ किया। संवत् १९४५ में सेठ बीजराजजी अलग हो गये, और शेष चारों भ्राता संवत् १९५७ तक शेअर्स और कपड़ेका सम्मिलित व्यापार करते रहे।

संवत् १९५७ में सेठ देवीदत्तजीका कुटुम्ब इस फर्मसे अलग हो गया और तबसे सेठ बलदेवदासजी एवं सेठ बसंतलालजी दोनों भ्राता मिलकर लच्छीराम बसंतलाल एवं बलदेवदास बसंतलालके नामसे कारबार करते रहे।

सन १९१४ में आप दोनों भाइयोंका कुटुम्ब भी अलग २ हो गया और तबसे राय बहादुर सेठ बलदेवदासजी की फर्म मेसर्स बलदेवदास रामेश्वरके नामसे एवं सेठ बसंतलालजीकी फर्म लच्छीराम बसंतलालके नामसे अपना २ स्वतंत्र व्यापार कर रही है। इस कुटुम्बमें श्री बलदेवदासजी नाथानी व्यवसाय चतुर, और मेधावी होगये हैं। आपका शेअरका कारबार करनेका बहुत बड़ा साहस था,
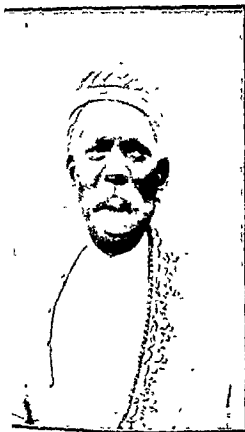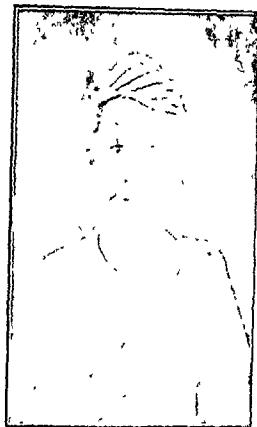
शेअर्सके व्यापारमें आपने करोड़ों रुपयोंकी दौलत पैदाकी, शेअर बाजारके आप ख्याति प्राप्त व्यापारी माने जाते थे। इस बाजारके इतिहासमें आपका नाम बहुत ऊंचा है। आपने अपने अदम्य उत्साहसे शेअरके व्यापार द्वारा अटूट सम्पत्ति पैदाकर धार्मिक कार्योंकी ओर भी अच्छा 'लक्ष रक्खा, सेतुबंध रामेश्वर,द्वारिका, तथा मुजफ्फरपुरमें आपने विशाल धर्मशालाओंका निर्माण करवाया। कलकत्तेके प्रसिद्ध श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पतालको आपने १ लाख ५१ हजारकी भारी रक़म प्रदान की। इसके अतिरिक्त और भी आपने लाखों रुपयोंका दान किया है। जैसे मेटर्निटी स्कूल नीलमनी स्ट्रीटके प्रसूति गृहके लिये, ५० हजार, ३५ हजार रीपोर्ट स्कूलमें, २१ हजार कालीघाट स्क्वायरके लिये, २० हजार ब्रह्म समाजके स्कूलके लिये, १ लाख रुपैया एस० आर० दासके स्कूलके लिये, २० हजार कुण्डा स्टेशनपर तलाव बनवानेमें, ७५ हजार हिन्दू विश्व विद्यालयको वैद्यक कालेजके लिये, २५ हजार गोखले मेमोरियल स्कूलके लिये आदि २ कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें आपका बहुत बड़ा सम्मान था, आपको भारत सरकारने "राय बहादुर' की पदवीसे सम्मानित किया था। संवत् १९२१ मे आपका स्वर्गवास हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय राय बहादुर सेठ बलदेवदासजीके पुत्र श्री० बाबू रामेश्वरदासजी नाथानी हैं। अपने पूज्य पिताजीके स्वर्गवासी होनेके समय आपकी अवस्था ३५ वर्ष की थी, एवं सेठ साहबकी मौजूदगीहीसे आप फर्मके सारे कारबारको सम्हालने लग गये। फल यह हुआ कि आपके पिताजीके बहुत बड़े व्यापारिक साहसका आपके जीवन पर भी असर पड़ा एवं आपभी शेअर तथा चांदीका काम करने वाले व्यापारियोंमें बहुत ऊंची श्रेणीके व्यापारी माने जाते हैं।

आपका जीवन प्रधानतया धार्मिक जीवन है। ब्राह्मणोंकी सहायतामें आपका हृदय उदारता पूर्वक भाग लेता रहता है। इस समय आप हजारों रुपया प्रति वर्ष ब्राह्मणोंकी सहायतार्थ लगाते हैं। आपने ४० हजार रुपयोंके जूट शेअर्स कलकत्ता पांजरापोलको दिये हैं जिनके व्याजकी रकम पिंजरापोलके प्रबन्ध कार्यमें जाती है। श्रीविशुद्धानन्द स० मा० अस्पतालमें आपने २५ हजारकी लागतसे अपनी पूज्य माताजीके नामसे एक वार्ड बनवाया है। आपने करीब १। लाख रुपयोंकी लागतसे श्रीजनकपुर रोड एवं जनकपुर धाममें दो सुन्दर धर्मशालाओंका निर्माण करवाया। इसी प्रकार साहबगंज (तिवारीपट्टी) गोरखपुर तथा देशमें बहल नामक गांवमें धर्मशालाएं बनवाई गई, इस कुटुम्ब द्वारा स्थापित दूदवेके नाथानी कष्ट निवारक फण्डमें आपकी बहुत ज्यादा सम्पत्ति लगी हैं, आप उसमें बराबर दान देते रहते हैं। इसी प्रकारके अनेक धार्मिक कार्योंमें प्रतिवर्ष आप बहुत सम्पत्ति प्रदान करते रहते हैं। कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें होनेवाले चन्दोंमें आपका नाम भी अग्रगण्य रहाकरता है।

इस फर्मकी व्यापारिक, धार्मिक तथा सामाजिक जगतमें अच्छी प्रतिष्ठा स्थापित कर बा० रामेश्वरदासजीने अपनी स्थाई सम्पत्ति बढ़ानेकी ओर भी बहुत बड़ा लक्ष रक्खा। मुक्तारामबाबू स्ट्रीटका आपका निर्माण कराया हुआ विशाल गोपाल भवन, कलकत्तेकी नामी और सुन्दर इमारतोंमें माना जाता है। सन् १९१८ में आपने कलकत्तेके प्रसिद्ध रईस बाबू दुलीचन्दजीका उपवन मोल लिया जो इस समय आपकी अधीनतामें है। इसका वर्तमान नाम श्रीगोपाल बाग है, बारकपुर ट्रंक रोडपर भी आपका एक बगीचा बना हुआ है।

वर्तमानमें आपके ५ पुत्र हैं जिनमें बड़े श्रीभागीरथजी एवं सत्यनारायणजी व्यापारमें योग देने लगे हैं एवं इनसे छोटे श्रीमहावीरजी तथा श्रीहरीरामजी पढ़ते हैं सबसे छोटे लड्डू-गोपाल हैं

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रायबहादुर बलदेवदास रामेश्वर नाथानी ९७।१ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (रेसिडेंस) यहा आपका विशाल गोपाल भवन बना है एवं प्रधान गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स रायबहादुर बलदेवदास रामेश्वर नाथानी २ रायल एक्सचेंज प्लेस (आफिस) यहां शेअर तथा हैसियनका बहुत बड़ा कारबार होता है।

चौबीस पर्गना नामक जिलेके अनन्तपुर नामक पर्गनेमें आपकी बहुत बड़ी जमींदारी भी है।

मेसर्स मगनीराम बांगड़ कम्पनी

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिक बा० मगनीरामजी एवम रामकुमारजी बांगड़ है। यह फर्म कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें बहुत अच्छी समझी जाती है। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता ही है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० २०० में चित्रों सहित दिया गया है। यह फर्म यहा शेअरोंका बहुत बड़ा व्यवसाय करती है। इसकी यहां बहुत स्थायी सम्पत्ति भी है। इसका आफिस रायल एक्स चेंज प्लेस और गद्दी बांसतल्ला स्ट्रीटमें है।

मेसर्स मुकुन्दलाल एण्ड संस

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास भिवानी (पंजाब) है। आप वैश्य समाजके सज्जन हैं।

स्व० बाबू शिवप्रसादजी सराफ
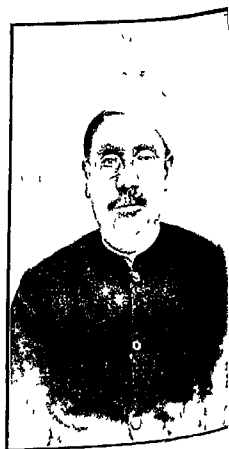
इस फर्मका स्थापन करीब १९०८ में बाबू मुकुन्दलालजीके हाथोंसे हुआ। तथा इसके व्यवसायको तरक्की भी आपहीके हाथोंसे मिली। इस समय आपके यहां शेअर स्टॉक एण्ड गवर्नमेंट पेपर्सका बिजिनेस होता है। आपका आफिस लियांसरेंजमें है वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री० मुकुन्दलाल-जी तथा आपके ३ पुत्र बाबू बिसेसरलालजी, बाबू लखपतरामजी तथा हरिचंदरामजी हैं। आप सब लोग बिजिनेसमें भाग लेते हैं। आपके आफिसका पता १४९ हरिसन रोड है।

मेसर्स मुरलीधर सराफ

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरू (बीकानेर) है। आप अग्रवाल समाजके सराफ सज्जन हैं। सेठ शिवप्रसादजी सराफ संवत् १९२८ में देशसे अमृतसर गये, वहांसे आप संवत् १९३८ में कलकत्ता आये। यहां आपने १९४२ में शिवप्रसाद भगवानदासके नामसे कपड़ेका कारबार शुरू किया, पश्चात् बिहार प्रांतके आरा वगैरा स्थानोंमें इसकी ब्रांचेज खोली गईं।

सेठ शिवप्रसादजी सराफ समाज सुधारके कट्टर पक्षपाती थे। आप उपनिषध आदि वैदिक ग्रन्थोंसे विशेष प्रेम रखते थे, आपको कवितासे प्रेम था, हिन्दीमें लेख आदि आप लिखा करते थे। इसी प्रकारकी शिक्षा विषयक बातोंमें आपकी अधिक रुचि रहा करती थी। आपका शरीरान्त संवत १९८४ मेंहुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवप्रसादजीके पुत्र बाबू मुरलीधरजी एवं बाबू मदनलाजी सराफ हैं। आपने अपने पिताजीकी मौजूदगी सेही ऑफिस आदिमे कपड़ेकी ब्रोकरेजका काम शुरू कर दिया था। सन् १९१४ में यूरोपीय युद्धके समय कलकत्ता स्टॉक एक्चेंजमे दलालीका कारबार शुरू किया तथा इस ओर अच्छी तरक्की हासिल की। बाबू मुरलीधरजी शेअर बाजारकी एक्जी-क्यूटिव्ह कमेटीके मेम्बर हैं। आपकी ओरसे चुरू स्टेशनके पास एक रमणीय बगीचा बना हुआ है। वहां गौओंके लिये जलकी भी व्यवस्था है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मुरलीधर सराफ ७ लियांसरेंज T.A. Shubh—यहां शेअर्सका डीलसर्स ब्रोकस व्यवसाय और बैंकिंग काम होता है।

कलकत्ता—मुरलीधर मदनलाल ७ लियांसरेंज T A Shubh कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार होता है।

मेसर्स रामदेव चोखानी

इस फर्मके वर्तमान संचालक राय बहादुर रामदेवजी हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थमें कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां इस नामसे शेअर और गवर्नमेंट पेपरका व्यापार होता है। इसका आफिस नं० ७ लियांस रेंजमें है।

रामकुमार केजड़ीवाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामकुमारजी और बाबू विलासरायजी केजड़ीवाल हैं। आप चिड़ावा (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इसका स्थापन आपहीके हाथोंसे हुआ। इसके पहले आपके पूर्वजोंने करीब ५० वर्ष पूर्व मेससे मिसरीलाल लक्ष्मीनारायण नामकी फर्म स्थापितकी थी। इस फर्ममें मिर्जापुरके प्रसिद्ध रईस मेसर्स सेवाराम मन्नूलालका सामा है।

वर्तमानमें इसका व्यापार इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण सूतापट्टी—T. No 2409 B.B. यहाँ कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार तथा शक्करका कारबार होता है।

कलकत्ता—रामकुमार केजड़ीवाल ७ लियास रेंज – यहां शेअर्स और स्टाक ब्रोकर्सका काम होता है।

मेसर्स राधाकृष्ण सोनथलिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडावा (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सोनथलिया सज्जन हैं। इस फर्मके मालिकोंके पूर्व पुरुष सेठ सोजीरामजी संवत १९१६ में देशसे कलकत्ता आये। अफीम आदिके व्यापारमें आपने अच्छा पैसा पैदा किया। सम्पति प्राप्त करनेके साथ २ आपने अपनी मान एवं प्रतिष्ठा भी अच्छी बढ़ाई। आप अपने समाजके समझदार महानुभाव माने जाते थे। जातिका उपकार करनेकी भावनाएं आपके हृदयोंमें खूब थी।

सेठ सोजीरामजीने अपने भतीजे सेठ रघुनाथरायजीको कपड़ेकी दुकान कराई और सोजीराम रघुनाथरामके नामसे आपका साझेमें व्यवसाय चलने लगा। इस धन्धेमें भी आपने अच्छी तरक्की की। पश्चात् रघुनाथरायजीके स्वर्गवासी होजाने पर आप सोजीराम रामदेवके नामसे अपना कारबार करने लगे। इस प्रकार पूर्ण गौरव मय व्यवसायिक जीवन व्यतीत करते हुए आपका शरीरान्त संवत् १९४४ में हुआ।
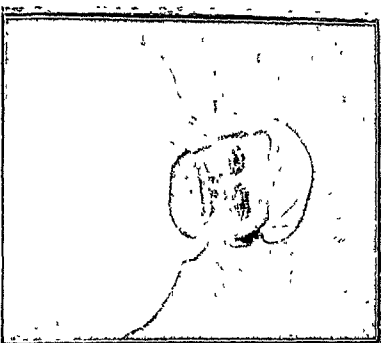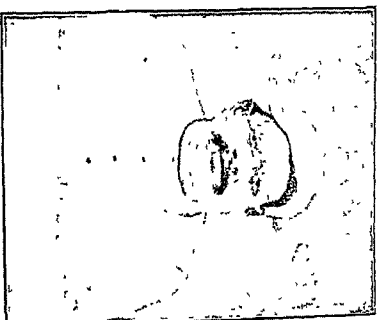
बाबू रामदेवजी सोनथलिया

बाबू कन्हैयालालजी सोनथलिया

बाबू राधाकृष्णजी सोनथलिया

बा० महालीरामजी सोनथलिया
(राधाकृष्ण सोनथलिया)
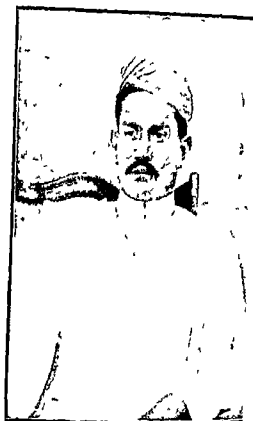
बा० मुरलीधरजी सोनथलिया
(राधाकृष्ण सोनथलिया)
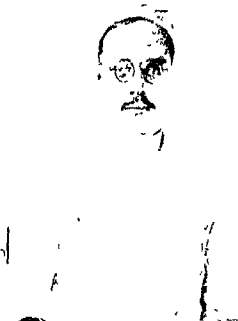
सेठ सोजीरामजीके ४ पुत्र हुए, सेठ रामचन्द्रजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी, सेठ रामदेवजी एवं सेठ कन्हैयालालजी। इन सज्जनोंमेंसे सेठ रामचन्द्रजी एवं सेठ लक्ष्मीनारायणजीका जल्दी ही स्वर्गवास हो गया था। शेष दो भ्राता सेठ रामदेवजी एवं सेठ कन्हैयालालजी वर्तमानमें इस फर्मके मालिक हैं।

सेठ कन्हैयालालजीके पुत्र बाबू राधाकृष्णजी सोनथलिया, बाबू माहलीरामजी सोनथलिया एवं श्री शुभकरणजी सोनथलिया वर्तमानमें फर्मके व्यवसायको बड़ी उत्तमत्तासे संचालित कर रहे हैं।

सन् १९०७ में बाबू राधाकृष्णजीने शेअर्सका व्यवसाय आरम्भ किया एवं इस व्यवसायको आपने अपने छोटा भ्राता माहलीरामजीके साथ बहुत उन्नित पर पहुंचाया। इस व्यवसायमें आपने सम्पति भी अच्छी उपार्जितकी। आपका कुटुम्ब कलकत्तेके मारवाड़ी अग्रवाल समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है। तथा हरएक सार्वजनिक एवं धार्मिक कार्योंमें आप लोग अच्छा सहयोग देते रहते हैं।

आप लोगोंने सन १९२३ में केशोराम कांटन मिल खरीदा था तथा वर्तमानमें आप मेसर्स बिरला ब्रदर्सके साथ उसका मेनेजमेंट करते हैं।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स राधाकृष्ण सोनथलिया ६५ पथरिया हट्टा T. A. Rakmar T N. 1947 Cal.
यहां आपका निवास है। एवं सराफी लेन देन होता है।

कलकत्ता—मेसर्स राधाकृष्ण सोनथलिया ७ लायंस रेंज T A Rakmar T.N. 3475 Cal.—
यहां शेअर्स एण्ड गव्हर्नमेंट पेपर्सका व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—मेसर्स एडल वियन एण्ड कं० लि० ५ रोयल एक्सचेंज प्लेस T No 3942 Cal—
यहां कपड़ेके इम्पोर्टका काम होता है। आप इस फर्मके बैंनियन, पार्टनर एवं मैनेजिंग डायरेक्टर है।

कलकत्ता—शुभकरणदास केशवदेव ७ लाइंसरेंज—यहां कॉटनका व्यापार होता है।

कलकत्ता—एम० डी० सोनथलिया क्लाइव स्ट्रीट—यहां हेसियनका व्यापार होता है।

बाबू राधाकृष्णजीके पुत्र बाबू मुरलीधरजी एवं बाबू माहलीरामजीके सबसे बड़े पुत्र बाबू केशवदेवजी है।

मेसर्स शिवनारायण मुरोदिया कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवासस्थान पिलानी [जयपुर] है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मुरोदिया सज्जन हैं। करीब ७० वर्ष पूर्व स्व० सेठ शोभारामजी देशसे कलकत्ता आये। एवं आपने यहां कपड़ेकी दुकान की। आपके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी मुरोदियाने शोभाराम लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेके व्यवसायके लिये एक और नवीन फर्म खोली। इस व्यवसायमें आपने अच्छी सम्पत्ति पैदा की। आप कई संस्थाओंके ट्रस्टी थे। एवं सार्वजनिक कार्योंमे बहुत भाग लिया करते थे। अपने जीवनके अन्तिम १० वर्षोंसे आप व्यवसायिक काम अपने पुत्रोंपर छोड़कर प्रायः सार्वजनिक एवं धार्मिक कार्योंमे विशेष रूपसे भाग लेते रहते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८४ में होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी मुरोदियाके पुत्र बाबू शिवनारायणजी मुरोदिया हैं। आपने संवत् १९७२ से शेअरका कारबार शुरू किया है। इस व्यापारमें भी आपने अच्छी उन्नति की। कुछ समय बादसे आप बा० बासुदेवजी कसेराके साझेमे शेअरका कारबार करने लगे। एवं वर्तमानमें भी आप दोनों सज्जन फर्मके व्यवसायका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवनारायण मुरोदिया कम्पनी २ रॉयल एक्सचेंज प्लेस—यहां शेअरका कारबार होता है।

कलकत्ता—शिवनारायण मुरोदिया ९० मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यहां आपकी गद्दी है।

मेसर्स शिवभगवान गजानन

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान फतहपुर [जयपुर] है। आप अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ शिवभगवानजीने करीब ३५ वर्ष पूर्व किया। प्रारंभसे ही यह फर्म शेअरका काम करती आ रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवभगवानजीके पुत्र बा० गजाननजी, बा०राधाकृष्णजी, एवम् बा० रामकृष्णजी हैं। आप सब सज्जन व्यापारमें सहयोग देते हैं।

आपका व्यापारका परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स शिवभगवान गजानन १४ भुवनमोहन लेन—यहां आपकी गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवभगवान गजानन ७ लायंसरेंज—यहां शेअरका व्यापार होता है।
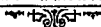
मेसर्स श्यामसुन्दरलाल खण्डेलवाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान आगरा (यू० पी०) हैं। आप खंडेलवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सन् १९१६ में बाबू श्यामसुन्दरलालजीके हाथोंसे कलकत्तेमें हुआ है। आपके पुत्र बाबू बिहारीलालजी, श्रीचंदालालजी एवं श्रीअमरनाथजी खंडेलवाल भी व्यवसायमें भाग लेते हैं। आपलोग शिक्षित हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्यामसुन्दरलाल खंडेलवाल ७ लायंसरेज T No. 1624, 1625 Cal.—यहां शेअर स्टाक ब्रोकर्स एण्ड डीलर्सका व्यापार होता है।

कलकत्ता—श्यामसुन्दरलाल खंडेलवाल ९७ बाराणसी घोष स्ट्रीट—T No 765 B. B.—यहां जूटका व्यापार होता है। तथा आपका निवास है। आपकी फर्म जूटबेलर्स एसोसिएशनकी मेम्बर है।

मेसर्स सदासुख काबरा एण्ड कम्पनी

इस फर्मके प्रधान संचालक बा० सदासुखजी काबरा हैं। इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीट है। नं० २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें इसका शेअरके व्यापारका आफिस है। यहां सब प्रकारके शेअरोंका व्यापार होता है। टेलीफोन नं० २६४९ कलकत्ता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें चांदी सोनेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हजारीमल सोमानी एण्ड कम्पनी

इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें है इस नामसे इसका आफिस २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें है। यहां यह फर्म शेअर और गव्हर्नमेंट पेपर्सका व्यापार करती है। इसका तारका पता Suraj mukhi है। टेलीफोन नं० है 1815 Cal. और 500 B B.। इसका विशेष परिचय चांदी सोनेके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया है।

स्व० बाबू रामस्वरूपजी (रामस्वरूप मामचन्द) पृष्ठ ३२०

बाबू श्यामसुन्दरलालजी खण्डेलवाल (पृष्ठ ३४८)

बाबू बिहारीलालजी खण्डेलवाल (पृष्ठ ३४८
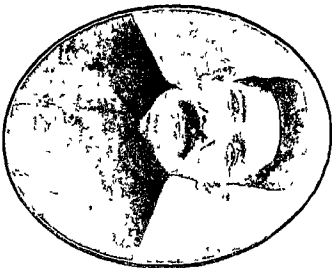
शेअरके व्यापारी

अतुल चरन राय ब्रदर्स
अजीतनारायण चट्टोपाध्याय
अक्रूर चन्द्र दे०
इन्द्रनाथ लाहा
ए० सी० दत एण्ड को०
ए० पी० वरोल एण्ड ब्रदर्स
इ० ए० सोफर एण्ड को०
किशनलाल बांगड़
केदारनाथ केजड़ीवाल एण्ड को०
केदारनाथ सराफ एण्ड को०
कन्हैयालाल श्रीनारायण सोनी
किशनचन्द झूंझनूवाला
कोठारी एण्ड को०
के० के० सिंह
किशनलाल पोद्दार
केसरीचन्द सेठी एण्ड को०
कोहन अलबर्ट को०
गंगाप्रसाद चतुर्वेदी
गंगाबिशन हरिस
गोरेलाल शील
गोकुलदास मेहता
गोपीकिशन बिन्नानी
गोपीनाथ दे
गणपतराय कयान एण्ड को०
गुलाबदास अमृतलाल
गुलाब एण्ड को०
ग्यानीराम एण्ड को०
घनश्यामदास जगनानी
जी० डी० लोयलका एण्ड को०
जी० एम० पेनी
चन्द्रकुमार अग्रवाल एण्ड को०
चुन्नीलाल टी० मेहता
जोहारलाल दत्त एण्ड संस
जे० एम० जार्ज एण्ड को०
जोहारमल डागा एण्ड को०
जीतमल सिंहानिया
ज्वालाप्रसाद चौबे
जुगनप्रसाद बैजनाथ
जैचन्दलाल नाहटा
जे० सी० माजूमदार एण्ड को०
जे० आर० सकलत
जे० एम० दत्त
जे० एस० हापवुड एण्ड को०
जोगेन्दनाथ लाहा
तुलसीदासराय एण्ड ब्रदर्स
तिलोकचन्द नेवर
थामस वाल्फर एण्ड को०
ठाकुसीदास खेमका
ठाकुरप्रसाद मेहता
डी० मल्लिक
डी० एन० सेन एण्ड संस
डालूराम फूलचन्द
डी० बी० दत्त एण्ड को०
डी० जे० परसनस
डी० ए० गुल्वे एण्ड को०
दामोदर चौबे एण्ड को०

दानमल भूरामल
धनरुपमल गोलेछा
दिनानाथ नेवर
दुर्गाप्रसाद सराफ
द्वारकादास बांगड़
देवीदत्त हजारीमल
दुर्गादत्त जालान
देवेन्द्रनाथ सील
नागरमल गोयनका
नरसिंहदास मातूलाल
नारायणदास खण्डेलवाल
नन्दी एण्ड को०
नृपेन्द्रकुमार वोस
नवीनचन्द्र बड़ाल
नवकृष्टो दे
निरंजन कृष्ण दास
नरेन्द्र कृष्ण दत्त
एन० सी० मजूमदार एण्ड० को०
एन० एल० राय एण्ड को०
पी० बी० दे
पूरन चन्द सील
प्रेमलाल दे
प्लेस सिंछेन्स गुह
पी० सी० मल्लिक
प्रसाददास बड़ाल एण्ड ब्रदर्स
फतिकचन्द बराल
बेर थाड एण्ड को०
विसन दयाल गजानन
बलदेवदास रामेश्वर
बद्रीदास सराफ
विट्ठलदास द्वारकादास
वैजनाथ सराफ
विसेसर प्रसाद ढाढनियां
बसंतलाल नाथानी
बोस एण्ड को०
बागला एण्ड को०
बालूराम लकड़
ब्रिजलाला मस्करा
बैजनाथ चम्पालाल
बैजनाथ अन्सीप्रसाद
बैजनाथ शर्मा
बद्रीदास सोहनलाल
ब्रिजलाल चोखानी
विसनदयाल दयाराम
बी० एल० चक्रवर्ती
बी० एल० घोले
बिधानाथ दत्त
ब्रिजगोपाल दे
बी० एम० गर्ग कम्पनी
बी० मित्र एण्ड को०
बी० एन० मित्र
भानीराम भालोटिया
एम० ए० बासवी
मनमथनाथ दे
मगनीराम बांगड़ एण्ड को०
मदनमोहन पोद्दार
मल्लिक एण्ड को०

स्टेवर्ट एण्ड को०
शिवदत्तराय केड़िया एण्ड को०
श्रीकिशन मकड़
शिवप्रसाद पोद्दार
एस० एन० नन्दी
एस० ए० मजूमदार
एस० एन० मित्र
श्यामलाल लहा एण्ड को०
एस० बी० गुप्ता एण्ड को०
ए० एम० डालमिया एण्ड को०

एस० बी० दे एण्ड को०
सतीशचन्द्र लाहा
हरिचरन बड़ाल एण्ड को०
हरिनाथ विस्वास
हेमेन्द्रनाथ बड़ाल
हरेन्द्रकृष्ण दत्त
हिरेन्द्रनाथदास एण्ड को०
हरदयाल सीताराम
हजारीमल सोमाणी एण्ड को०
हीरालाल एन० शुल्क

कपड़े के व्यापारी

Cloth Merchants & Importers.

भारतकी कपड़ेकी मिलोंमें यों तो सभी प्रकारका माल बनता है। पर मोटा माल सबसे अधिक तैयार होता है। भारतके बाजारमें भारतके मिलोंके मोटे सूतके बने लाङ्गक्लाथ, मार्कीन ड्रिल, जीन, और मोटी धोती जोड़ेको विलायती मालसे प्रतियोगिता करनी पड़ती है। बढ़िया महीन माल भारतीय मिलोंमें तैयार नहीं होता। अतः इस प्रकारके माल पर विलायती मालका एकाधिपत्य ही है। देशी मिलोंमें जो लांगक्लाथ तैयार होता है उसका ताना २० नं० से २४ नं० तकके सूतका होता है और उसमें १६ नं० से ३० नं० तकके सूतका वाना डाला जाता है। इस प्रकार यहांके देशी मिलोंकी तैयार कोरी धोतियोंका ताना २० नं० से ३० नं० तकके सूतका रहता है और उनमें वाना १६ नं० से ३६ नं० तकके सूतका दिया जाता है। पर यही माल जो विदेशसे यहां आता है उसमें कोरा मार्कीन, लांग क्लाथ, वगैरः प्रायः २६ से ३४ नं० तकके सूतके बने होते हैं और लांगक्लाथ परकी धोती ३२ नं०के सूतके ताने और ३६ नं० के सूतके बानेकी होती है। नैनसुखकी धोती ४० नं० के ताने और ५० नं० के सूतके वाने तथा मलमलरकी धोती ६० नं०के ताने और ६० नं० सूतके बानेकी होती है अतः इसमें प्रतियोगिताका प्रश्न ही नहीं है।

सूती कपड़ेकी सबसे अधिक खपत करनेवाला संसारमें एक मात्र भारत है, जिस पर लंकाशायर और मैनचेस्टरका पूरा अधिकार है। कोरे और धुले सफेद सूती कपड़ेकी आमद बृटेन से ही अधिक होती है। यही कारण है कि विलायती बाजारके ऊंचे नीचे प्रभावका भारतके बाजारपर भारी हाथ रहता है। रंगीन सूती माल इटली, हालैण्ड, और जर्मनीसे कुछ आता है। जिस समय योरोपीय समरमें बृटेनके धुनियां जुलाहे सभी सेनामें भर्ती हो गये और मिल बंदसी हो गयीं तो बाजार सूना देख जापान और अमेरिका भारतमें घुस आये। जापानने कोरा लाङ्गक्लाथ, मार्कीन, चादर, ड्रिल, और जीन तथा अमेरिकाने कोरा ड्रिल, और जीन भेजना आरम्भ किया। धीरे धीरे रंगीन कपड़ेमें जापानी चौखाने, ड्रिल, जीन, और कमीजके कपड़े भी आने लगे।

करघेका कपड़ा

देश विदेशके मिलोंके होते हुए भी भारतके करघेका प्रचार बिलकुल रुका नहीं, परन्तु अब दिन प्रतिदिन उन्नतिकी ओर तेजीसे बढ़ रहा है सूती मालके अतिरिक्त भारतके करघे रेशमी और ऊनी माल भी तैयार करते हैं। यह व्यवसाय इतना बढ़ रहा है कि भारतके लाखों दीन हीन असहाय आज करघेसे अपनी आजीविका चला रहे है। करघेपर महीनसे महीन और अच्छेसे अच्छा माल तैयार किया जा सकता है। चन्द्रनगर, शान्तिपुर ढाका, मऊ आदिस्थानोंमें जुलाहे करघेसे अच्छा माल तैयार करते हैं। हाथके करघोंसे मोटे मेलमें अंगोछे, झाड़न, लिहाफ, रजाई, फर्श

आदिके योग्य माल तैयार करते हैं। रेशमी मालमें बरहमपुरकी गरद, आसामकी अण्डी, मूंगा, भागल पुरकी टसर, और बाफत्ता। बनारसकी जरीदार कपड़े और ऊनीमें लुधियाना, अमृतसर, और काश्मीरमें जो माल तैयार होता है वह सब करघेपर ही बुना जाता है।

देशी करघेका बना माल

देशी करघेपर दो जातिका उत्तम कपड़ा बुना जाता है। एक तो लाङ्गक्लाथ और बूटेदार सूती दमस्क (Damask) तथा दूसरा मलमल सादी और फूलदार (जामदानी)

(१) लाङ्गक्लाथ कई प्रकारका होता है जो मोटे चारखानेदार और धारी दार गबरून कहाते है। और पतले धारीदारको 'सूसी' कहते हैं जिसके पायाजामें बनाये जाते हैं। ये सभी रंगीन और सादे दोनों ही किस्मके होते हैं। दमस्क (Damask) बेल बूटेदार महीन सूतका होता है।

लुधियानेमें चारखानेदार गबरून Drills अच्छे बुने जाते हैं जो बिलायतीके मुकाबलेके होते हैं। कोहाट, पेशावरकी रंगीन चारखानेदार लुंगी अच्छी होती है। संयुक्त प्रान्तमें तनजेब. बुनी जाती है। रामपुरके पलंगपोश, और आगरेकी नाखूनी गबरून अच्छी होती है। बिहारमें पटना जिलेके बिहार और 'जहानाबाद' में चौखाने बुने जाते हैं। बंगालमें मुर्शिदाबादके पास बरहमपुर, चटगांव, शांतिपुर (नदिया) त्रिपुरा और ढाका तथा मनीपुर स्टेटके इम्फाल नगरमें अच्छा माल तैयार होता है।

२ सादी मलमल, ढाका, बनारस, कोटा, रोहतकमें जामदानी, या फूलदार मल मल ढाका, शान्तीपुर, मनीपुर, बनारस. टांडा (फैजाबाद) जायस (रायबरेल) मऊ (आजमगढ़) में बनता है।

रेशमी माल सोनाकूची, पलास बाड़ी, विश्नुपुर आदिमें अच्छा बनता है इसका बाजार गोहाटी डिब्रूगढ़ और मनीपुर है।

मेसर्स आनन्दराम गजाधर

इस फर्मके वर्तमान संचालक आनन्दरामजी, मंगतूरामजी, गजाधरजी एवम पूरनमलजी हैं। इस फर्मका पूरा परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १२३ में चित्रों सहित दिया गया है। यहां यह फर्म पाचागलीमें कपड़ेका व्यापार करती है।

मेसर्स उदयचन्द पन्नालाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ हजारीमलजी वेद और सेठ जंवरीमलजी वेद हैं। यह फर्म यहां संवत् १९२४ से व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १५६ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेका बहुत बड़ा इम्पोर्ट बिजिनेस करती है। इसके अतिरिक्त मेसर्स जंवरीमल गणेशमलके नामसे जूटका व्यापार भी होता है। यहां इसका आफिस ४२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। इस फर्मकी यहा स्थायी सम्पत्ति भी अच्छी बनी हुई है।

मेसर्स करणीदान रावतमल

यह दुकान ५३ सूतापट्टीमें है। यहां धोतीका थोक व्यापार होता है। विशेष परिचय जूट बेलर्समें दिया गया है।

यहाके कपड़ेके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स खेतसीदास कालूराम

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान सरदारशहर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके जम्मड़ सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका स्थापन हुए करीब ७० वर्ष हुए। इसकी स्थापना खेतसीदासजीके हाथोंसे हुई। शुरू २ में इसपर खेतसीदास तनसुखदास नाम पड़ता था। खेतसीदासजीके २ पुत्र हुए। श्रीयुत् कालूरामजी तथा नानूरामजी। श्रीयुत कालूरामजी बड़े होशियार व्यक्ति थे। आपके समयमें इसफर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६८ में हुआ। आपके समयमें ही सेठ खेतसीदासजी एवम् तनसुखदासजीकी फर्में अलग २ होगई थीं तभीसे इस फर्मपर उपरोक्त नामसे कारबार होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत कालूरामजीके पुत्र श्री मंगलचन्दजी, श्री विरदीचन्दजी, एवम् शुभकरणजी हैं। श्री विरदीचन्दजी, नानूरामजीके यहा दत्तक गये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स खेतसीदास कालूराम ११३ क्रास स्ट्रीट, मनोहरदासका कटरा—यहा बैंकिंग, धोती जोड़े एवं कपड़ेका व्यापार होता है।

स्व० नान्हूरामजी जम्मड़ (खेतसीदास कालराम)

बा० गणपतराय खेमका (तनसुखदास गणपतराय)

मेसर्स गोपीराम गोविन्दराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० रामविलासजी, बद्रीनारायणजी, मंगतूलालजी, गजानन्दजी एवं गोकुलचन्दजी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभाग के पेज नं० १५१ में दिया गया है।

यहाँ इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स गोपीराम गोविन्दराम—११३ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हरदेवदास रामविलास—११३ क्रासस्ट्रीट—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बालबक्स बद्रीनारायण—११३ क्रास स्ट्रीट—यहां भी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स गणेशमल सिंचयालाल

इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४० में मेसर्स चतुरभुज नवलचन्द वेदके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म ३७ आर्मेनियन स्ट्रीटमें कपड़ेका व्यापार एवम् बैङ्किगका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदार शहर है। आप ओसवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसकी स्थापना श्री गणेशदासजीने की। इसकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास होगया। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन आपके भतीजे श्रीमूलचंदजी, नेमीचंदजी, और हरकचंदजी करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास जुहारमल १३ नारमल लोहिया लेन T A. Samansukh—यहां देशी कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मेसर्स गोरखराम तनसुखराय खेमका

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान चुरू (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके खेमका सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ गोरखरामजी करीब १०० वर्ष पूर्व देशसे कलकत्ता आये।

मेसर्स चौथमल दुलिचन्द

इस फर्मके मालिक सरदार शहर (बीकानेर) के निवासी ओसवाल वैश्य जातिके तेरापंथी सज्जन हैं। इसका स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व बा० दुलिचंदजीके हाथोंसे मेसर्स मुल्तानमल दुलिचंदके नामसे हुआ था। शुरूसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार कर रही है। संवत् १९६७ में बा० दुलिचंदजी और मुल्तानमलजीकी फर्में अलग २ होगईं। बा० दुलिचंदजीके चार भाई और थे। जिनके नाम क्रमशः केसरीचंदजी, चुन्नीलालजी, मगराजजी एवं कोड़ामलजी थे। इनमें चुन्नीलालजी तथा मगराजजीका परिवार स्वतंत्र व्यापार करता है। शेष तीनों भाईयोंका व्यापार शामिल रूपमें होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ दुलिचंदजी तथा आपके पुत्र नथमलजी, सदासुखजी, आपके नाती मोतीलालजी, इन्द्रचन्दजी और आपके भाई कोड़ामलजीके पुत्र पूनमचंदजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स चौथमल दुलिचंद—११३ क्रास स्ट्रीट—यहा बैंकिङ्ग तथा विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स जुगलकिशोर सेवकराम

इस फर्मके मालिक मूल निवासी रामगढ़ [जयपुर] के हैं। आप अग्रवाल जातिके रुइया सज्जन है। इस फर्मपर पहले मेसर्स जुगलकिशोर सूरजमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ जुगलकिशोरजी रुइयाने की थी। सेठ जुगलकिशोरजी रामगढ़से मिरजापुर गये और वहासे नावमें बैठकर करीब ४० दिनोंमे कलकत्ता आये थे। आप बड़े साहसी, व्यापार दक्ष और परिश्रमी सज्जन थे। यही कारण है कि आपको अपने जीवनमें ही व्यवसायिक सफलता प्राप्त हुई। आपके दो पुत्र हुए, श्रीयुत बिलासरायजी और श्रीयुत सूरजमलजी। आपलोगोंके समयमें इस फर्मकी बहुत तरक्की हुई। इस कालमें यह फर्म कलकत्तेके अत्यन्त प्रसिद्ध शुगरमर्चेण्ट्समें एक समझी जाने लगी। इसके अतिरिक्त इसका पीसगुड्सका व्यवसाय भी इतना बढा कि यह इस कालमें सात विलायती कम्पनियोंकी बेनियन हो गई। सेठ सूरजमलजीके पश्चात् उनके पुत्र सेठ चतुर्भुजजीने भी इस फर्मकी अच्छी तरक्की दी। आप कलकत्तेके नामी व्यापारियोंमें होगये हैं।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत सूरजमलजीके पौत्र और सेठ सेवकरामजीके पुत्र बा०मानमलजी रुइया हैं। आप शिक्षित और योग्य सज्जन हैं। कुछ घरू मामलोंकी वजहसे कुछ समय

स्व० बाबू जुगलकिशोरजी रुइया
(जुगलकिशोर सेवकराम)

स्व० बाबू सूरजमलजी रुइया
(जुगलकिशोर सेवकराम)
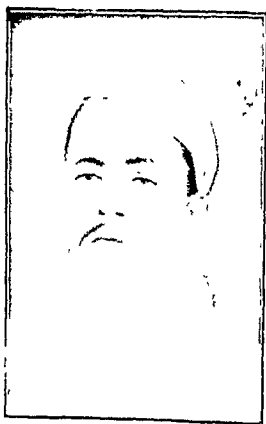
स्व० बाबू सेवकरामजी रुइया
(जुगलकिशोर सेवकराम)

बाबू मानमलजी रुइया
(जुगलकिशोर सेवकराम)

पूर्व मेसस जुगलकिशोर सूरजमल फर्मके दो पार्ट हो गये, जिसमें श्रीयुत मानमलजीकी फर्म मेसर्स जुगलकिशोर सेवकरामके नामसे व्यापार करती है। इस समय यह फर्म मेसर्स वाकरगार्ड कम्पनीकी बेनियन है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं—

कलकत्ता—मेसर्स जुगलकिशोर सेवकराम आर्मेनियन स्ट्रीट—इस फर्मपर पीसगुड्स और शक्करका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स बाकर गार्ड कम्पनीकी बेनियन है। श्रीयुत मानमलजीका आँफिस बाकरगार्ड कम्पनी ३२ जैक्सन लेनके आफिसमें है।

मेसर्स जेसराज जयचंदलाल

यह फर्म ११४ क्रास स्ट्रीटमें है। यहां विलायती कपड़ेका थोक व्यापार होता है। इसका हेड आफिस १४२ कॉटन स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय जूट मरचेंट विभागमें दिया दिया है।

मेसर्स जीवनराम जानकीदास

इस फर्मके संचालक भिवानीके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका हे० आ० दिल्ली है। वहां इसकी स्थापना करीब ३० वर्ष पूर्व सेठ जीवनरामजीके द्वारा हुई। कलकत्तेमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब १० वर्ष हुए।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ जीवनरामजीके पुत्र जानकीदासजी, रामेश्वरदासजी, तथा रामनारायणजी हैं। इस फर्मकी विशेष उन्नति बा० जानकीदासजीके द्वारा हुई।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहली—केशवराम जीवनराम कटला नवाव साहव चांदनी चौक T A Virat—यहा जर्मनी, जापान तथा इंग्लैंडसे कपड़ेका इम्पोर्ट होता है। तथा उसकी थोक बिक्री होती है।

कलकत्ता—जीवनराम जानकीदास ७१ बडतल्ला स्ट्रीट T. A. Virat—यहा कपड़ेका इम्पोर्ट तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जेठाभाई खटाऊ

इस फर्मके वर्तमान मालिकोंका मूल निवास स्थान खंबालिया जामनगर है। यहां यह फर्म सवत् १९७७ से स्थापित है। इसके वर्तमान मालिक सेठ खटाऊ मुरारजी तथा लालजी मुरारजी हैं। इसका हेड आफिस बम्बईमें है। बम्बईमें यह फर्म देशी कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार करती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स जेठाभाई खटाऊ, शेख मेमन स्ट्रीट T. A. Unsurpass—यहा देशी कपड़ेका व्यापार तथा मिलोंके कपड़ेकी एजंसीका काम होता है।

बम्बई—जेठाभाई रामदास मूलजी जेठा मार्केट—यहांपर इ० डी० सासून मिल, रीचल मिल, सासुन मिल, विक्टोरिया मिल, जुबिलीमिल बम्बई राजनगर मिल और ओरोहिया जिनिंग एगड स्पिनिंग मिल अहमदाबाद आदि मिलोंके कपड़ेकी एजंसीका काम होता है।

कलकत्ता—जेठाभाई खटाऊ ३७, आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Indukumai—यहापर सूत तथा देशी कपड़ेका व्यापार होता हैं। यह फर्म बम्बई तथा अहमदाबादके कितनेही मिलोंके कपड़ेकी एवं इन्सुरन्स कम्पनीकी एजण्ट है।

मेसर्स जीतमल रामलाल

इस फर्मके मालिकोका मूल निवास बीकानेर (राजपूताना) है। आप माहेश्वरी समाजके कोठारी (तोशनीवाल) सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ रामलालजीके हाथोंसे संवत् १९२३ में हुआ।। आप सेठ जीतमलजीके पुत्र हैं। आपके २ पुत्र हुए, बड़े बाबू हिम्मतमलजी एवं दूसरे पन्नालालजी। सेठ रामलालजीका स्वर्गवास संवत् १९५२ में एवं हिम्मतमलजीका देहान्त संवत् १९५८ में होगया है।

इस फर्मके व्यापारको बाबू हिम्मतमलजी एवं पन्नालालजी दोनों भाइयोंके हाथोंसे अच्छी तरक्की प्राप्त हुई। पन्नालालजीके पुत्र बाबू बंशीलालजी है। आप यहां दत्तक आये हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ पन्नालालजी कोठारी करते हैं। आप सरल प्रकृतिके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल रामलाल ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवणराम गंगाराम

इस फर्मके मालिकोंका निवास बीकानेर है। आप माहेश्वरी समाजके मीमाणी सज्जन हैं। संवत् १९२२ में सेठ गंगारामजी (आपका दूसरा नाम गिरधारीलालजी था) देशसे यहां आये थे। आरंभमें आप यहां कपड़ेकी फेरीका काम करते थे। आपने अपने परिचयसे सम्पति उपार्जितकर जीवनराम गंगारामके नामसे फर्म स्थापित की। सेठ जीवनरामजीके ३ पुत्र थे सेठ शिवदासजी,
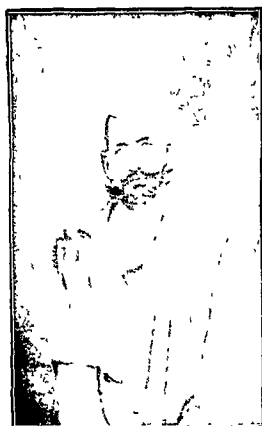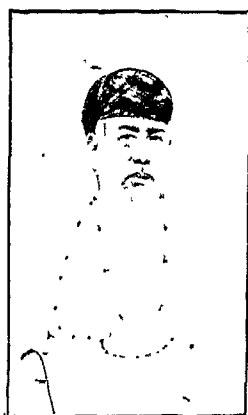
सेठ गंगारामजी एवं सेठ श्रीकिशनदासजी। सेठ गंगारामजीका स्वर्गवास संवत् १९४७ में हुआ, सेठ गंगारामजीके पश्चात् इस फर्मके व्यापारको सेठ श्रीकिशनजीने खूब उन्नति दी। आपका स्वर्गवास सं० १९७८ में होगया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवदासजीके पुत्र बाबू रामप्रतापजी एवं सुगनचन्दजी, सेठ गंगारामजीके पुत्र बा० रामगोपालजी एवं कन्हैयालालजी तथा सेठ श्री किशनदासजीके पुत्र बा० मूलचन्दजी हैं। आप सब लोग व्यापारमें भाग लेते है। यह फर्म कपड़ेके व्यवसाइयोंमें अच्छी प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती है।

वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीवनराम गंगाराम ११३ मनोहरदासका कटला T.No. 190 B. B T. A. Jemana Lal—यहां कपड़ेकी बिक्रीका व्यवसाय होता है। यह फर्म ब्लेकउड २ कम्पनी की वेनियन हैं। यहां मेसर्स जीवनराम गंगाराम एण्ड कं० के नामसे कपड़ेका इम्पोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल मूलचन्द ११३ मनोहरदासका कटला—यहाँ होयजरीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—जीवनराम सुगनचन्द २७२९ क्रास स्ट्रीट—यहा विलायती धोतीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—कन्हैयालाल चेतराम ११३ मनोहरदासका कटला—यहा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स जुग्गीलाल कमलापत

इस फर्मका हेड आफिस कानपुर (यू. पी.) है। कानपुरके जुग्गीलाल कमलापत काटन वीविंग एण्ड स्पीनिङ्ग कम्पनी लिमिटेडकी यह फर्म मैनेजिङ्ग एजंट है। इसके अतिरिक्त कानपुरमें इस फर्मकी आइसफेक्टरी, ऑइलमिल तथा जीनिङ्ग फेक्टरी है। कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार इस फर्मपर होता है, यह कानपुरके प्रतिष्ठित सम्पन्न धनिक व्यवसाइयोंमें मानी जाती है, इसके वर्तमान मालिक सेठ कमलापतजी हैं। आपका सुविस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थके तृतीय भागके कानपुरमे चित्र सहित दिया जागया।

इस फर्मकी कलकत्ता ब्रांचका स्थापन करीब २५ वर्ष पूर्व बाबू जयदयालजी सराफके हाथोंसे हुआ था, इस फर्मकी कलकत्ता ब्रांचका व्यवसाइक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कमलापत जुगीलाल ६४ चितपुर रोड T A. Kamlapat T.No 1834 B. B.—यहां

कपड़के इम्पोर्टका व्यवसाय, तथा अपने मिलके कपड़ोंकी बिक्री, सराफी लेन देन और शकर, तेलका व्यापार होता है।

मेसर्स जुहारमल गजानन

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुर) में है। आप अग्रवाल जातिके गोयनका सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ४० वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना श्रीयुत् जुहारमलजी गोयनका और श्रीयुत बोहितरामजी केड़ियाने ज्वाइण्ट रूपसे की। श्रीयुत बोहितरामजी केड़ियाका मूल निवास स्थान फतेहपुरमें है। इस फर्मकी विशेष तरक्की आप दोनोंही सज्जनोंके हाथोंसे हुई। आप बड़े योग्य मिलनसार और सज्जन पुरुष है।

श्रीयुत जुहारमलजीके एक पुत्र है जिनका नाम श्रीयुत गजाननजी गोयनका है। और श्रीयुत बोहितरामजीके एक पुत्र हुए, जिनका नाम श्रीयुत जुगलकिशोरजी था आपका बहुत थोड़ी उम्रमें स्वर्गवास होगया। श्रीयुत जुगलकिशोरजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्रीयुत सीतारामजी केड़िया हैं। इनमेंसे श्रीयुत गजाननजी व्यवसाय करते हैं और श्रीयुत सीतारामजी विद्याध्ययन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स जुहामल गजानन ३-२ मैदापट्टी (F. A Prabhoo) phone 413 B B—इस फर्मपर विलायती कपड़का खासकर धोतियोंका इम्पोर्ट विलायतसे होता है। कपड़ की कमीशन एजन्सीका काम भी होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बोहितराम सीताराम १६ पांचागली (नारमल लोहियालेन)—इस दुकानपर देशी मिलोंके कपड़का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गजानन जुगलकिशोर १५ नारमल लोहियालेन—यहा देशी कपड़ और धोतियोंका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामगोपाल सीताराम १५ नारमल लोहियालेन—इस दुकानपर देशी छींट, डोरिया का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स सीताराम सत्यनारायण १५-१६ पारख कोठी पगियापट्टी—इस दुकानपर विलायती कपडका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदेव गजानन—१६ पगिया पट्टी पारख कोठी—यहां विलायती कपड़का व्यापार होता है।

मेसर्स जगन्नाथ जीवनमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान जसवन्तगढ़ (जोधपुर स्टेट) है। आप लोग माहेश्वरी समाजके तापड़िया सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन संवत् १९६० में बाबू लादूरामजीके हाथोंसे हुआ था। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ेका कारबार करती आ रही है। प्रथम इस फर्मपर कानमल किशनलालके नामसे व्यापार होता था। संवत् १९७५ से गणेशमल जीवनमलके नामसे आप कारबार करने लगे। एवं संवत् १९८४ से उपरोक्त नामको बदलकर जगन्नाथ जीवनमलके नामसे व्यवसाय होता है।

वर्तमानमें फर्मके मालिकोंमे स्वर्गीय बाबू जगन्नाथजीके पुत्र बाबू लादूरामजी, बाबू शिवचन्द्रायजी, बाबू सूरजमलजी तथा बाबू गणपतरायजी विद्यमान हैं। बाबू जगन्नाथजीका स्वर्गवास संवत् १९८० में हो गया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जगन्नाथ जीवनमल ३७ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Clever क्लेवर—यहापर देशी कपड़ेका व्यवसाय होता है।

बम्बई—मेसर्स जीवनमल जीतमल तापड़िया शेखमेमनस्ट्रीट T. A. Tapadia—यहापर कपड़ेकी आढ़तका व्यवसाय होता है।

मेसर्स तेजपाल बृद्धिचन्द्र सुराना

इस फर्मका आफिस नं० ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म छाता एवम कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार करती है। इसका मालिक चुरूका मशहूर सुराना परिवार है। इनका विस्तृत परिचय चित्रों सहित प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १५८ में दिया गया है। तारका पता surana है। इसके अतिरिक्त ९८ क्रास स्ट्रीटमें भी इसकी एक दुकान है। वहा भी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स तिलोकचंद डायमल

इस फर्मपर धोतीका इम्पोर्ट और व्यापार होता है। विस्तृत परिचय जूट मरचेंट विभागमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बिसाऊ (जयपुर) में है। आप अग्रवाल जातिके बासल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब तीस वर्ष हुए। इस फर्मको यहाँपर श्रीमान् सेठ जमनादासजीने स्थापित की। आप सेठ तेजपालजीके पुत्र हैं।

इस फर्मका हेड आफिस मिर्जापुर है। वहांपर यह फर्म करीब सौ सवासौ वर्षसे स्थापित है। इस फर्मकी विशेष तरक्की सेठ जमनादासजीके हाथोंसे हुई। आप बड़े व्यापार दक्ष सज्जन और उदार पुरुष थे। आपका स्वर्गवास हुए करीब १० वर्ष हुए।

इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत जमनादासजीके पुत्र रामेश्वरदासजी सेठ हैं। आप मिर्जापुर हीमें रहते हैं।

कलकत्ते और मिर्जापूरके व्यापारिक समाजमें इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है। इस खानदानकी दान धर्म और सार्वजनिक कार्य्योंकी ओर भी बहुत रुचि रही है। सेठ जमनादासजीने वृन्दावनमें स्टेशनके सामने एक बहुत ही सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। बनारसमें आपकी ओरसे एक अन्न क्षेत्र भी चल रहा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—तेजपाल जमनादास मिर्जापुर—यहांपर इस फर्मका हेड आफिस है। यहांपर इस फर्मकी बहुत बड़ी जमीदारी है। तथा बेंकिंग और कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल जमनादास १६२ क्रास स्ट्रीट (T. A. Sunonoon)—इस फर्मपर कपड़ेका इम्पोर्ट, शुगरका इम्पोर्ट और बेंकिंग विजीनेस होता है। यहांके संचालक बाबू किशनलालजी बजाज हैं।

कानपूर—मेसर्स तेजपाल जमनादास काहू कोठी (T. A. Dwarkadhish)—यहांपर सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सी और गल्लेका व्यापार होता है। कानपूरकी सुप्रसिद्ध काहू कोठीके मालिक आपही हैं।

आगरा—मेसर्स तेजपाल जमनादास बेलनगंज—यहांपर कमीशन एजन्सी और गल्ला तथा जीरेका बिजनेस होता है।

मेसर्स दौलतमल जवरीमल लोढ़ा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सुजानगढ़ (बीकानेर) है। आप लोग ओसवाल वैश्य जातिके लोढ़ा गोत्रीय तेरापंथी सज्जन है। संवत् १९५१ में सेठ जीवनमलजीके

बाबू जवरीमलजी लोढ़ा (दौलतमल जवरीमल)

बाबू मोहनमलजी लोढ़ा (दौलतमल जवरीम

[illegible] (दौलतमल जवरीमल)

सोहनमलजी लोढा (दौलतमल जवरीमल)

हाथोंसे इस फर्मकी स्थापना हुई। उस समय इसका नाम आनन्दमल कानमल पड़ता था। सेठ जीवनमलजी चार भाई थे। श्रीयुत जीवनमलजी, आनन्दमलजी, दौलतमलजी तथा कानमलजी। संवत् १९७६ तक उपरोक्त फर्म सम्मिलित रूपसे व्यापार करती रही। पश्चात् इसकी दो शाखाएं हो गई। एक आनन्दमल किशनमल और दूसरी दौलतमल जवरीमल।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत दौलतमलजीके पुत्र श्रीयुत जवरीमलजी, मोहनमलजी मोतीमलजी और सोहनमलजी हैं। आप चारों ही व्यक्ति सज्जन हैं। श्रीयुत दौलतमलजीका संवत् १९८२ में स्वर्गवास हो गया है।

आपकी ओरसे सुजानगढ़ स्टेशनपर एक अच्छी धर्मशाला एवम स्मशान घाटपर दौलतमलजीकी यादगारमें छत्री एवम मकान बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स दौलतमल जवरीमल २६।१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. moti—यहां बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

कलकत्ता मेसर्स दौलतमल जवरीमल १४ नारमल लोहिया लेन—यहाँ स्वदेशी तथा जापानी कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता - मेसर्स जवरीमल सोहनमल १६ नारमल लोहिया लेन—यहां देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स नाथूराम जौहारमल

इस फर्मके मालिकोंका खास निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर स्टेट) में है। आप अग्रवाल समाजके खेमका सज्जन है। रतनगढ़ निवासी सेठ नाथूरामजी खेमकाके पुत्र बाबू जुहारमलजी खेमका संवत् १९३८ में देशसे कलकत्ता आये और यहां आकर आपने नाथूराम रामकिशनके नामसे कपड़ेका कारबार शुरू किया। थोड़े ही समयमें आपकी फर्मने अच्छी उन्नति की फलतः बम्बई, कानपुर, फरुखाबाद, दिल्ली आदि स्थानोंमें आपने ब्रांचेज स्थापित कीं, कलकत्तेके कपड़ेके व्यापारियोंमें आपकी फर्म प्रधान फर्मोंमें मानी जाने लगी। आपकी फर्म बाम्बे कम्पनी, ग्रीव्स काटन कम्पनी, इविंग कम्पनी आदि प्रतिष्ठित कम्पनियोंकी बेनियन थी।

सेठ जोहारमलजीने व्यापारिक कामोंमें सम्पत्ति कमाकर दानधर्म एवं सार्वजनिक कामोंमें बहुत उदारतापूर्वक दान दिया, आपने कई धर्मशालाएं, कूप, तड़ाग, पाठशालाएं बनवाई तथा दे-व

स्थानोंका जीर्णोद्धार और निर्माण करवाया। कनखलमें भी आपने एक पाठशाला और अन्नक्षेत्र स्थापित किया।

श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी विद्यालय तथा अस्पतालके स्थापनमें आपका बहुत हाथ था। आपने इसमें हजारों रुपयोंकी सहायता भी प्रदान की।

आप इस अस्पतालके ट्रस्टी एवं उस कमेटीके सभापति निर्वाचित हुए। आपके सम्मानस्वरूप विद्यालय एवं अस्पतालमें आपके तैल चित्रोंका उद्घाटन किया गया है।

सन् १८९८ ई० में जबसे मारवाड़ी एसोसियेशनका जन्म हुआ और आपकी फर्म उसमें सम्मिलित हुई तभीसे आप उसमें सहयोग देने लगे। आप उसके सभापति भी रह चुके थे। आप मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कामर्सके सभापति थे। आपने अपने समयमें चेम्बरकी अच्छी उन्नति की। चेम्बरके व्यापारिक झगड़ोंको निपटानेमें आप दिलचस्पीसे भाग लेते थे। पंच पंचायतीमें भी आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९७९ में हुआ।

आपके स्वर्गवासी होनेके बाद आपके छोटे भाई बाबू मानमलजी खेमकाने फर्मके कामको सम्हाला। आप भी सेठ जोहारमलकी तरह सब सभा सोसाइटियोंमें भाग लिया करते थे। आप अस्पतालके ट्रस्टी थे। अग्रवाल समाजमें आपकी भी बहुत प्रतिष्ठा थी। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८५ में हुआ।

सेठ जोहारमलजीकी मौजूदगीमें ही मेसर्स नाथूराम रामकिशन फर्मकी कई शाखाएं हो गईं। इसमें नाथूराम जोहारमल नामक शाखाके वर्तमान मालिक सेठ जोहारमलजीके पुत्र बा० पुरुषोत्तमदासजी एवं दुलीचंदजी तथा सेठ मानमलजीके पुत्र बा० लक्ष्मीप्रसादजी हैं। बाबू मानमलजी बड़े उदार प्रकृतिके सज्जन थे, आपके स्वर्गवासी होनेके समय बा० पुरुषोत्तमदासजीके पुत्र लक्ष्मीप्रसादजीको आपने दत्तक लिया था एवं अपने दोनों भतीजों तथा अपने पुत्रका बराबरीका हिस्सा निश्चित किया। बा० पुरुषोत्तमदासजी भी शिक्षित सज्जन हैं बाबू लक्ष्मीप्रसादजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नाथूराम जोहारमल ११३ मनोहरदासका कटरा—यहां इस समय जूट शेअर्सके डिविडेंड, स्थाई सम्पत्तिका भाड़ा तथा ब्याज बट्टाका व्यवसाय होता है।

मेसर्स पन्नालाल सागरमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक चुरू निवासी बा० सागरमलजी वेद और आपके पुत्र

बा० धनराजजी एवं हनुतमलजी वेद हैं। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेजनं० १५६ में दिया गया है। इस फर्मकी गद्दी नं० १० कैनिङ्ग स्ट्रीट में है। तथा ११३ क्रास स्ट्रीटमें विलायती कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है। मेसर्स धनराज हनुमतमल के नामसे आपकी ११२ क्रास स्ट्रीटमें एक दुकान और भी है। जहां खुले मालकी विक्रीका काम होता है।

मेसर्स बींजराज तनसुखदास

इस फर्मके मालिक बा० तनसुखरायजी एवं बा० पूसराजजी दूगड़ हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथमभागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६५ में दिया गया है। यहां यह फर्म ११३ क्रास स्ट्रीट मनोहरदासके कटरेमें है और कपड़ेका अच्छा व्यापार करती है।

मेसर्स बींजराज भैरोदान

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० भनीरामजी दूगड़ तथा आपके पुत्र बा० रामलालजी दूगड़ हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६६ में दिया गया है। यहां यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार करती है। तथा ११३ क्रास स्ट्रीटमें थोक एवं फूटकर माल बेचा जाता है।

मेसर्स बींजराज हुकुमचन्द

यह फर्म यहा करीब ५० वर्षसे स्थापित है। इसके वर्तमान संचालक बा० जसकरणजी वेद और मोहनलालजी वेद हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभाग के पेज नं० १४८ में दिया गया है। यहां इसका हेड आफिस ३० काटन स्ट्रीटमे है यह फर्म विलायती कपड़ेके इम्पोर्टका अच्छा व्यवसाय करती है। इसके अतिरिक्त इसी नामसे गणेशभगतके कटरेमें इस फर्मकी एक शाखा है जहां धोती जोड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके स्थापक सेठ गुरुदयालजी केजड़ीवाल चिड़ावा (जयपुर स्टेट) से करीब ६०

वर्ष पूर्व कलकत्ता आये और कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। कुछ ही समय बाद आपने मिर्जापुरकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स सेवाराम मन्नूलालके साझेमें बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण नामक फर्मका स्थापन किया। तबसे बराबर आपका कुटुम्ब कपड़ेका व्यवसाय कर रहा है। वर्तमानमें फर्मके मलिकोंमेंसे उपरोक्त फर्म मेसर्स सेवाराम मन्नूलालके मलिक रायसाहब सेठ बिहारीलालजी एवं श्री सेठ कुंजलालजी तथा स्वर्गीय सेठ गुरुदयालजीके पुत्र बाबू बिलासरायजी केजड़ीवाल एवं बाबू रामकुमार जी केजड़ीवाल हैं।

बाबू बिलासरायजी केजड़ीवाल शिक्षित एवं समझदार सज्जन हैं। आपकी फर्म इण्डियन मर्चेंट चेम्बर आफ कामर्सकी मेम्बर है। कपड़े के व्यावसाइयोंमें आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण क्रास स्ट्रीट कलकत्ता T No 2409 B. B.—इस फर्मपर कपड़े और शक्करका व्यवसाय होता है।

मेसर्स—रामकुवांर केजड़ीवाल ७ लियांसरेन्ज कलकत्ता—इस नामसे आपका शेअर एण्ड स्टाक ब्रोकर्सका प्राइवेट व्यवसाय होता है।

मेसर्स बिसेसरलाल बृजलाल

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (राजपूताना) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके झूंझनूवाला सज्जन हैं। करीब ३० वर्ष पूर्व बाबू सूरजमलजी द्वारा इस फर्मका स्थापन हुआ। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार कर रही है। इसकी विशेष उन्नति भी आपहीके द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास हो गया। आपके ४ पुत्र हुए। जिनमेंबाबू कुंजीलालजी एवम् बा० केशवदेवजी फर्मके व्यापार का संचालन करते हैं। बाबू बृजलालजी का स्वर्गवास हो गया। करीब ८।१० वर्षोंसे इस फर्म पर चावलका व्यापार भी होने लगा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बिसेसरलाल बृजलाल ११३ क्रास स्ट्रीट—यहां फेन्सी कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार होता है। जूटका व्यापार भी यह फर्म करती है।

बारहद्वार (बिलासपुर) मेसर्स सूरजमल बृजलाल—यहां राईस मिल है तथा चावलका व्यापार होता है।

चाकुलिया (बंगाल) मेसर्स सूरजमल बृजलाल—यहां करीब २० वर्षसे यह फर्म व्यापार कर रही है ८।१० वर्षोंसे यहां आपका एक चावलका मिल स्थापित हुआ है।
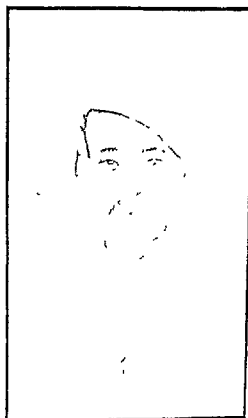
स्व० बा० जुहारमलजी खेमका (नाथूराम जुहारमल)

स्व० रामलालजी पचोसिया (रघुनाथदास शिवला

स्व० मानमलजी खेमका (नाथराम जहारमल)
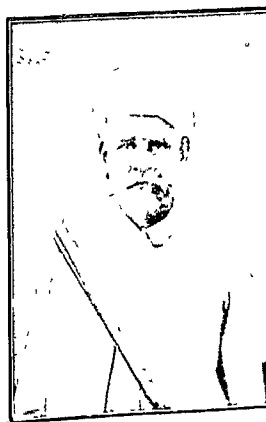
बा० रामचन्द्रजी मूंदड़ा (मेघराज कन्हैयालाल)

मेसर्स भगवानजी देवकरण

इस फर्मके मालिकोंमें सेठ भगवानजी हड़ियाणा (जामनगर) के एवं सेठ देवकरणजी कंडोणा (जामनगर) के निवासी हैं। बाबू भगवानजी लोहाणा वैष्णव एवं देवकरणजी जैनसमाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन संवत १९५८ में आप दोनों सज्जनोंके हाथोंसे हुआ। इसका हेड आफिस कलकत्ता ही है। इस फर्मके व्यापारकी वृद्धि आप दोनों सज्जनोंके हाथोंसे हुई—यह फर्म कपड़ेके व्यापारियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भगवानजी देवकरण ११३ क्रास स्ट्रीट T A. Woolman—विलायती कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्री होती है।

मेसर्स मेघराज कन्हैयालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बीकानेर है। आप माहेश्वरी समाजके मूंदड़ा सज्जन हैं। संवत् १८९९ में सेठ शंकरलालजी यहां आये, एवं आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजीने संवत १९४५ में इस फर्मका स्थापन उपरोक्त नामसे किया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामचन्द्रजी एवं आपके भ्राता बाबू मेघराजजीके पुत्र बा० शिवरतनजी हैं। बाबू रामचन्द्रजी वृद्ध तथा सरल प्रकृतिके सज्जन हैं। आपके हाथसे फर्मके कारबारमें अच्छी वृद्धि हुई है। बाबू मेघराजजीका स्वर्गवास करीब ७ वर्ष पहिले होगया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है

मेसर्स मेघराज कन्हैयालाल ११३ मनोहरदास कटला कलकत्ता T. A Alpakka; T. NO. २० B. B.—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्री होती है।

मेसर्स मुरारीलाल मोहनलाल

इस नामसे यह फर्म मेसर्स जार्डन स्किनर (इविंग कम्पनीके एजंट) की बेनियन है। इसकी प्रधान फर्म ४९ स्ट्रांड रोडपर है। इसका विस्तृत परिचय गल्लेके व्यवसाइयोंमें दिया गया है।

मेसर्स माणकचंद ताराचन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० पूनमचंदजी, बा० रिखबचंदजी, दौलतरामजी एवं

सिंचयालालजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पेज नं० १४६ में दिया गया है। यहां इसका आफिस नं० १६ कैनिंग स्ट्रीट में है। यहां यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार एवं हुंडी चिट्ठीका काम करती है।

मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानी

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० आशारामजी सादानी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२५ में मेसर्स मूलचन्द जगन्नाथ सादानीके नामसे दिया गया है। यहां इसका आफिस खंगरापट्टी नं० १५ में है। यहा कपड़ेका व्यापार और कमीशन एजंसीका काम होता है। इस फर्म पर तारका पता "Harku" है।

मेसर्स मुरलीधर मदनलाल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स मुरलीधरके नामसे ७ लियान्सरेंजमें है। उपरोक्त नामसे यह फर्म कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी भागके ३४३ पृष्ठ पर देखिये।

मेसर्स मदनगोपाल रामगोपाल

इस फर्मके मालिक बीकानेरके प्रसिद्ध मोहता परिवारके वंशज हैं। इसके संस्थापक राय बहादुर सेठ गोवर्द्धनदासजी मोहता ओ० बी० ई० हैं। इसका विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ट १२६ पर सचित्र दिया गया है। इस परिवारके बाबू राम-गोपालजी मोहताने श्री बिड़लाजीके सहयोगसे इंग्लैण्डमें एक भवन खरीद कर शिवमंदिर बनवा रहे हैं जिसमें धर्मशाला भी रहेगी। इसका कलकत्तेमे आफिस २८ स्ट्राण्ड रोड पर है। तारका पता Mohta है। यहां पर कपड़ेका भारी व्यापार होता है।

मेसर्स रामविलास सागरमल

इस फर्मके वर्तमान प्रधान संचालक बा० रामबिलासजी है। इस फर्मका विशेप परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४६ में दिया गया है। यहा १५८ हरीसन रोडमें यह फर्म कपड़ेका व्यापार करती है।
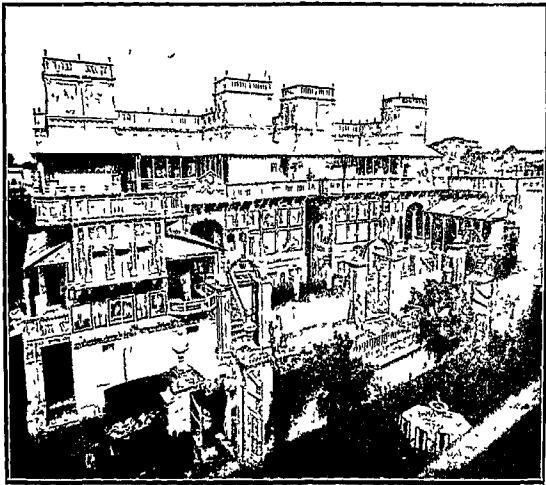
बिलाउकी हवेली (रामकुवार शिवचन्दराय)

पोद्दार गेस्ट हाउस बिसाउ (रामकुवार शिवचन्दराय)
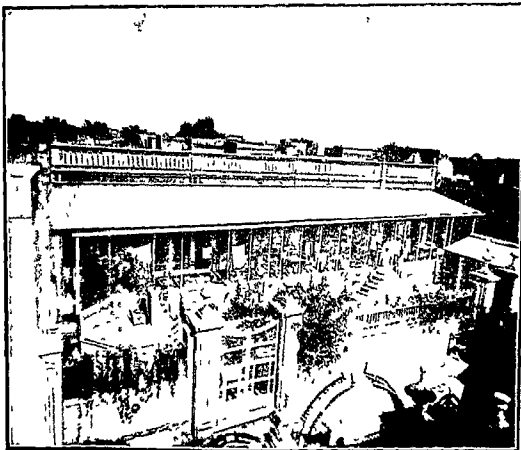
स्व० चिमनरामजी पोद्दार (रामकुमार शिवचन्द्राय)

बाबू रामकुमारजी पोद्दार (रामकुमार शिवचन्द्राय)

मेसर्स रामलाल कन्हैयालाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सुजानगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहापर स्थापित हुए करीव ६० वर्ष हुए। पहिले इस फ़र्मपर मेसर्स चुन्नीलाल शिवचन्द नाम पड़ता था। इस समय इस फर्मके मालिक श्रीयुत कन्हैयालालजी और श्रीयुत रंगलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामलाल कन्हैयालाल १५८ क्रासस्ट्रीट (सूतापट्टी) T,A. Savitri—इस फर्मपर स्वदेशी फेन्सी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुँवार शिवचन्द राय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके पोद्दार सज्जन हैं। कलकत्तेमें संवत् १९४० में सर्व प्रथम सेठ सूरजमलजी आये। तथा आप यहां शेअरकी दलालीका काम करते रहे। आपके ४ पुत्र हुए जिनके नाम सेठ चिमनीरामजी,सेठ रामकुंवारजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी तथा सेठ शिवचन्दरायजी हैं। जिनमेंसे सेठ चिमनीरामजीका स्वर्गवास संवत् १९८०में हो गया है। आप संवत् १९५८में देशसे कलकत्ता आये, तथा संवत् १९६५ में आपने अपनी फर्म स्थापित की। आरंभसे ही आपकी फर्म देशी कपड़ेका व्यापार करती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चिमनीरामजीके शेष तीनों भ्राता सेठ रामकुंवारजी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी एवं बाबू शिवचन्दरायजी हैं। आपकी ओरसे बिसाऊमें श्रीगोविन्द देवजीका मंदिर बना है। उसमें एक दातव्य औषधालय भी स्थापित है। बिसाऊमें आपकी ओरसे एक धर्मशाला एवं एक कुंआं भी बना है। वहा आपकी ओरसे गोचरभूमि भी छुड़वाई गई है। इसके अतिरिक्त बनारसमें वेदान्त शास्त्रकी शिक्षा देनेके लिये आपकी ओरसे एक संस्कृत पाठशाला है, जिसमें शिक्षाके साथ २ ग्यारह विद्यार्थियोंके भोजनका प्रबंध भी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स रामकुंवार शिवचन्दराय पांचागली T A Ramshiva—इस फर्मपर देशी तथा विलायती कपड़ेका व्यापार और स्वदेशी कपड़ेकी दलालीका कारबार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स चिमनलाल रामकुंवार पांचागली—यहा कपड़ेका व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स सिंहलब्रदर्सके कपड़े विभागकी बेनियन है।
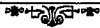
(२) बम्बई—मेसर्स रामकुंवार शिवचन्दराय केदारभवन-कालबादेवीरोड - इस फर्मपर आढ़त, सराफी तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है।

मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नौहर [बीकानेर स्टेट] है। आप माहेश्वरी जातिके पचीसिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना संवत् १९०२में सेठ रघुनाथदासजीने बहुत छोटेरुपमें की थी। आरंभसे ही इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार होता है।

सेठ रघुनाथदासजीके बाद सेठ शिवलालजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। आपके बाद आपके पुत्र सेठ रामलालजीने इस फर्मके व्यापारकी विशेष तरक्की की। माहेश्वरी समाजमें आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हुआ। आपके भ्राता सेठ किशनलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७१ में हो चुका था।

इस कुटुम्बकी ओरसे नोहरमें एक संस्कृत पाठशाला चल रही है। जिसमें विद्यार्थियोंको शिक्षाके साथ २ भोजन वस्त्रका भी प्रबंध है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ किशनलालजीके पुत्र बाबू सुगनचन्दजी तथा प्यारेलालजी एवं सेठ रामलालजीके पुत्र बा० दयालचन्दजी एवं बाबू प्रयागचन्दजी हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल ६२ क्लाइवस्ट्रीट T. A. Pachisia T. No 842 B.B. इस फर्मपर कपड़ेका इम्पोर्ट तथा हेसियन जूटके एक्सपोर्टका अच्छा व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रघुनाथदास शिवलाल ६२ पगियापट्टी T No. 1786 B. B.—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवलाल रामलाल १६ पगियापट्टी—इस फर्मपर भी कपड़ेका थोक व्यापारहोता है।

मेसर्स रामचन्द्र हरीराम गोयनका

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान डूंडलोद [राजपूताना] है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गोयनका सज्जन हैं। आजसे करीब ९० वर्ष पूर्व सेठ रामचन्द्रजीके पितामह सेठ रामदत्तजी डूंडलोदसे यहां आये थे। यहां आकर आपने मुनीमातकी। आपका ध्यान दलालीकी
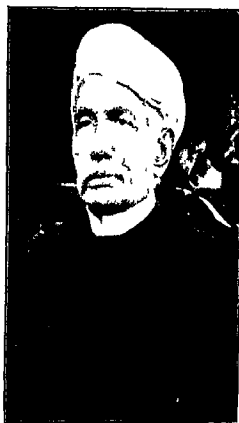
स्व० सेठ रामचन्द्रजी गोयनका

सर हरिरामजी गोयनका के० टी०, सी० आई० ई०
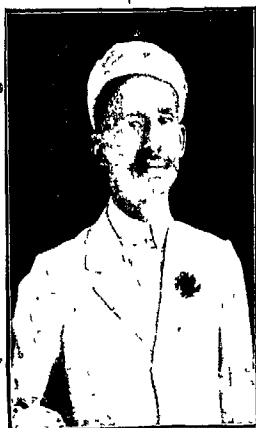
बा० परशुरामजी (सुन्दरमल परशुराम)
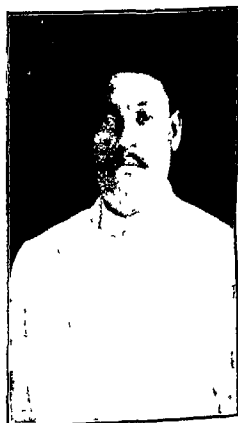
बा० गोविन्दरामजी (सुन्दरमल परशुराम)

ओर विशेष था। अतएव आपने अपने पुत्रोंको इस ओर लगाया। आपके २ पुत्र थे, सेठ राम किशनदासजी तथा सेठ अर्जुनदासजी। इनमेंसे सेठ रामकिशनदासजीका अल्पायुमें ही स्वर्गवास होगया था।

सेठ रामकिशनदासजीके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रामचन्द्रजीने इस फर्मके व्यापारको बढ़ाया, आपहीके समयमें इस फर्मपर केटल बिल बुलेन आदि कई अंग्रेज कम्पनियोंकी दलाली एवं कमीशन एजंसीका काम आरंभ हुआ था। इसके पश्चात् आप मेसर्स रायलीब्रदर्सके कपड़ेके व्यवसायके प्रधान ब्रोकर नियुक्त हुए इस काममें आपकी फर्मने बहुत अधिक सम्पत्ति, मान एवं यश प्राप्त किया। आप बड़े व्यापारकुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ साथ धार्मिक कार्योंमें भी इस कुटुम्बका अच्छा लक्ष रहा है, आपकी ओरसे श्रीजगन्नाथ पुरी, बैद्यनाथ धाम तथा डूँडलौदमें धर्मशालाएं बनी हुई है, इसके अतिरिक्त डूंडलोदमें संस्कृत पाठशाला, विद्यालय, औषधालय तथा श्रीसत्यनारायणजीका मंदिर स्थापित है। स्थानीय हवड़ा पुलके पास गंगातीरपर स्त्रियोंके नहानेकी सुविधाके लिये एक जनाना घाट भी आपकी ओरसे बना हुआ है।

श्रीसेठ रामचन्द्रजीने "रामचन्द्र गोयनका हिन्दू विधवाश्रम" की स्थापना की थी, यह संस्था आज भी भली प्रकार अपना कार्य कर रही है,इसमें करीब १०००)रु०प्रति मास व्यय होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र रायबहादुर सर हरीरामजी गोयनका केटी०; सी० आई० ई०, श्रीसेठ घनश्यामदासजी गोयनका, एवं रायबहारदुर बाबू बद्रीदासजी गोयनका सी० आई० ई०, एम० एल० सी० है।

रा० ब० सर हरीरामजी गोयनका केटी०, सी० आई० ई०—आप सेठ रामचन्द्रजीके ज्येष्ठ पुत्र हैं। मारवाड़ी समाजमें आप बहुत प्रतिष्ठा सम्पन्न महानुभाव हैं। आपको भारत सरकारने सन १९०० में रायबहादुर, सन् १९१७ में सी० आई० ई० तथा सन १९२० में सर नाइटकी पदवीसे सम्मानित किया है। आप कलकत्तेके शरीफ एवं म्युनिसिपल कमिश्नर रह चुके हैं। मारवाड़ी एसोसियेशनके सभापतिका कार्य भी आपने कई वर्षों तक संचालित किया है। इस समय आपकी वय ६७ वर्षकी है, आपको महाराज जयपुर तथा रावराजाजी सीकरसे ताजीम प्राप्त है। वर्तमानमें फर्मके व्यवसायका कारबार अपने सुयोग्य भ्राता बाबू बद्रीदासजी गोयनका पर छोड़कर आप शान्तिलाभ करते हैं। आपके एक पुत्र बाबू मुरलीधरजीका युवावस्थामें ही स्वर्गवास हो गया है। अतः बाबू घनश्यामदासजीकेपुत्र श्रीजगमोहनजी आपके यहा दत्तकआये है,जो व्यवसायमे भागलेने लगे है

बाबू घनश्यामदासजी गोयनका—आप सर हरीरामजीके छोटे भ्राता हैं। आपका रहनसहन बहुत सादा है। आपके ४ पुत्र हैं जिनमेंसे बड़े श्रीईश्वरप्रसादजी व्यापारमें सहयोग देते हैं, तथा श्रीजगमोहनजी, सर हरीरामजीके यहां दत्तक हैं। श्री देवीप्रसादजी एवं जमुनाप्रसाद जी अभी पढ़ते हैं।

रा० ब० बद्रीदासजी गोयनका सी० आई० ई०, एम० एल० सी०—आप कलकत्ता युनिवर्सिटीकी उच्च शिक्षा प्राप्त सज्जन हैं। आप स्वभावके बड़े मिलनसार हैं। आजकल फर्मके व्यवसायका संचालन प्रधानरूपसे आपही करते हैं। यहांके उच्च पदाधिकारियोंमें आपका अच्छा सम्मान है। आप मारवाड़ी समाजके एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जाते हैं। आपको गव्हर्नमेंटने रायबहादुर और सी० आई० ई० की पदवीसे सम्मानित किया है। आप यहांकी प्रान्तीय लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिल के मेम्बर हैं। आपके पुत्र श्रीकेशोप्रसादजी एवं लक्ष्मीप्रसादजी अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स रामचन्द्र हरीराम गोयनका १४५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यह फर्म ४० वर्षोंसे मेसर्स रायलीब्रदर्सकी कपड़ेकी बेनियन और ब्रोकर है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदत्त रामकिशनदास १४५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यहां जूट बेलर्स, शीपर्स तथा बेकर्सका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीचन्द कन्हैयालाल

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू कन्हैयालालजी, मोहनलालजी, सोहनलालजी, मेघराजजी, अगरचन्दजी, गोकुलदासजी एवम् बिट्ठलदासजी हैं। आपका विशेष परिचय ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२६ में दिया गया है। यहां यह फर्म बिलायतसे कपड़ेके इम्पोर्टका काम करती है। यहांके आफिसका पता १६ पगियापट्टी है। तारका पता है Durgamai।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण हजारीमल

इस फर्मका हेड आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें मेसर्स हजारीमल सोमाणीके नामसे है। नं० २०१ हरिसन रोडमें उपरोक्त नामसे यह फर्म ऊनी और फेन्सी कपड़ेका इम्पोर्ट और बिक्रीका काम करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके सोने चादीके व्यापारियोंमें दिया गया है।

बा० दयाचंदजी जैन (सेढ़मल दयाचंद)

बा० रंगलालजी जाजोदिया (सुखदेवदास रामप्रसाद

बा० बलदेवदासजी जैन (सेढ़मल दयाचंद)

बा० मोतीलालजी जाजोदिया (सुखदेवदास रामप्रसाद)
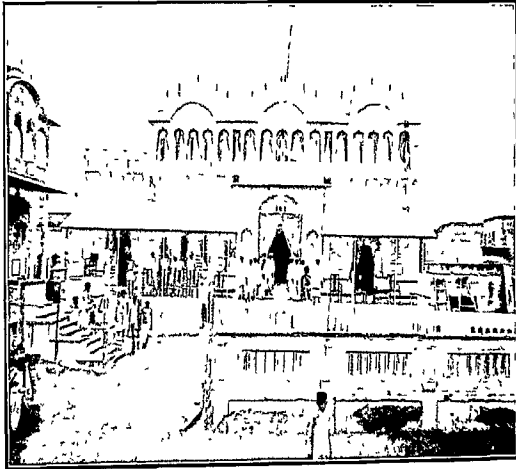
श्रीगोविंददेवजीका मंदिर बिसाउ (रामकुंवार शिवचन्दराय)
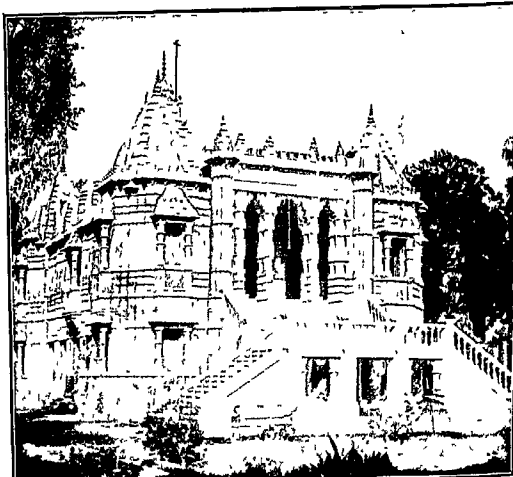
मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस ३० बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। इसके वर्तमान मालिक राजा मोतीचन्द साहब सी० आई०ई० बनारस, बाबू गोकुलचन्दजी साहब, कुमार कृष्णकुमार साहब और बा० ज्योतिप्रसादजी हैं। इस फर्मपर कपड़ेका व्यापार भी होता है। इसका विशेष परिचय मिलओनर्स विभागमे दिया गया है।

मेसर्स शिवदयाल मदनगोपाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल समाजके गनेड़ीवाल सज्जन है। इस फर्मकी स्थापना सेठ शिवदयालजीने संवत १९६३ में की। इसके पूर्व आपकी फर्मपर रंगलाल चिमनलालके नामसे कारबार होता था। सेठ शिवदयालजीने फर्मके व्यवसायकी अच्छी उन्नति की। आपका स्वर्गवास संवत् १९७७ में हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवदयालजीके पुत्र बाबू मदनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल मदनगोपाल नारमल लुहियालेन T A. kripa T No 931 B B यहा देशी, विलायती तथा जापानी कपड़ेका थोक व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स सेढ़मल दयाचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मलसीसर (जयपुर स्टेट) में है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ८० वर्ष पूर्व श्री सेठ सेढ़मलजीने की। आप मलसीसरसे जब कलकत्ता आये थे तब रेल नहीं थी। इसके व्यवसायकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आपका देहावसान संवत् १९५६ में हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र बाबू दयाचंदजीने भी फर्मके व्यवसायमें अच्छी तरक्की थी। आपका स्वर्गवास संवत् १९८१ मे हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक स्वर्गीय सेठ दयाचन्दजीके पुत्र बाबू बलदेवदासजी और बाबू महावीरप्रसादजी हैं। आप लोगोंकी ओरसे मलसीसरमें एक धर्मशाला, एक कुआ और २ कुंड बने हुए है। कलकत्तेके वेलगछियामें आपकी ओरसे करीब २ लाख रुपयोंकी लागतसे एक सुन्दर जैनमंदिर बना हुआ है। इसी प्रकार और भी सार्वजनिक कामोंमें आप अच्छा सहयोग देते रहते हैं।

आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स सेढ़मल दयाचंद २१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Sidhant; Phone No 3089

B.B.—यह फर्म मेसर्स जार्डियन स्किनर एण्ड कम्पनीकी बेनियन और ब्रोकर है। इसके अतिरिक्त बेङ्किग व्यवसाय होता है।

मेसर्स सुन्दरमल परशुराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके बजाज सज्जन है। इस फर्मका स्थापन करीब २० वर्ष पूर्व सेठ सुन्दरमलजी तथा आपके पुत्र सेठ परशुरामजीने किया था। इसके व्यापारको भी आप ही दोनों सज्जनोंने विशेष तरक्की पर पहुंचाया। आरम्भसे ही यह फर्म शक्करका व्यापारकर रही है। श्रीसेठ सुन्दरमलजीका देहावसान संवत १९८४ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ सुन्दरमलजीके पुत्र बाबू परशुरामजी तथा बाबू गोविन्दरामजी है। आप दोनों ही सज्जन है। आपकी फर्मपर कपड़े तथा शक्करका अच्छा व्यापार होता है। यह फर्म मेसर्स करीम भाई इब्राहिम की १३।१४ मिलोंका कपड़ा बेचनेकी कलकत्तेके लिये सोल एजंट है। अभी आपने दिल्ली और कानपुरके लिये भी सर करीम भाई इब्राहीमकी मिलोंके कपड़ेकी एजंसी ली है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स सुन्दरमल परशुराम ५ बड़तल्ला स्ट्रीट T. A. Sitapal T. No. 2592

B.B.—यहां जापानी कपड़ेका इम्पोर्ट तथा जावा शक्करका थोक व्यापार होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स सुन्दरमल परशुराम ६ नारमल लुहियालेन—इस दुकानपर सर करीम भाई इब्राहिमकी मिलोंका माल बेचनेकी सोल एजंसी है। इसके अलावा जापानी कपड़ेकी बिक्री होती है।

मेसर्स सोनीराम जीतमल

इस फर्मके संचालक बिसाऊ (जयपुर-स्टेट) के निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमे स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। यह फर्म तभीसे करीब १० वर्ष पूर्व तक अफीमका व्यवसाय करती रही। इस फर्मके द्वारा चीनमे भी अफीम सप्लाई होती थी। इस फर्मके स्थापक सेठ जमनादासजी तथा आपके भ्राता सेठ जोनमलजी और जीवराजजी
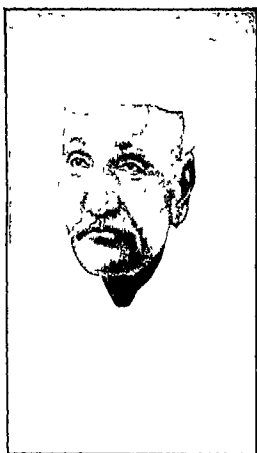
बाबू जमनाधरजी पोद्दार (सोनीराम जीतमल)

बाबू जीवराजजी पोद्दार (सोनीराम जीतमल)

बाबू नागरमलजी पोद्दार (सोनीराम जीतमल)

बाबू चौथम [illegible]
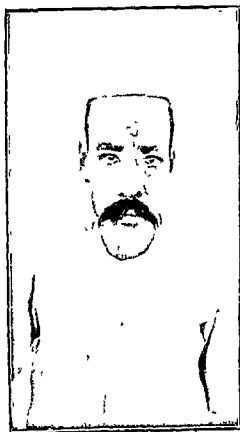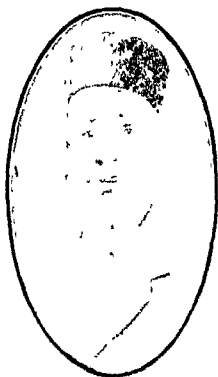
थे। सेठ जमनादासजीने करीब ३५ वर्ष पूर्व टाटा एण्ड सन्सकी मिलोंके कपड़ेकी कलकत्तेके लिये एजंसी आरंभ की। तथा इस कार्यमें बहुत सम्पत्ति उपार्जित की। जबसे नागपूरमें एम्प्रेस मिलकी स्थापना हुई तभीसे आप उसके कपड़ेका व्यापार करने लगे। आप बड़े व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास सन् १९२६ मे हो गया। तथा सेठ जीतमलजीका स्वर्गवास भी संवत् १९६० में हो गया। आप वर्धाकी ओरके व्यापारका संचालन करते थे। वहा आपका अच्छा सम्मान था। आपकी फर्मकी ओरसे नागपुरमें एक मन्दिर तथा धर्मशाला बनी हुई है।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक सेठ जीवराजजी, सेठ जमनादासजीके पौत्र अमोलकचंदजी, सेठ जीतमलजीके पुत्र नागरमलजी तथा जीवराजजीके पुत्र बाबू बिरदीचंदजी, चोथमलजी और रामचंद्रजी हैं।

सेठ जीवराजजी निज़ाम हैदराबादकी ओरके व्यवसायका संचालन करते थे। आपने वहा बहुतसी खेती आदिका काम शुरू किया था। वहां कई सौ गौओंका पालन पोषण होता था। तथा इस समय भी हो रहा है। सेठ जीवराजजी इस समय व्यापारिक कार्योंसे अपना सम्बंध बिच्छेद करके काशीवास करते है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नागपुर—मेसर्स जमनाधर पोद्दार—यहां टाटाके मिलोंकी एजंसीका काम होता है। यहीं आपका हेड आफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स सोनीराम जीतमल ४६ काटन स्ट्रीट—कलकत्तेकी फर्मोंमे शिवप्रसादजी गाड़ोदिया का करीब ३५ वर्षोंसे साझा है। वर्तमानमें आपके पुत्र कालीचरणजी है।

कलकत्ता—मेसर्स सोनीराम, जीतमल केनिंग स्ट्रीट—यहा हैसियन तथा जूटके एक्सपोर्टका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स सोनीराम जीतमल नारमल लोहिया लेन—यहा टाटाके मिलोंके कपड़ेका काम होता है।

बाराकफड़—(बंगाल) मेसर्स सोनीराम जीतमल—यहां कपड़ा तथा सूतका काम होता है।

बाकुड़ा—मेसर्स सोनीराम जीतमल " "

कराची—मेसर्स नागरमल पोद्दार—यहा कपड़ेका व्यापार होता है।

लायलपुर—(पंजाब) जमनाधर पोद्दार—यहां जीन फेक्टरी है। तथा रुईका काम होता है।

अबोहरमंडी—(पंजाब) नागरमल पोद्दार—यहां जीन तथा प्रेस फेक्टरी है। कपासका काम भी इस फर्म पर होता है।

इनके अतिरिक्त मेसर्स जमनाधर पोद्दारके नामसे रांची, चाईबासा, बिलासपुर, सम्भलपुर, रायपुर, हिंगनघाट वर्धा, चांदा, वरुड़ा अकोला, नान्दोरा, गया, मद्रास, शोलापुर, बेजवाड़ा, रंगून, सिकंदराबाद (निजाम), उमरी (निजाम), अहमदाबाद तथा कई अन्य स्थानों पर छोटी २ शाखाएं हैं। जहा टाटा एण्ड संस लि० के मिलोंके कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स हरचन्दराय आनन्दरामके नामसे भागलपुरमें है। यहां इस फर्मका आफिस १८० हरीसन रोडपर है। यहाके तारका पता Hargolar है। टेलीफोन नं० २१२६ बड़ाबाजार है। इस फर्ममे कपड़ेका इम्पोर्ट और कमीशन एजेंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें विहारप्रान्तके पेज नं० ६७ मे चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स हरिबगस दुर्गाप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ताही है। यहां पर करीब ६० वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसके वर्तमान संचालक सेठ हरिबगसजी और आपके पुत्र बाबू दुर्गाप्रसादजी, गोवर्द्धनदासजी और रामनिवासजी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० ६५ में दिया गया है। यहा यह फर्म कपड़ेके इम्पोर्टका काम करती है। साथही गनी, हैसियन, चपड़ा आदिका एक्सपोर्ट भी करती है। यहा इसका आफिस क्रास स्ट्रीटमें हैं।

मेसर्स हीरालाल हजारीमल

इस फर्मके संचालक बीकानेरके निवासी हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३१ में दिया गया है। यहा यह फर्म कपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मपर विदेशोंसे इम्पोर्टका काम भी बहुत बड़ा होता है। यहां इसका राम पुरिया काटन मिल नामसे कपड़ेका एक प्रायवेट मिल भी है। इसके अतिरिक्त बहुतसी स्थायी सम्पति है। यहा तारका पता 'Hasana' है।

मेसर्स हीरालाल बब्बूलाल

इस फर्मका हेड आफिस भागलपुरमें है। यहां यह फर्म मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास १८० हरिसन रोडके अण्डरमें व्यापार कर रही। इसका पता ६६ क्रासस्ट्रीमें है। यहा यह फर्म धोतीका व्यापर करती है। इसका विशेष परिचय विहार विभागमें पेजमें नं० ६७ में दिया गया है।

स्व० बाबू सनेहीरामजी चोखानी

स्व० बाबू दौलतरामजी चोखानी

बाबू शिवप्रसादजी चोखानी

रायबहादुर रामदेवजी चोखानी

मेसर्स हरमुखराय सनेहीराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवासस्थान मंडावा (जयपुर-स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चोखानी सज्जन है। संवत् १९३८ में सेठ हरमुखरायजी तथा सेठ सनेहीरामजीने इस फर्मका स्थापन किया। कुछ समय पश्चात् हरमुखरायजीके छोटे भ्राता बाबू दौलतरामजी भी इस कार्यमें शरीक हो गये। इस फर्ममें आपके भाई सेठ भगवानदासजी तथा रामरिखदासजी भी शरीक थे। सेठ सनेहीरामजी, सेठ छबीरामजीके तथा शेष चारों सज्जन सेठ बख्शीरामजीके पुत्र थे। प्रारम्भसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार करती आ रही है।

सेठ हरमुखरायजी, सेठ सनेहीरामजी तथा सेठ दौलतरामजी तीनों भ्राताओंने मिलकर विलायती मलमल, नैनसुख आदि कपड़ेके व्यापारमें अच्छी उन्नति की।

सन् १९०२ में बलदेवदास बिहारीलाल फर्मके स्व० श्रीहजारीलालजी नागरके साझेमे सेठ दौलतरामजी एजिलेस्टो कम्पनीकी वेनियन और ब्रोकरशिपका काम करने लगे। इस समयसे बाबू रामदेवजीने भी उपरोक्त फर्ममें अपने पिताके साथ ४ वर्ष तक कार्य किया। इस कम्पनीका कार्य बंद होजानेके पश्चात् सेठ दौलतरामजीने इविंग कम्पनीको वेनियन शिपका कार्य किया। आप बड़े व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९८३ में तथा आपके भ्राता सेठ हरमुखराय-जीका १९५८ में एवम सनेहीरामजीका संवत् १९७९ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ दौलतरामजीके पुत्र राय बहादुर बाबू रामदेवजी चोखानी, और सेठ हरमुखरायजीके पुत्र बाबू फूलचंदजी एवम ब्रजलालजी हैं। आप सब सज्जन व्यवसायमें भाग लेते है और बड़ी उत्तमतासे उसे संचालित करते है।

बा० रामदेवजीने सन १९०६ से करीब ४ वर्ष तक बलदेवदास रामेश्वर नाथानीके साझेमें शेअरका व्यापार आरम्भ किया। इसके पश्चात् अब आप अपने भाई शिवप्रसादजीके साथ रामदेव चोखानीके नामसे व्यापार करते है। आप अग्रवाल समाजमें प्रतिष्ठित सज्जन समझे जाते हैं। भारत सरकारने आपको सन् १९१९ में राय साहब एवं सन १९२७ में राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया आपका सार्वजनिक जीवन बहुत अच्छा है। प्रायः सभी सार्वजनिक कार्योंमें आप भाग लेते हैं। है। सन् १९०२ में आप विशुद्धानंद विद्यालयके मंत्री रहे, सन् १९२२ से १९२८ तक आप कलकत्ता इम्प्रूवमेंट ट्रस्टके मेम्बर रहे। सन् १९११ से सन् १९२१ तक आप मारवाड़ी असोसिएशनके मंत्री पदका कार्य देखते रहे। और वर्तमानमें आप विशुद्धानंद विद्यालयकी कमेटीके प्रेसिडेण्ट, मारवाड़ी एसोसियेशनके वाईस प्रेसिडेन्ट, मारवाड़ी हास्पिटलके ट्रस्टी तथा बागला हास्पिटलके गवर्नर हैं। इसी प्रकार आपके सब भ्राता भी सार्वजनिक कार्योंमें अच्छा भाग लेते रहते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरसुखराय सनेहीराम ५६ क्रास स्ट्रीट T. No. 1464 BB—यहां विलायती कपड़ेकी बिक्रीका काम होता है। यह फर्म वालों एण्ड कं०के कपड़ेकी शाखाकी वेनियन है। इस विभागकी देखभाल बा० फूलचन्दजी करते हैं।

कलकत्ता—मेसर्स रामदेव चोखानी एण्ड को० १३७ हरिसन रोड—T. A Seleclon T. No 2054 B.B.—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट बिजिनेस होता है।

कलकत्ता—रामदेव चोखानी ७ लायंसरेंज T. No 2454 Cal.—यहा गवर्नमेंट सिक्यूरिटीजके पेपर्स तथा शेअर स्टाकका व्यापार होता हैं।

कलकत्ता—वृजलाल चोखानी ७ लायंसरेंज T.A. Sharbroker, T NO 5887 Cal—यहा भी शेअर स्टॉकका व्यापार होता है।

मेसर्स हीरानन्द आनन्दराम

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास मंडावा (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल जातिके सराफ सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ मोहनलालजी और हीरानन्दजीने स्थापित की थी। उस समय इसपर मोहनलाल हीरानन्दके नामसे व्यापार होता था। प्रारंभसे ही इस फर्मपर कपड़ेका काम शुरू हुआ और वह इस समयतक चला आता है। उपरोक्त नामसे यह फर्म करीब १५ वर्षोंसे काम कर रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ आनन्दरामजी तथा आपके पुत्र महादेवलालजी, मुरलीधरजी, हनुमानप्रसादजी, रामगोपालजी, बाबूलालजी और किशोरीलालजी है। आप सब इस समय व्यापारिक कार्य्योंमें भाग लेते है।

सेठ आनंदरामजी स्थानीय मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स कई वर्षोंतक सेक्रेटरी रह चुके हैं। तथा यह संस्था आपहीके विशेष परिश्रमसे स्थापित हुई है। अग्रवाल समाजमें आपका अच्छा सम्मान है। पींजरापोलमें भी आपका अच्छा हाथ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स हीरानंद आनंदराम ६६ क्रास स्ट्रीट—इस फर्मपर जेम्स किनले नामक ग्रीक कम्पनीके शक्कर और कपड़ेके डिपार्टमेण्टकी वेनियन शीपका काम होता है।

बा० गणेशदासजी गद्दैया
(श्रीचन्द गणेशदास)

स्व० सूर्यमलजी झुंझनूवाला
(विसेसरलाल बृजलाल)

बा० कुंजलालजी झुंझनूवाला
(विसेसरलाल बृजलाल)

बा० फगरंचदजी झुंझनूवाला
(विसेसरलाल बृजलाल)

मेसर्स श्रीचन्द गणेशदास गधइया

इस फर्मके संचालक सरदार शहर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल समाजके श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय गधया सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ जेठमलजीकी आज्ञासे संवत १९२९ में सेठ डूंगरसीदासजीके हाथोंसे हुआ। शुरू २ में इस फर्मपर लाल कपड़ेका व्यवसाय होता था। सेठ जेठमलजी सरल एवम साधुवृत्तिके महानुभाव थे। करीब ३६ वर्षकी वयमें श्रीसेठ श्रीचन्द्रजीके होनेके पश्चात ही आपने ब्रह्मचर्य वृत धारंण कर लिया था। आपका जन्म संवत् १८८८ तथा स्वर्गवासी होनेका संवत् १९५२ है।

आपके एक पुत्र श्री सेठ श्रीचंदजी हैं। आप संवत १९३७ से व्यापारके निमित्त कलकत्ता आने जाने लगे। आपके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आप बड़े व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन हैं। आपहीके समयमें इस फर्मका मेसर्स एंड्रू अल कम्पनी, मेसर्स रायली ब्रदर्स, मेसर्स एन्डर सन राईट, मेसर्स जार्ज अन्डरसन आदि प्रसिद्ध २ कम्पनियोंके साथ व्यापारिक सबंध रहा। वर्तमानमें आप भी अपना जीवन धार्मिकतामें व्यतीत करते हैं। आपके इस समय दो पुत्र हैं। पहले श्री गणेशदासजी तथा दूसरे श्री बिरदीचंदजी। इस समय आपकी वय ६७ वर्षकी है।

श्री गणेशदासजी व्यापारके निमित्त संवत् १९५० में यहां आये। यहां आकर आपने संवत् १९५१ में अपनी फर्मकी एक शाखा मेसर्स गणेशदास उदयचंद गधइयाके नामसे खोली। इसपर कोरे कपड़ेका कारबार शुरू किया जो इस समय बराबर हो रहा है। आपके हाथोंसे भी इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आप सरल, एवम निराभिमानी सज्जन है। आप सन् १९१८ से सरदार शहरकी म्युनिसिपेलिटीके मेम्बर हैं। सन् १९१७ से बीकानेर स्टेट की लेजिस्लेटिव्ह कौंसिलके भी आप सदस्य है। सन् १९१६ में बंगाल गव्हर्नमेंटने आपको दरबारमें आसन प्रदान किया है। आपका जीवन एक त्यागी जीवन है। आप अपनी फर्मपर कार्य करने वाले सभी व्यक्तियोंपर बड़ा स्नेह रखते हैं।

श्रीसेठ श्रीचन्दजी साहबके दूसरे पुत्र श्री बिरदीचन्दजी हैं। आपने संवत् १९५३ में कलकत्ता आकर व्यापारमें भाग लेना प्रारंभ किया। आप भी सज्जन एवम मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस समय सेठ गणेशदासजीके भानजे श्रीयुत भीखमचंदजी इस फर्मके प्रधान कार्य करता है। आप संवत् १९२१ सेही यहां आकर इस फर्मका संचालन कर रहे है। आप शांत एवं गम्भीर प्रकृतिके पुरुष हैं। फर्मके मालिकोंका आप पर पूरा स्नेह है।

सेठ गणेशदासजीके पुत्र नहीं है। सेठ विरदीचंदके २ पुत्र हैं। जिनकेनाम क्रमशः नेमीचंदजी तथा उत्तमचन्दजी हैं। श्रीयुत नेमीचन्दजी सेठ गणेशदासजीके दत्तक हैं। आप दोंनो सज्जन इस समय संस्कृत इंग्लिश आदिका अध्ययन कर रहे हैं। आप व्यापारमेंभी कुछ २ भाग लिया करते हैं।

इस फर्मकी सरदारशहर तथा कलकत्तेके कपड़ेके व्यवसाइयोंमें बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है। सरदारशहरमें आपकी सुन्दर एवम आलीशान हवेली बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्दगणेशदास ११३ क्रासस्ट्रीट T. A. Gadhaiya T.N 3288 B B—
यहां बैंकिङ्ग, हुंडी चिट्ठी, तथा कपड़ेके इम्पोर्टका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास उदयचन्द ४८ क्रासस्ट्रीट—यहां कोरा मारकीन धोती जोड़े आदिका व्यवसाय होता है।

सरदारशहर—मेसर्स जेठमल श्रीचन्द गधैया—यहां बैंकिङ्ग तथा हुंडी और चिट्ठीका काम होता है।

सिल्कके व्यापारी

मेसर्स पोहमल ब्रादर्स

यही एक भारतीय फर्म है जिसने पूर्वीय और पश्चिमीय देशोंके कई शहरोंमें अपनी ब्रांचेस स्थापित कर भारतीय कारीगरीका नाम उज्ज्वल करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १४५में दिया गया है। यहा इस फर्मपर जापानी, चाइना आदि रेशमी सिल्कका व्यापार होता है। यहां इसका आफिस ३३ कैनिङ्ग स्ट्रीटमें है।

मेसर्स एल० एच० लीलाराम एण्ड० को०

इस फर्मकी स्थापना स्थानीय पार्क स्ट्रीटमें सन् १८७५ ई० में हुई थी जहां आज भी इसका शोरूम और आफिस है। इसके यहां सभी प्रकारका ऊंचे दर्जेका फैन्सी माल ज्यादा परिमाणमें सदा स्टाकमें रहता है। फैन्सी मालमें सभी प्रकारका ऊंचेसे ऊंचा रेशमी तथा जरीका माल जैसे ब्रोकेड' टीश्यू, जेकेट पीस, बार्डरलैंएड, स्कार्फ, ओपेराक्लोक, रेशमी कालीन, काश्मीरी शाल; बनारसी जरीकी साड़ियां, मूंगा, अण्डी, फैन्सी पर्दे, ज्वैलरी, मैफिलका सामान, शृङ्गारका सामान, फर्नीचर आदि आदि।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—एल० एच० लीलाराम एण्ड को० ७ पार्क स्ट्रीट—यहां फर्मका बहुत बड़ा अपटुडेट शोरुम है। जहां सभी प्रकारका फैन्सी सामान मिलता है।

सूतके व्यापारी

सूतमें प्रधान रूपसे तीन प्रकार होते हैं जैसे मोटा, साधारण और महीन। नं० १ से१५ तकका सूत मोटा, नं० २६ से नं० ४० तकका सूत साधारण और ४० से ऊपरका सूत महीन सूतकी श्रेणीमें माना जाता है। भारतकी कपासके रोयें अधिक लम्बे नहीं होते अतः यहां महीन सूत तैयार नहीं किया जा सकता, यही कारण है कि देशी मिलोंमें महीन सूत तैयार नहीं होता है। फलतः देशी मिलोंके कपड़े भी महीन नहीं होते। कुछ समयसे बम्बईकी मिलोंने अमेरिका और मिस्रकी रूईसे महीन सूत तैयार करना आरम्भ कर दिया है। भारतकी मिलें अपने देशकी आवश्यकताके परिमाणमें मोटा सूत तो तैयार करती ही हैं पर भारतसे सूत विदेश भी अच्छे परिमाणमें भेजा जाता है। विदेशसे जो सूत भारत आता है वह महीन ही होता है और देशी करघोंमें तैयार होने वाला सर्वोत्तम कपड़ा इसी विदेशी सूतसे बुना जाता है। इतना ही नहीं भारतकी कितनी ही मिलें भी महीन कपड़ा तैयार करनेके लिये इसी विदेशी सूतको काममें लाती हैं।

भारतकी मिलोंमें तैयार होने वाले सूतका ९१ प्रतिशत भाग तो मोटे सूतका रहता है और शेष ९ प्रतिशत भागमें केवल ४ प्रतिशतके लगभग ही महीन सूत तैयार होता है। इसी प्रकार विदेशसे आनेवाले सूतमेंसे केवल २५ प्रतिशत भागमें मोटा सूत रहता है और शेषमें ४२.५ प्रतिशतमें साधारण तथा १७.५ प्रतिशत महीन और उत्तम तथा १५ प्रतिशत बे तफसील Unspecified सूत आता है। महीन सूत केवल बम्बईकी ही मिलें तैयार करती हैं और साधारण सूत बम्बई और मद्रासकी। शेष मध्यप्रदेश संयुक्तप्रान्त, बंगाल और पंजाब आदिकी मिलें मोटा सूत तैयार करती हैं। सबसे अधिक सूत अर्थात् ७५ प्रतिशत बम्बईकी, ७ प्रतिशत मद्रासकी, ९ प्रतिशत संयुक्तप्रांतकी, ५ प्रतिशत बंगाल और ५ प्रतिशत मध्यप्रदेशकी मिलें तैयार करती हैं।

देशमें ही सूतकी मांग अधिक रहती है। इसके बाद भारतकी मिलोंका देशी सूत स्ट्रेट-सेटलमेण्ट, शाम, मिस्र, अदन, ईरान और पूर्व अफ्रीकामें अच्छे भावपर बिकता है। वहां सूत माग भी खूब रहती है।

मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बीकानेर) के आदि निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके

जाजोदिया सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ सुखदेवदासजी लगभग ५० वर्ष पूर्व कलकत्ता आये और मुनीमातका काम करने लगे। कुछही समय बाद आप यहाकी प्रसिद्ध फर्म ऐण्डूल यूल कम्पनीके सूतकी मिलकी दलाली करने लगे। इसीके बाद रतनगढ़के आसारामजी बाजोरियाके सामेमें आपने सूतका काम कर लिया। आपके चारो भाई भी कलकत्ते आये और वे सब लोग भी आपके साथही व्यापारमें लग गये। फलतः कलकत्ताके अतिरिक्त मद्रास, कटक भद्रक आदि कई स्थानोंमें शाखायें खुल गयीं। कुछ समय पश्चात् जूटका व्यवसाय भी आरम्भ किया और चितपुर जूट प्रेस भी खरीद लिया। आप कुछ काल तक जापान काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० के बेनियन रहे

इस फर्मके मालिकोंका कौटुम्बिक परिचय इस प्रकार है—

सेठ चिमनी रामजीके चारपुत्र हुए जिनका नाम सेठ सुखदेवदासजी, सेठ रामप्रसादजी, सेठ तनसुखरायजी और सेठ सूरजमलजी था। इन सज्जनोंमेंसे सेठ रामप्रसादजी और सेठ तनसुखरायजी इस समय विद्यमान हैं। स्व० सेठ सुखदेवदासजीके पुत्र बाबू रङ्गलालजी, सेठ रामप्रसादजीके पुत्र बाबू मोतीलालजी, सेठ तनसुखरायजीके पुत्र मदनलालजी, सोहनलालजी, चम्पालालजी और पन्नालालजी तथा स्व० सेठ सूरजमलजीके पुत्र बाबू माणिकलालजी हैं।

वर्तमान संचालकोंमें सभी अनुभवी और शिक्षित है। आप लोग आधुनिक सुधरे हुए विचारके महानुभाव हैं। बाबू रंगलालजी जाजोदियाका सार्वजनिक जीवन बहुत व्यापक है। आप विशुद्धानन्द स० विद्यालयके मन्त्री और अग्रवाल समाजके सभापति रहे हैं। बाबू मोतीलालजी भी व्यापारके अतिरिक्त सार्वजनिक कार्योंमें योग देते रहते है। यह परिवार दान धर्मके कार्योंमें भी भाग लेता रहता है। इसकी ओरसे धर्मशाला और तालाब बने हुए हैं। सुजानगढ़की धर्मशाला और गौशालाके स्थापनका श्रेय इसीको है। इसका व्यापारिक परिचय यों इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद २१२ क्रास स्ट्रीट—सब व्यापारों तथा शाखाओंकी यहां गद्दी है।

कलकत्ता—मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद १२ नारमल लुहिया लेन—यहा सूत, पाट और कपड़ेका आफिस है।

कलकत्ता—चितपुर जूट प्रेस T. No १० काशीपुर रोड—यहां जूट प्रेस है।

मद्रास—मेसर्स सुखदेवदास रामप्रसाद १०१ मिन्ट स्ट्रीट—यहा वाकर कम्पनीकी बेनियन शिप और सूतका काम है।

कटक—मेसर्स तनसुखराय सूरजमल बालूबाजार चांदनी चौक—यहां सूतका व्यापार है।

भद्रक—मेसर्स तनसुखराय सुरजमल हाट बाजार—यहां मिट्टीके तेलकी एजंसी और सूतका काम है।

स्वर्गीय सुखदेव प्रसादजी जाजोदिया

बाबू रामप्रसादजी जाजोदिया

बाबू तनसुखरायजी जाजोदिया

बाबू मानकचन्दजी जाजोदिया

जटनी—(उड़ीसा) तनसुखराय सूरजमल—यहां राइस मिल है और सूतका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवनराम शिववक्श

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान झाझड़ (जयपुर स्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके झाझोरिया सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ जीवनरामजी और आपके छोटे भाई सेठ शिववक्शजीके हाथों हुआ था। यह फर्म आरम्भसे ही सूतका व्यापार करती आ रही है। इस व्यवसायमें इस फर्मने अच्छी उन्नति की है। सेठ जीवन-रामजी प्रायः अपने देशमेंही अधिक रहते थे। व्यापारका संचालन सेठ शिववक्शजी करते थे उन्हींके हाथसे इसकी उन्नति हुई। आप दोनों ही सज्जन स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके प्रधान संचालक सेठ वलदेवदासजी झाझोरिया हैं। आप ही की देख रेखमे सब कार्य होता है। आपके बड़े भाई सेठ जीवनरामजी, सेठ शिववक्शजी, तथा सेठ रामचन्द्रजी स्वर्गवासी हो गये हैं। आप चारों महानुभावोंका परिवार सब विधि भरा पूरा है। आप लोगोंके पुत्र पौत्रोंमें निम्न लिखित सज्जन व्यवसाय संचालन कार्यमें योग दान देते हैं :—

स्व० सेठ जीवनरामजीके पुत्र बाबू घनश्यामदासजी, बाबू डालारामजी तथा पौत्र (स्व० सेठ गुलराजजीके पुत्र) बाबू वच्छराजजी, स्व० सेठ शिववक्शरामजीके पौत्र (स्व० सेठ महलीरा-मजीके पुत्र), बाबू रामधनदासजी, स्व० सेठ रामचन्द्रजीके पुत्र बाबू रामेश्वरलालजी, तथा पौत्र (स्व० सेठ लक्ष्मीनारायजीके पुत्र); बाबू बैजनाथजी; बाबू ज्वालादत्तजी, और बाबू सावरमलजी और सेठ वलदेवदासजीके पुत्र बाबू डूंगरसीदासजी।

इस फर्मके मालिकोंमेंसे बाबू रामधनदासजी झाझोरिया शिक्षित एवं समझदार सज्जन हैं। आप गत तीन चार वर्षोंसे स्थानीय मारवाड़ी ऐसोसियेशनके ऑनरेरी सेक्रेटरी हैं। आप अग्रवाल समाजके सार्वजनिक कार्योंमें भाग लेते रहते हैं। और भी सब सज्जन शिक्षित है आप की फर्म कलकत्तेके व्यवसायियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता मेसर्स जीवनराम शिववक्श T. A. Parbatiji—२१८ क्रास स्ट्रीट—यहां फर्मका हेड आफिस है। तथा देशी और विदेशी सूतका व्यापार होता होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज वलदेवदास २१९ क्रास स्ट्रीट—यहां देशी सूतका कारवार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स केदारनाथ रामधन T. A. Kalidevi ८३ क्रास स्ट्रट—यहा महीन और रंगीन विदेशी सूतका कारवार होता है।

भागलपुर—मेसर्स जीवनराम रामचन्द्र T. A. Murli इस फर्मपर सूत और आढ़तका कारबार होता है। इसके अतिरिक्त कई देशी मिलोंकी सूत और कपड़ेकी ऐजेन्सी भी इसके पास हैं।

टांडा (फैजाबाद)—मेसर्स जीवनराम गुलराज—इस पर भी उपरोक्त कारबार होता है।

इसके अतिरिक्त यू० पी० के कितने हो स्थानोंपर यह फर्म सूतका कारबार करती है तथा उड़ीसा प्रान्तके लिये इसके पास वर्मा आइल कम्पनीकी पेट्रोलकी ऐजेन्सी है जिसपर मेसर्स डूंगरसी-दास मुरलीधरके नामसे उक्त प्रान्तमें कारबार होता है।

व्यवसायिक उन्नतिके साथ २ फर्मके मालिकोंकी धार्मिक एवं सार्वजनिक कार्योंमें भी अच्छी रुचि रही है।

मेसर्स जेसराज जेचंदलाल

यह फर्म दी बावरिया कॉटन मिल लिमिटेड, दि डनवार मिल्स लि० तथा दि न्यूरिंग काटन मिल लिमिटेडकी सूतके लिये सोल वेनियन और ब्रोकर है। इसका प्रधान आफिस १४२ क्रास स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय जूट बेलर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स नन्दलालपसारी

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (सीकर) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके पसारी सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व बाबू भोलारामजीने इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें आकर की थी। आपके बाद आपके पुत्र बाबू नंदलालजी फर्मका काम चलाते हैं आप वर्तमानमें भारत अभ्युदय काटन मिल्स, बनारस काटन मिल्स; केशोराम काटन मिल्स, आदिकी सूतकी दलालीका काम करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नन्दलाल पसारी १०५ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट—यहां सूतकी दलालीका काम होता है।

सालबनी (मेदनीपुर)—मेसर्स नंदलाल रघुनाथराम—यहां एक राइस मिल है।

झाड़ग्राम [चन्दोलिया, बंगाल]—यहां एक राइस मिल है।
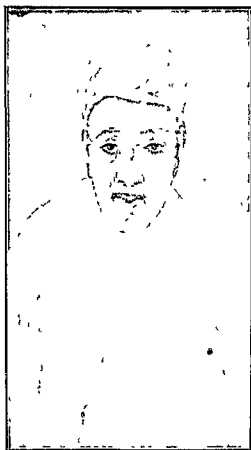
स्व० शिवदत्तरायजी झाझोरिया (जीवनराम शिवदत्त)

बा० बलदेवदासजी झाझोरिया

बा० रामधनदासजी झाझोरिया
(जीवनराम शिवदत्त)

देशी कपड़ेके व्यापारी

आनन्दराम गजाधर पांचागली
खटाऊ मकनजी ”
गजानन्द जुगलकिशोर ”
गणेशदास जुहारमल ”
चैनसुख गम्भीरमल ”
जीवनलाल कम्पनी ”
जगन्नाथ जीवनमल ”
जेठा भाई खटाऊ ”
पन्नालाल कालीचरण ”
पदमचन्द पन्नालाल ”
बोहितराम सीताराम ”
मेघराज अगरचन्द ”
मूलजी गिरधरलाल ”
मदनचन्द नेमचन्द ”
रामकुमार शिवचन्दराय ”
रामवल्लभ रामेश्वर ”
शंकरलाल अम्बालाल ”
शिवदयाल आनन्दराम ”
शिवदयाल मदनगोपाल ”
सुन्दरमल परशुराम ”
सोनीराम जीतमल ”
हरिबगस ओंकारमल ”

साड़ी और नैनसुखके व्यापारी

उदयराम मन्नालाल १८२ सूतापट्टी
तेजपाल बिरदीचन्द ”
देवीबक्स ब्रजमोहन ”
पृथ्वीराज भैरोदान ”
बालबक्स बद्रीनारायण मनोहरदास कटरा
बद्रीदास सागरमल सुतापट्टी
रामप्रसाद बंका १८२ सूतापट्टी
रामेश्वरलाल डेडराज ”
सुकदेव श्रीनाथ ”
सीताराम प्रयागदास ”
हरिबकस दुर्गाप्रसाद ६१ सूतापट्टी
हीरानन्द आनन्दराम १८२ सूतापट्टी
हीरालाल रंगलाल सूतापट्टी
हरकिशनदास प्रयागदास सूतापट्टी

एकलाई (ओढ़ना)के व्यापारी (ऊनी-सूती)

इन्द्रराजमल सुमेरमल मनोहरदास कटरा
कालूराम भूरामल २०३ पारखकी कोठी
कोड़ामल गुलाबचन्द मनोहरदासका कटरा
खेतसीदास कालूराम ” ”
चौथमल गुलाबचन्द ” ”
छोगमल गोविन्दलाल २०३ पारखकी कोठी
जवरीमल रामलाल मनोहरदासका कटरा
जुगलकिशोर शिवरतन २०३ पारखकी कोठी
प्रेमराज राधाकिशन सदासुखका कटरा
मंगलचन्द जगन्नाथ सदासुखका कटरा
रघुनाथदास शिवलाल २०३ पारखकी कोठी
रूपलाल रामप्रताप सदासुखका कटरा
लाभचन्द रिखबदास २०३ पारखकी कोठी
शिवबक्स दुलीचन्द २०३ पारखकी कोठी
हरद्वारीमल सीताराम २०३ पारखकी कोठी
हनुतराम मंगलचन्द २०३ पारखकी कोठी

लांग क्लाथके व्यापारी

श्रीचन्द गणेशदास मनोहरदासका कटरा
श्री वल्लभ गोयनका मनोहरदासका कटरा
कोड़ामल गुलावचन्द मनोहरदासका कटरा
गुलावचन्द प्रेमसुख मनोहरदासका कटरा
छाजूराम अर्जुनदास सदासुखका कटरा
तुगनराय रामजीदास खंगरापट्टी
मन्नालाल धनराज मनोहरदासका कटरा
वृद्धिचन्द वदनमल मनोहरदासका कटरा
वृद्धिचन्द नथमल मनोहरदासका कटरा
रामदेव गजानन्द पारखकी कोठी
सुमेरमल सुराना मनोहरदासका कटरा
हरकचन्द पूरणमल मनोहरदासका कटरा

मारकीनके व्यापारी

अजीतमल मानिकचन्द सूतापट्टी
केवलराम वैजनाथ वड़तल्ला स्ट्रीट
गणेशदास उदयचंद सूतापट्टी
गणेशदास मोहनलाल भजनलाल १५६ सूतापट्टी
चौथमल रामलाल सूतापट्टी
जयकिशनदास डागा पगैयापट्टी
पनेचंद इन्द्रचंद ,,
बंशीलाल गुजराती गणेशभगतका कटला
बिहारीलाल लक्ष्मीनारायण ६१ सूतापट्टी
भैरोंदान शिखरचंद गणेशभगतका कटला
शोभाचंद धनराज सूतापट्टी
सदासुख पारख ७ पगैया पट्टी
सागरमल मदनलाल सुतापट्टी
सुखदेव शिवनाथ ७ पगैयापट्टी

जापानी मारकीनके व्यापारी

गुलाबराय वैजनाथ ४ नारायणप्रसाद वावू लेन
जिन्दाराम हरविलास १३२ तुलापट्टी
देवीलाल शुभकरण ७७ खंगरापट्टी
लछमीनारायण जमनाप्रसाद ४ नारायण वावूलेन
हनूतराय भगवानदास १३२ तुलापट्टी

लालरंगके कपड़ेके व्यापारी

श्रीचंद गनेशदास मनोहरदासका कटरा
कन्हैयालाल रामकुमार १७८ मल्लिक कोठी
जगन्नाथ मदनगोपाल पारखकी कोठी
वंशीधर द्वारकादास १६० सूतापट्टी
रामपतदास रामजीदास सदासुखका कटला
रामप्रताप हरदेवदास पारखकी कोठी
रामलाल कन्हैयालाल सूतापट्टी
शिवभगवान वावूलाल मनोहरदासका कटरा
सागरमल नन्दनलाल सदासुखका कटला

धोतीके व्यापारी

खेतसीदास गिरधारीलाल ७ पगिया पट्टी
गंगाविशनमुरलीधर १४ पगियापट्टी
गनपतराय गोवर्धनदास गणेशभगतका कटरा
गणेशदास गोपीकिशन ६१ सूतापट्टी
गणपतराय नरसिंहदास २०१ हरीसन रोड
गणेशचन्द रामगोपाल २०१ हरीसन रोड
गोपीकिशन श्रीलाल १७८ हरिसन रोड
गंगाविशन दीनानाथ पगैयापट्टी
चुन्नीलाल कालूराम १३ पगैयापट्टी

धोतीके व्यापारी

छोटूलाल सोहनलाल गणेशभगतका कटरा
छोटूलाल लक्ष्मीनारायण पगैयापट्टी
चैनसुख गम्भीरमल ४६ स्ट्राण्ड रोड
तिलोकचन्द डायमल ६१ सूतापट्टी
तिलोकचन्द जयचन्दराम १५८ सूतापट्टी
तुलाराम सागरमल १५८ सूतापट्टी
द्वारकादास गोवर्धनदास १७८ हरिसन रोड
धनसुखदास चांडक २०१ हरिसन रोड
पन्नालाल सुगनचन्द गणेशभगतका कटरा
प्रेमसुखदास रूपनारायण १२ पगैयापट्टी
फतेचन्द जीवराज गणेशभगतका कटरा
बृद्धिचन्द गंगाबिशन २०६ हरीसन रोड
महादेव मंगलचन्द २०१ हरीसन रोड
मदनलाल गजानन १५ पगैयापट्टी
मदनलाल गौरीशंकर १५८ सूतापट्टी
मूलचन्द गंगाराम २०१ हरीसन रोड
रघुनाथदास श्रीराम २०१ हरीसन रोड
रामजीदास शुभकरण केशोरामका कटरा
रामप्रसाद माणिकचन्द ६ क्रास स्ट्रीट
रिखनाथ शिवकिशन गणेशभगतका कटरा
रेखसीदास काशीराम गणेशभगतका कटरा
रुकमानन्द सागरमल गणेशभगतका कटरा
लालचंद रामदयाल गणेशभगतका कटरा
लाभचंद रिखबदास २०३।१ हरीसन रोड
शिवदास गिरधरदास गणेशभगतका कटरा
शिवबक्स लक्ष्मीनारायण १७८ हरीसन रोड
शिवलाल हरकचंद २०३ हरीसन रोड
सागरमल गजानन्द ३१ तुलापट्टी
सेढ़मल गोपीराम गणेशभगतका कटरा
सुजानमल छोगमल २०३।१ हरीसन रोड
हरीराम बनारसीदास गणेशभगतका कटरा
हरिबक्स दुर्गाप्रसाद ६१ सूतापट्टी
हीरालाल बेंगानी सूतापट्टी
चांदमल दस्साणी मियां कटरा
हनुमानदास मेघराम २०१ हरीसन रोड
हनुमानदास नरसिंहदास ६ पगैयापट्टी

मलमल और नैनसुख (धुले सूतका) मालोंके व्यापारी

अमरचंद मुरलीधर मनोहरदासका कटरा
कालूराम भूरामल २०३ हरीसन रोड
कोड़ामल गुलाबचन्द मनोहरदासका कटरा
गुलाबचन्द रावतमल मनोहरदासका कटरा
खेतसीदास कालूराम मनोहरदासका कटरा
गोविन्दराम रामेश्वर सदासुखका कटरा
चौथमल गुलाबचन्द मनोहरदासका कटरा
छोटेलाल सोहनलाल २०३ हरीसन रोड
पीरामल दत्तूलाल १९० हरीसन रोड
बाबूलाल गोविंदप्रसाद सदासुखका कटरा
मिर्जामल सरावगी सदासुखक कटरा
रघुनाथदास शिवलाल २०३ हरीसन रोड
रामकिशनदास जैयरमल सदासुखका कटरा
रामगोपाल अर्जुनदास १०० हरीसन रोड
लालचन्द रिखबदास २०३ हरीसन रोड
श्रीचंद गणेशदास मनोहरदासका कटरा
सूरजमल रामेश्वर २०३ हरीसन रोड

सूरजमल हरीराम सदासुखका कटरा

रंगीन साड़ीके व्यापारी

गणेशदास नन्दलाल पारखकी कोठी

चुन्नीलाल हीरालाल पारखकी कोठी

डूंगरसीदास भोमबक्स सदासुखका कटरा

देवीप्रसाद भगवतीनन्दन सदासुखका कटरा

मंगलचन्द गिरधारीलाल १७८ हरीसन रोड

मदनगोपाल रामगोपाल पारखकी कोठी

मंसुखदास रामलाल १७८ हरीसन रोड

मोतीराम गजानंद पारखकी कोठी

रामनाथ मन्नालाल पारखकी कोठी

रामनाथ बृजमोहन पंजाबीकटरा क्रास स्ट्रीट

शिवदत्तराय श्रीनिवास १०० हरीसन रोड

शिवबख्श रंगलाल १७८ हरीसन रोड

श्रीगोपाल विलासराम पारखकी कोठी

श्रीगोपाल रामेश्वर पारखकी कोठी

रेशमी कपड़ेके व्यापारी

जसकरण केशरीचंद खंगरापट्टी

जतनमल केशरीचंद खंगरापट्टी

जेठमल ढालामल न्यूमार्केटके सामने

तोलाराम देवजी हरिसन रोड

पोहमल ब्रदर्स केनिङ्ग स्ट्रीट

हरजीवनदास प्रीतमदास खंगरापट्टी

हस्तीमल लक्ष्मीचंद खंगरापट्टी

इण्डियन सिल्क कम्पनी ५ डलहौसी स्क्वायर(ईस्ट)

एल० एच० लीलाराम एण्डको० ७;९ पार्कस्ट्रीट

मनशामदास धालामल

सिद्धेश्वर सेन एण्डको० लि० ३३ केनिङ्ग स्ट्रीट

होज़ियरी मरचेंट्स

उपेन्द्रनाथ सेन १४१ ओल्ड चाइना बाजार

कन्हैयालाल मूलचंद मनोहरदासका कटला

कैलाशचन्द्र दे ओल्ड चाइना बाजार

खेतसीदास रामजीदास १०८ हरिसन रोड

गम्भीरमल महावीर प्रसाद २०३ हरिसन रोड

चैनसुख गम्भीरमल ४६ स्ट्राण्ड रोड

जीवनबक्श एण्ड कम्पनी हरीसन रोड

दयालाल कम्पनी १५६ हरिसन रोड

प्रभूदयाल नेमचन्द १६ पांचा गली

पुरुषोत्तमदास वर्मा १७२ हरिसन रोड

बल्देवदास पचीसिया २०३।१ हरिसन रोड

बंशीधर शिवभगवान ५१ पांचा गली,

महम्मद रफी महम्मददीन गणेश भगतका कटला

महादेव प्रसाद खत्री १५८ हरिसन रोड

महम्मददीन नूर इलाही १६० हरिसन रोड

लक्ष्मीनारायण गोपालदास १७४ हरिसन रोड

शेख महम्मद सैयद एण्डको०

३१।३२ कोलू टोला स्ट्रीट

हीरालाल सगुनचन्द १४ पगैया पट्टी

हीरालाल शिवलाल चीना बाजार

धूरट एण्ड को०—२४।१ श्री मन्त दे लेन

मैंजुयट्स यूनियन ७२ हरिसन रोड

एस. मोहम्मद हसन एण्ड सन्स १७६ हरिसन रोड

मुमताज अहमद एच० महबूब इलाही ३१।३१ कोलूटोला स्ट्रीट

नस्कर मेग ३१ म्युनिसिपल मार्केट
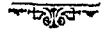
सिद्धेश्वरसेन एण्ड को० लि० ३३ केनिङ्ग स्ट्रीट
इंपरी स्टोर्स जी० १३।१४ म्युनिसिपल मार्केट

ऊलन और फैन्सी मरचेंन्ट्स

अब्दुललतीफ जमाल ७ आर्मेनियन स्ट्रीट
किशन गोपाल जीवनदास आर्मेनियन स्ट्रीट
कोड़ामल नथमल आर्मेनियन स्ट्रीट
गिरधारीमल मंगलचन्द मनोहरदासका कटला
गोपीराम गोविन्दराम मनोहरदासका कटला
चोथमल चुन्नीलाल सूतापट्टी
चोथमल दुलीचन्द मनोहरदासका कटला
चोथमल जयचन्दलाल मनोहरदासका कटला
अमित्व घोष—१०० क्लाइव स्ट्रीट
इण्डियन इण्डस्ट्रीयल एण्ड इम्पोर्टर्स अलायन्स २१ केनिङ्ग स्ट्रीट
इलाही वक्स ब्रदर्स एण्ड को०—८२।८ कोलू टोलास्ट्रीट

शालके व्यापारी

अमित घोष १०० क्लाइव स्ट्रीट
जहरलाल पन्नालाल १३४ केनिङ्ग स्ट्रीट
पञ्जाब ट्रेडिङ्ग कम्पनी २० कार्नवालिस स्ट्रीट
मेथाराम नवलराय एण्ड को० ७।१० सर स्टुअर्स हाग मार्केट
एल० एच० लीलाराम एण्ड को० ७।६ पार्क स्ट्रीट
सतरामदास घलामल
ताराचन्द परशुराम एण्ड को० ७५ पार्कस्ट्रीट
चांदमल सरदारमल—खंगरापट्टी
डुंगरराय रामजीदास—७७ खंगरापट्टी
तिलोकचन्द गोपीकिशन ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट
नरसिंह सहाय मदनगोपाल—६ आर्मेनियन स्ट्रीट
प्रेमसुखदास मूंदड़ा—७ आर्मेनियन स्ट्रीट
बनेचन्द मुरलीधर—मनोहरदासका कटरा
मुन्नालाल नारायणदास—३७ आर्मेनियन स्ट्रीट
लक्ष्मीचन्द मंगतूलाल —मनोहरदासका कटरा
हस्तीमल लक्ष्मीचन्द—खंगरापट्टी

ब्लैंकट और शालके व्यापारी

कन्हैयालाल रामजीदास १५० काटन स्ट्रीट
गौरीदत्त हीरालाल १५० „
गोपालचन्द्र नन्दी रानीकोठी, सूतापट्टी
जगन्नाथ सरदारमल १५२ काटन स्ट्रीट
देवीसहाय भानीराम १५२ काटन स्ट्रीट
पञ्चानन चटर्जी रानीकोठी, सूतापट्टी
प्रेमसुखदास रूपनारायण पगैयापट्टी
बैजनाथ बृजमोहन रानीकोठी, सूतापट्टी
मूलचन्द खत्री पगैयापट्टी
रामविलास बृजमोहन, रानीकोठी, सूतापट्टी
लक्ष्मीचन्द बैजनाथ ३१ काटन स्ट्रीट
हुक्मीचंद शिवनाथ, रानीकोठी, सूतापट्टी
श्रीराम कुन्दनमल, २०३ हरिसनरोड

फैन्सी और रंगीन छींटके व्यापारी

केदारनाथ मंगीलाल मनोहरदासका कटरा
गुरसुखराय हरसुखराय „ „
जीनमल रामलाल „ „
जीवनराम गंगाराम „ „
फूलचंद सूरजमल „ „
मदनगोपाल रामगोपाल पंजाबी कटरा
सुखदेवराम गोवर्द्धनदास मनो० कटरा

सुखदेवदास रामविलास ,,
हरिबकस केदारनाथ ,,

सूतके व्यापारी

अब्दुल्ला भाई लालजी ५५ कैनिंग स्ट्रीट
आदमजी हाजीदाउद एण्ड को० लि० ५५ कैनिंग स्ट्रीट
इण्डो ट्रेडिंग कम्पनी ११ क्लाइव रो०
इलाही बक्ष ब्रादर्स एण्ड को० ८२।८ कोलूटोला स्ट्रीट
ए० बोनर एण्ड को० ६८।५ क्लाईव स्ट्रीट
के० पाल एण्ड को० ८१ क्लाईव स्ट्रीट
जान कटलो एण्ड सन्स लि० ११ क्लाईव स्ट्रीट
जापान काटन एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी लि० क्लाईव स्ट्रीट
जीवनराम शिवबक्स २१८ क्रास स्ट्रीट
ऊठा मूलजी एण्ड को० १ तुक्स लेन
नागरमल लाभचंद सूतापट्टी
नानूराम शिवभगवान सूतापट्टी
प्रतापचन्द्र प्रहलादचन्द्र सूतापट्टी
बहादुरमल महादेव सूतापट्टी
मूंगीलाल हजारीमल सूतापट्टी
राजनाथ २६ स्ट्रांड रोड
सुखदेवदास रामप्रसाद सूतापट्टी
साधूराम तोलाराम बेहरापट्टी
सिमिंगटन काक्स एण्ड को० लि० ४ मिशन रो
शीतलप्रसाद खड्गप्रसाद बड़तल्ला स्ट्रीट
हाजीहुसेन दादा सूतापट्टी

गल्ले और किरानेके व्यापारी

Grains, Seeds,
&
Kirana Merchants.

गल्लेके व्यापारी

गल्ला

प्रकृतिकी उदारताके कारण भारतमें सभी प्रकारका अन्न उत्पन्न होता है। भारत कृषि प्रधान देश माना जाता है। और भारतकी पूंजीवादी सरकारकी विशेष प्रकारकी कृषि नीतिने भारतको कृषि कार्यकाही बना रक्खा है। बृटिश भारतकी कृषिकी वार्षिक आय १५०० करोड़से अधिककी अनुमान की जाती है। अतः इसीसे स्पष्ट है कि भारतमें गल्लेका व्यवसाय कितने महत्वका है। भारतमें कितने प्रकारके अन्न उत्पन्न होते हैं यह तो अनुमान करना कठिन है पर साधारण तौरपर यह कहा जासकता है कि धान, गेहूं, जौ, बाजरा, ज्वार, मक्का, चना, अरहड़, उड़द, मूंग, मटर, आदि हैं। गल्ला एक तो भारतमें ही एक स्थानसे दूसरे स्थानको, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्तको जाता है और दूसरे भारतसे विदेशभी बहुत बड़े परिमाणमें जाता है। इस प्रकार गल्लेका व्यवसाय दोनोंही दृष्टिसे बड़े महत्वका है पर इसका आधार वर्षापर होनेके कारण व्यापार घटता बढ़ता रहता है। गल्लेमेंभी चावल और गेहूं ही प्रधान रूपसे विदेश जाते हैं। इनके अतिरिक्त जौ, चना, बाजरा, ज्वार, आदिभी विदेश जाते हैं।

भारतके चावलकी मांग प्रायः सीलोन, स्टेट्‌सेटलमेंट,जर्मनी और हालैंडमेंही अधिक रहती है पर अस्ट्रिया, जापान और बृटेनभी बहुतसा चावल खरीदता है।

संसारमें उत्पन्न होनेवाले गेहूंका १० वां भाग भारतमें उत्पन्न होता है। भारतका गेहूं अमेरिकन गेहूंसे घटिया होता है। भारतसे गेहूं प्रायः मार्च, जून, जूलाई, और अगस्तमें विदेश भेजा जाता है। उस समय योरोपके बाजारमें अमेरिकन या रूसी गेहूं नहीं रहता इसलिये भारतके गेहूंकी अच्छी मांग रहती है। भारतसे गेहूं बृटेन, बेलजियम, फ्रांस, इटली, जर्मनी और स्वीडन, जाता है और गेहूंका आटा प्रायः मिस्त्र, मसोपोटामिया, मोरिशस, सीलोन, ईरान, नेटाल तथा स्ट्रेटसेटलमेंट जाता है।

जौ और चना योरोप जाते हैं। जौ से शराब तैयार होती है अतः जिस वर्ष योरोपमें जौ कम उत्पन्न होता है उस वर्ष जौकी माग अधिक हो जाती है।

अरहर, अरहरकी दाल, मसूर, मसूरकी दाल, मटर, मटरकी दाल, मूंग, मूंगकी दाल उड़द, उड़दकी दाल आदि अन्न बृटेन, हालैण्ड, जर्मनी, बेलजियम, जापान, मोरिशस, और सीलोन जाती है। कलकत्तेके बाजारमें मनपर इनकी बिक्री होती है। पर करांचीमें ६५६ रतल वाली खण्डी पर इनका भाव होता है। बम्बईके बाजारमें २८ मन (बम्बई)की खण्डी होती है। कलकत्तेमें विदेशके लिये इनकी बोरी १६४, २१० या २२४ रतली भरी जाती है। पर बम्बईमें १६८ रतली भरनेका रिवाज है।

ज्वार, बाजरा, मो आदि अदन, मिस्र, ब्रिटिश टर्की, एशियाटिक टर्की अरब और इटैलियन पूर्व अफ्रीका जाती है। कराची बंदरपर ६५६ रतली खण्डीका भाव होता है और १६४ और २०६ रतली बोरे भरे जाते हैं। बम्बईमें भाव बम्बई २७ मनकी खण्डीका होता है और ज्वारके बोरे १५४ से १६८ रतली भरे जाते हैं तथा बाजरेके १६८ से १८० रतली तक होते हैं।

चना बृटेन, सीलोन, स्ट्रेटसेटलमेंट, और मारीशस, जाता है। जर्मनी और इटली भी खरीदते है। कलकत्तेमें १६४ या २१८ रतली बोरे भरे जाते है। करांचीमें २ हण्डरवेट की बोरी होती है। बम्बईमें १६८ से १८० रतल तकका बोरा भरता है।

मक्का बृटेन, मिस्र, यूनान, और जापान जाती है। करांचीमें भाव ६५६ रतलकी खण्डीपर होता है वहां २०६ रतली बोरे भरे जाते हैं।

इस प्रकारके मालका व्यवसाय करनेवाले व्यपारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान झूंसी [इलाहाबाद] है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष लाला द्वारकाप्रसादजीके पांच पुत्रों द्वारा इस फर्मके व्यवसायकी स्थापना एवं वृद्धि हुई। उन पाचों सज्जनोंका नाम लाला हरनामदासजी, लाला मोहनलालजी, लाला किशोरीलालजी, लाला कन्हैयालालजी तथा लाला मुकुन्दीलालजी था। संवत् १९३७'३८ में लाला किशोरीलालजी तथा लाला मुकुन्दीलालजी कलकत्ता आये और यहां आपने अपनी फर्म स्थापित की। लाला मोहनलालजी और लाला कन्हैयालालजी मद्रास गये और उन्होंने वहां कारबार जमाया और सबसे बड़े लाला हरनामदास इलाहाबादमें रामदयाल माधवप्रसाद फार्मका संचालन करते थे। इस कुटुम्बका प्रधान व्यापार गल्लेका है। एवं इस व्यापारको इस खानदानने अच्छा बढ़ाया है। भारतके कई प्रसिद्ध नगरोंमे इस फर्मकी शाखायें हैं। अनेक व्यवसायकी वृद्धिके अतिरिक्त इस फर्मने १२ वर्ष पूर्व नैनीमें त्रिवेणी देशी श्यूगर वर्कसके नामसे एक श्यूगर मिलकी एवं झूंसीमें भी एक श्यूगर मिल स्थापित की।

स्व० लाला किशोरीलालजी (किशोरीलाल मुकुन्दीलाल)

बाबू मदनलालजी केडिया (जयदयाल मदनगोपाल)

बाबू सागरमलजी (किशोरीलाल मुकुन्दीलाल)

बाबू सागरमलजी प्रह्लादका (जयदयाल मदनगोपाल)

वर्तमानमें कलकत्ता फर्मका संचालन लाला किशोरीलालजीके पुत्र लाला बनवारीलालजी, एवं मद्रास फर्मका संचालन लाला कन्हैयालालजीके पुत्र लाला वेनीप्रसादजी तथा लाला केदारनाथजी करते हैं। भूंसीमें लाला बनवारीलालजीके छोटे भ्राता लाला मकसूदनलालजी कारवार सम्हालते हैं। इस कुटुम्बका व्यापार भलीप्रकार शांतिपूर्वक चल रहा है। कलकत्तेके प्रतिष्ठित गल्लेके व्यापारियोंमें इस फर्मकी गिनती है। इसके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

भूंसी—मेसर्स रामदयाल माधवप्रसाद—यहां हेड आफिस है तथा बहुत पुराने समयसे यह फर्म इसी नामसे कारवार करती है।

भूंसी [इलाहाबाद]मेसर्स किशोरीलाल मुकुन्दलाल - इस फर्मपर कपड़ेका कारबार होता है।

भूंसी—(इलाहावाद) लाला मकसूदनलाल, इस नामसे शक्करका कारवार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ६ शिवठाकुर लेन—यहां गल्लेका कारवार होता है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ३ प्यारा बगान - यहां एक आइल मिल अपने मैनजमेंटमें चलती है।

कलकत्ता—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल ४७ स्ट्रैंड बैंक रोड—यहां आपका गोडाउन है एवं अनाजका कारवार होता है।

मद्रास—मोहनलाल कन्हैयालाल २२४ मिंटरोड—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बम्बई—वेनीप्रसाद केदारनाथ कालवादेवी रोड—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कानपुर—रामदयाल माधवप्रसाद कोपरगंज—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

बनारस—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल विसेसरगंज- यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। इस दुकानके अंडरमें भटनी और शिवानमें एक एक श्यूगरमिल आपके मेनेजमेंटमें चलती है।

इलाहावाद—बाबू कन्हैयालाल, मुट्ठीगंज—यहां गल्ले तथा आढ़तका कारवार होता है।

नैनी—बाबू कन्हैयालाल—गल्लेका व्यापार है। तथा श्यूगर मिल है।

बोलपुर—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल—गल्लेका व्यापार होता है।

मुरैना—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— „ „

मुकामा—किशोरीलाल मुकुन्दीलाल— „ „

आरा—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— „ „

बिहिया—रामदयाल द्वारकाप्रसाद— „ „

सहसराम—रामदयाल द्वारका प्रसाद— „ „

इनके अतिरिक्त इन ब्रांचेजके अंडरमें और भी कई स्थानोंपर गल्लेका कारवार होता है।

मेसर्स केशवजी एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मांगरोल (कठियावाड़) है। आप श्रीमालजैन समाजके वणिक सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन कलकत्तेमें संवत् १९६४ में हुआ। इस फर्मके वर्तमान पार्टनर सेठ केशवजी नेमचन्द भाई, सेठ केशवजी शवचन्द भाई, सेठ गुलाबचन्द वृन्दावन भाई तथा प्रागजीवन जेठाभाई हैं। आप लोगोंकी फर्म कलकत्तेके व्यवसायिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका हेड ऑफिस कलकत्तेमें है। व्यवसायिक उन्नतिके साथ २ फर्मके मालिकोंकी दान धर्मके कार्योंकी ओर भी अच्छी रुचि है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स केशवजी कम्पनी ४८ इजरा स्ट्रीट T. A. Crystal—इस फर्मपर चावल, चाय, गनीज वेकिंग,, बोटिंग और कमीशनका काम होता है। यह फर्म कलकत्तेसे, बम्बई, सूडान (अफ्रिका) रेडसी पोर्ट, सोमालीकोस्ट तथा परशियन गल्फके लिए चांवल और चायका एक्सपोर्ट करती हैं। तथा गोलमिर्च और लौंगका इम्पोर्ट इस फर्मपर होता है।

कलकत्तेकी मीलोंका माल लेने और सप्लाई करनेके लिये इस फर्मकी निजकी बोटसर्विस है। जिनके द्वारा कलकत्तेके आसपास माल लाया तथा पहुंचाया जाता है।

मेसर्स कन्हैयालाल विरदीचंद

इस फर्मका हेड आफिस नं० २ राजा उडमंड स्ट्रीटमें है। इस फर्मके मालिक श्रीविरदीचंदजी, कन्हैयालालजीके पुत्र बजरंगलालजी और बिहारीचंदजीके पुत्र बा० लादूरामजी हैं। इस फर्म पर गल्लेका व्यापार होता है। यहां इसी स्थानपर आपकी मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलालके नामकी फर्मपर भी गल्लेका व्यापार होता है। इस फर्मका तरका पता "Rosy हैं। विशेष परिचय कमीशनके काम करनेवालोंमें दिया गया है।

मेसर्स गुटीराम डेढराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थात बिसाउ (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मेहणसरिया सज्जन है। कलकत्तेमे प्रथम संवत्१९६में सेठ गुटीरामजी आये एवं यहां आपने गुटीराम मानिकरामके नामसे फर्म स्थापितकी। आपके पुत्र बाबू डेढ़राजजीका जन्म संवत् १९०२ में हुआ। आपने सेठ गुटीरामजीके पश्चात फर्मका संचालन किया तथा संवत् १९४८ में गुटीराम
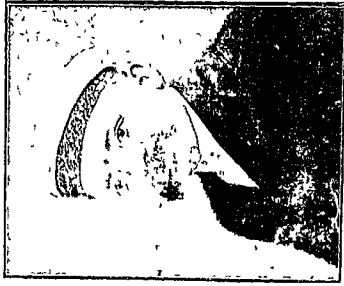
सेठ केशवजी नेमचन्द (केशवजी एण्ड कम्पनी)

सेठ केशवजी शिवचन्द (केशवजी एण्ड कम्पनी)

बा० गणेशीदासजी (गिरधारीलाल घासीराम)

डेढ़राजके नामसे आप कारबार करनेलगे। आप इस समय विद्यमान हैं। आपके पुत्र बाबू वींजराज जी समझदार एवं सरल प्रकृतिके व्यापार चतुर सज्जन हैं। आपका जन्म संवत् १९३५ में हुआ। आपके इस समय एक पुत्र हैं जिनका नाम बाबू शुभकरणजी हैं आप भी व्यापारमें सहयोग लेते हैं।

आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—गुटीराम डेढ़राज २५ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No 2987 B B; T. A. Mahansria—यहाँ गल्लेका व्यापार हुंडी, चिट्ठी तथा सराफी लेनदेनका काम होता है। यह फर्म गल्लेके व्यापारियोंमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती है।

कलकत्ता—डेढ़राज वींजराज २६ बड़तल्ला—यहां पीस गुड्स चलानीका व्यापार होता है।

फैजाबाद—मेसर्स डेढ़राज वींजराज—गल्लेका व्यापार तथा चलानीका काम होता है।

इनके अतिरिक्त नबाबगंज, खालीलाबाद, और बेलत्रारियामें भी आपकी शाखाएं है जिन पर गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स गिरधारीलाल घासीराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान बरड़ोद (अलवर राज्य) में है। आप महावर वैश्य जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुए करीब ५० वर्ष हुए। सबसे पहले इसकी स्थापना सेठ गिरधारीलालजी और सेठ घासीरामजी दोनों भाईयोंने मिलकर की थी। सेठ गिरधारीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९५७ में तथा सेठ घासीरामजीका संवत् १९७० में हो गया। सेठ गिरधारीलालजीके पश्चात् सेठ लक्ष्मीनारायणजी सेठ बिहारीलालजी और भगवानदासजीने इस फर्मके कामको सम्हाला। आप तीनोंहीका स्वर्गवास होचुका है इस समय इस फर्मके मालिक सेठ घासीरामजीके पुत्र श्रीयुत बाबू गणेशीलालजी हैं।

इस फर्मकी तरफसे बरडोदमें एक धर्मशाला, एक मन्दिर, और एक कुंआ बना हुआ है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गिरधारीलाल घासीराम १४२ काटन स्ट्रीट T. A. Chowkrrgat इस दुकान पर गल्ला, किराना, चावल, चीनी, इत्यादिका निजी तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जगदीशप्रसाद पन्नालाल २७ बड़तल्ला स्ट्रीट—इस दुकान पर लौंग, इलायची, सुपारी, बदाम इत्यादि किराना बाहरसे इम्पोर्ट होता है तथा बिकता है।

मेसर्स जीतमल बिसेसर प्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरूमें है। मगर आप बहुत समयसे इलाहाबादमें आकर बस गये हैं। आप माहेश्वरी समाजके सुखानी गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ५०।६० वर्ष हुए। आरंभमें इस फर्मका मेसर्स जीतमल कल्लूमल नाम पड़ता था। इसकी स्थापना श्री सेठ कल्लूमलजीने की। तथा आप हीके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायको विशेष रूपसे प्रोत्साहन मिला। आपका स्वर्गवास हुए करीब १५ वर्ष हो गये हैं। आपके २ पुत्र हैं बाबू रामेश्वरप्रसादजी और बाबू बिसेसर प्रसादजी। करीब ३ वर्ष पूर्व आप दोनों भाइयोंकी फर्में अलग २ होगईं। बाबू रामेश्वरदासजीकी फर्म मेसर्स जीतमल कल्लूमल तथा बाबू बिसेसरदासजीकी फर्म मेसर्स जीतमल बिसेसर प्रसादके नामसे व्यवसाय करने लगी। वर्तमानमें बाबू बिसेसर प्रसादजी ही फर्मके व्यापारको बड़ी उत्तमतासे संचालित करते हैं। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम श्री रामगोपालजी है। वे अभी पढ़ते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतमल बिसेसरप्रसाद १०५ ओल्ड चायना बाजार T. A. Dharmatma Phone 2765 B B इस फर्मपर चावल और शक्करका बहुत बड़ा इम्पोर्ट व्यापार होता है। यू० पी० और बंगालमें चावलका एक्सपोर्ट करने वाली फर्मोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है।

इलाहाबाद—मेसर्स कल्लूमल बिसेसरप्रसाद चौक—यहा पर बैङ्किग, शक्कर तथा चावलका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जीतमल बिसेसरप्रसाद काहूकी कोठी T. A. Bisesar—यहां पर चावल शक्कर गल्ला, कपड़ा तथा किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स जीवणराम जुहारमल

इस फर्मके मालिक मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सके मुनीम बाबू जुहारमलजी जालान हैं। इस फर्मका आफिस १८ मल्लिक स्ट्रीटमें है। यहां पर यह फर्म जूट और गल्लेका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी भागमें जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स जानकीदास शिवनारायण

इस फर्मका हेड आफिस ४८ कैनिंग स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म किरानेका बहुत बड़ा

व्यवसाय करती है। किरानेके साथ २ गल्लेका व्यापार भी इस फर्म पर होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित किरानेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स राय बहादुर जेसाराम हीरानंद

इस फर्मका हेड आफिस देहरा इस्माईलखांमें है। यहांके आफिसका पता १६० क्रासस्ट्रीट है। यह फर्म यहां गल्लेका व्यापार और कमीशनका काम करती है। तारका पता—"Jadwavarshi" है। इस फर्मका विशेष परिचय कमीशनके काम करने वालोंमें दिया गया है।

मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल

इस फर्मका हेड आफिस देहलीमें है। यहां इसका आफिस २२ कैनिंग स्ट्रीटमें है। इस फर्मपर चीनी, हैसियन और गल्लेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें हैसियन और गनीके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसका तारका पता "Sabbarwal" है।

मेसर्स तेजपाल ब्रह्मादत्त

इस फर्मका आफिस ६७ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है यहां यह फर्म गल्ले और हैसियनका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय हैसियन और गनीके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसके वर्तमान संचालक बा० ब्रह्मादत्तजी हैं।

मेसर्स तेजपाल जमनादास

इस फर्मका हेड आफिस मिर्जापुरमें है। यहां यह फर्म १९२ क्रास स्ट्रीटमें अपनी निजकी कोठीमें कपड़े एवं गल्लेका व्यापार करती है। इसकी यहां बहुतसी स्थायी सम्पत्ति भी है। इस फर्मका विशेष परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद हरीशंकर

इस फर्मका स्थापन संवत १९५४ में सेठ दुर्गाप्रसादजीके हाथोंसे हुआ था। आपने ही इस फर्मको स्थापित कर व्यवसायको तरक्की दी। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ दुर्गाप्रसादजी

एवं आपके पुत्र बाबू प्रेमशंकरजी और बाबू हरीशंकरजी है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन है। आपका खास निवास स्थान चंदोसीमें (यू० पी०) है।

आपकी फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स दुर्गाप्रसाद हरीशंकर २६ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहां हेड आँफिस है तथा प्रधानरूपसे गल्लेका व्यापार होता है।

सहजनवां (गोरखपुर) मेसर्स बोलचंद हरीशंकर—यहां गल्लेका काम होता है।

नोतनवां (गोरखपुर) मेसर्स बोलचंद हरीशंकर—यहां गल्लेका काम होता है।

मेसर्स दौलतराम रावतमल

इस फर्मका हेड आँफिस १७८ हरीसन रोडमें है। यह फर्म यूरोपको गल्लेका बहुत बड़ा एक्सपोर्ट करती है। गल्लेके अतिरिक्त जूट एवं सनका काम भी यह फर्म करती है। इस फर्मका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थके जूट बेलर्स एण्ड शीपर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स नोपचन्द मगनीराम

इस फर्मके संचालक मूल निवासी मुकुन्दगढ़ (जयपुर स्टेट) के हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके जगनानी सज्जन है। इस फर्मके संस्थापक सेठ नोपचन्दजी संवत् १९०० में अपने व्यापारके लिये बढ़िया (मुंगेर) आये। और यहा अपने व्यवसायकी स्थापना की। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ मगनीरामजीने इस फर्मके गल्लेके व्यापारको बढ़ाया और उसमें अच्छी प्रतिष्ठा एवम सम्पत्ति पैदा की। ३० वर्ष पूर्व इस फर्मकी कलकत्तेमें शाखा स्थापित हुई। सेठ मगनीरामजीका स्वर्गवास हुए करीब २० वर्ष हुए। आपके पांच पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः अर्जुनदासजी, प्रेमसुखदासजी, जोरावरमलजी, घनश्यामदासजी एवम द्वारकादासजी हैं। इनमेंसे जोरावरमलजी एवम् द्वारकादासजीका देहान्त हो गया है। वर्तमानमें तीनोंही सज्जन इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे बढ़ियामें एक हाई स्कूल चल रहा है। तथा वहीं एक धर्मशाला भी बनी हुई है। बा० घनश्यामदासजी कलकत्ता पिंजरापोलके सेक्रेटरी है। तथा करीब दस वर्षोंसे इण्डियन प्रोड्यूज एसोसियेशनके सभापति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नोपचन्द मगनीराम ६४ पथरियाहट्टा—इस फर्मपर बैंकिङ्ग और गल्लेका व्यापार होता है।

स्व० मेहता वलदेवरामजी
(वलदेवराम विहारीलाल)

स्व० मेहता विहारीलालजी
(वलदेवराम विहारीलाल)

मेहता किशोरीलालजी

मेहता मुरारीलालजी
(वलदेवराम विहारीलाल)

सीतारामपुर– नोपचन्द मगनीराम—यहां आइल मिल है तथा चावल गल्लेका व्यापार होता है।
खगड़िया (मुंगेर)—नोपचन्द मगनीराम—यहां आइल मिल है तथा चावल गल्लेका व्यापार होता है
निर्मली (भागलपुर) नोपचन्द मगनीराम—यहां राईस मिल है तथा गल्लेका व्यापार होता है।
बस्ती जंकशन –(भागलपुर) नोपचन्द मगनीराम—यहां आढ़तका काम होता है।
मुकामा जंकशन—नोपचन्द मगनीराम –यहां आढ़तका काम होता है।
बढ़िया (मुंगेर)—नोपचन्द मगनीराम—यहां इस फर्मकी जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स फूलचन्द केदारमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामेश्वरदासजी, हनुमानबक्षजी एवम मङ्गलचन्दजी हैं। इसका यहांका आफिस नं० ३ चित्तरंजन एवेन्यूमें है। तारका पता Fresh है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है। इसके अतिरिक्त इसके फैनिङ्ग स्ट्रीटके आफिसमें हैसियन गनी और चीनीका एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्ट व्यापार भी होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १८७ में दिया गया है।

मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल

इस फर्मके मूल स्थापक श्रीमेहता बलदेवरामजी मूल निवासी मथुराके थे। आप सन् १८५७ के करीब कलकत्ता आये, एवं यहा आकर मुनीमात की। पश्चात् आपने बलदेवराम नारायण दासके नामसे गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। संवत् १९५२ तक आप इस नामसे व्यापार करते रहे। बादमें आप बलदेवराम बिहारीलालके नामसे अपना स्वतंत्र व्यवसाय करने लगे। सेठ बलदेवरामजीके उद्योग एवं अध्यवसायके कारण इस फर्मका व्यापार दिन प्रतिदिन उन्नत होता गया कलकत्तेमे जब आपका व्यापार तरक्की पर पहुंचा, तब आपने अपनी फर्मकी शाखाएं इलाहाबाद, भरवाटो, और गोरखपुर जिलेके कुछ स्थानोंमें स्थापित की।

सेठ बलदेवरामजी परम धार्मिक एवं सात्विक पुरुष थे। आपका सारा जीवन धार्मिक रूपमें बीता धर्मकी उन्नतिमें आपने लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति लगाई। आपने कई मंदिरोंका जीर्णोद्धार करवाया, पंच महायज्ञ करवाये। काशीमें पच महायज्ञ करवानेमें करीब १ लाख रुपयोंकी सम्पत्ति आपने लगाई। इसी प्रकारके धार्मिक कामोंमे आप समय २ पर विपुल सम्पत्ति खर्च करते रहे। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास संवत् १९७४ मे हुआ

आपके छोटे भ्राता सेठ शालिगरामजी थे। दोनों भाइयोंके कोई सन्तान न थी, फलतः आपके स्वर्गवासी होनेके बाद फर्मका सारा कारबार आपके भानजे एवं ट्रस्टी सेठ बिहारीलालजी, सेठ हजारीलालजी एवं सेठ किशोरीलालजीके हाथोंमें आया।

श्री सेठ बिहारीलालजीने अपने मामा मेहता बलदेवरामजीके स्मरणार्थ रामघाट काशीमें २ लाख रुपयोंकी लागतसे एक मेहता बल्लभराम शालिगराम सांगवेद विद्यालय की स्थापना की है। इसके अतिरिक्त मथुरा, काशी, कलकत्ता हरिद्वार आदि स्थानोंमें आपने अन्नक्षेत्र स्थापित किये हैं। श्री सेठ बिहारीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७९ में एवं सेठ हजारीलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७७ में हुआ। सेठ बिहारीलालजीके पुत्र 'बाबू मुरारीलालजी बाबू मनोहरलालजी एवं बाबू गोविन्दलालजी हैं। तथा सेठ किशोरीलालजीके पुत्र बाबू गिरधारीलालजी एवं हरीलालजी हैं।

वर्तमानमें फर्मके व्यवसायमें प्रधान रूपसे भागलेनेवाले श्री सेठ किशोरीलालजी, बाबू मुरारीलालजी एवं गिरधारीलालजी हैं। आप सब बड़े सज्जन एवं शांतप्रकृतिके महानुभाव हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके व्यवसायियोंमें बहुत प्रतिष्ठित एवं पुरानी मानी जाती है। आपके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बलदेवराम बिहारीलाल ४९ स्ट्रांडरोड T No 2557 B. B—यहां हेड आफिस है। तथा बैङ्किग, गल्लेका व्यापार और कमीशनका काम होता है। आपके ३ गोडाउन स्ट्रांड रोडपर एवं एक गोडाउन रामकृष्टोपुर रेलवे साइडिंग पर है। राम कृष्टोपुरका T. No. 558 है इसके अलावा कलकत्तेमें आपके निम्नलिखित व्यापार होते हैं।

कपड़ा—मुरारीलाल मोहनलाल—इस नामसे आप इविंग कम्पनीकी मैनेजिंग एजंट मेसर्स जार्डन-स्किनर कम्पनीके बेनियन है।

बेङ्किग—सन् १९१० से यह फर्म ईस्टर्न बेंक लिमिटेडकी ग्यारंटेड केशियर एवं बेनियन हैं। सन् १९१६ से सेंट्रल बैंकके कलकत्ता हेड आफिस एवं बड़ाबजार तथा झरिया और आसनसोल ब्रांचकी, ग्यरंटेड केशियर और बेनियन है।

हेशियन—गिरधारीलाल कम्पनी १३५।१३६ केनिंग स्ट्रीट T. No 4120 Cal—यहा हेशियन ब्रोकरेजका काम होता है।

इलाहाबाद—मेसर्स बलदेवराम शालिगराम—गल्ला आढ़त तथा सराफीका काम होता है।

भरमारी (इलाहाबाद) बल्देवराम शालिगराम—गल्लेकी खरीदीका काम होता है।

सहजनवा, चौरा चौरी } (जिला गोरखपुर)—बलदेवराम शालिगराम—यहां गल्लेका खरीदी और आढ़तका काम होता है।

स्व० बिसेसरदासजी कसेरा

बाबू नन्दलालजी कसेरा
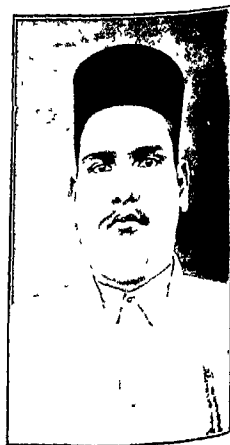
बाबू रामलालजी कसेरा

मेसर्स बिसेसरदास कसेरा

इस फर्मके मालिक बिसाऊके निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५०, ५५ वर्ष पूर्वसे स्थापित है। इसके स्थापक सेठ बिसेसरदासजी थे। आपहीके हाथोंसे इसकी तरक्की हुई। आप व्यापार कुशल सज्जन थे। आपका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हो गया। आप बिसाऊकी पींजरापोलके मंत्री थे। आपके समयमें इस संस्थाकी बहुत उन्नति हुई। आपके द्वारा इसमें आर्थिक सहायता भी अच्छी पहुंचाई गई। आपके एक पुत्र बा० लालचंदजी हैं।

आपकी ओरसे लालसांगा चमोली एवं बड़बड़ नामक स्थानोंपर धर्मशालाएं बनी हुई है। इस फर्ममें बाबू रामनारायणजी कसेरा भी कार्य करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—बिसेसरदास कसेरा ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No. 1747—यहां बैंकिंग एवम् गल्लेका व्यापार तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

शाहाबाद [बाराबंकी] बिसेसरदास कसेरा—यहां गल्लेका काम तथा आढ़तका काम होता है।

फतेपुर [बाराबंकी] „ „ „ „

मेमदाबाद [सीतापुर] „ „ „ „

रामसनेही घाट [बाराबंकी] „ „ „ „

मेसर्स बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मका हेड आफिस ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस कलकत्तामें है। इसका मालिक प्रसिद्ध बिड़ला परिवार है। इस फर्मपर जूट, हेसियन, गनी, अलसी, गल्ला, तिलहन, चांदी, रुई आदिका बहुत बड़ा और सुसंगठित रूपसे कारबार होता है। इसके अतिरिक्त कई मिलोंकी यह फर्म मैनेजिंग एजंट है। बीमेका काम भी इस फर्मपर जोरोंसे होता है। एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम करनेवाली भारतीय फर्मोंमें यह फर्म बहुत ऊंची श्रेणीकी मानी जाती है।

इस फर्मके व्यवसायका सुविस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें अनेक चित्रोंसहित राजपूताना विभागके पृष्ठ ८३ में दिया गया है।

मेसर्स वंशीधर दुर्गादत्त

इस फर्मका हेड आफिस २६ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। यह फर्म नेऊ आढ़त एवं गल्लेका

व्यवसाय करती है। आगरा तथा कलकत्तामें इस फर्मकी तेलकी मिले है। इस फर्मके व्यवसायका विशेष परिचय 'आंइल मरचेंट" विभागमें दिया है।

मेसर्स भगतराम शिवप्रताप

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान राजगढ [बीकानेर स्टेट] है। कलकत्तेमें यह फर्म करीब ६०।७० वर्षोंसे व्यापार कर रही है।

इस फर्मका हेड आफिस २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें हैं। यहांपर हुण्डी, चिट्ठी, गल्ला तथा हेसियनका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त इस फर्मकी शाखाएं बम्बई, कानपुर, हिसार, हांसी [पंजाब] सरगोधा [पंजाब] एवं राजगढ़में [बीकानेर स्टेट) है। इन शाखाओंपर रुई, गल्ला, बारदान एवं आढ़तका काम होता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागमें पृष्ट ५८ में दिया गया है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन सेठ शिवप्रतापजी रामनारायणजी एवं सेठ लक्ष्मीनारायणजी करते है।

मेसर्स भोलाराम कुन्दनमल

इस फर्मका आफिस १३७ काटन स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें हेसियन और गनीके व्यापारियोंमें चित्रोंसहित दिया गया है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है।

मेसर्स मामराज रामभगत

इस फर्मका हेड आफिस बम्बईमें है। बम्बईमें यह फर्म काटन, मेन तथा बैङ्किगका बहुत बड़ा बिजिनेस करती है। इस फर्मके मैनेजमेंटमें अहमदाबादमें न्यू स्वदेशी काटन मिल लिमिटेड तथा अकोला काटन मिल लिमिटेड चल रही है। इसके अतिरिक्त इसकी ऑइल मिल तथा रुई जीनिंग प्रेसिंग फेक्टरियां भिन्न २ स्थानों पर चल रही है। बम्बई, कलकत्ता, कानपुर, तथा कराची चार प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्रोंमें आपकी फर्मे स्थापित है, तथा इन फर्मोंके अंडरमें यू० पी०, पंजाब बरार, निजाम हैदराबाद प्रान्तोंमें करीब ४० शाखाएं खुली हुई है।

इस फर्मकी कलकत्ता ब्रांचका स्थापन संवत् १९६१ में शिवसुखराम लच्छीरामके नामसे हुआ, एवं संवत् १९७६ से उपरोक्त नामसे यह फर्म यहां व्यापार कर रही है। वर्तमानमें इस फर्मके

बा० जुहारमलजी डालमिया (मामराज रामभगत)
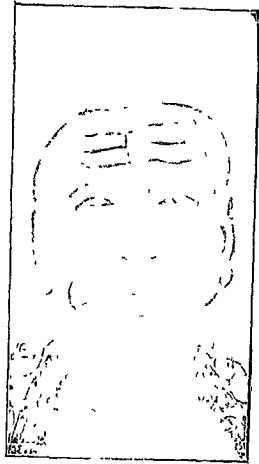
बा० घनश्यामदासजी जगनानी (नोपचन्द मगनीराम)

स्व० मेहता हजारीमलजी (बलदेवराम बिहारीलाल)

मेहता गिरधारीलालजी (बलदेवराम बिहारीलाल)

संचालक श्री सेठ हरकिशनदासजी, बाबू मंगलचन्दजी, बाबू दुलीचन्दजी, बाबू बेणीप्रसादजी, बाबू जुहारमलजी, बा० फूलचन्दजी और बा० श्री केशवदेवजी हैं। यह कुटुम्ब कलकत्ता तथा बम्बईके अग्रवाल समाजमें बहुत प्रतिष्ठित एवं अग्रगण्य माना जाता है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स मामराज रामभगत नारायण बाबू लेन T. No 1223 B B—यहां रुई और गल्लेका व्यापार होता है। इस फर्मपर बा० जुहारमलजी कार्य देखते हैं।

बम्बई—मेसर्स मामराज रामभगत (हेड ऑफिस) मारवाड़ी बाजार T. A. Dalmiya—यहां रुई, गल्ला, बैङ्किग तथा आढ़तका सुसंगठित व्यवसाय होता है। यह फर्म मामराज बसंतलालके नामसे मेसर्स कियागवान नामक शक्करके प्रसिद्ध व्यवसायीकी बम्बईके लिये सोल ग्यारंटर है इस फर्मका विस्तृत परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पृष्ट ५४में दिया गया है।

बम्बई - मेसर्स हुकुमचन्द रामभगत—इस फर्ममें इन्दौरके प्रसिद्ध सेठ सर हुकुमचन्दजीका हिस्सा है, इसकी एक ब्रांच कोबी (जापान)में भी है, यहां रुईके एक्सपोर्ट तथा जत्थेका काम एवं कमीशनका व्यवसाय होता है, इसके अंडरमें खामगाव तथा चान्दामें २ जिनिंग और १ प्रेसिंग फेक्टरी भी चल रही है। इस फर्मके अण्डरमें और भी कई ब्रांचेज बम्बई प्रातमें हैं।

मेसर्स एम० एम० इस्पहानी एण्ड सन्स

इस फर्मकी स्थापना आजसे लगभग ६० वर्ष पूर्व मद्रासमें हुई थी। आरम्भमें इस फर्मपर योरोपके लिये नील भेजनेका व्यापार होता था। और यही कारण है कि बंगालमें शाखा खोलनेके लिये बाध्य हो कर इस फर्मने स्थायी रूपसे कलकत्तेमें अपना आफिस सन १९०० में खोला। जो आज भी व्यापार वाणिज्य कर रहा है।

यह फर्म चाय, नील, रुई, खाल, चमड़ा, बोरे, गल्ला, और तेलहन माल खरीद कर विदेश भेजती है। मद्रासमें यह फर्म तेलहन खरीदने और चमड़ा भेजनेमें प्रथम मानी जाती है। कलकत्तेमें चाय खरीदने वाली फर्मोंमें इसका स्थान बहुत ऊंचा है। यह फर्म कलकत्तेमें नीलामके समय चाय खरीद कर विदेश भेजती है।

इस फर्मके तीन हिस्सेदार हैं। जिनमे मि० एम० एम० इस्पहानी कलकत्ता फर्मका, मि०

एम० ए० इस्पहानी मद्रासका और मि० एम० एच इस्पहानी लन्दन आफिसका संचालन करते हैं। यह फर्म पूर्वीय देशोंकी बड़ी फर्मोंमें मानी जाती है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स एम० एम० इस्पहानी एण्ड सन्स ५१ इजरा स्ट्रीट—यहां चायकी खरीद बिक्रीका काम प्रधान रूपसे होता है।

खिदर पुर [कलकत्ता]—मेसर्स एम० एम० इस्पहानी एण्ड सन्स—यहा चाय, चमड़ा, खाल आदिके लिये गोदाम हैं।

मद्रास पांफमूस ब्राडवे—मेसर्स एम० ए० इस्पहानी एण्ड सन्स —यहां तेलहनकी खरीदी और तेलहन, खाल तथा चमड़ाकी चलानीका काम होता है।

लन्दन E C मेसर्स - एम० एच० इस्पहानी एण्ड सन्स २१ मिन्सिंग लेन-यहां प्रधान रूपसे चायका व्यापार होता है।

मेसर्स रामेश्वर रायरतन थिरानी

इस फर्मका हेड आफिस किशनगंजमें (बंगाल) है। यहाके प्रधान आफिसका पता मेसर्स जगन्नाथ जुगुलकिशोर सदासुखका कटला हरिसन रोडमे है। इसपर बैंकिंग जूट और कमीशन एजंसीका काम होता है। मेसर्स रामेश्वर रायरतनके नामसे यहा आपके तीन चावलके मिल है। इस फर्मका विशेष परिचय जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स रामदत्त गंगाबख्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक मेसर्स बिड़ला ब्रदर्सके प्रधान मुनीम श्री गंगाबक्सजी कानोड़िया है। इसका आफिस १८ मलिक स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म हैसियन और गल्लेका व्यापर करती है। इसका विशेष परिचय जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स राधाकृष्ण वेनीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान इलाहाबाद (यू० पी०) है। आप भार्गव जातिके सज्जन है। इस फर्मका स्थापन १०० वर्ष पूर्व इलाहाबादमें हुआ। लाला शंकरदासजीके समयमें इस फर्मपर गल्लेका बहुत बड़ा घरू कारबार होता था। उस समय पचीसों स्थानोंपर आपकी

दुकानें थी ।.लाला शंकरदासजी यू० पी० के बड़े प्रतिष्ठित व्यापारी माने जाते थे। लाला शंकरदास-जीके पश्चात् उनके पौत्र लाला कालिकाप्रसादजीने इस फर्मपर आढ़तका काम आरम्भ किया, एवं इस कार्य्यको बहुत अधिक बढ़ाया। इस समय आपकी फर्म गल्लेकी आढ़तका अच्छा व्यवसाय करती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक लाला कालिकाप्रसादजीके पुत्र लाला कन्हैयालालजी एवं लाला मनोहरलालजी हैं। आप इलाहाबादमें अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्तियोंमें माने जाते हैं। तथा सार्वजनिक कार्योंमें आपलोग अच्छा सहयोग देते रहते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायका परिचय इस प्रकार है।

इलाहाबाद—मेसर्स राधाकृष्ण बेनीप्रसाद शंकरलाल कीटगञ्ज—यहां बैंङ्किग, आढ़त, एवं गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स राधाकृष्ण बेनीप्रसाद १० कॉटन स्ट्रीट—यहां गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स स्वयम्वर सिंह हरिशङ्कर सिंह

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान खजूरगांव (रायबरेली) है। आप क्षत्रिय कुलके इतिहास प्रसिद्ध बैस ठाकुर राणाबेनीमाधवके वंशज हैं। इस परिवारका इतिहास बहुत पुराना है। अवधके तालुकदारोंमें इसका स्थान बहुत ऊंचा है। आजकल इस गद्दीपर राजा उमानाथबख्स सिंहजी हैं। आप स्व० राना शिवराज सिंहजी बहादुर के० सी० एस० आईके सुपुत्र हैं। आपका सम्बन्ध बड़े २ राजघरानोंमें है।

रानासाहबके पांच पुत्र हैं जिनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र लालसाहब भावी राना हैं। तथा मझले पुत्र कुमार स्वयंवर सिंहजी तथा हरिशंकरजीके नामसे कलकत्तेमें उपरोक्त फर्म है तथा शेष दोनों छोटे राजकुमारोंके नामसे कानपुरमें एक चांदी सोनेकी फर्म चलरही है। ये चारों राजकुमार इलाहाबाद और देहरादूनमें शिक्षा प्राप्त कररहे है।

आप रायबरेलीके सबसे बड़े तालुकेदार हैं। बनारस, इलाहाबाद, लखनऊ, आदिमें आपकी कई विशाल कोठियां है। आप एक प्रतिष्ठित घरानेके स्वामी एवं उदार चित्त सज्जन हैं। आपके पिता जीने एकलाखसे अधिकका दान हिन्दूविश्वविद्यालयका दिया है। इसी प्रकारके अन्य सार्वजनिक कार्योंमें आप भाग लेते रहते है। आप लेजिस्लेटिव असेम्बलीके सदस्य भी रह चुके हैं।

कलकत्तेकी उपरोक्त फर्मका संचालन इसके भागीदार बाबू सीतारामजी अग्रवाल अभी कुछ

दिनसे करने लगे हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं तथा व्यवसायका आपको अच्छा अनुभव है। आप बनारसके एक प्रतिष्ठित परिवारके हैं। आपका सम्बन्ध भी बड़े २ प्रतिष्ठित घरानोंमें है।

कलकत्तेकी गल्लेकी प्रतिष्ठित एवं उच्च श्रेणीकी फर्मोमें इसका स्थान है। इसका स्थापन लगभग २० वर्ष पूर्व हुआ था। इसकी आढ़तमें सी० पी०, यू० पी०, पंजाब और बंगालकी प्रसिद्ध गल्ले की मंडियोंसे गल्ला आता है जो बड़े २ शिपर्सको वेचाजाता है यह फर्म अच्छा काम कररही है।

कलकत्ता—मेसर्स स्वयम्बर सिंह हरिशंकर सिंह T. A. Ranaoudh १९३ हरिसनरोड यहां गल्ले का व्यापार होता है।

कलकत्ता—स्वयम्बरसिंह हरिशङ्करसिंह स्ट्रैण्ड बैंक रोड—यहां फर्मका गोदाम है।

मेसर्स शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस ३० बड़तल्ला स्ट्रीट कलकत्तामें हैं। यह फर्म कई मिलोंकी मैनेजिङ्ग एजंट हैं। एवं बनारस तथा संयुक्त प्रातके कितने ही स्थानोंपर इस फर्मकी गद्दियां हैं। इस फर्मपर बैङ्किग, मिल एजंसी एवं गल्लेका व्यवसाय होता है। इसके व्यवसायका पूरा परिचय चित्र सहित इस ग्रन्थके "मिल ओनर्स" विभागमें दिया गया है।

मेसर्स शिवरामदास रामनिरंजनदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ रामनिरञ्जनदासजी तथा आपके पुत्र हैं। इस फर्मपर बैंकिंग, वगैरहके व्यापारके साथ २ गल्लेका व्यापार भी होता है। इसका आफिस कॉटन स्ट्रीटमें है। आपका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके बैंकर्स विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल घनश्यामदास

इस फर्मके संचालक बाबू घनश्यामदासजी हैं। इसका आफिस ९५ लोअर चितपुर रोडमें है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है। इस फर्मका तारका पता Peda है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें तेलके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हरिचन्द गोपीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू हरिवक्सजी भगत हैं। इसका आफिस २६ बड़तल्ला

स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है। १५ हालसी बागानमें इस फर्मका एक तेलका मिल चलता है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें तेलके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स हासम एण्ड कासम अय्यूब

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ हासम अय्यूब और आपके भाई सेठ कासम अय्यूब है। इस फर्मका आफिस १२ अमरतल्ला स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म गल्ले और किरानेका बहुत बड़ा व्यापार करती है। यहां तारका पता "Kassam" है। इसकी बहुतसी शाखाएं हैं। इसका हेड आफिस बम्बईमें है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें किरानेके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स श्रीकृष्णदास कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी एवम बाबू जगन्नाथजी हैं। इसका आफिस २२८ हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म जूट और गल्लेका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित जूटके व्यापारियोंमें दिया गयाहै।

चीनी

चीनी बहुतही आवश्यक वस्तु है। भारतमे इसका व्यापार बहुत पुराना है। ईस्ट इण्डिया कम्पनीने भी इसके व्यापारसे बहुत लाभ उठाया है। कम्पनीने कुछ समय तक बंगालकी चीनीके निर्यातको खूब बढ़ाया पर कुछ समय बादही उसने 'क्यूबा' की ईखको अधिक प्रोत्साहन देना आरम्भ किया और बङ्गालकी चीनीपर विलायती बन्दरोंमें टैक्स लगा दिया गया। धीरे धीरे स्वयं विलायतमें ही कितने ऐसे कारखाने खुले जहां चीनी साफ की जाने लगी। इसलिये खांड़की मांग बढ़ी और मद्रासकी सफेद खांड़का निर्यात बहुत बढ़ गया। इसके बाद ही विलायती पद्धतिके अनुसार खांड़ साफ करनेके कारखाने भारतमें खोले गये। इसी समयसे मोरिशस और जावामें ईखकी खेती जोर पकड़ने लगी। अतः इन स्थानोंको बनी खांड़ बाहर जाने लगी। इसी बीच जर्मनी और आस्ट्रियाने चुकन्दर (बीटरुट Beet root) से चीनी तैयार करना आरम्भकर दिया और अपनी २ सरकारकी आर्थिक सहायतासे भारतमें सस्ते भावपर ये देश चीनी बेचने लगे। जिससे भारतमें पुराने ढर्रेसे तैयार होनेवाली चीनीके उद्योगका अन्त हो गया। उधर सरकारी सहायताके रुक जानेसे जहां चुकन्दरकी चीनी भारत आना बन्द हुई वहां जावा और मोरीशसकी चीनी भारतके बाजारमे

आ डटी। फलस्वरूप आज जावाकी चीनीही भारतमें प्रधानरूपसे मिलती है। जापानकी चीनीकी आमद भी बढ़ती जा रही है। यहांके चीनीके इम्पोर्टरोंका परिचय इस प्रकार है।

चीनीके व्यापारी

मेसर्स जी० डी० लोयलका

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० घनश्यामदासजी लोयलका है। इस फर्मका आफिस २ रायल एक्सचेंज प्लेसमें है। यहां यह फर्म और २ व्यापारोंके साथ चीनीका भी इम्पोर्ट करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें शेयर के व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स चन्दनमल सिरेमल

इस फर्मका हेड आफिस अजमेरमें हैं। इसके प्रधान संचालक रायबहादुर बिरदमलजी लोढ़ा हैं। यहां इसका आफिस १७८ हरिसन रोडमें हैं। यहां और २ व्यापारोंके साथ चीनीका इम्पोर्ट भी होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागमें अजमेरके अन्तर्गत दिया गया है।

मेसर्स जीतमल विसेसरप्रसाद

इस फर्मका हेड आफिस १०५ ओल्ड चीना बाजारमें है। वहां यह फर्म चावल और चीनीका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके वर्तमान संचालक बा० विसेसरप्रसादजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय मेनमर्चेण्ट्समें दिया जा चुका है।

मेसर्स तुलसीदास किशनदयाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० किशनदयालजी हैं। इसका आफिस २१ कैनिंग स्ट्रीटमें हैं। यहां बैंकिंग, बोरा आदि व्यापारके साथ चीनीका भी बहुत बड़ा व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें हैसियन और गनीके व्यापारियोंमें दिया है। यहांकी फर्मका काम लाला-गिरधारीलालजी देखते हैं।

मेसर्स तुलसीदास मेघराज

इस फर्मके मालिक पंजाबी सज्जन हैं। इसका आफिस २१ कैनिंग स्ट्रीटमें है। इसका विशेप परिचय इसी ग्रन्थमे हैसियन और गनीके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म चीनीका इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स द्वारकादास केदारबक्ष

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (जयपुर) के निवासी है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके भगत सज्जन हैं। संवत् १९३३ में इस फर्मके स्थापक सेठ हरदेवदासजी व्यापारके लिये कलकत्ता आये। यहां प्रारम्भसे आपने दलालीका कार्य किया। खासकर आप किराना तथा गल्लाकी दला-लीका कार्य करते थे। आपके तीन पुत्र हुए। श्री द्वारकादासजी, रामकुमारजी, और केदारबक्षजी। आपका देहावसान संवत १९६३ मे हुआ। आपकी फर्म यहांके चीनीके व्यवसायियोंमें अच्छी मानी जाती है। यह फर्म सन् १९०० से मेसर्स रायली ब्रदर्सके शुगर डिपार्टमेंटकी बेनियन और ब्रोकर तथा सन् १९२६ से उसके व्हीट डिपार्टमेंटकी भी ब्रोकर है। साथ ही सन् १९१८ से शा वालेस कम्पनीकी भी यह फर्म बेनियन है। शक्करके व्यापरके लिये इस फर्मने दुनियांके कई हिस्सोंमें अपनी शाखाएं स्थापित की थी। भारतमें जावा शक्करका इम्पोर्ट करनेवाली यह पहली फर्म कही जाती है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक, बा० रामकुमारजी, केदारबक्षजी, एवम स्व० द्वारकादासजी के पुत्र बाबू जगन्नाथजी, गोविन्दरामजी आदि हैं। आप सब लोग व्यापारमें सहयोग लेते हैं। आपकी फर्मकी ओरसे टाटा नगरके पास कृषिका कार्य भी होता है।

वर्तमानमें इस फर्मपर नीचे लिखा व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स द्वारकादास केदारबक्ष ५ चीनीपट्टी—यहा हे० आ० है। शक्करका इम्पोर्ट ही इसका प्रधान काम है। यहां लोहा गल्ला आदिका भी काम होता है।

करांची—गोविन्दराम मुरलीधर सराइ रोड—यहा शक्करका थोक व्यापार होता है।

सोराबाया (जावा) द्वारकादास केदारबक्ष—यहां शक्करका एक्सपोर्ट होता है।

मेसर्स बिडला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मका हेड आफिस ८ रायल एक्सचेंजप्लेसमें है। इस फर्मपर मिल आनर्स, जूट, गनी, ग्रेन एण्ड शीड्स आदिका एक्सपोर्ट और चीनी वगैरःके इम्पोर्टका व्यापार होता है। इस फर्मका

विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पिलानी नामक स्थानमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स सरुपचंद हुकुमचन्द एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक इन्दौरके प्रसिद्ध सर सेठ हुकुम चंदजीकेटी, और राय बहादुर सेठ हरिकृष्णदासजीका कुटुम्ब है। इस फर्मका विशेप परिचय इसी ग्रन्थमें मिल मालिकोंमें दिया गया है। इसका आफिस ३० क्लाईव स्ट्रीटमें है। यहा यह फर्म और व्यापारोंके साथ चीनीके इम्पोर्टका काम भी करती है।

मेसर्स सदासुख गम्भीरचन्द

इस फर्मके वर्तमान प्रधान संचालक बा० मगनमलजी कोठारी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें दिया गया है। यहां इसका आफिस मूंगापट्टी, क्रास स्ट्रीटमें है। यहा यह फर्म बेंकिंग व्यापारके साथ २ चीनीका भी इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स सुंदरमल परशुराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० परशुरामजी तथा गोविन्दरामजी हैं। इसका विशेप परिचय कपड़ेके व्यापारियोंमें दिया गया है। इसका आफिस चीनीपट्टीमें है। यहां यह फर्म चीनीका व्यापार और इम्पोर्ट करती है।

मेसर्स हरिबगस दुर्गाप्रसाद

इस फर्मका आफिस ६१ क्रास स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म कपड़े एवम चीनीका इम्पोर्ट और चपड़े वगैरहका एक्सपोर्ट करती है। इसके प्रधान संचालक बाबू गोवर्द्धनदासजी सराफ हैं। आपका विशेप परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके मंडावा नामक स्थानमें दिया गया है।

बा० रामविलासजी सांगानेरिया
(चेतराम रामविलास)

स्व० बा० रामकिशनदासजी सांगानेरिया
(चेतराम रामविलास)

बा० मुरलीधरजी सांगानेरिया
(चेतराम रामविलास)
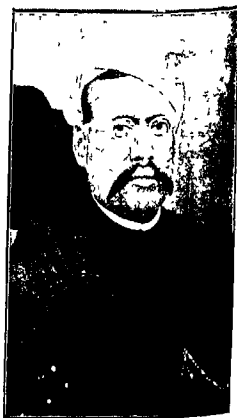
बा० जयदयालजी सांगानेरिया
(चेतराम रामविलास)

मेसर्स चेतराम रामविलास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सागानेरिया सज्जन हैं। इस फर्मके पूर्व पुरुष बाबू चेतरामजी थे, जो संवत् १९०१ मे देशसे कलकत्ता आये। कलकत्ता आने वाले मारवाड़ी सज्जनोंमें आप बहुत प्रथम थे। आरंभमें यहां आकर आपने किरानेकी दलालीका काम आरंभ किया, तथा आपका यह काम बराबर तरक्की पाता गया, थोड़े ही समयमें आप किरानेके सफल दलाल माने जाने लगे। बादमें आपने अपना निजका व्यवसाय स्थापित किया, तथा उसे अच्छी उन्नति दी। आपका शरीरान्त संवत् १९५७ में हो गया।

बाबू चेतरामजीके पश्चात् उनके पुत्र बाबू रामविलाजी हुए, बाबू रामविलासजीके ३ पुत्र हुए जिनमेंसे बड़े बाबू रामकिशन दासजीका स्वर्गवास संवत् १९७८ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामविलासजीके पुत्र बा० मुरलीधरजी एवं बा० जयदयालजी तथा सेठ रामकिशनदासजीके पुत्र बा० प्यारेलालजी हैं।

बाबू रामविलासजी बड़े गौभक्त सज्जन थे, आपकी गौभक्तिके विशेष प्रेमके कारण आपके द्वारा लक्ष्मणगढ़में गौशालाका स्थापन हुआ था।

सेठ मुरलीधरजीके पुत्र बाबू चिरंजीलालजी एवं केशवदेवजी शिक्षित सज्जन हैं तथा फर्मके काममें बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं। आपकी फर्म कलकत्तेके प्रतिष्ठित किरानेके व्यवसायियों में समझी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

(१) कलकत्ता—मेसर्स चेतराम रामविलास ३३ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. jeeragum है यहां हेड आफिस है तथा किरानेका व्यापार और जूटके बेलिंग शीपिंगका काम होता है।

(२) कलकत्ता—मेसर्स चेतराम रामविलास १० पोर्तुगीज चर्च स्ट्रीट T. A. Chiranjiw यहां पेम्फर डिपार्टमेण्ट है। और खासकर चाय, गोलमिर्च, छोटी इलायची, हल्दी आदिका थोक व्यापार होता है।

(३) कठियार—कठियार राइस एण्ड ऑइल मिल कम्पनी T. A. Chiranjiw—यहां राइस और ऑइल मिल है।

मेसर्स जानकीदास शिवनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान काजड़ा (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके काजड़िया सज्जन हैं। करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ रामदयालजी, चुन्नीलालजी तथा सेठ जानकीदासजी यहां आये। आप लोगोंने यहां आकर शुरु २ में किरानेकी दलालीका कार्य प्रारम्भ किया। आपके तीन भाई और थे, जिनके नाम क्रमशः पन्नालालजी, शिवनारायणजी तथा जगन्नाथजी थे। आप लोग ७ वर्षके पश्चात् कलकत्ता व्यापारके लिये आये। आप छहो भाई करीब १० वर्ष तक किरानेका दलाली कार्य करते रहे। पश्चात् सब भाइयोंके सामेमें जानकीदास शिवनारायणके नामसे फर्म स्थापित की। किरानेके व्यापारमें इस फर्मने बहुत उन्नति की। आज यह फर्म कलकत्तेके किरानेके व्यवसायियोंमें अच्छा स्थान रखती है। इस फर्मके स्थापकोंमेंसे सेठ रामदयालजी, सेठ चुन्नीलालजी, सेठ पन्नालालजी तथा सेठ शिवनारायणजीका देहावसान हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ जानकीदासजी, जगन्नाथजी, सूरजमलजी, दिलसुख रायजी, खूबचन्दजी, रामगोपालजी, मोतीलालजी और खूबकरणजी हैं। आप सब लोग व्यापारमें सहयोग देते हैं। तथा अपने व्यापारको व्यवस्थित रूपसे संचालित करते हैं। बाबू रामगोपालजी किराना एसोसियेशनके आ० सेक्रेटरी तथा मारवाड़ी एसोसियेशन और श्रीविशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालयके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स जानकीदास शिवनारायण T. A. Kajarewala,—इस फर्मका यहां हेड आफिस है। यहां किराना, विलायती कपड़ा तथा हार्डवेअरका इम्पोर्ट बिजिनेस और बिक्रीका काम होता है।

कलकत्ता—जानकीदास जगन्नाथ ३२ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Spic-, T. No 1381 B B—इस फर्म पर सिंगापुर तथा पिनांगसे किरानेका इम्पोर्ट होता तथा बिक्रीका व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—कन्हैयालाल जुहारमल २८ अमरतल्ला स्ट्रीट T. A. cheerful—इस स्थान पर किराने का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स दिलसुखराय खूबचंद २६ अमरतल्ला स्ट्रीट T. A. silverl3af, T. No 706 B.B—यहां पर भी किरानेकी बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स रामेश्वरदास राधाकृष्ण एण्ड को०

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) है। आप वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बा० मदनलालजीने करीब २० वर्ष पूर्व किया। यह फर्म करीब ५०, ६० वर्षोसे बरेलीमें अपना व्यवसाय कर रही है। कुछ समयसे आपने कत्थेके व्यापारकी ओर ध्यान दिया और इस व्यापारको आपने बहुत अधिक बढ़ाया। आज भारतवर्षमें कत्थाका व्यापार करनेवाली बड़ी २ फर्मोंमें इसकी गिनती है। बा० मदनलालजी शिक्षित व्यक्ति हैं। आपके बड़े भाई रामेश्वरदासजीका स्वर्गवास संवत् १६५६ में हो गया।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामेश्वरदास राधाकृष्ण २१ बड़तल्ला T No 3133 B. B.—यहां कत्थेका थोक व्यापार होता है।

बरेली—रामेश्वरदास राधाकृष्ण—यहां यू० पी० के जंगलोंसे कत्था तैयार करवा कर बिक्री होता है।

बा० मदनलालजीके भाईका स्वर्गवास अभी कुछ समय पूर्व हो गया। आप भिवानीके सार्वजनिक कार्योंमें बहुत भाग लिया करते थे।

मेसर्स सूरजमल बदरीदास

इस फर्मके मालिक सरदार शहरके निवासी चौधरी गोत्रके अग्रवाल सज्जन हैं। इस फर्मके मालिक पार्टनरशिपमें सं० १९६८ तक लालचन्द कनीरामके नामसे और १९७७ तक कनीराम शिवनारायणके नामसे कारबार करते रहे। संवत् १९७७ से सेठ रामपतदासजी के पुत्र सूरजमलजी एवं बदरीदासजी अपना स्वतन्त्र व्यापार करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ सूरजमलजी एवं बदरीदासजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र हरमुखरायजी एवं टोरमलजी तथा बदरीदासजीके पुत्र रतनलालजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता-मेसर्स सूरजमल बदरीदास १९२ क्रास स्ट्रीट-यहा कपड़ेका इम्पोर्ट तथा किराना और चलानीका काम होता है।

दौलतखाम-(बेरीसाल) सूरजमल बदरीदास-यहां इस फर्म पर सुपारीका बहुत बड़ा काम होता है। सुपारी यहासे खरीद कर दूसरे स्थानों पर चलान की जाती है।

भोला (बेरीसाल)—हरमुखराय रतनलाल—सुपारीका व्यापार तथा सराफी लेन देन होता है

मेसर्स हासम एण्ड कासम अय्यूब

इस फर्मके मालिकोंका खास वतन बांसवड़ (काठियावाड़) है। इस फर्मके मालिक सेठ हासम अय्यूब और आपके भाई, सेठ कासम अय्यूब हैं। इसके खास मालिक सेठ हासम अय्यूब साहब कलकत्ते रहते हैं। आपकी फर्म हिन्दुस्तानके बड़े २ शहरों और बाहरके मुल्कोंमें बहुत बड़ी तिजारत करती है। यह फर्म सभी जगह इज्जतकी निगाहोंसे देखी जाती है। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, सिंगापुर, पेनाङ्ग, रंगून, वगैरः से चावल, गल्ला, किराना और दूसरी चीजोंके एक्सपोर्ट और इम्पोर्टकी यह फर्म बहुत बड़ी तिजारत करती है। अय्यूब सेठके जमानेसे ही करीब ५० सालके अरसेसे इस फर्मपर किरानेकी तिजारत होती आई है। कोचीन और गुन्तूरमें इसकी खुदकी आइल और राइसकी मिलें हैं। कई पीढ़ियोंसे इस फर्मके मालिक तिजारत करते आ रहे हैं।

तिजारतको तरक्की दे कामयाबी हासिल करनेके साथ साथ शवाबके कामोंकी तरफ भी इसके मालिकोंने काबिलेतारीफ तवज्जो दी है। इसके हरदिल अजीज मालिकोंकी तरफसे बांसवड काठियावाड़में सब कौमोंके लिये अय्यूबिया फ्री डिस्पेन्सरी चल रही है। इसके अलावा आपने पब्लिकके लिये कुतुब खानये महम्मद अली नामकी एक लायब्रेरी भी खोल रक्खी हैं। मुसलमान भाइयोंके लिए आपकी तरफसे पोरइब्राहिमिया मदरसा भी चल रहा है। इसी तरह लुनीदा स्टेशनपर आपकी तरफसे एक धर्मशाला है जहा आमतौरपर सभी कौमोंके लोगोंकी अच्छी तादादमें आमदरफ्त रहती है।

आपकी फर्मका तिजारती बयान नीचे लिखे ढंगपर है।

मेसर्स हासम एण्ड कासम अय्यूब

हेड आफिस—(१) बम्बई—खांडाबजार माडवी T. A. kassam.

(२) बांसावड़—काठियाबाड़ T. A. kassam.

बांचेज—(हिन्दुस्तान)

आरा—T. A. kassam.—यहां गल्लेकी तिजारत होती हैं।

गोरखपुर— " " " "

कानपुर—T. A. Kassam—यहा गल्लेकी खरीदीका काम होता है।

दालपट्टी— " " " " " "

आगरा—T. A. Kassam.—यहा जीरा और सरसों वगैरः की खरीदीका काम होता है।

भटिण्डा—T. A. kassam.—यहां चना और गल्लेकी तिजारतका काम होता है।

वादा—T. A. kassam—यहा गल्लेकी तिजारत होती है।

कलकत्ता—१२ अमरतल्लास्ट्रीट T. A. kassam T. No. 2763 B.B., 416 Hawrh—यहां किराना, गल्ला, सिंगापुरी सुपारी और चावलकी बहुत बड़ी तिजारत होती है।

कटक—T. A. kassam—यहां खरीद फरोख्तका काम होता है। इसके अलावा यहां वर्मा शेल आइल स्टोरेज एण्ड डिस्ट्रीब्यूटिङ्ग कं० इण्डिया लि०की तेलकी ऐजेन्सी और कुन्दनमोहन-की सोडेकी ऐजेन्सी है। तथा बहुत बड़ी मिकदारमें किराने और गल्लेका काम होता है।

विजयनगरम्—यहां गल्ले और किरानेकी खरीदीका काम होता है।

सालूर—यहां भी खरीदीका काम होता है।

पार्वतीपुरम—गुंजाह, सरसों, बदाम, वगैरः की खरीदी होती है

कोकोनारा—(मद्रास)—चावलकी खरीदी, और गल्ले व किरानेका बहुत बड़ा काम होता है।

गुन्टूर—यहां आपकी एक राइस मिल और चीनाबादामकी आइल मिल है। तथा किराना और अनाजका व्यापार होता है।

बेजवाड़ा (मद्रास)—यहां मूंग, चावल, वगैरः की खरीदी और गल्लेकी बिक्रीका काम होता है।

मद्रास—T A. kassam ६।१,० अण्डरसन लेन—यहां एक्सपोर्ट इम्पोर्टका काम और बहुत बड़ी घरू तिजारत होती है।

कोयम्बटूर—यहां व्यापार तथा खरीदीका काम होता है।

कोचीन—यहां कोकोनट आइल मिल है। और तेल तथा चावलका काम होता है।

रामपुर [C. P.)—किराना, कपड़ा, गल्ला वगैरःका काम होता है।

बम्बई—यहां हेड आफिस है।

करांची रैंमपर्ट रो—यहां एक्सपोर्टका काम होता है।

चटगांव—यहां घरु व्यापार और खरीद फरोख्तका काम होता है।

अकयाब [बर्मा]—यहांसे राइस धानका एक्सपोर्ट होता है।

रंगून—६५ मोगल स्ट्रीट—यहां चावलकी बहुत बड़ी खरीदी होती है।

बैङ्काक [मलाया स्टेट]—यहां कलकत्ता, मद्रास और कोचीनसे चावलका इम्पोर्ट होता है।

सिंगापुर—T. A. ranakkal ८६ राबिनसन रोड—यहांसे सुपारी, सावूदाना, कत्था वगैरः खरीद कर कलकत्ता, और दूसरी ब्रांचेजपर भेजा जाता है। तथा किराना और गल्लेका व्यापार होता है।

सेगून [चीन]—चावल व धानका एक्सपोर्ट निजकी ब्रांचेजपर होता है।

पिनाङ्ग—T.A. Hassam kassam ११८ किङ्गस स्ट्रीट—यहांसे सुपारी और सावूदाना खरीदकर सभी ब्रांचोंको भेजा जाता है।

गल्लेके व्यापारी

श्रीयुत अनुचितलाल जगन्नाथ प्रसाद
२१२, दरमाहट्टा स्ट्रीट।
अमरचन्द्र माधोजी एण्ड कम्पनी
६, आगा करबल्ला स्ट्रीट
ईश्वरदास कन्हैयालाल
८।१, रूपचन्द राय स्ट्रीट
उमरसी मोहनजी १५, मल्लिक स्ट्रीट
उगरमल हजारीमल ५१।५२ बड़तल्ला स्ट्रीट
कृपाराम खुसीराम २६।१ आरमेनियन स्ट्रीट
कन्हैयालाल बृद्धिचन्द २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट
कृष्णकुमार जटीभूषण ३० बड़तल्ला स्ट्रीट
कनीराम हजारीमल ४६ स्ट्राण्ड रोड
कालूराम किशनदयाल २०८ सुतापट्टी
कालीचरण रामचन्द्र ६ बेहरापट्टी
खेमसीदास खेतसीदास १७८ हरिसन रोड
गोरखराम जानकीदास १९८ सुतापट्टी
गोपीराम रामचन्द्र २६३ अरमेनियन स्ट्रीट
गुटीराम डेडराज २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
गुरमुखराय बासुदेव १७४ हरिसन रोड
गुरुमुखराय मदनगोपाल ४६ स्ट्राण्ड रोड
गंगाधर जोहारमल २०१ हरिसन रोड
गणेशदास राधाकिशन १० श्यामागली
गंगाधर रामचन्द्र ४०२ अपरचितपुर रोड
गणेशदास भैरोंदान १६० सूतापट्टी
गुलराज विशेश्वरलाल १८० हरिसन रोड
गुलराज शिवदयाल ३६ कुलफीघाट
गणपतराय रामकुमार ७२ तुलापट्टी
चुन्नीलाल लूटरमल ३ दहीहट्टा स्ट्रीट
चुन्नीलाल किशनलाल १३१ काटन स्ट्रीट
चतुर्भुज बनारसीदास २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
जयदयाल मदनगोपाल १८ मल्लिक स्ट्रीट
ज्वालाप्रसाद जगदम्बाप्रसाद ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
युगलकिशोर रामवल्लभ १७८ हरिसन रोड
जीतमल कल्लूमल १०५ ओल्ड चीनाबाजार स्ट्रीट
जीवनराम जोहारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट
जीवनराम गोविन्दराम २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
जयनारायण रामचन्द १८ मल्लिक स्ट्रीट
जानकीदास शिवनारायण ४८ मुर्गीहट्टा स्ट्रीट
तेजपाल जमुनादास १९२ सुतापट्टी
तेजपाल ब्रह्मादत्त ६७ बड़तल्ला स्ट्रीट
तुलसीदास किशुनदयाल १ काशीनाथ मल्लिक लेन
तुलसीदास राजमल २० बड़तल्ला स्ट्रीट
दुर्गाप्रसाद हरिशंकर २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
दौलतराम रावतमल १७८ हरिसन रोड
दलसुखराय सागरमल १४५ काटन स्ट्रीट
दौलतराम कन्हैयालाल (रायबहादुर)
४२।१ स्ट्राण्ड रोड
देवकरणदास घासीराम ४६ स्ट्राण्ड रोड
धनराज सागरमल ९४ लोअर चितपुर रोड
नथमल श्रीनिवास १७३ हरिसन रोड
नौरंगराय मूंगालाल २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
नोपचन्द मंगनीराम २६ गोयनका लेन ढाकापट्टी
नागरमल जयदयाल ६७।३८ कुलफी घाट
९४ लोअर चितपुर रोड
नरसिंघदास पन्नालाल ५ नारायण प्रसाद लेन
नयनसुखदास मिर्जामल ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
नरसिंघदास गौरीशंकर २१४ सुतापट्टी
नरसिंघदास मोतीलाल ५ सी मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
प्रयागशाह साहेबराम १३ दहीहट्टा स्ट्रीट
पोकरमल फूलचन्द २०१ हरिसन रोड
पृथ्वीराज गणेशदास २६।४ अरमेनियन स्ट्रीट
फूलचन्द केदारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट
फूलचन्द पदमराज ६ बेहरापट्टी

बिड़ला ब्रदर्स ८ रॉयल एक्सचेंज प्लेस
बंशीधर दुर्गादत्त २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
बैजनाथ रामकुमार ७ नारायणप्रसाद लेन
वासुदेवप्रसाद विन्देश्वरीप्रसाद १२।१ कारफरमा लेन
बाबूलाल बनारसीलाल ४ जगमोहन मल्लिक लेन
वजीरीमल न्यादरमल ६ बेहरापट्टी
बीजराज जोरावरमल २ राजाउडमण्ड स्ट्रीट
बलदेवदास बैजनाथ १८० हरिसन रोड
बैजनाथ कालुराम ७ बैसाख लेन
बैजनाथ जुगलकिशोर २६।३ अरमेनियन स्ट्रीट
बंशीशाह रामगुलामगम १३ दहिहट्टा स्ट्रीट
बृजलाल एण्ड कम्पनी २२ बड़तल्ला स्ट्रीट
त्रिशुनदयाल बैजनाथ ४६ स्ट्राण्ड रोड
विलासराय चौधरी १६६ सुतापट्टी
विलासराय मंगलचन्द १३७ काटन स्ट्रीट
बंशीधर दानमल १४६ काटन स्ट्रीट
बालमुकुन्द मुरारीलाल ७६ काटन स्ट्रीट
बैजनाथ बालमुकुन्द १६८ सुतापट्टी
विशेश्वरलाल हीरालाल ७६ काटन स्ट्रीट
बसन्तलाल घनश्यामदास ८५ रूपचन्ददत्त स्ट्रीट
विशेशरदास छोटेलाल ६ बासतल्ला स्ट्रीट
बद्रीदास चुन्नीलाल ४ नारायणप्रसाद लेन
भगवानदास मदनलाल २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
भवानीदास रामगोविन्द ३ जगमोहन मल्लिक लेन
भगवानदास हनुमानबक्स ४ बेहरापट्टी
भगतराम शिवप्रताप २६।३ अरमेनियन स्ट्रीट
भोलाराम कुन्दनमल १३७ तुलापट्टी
भोलानाथ भगवानदास ८ मल्लिक स्ट्रीट
मटरूमल राधाकिशन १३२ तुलापट्टी
मगनीराम चिम्मनराम ३ बेहरापट्टी
मामराज रामभगत ७ नारायण प्रसाद बा० लेन
महादयाल प्रेमचन्द ८८ बड़तल्ला स्ट्रीट
मन्नालाल गोपालदास १३७ काटन स्ट्रीट
मोहनलाल मदनलाल १८० सुतापट्टी

मगनीराम केदारनाथ १३२ काटन स्ट्रीट
मंगलचन्द जीवनराम १८० हरिसन रोड
मातादीन भगवानदास ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
माधोलाल धार्सी ५ अमरतल्ला स्ट्रीट
मोतीलाल भीखमचन्द ४६ स्ट्राण्ड रोड
रामदत्त गंगाबक्स १८ मल्लिक स्ट्रीट
रामेश्वरलाल दुर्गादत्त २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
रामप्रताप ब्रजमोहन २० दरमाहट्टा स्ट्रीट
राजेन्द्रप्रसाद गुजेश्वरीप्रसाद १८७ दरमाहटा स्ट्रीट
रामचन्द्र श्रीनिवास २६ बड़तल्ला स्ट्रीट
रामप्रताप नोमानी ५० तुलापट्टी
रामजीदास बंशीलाल ७५ तुलापट्टी
रामेश्वरलाल द्वारकादास ४ नारायणप्रसाद लेन
रामचन्द सूर्य्यमल १३२ तुलापट्टी
रामदास महादेवप्रसाद ३६ काटन स्ट्रीट
रामचन्द्र छोटालाल ४७ खङ्गरापट्टी
रामदास गोवर्धनदास २० दरमाहट्टा स्ट्रीट
रामदेव बद्रीदास १५ भवानीदत्त लेन
रामनारायण जयलाल ७६ तुलापट्टी
रामरिखदास पुरुषोत्तमदास ३।६ मैंगो
राधाकृष्ण वेणीप्रसाद १० काटन स्ट्रीट
रामगोपाल लक्ष्मीनारायण २३ बड़तल्ला स्ट्रीट
रामेश्वरलाल सूर्य्यमल ४०२ अपरचितपुर रोड
लालचन्द मदनगोपाल ७ नारायणप्रसाद लेन
लक्ष्मीनारायण कम्पनी १४६ तुलापट्टी
शिवनारायण केशवदेव १६८ सोनापट्टी
शंकरदास जमुनादास २०।२१ बड़तल्ला स्ट्रीट
शिवरामदास रामनिरंजनदास १३६ काटन स्ट्रीट
शिवटहलराम हरिहरप्रसाद २ दहिहट्टा स्ट्रीट
श्रीकृष्णदास शम्भुराम ७० तुलापट्टी
श्रीकृष्णदास कन्हैयालाल २२८ हरिसन रोड

शिवनारायण गोपीराम ६।१ रामकुमार रक्षित लेन
शिवप्रसाद विशेश्वरलाल ७१ वड़तल्ला स्ट्रीट
श्रीनिवास रामचन्द्र ४ नारायणप्रसाद लेन
शेखताजुब जलालुद्दीन ५० वांसतल्ला स्ट्रीट
शिवदयाल जालान १४६ काटन स्ट्रीट
श्रीराम बधुलाल ३ बेहरापट्टी
शालिग्राम शामदास ६ मल्लिक स्ट्रीट
शीतलप्रसाद खड्गप्रसाद ३० वड़तल्ला स्ट्रीट
शुकदेवदास गोवर्द्धनदास १३७ काटन स्ट्रीट
शिवबक्सराय राधाकिशन ७४ बड़तल्ला स्ट्रीट
शिवचन्द्रराय नवरंगराय १३१ बड़तल्ला स्ट्रीट
स्वयम्बरसिंह हरिशंकरसिंह १६३ हरिसन रोड
सादीराम गंगाप्रसाद २१ वड़तल्ला स्ट्रीट
सेढ़मल डालमिया ६६ तुलापट्टी
सेवाराम रामरिखदास ४०२, अपरचितपुर रोड
सूर्य्यमल घनश्यामदास ६५ लोअरचितपुर रोड
सदाराम पुरणचन्द ४२ अरमेनियन स्ट्रीट
स्वारथराम रामसरनराम ४०२ अपरचितपुर रोड
सूरजमल गौरीदत्त ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
हजारीमल लालचन्द ३१ मल्लिक स्ट्रीट
हरनन्दराय लालचन्द ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट
हरसुखराय दुलीचन्द ७१ वड़तल्ला स्ट्रीट
हरगोविन्दराय मदनलाल २०१ हरिसन रोड
हरिबक्स गोपीराम २६ बड़तल्ला स्ट्रीट

चीनीके इम्पोर्टर्स

अब्दुल रहीम मुसलमान जकरिया स्ट्रीट
अंडर सेट नाइट
ई० डी० सासून
काली चरण रामचन्द्र
केगवान कम्पनी
गिलैण्डर अर्बुथ नाट
जी० डी० लोयलका एण्डको० १८ मल्लिक स्ट्रीट
चन्दनमल सिरेमल १७८ हरिसन रोड
डेविड सासून
तुलसीदास किशनदयाल २१, कैनिंग स्ट्रीट
तुलसीदास मेघराज
द्वारकादास केदारबक्ष ४ चीनी पट्टी
परसराम पीरुमल चीनी पट्टी
फारब्रिस फारब्रिस केम्बल एण्ड को०
वालकट ब्रादर्स
वालिगराम किशनचंद
बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड
वाकुंड कम्पनी
मित सूई मुसान
रायली ब्रादर्स
लूस ड्रापिस
शा वालेस कम्पनी
हाजी शुकर गनी कैनिंग स्टीट
सेंडा कम्पनी
सेवाराम रामरिख सूतापट्टी
सुन्दरमल परशुराम
सदासुख गम्भीरचन्द
स्वरूपचंद हुकुमचन्द एण्डको०
हरिबगस दुर्गाप्रसाद

कमीशन एजेण्ट्स

Commission Agents.

मेसर्स किशनलाल हेमराज

इस फर्मका हेड आफिस डिबरूगढ़ (आसाम) में हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १६।१।१ हरिसन रोडमें है। इसका तारका पता Sidhadata है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १७।२१ में दिया गया है।

मेसर्स कोडामल रामवल्लभ

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स रामवल्लभ मोहनलालके नामसे धूब्रीमें है। यहां इसका आफिस नं० ४६ स्ट्रांड रोडमें है। यह फर्म यहा जूट, कपड़ा एवम आढ़तका व्यापार करती है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ४६में दिया गया है।

मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचंद

इस फर्मके मालिक फतेपुर [सीकर] निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके जैनधर्मावलम्बी सज्जन हैं। लगभग ६० वर्ष पूर्व सेठ कन्हैयालालजीने देशसे कलकत्ते आकर इस फर्मकी स्थापना की। आप और आपके भाई सेठ बिरदीचन्दजीने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। सेठ कन्हैयालालजीका स्वर्गवास सं० १९६४ मे हुआ। वर्तमानमें फर्मके मालिक सेठ बिरदीचन्दजी और स्व० सेठ कन्हैयालालजीके पुत्र बजरंगलालजी हैं। सेठ बिरदीचन्दजीके एक पुत्र है जिनका नाम बाबू लादूरामजी है। आप लोग सार्वजनिक कार्य्योंमें भी भाग लेते हैं। फतेपुरमें आपकी ओरसे श्रीशिवनारायण विशुद्ध आयुर्वेदिक दातव्य औषधालय चल रहा है। कलकत्तेमें भी एक दिगम्बर जैन मंदिर आपने बनवाया है। आपकी ओरसे मन्दारगिरि और सफेद शिखरपर बनी हुई धर्मशालाओंमें क्वार्टर्स बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल बिरदीचन्द T. A. Rosy T. No 3285 Cal. राजा वुडमण्ड स्ट्रीट—यह हेड आफिस है। कपड़ेका, इम्पोर्ट गल्लाका व्यापार तथा बैंकिङ्ग काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल २ राजा वुडमण्ड स्ट्रीट—यहा गल्ला और कपड़ेकी कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

दरभङ्गा—मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल—यहा गल्लाका व्यापार होता है।

निर्मली [भागलपुर]—मेसर्स बजरंगलाल लादूराम—यहा गल्लाका व्यापार है।
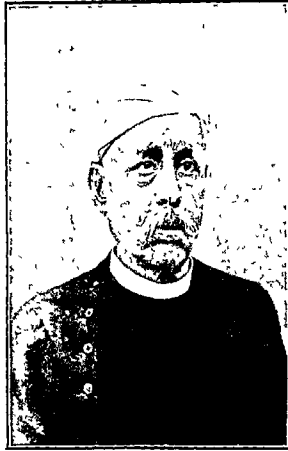
बा० बिरदीचन्दजी जैन (कन्हैयालाल बिरदीचन्द)

बा० बजरंगलालजी जैन (कन्हैयालाल बिरदीचन्द)

बा० लादूरामजी जैन (कन्हैयालाल बिरदीचन्द)

श्रीकन्हैयालालजी पटवारी (कन्हैयालाल शिवदत्तराय)

श्रीजगन्नाथजी पटवारी (कन्हैयालाल शिवदत्तराय)
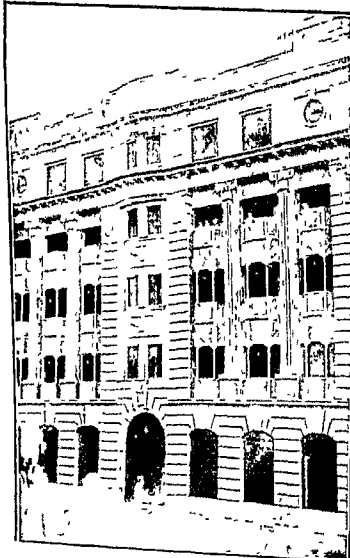
जयनगर [दरभङ्गा]—मेसर्स बजरंगलाल लादूराम—यहां गल्लाका व्यापार है

जनकपुर—मेसर्स बजरंगलाल लादूराम—यहां गल्लाका व्यापार है।

मेसर्स कन्हैयालाल शिवदत्तराय

इस फर्मके मालिकोंका खास निवासस्थान नेचवा [सीकर] जयपुर स्टेटमें है। आप अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ४० वर्ष पूर्व सेठ कन्हैयालालजीके हाथोंसे हुआ था तथा वर्तमानमें इस फर्मके मालिक आपही हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मके व्यवसायकी विशेष उन्नति हुई। नेचवेमें आपकी ओरसे एक कुआं और एक धर्मशाला बनाई गई है, वहीं एक पाठशाला भी चल रही है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स कन्हैयालाल शिवदत्तराय १६।१।१ हरीसन रोड—यहां आढ़त, सराफी लेनदेन तथा कुस्टेका व्यवसाय होता है।

गोलाघाट [आसाम] सनेहीराम रामनाथ - यहां आपका एक चायका बगीचा है तथा सराफी लेन देन और दुकानदारीका काम होता है।

सालमार—सनेहीराम रामनाथ—यहां दुकानदारीका काम होता है।

चोमानी [त्रिपुरा] कन्हैयालाल शिवदत्तराय—दुकानदारीका काम होता है। तथा सुपारीका व्यापार होता है।

चांदपुर [बंगाल] कन्हैयालाल शिवदत्तराय— " " " "

पटना [बिहार] मेसर्स सनेहीराम कन्हैयालाल—आढ़तका काम होता है।

पटना [बिहार] जगन्नाथ नेमीचन्द मारुफगंज—दुकानदारीका काम होता है।

दानापुर—मेसर्स जगन्नाथ रामनाथ—आढ़तका काम होता है।

अकलपुर [बोगड़ा] जगन्नाथ जीवनराम—आढ़तका काम होता है।

इसके अतिरिक्त कसरपुर तथा पदुआ [जिला पटना] में गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स खेतसीदास रामलाल

इस फर्मका हेड अफिस ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहा गल्ले और कपड़ेकी चलानीका काम होता है। इसका हेड आफिस दार्जिलिंगमें है। विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० १६ में दिया गया है।

मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुख

इस फर्मके मालिक बेरी [जयपुर] के निवासी हैं। आप सरावगी वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ गणेशलालजी तथा आपके पुत्र बाबू प्रेमसुखजी हैं। इसका कलकत्तेमें स्थापन करीब ११ वर्ष पूर्व सेठ गणेशलालजी द्वारा हुआ था। आपकी फर्मका विशेष परिचय मनीपुर आसाम-विभागमें दिया गया है। यहांका कारबार इस प्रकार है—

कलकत्ता—गणेशलाल प्रेमसुख ४६ स्ट्राडरोड—यहां सराफी तथा कपड़ा और किरानेकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गंगाधर खूबचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान दयालपुरा [जोधपुर स्टेट] है। आप अग्रवाल समाजके सराफ सज्जन हैं। इस फर्मका कारबार करीब ६० वर्ष पहिले सेठ गंगाधरजीने स्थापित किया था, आरंभसेही यह फर्म कमीशन एवं चलानीका काम करती आ रही है। सेठ गंगाधरजीका स्वर्गवास संवत् १९८४ के आषाढ़ मासमें ८० वर्षकी अवस्थामें हो गया है। आपके बड़े पुत्र सेठ खूबचन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९८५ के श्रावण मासमें ५८ वर्षकी अवस्थामें हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमेंसे सेठ गंगाधरजीके पुत्र बा० शिवलालजी, बा० भगवतीलालजी, बाबू रामेश्वरलालजी एवं बाबू सागरमलजी विद्यमान हैं। सेठ खूबचन्दजीके हाथोंसे इस फर्मके कारबारको अच्छी तरक्की मिली। आपलोगोंकी ओरसे दयालपुरामें एक धर्मशाला एवं छत्री बनी हुई है। इसके अलावा आपकी एक पाठशाला भी चल रही है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—[१] मेसर्स गंगाधर खूबचन्द १६।१।१ हरिसन रोड—यहां चलानीका काम तथा सराफी लेनदेन होता है।

[२] शिवलाल अमरचंद १६।१।१ हरीसन रोड—कपड़ा जूट तथा कमीशनका काम होता है।

जयपुर [बोगरा]—मेसर्स जैसराज शिवलाल—यहां आपका एक दुर्गा राइस एण्ड ऑइल मिल है।

नवाकुंची [रंगपुर] भगवतीलाल गणपतराय—यहां कूचविहारकी जमीदारी तथा लेनदेनका काम होता है। जमीदारीमें बाबू भगवतीलालजी सराफका नाम पड़ता है।

यालपुरा [डीडवाणा] रामप्रताप रामदेव—यहां खास निवास और मकानात हैं।

बा० शिवलालजी सराफ (गंगाधर खूबचन्द)
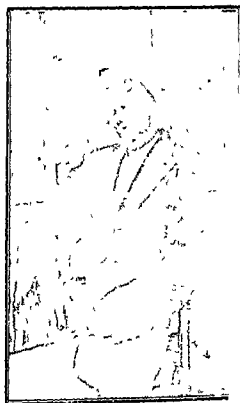
बा० प्रभूलालजी (कालूराम मंगलचन्द)

बा० [illegible]

बा० रामेश्वरदासजी सराफ (गंगाधर खूबचन्द

मेसर्स गिरधारीलाल चण्डीप्रसाद

इस फर्मके मालिक स्व० बाबू गिरधारीलालजीके पुत्र चंडीप्रसादजी एवं देवीप्रसादजी हैं। आप फतहपुर [शेखावाटी] निवासी अग्रवाल जैनसमाजके सज्जन हैं। बाबू गिरधारीलालजीने ३० वर्ष पूर्व अपनी फर्म मुंगेरमें स्थापित की थी। वहां आपका कपड़ेका व्यापार होता था आपका स्वर्गवास ८ वर्ष पूर्व हो चुका है।

इस फर्मका स्थापन करीब ६।७ वर्ष पूर्व बाबू चण्डीप्रसादजीने कलकत्तेमें किया, आप शिक्षित सज्जन हैं आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गिरधारीलाल चण्डीप्रसाद १६।१।१ हरीसन रोड - यहां आढ़त तथा सराफी लेन देनका काम होता है।

मेसर्स गणपतराय लक्ष्मीनारायण

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स रामरिछपाल गणपतरायके नामसे सैदपुर (बंगाल) में है। यहां इसका आफिस नं० ५ नारायणप्रसाद बाबू लेनमें है। तारका पता है "Durga"। यहां यह फर्म कपड़ा व जूटकी आढ़तका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास बिलासीराम

इस फर्मका हेड आफिस तेजपुर (आसाम) है। इसके वर्तमान संचालक रामकुमारजी, रामप्रतापजी, और बिलासरायजी तथा आपके पुत्र हैं। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १३ में दिया गया है। यहां यह फर्म १९८ क्रास स्ट्रीटमें .कमीशन एजंसीका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास जगन्नाथ

इस फर्मके वर्तमान मालिक सागरमलजी हैं। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ७६ में दिया गया है। यहा यह फर्म १७१ हरिसन रोडमें चलानीका काम करती है।

मेसर्स गणेशदास बालचन्द

इस फर्मका हेड आफिस शिलांगमें है। वहां यह फर्म आलू एवं घीका बहुत बड़ा व्यापार करती है। यहां इसका आफिस १७८ हरिसन रोडमें है। जहा यह फर्म कमीशन एजंसीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० ४ में दिया गया है।

मेसर्स गुलराज रामविलास

इस फर्मके मालिक बाबू गुलराजजी लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल जैन समाजके सज्जन हैं। इसका कलकत्ता आफिस १६१।१ हरिसन रोडपर है यहां कमीशन एजंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट ८० में दिया गया है।

मेसर्स गुलराज बिसेसरलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० गुलराजजी चौधरी हैं। इसका विशेष परिचय राजशाहीमें दियागया है। यहा यह फर्म १८० हरिसन रोडमें आढ़तका काम करती है।

मेसर्स गुरुसुखराय राधाकृष्णजालान

इस फर्मका हेड आफिस पटनामें है। यहांका आफिस १६१।१ हरिसन रोडमें है। इसके वर्तमान मालिक राय बहादुर राधाकृष्णजी जालान हैं। यहा इस फर्मपर कमीशन एजंसीका व्यापार होता है। यहां तारका पता "Jalan" है। इस फर्मका विशेष परिचय बिहार विभागके पेज नं० १० में दिया गया है।

मेसर्स गुलाबचंद सरदामल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सुरंगमलजी सुराना और आपके पुत्र हैं। इसका हेड आफिस सिलहटमें है। विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० ४२ में दिया गया है। यहांपर यह फर्म ६५।३ पाचागलीमें चांदी, सोना, कपड़ा आदिकी चलानीका काम करती है।

मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय

इसके मालिक चूरू (बीकानेर स्टेट) के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य समाजके बुधिया सज्जन है। यहां इस फर्मका आफिस १७८ हरिसन रोडपर हैं। जहा बैंकिंग और कमीशन ऐजन्सीका काम होता है इसफर्मके विशेप परिचयके लिये इस ग्रन्थके बिहार विभागमें पृष्ट १०३ पर देखिये।

मेसर्स चुन्नीलाल गोवर्धनदास

इस फर्मका हेड आफिस नजीरा (आसाम) में है। वहां यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० ४८ में दिया गया है। यहां इसकी दुकान १६२ क्रास स्ट्रीटमें है। जिसका तारका पता है "Geodhan"। यहां चलानीका काम होता है

मेसर्स चुन्नीलाल किशनगोपाल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स कुशलचंद चुन्नीलालके नामसे दिनाजपुरमें है। यहां यह फर्म आढ़तका काम करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ३४ में दिया गया है।

मेसर्स चुन्नीलाल मंगतमल

इस फर्मके स्थापक स्वर्गीय गोवर्धनदासजी सिंचेती सरदार शहर निवासी थे। आप करीब ५० वर्षतक मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुरके यहां प्रधान मुनीमातका काम करते रहे। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मका काम आपके पुत्र बा॰ चुन्नीलालजी देखते हैं। गोवर्धन-दासजीके एक भाई मंगतमलजी और है। इस फर्ममें बड़ऊ (जयपुर) निवासी महादेवजी अग्रवाल वर्किंग पार्टनर हैं। तथा आपही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल मंगतमल ५।१ लुम्सलेन T. A. Sancheti—यहां जूट तथा आढ़त-का काम होता है।

इसके अतिरिक्त तेजपुर जिलेमें ढेकियाजूली, डिबरूदुरंग, चोपाई, पचनाई, सिराजुली इत्यादि स्थानोंपर भी जूट और कमीशन एजंन्सीका काम होता है

मेसर्स चौथमल जयचन्दलाल

इस फर्मका हेड आफिस १० आर्मेनियन स्ट्रीटमें मेसर्स गिरधारीमल रामलाल गोठीके नामसे है। उपरोक्त नामसे इस फर्मपर कमीशन एजंसीका काम होता है। इसका भी आफिस १० आर्मेनिय स्ट्रीटमें ही है। विशेष परिचय जूट बेलर्समें दिया गया है।

मेसर्स चिमनीराम जसवंतमल वैद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लाडनू (जोधपुर) है। आप ओसवाल वैश्य

जातिके वेद सज्जन हैं। आपका हे० आ० कूचविहार है। वहां करीब १०० वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ जालिमसिंहजीने की थी। आपके पुत्र सेठ हुकुमचन्दजी बड़े व्यापार दक्ष एवम मेधावी सज्जन थे। आपके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९'४ में हुआ। आपके पश्चात इस फर्मका संचालन सेठ चिमनीरामजीने किया। आपके समयमें भी इसकी बहुत तरक्की हुई। आप कूचविहार की कौंन्सिलके मेम्बर थे। उस समय आपका बहुत नाम था। आपका स्वर्गवास १९६६ में हुआ। आपने अपनी जमींदारी की भी बहुत उन्नति की। आपके ही समयमें आजसे करीब ५० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें इस फर्मकी स्थापना हुई। आपके २ पुत्र हुए सेठ मोतीलालजी और सेठ जसवंतमलजी। आप दोनोंही का छोटी वयमें स्वर्गवास हो गया। पश्चात सेठ चिमनीरामजीने पूनाचन्दजीको दत्तक लिया बा० पूनमचन्दजी का भी संवत् १९७३ में स्वर्गवास हो गया। आपके भी कोई संतान न थी। अतएव गिरधारीमलजी दत्तक आये। वर्तमानमें आपही इस फर्मके संचालक हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कुचविहार—मेसर्स जालिमसिंह हुकुमचन्द—यहां जमींदारी, बैंकिंग, तथा जूटका व्यापार होता है।

दीनहट्टा—मेसर्स हुकुमचन्द चिमनीराम—यहां जूट, गल्ला, बैंकिंग, तमाखू, सोना, चांदी आदि सभी का व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चिमनीराम जसवंतमल १६ बोना फिल्ड लेन—यहां बैंकिंग, कमीशन एजंसी एवम गोदाम आदिके भाड़ेका काम होता है।

जटेसर—(जलपाईगोड़ी) सेठ चिमनीराम वेद —यहां जमींदारी बैंकिंग तथा गल्लेका काम होता है।

मेसर्स छोटूलाल शोभाचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनू है। आप ओसवाल वैश्य जातिके भूतोड़िया सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। पहले इस फर्मपर छोटूलाल हरकचन्द नाम पड़ता था। संवत् १९६८ में इस फर्मका नाम मेसर्स छोटूलाल शोभाचन्द हुआ। इसकी स्थापना सेठ छोटूलालजीके पुत्र हरकचन्दजीने की थी। आपके समयमें इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९६१ मे हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक शोभाचन्दजी हैं। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः बा० जैचन्दलालजी, काली प्रसन्नजी, मदनलालजी तथा चन्दनमलजी हैं।

स्व० बा० पूनमचन्दजी वेद (चिमनीराम जसवन्तमल)

बा० रामकिशनदासजी गाड़ोदिया (जीवराज रामकिशनदा

बा० गिरधारीमलजी वेद (चिमनीराम जसवंतमल)

बा० लक्ष्मीनारायणजी (उदाराम लक्ष्मीनारायण

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स छोटूलाल शोभाचन्द १६।११ हरिसन रोड—यहां बैंकिंग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण गोवर्द्धनदास

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स जयनारायण सनेही रामके नामसे गौहाटीमें है। यहां इसका आफिस ९४ लोअर चितपुर रोडमें है। प्रधान रूपसे यहां चलानीका काम होता है। इस फर्मका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० ८ में दिया गया है।

मेसर्स जिन्दाराय हरविलास

इस फर्मके मालिक मलसीसर (जयपुर स्टेट) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस १३२ काटन स्ट्रीट में है जहांका तारका पता Homerule है। यहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ठ ३१ में दिया गया है।

मेसर्स जादोंराम भानामल

इस फर्मके मालिक दिल्ली निवासी खण्डेलवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक लाला बनवारी लालजी हैं। इसका हेड आफिस पटना है। यहां इसका आफिस ६४ लोअर चितपुर रोड पर है और तारका पता Lohia है। यहां यह फर्म बैंकिंग और कमीशन एजन्टका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय हमारे ग्रन्थके इसी भागके बिहार विभागमें पृष्ट २० पर देखिये।

मेसर्स जीतनराम निर्मलराम

इस फर्मके मालिक गयाके रहनेवाले है। आपलोग माहुरी वश्य समाजके सज्जन हैं। इसका कलकत्ता आफिस २६ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है जहांका तारका पता "Tributary" है। यहां यह फर्म कमीशन ऐजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पेज ८२ पर दिया गया है।

मेसर्स जुहारमल परशुराम

इस फर्मके मालिक बाबू बुद्धमलजी और आपके भतीजे बाबू बृजलालजी हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस ४ बेहरा पट्टीमें है जहां कमीशन एजंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट ४२ पर देखिये।

मेसर्स जेठमल भोजराज

इस फर्मका हेड आफिस दार्जिलिंगमें है। इसके वर्तमान संचालक बाबू लक्ष्मीनारायणजी हैं। यहां यह फर्म ४ दही हट्टामें घरू दुकानोंपर माल भेजनेका काम करती है। इसके अतिरिक्त यहां बड़ी इलायचीका भी व्यापार होता है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं०१८ में दिया गया है।

मेसर्स जीवराज रामकिशनदास गाड़ोदिया

इस फर्मके मालिक श्रीयुत मोतीलालजी एवम् अर्जुनलालजी हैं। आपका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४१ में दिया गया है। यहां यह फर्म २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें चलानीका काम करती है। इसका तारका पता "Gadodiya है"।

मेसर्स जीवराज रामप्रताप

इस फर्मके वर्तमान मालिक रामप्रतापजी हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १४१ में दिया गया है। यहा २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें यह फर्म चलानीका काम करती है। इसका तारका पता Pratap है।

राय बहादुर जेसाराम हीरानंद

इस फर्मके मालिक पंजाबी भाटिया समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस देहरा इस्माइलखां है, वहा लम्बे अरसेसे व्यापार हो रहा है। तथा वहाके व्यापारियोंमे यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ नंदूलालजीके पुत्र राय बहादुर सेठ जेसारामजी तथा सेठ प्यारेलालजीके पुत्र बा० ठाकुरदासजी, बा० तेजभानजी, बा० फतेचन्दजी, बा० हीरानन्दजी,

हैं। बाबू जैसारामजीको २ वर्ष पूर्व गव्हर्नमेंटकी ओरसे राय बहादुरकी पदवी प्राप्त हुई है। आपकी ओरसे देशमें कन्या विद्यालय तथा विद्यार्थियोंके लिये शिक्षाका प्रबंध है।

इस फर्मकी कलकत्ता ब्रांचका स्थापन १७ वर्ष पूर्व हुआ था। आपकी फर्म कलकत्तेके व्यापारियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

देहरा इस्माइलखां—मेसर्स नंदूराम प्यारेलाल T. A. "Krishna"—यहां हेड आफिस है तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

कलकत्ता—रा०ब० जेसाराम हीरानंद १६० सूतापट्टी फोन नं० १५८७ B.B—यहां बैंकिंग आढ़त व गल्लेकी बेचवालीका व्यापार और चलानीका काम होता है।

करांची - रा० ब० जेसाराम ठाकुरदास Rajkumar—बैङ्किग व आढ़तका काम होता है।

अमृतसर - रा० ब० जेसाराम हीरानन्द मजीठमंडी " "

उकाड़ा—(पंजाब) राय बहादुर जेसाराम हीरानन्द—बैङ्किग व आढ़तका काम होता है। T.A. Bhatia

---

मेसर्स तोलाराम नाथूराम

इस फर्मके मालिक चूरूके रहनेवाले अग्रवाल वैश्य हैं। इसके वर्तमान मालिक बाबू शालिग्रामजी हैं। यहां यह फर्म बैंकिंग और कमीशन एजेन्टका काम करती है। इसकी गद्दी १८० हरिसन रोडपर है जहां तारका पता Neatatuna है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ट ६६ पर दिया गया है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक जसरापुर (खेतड़ी) के निवासी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके दारुका सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस दरभङ्गा है। यहां इस फर्मका आफिस ६ बेहरा पट्टीमें है जहांका तारका पता Thanmal है। यहां यह फर्म कमीशन एजेन्टका काम करती है। इसके विशेष परिचयके लिये इसी भागमें विहार विभागके पृष्ट ४३ को देखिये।

मेसर्स दुर्गादत्त हरिबक्ष

इस फर्मका हेड आफिस डिबरूगढ़में है। यहां इसका आफिस १६।१ हरिसन रोडमें है।

इस फर्मपर यहां चलानीका व्यापार होता है। विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १८ में दिया गया है। इसके वर्तमान संचालक बाबू आसारामजी हैं।

मेसर्स देवकरणदास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मोतीलालजी हैं। आप इस समय नाबालिक हैं। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १२६ में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और आढ़तका काम करती है। इसका आफिस १३७ काटन स्ट्रीटमें है।

मेसर्स दानूलाल जीवनमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास रोनाली (शेखावाटी—जयपुर स्टेट) है। आप छावड़ खंडेलवाल जैन समाजके सज्जन है। यह फर्म छोगालाल दानूलालके नामसे कई एक वर्षोंसे सराफी तथा कपड़ेका कारबार करती है। कलकत्तेमें २ वर्ष पूर्वसे सेठ जीवनमलने अपनी आढ़तकी ब्राच स्थापित की। वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें बाबू छोगालालजी, बाबू दानूलालजी तथा बाबू जीवनमलजी हैं। आप सब सज्जन महानुभाव हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—छोगालाल दानूलाल रमना रोड—सराफी तथा कपड़ेका व्यापार तथा कमीशनका कारबार है।

कलकत्ता—दानूलाल जीवनमल १६१ हरिसन रोड—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम तथा बैंकिंग व्यापार होता है।

मेसर्स धरमचन्द डेढराज

इस फर्मका हेड आफिस डोमार (बंगाल) है। यहां इसका आफिस १७२ क्रास स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० २९ में दिया गया है। यहां यह फर्म चलानी का काम करती है।

मेसर्स नारायणदास उदयचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान छापर (बीकानेर) का है। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मको स्थापित हुए १४ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ

नारायणदासजी थे। आपका स्वर्गवास होगया। आप उदार एवं व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपके भाई उदयचन्दजीका भी स्वर्गवास हो गया। सेठ नारायणदासजीके ४ पुत्र एवं उदयचन्दजीके २ पुत्र विद्यमान हैं। आप लोगही इस समय इस फर्मके संचालक हैं। आपके नाम इस प्रकार है। सेठ नारायणदासजीके पुत्र बा० जोधराजजी, मोतीरामजी, रामचन्दजी और चतुरभुजजी तथा उदयचन्दजीके पुत्रोंके नाम लुणकरनजी तथा चुन्नीलाल जी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स नारायणदास उदयचन्द ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट T.No 1392—यहां कपड़े, तमाकू तथा जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स नेमीचंद जेठमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लांडनू है। आप ओसवाल वैश्य जातिके भूतोड़िया सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका स्थापन हुए करीब ३० वर्ष हुए। यहां इसकी स्थापना जेठमल-जीके द्वारा हुई। आप बड़े योग्य सज्जन हैं।

इस समय इसके मालिक जेठमलजी तथा आपके भाई आसाकरणजी हैं। सेठ जेठमल-जीके २ पुत्र हैं। श्रीयुत पूरनचंदजी तथा हुलासमलजी और आसकरणजीके पुत्रका नाम हणुतमलजी हैं। श्रीयुत पूरणचंदजी उत्साही नवयुवक है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स नेमचंद जेठमल १६१ हरिसन रोड—इस फर्मपर बैंङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

बावरा (जलपाई) मेसर्स जेठमल पूनमचंद—यहां आपकी जमींदारी है। तथा जूट, बैंङ्किग तथा कमीशन एजंसी और तमाकूका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त बर्द्धमान जिलेमें आसकरणजीके नामसे और भी जमींदारी है।

मेसर्स नथमल श्रीनिवास

इस फर्मके मालिक राय साहब नथमलजी हैं। आप सुरजगढ़ समीपके लोटिया नामक स्थानके रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपकी फर्म कलकत्तेमें कमीशन एजंटका काम करती है। इसका आफिस १७३ हरिसन रोड पर है। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके इसी भागमें बिहार विभागके पृष्ट ४२ पर दिया गया है।

मेसर्स नथमल सुमेरमल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स कालूराम नथमलके नामसे जलपाई गोड़ीमें है। यहां इसका आफिस १७७ हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म कपड़ा एवं कमीशन एजंसीका काम करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ६ में दिया गया है।

मेसर्स नारमल शिवबक्ष

इस फर्मका हेड आफिस बाकुड़ामें है। यहां इसका आफिस १७४ हरिसन रोडमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ९२ में दिया गया है। यहा यह फर्म आढ़तका काम करती है।

मेसर्स नीकाराम परमानंद

इस फर्मके संचालक पंजाबी सज्जन है। इसका विशेष परिचय बम्बई विभागमें इसी ग्रंथमें दिया गया है। यहा इस फर्मपर आढ़तका काम होता है। यहाका पता १५६ हरिसन रोड है।

मेसर्स पालीराम किशनलाल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ (बीकानेर) के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। ४०।४५ वर्ष पूर्व सेठ रामकरणदासजीने कलकत्ते आकर इस फर्मकी स्थापना की। इस फर्मपर आरम्भसे ही कपड़ेकी बिक्री और आढ़तका काम होता आया है। इसकी उन्नति प्रधानतया सेठ रामकरणदासजीके भाई सेठ पालीरामजीके हाथोंसे हुई। आप व्यापारदक्ष और बुद्धिमान थे। सेठ रामकरणदासजीका स्वर्गवास सं० १९५६ और सेठ पालीरामजीका सं० १९६८ में हुआ। सेठ पालीरामजीके बाद आपके छोटे भाई सेठ विसेश्वरलालजीने व्यापारके कार्यको सम्हाला। इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ रामकरणदासजीके पुत्र बाबू बेगराजजी, स्व० सेठ पालीरामजीके पुत्र बाबू किशनलालजी तथा सेठ विसेश्वरलालजी हैं।

कलकत्तेके कपड़ेके कमीशन एजेन्टोंमे यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपके द्वारा कपड़ेकी चलानी बंगाल, आसाम, और बिहारके सभी व्यापारिक केन्द्रोंको होती है। सभी स्थानोंपर आपके अढ़तिये हैं।

इस फर्मके मालिक दान, धर्म और सार्वजनिक कार्योंमें योग देते रहते हैं। राजगढ़ और

भिवानीके बीच लसेड़ी ग्राममें आपकी ओरसे धर्मशाला, कुआं और कुण्ड बने हुए हैं। इसी प्रकार मानभूमि जिलेमें भी आपने कुएं आदि बनवाये हैं। पुरुलियामें एक पुस्तकालय भी स्थापित किया है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता मेसर्स पालीराम किशनलाल १७८ हरीसन रोड—यहां हेड आफिस है। यहां विलायती कपड़ा, चीनी, नमक, सोना, चांदी आदिकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

पुरुलिया—(मानभूमि)—मेसर्स वेगराज किशनलाल—यहां मालिक लोग रहते हैं। यहां बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है।

झालदा—(मानभूमि) मेसर्स विशेशरलाल गुलाबराय—यहां बैंकिङ्ग और कपड़ेका काम होता है।

झरिया—यहां आपकी वेस्ट गोलकंडी कालेरीके नामसे कोयलेकी एक खान है।

मेसर्स पन्नालाल वख्तावरमल

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुरमें है। यहां इसकी गद्दी ४६ स्ट्रांड रोडमें है। यहां यह फर्म चलानी एवम् पाटकी आढ़तका काम करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ४१ में दिया गया है।

मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कालिमपोंगमें है। यहां इसका आफिस ३० काटन स्ट्रीटमें है। तारका पता "Anlasta" है। यहां चलानीका काम होता है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों-सहित बंगाल विभागके पेज नं० १८ मे दिया गया है।

मेसर्स प्रयागदास मदनगोपाल

वर्तमानमे इस फर्मके संचालक श्री कृष्णगोपालजी, चम्पालालजी और शिवकिशनदासजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३२ में दिया गया है। यहां यह फर्म ८५ मनोहरदास स्ट्रीटमें आढ़तका काम करती है। इसका तारका पता है Pokharpotha।

मेसर्स बलदेवदास बिसेसरलाल

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स बिसेसरलाल बद्रीप्रसादके नामसे रानीगंजमें हैं। यहां

इसका आफिस ७१ बड़तल्ला स्ट्रीटमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८५ में दिया गया है। यहां यह फर्म चलानी और बैंकिंगका काम करती है।

मेसर्स बनवारीलाल पांजा

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० शतीन्द्रनाथ, प्रफुल्लकुमार, और राधेश्याम पांजा हैं। इसका हेड आफिस वर्द्धमानमें है। यहां इसका आफिस २६ धर्महट्टा स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म कमीशन और नमक, चीनी, खली आदिका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८१ में दिया गया है।

मेसर्स बस्तीराम द्वारकादास

इस फर्मका आफीस P 14 सेन्ट्रल एवन्यूमे है। इसकी मालिक मेसर्स जयदयाल कसेरा कम्पनी है। यह फर्म कपड़ा तथा शक्करकी आढ़तका व्यापार करती है। विस्तृत परिचय जूट वेलर्सके परिचयमें दिया गया है।

मेसर्स बीजराज हरिकृष्ण

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन है। यहां इस फर्मका आफिस ३२ आर्मेनियन स्ट्रीटमे है जहाका तारका पता Gopalninas है। यहा यह फर्म कमीशन एजेन्सीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय विहार विभागके पृष्ठ ५१ पर दिया गया है।

मेसर्स किशनदयाल बैजनाथ

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके झूंझनूवाल सज्जन हैं। इसके वर्तमान मालिक बाबू बैजनाथ जी हैं। यहा इस फर्मका आफिस ७१ बड़तल्ला स्ट्रीटमे है और तारका पता Palandewi है। यहा यह फर्म कमीशन एजेन्सीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय इसी भागके विहार विभागमें पेज १२ पर दिया गया है।

मेसर्स बैतरणीदास महादेव

इस फर्मके वर्तमान संचालक बैतरणीमलजी तथा महादेवलालजी हैं। इसका विशेष परिचय

बङ्गाल विभागके पेज नं० ५८ में दिया गया है। यहां यह फर्म २०१ हरिसन रोडमें कपड़ा एवम आढ़तका काम करती है।

मेसर्स महादेवलाल नथमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामरिखदासजी हिम्मतसिंहका, बाबू हनुमानदासजी, बाबू प्रभूदयालजी हिम्मतसिंहका बाबू केदारनाथजी, बाबू रामकुंवारजी, बा० रामजीवनजी तथा द्वारकादासजी हिम्मतसिंहका है। श्रीरामरिखदासजीके २ पुत्र हैं। बाबू द्वारकादासजी, सेठ महादेवलालजीके पुत्र हैं।

इस फर्मके मालिकोंकी कलकत्तेके अग्रवाल समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है। बाबू प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका मारवाड़ी समाजके उच्च दर्जेके शिक्षित एवं उत्साही कार्यकर्ता है। सार्वजनिक जीवनमें आपका त्याग और उत्साह स्तुत्य है

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दुमका (संथाल परगना) (१) मेसर्स रामरिखदास महादेवलाल—यहां हेड आफिस हैं तथा गल्ला और किरानेका व्यापार होता है।

(२) महादेवलाल नथमल—यहाँ कपड़ा सूत व चांदी सोनेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—महादेवलाल नथमल जोड़ा कोठी १३६ कॉटन स्ट्रीट To No 206 B.B.—यहां आढ़त क काम होता है। इस फर्मका स्थापन बाबू महादेवलालजीके हाथोंसे ६ वर्ष पूर्व हुआ था।

बैजनाथधाम—महादेवलाल केदारनाथ—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

शिवरी (वीरभूम) रामजीदास महादेवलाल—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

गोहाटी—केदारनाथ हिम्मतसिंहका—यहां लकड़ीका अच्छा व्यापार होता है यहां आप रेलवेको लकड़ी सप्लाई करनेका काम करते हैं।

दुमका—एक्सप्रेस आर्डर सर्विस लिमिटेड—यहां मोटर सर्विसका काम तथा पेट्रोलका व्यापार होता है

मेसर्स मांगीलाल मोहनलाल

इस फर्मके दो पार्टनर है बाबू मांगीलालजी सरावगी, तथा मोहनलालजी अगरवाला। आप दोनों सज्जन कुचामन (मारवाड़) के निवासी हैं। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू भारमलजी, मांगीलालजी तथा मगनमलजी, घासीरामजी, कालूरामजी, मोहनलालजी, मोटूलालजी, दौलतरामजी

देवीप्रसादजी, गुलाबचंदजी और सांवलरामजी हैं। इन सब सज्जनोंमें फर्मके प्रधान कार्यकर्ता बाबू मगनमलजी एवं कालूरामजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है ।

कलकत्ता—मेसर्स मागीलाल मोहनलाल १६१।१ हरिसन रोड—यहां कमीशनका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स छगनलाल गौरीशंकर पारखकोठी—यहां धोई धोतीका व्यापार होता है।

कुचामन—(१) राधाकिशन हरसुखदास (२) भोरूबख्श मांगीलाल—गल्ले और किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स मुल्तानमल चौथमल

इस फर्मके मालिक छापर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जातिके तेरापंथी सज्जन हैं। इसकी स्थापना मुल्तानमलजी तथा चौथमलजी दोनों भाईयोंके हाथोंसे हुई। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आप दोनोंका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ चौथमलजीके पुत्र बा० पृथ्वीराजजी, बिरदीचंदजी, और कुन्दनमलजी हैं। आप सज्जन एवम मिलनसार व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स मुल्तानमल चौथमल ६५।३ पांचागली—यहा कमीशन एजंसीका काम होता है।

पानबाजार (बंगाल) चौथमल तखतमल—यहा गल्लेका व्यापार होता है।

कुर्इमारी —मेसर्स कुन्दनमल डालचंद ”

डीडसनजर—मेसर्स तखतमल पिरथीराज ”

श्यामपुर—मेसर्स बिरदीचंद मन्नालाल ”

मोनट भंजन—मेसर्स तखतमल पिरथीराज—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स महादेवदास मोतीलाल

इस फर्मके मालिक फतेहपुर (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सरावगी सज्जन हैं। यहा यह फर्म बैंकिंग तथा कमीशन ऐजेन्टका काम करती है। इसका आफिस १८० हरिसन रोडपर है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट १०० पर दिया गया है।

मेसर्स मगनीराम फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू फूलचन्दजी एवम आपके पुत्र हैं। इसका हेड आफिस डिबरूगढ़में है। यहां इसका आफिस १८२ क्रास स्ट्रीटमें है। तारका पता है "cawpea"। यहां सराफी तथा चालानीका काम होता है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित आसाम विभागके पेज नं० १६ में दिया गया है।

मेसर्स मंगलचन्द आनंदमल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मंगलचन्दजी हैं। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १२१ में दिया गया है। यहां यह फर्म ५० क्लाइव स्ट्रीटमें मूंगा, बैंकिंग और आढ़तका काम करती है।

मेसर्स मिर्जामल हरनारायण

इस फर्मके मालिक चूरू के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य समाजके सिंघाणिया सज्जन हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १८० हरिसन रोडपर हैं जहां बैंकिंग और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट १०० पर दिया गया है।

मेसर्स मेघराज रामचंद्र

इस फर्मके मालिक नोहर (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय चाचान सज्जन हैं। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस १३२ काटन स्ट्रीटमें है। जहांका तारका पता Noria है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग और कमीशन ऐजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ट ३० पर दिया है।

मेसर्स मोहनलाल शिवलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० लोकरामजी, परशुरामजी और पुरुषोत्तमलालजी हैं। इसका हेड आफिस दार्जिलिंगमें है। यहां इसका पता ४२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहा यह फर्म चलानी और आढ़तका काम करती है।

मेसर्स रामलाल शिवलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान रेवासा (जयपुर) में है। आप सरावगी दि० जैन समाजके खंडेलवाल सज्जन है। इस फर्मके स्थापक सेठ रामलालजी और उनके छोटे भ्राता सेठ शिवलालजी संवत् १९३० के करीब देशसे आये। एवं संवत् १९३९ में आपने कलकत्तेमें इस फर्मका स्थापन किया। आरंभसेही यह फर्म इसी नामसे कमीशनका व्यापार करती आ रही है। सेठ रामलालजीका स्वर्गवास संवत् १९४९ में तथा सेठ शिवलालजीका शरीरावसान संवत् १९७७ में हुआ। सेठ रामलालजीके पश्चात् सेठ शिवलालजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारकी अच्छी तरक्की हुई। सेठ शिवलालजीके पश्चात् रामरतनजीके पुत्र बाबू रिखबचन्दजीने भी फर्मके व्यवसायका अच्छा संचालन किया। सेठ रामलालजीके पुत्र नाथूलालजीका स्वर्गवास संवत् १९७१ में तथा बाबू रिखब चन्दजीका संवत् १९८१ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ शिवलालजीके पुत्र बाबू लादूरामजी तथा स्व० रिखबचन्दजीके पुत्र बाबू कालूरामजी एवं स्वर्गीय सेठ नाथूलालजीके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप सब समझदार सज्जन हैं। इस परिवारको संवत् १९८० में खंडेला दरबारने पैरोंमें सोनेका कड़ा बख्शा! सीकर दरबारमें इस कुटुम्बका अच्छा सम्मान है।

इस कुटुम्बकी ओरसे संवत् १९५० में रेवासामें मंदिरकी बिम्ब प्रतिष्ठा बहुत अच्छी लागतसे की गई थी, वहा शहरके बाहर एक सुन्दर नशियां भी आपकी ओरसे बनी हुई है। यहां आपने ३५० वर्षके एक पुराने जैन मंदिरके बाहर १ भवन बनाया है। इसके अतिरिक्त रेवासामें आपकी ओरसे छावड़ा दिगम्बर जैन औषधालय तथा छावड़ा दिगम्बर जैन विद्यालय चल रहा है। सीकरमें आपका एक सुन्दर कटला बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामलाल शिवलाल १६।१।१ हरीसन रोड T. A. Digamber T. No 2254 B. B.—यहा हेड आफिस है। तथा आढत और सराफी लेनदेनका काम होता है।

घोगड़ा—[१] रिखबचन्द नाथूलाल [२] लादूलाल जमनालाल—यहां कपड़ा तथा गल्लेका व्यापार होता है।

सीकर—[१] रिखबचन्द कालूराम [२] शिवलाल लादूलाल—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रतीराम तनसुखदास

इस फर्मका हेड आफिस जलपाई गोड़ीमें है। यहा इसका आफिस २४ आर्मेनियन

बा० पालीरामजी (पालीराम किशनलाल)
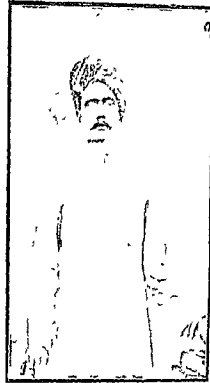
बा० लादूलालजी छावड़ा (रामलाल शिवलाल)

बा० किशनलालजी (पालीराम किशनलाल)

बा० कालूरामजी छावड़ा (रामलाल शिवलाल)

स्ट्रीटमें है। यह फर्म सब प्रकारकी चलानीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० १२ में दिया गया है।

मेसर्स रघुनाथराय रामबिलास

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ [राजपूताना] के रहनेवाले अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस १६२ सूतापट्टीमें हैं जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ट ५२ पर दिया गया है।

मेसर्स रामजसराय अर्जुनदास

इस फर्मके मालिक फतहपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस ३ बेहरा पट्टीमें है जहांका तारका पता Arjundas है। यहां बम्बईकी मिलोंकी एजंसी और कमीशन ऐजेन्टका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ५१ में दिया गया है।

मेसर्स रामकिशनदास चण्डीप्रसाद

इस फर्मके मालिक राय बहादुर सेठ देवीप्रसादजी हैं जो इस समय रिटायर्ड होकर शान्ति लाभ करते हैं। आप लोग मंडावा (राजपूताना) के रहने वाले हैं। इसका हेड आफिस भागलपुरमें है। यहां इस फर्मका आफिस १३६ काटन स्ट्रीटमें है जहांका तारका पता Dhandhania है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग और कमीशन ऐजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ट ६४ पर देखिये।

मेसर्स रामसनेहीराम बोहितराम

इस फर्मके मालिक मलसीसर [जयपुर स्टेट] के रहने वाले अग्रवाल समाजके झूंझनूवाला सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस ४०१।७ A अपर चितपुर रोड पर है जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ठ ६८ पर दिया गया है।

मेसर्स रामनारायण सागरमल

इस फर्मके मालिक चूरू (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी कलकत्ता गद्दीका पता १७३ हरिसन रोड है। यहां यह फर्म कमीशन ऐजेन्टका काम करती है। इसका विशेष परिचय व्रिहार विभागके पृष्ट ७८ में दिया गया है।

मेसर्स रामधनदास द्वारकादास

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मुरलीधरजी एवम बंसीधरजी हैं। इसका विस्तृत परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ५३में मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसादके नामसे दिया गया है। यहाँ इसका आफिस ४२।१ स्ट्राड रोडमें है। यह फर्म यहा चलानीका व्यापार करती है।

मेसर्स रामदास गोचर्द्धनदास

इस फर्मके मालिक रस्तोगी समाजके सज्जन है। आपका निवासस्थान पटना है वहीं पर इस फर्मका हेड आफिस भी है। यहा इस फर्मका पता २० धरमहट्टा स्ट्रीट है। इसका तारका पता Glorious है। यहाँ यह फर्म कमीशन ऐजेन्टका काम करती है। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके इसी भागमें विहार विभागके पृष्ट १८ पर दिया गया है।

मेसर्स रामनिरंजनदास वद्रीदास

इस फर्मके मालिक बाबू गोपीकृष्णजी हैं। इसका हेड आफिस पटना है। कलकत्तेमें इस फर्मका आफिस ७१ बड़तल्लामें है। यहा बैंकिंग, गल्ला, जूट सेलिंग और कमीशन ऐजेन्टका काम होता है। इसका विस्तृत परिचय मेसर्स म्हालीराम रामनिरंजनदासके नामसे पटना शहरके अन्तर्गत हमारे इसी भागके विहार विभागके पेज नं० ११ पर दिया गया है।

मेसर्स रामचन्द्र दुलीचन्द

इस फर्मका हेड आफिस जलपाईगोडी है। यहा इस फर्मपर मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र नाम पड़ता है। यहां इसका आफिस ६२ क्लाइव स्ट्रीटमें है। यह फर्म सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सीका काम करती है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ११ मे दिया गया है।

मेसर्स रामविलास रामनारायण

इस फर्मका हेड आफिस अकयाबमें है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ७४ में मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलासके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म नं० १९२ क्रास स्ट्रीट में कपड़ेकी चलानीका व्यापार करती है। इसके यहां तारका पता Gldsipverहै।

मेसर्स रघुनाथराय गौरीदत्त

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर) निवासी ओसवाल वैश्य समाजके कटारू सज्जन हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १८० हरीसन रोडपर है। जहांका तारका पता kataruka है। यहां बैंकिंग और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। विशेष परिचय बिहार विभागके पृष्ठ १०१ पर दिया गया है।

मेसर्स रामरिखदास गंगाप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू श्रीनिवासजी, बाबू नौपतरायजी और बाबू ज्वालादत्तजी हैं। इसका हेड आफिस डिबरूगढ़में है। इस फर्मका यहां आफिस १७३ हरिसन रोडमें है। यहां यह फर्म चलानीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० १९ में दिया गया है।

मेसर्स रामदयाल माणकचंद

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) के रहनेवाले हैं। इसका हेड आफिस मैमनसिंहमें है जहां मालिक लोग रहते हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी १६१।१ हॅरिसन रोडपर है जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पृष्ठ ६९ पर दिया गया है।

मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी

इस फर्मके मालिकोंमें बाबू रंगलालजी लाडनूं और बाबू रामेश्वरजी वनगोठड़ी (जयपुर) निवासी सरावगी जैन समाजके सज्जन हैं। इसके संस्थापक देशसे प्रथम पलासबाड़ी (आसाम) लगभग २३ वर्ष पूर्व आये थे। बाबू रामेश्वरजीने लगभग १७ वर्ष पूर्व कलकत्तेमें इस फर्मकी

स्थापना की थी। इसके बाद लगभग १४ वर्ष पूर्व आपने डिबरूगढ़में अपनी एक और फर्म खोली। आप दोनोंही सज्जनोंने इसके व्यापारको तरक्की दी। आप लोग सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी १६।१।१ हरिसन रोड T. A. Rasmera—यहां आसाम सिल्क और कमीशन एजेण्टका काम होता है।

पलासबाड़ी (आसाम)—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां कपड़ा, वर्तन तथा आसाम सिल्कका व्यापार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी—T. A. Saraogi यहां कपड़ा, सोना, चांदी और कपड़ेका व्यापार होता है।

गोहाटी—मेसर्स रंगलाल रामेश्वर सरावगी—T. A. Saraogi यहां कपड़ा, सोना, चांदी तथा वर्तनका व्यापार होता है।

मेसर्स लच्छीराम कन्हैयालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० लच्छीरामजी तथा बाबू कन्हैयालालजी हैं। इसका हेड आफिस मिलहट्में है। विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० ४२ में दिया गया है। इसका कलकत्तेका आफिस ४।६ आर्मेनियन स्ट्रीटमें है। यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स लच्छीराम बसंतलाल

इस फर्मके मालिक बाबू सागरमलजी नाथानी हैं। इसका आफिस मुक्तारामबाबू स्ट्रीटमें है। यहां यह फर्म शेअरका बहुत बड़ा व्यापार करती है। साथ ही कमीशनका काम भी बहुत ज्यादा करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थमें शेअरके व्यापारियोंमें दिया गया है।

मेसर्स लालचन्द दीपचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनूं है। आप खण्डेलवाल जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना [illegible] लालचन्दजीने की। आप बड़े योग्य और व्यापार दक्ष सज्जन हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई। इस समय इस फर्मके मालिकोंमें श्रीयुत बाबू लालचन्दजी, बा० [illegible] दोनों भाई विद्यमान हैं। श्रीयुत दीपचन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९८१ में होगया।

श्रीयुत लालचन्दजीके इस समय दो पुत्र हैं, उनके नाम श्रीयुत छोगमलजी और श्रीयुत झूमूंमलजी हैं। श्रीयुत दीपचन्दजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्रीयुत चान्दमलजी और शिखर लालजी हैं। श्रीयुत चांदमलजीके एक पुत्र हैं जिनका नाम चम्पालालजी है। आप सब लोग बिजीनेस करते हैं।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—हेड आफिस मेसर्स लालचन्द दीपचंद २ राजा उडमण्ड स्ट्रीट Phone 655 Cal—
इस दुकान पर बैंकिङ्ग, क्लाथ, कमीशन एजंन्सी और जूटका बिजीनेस होता है।

पलासबाड़ी [आसाम]—मेसर्स मोतीराम लालचन्द—यहां पर पाटका और कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू वृद्धिचन्दजी, बा० निहालचन्दजी, बा० घनश्यामदासजी एवं सेठ छगनमलजी हैं। यह फर्म आसाममें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० १५ में दिया गया है। यहां इसका आफिस ४ दहीहट्टामें है। तारका पता है "Hukum"। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और चलानीका काम होता।

मेसर्स शिवचन्द सुल्तानमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० मूलचन्दजी सिंघी हैं। आप लाडनू [जोधपुर] निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका कलकत्ता आफिस २६।२ आर्मेनियन स्ट्रीटमें हैं और तारका पता Shiw ganpati है। यहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी भागके बिहार विभागमें पेज १७ पर दिया गया है।

मेसर्स शिवनन्दराय जोखीराम

इस फर्मके मालिक बिसाऊ [जयपुर स्टेट] के रहने वाले तथा अग्रवाल वैश्य समाजके पोद्दार सज्जन हैं। यहां इस फर्मका आफिस ४०१।७ अपर चितपुर रोड पर है जहां कमीशन एजेन्सीका काम होता है। इसका विशेष परिचय बिहार विभागमें पृष्ट ४४ पर दिया गया है।

मेसर्स सवाईराम हरदत्तराय

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू हरदत्तरायजी एवम चुन्नीलालजी हैं। इसका यहां आफिस ४ नारायण प्रसाद बाबूलेनमें हैं। इस फर्म पर चलानीका काम होता है। यहांकी दुकानका संचालन बाबू बैजनाथजी करते है। इस फर्मका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० ५१ में दिया गया है।

मेसर्स सनेहीराम डूंगरमल

इस फर्मका हेड आफिस डिबरूगढ़ (आसाम) है। इसके वर्तमान संचालक बाबू डूंगरमलजी लोहिया हैं। इस फर्मका विशेष परिचय आसाम विभागके पेज नं० २५ में दिया गया है। यहां इस फर्मका आफिस १७३ हरिसन रोडमें है। इस फर्मपर कमीशन एजंसीका काम होता है। इसका तारका पता "Parb ahma" है।

मेसर्स सालमचन्द कन्हीराम

इस फर्मका हेड आफिस शाइस्तागंज है। यहां इसका आफिस १०५ ओल्ड चीना बाजारमें है। यह फर्म यहां कमीशन एजंसीका काम करती है। इसका विस्तृत परिचय आसाम विभागके पेज नं० ५२ में दिया गया है। इसमें शाईस्तागंज वालोंकी व्यापारिक हिस्सेदारी है।

मेसर्स सूरजमल सागरमल

इस फर्मका पूरा परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १२४ मे छापा गया है। यहां यह फर्म कपड़ा एवम चलानीका काम करती है। इसके वर्तमान संचालक बाबू सूरजमलजी हैं। आपका हेड आफिस पडरोना (गोरखपुर) है।

मेसर्स सुमेरमल रायचन्द

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुरमें है। वहां इस फर्मपर मेसर्स चौथमल कुन्दनमल नाम पड़ता है। यहां इसका आफिस ७।२ बाबूलाल लेनमें है। यहां यह फर्म पाट एवम पाटकी [illegible] व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय बङ्गाल विभागके पेज नं० ३ में दिया गया है।

मेसर्स हरनाथराय बिजराज

इस फर्मका हेड आफिस भागलपुरमें है जहां इसके वर्तमान मालिक लोग रहते हैं। यहां इस फर्मकी गद्दी ६५ लोअर चितपुर रोडपर है जहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है। विशेष परिचयके लिये विहार विभागके पृष्ट ७० को देखिये।

मेसर्स हनुतराम भगवानदास

इस फर्मके मालिक सांखू (बीकानेर) के रहने वाले अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। यहां इस फर्मका आफिस १३२ काटन स्ट्रीटमें हैं जहां कपड़ेकी कमीशन ऐजेन्सीका व्यापार होता है। इस फर्मका विशेष परिचय विहार विभागके पृष्ट ३० पर देखिये।

मेसर्स हीरानंद बालाबक्स

इस फर्मका हेड आफिस १७१ A. हरिसन रोडमें हैं। यहां यह फर्म कमीशन एजंसीका व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक बालाबक्सजी और अनन्तरामजी हैं। इसका विशेष परिचय बंगाल विभागके पेज नं० ८० में दिया गया है।

मेसर्स हरदत्तराय विसेसरलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० हरदत्तरायजी, विसेसरलालजी, भूरामलजी तथा द्वारका दासजी हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके नवलगढ़ (शेखावाटी) निवासी हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू हरदत्तरायजी द्वारा हुआ है। आप बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेडके प्रोडूयूस डिपार्टमेंटके प्रधान हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरदत्तराय विसेसरलाल २६।३ आर्मेनियन स्ट्रीट T. NO. 3630 B.B—यहां गल्लेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हरनन्दराय फूलचन्द

इस फर्मका हेड आफिस मेसर्स मटरुमल शिवमुखरायके नामसे हाथरसमें है। कलकत्तेमें यह फर्म लम्बी अवधिसे गल्लेका व्यवसाय करती है। इस फर्मके द्वारा पहिले डंडी और हेमवर्गके लिये

गल्ला एक्सपोर्ट होता था। इसका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बईमें पृष्ट ७७ में मेसर्स फूलचंद मोहनलालके नामसे दिया गया है। इसकी कलकत्ता फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हरनंदराय फूलचन्द ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहाँ गल्ला तथा कपड़ाकी चलानीका काम होता है। यह फर्म बाम्बे कम्पनीकी बेनियन है।

मेसर्स हजारीमल भीमराज

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान सरदार शहर (बीकानेर स्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। यह फर्म गत १० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें स्थापित हुई थी। इसके संचालक बाबू भीमराजजी हैं। आपहीके हाथोंसे इस फर्मकी उन्नति भी हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ हजारीमलजी और बाबू भीमराजजी हैं। आप दोनों ही इस फर्मका संचालन करते हैं। सेठ हजारीमलजी रामीनाम (झींद) के रहनेवाले अग्रवाल वैश्य हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल भीमराज १६० हरिसन रोड—यहां कपड़ेकी चलानीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स इ० एस० स्टेवर्ट एण्ड को० ३ मिशन रो०—इस फर्ममें आपलोगोंका साझा है। यहा चायकी बिक्री होती है।

तिनसुखिया—मेसर्स हरदेवदास अर्जुनदास—यहां कपड़ेका काम होता है।

तिनसुखिया—मेसर्स किशनलाल नंदलाल—यहा कपड़ेका काम होता है।

बिसमिल (तिनसुखिया)—मेसर्स सहीराम हजारीमल-यहा दुकानदारी और टी शीड्सका व्यापार होता है।

स्व० बाबू उमराव सिंहजी जौहरी
(उमराव सिंह मुन्नीलाल)

स्व० बाबू मन्नीलालजी जौहरी
(उमराव सिंह मुन्नीलाल)

बाबू पूर्णचन्दजी जौहरी
(उमराव सिंह मुन्नीलाल)

बाबू महतावचन्दजी जौहरी
(उमराव सिंह मन्नीलाल)

जवाहरातके व्यापारी

जवाहरातका व्यापार

जवाहिरातके व्यापारपर हम इस ग्रन्थके पहले भागमें बहुत काफी प्रकाश डाल चुके हैं। अतएव उसको पुनः इस भागमें दोहराना व्यर्थ है। भारतवर्षमें जवाहिरातका सबसे बड़ा बाजार बम्बई है और उसके पश्चात् दूसरे नम्बरमें इसका मार्केट जयपुर है। जवाहिरातके इन दोनों व्यापारिक क्षेत्रोंका विवेचन इस ग्रन्थके प्रथम भागमें आचुका है। कलकत्तेमें भी जवाहिरातका व्यापार बहुत अच्छे परिमाणमें होता है। खासकर नीलामका व्यापार यहां बहुत अच्छा होता है। यहांके जवाहिरातके व्यापारियोंके सम्बन्धमें लिखनेके पूर्व हम प्रसिद्ध जौहरी राजा बद्रीदासको नाम विस्मृत नहीं कर सकते। जिस प्रकार बम्बईके शेअर मार्केटमें सेठ प्रेमचन्द रायचन्दका नाम अमर हो गया है। उसी प्रकार कलकत्तेके जौहरियोंमें राजा बद्रीदासका नाम अमर है। कलकत्तेके जौहरी समाजमें आप बड़े प्रतिभाशाली, सूक्ष्मदर्शी और प्रतापी व्यक्ति हो गये हैं। आपकी कीर्त्ति भारतव्यापी थी। जवाहिरातकी परीक्षामें और उसके व्यापारमें आपकी दृष्टि बड़ी ही दिव्य थी। आपका बनाया हुआ जैन मन्दिर आज भी आपकी कीर्त्तिको आलोकित कर रहा है। उसका चित्र कलकत्तेके पोर्शनमें दिया गया है।

कलकत्तेके कुछ जौहरियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स उमरावसिंह मुन्नीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान माकड़ी (दिल्ली) है। आपलोग जैन श्वेताम्बर श्रीमाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू उमरावसिंहजीके हाथोंसे करीब ५० वर्ष पूर्व कलकत्तेमें हुआ। आरंभसेही यह फर्म जवाहरातका व्यापार करती रही है। तथा यह फर्म कलकत्तेके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। बाबू उमरावसिंहजीका स्वर्गवास सं० १९०४ ई० में हुआ। आपके २ पुत्र थे बाबू मुन्नीलालजी एवं बाबू सितावचन्दजी। जिनमें बाबू मुन्नीलालजीका शरीरान्त सेठ उमरावसिंहजीकी मौजूदगीहीमें हो गया था एवं सेठ सितावचन्दजी भी सन् १९०६ ई० में स्वर्गवासी हो गये।

बाबू मुन्नीलालजीके स्वर्गवासी होनेके पश्चात् आपके बड़े पुत्र बाबू छोटेलालजी सन् १६२० तक इस फर्मका कार्य संचालित करते रहे।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू मुन्नीलालजीके पुत्र पूरणचन्दजी एवं बाबू सिताबचन्दजीके पुत्र बाबू महताबचन्दजी हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स उमरावसिंह मुन्नीलाल १६।१ सिकदर पाड़ा स्ट्रीट T. No 2757 B.B.—T. A. Famous—यह फर्म बहुत वर्षों से मेसर्स फिलवर्न कम्पनीकी जौहरी डिपार्टमेंटकी सोल ब्रोकर है। इस फर्मकी ब्रोकरशिपके कारण, फर्मके व्यवसायकी अच्छी वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त आपके यहां मोती और जवाहरातका एक्सपोर्ट और पन्नाका इम्पोर्ट बिजिनेस भी होता है। यह फर्म पिटार लिवर्सन एण्ड कम्पनी लन्दनकी सोल ब्रोकर है।

मेसर्स कस्तूरचंद हीरालाल जौहरी

इस फर्ममें बाबू कस्तूरचन्दजी एवं हीरालालजी पार्टनर हैं। आपदोनों ही श्वेताम्बर श्रीमाल समाजके सज्जन हैं। बाबू कस्तूरचन्दजी सहारनपुर (यू० पी०) के और बाबू हीरालालजी मेहम (रोहतक) के निवासी हैं।

इस फर्मका स्थापन आप दोनोंही सज्जनोंके हाथोंसे करीब २५ वर्ष पूर्व हुआ। आरंभसेही इस फर्मपर जवाहरातका व्यापार होता है। यह फर्म नीलम और माणिकके एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका व्यापार करती है। इस फर्मपर बर्मा तथा श्यामसे कच्चा माल आता है। तथा आप उसे कट कराकर विदेशोंके लिये रवाना करते हैं। कलकत्तेके जौहरी समाजमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके कारबारको आप दोनोंही सज्जनोंने बढ़ाया। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कस्तुरचन्द हीरालाल जौहरी १५५ राधाबाजार स्ट्रीट T. No. 2854 Cal T. A AMogha इस फर्मपर माणक और नीलमका प्रधान व्यापार होता हैं। इसके अतिरिक्त और जवाहरातका भी व्यापार होता है।

मेसर्स गुलाबचन्द बेद

इस फर्मका हेड आफिस जयपुर (राजपूताना) है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० ६४ में दिया गया है। यहां इस फर्मका आफिस क्रास स्ट्रीटमें है। जहां इस फर्मपर जवाहरातका व्यापार होता है।
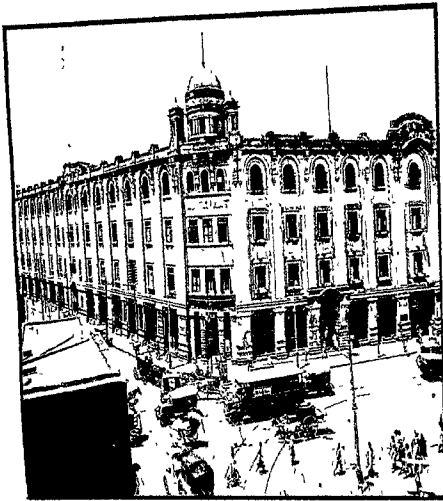
मर्केंटाइल बिल्डिंग, लालबाजार (इसमें ठाकुरलाल हीरालालका आफिस है)

मेहता ठाकुरलाल केशवलाल जौहरी
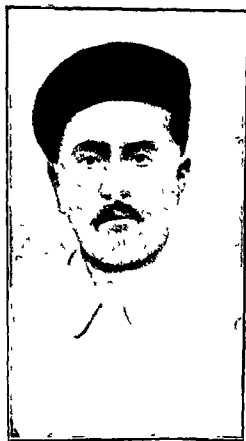
मेहता वृजलाल, केशवलाल जौहरी

मेहता मणिलाल रतनचन्द जौहरी

मेहता चिमनलाल रतनचन्द जौहरी

मैसर्स ठाकुरलाल हीरालाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सूरजमलजी लल्लूभाईकी कम्पनी तथा मेहता ठाकुरलाल केशवलाल, मेहता वृजलाल केशवलाल, मेहता मनीलाल रतनचंद तथा मेहता चिमनलाल रतनचंद हैं। आप लोग जैन वणिक समाजके गुजराती सज्जन हैं। आपलोगोंका मूल निवास पालनपुर (गुजरात) है। इस फर्मका स्थापन बड़तल्लामें संवत् १९७२ में हुआ था। आरंभ से ही यह फर्म जवाहरातका व्यवसाय करती आरही है। संवत् १९२२ से मेहता ठाकुरलालभाईने जवाहरातके बने दागीनों तथा चांदी सोनेके दागीनोंका एक सुन्दर शोरूम सुधरे हुए ढंगसे लालबाजार स्ट्रीटमें स्थापित किया। इसी समय अपनी फर्मके लिये माल तैयार कराने वाला एक कारखाना १६७ लोअर चितपुर रोडमें स्थापित किया।

यह फर्म मारवाड़ी, बंगाली आदि जातियोंके लिये सभी प्रकारके सोना, चांदी तथा जवाहरातके दागीनें तैयार करवाती है, तथा अपने शोरूममें रखकर बेंचती हैं और आर्डरसे भी माल सप्लाई, करती है।

सन् १९१४तक आपका एक ऑफिस एण्टवर्पमें भी था। अभी २ सन् १९२८के मईमासमें सेठ सुरजमल लल्लूभाई,एवं मेहता ठाकुरलाल केशवलाल इन दोनों सज्जनोंने व्यवसायके निमित्त विदेश की यात्राकी थी, वहां आपने एण्टवर्प (बेलजियम), पेरिस, एमस्टर्डम, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली स्वीटजरलेंड आदि देशोंकी यात्राकी, एवं अपना एक ऑफिस एण्टवर्पमें स्थापित किया।

इस फर्मकी बम्बई तथा कलकत्तेके जौहरी समाजमें अच्छी प्रतिष्ठा है। सेठ सूरजमल लल्लूभाई बम्बईके एक ख्याति प्राप्त जौहरी हैं। आपकी फर्मका प्रधान व्यापार हीरेका है, इस ओर तरक्की करनेमें फर्मके संचालकोंने काफी लक्ष दौड़ाया है। वर्तमानमें फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बम्बई—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी ३५९ कालवादेवी रोड T. A Calmness—यहां हीरा और जवाहरातका व्यवसाय होता है।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल एण्ड कम्पनी १२ लाल बाजार स्ट्रीट T. No. 400 Cal T. A. Fortune—यहां हीरेका इम्पोर्ट तथा मोती और कलर स्टोनका एक्सपोर्ट होता है। इसके अतिरिक्त चांदी, सोना, तथा सोनेके और जवाहरातके दागीने विक्री होते हैं तथा आर्डरसे तैयार किये जाते है। यहां आपका शोरूम है।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल ४१ बड़तल्ला—यहा गद्दी हैं, तथा जवाहरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स ठाकुरलाल हीरालाल १६७ लोअर चितपुर रोड—यहां आपका कारखाना है। इसमें ६६ कारीगर प्रति दिन काम करते हैं।

रंगून—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी १४ मुगल स्ट्रीट Morality—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

मद्रास—मेसर्स सूरजमल लल्लूभाई एण्ड कम्पनी ३।३ एक्सप्लेनेड T.A. Morality—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

एण्टवर्प (वेलजियम)—मेसर्स सूरजमल लल्लू भाई एण्ड कम्पनी २ रूसीमा Rue simona—यहां से हीरे अपनी कलकत्ता, बम्बई, मद्रास एवं रंगून ब्रांचेज के लिये एक्सपोर्ट किया जाता है, तथा भारतसे मोती एवं कलर स्टोनका यहां इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स ताराचन्द परशुराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा०ताराचन्दजी हैं। आपकी फर्मका विशेष परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० १४३ में दिया गया है। यहां यह फर्म निम्न व्यापार करती है।

कलकत्ता—५७ पार्क स्ट्रीट—यहां जवाहरात और क्यूरिओसिटीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—स्टुअर्ट हॉग मार्केट—यहां हीरा, पन्ना आदि जवाहरातका व्यापार होता है।

कलकत्ता—लिण्डसे स्ट्रीट—यहां भी हीरा पन्ना आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास

इस फर्ममें दो सज्जन पार्टनर हैं, इनमेसे सेठ पंजीलालजी देहलीके और सेठ बनारसीदासजी [illegible] पटियाला स्टेटके निवासी हैं। आप दोनोंही जैन श्वेताम्बर श्रीमाल समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मका स्थापन करीब ४५ वर्ष पूर्व सन् १८८३ में बा० पंजीलालजी, एवं बा० बनारसीदासजीके हाथोंसे हुआ था, आरंभ सेही यह फर्म जवाहरातका व्यवसाय कर रही है, तथा कलकत्ते के [illegible] समाजमें बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानीजाती है। यह फर्म भारतीय प्रेसियस स्टोनका [illegible], इंग्लैंड, स्वीटजरलैंड, जर्मनी, अमेरिका आदि देशोंके लिये एक्सपोर्ट करती है। [illegible] स्याम आदि स्थानोंसे नीलम और माणक का डायरेक्ट खानोंसे इम्पोर्ट होता है, [illegible] है।

बाबू चांदमलजी कानोड़िया

बाबू छोटेलालजी कानोड़िया

बाबू रामनाथजी कानोड़िया

बाबू रामसुन्दरजी कानोड़िया

बाबू केशरीचंदजी झाड़चूर
(मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास जौहरी
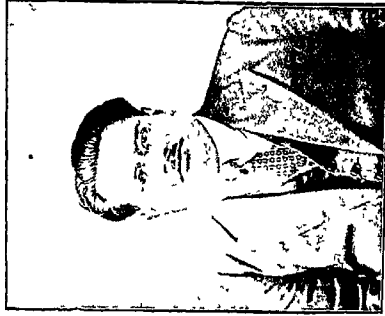
बाबू धन्नूलालजी पारमान B A
(मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास जौहरी)

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमेंसे बा० बनारसीदासजी झाड़चूर, एवं सेठ पंजीलालजी पारसानके पुत्र बा० मोतीलालीजी हैं। बा० बनारसीदासजी पहिले कुछ समय तक मेसर्स इंग्लैंडसे आरबुथनाट एण्ड कम्पनीके जौहरी डिपार्टमेंटके वेनियन रहे थे। सेठ बनारसी दासजी झाड़चूरके पुत्र एवं बाबू मोतीलालजी पारसानके पुत्र श्रीधन्नुलालजी पारसान B. A. भी व्यवसायमें भागलेते हैं। बा० पंजीलालजीका स्वर्गवास संवत १९५२ में हो गया है।

इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स पंजीलाल बनारसीदास १९ हंसपोकर लेन T No 2836 B. B T A Benarsi
यहां मोती, नौरतनका व्यापार होता है। प्रेसियस स्टोनका विदेशोंके लिये एक्सपोर्ट एवं नीलम और माणिकके इम्पोर्टका व्यापार भी होता है।

कलकत्तेसे नीलम और माणिकका एक्सपोर्ट करनेवाली फर्मोंमें यह फर्म है तथा पहले पहल इसीके द्वारा नीलमका एक्सपोर्ट शुरू हुआ था।

जौहरी प्यारेलालजी ताम्बी

इस फर्मके संचालक श्रीमाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत समयसे जवाहरातका काम कर रही है। पर इस नामसे काम करते हुए इसे २० वर्ष हुए। इस पर शुरूसे ही नौरतन जवाहरातका काम होता चला आया है। खासकर नीलम और माणिकका काम विशेष होता है। आपकी फर्म पर वर्मासे नीलम एवं माणिकका कच्चा माल आता है तथा यहांसे कट होकर अथवा कच्चा बाहर यूरोप आदिमें जाता है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू प्यारेलालजी हैं। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति हुई। आप बड़े व्यापारिक एवं मेधावी सज्जन हैं। आपने सब कार्य अपने पिता बुलाखीचंदजी से सीखा। आपका स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया। आप जवाहरातके काममें बड़े निपुण थे। आपके पास करीब ४०, ५० विद्यार्थी जवाहरातका काम सिखते थे जो अच्छी विद्या प्राप्त कर कलकत्ताके बाजारमें जवाहरातका अच्छा काम कर रहे हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स प्यारेलाल ताम्बी ४३ B सिकदर पाड़ा T. No 3974 B. B. T. A. Tambi
यहां नौरतन जवाहरातका व्यापार होता है। उसमें भी खासकर नीलम और माणिकका काम विशेष रूपसे होता है तथा इनके जेवर भी बनते हैं।

मेसर्स मोतीलाल मुकीम एण्ड संस

इस फर्मके मालिकोंका बहुत समयसे कलकत्तेमें ही निवास है। इस फर्मका स्थापन बाबू मोतीलालजीके हाथोंसे करीब ५० वर्ष पूर्व हुआ था। आप श्रीमाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके व्यवसायकी उन्नति बाबू मोतीलालजी मुकीमके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास १८ जून १६२१ में हुआ। आप यहांके जौहरी समाजमें अच्छे प्रतिष्ठित माने जाते थे। इस समय बाबू मोतीलालजी के ३ पुत्र हैं जिनके नाम बा० प्यारेलालजी मुकीम, सुन्दरलालजी मुकीम एवं कुंदनलालजी मुकीम है। इनमेंसे बा० प्यारेलालजी वकीलातका काम करते हैं। तथा बा०सुन्दर-लालजी एवं बाबू कुन्दनलालजी जवाहरातका कारबार करते हैं। बाबू सुंदरलालजी साहब लोगोंकी गाहकीका व्यापार करते हैं। एवं बाबू कुन्दनलालजी योरोप, अमेरिका आदि विदेशोंके लिये ज्वेलरीका एक्सपोर्ट करते थे। नीलम तथा माणक आपके यहांसे विदेशोंको जाता है और आपके यहा हीरा और घड़ियोंका इम्पोर्ट होता है। बर्माकी रूबी माईन्ससे नीलम और माणकका डाइरेक्ट इम्पोर्ट आपके यहां होता है। कलकत्तेके जौहरी समाजमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मोतीलाल मुकीम एण्ड संस ७९ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट (Renown)—यहां जवाहरातका एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम होता है। अलाहाबाद बैंक तथा मरकेंटाइल बैंक इस फर्मकी बैंकर हैं। और घड़ी तथा हीरेका इम्पोर्ट एवं नीलम तथा माणिकका एक्सपोर्ट यहांसे होता है।

मेसर्स मुन्नालाल हीरालाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० चुन्नीलालजी जौहरी है। आप ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इसका स्थापन बाबू हीरालालजीके द्वारा हुआ। आपके ही द्वारा उन्नति भी हुई। आप गव्हर्नमेंटके ज्वेलर थे। आपका स्वर्गवास हो गया।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं—

कलकत्ता—मेसर्स मुन्नालाल हीरालाल ३८ बड़तल्ला स्ट्रीट T. No. 1738—यहां जवाहरातका व्यापार होता है।

स्वर्गीय तुलाकीदासजी तांबी जौहरी

बाबू छन्दरमलजी मुकीम
(मोतीलाल मुकीम एण्ड सन्स)

बाबू प्यारेलालजी तांबी जौहरी

बाबू कुन्दनमलजी मुकीम
(मोतीलाल मुकीम एण्ड सन्स)

मेसर्स माणकचंद चुन्नीलाल जौहरी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान राजपूताना है। इस फर्मका स्थापन बाबू माणकचन्दजी एवं बाबू चुन्नीलालजी दोनों भाइयोंके हाथोंसे संवत् १९५० में हुआ। आप श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू माणकचन्दजी एवं चुन्नीलालजी हैं। आपही दोनों सज्जनोंके हाथोंसे फर्मका स्थापन हुआ एवं व्यवसायको तरक्की मिली। यहां जौहरी समाजमें आपकी फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

सेठ माणकचन्दजीके पुत्र बाबू फूलचन्दजी एवं चुन्नीलालजीके पुत्र बाबू मोहनलालजी फर्मके व्यवसायमें सहयोग लेते है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स माणकचन्द चुन्नीलाल ३२ बांसतल्लागली T. A. Sookhani—यहां जवाहरातके आर्डर सप्लाईका काम, तथा विलायतके लिये सभी प्रकारके जवाहरातके एक्सपोर्ट का व्यापार होता है। इस फर्मका प्रधान व्यापार पन्नाका है।

मेसर्स मोतीचंद फूलचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मोतीचंदजी है। आपहीके द्वारा करीब ३० वर्ष पूर्व बनारसमें इसका स्थापन हुआ। तथा आपहीके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। दान धर्म आदि कार्योंकी ओर भी आपका अच्छा ध्यान रहा है। आपके ६ पुत्र है जिनके नाम क्रमशः बा० कुंजीलालजी, केसरीचन्दजी, फूलचन्दजी, सूरजप्रसादजी, बनारसी दासजी एवं निहालचन्दजी हैं। आप लोग जातिके दिगम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। बा० सूरजप्रसादजी, बनारसकी प्रसिद्ध फर्म मेसर्स खड्गसेन उदयराजके यहा दत्तक गये है।

इस फर्मका व्यापार अपने ढंगका निराला है। इस फर्म पर चांदी, सोनेकी नक्काशी निकाली हुई मोटरें, गाड़िया, सिंहासन, छत्र, चंवर आदि कितनी ही प्रकारकी वस्तुओंका व्यापार होता है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बनारस—मेसर्स मोतीचंद कुंजीलाल मोती कटरा T. A Singhahi—इस फर्म पर चांदी सोनेके रथ, मोटर गाड़ियां, सिंहासन, ऐरावत हाथी, वेदी आदि बेश कीमती सामान तैयार होता

है तथा विक्री किया जाता है। इसके अतिरिक्त कमीशन पर भी यह फर्म काम करवा देती है।

बनारस—मेसर्स मोतीचन्द कुंजीलाल सिल्क हाउस मोती कटरा—यहां बनारसी माल एवं साड़ियां, लंहगे आदि पर सलमा सितारेका काम और जरीके काम की वस्तुओंका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त काशी सिल्कका व्यापार भी यह फर्म करती है।

कलकत्ता—मेसर्स मोतीचन्द फूलचन्द १६१।१ हरिसन रोड T No. 1292 B. B—यहां बनारसके बने हुए सभी प्रकारके जरीके बेशकीमती कपड़े एवं चांदी सोनेकी बनी हुई उपरोक्त वस्तुओंका व्यापार एवं कमीशन पर बनवादेनेका काम होता है।

मेसर्स मुरारजी गोविन्दजी

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान जाम (खंभालिया) काठियावाड़ है। आप वाणिज्य सोनी सज्जन हैं। इस फर्मको यहा स्थापित हुए करीब १३ वर्ष हुए। इसके वर्तमान मालिक सेठ मुरारजी है। आपहीके हाथोंसे इसका स्थापना हुआ है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स मुरारजी गोविन्दजी १५६ हरीसन रोड फोन नं० १५६० B. B.—यहां चांदी सोनेकी बनी हुई फैंसी वस्तुओंका व्यापार होता है। तारका पता "Goldmine" है।

कलकत्ता—मेसर्स नरोत्तमदास मुरारजी १६६ बहुबाजार फोन नं० ३६७६ बड़ावाजार तथा तारका पता है। "Holsoul"। यहा भी उपरोक्त व्यापार होता है।

सोना चांदीके व्यापारी

सोना चाँदीका व्यापार

इस व्यवसायके अन्तर्गत सभी प्रकारका सोना चांदीका वह व्यवसाय माना जाता है जो सिक्के तथा बने मालसे सम्बन्ध नहीं रखता है। कलकत्तेमें उसका व्यवसाय प्रधान रूपसे सोना पट्टीमें होता है। जिस प्रकार संसारके अन्य व्यवसायोंमें तैयार मालकी आवश्यकताको पूरा करनेके लिये वायदेके सौदेका प्राबल्य होता गया है उसी प्रकार इस व्यवसायमें भी तैयार मालके सौदेके साथ वायदेके सौदेका खूब दौड़ दौरा देखा जाता है। वायदेके सौदेके अनुसार ही तैयार मालके भावमें उतार चढ़ाव हुआ करता है। तैयार मालके सौदेकी डिलीवरीका माल कलकत्तेसे सम्बद्ध स्थानोंको माल सप्लाई करनेके काम आता है। इस बाजारका वैध संचालन यहाकी बुलियन एक्सचेन्जकी देखरेखमें प्रायः यहाका चेम्बर आफ कामर्स करता है। इसी संस्था द्वारा इस व्यापारसे सम्बन्ध

सिंघई मोतीचन्दजी जैन (मोतीचन्द फ़ूलचन्द)

सिंघई फ़ूलचन्दजी जैन (मोतीचन्द फ़ू

मोतीकटरा बनारस (मोतीचन्द फूलचन्द)

[illegible]
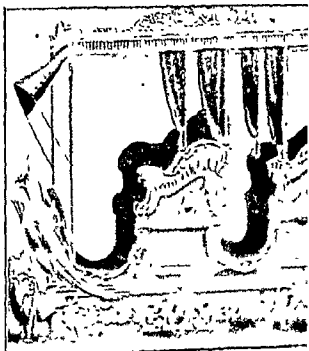
रखनेवाले सभी झगड़े सुलझाये जाते हैं। यहांके बुलियन मार्केटपर प्रायः लन्दनकी एक्सचेंज मार्केट द्वारा प्रभावित वहांके बुलियन हाउसका ही प्रभाव देखा जाता है।

सोनाका संसारमें प्रधान मार्केट यों तो अमेरिकन बाजार माना जाता है पर संसारमें विनिमयकी कुंजी लन्दनके महाजनोंके हाथमें होनेके कारण वहींसे सोनेका भाव निकलता है। चांदीका प्रधान बाजार शंघाई माना जाता है और वहींके भावपर संसारके चांदीके बाजारका उतार चढ़ाव होता रहता है। स्मरण रहे संघाई कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां चांदी अधिक परिमाणमें पायी जाती हो। फिर भी शंघाई चांदीका प्रधान बाजार माना जाता है। और इसी बाजारके भावको देखकर अन्य बाजारोंमें सौदे होते हैं।

संसारमें सोनेकी सबसे प्रसिद्ध खानें अफ्रीकामें हैं। पर अस्ट्रेलिया और अमेरिकाकी सोनेकी खानें भी कुछ कम महत्व की नहीं मानी जातीं। आट्रेलियामें सोनेकी खानोंकी अधिकताके कारण ही आज इतनी बड़ी जनसंख्या दिखाई देती है। नहीं तो पहिले ब्रटेनके चोर बदमाश निर्वासितों का ही वहां अड्डा था। इतना ही क्यों भारतकी जनश्रुतिके अनुसार कुछ इतिहासकारोंने सोनेके आधिक्यके कारण इसे ही रावणकी लंका भी सिद्ध करनेकी सराहनीय चेष्टाकी है। खैर भारतसे जो माल निर्यातके रूपसे बाहर जाता है उसके विनियमसें ही उपरोक्त देशोंका सोना भारत आता है। यह सोना, सोना शुद्ध करनेवाली कम्पनियोंकी छाप लगाकर छोटे २ पाटके रूपमें आता है और यहीं व्यापारियोंकी इच्छानुसार छाप लगाकर बाजारमें बिक्रीके लिये रक्खा जाता है। पाटकी वजनका अनुमान इसीसे हो सकता है कि प्रायः ८० तोलेमें तीन पाट चढ़ते हैं। पाट प्रायः ९७·२० टंचसे ९९·८० टंचतकका आता है। इसमें भी ९९·८० टंचवाला १०० टञ्चमें ही माना जाता है।

चांदीकी सबसे बड़ी खानें प्रायः अधिक संख्यामें दक्षिण अमेरिकामें ही पायी जाती हैं पर भारतमें चांदी अमेरिकाके अतिरिक्त चीन और योरोपसे भी आती है। इसकी सिल प्रायः २८०० भरी होती हैं। चांदीकी सिलें दो प्रकारकी होती हैं जो १७॥ पेनी और १७ पेनीकी कहाती हैं। १७॥ पेनीवाला माल ९९९ टञ्चका माना जाता है।

भारतमें भी सोनेकी दो प्रधान खाने हैं जिनमेंसे एक तो संसार प्रसिद्ध मैसूरकी कोलार गोल्ड फील्ड नामक खान है और दूसरी निजाम राज्यके लिंगसागर जिलेके अन्तर्गत हट्टीकी सोनेकी खान है। यहां प्रति वर्ष अच्छे परिमाणमें सोना निकलता है।

इस विषयके विस्तृत विवेचनके लिये हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागको देखिये।

मेसर्स बिरला ब्रदर्स लिमिटेड

इस फर्मका आफिस ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्तामें है। इसका सुविस्तृत परिचय इस ग्रन्थके प्रथम भागमें दिया गया है। इस फर्मके मालिक भारत प्रसिद्ध बिड़ला बंधु हैं। जूट, गनी, गल्ला आदिके व्यवसायके साथ २ चादी सोनेका भी आप बहुत बड़ा कामकाज करते हैं। बाबू रामेश्वर दासजी बिड़ला बुलियन एक्सचेंज बम्बईके प्रेसिडेन्ट हैं। आपके यहां चांदी सोनेका डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है।

मेसर्स मेघराज वासुदेव

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मलसीसर (जयपुर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस बम्बई है। इस व्यवसायको सेठ मोतीलालजी, सेठनारायणदासजी तथा श्री मेघराजजी एवं बा०हनुमानदासजी इनचारों सज्जनोंने उन्नति पर पहुंचाया। संवत १९८३ तक उपरोक्त चारों भाइयोंका व्यवसाय मेसर्स चिमनराम मोतीलालके नामसे सम्मिलित रूपसे होता रहा, पश्चात् आप सब अलग अलग हो गये। सेठ मोतीलालजीने पुराने फर्म चिमनराम मोतीलालके नामसे अपना काम अलग करना शुरू कर दिया तथा शेष तीनों भाइयोंने अपनी फ़र्म पर बम्बईमें नारायणदास केदारनाथके नामसे व्यवसाय शुरू किया। इस फर्म पर कलकत्ता तथा बम्बईमें चांदी सोनेका इम्पोर्ट तथा वायदेका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ नारायणदासजी, सेठ मेघराजजी एवं सेठ हनुमानदासजी हैं। आप सब प्रतिष्ठित सज्जन हैं। बाबू नारायणदासजीके बड़े पुत्र श्री गोविंदरामजी तथा बाबू हनुमानदासजीके बड़े पुत्र श्री केदारनाथजी भी व्यवसायमें भाग लेते हैं। सेठ नारायणदासजी बाम्बे बुलियन एक्सचेंज लि० के डायरेक्टर एवं वायस चेयरमैन हैं। संवत १९८६ से आप उक्त एक्चेंजके वायस चेयरमैन नियुक्त हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बम्बई—मेसर्स नारायणदास केदारनाथ बुलियन एक्सचेंज बिल्डिंग T. No 24554 —यहा हेड आफिस है। यहा चादी सोनेका इम्पोर्ट तथा वायदेका बहुत बड़ा व्यापार होता है इसके अलावा बैंकिंग, कपड़ा तथा कमीशनका काम भी होता है।

कलकत्ता—मेघराज वासुदेव १३२ काटन स्ट्रीट T A Silver cufo—यहा भी सोने चांदीका इम्पोर्ट और वायदेका व्यापार होता है। इसमें बाबू वासुदेवजी घेलिया भागीदार हैं, आप ही यहा की व्यवस्था करते हैं।
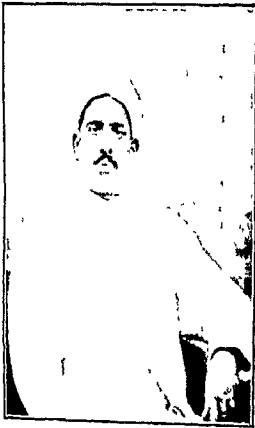
बाबू नारायणदासजी झुनझुनवाला (मंघराज वासुदेव)
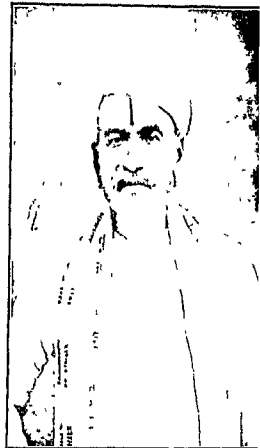
बाबू लक्ष्मीनारायणजी सोमानी
(हजारीमल सोमानी क०)

बाबू सदासुखजी कावरा (रिधकरण कावरा)
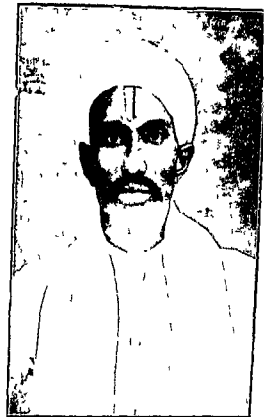
बाबू हजारीमलजी सोमानी

पांढर कुवड़ा (बरार)—भगवानदास हरकिशनदास—यहां आपकी इसी नामसे जीनिंग तथा प्रेसिंग फेक्टरी है। तथा रुई और कमीशन एजंसीका काम होता है।

गोला—(गोरखपुर) सेवगराम हनुमानदास—यहां पर कपड़ा तथा गल्लेका काम होता है। तथा व्याजपर रुपया दिया जाता है। यह फर्म बाबू हनुमान दासजीकी है।

मेसर्स शिवनारायण गुलाबराय

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित पटनेमें दिया गया है। इस फर्मकी पटना, कलकत्ता तथा हाजीपुरमें हेड आफिस हैं। इसके अलावा बनारस, सैय्यदराजा और दिलदार नगरके अंदरमें और भी बहुतसी दुकानें हैं। जिन पर कपड़ा, गल्ला, चांदी,सोना, आढ़त आदिका व्यापार होता है। कलकत्तामें इसकी गद्दी १०५ कॉटन स्ट्रीटमें है। तारका पता "Silver" है। यहां वेकिंग, कपड़ा, चांदी, सोना, गल्ला, गनीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संस

इस फर्मके व्यापारका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके बैंकर्स विभागमें चित्रों सहित दिया गया है। इसकी गद्दी १७८ हरिसन रोडमें है। यहां वेङ्किग, जूट आदिके व्यवसायके साथ २ चांदी सोनेका इम्पोर्ट और व्यवसाय भी होता है।

मेसर्स हजारीमल सोमानी

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान मोलासर (मारवाड़) है। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके सोमानी सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ लक्ष्मीनारायणजी सोमानी संवत् १९५२ में देशसे कलकत्ता आये। एवं आरंभमें आपने चांदीकी दलालीका कार्य शुरू किया। तथा पश्चात् रिधकरण कावरा कम्पनीके पार्टनर शिपमें चांदीके व्यवसायको बढ़ाया। लड़ाईके समयमें रिधकरण कावरा कम्पनीने चांदी, रुई, शेअर, हेसियन आदिमें अच्छी सम्पत्ति पैदा की। इस कम्पनीकी उन्नति सेठ लक्ष्मीनारायणजीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू हजारीमलजीके हाथोंसे हुई। आप संवत् १९५७ से व्यवसायमें सहयोग देने लगे। संवत् १९६० में इस फर्मकी १ ब्रांच बम्बईमें भी खोली गई।

संवत् १९७६ में बाबू हजारीमलजीने लक्ष्मीनारायण हजारीमलके नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार करना आरंभ किया। तथा अपने व्यवसायको अच्छा प्रोत्साहन दिया।

वर्तमानमें इस फर्मके कलकत्तेके व्यवसायिक पार्टनर बाबू हजारीमलजी एवं आपके छोटे भाई बाबू उंकारमलजी तथा लक्ष्मणगढ निवासी बाबू बालमुकुन्दजी राठी, सीकर निवासी किशनलालजी रामप्रसादजी, और राधाकिशनजी मारू है। बाबू हजारीमलजीके पुत्र श्रीगजाधरजी सोमानी शिक्षित नवयुवक हैं। आप भी व्यवसायमें भाग लेते है। आपकी ओरसे मोलासरमें मंदिर, कुआं, बाग आदि बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल सोमानी १८ मल्लिक स्ट्रीट—यहा चांदी सोनेका इम्पोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हजारीमल सोमानी २ रॉयलएक्सचेंज प्लेस T. A. Surjmukhi, T.No 1815 Cal. 509 B B.—यहा शेअर और स्टॉकका ब्रोकर्स बिजिनेस होता है। इसके अतिरिक्त यहां हेसियन रुई चीनी आदिका भी काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लक्ष्मीनारायण हजारीमल २०१ हरीसन रोड—ऊनी और देशी माल का इम्पोर्ट और बिक्रीका काम होता है।

कलकत्ता—बालमुकुन्द उंकारमल १८ मल्लिक स्ट्रीट—हेसियनके ब्रोकरेजका काम होता है।

कलकत्ता—बालमुकुन्द उंकारमल १३७ केनिंग स्ट्रीट—इस फर्मका हेसियनके बड़े २ शीपर्स तथा मिलोंसे व्यापारिक सम्बन्ध है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदयाल सोमानी बुलियन एक्सचेंज कालबादेवी रोड—यहांपर बुलियन रुई तथा शेअरका कामकाज होता है। इस फर्मके मालिक बाबू भगवानदासजीके पुत्र रामदयालजी सोमानी तथा साभर निवासी हरिनारायणजी सोमानी हैं।

मेसर्स श्रीलाल चमड़िया

इस फर्मके मालिक बाबू श्रीलालजी चमड़िया फतहपुर निवासी अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। बाबू श्रीलालजी संवत् १९६० मे बहुत मामूली हालतमें देशसे कलकत्ता आये। आरंभमें ६ वर्ष तक आप सेठ हजारीमलजी चमड़ियाके यहा सर्विस की। संवत् १९६६ में आप अपना स्वतंत्र काम करने लगे। आपने ओपियम, तीसी, पाट, हेसियन, चांदी, सोना, लेनसीड आदिके वायदेके काममें बहुतसा रुपया पैदा किया। तथा सम्पत्ति पैदा करके स्थाई सम्पत्ति जमीन जगह बगीचा भी अच्छी एकत्रित की। आपके पिताजीकी अवस्था इस समय ७० वर्षकी है। इस समय आपके यहां उपरोक्त व्यापार होता है। आपकी फर्मका पता ११४।१ कॉटन स्ट्रीट है।

लकड़ीके व्यापारी

इमारती लकड़ी

भारतमें इमारती लकड़ी और मूल्यवान लकड़ीकी कमी नहीं है। यहां अच्छी, खराब, हलकी, मजबूत आदि कई प्रकारकी लकड़ी मिलती है। अच्छे काममें प्रायः सागवन, शीशम, देवदारु चंदन, साल, बबूल, कटहल, आबनूस, अखरोट (वलनट) पाडुक, तूत, नीम, सुन्दरी, अंजन आदिकी लकड़ीका व्यवहार होता है।

लकड़ियोंमें चंदन सर्वश्रेष्ट होता है और इसकेबाद सागवन्, साल और शीशमका नम्बर आता है। इसका व्यवहार इमारत बनाने, मेज, कुर्सी, तथा ऊंचे दर्जेका सभी प्रकारका फर्नीचर बनानेमें होता है। शीशम, बबूल और सालकी लकड़ी समथल भूमिके निवासियोंके कामकी होती है। विदेशमें प्रायः सागवन्की लकड़ीकी बड़ी मांग रहती है, यह जहाजके कामकी होती है। सागवन् भारतमें बर्मा (आराकन, पेगू, मर्तवान) में सबसे अधिक पायाजाता है। वहां सरकारने इसके वृक्षोंकी रक्षाके लिये बहुत अच्छा प्रबन्ध कर रक्खा है। इसके वृक्ष १५० फीट तक ऊंचे होते हैं जो सरकारी सूचनाके अनुसार निश्चित अवधिमें काटे जाते हैं और वहांसे नदियोंमें डालकर सामिल्समें पहुंचाये जाते हैं जहा उनको एक्सपोर्ट करनेके योग्य बनाया जाता है। सागवन्में भी लकड़ी की उत्तमताके अनुसार ४ श्रेणी होती हैं जिनमेंसे प्रथम श्रेणीका माल बिलायत को सीधा एक्सपोर्ट कर दिया जाता है। इसके बाद दूसरी श्रेणीका माल कलकत्ता, तीसरीका बम्बई और चौथीका मद्रासको वहींसे एक्सपोर्ट किया जाता है। इसके बाद मध्यप्रदेश (जि० चाँदा) टावनकोर और मद्रास (बयनाद,) उत्तर कोकोनाड़ामें भी होता है। भारतमें ही बहुत अधिक परिमाणमें उत्तम लकड़ीकी मांग रहती है। भारतसे जहां लकड़ी विदेश जाती है वहां विदेशसे भी बहुत सी लकड़ी भारत आती है। विदेशसे जो लकड़ी यहां आती है उसमें सागवन् जावा और श्यामसे, चार और डीलकी लकड़ी अमेरिकासे। 'जररा बुड' आष्ट्रेलिया से। इसके अतिरिक्त रेलवेके 'सिलीपर' भी आष्ट्रेलियासे आते हैं। और दियासलाई, चायके बक्स, खिलौने, खेलकी चीजें, गाड़ियां मेज, कुर्सी, तथा जहाजके बने-बनाये हिस्सेके रूपमें भी विदेशसे बहुत सी लकड़ी आती है।

लकड़ीके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है।

भगवानदास बागला राय बहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू मदनलालजी बागला हैं। इसकी बम्बई, मोलमीन, (बर्मा), रंगून, मंडाले आदि स्थानोंपर शाखाएं हैं। यहां इसका आफिस नीमतल्ला—स्ट्राड रोडमें है। तारकापता है Kayora—यहां बैंकिंग, जमींदारी एवम लकड़ीका व्यापार होता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमे बम्बई विभागके पेज नं० ५३ में चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स भीमराज ज्वालादत्त

यह फर्म कलकत्तेके टिम्बरके व्यापारियोंमे बहुत पुरानी है। पहिले इस फर्मपर भीमराज मुरलीधरके नामसे व्यापार होता था। इस फर्मके स्थापक सेठ भीमराजजी सन् १८४४ में कलकत्ता आये तथा आरम्भसे ही आपने टिम्बरका व्यवसाय आरंभ किया। आपके २ पुत्र हुए सेठ मुरलीधरजी एवं सेठ ज्वालादत्तजी। इन सज्जनोंमेंसे सेठ ज्वालादत्तजी कुछ समय पूर्वसे भीमराज ज्वालादत्तके नामसे अपना अलग व्यवसाय करते हैं एवं बाबू मुरलीधरजी मोलमीनमें व्यवसाय संचालित करते हैं। लकड़ीके व्यापारियोंमें यह फर्म प्रतिष्ठित मानी जाती है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—भीमराज ज्वालादत्त ६७।२३ स्ट्राड रोड—यहां आपका काठगोला है। तथा काठकी बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स मोतीलाल राधाकिशन

इस फर्मका हेड आफिस यहीं है। इसके वर्तमान संचालक बा० राधाकिशनजी बागला हैं। यहा करीब १३ वर्षोंसे यह फर्म स्थापित है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें बम्बई विभागके पेज नं० ४२ में दिया गया है। यहा इस फर्मपर लकड़ीका अच्छा व्यापार होता है। यहाका पता स्ट्रेंड रोड है। तारका पता Bagla है।

मेसर्स रामप्रसाद चिमनलाल गनेड़ीवाला

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर स्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके गनेड़ीवाला सज्जन हैं।

स्व० बा० चिमनलालजी गनेडीवाला

बा० व्रजलालजी गनेडीवाला

बा० राधाकृष्णजी गनेडीवाला

सर्व प्रथम रंगलालजी गनेड़ीवाला सम्वत् १९०० के लगभग रतनगढ़से कलकत्ता आये। आपने हरीवक्स हरीप्रसादके साझेमें कपड़ेकी चलानीका काम आरम्भ किया और इसके कुछ ही समय वाद आप रामप्रसाद गंगाप्रसादके नामसे अपना स्वतंत्र व्यवसाय करने लगे। सेठ रंगलाल जीके चार पुत्र थे—सेठ रामप्रसादजी, सेठ गंगाप्रसादजी, सेठ केदारबख्शजी तथा सेठ शिवदयालजी। आपकी दूकानपर कपड़ेकी चलानी और लकड़ीका व्यापार होता था।

सेठ रामप्रसादजीकी धार्मिक कार्योंकी ओर अधिक रुचि थी अतः आपने २५ हजारकी एक रकम धार्मिक कार्योंके लिये निकाली थी। इसके ब्याजसे रतनगढ़में पढ़नेवाले विद्यार्थियोंके भोजनका प्रबन्ध होता है। सम्वत् १९५६ में सेठ रामप्रसादजीके पुत्र सेठ चिमनलालजी तथा सेठ बृजलालजीने अपना अलग व्यवसाय स्थापित कर लिया। वर्तमानमे इस फर्मपर प्रधान व्यापार सराफी और लकड़ीका होता है। इस व्यवसायमें इस फर्मने अच्छी सम्पत्ति पैदा की। इसकी गणना कलकत्तेकी प्रतिष्ठित फर्मोंमें की जाती है। इस फर्मकी उन्नति सेठ चिमनलालजी और सेठ बृजलालजी के हाथोंसे हुई।

सेठ चिमनलालजीने अंग्रेजी मार्का लकड़ीके व्यापारको सर्व प्रथम चलाया और उससे अच्छा लाभ उठाया। व्यापारिक क्षेत्रमें प्रतिष्ठा पा आपने धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रमें उच्च स्थान प्राप्त किया। आप सेण्ट्रल बैंक आफ इण्डियाकी कलकत्ते वाली ब्रांचके प्रधान चेयरमैन रहे और आजीवन उसके डायरेक्टर रहकर उसकी उन्नतिका प्रयत्न करते रहे। इसके अतिरिक्त कलकत्तेके विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल, विशुद्धानन्द सरस्वती औषधालय, मारवाड़ी ऐसोसियेशन, और रतनगढ़के ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम आदिके संस्थापन एवं सञ्चालनमें आपका बहुत बड़ा हाथ रहा है। विशुद्धानन्द विद्यालयका भव्य, भवन आपहीके उद्योगका फल है। इसमें आपकी फर्मने स्वयं चन्दा दिया और साथही दूसरोंसे भी चन्दा दिलवानेमेंबहुत परिश्रम किया। ६ वर्षतक आप इस संस्थाके सेक्रेटरी रहे और पश्चात् प्रेसिडेण्ट पदको सुशोभित किया। इसी प्रकार विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पतालमें आपने अपनी फर्मकी ओरसे ५१ हजारका दान दिया और साथ ही औरोंसे भी चन्दा दिलवाया। इस संस्थाके पाँच प्रतिष्ठित संस्थापकोंमें आप माने जाते हैं। आप इसके आजीवन ट्रस्टी रहे। इसी प्रकार उपरोक्त संस्थाओंमें किसीके प्रेसीडेण्ट किसीके वायस प्रेसीडेण्ट तथा किसीके सेक्रेटरी रहे।

सेठ चिमनलालजीने अपना एक ८।१ रूपचन्दराय स्ट्रीट वाला तीन लाख रुपयेकी लागत का विशाल मकान जिसके किराये की आमदनी करीब १२००) १५००) रुपये मासिक है एक ट्रस्टके जिम्मे किया है। यह ट्रस्ट उक्त आमदनीसे विधवाओं, गरीबों एवं अन्य जाति भाइयोंकी

सहायता तथा अन्य धार्मिक कार्योंमें सहायता करता रहता है। इस प्रकार यह ट्रस्ट अपना कार्य सुचारु रूपसे चलाये जा रहा है।

सेठ साहबने ऋषिकुल हरिद्वारकी एक सहायक कमेटी कलकत्तेमें स्थापित की। और आजीवन उसके सेक्रेटरी रहे आपके प्रभावसे इसमें एक भारी रकम इकट्ठा होगयी जिसका व्याज वहा बराबर पहुंचाया जा रहा है। उक्त ऋषिकुलके अन्तर्गत आयुर्वेदिक कालेजके लिये आपने एक लाखका चन्दा करवाया और स्वयं भी उसमें अच्छी रकम दी। इस रकमका व्याज भी उक्त संस्थाको बराबर पहुंचता रहता है।

आपने अपने निवास स्थानमें कई तालाव, कुएं आदि बनवाकर जनताको बहुत सुविधा पहुंचाई। सेठ चिमनलालजी तथा सेठ वृजलालजी दोनों भाइयोंने मिलकर रतनगढ़में रघुनाथ विद्यालयके लिये एक भव्य भवन निर्माण कराया है।

सेठ चिमनलालजी कलकत्तेके मारवाड़ी समाजमें बहुत प्रतिष्ठित और प्रभावशाली महानुभाव माने जाते थे। यहा होनेवाले हर एक सार्वजनिक चंदोंमें आपकी फर्मका बहुत बड़ा हाथ रहता था। आपकी स्मृति स्वरूप विशुद्धानन्द विद्यालय, विशुद्धानन्द औषधालय, विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल, मारवाड़ी ऐसोसियेशन, और रतनगढ़ तथा हरिद्वार आदिकी कई एक संस्थाओंमें आपके तैल चित्र मौजूद हैं। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास सम्वत् १९८० में हुआ। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री सेठ वृजलालजी गनेड़ीवाला तथा श्री सेठ चिमनलालजीके पुत्र सेठ रामेश्वरलाल जी हैं।

सेठ वृजलालजी वयोवृद्ध और सरल प्रकृतिके महानुभव हैं। आप अ० भा० मारवाड़ी अग्रवाल पंचायतके प्रथम अधिवेशनके उपस्वागताध्यक्ष रह चुके है।

सेठ रामेश्वरलालजी भी अपने पिताकी तरह हर एक संस्थाओंमें सहयोग देते रहते हैं आप सेंट्रल बैंक आफ इण्डियाकी कलकत्तेवाली शाखाके डायरेक्टर है। इसके अतिरिक्त मारवाडी एसोसियेशन, विशुद्धानन्द सरस्वती औषधालय आदिके वायस प्रेसीडेण्ट, सदस्य तथा सेक्रेटरी रह चुके हैं।

सेठ वृजलालजीके दो पुत्र हैं जिनके नाम श्री नारायण तथा भगवती प्रसाद हैं।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता—मेसर्स रामप्रसाद चिमनलाल १८ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट तारका पता—(Chimpansy)—यहां फर्मका हेड आफिस है तथा लकडीका व्यापार, बैंकिङ्ग और आढ़तका काम होता है।

बा० हरिप्रसादजी गनेड़ीवाला
(रामप्रसाद चिमनलाल)

बा० नन्दलालजी लिहला
(हरदत्तराय नन्दलाल)

लक्ष्मीनारायण गनेड़ीवाला
(रामप्रसाद चिमनलाल)

बा० जयनारायणजी लिहला
(हरदत्तराय नन्दलाल)

२ कलकत्ता—मेसर्स रामप्रसाद चिमनलाल 5 B. मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट T. N. 1950 B.B. —यहां लकड़ीका व्यापार होता है।

३ कलकत्ता—मेसर्स रामप्रसाद चिमनलाल 67|10 स्ट्राण्डरोड T. N. 1619 B. B.—यहां लकड़ीका व्यापार होता है।

४ कलकत्ता—मेसर्स बृजलाल तोलाराम एण्ड कम्पनी ५ मदनमोहनदत्त लेन T. N. 374 B. B.—यहां लकड़ीका व्यापार होता है।

मेसर्स हरदत्तराय नन्दलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रायगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके लिहिला सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन रंगूनमें ३०।३२ वर्ष पूर्व सेठ हरदत्तरायजी एवं सेठ नन्दलालजीने किया था। आरम्भमें यह फर्म कपड़ेका कारबार करती थी। तथा इधर २० वर्षोंसे इस फर्मने लकड़ीके व्यवसायको अच्छा बढ़ाया है।

इस समय इस फर्मके मालिक सेठ नन्दलालजी तथा आपके भाई बा० जयनारायणजी एवं सेठ हरदत्तरायजीके पुत्र बा० जानकीदास हैं। बाबू नन्दलालजीके तीन पुत्र हैं जिनके नाम बाबू गोपीरामजी, बाबू सावलरामजी तथा श्री कालूरामजी है। बाबू जयनारायणजीके पुत्र मोतीलालजी माण्डलेमें काम काज देखते है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगून—मेसर्स हरदत्तराय नन्दलाल ४०।६ मार्चेन्ट स्ट्रीट—लकड़ी तथा कपड़ेका व्यापार और कमीशन का काम होता है।

माण्डले—जयनारायण जानकीदास म्युनिसिपल बाजार—कपड़ेका व्यापार तथा लकड़ीका व्यापार होता है। यहां आपकी २ लकड़ीकी मिलें हैं।

कलकत्ता—मेसर्स हरदत्तराय नन्दलाल ६७३ हरिसनरोड—यहां सराफी लेन देन होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हरदत्तराय नन्दलाल मदनमोहन लेन नीमतल्ला—यहां आपका काठगोला है। इस फर्मका काम बाबू गोपीरामजी देखते है।

विदेशकी बड़ी बड़ी कम्पनियोंके आर्डर सप्लाईका काम भी आरम्भ किया जो आपकी फर्म आज भी पूर्ववत् चला रही है। व्यवसायकी उन्नतिकर आपने अपनी स्थायी सम्पत्ति भी बढ़ाई जिसके परिणाम स्वरुप इस परिवारके पास गया जिलेकी जमीदारीके अतिरिक्त कलकत्ता शहरमें भी कितनी ही इमारतें हो गयी हैं।

सेठ गणपतरायजी आस्तिक भगवत् भक्तिपरायण थे। धार्मिक कार्योंमें आपकी सहानुभूति और सहयोग सदा रहा करता था। आपने मेडिकल अस्पतालको ४० हजारका दान दिया है आपने अपने अन्तिम समयमें भवानीपुर (कलकत्ते) में नं० ११, १३, १५ हरीसन मुकर्जी रोडके दो मकान और जमीन जिसका किराया ३००) रु० मासिक आता है धार्मिक कार्योंके लिये दानकर दिया। आपने राजगढ़में एक अस्पताल खोला जिसकी देखरेख राज्यपर छोड़ दी है। एवं राजगढ़ स्टेशनके निकट एक बहुत बड़ा धर्मशाला बनवाया है। इस प्रकार ७६ वर्षकी आयुमें सम्वत् १९७५ के माघ मासमें आप स्वर्गवासी हुए। आपके ४ पुत्र हैं जिनके नाम सेठ केदारनाथजी, सेठ तनसुखरायजी, सेठ नागरमलजी, तथा सेठ इन्द्रचन्द्रजी हैं। सेठजीके स्वर्गवासी होनेके एक मास बाद ही सेठ केदारनाथजीका भी स्वर्गवास हो गया। आप बड़े सरल स्वभावके मिलनसार महानुभाव थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ तनसुखरायजी, सेठ नागरमलजी, सेठ इन्द्रचन्द्रजी और स्व० सेठ केदारनाथजीके पुत्र सेठ बाबूलालजी है।

सेठ तनसुखरायजी गाढ़िया

आप अधिकतर देशमें ही रहते है। शरीरके अस्वस्थ रहनेके कारण आपने ढाई तीन लाख की सम्पत्ति लोकोपकारार्थ निकाल रक्खी है। जिसकी आयसे राजगढ़में लड़कियोंके पाठशालेका प्रबन्ध, गउओंके लिये जलकी व्यवस्था, कुआ, औषधालय, और विद्यार्थियोंकी शिक्षाका प्रबन्ध किया जाता है।

सेठ नागरमलजी राजगढ़िया

आरम्भमें आपने विलायती धोती जोड़ेके व्यापारमें प्रवेश किया, आपने कलकत्ते के सभी बड़े२ आफिसोंसे कारबार करना आरम्भ किया और इस व्यवसायमें अच्छी उन्नति की। आप अमदाबादकी मिलोंसे देशी धोती जोड़े मंगाने लगे और अल्पकालमें ही धोती जोड़ेके व्यवसायमें आप नामांकित व्यापारी माने जाने लगे। आप व्यवहार चतुर और मिलनसार हैं। आपने गयाजिलेमें एक राजासे अल्प मूल्यमें बहुत बड़ी जमीदारी और कई खानें खरीद ली हैं। मारवाड़ी समाजमें आपका अच्छा प्रभाव है। गत वर्ष कलकत्तेके मारवाड़ी ऐसोसियेशनके प्रेसिडेन्ट भी आपही थे आज कल आप अ० भा० अ० पंचायतके वायस प्रेसिडेन्ट हैं।

स्व० गनपतरायजी राजगढ़िया
(गणपतराय क०)
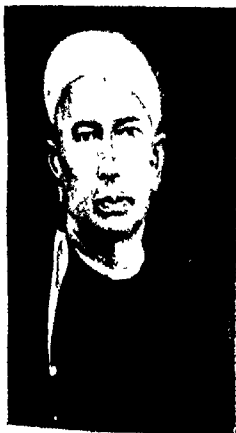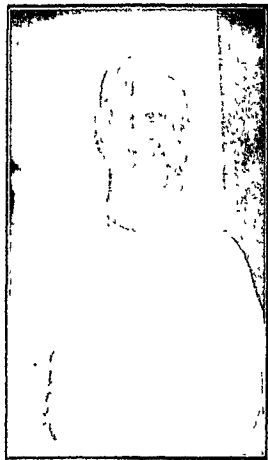
बाबू केदारनाथजी राजगढ़िया
(गणपतराय क०)

सेठ इन्द्रचन्द्रजी राजगढ़िया

आपने अपने भाइयोंके साथ धोती जोड़ेके व्यवसायमें सहयोग देना आरम्भ किया। आपने इस व्यापारको अच्छी अवस्थामें पहुंचाया। आपने अभ्रकके व्यवसायमें प्रवेशकर उसकी भी अच्छी उन्नति की। आज अभ्रकके व्यवसायमें आप अच्छे अनुभवी एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न माने जाते हैं। आपने आर्डर सप्लाईके कामको भी अच्छा बढ़ाया। आपने गोचर भूमिके लिये मथुरा, गया और कलकत्तेके पिंजरापोलको सहायता दी है।

सेठ बब्बूलालजी राजगढ़िया

आप स्व० सेठ केदारनाथजीके जेष्ठ पुत्र हैं। आपका हिन्दी साहित्यकी ओर अच्छा अनुराग है। आप मिलनसार एवं शिक्षित सज्जन हैं। आपको विद्वानोंका सतसंग प्रिय है।

सेठ रामप्रसादजी

आप सेठ नागरमलजीके पुत्र हैं। आप अभ्रकके जानकार हैं और उसके व्यवसायमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय एण्ड कम्पनी १३ सैयदसाली लेन तारका पता "Maloty" calcutta. phone 1364B.B.—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। यहींसे अभ्रकके एक्सपोर्टका काम लंदन, लिवरपूल, मैनचेस्टर, फ्रांस, अमेरिका, बोस्टन, जर्मनी; जापान, आस्ट्रेलिया, इटली, स्वीटजरलैंण्ड आदिसे होता है। इसके अतिरिक्त यहींसे आर्डर सप्लाईका काम भी होता है।

इस फर्मकी खुदकी १७ के लगभग अभ्रककी खानें गया तथा हजारीबाग जिलेमें हैं। इनकी बड़ी शाखायें निम्नलिखित है :—

गिरिडिह, पचम्बा, कोडर्मा, डोमचांच, नवादा, भानाखाय आदि।

१ कलकत्ता—मेसर्स गणपतराय केदारनाथ १२ सैयदसाली लेन—यहा सेमर तथा अकवानकी रुईका व्यापार तथा आर्डर सप्लाईका काम होता है।

२. कलकत्ता मेसर्स केदारनाथ तनसुखराय ६१ सूतापट्टी—यहां कपड़ेका कारवार होता है।

३ कलकत्ता—मेसर्स इन्द्रचन्द्र बब्बूलाल तुलापट्टी—यहां पर हैसियनका कारवार होता है।

४ कलकत्ता—मेसर्स नागरमल लाभचंद २१२ सूतापट्टी—यहां सूतेका कारबार होता है।

हवड़ा (सलकिया) नं० ५३।५४।५५ घर्मतल्ला रोड गणपतराय कम्पनी—यहां सेमल और अकवान काटनकी मिलका काम होता है।

मेसर्स जेठमल भोजराज

इस फर्मके मालिक सिरसा (हिसार) के निवासी हैं। आप सुरानी समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस दार्जिलिंग है। वहां सन् १८८४ में सेठ छोगमलजीके हाथोंसे इस फर्मका स्थापन हुआ था। वर्तमानमें आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी सुरानी फर्मके मालिक हैं।

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित बंगाल विभागके दार्जिलिंग नामक स्थानपर दिया गया है। यहां इसका आफिस इसी नामसे ४ दहीहट्टामें है।

आईल-मिल-मालिक

मेसर्स छोटेलाल बनवारीलाल

इस फर्मके मालिक मेसर्स हरचन्दराय गोवर्द्धनदास कलकत्ता है। आपका हेड आफिस भागलपुर है। अतः विस्तृत परिचय भागलपुरमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स नवरंगराय मोर

इस फर्मका हेड आफिस करीमगंजमें है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके आसाम विभागमें पेज नं० ५० में दिया गया है। यहां इसका आफिस १६।१। हरिसन रोड बांगड़ बिल्डिंगमें है। इस फर्मपर यहा तेल एवम खलीका व्यापार होता है। यहां गोवाबागानमें आपका एक तेल मिल भी है।

मेसर्स बरदीचंद रामकुमार

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान झूंझनू (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल समाजके खंडेलिया सज्जन है। सर्व प्रथम सेठ बरदीचंदजी करीब ३० वर्ष पूर्व देशसे कलकत्ता आये। तथा यहां आकर आपने किराने आदिकी दलालीका काम आरंभ किया। करीब ३।४ वर्ष बाद से ही आपने तेलकी मिलका काम शुरू किया। आपका स्वर्गवास संवत् १९७० मे हुआ। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ रामकुंवारजीने फर्मके कामको सम्हाला। बाबू रामकुंवारजीने इस फर्मके कारवारमें विशेष रूपसे तरक्की कर अपनी मान एवं प्रतिष्ठा स्थापित की। आपका स्वर्ग वास संवत् १९७७ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामकुंवारजीके पुत्र बाबू रामेश्वरदासजी हैं। आप सरल प्रकृतिके सज्जन है। इस कुटुम्बकी दानधर्मके कामोंकी ओर अच्छी रुचि रही है। आपकी ओरसे देशमें मंदिर कुंआ, तथा धर्मशाला बनी हुई है। तथा वहां पर आपकी ओरसे सदावर्तका भी प्रबंध है। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बदरीचन्द रामकुमार ४६ स्ट्रांड रोड T. No ४२० B.B। T A. Enormous
यहां कपड़ा तथा चलानीका व्यापार होता है।

कलकत्ता—बदरीचन्द रामकुंवार आँइलमिल ६ राजा राज कृष्ण स्ट्रीट T. N 470 B. B -
यहां आपकी आइल मिल है।

सलकिया—बदरीचन्द रामकुंवार ३२ बनारस रोड T. No 411 How—यहा केपक काटनका
व्यापार होता है।

सलकिया—रामकुंवार रामेश्वर ११ किशनलाल बर्मन रोड—कपाक काटनका व्यापार होता है।

साहबगंज (बिहार)—बदरीचन्द रामदयाल दे पोस्ट रुकमलीगली—यहां तेलकी कल है।

कलकत्ता—बदरीचन्द रामदयाल दे १६ १२।१ गोआबगान स्ट्रीट—यहां तेलकी कल है।

मेसर्स वृद्धिचन्द रामदयाल दे

इस फर्मके मालिक बर्द्धमान (बंगाल) के निवासी बंगाली सज्जन हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामदयाल दे और बाबू आशुतोष दे हैं। कलकत्तेका काम बाबू आशुतोषजी देखते हैं।

आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—वृद्धिचन्द रामदयाल दे गोआबगान—यहा तेल कल है।

साहबगंज—(बिहार) बदरीचन्द रामदयाल दे—यहा तेल कल है।

बर्द्धमान—रामदयाल दे आजमगंज—यहा तेल और चावलकी कल है।

कलकत्ता—बदरीचन्द रामकुंवार ६ राजा राज कृष्ण स्ट्रीट—यहा तेल कलमें आपका हिस्सा है
इस फर्मके मालिक बाबू रामदयाल दे बर्द्धमानमें रहते हैं।

मेसर्स बन्सीधर दुर्गादत्त भगत

इस फर्मके मालिक नवलगढ़ (जयपुर) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्यजातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन करीब ५० वर्ष पूर्व सेठ बंशीधरजीने किया। आपके इस समय चार पुत्र हैं। आपका स्वर्गवास संवत् १९६४ में हुआ। आपके पुत्रोंके नाम क्रमशः बा० घनश्यामदासजी, बा० बैजनाथजी, बा० दुर्गादत्तजी, तथा बा० प्रेमसुखदासजी हैं। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक उपरोक्त चारोंही सज्जन हैं। आपलोग अपने व्यवसायको सुचारुरूपसे संचालित कर रहे हैं। इस फर्मकी आगरा तथा कलकत्तामें तेलकी मिलें चल रही हैं।
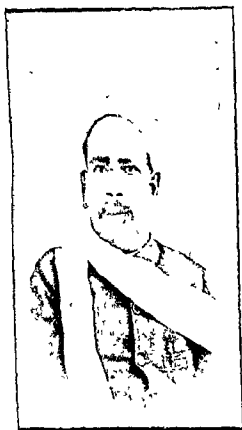
बाबू घनश्यामदासजी भगत (बंशीधर दुर्गादत्त)
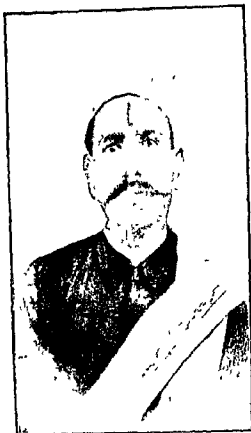
बाबू बजनाथजी भगत (बंशीधर दुर्गादत्त)

बाबू दुर्गादत्तजी भगत (बंशीधर दुर्गादत्त)

बाबू प्रेमसुखदासजी भगत (बंशीधर दुर्गादत्त)

बाबू भगवानदासजी भगत (भगवानदास मदनलाल)
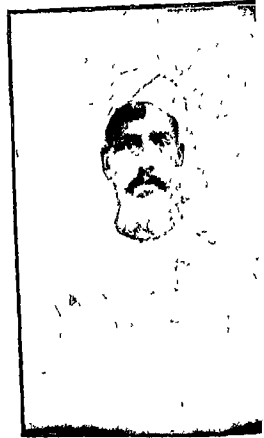
बाबू मदनलालजी भगत (भगवानदास मदनलाल

[illegible] गोपीराम)

श्रीफलचन्दजी भगत (भगवानदास मदनलाल

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स बंशीधर दुर्गादत्त १२६ बड़तल्ला स्ट्रीट T· A. Kasturi—यहां इस फर्मका हेड आफिस है तथा बैंकिंग, आढ़त और गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—भगत आइल मिल १५३ अपर सरक्यूलर रोड—यहां आपकी तेलकी मिल है।

आगरा—घनश्यामदास प्रेमसुखदास—यहा आढ़तका काम होता है।

आगरा—घनश्यामदास बैजनाथ आइल मिल मापधान—यहा आपकी तेल मिल है।

मेसर्स भगवानदास मदनलाल भगत

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर) स्टेट है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके भगत सज्जन हैं। सर्व प्रथम सेठ वंशीधरजी संवत् १९३९ में कलकत्ता आये। तथा १ साल के पश्चात् आपके दोनों छोटे भाई सेठ भगवानदासजी एवं हरिवक्षजी भी कलकत्ता आये। आप सब भाइयोंने मिलकर गल्ला, कपड़ा तथा दलालीका काम आरंभ किया। संवत् १९७४ में तीनों भाइयोंकी संतानें अलग २ होगईं। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भगवानदासजी हैं। आपके पुत्र मदनलालजी कारवार देखते हैं एवं पौत्र फूलचन्दजी भी व्यवसायमें भाग लेने लग गये हैं। आपके कुटुम्ब की ओरसे देशमें शिवमंदिर, कुआं, धर्मशाला आदि बनी हुई हैं। वहां आपकी ओरसे सदावर्तका भी प्रबन्ध है।

इस फर्मका व्यापारिक परिच इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स भगवानदास मदनलाल २६ बडतल्ला स्ट्रीट—यहांआढ़त और बैंकिंगका काम होता है

कलकत्ता—भवानदास मदनलाल आइल मिल २७ वापद मिर्जापुर रोड—यहां आइल मिल है।

कलकत्ता—जमनादास मदनलाल आइल मिल ८० ग्रे स्ट्रीट— यहां आइल मिल है।

मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ वाजोरिया

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास फतहपुर (जयपुर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके वाजोरिया सज्जन हैं। संवत् १८७५ के करीब सेठ रामानंदजी फतहपुरसे आगरा आये, वहींसे सेठ शिवदयालजी तथा हरदयालजी संवत् १९०२ मे गाजीपुर गये और वहां आपने नीलके बीजोंका व्यापार आरंभ किया। सेठ शिवदयालजी वाजोरियाने नीलके बीजोंके व्यवसाय एवं "सावे घास" (जिसका कागज बनता है) के व्यवसायमे वहुत अधिक सम्पत्ति उपार्जितकी

और गोरखपुरमें जमीदारी भी खरीदी । आपने संवत् १९१२ में कलकत्तेमें अपनी दुकान स्थापितकी और तभीसे आपका कुटुम्ब यहीं निवास करता है। सेठ शिवदयालजीने धार्मिक एवं सामाजिक जगतमें भी अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। आपका सुविस्तृत परिचय मेसर्स शिवदयाल रामजीदास फर्मके विवरणमें दिया गया है। आपके ३ पुत्र हुए सेठ गौरीदत्तजी, सेठ जगन्नाथजी एवं सेठ रामजीदासजी। इन सज्जनोंमेंसे सेठ जगन्नाथजीका ही कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है। आपका स्वर्गवास संवत १९७० में हुआ, तबसे आपके पुत्र शिवदयाल जगन्नाथके नामसे अपना व्यवसाय संचालित करते हैं।

सेठ जगन्नाथजीके तीन पुत्र हुए श्रीकृष्णलालजी बाजोरिया, श्री नारायदासजी बाजोरिया एवं श्री भगवानदासजी बाजोरिया, उपरोक्त सज्जनोंमेंसे बाबू कृष्णलालजीका देहावसान सन् १९१८ में हो गया है। आपने अपने देहावसानके समय २६ हजार रुपयोंका दान किया है जिसके व्याजसे अकाल पीड़ितों, अनाथों तथा दुर्घटना पीड़ित व्यक्तियोंको सहायताका कार्य होता है। आप बड़े सरल एवं साधु प्रकृतिके सज्जन थे।

बाबू नारायणदासजी बाजोरिया शिक्षित एवं मिलनसार सज्जन हैं। सन् १९१७ में आपने कानपुरमें एक गंगा आइल मिल तथा जीनिंग और प्रेसिंग फेक्टरी स्थापितकी। आप इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स, यू० पी० चेम्बर ऑफ कामर्स, तथा कानपुर सनातनधर्म कालेज ऑफ कामर्सके मेम्बर हैं। तथा हरेक प्रकारकी देशहित सम्बन्धी संस्थाओंमें आप भाग लिया करते हैं। आप टीटागढ़ पेपर मिलके डायरेक्टर हैं। आपकी फर्मकी ओरसे हिन्दू युनिवर्सिटीमें २५ संस्कृत पाठी ब्राह्मण छात्रोंको ५) मासिककी छात्रवृत्ति दी जाती है। कानपुर कालेज ऑफ कामर्समें भी आपने सहायता दी है। आपको खादीसे विशेष स्नेह है।

आपने सन १९२७ में बाबू घनश्यामदासजी बिड़लाके साथ इग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्वीटजरलैंड, आदि देशोंकी यात्रा की थी। आपके छोटे भ्राता बाबू भगवानदासजी बाजोरिया B. A. L. L B भी व्यवसाय संचालनमे सहयोग देते हैं। बाबू कृष्णलालजीके पुत्र बंशीधरजी बाजोरिया हैं। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ ११७ हरिसन रोड—यहां हेड ऑफिस है।

कलकत्ता—मेसर्स शिवदयाल जगन्नाथ ६४ लोअर चितपुर रोड फोन नं० २५१२ तारका पता (Sunkharid)—यहा आढ़त, वेङ्किग, शेअर और तेलका व्यापार होता है।

कानपुर—मेसर्स जगन्नाथ बीजराज, फोपरगंज—यहा आपकी गंगा ऑइल मिल तथा कॉटनजीनिंग प्रेसिंग फेक्ट्री है, इसके अलावा आढ़त, तेलकी बिक्री और रुईका व्यापार होता है।
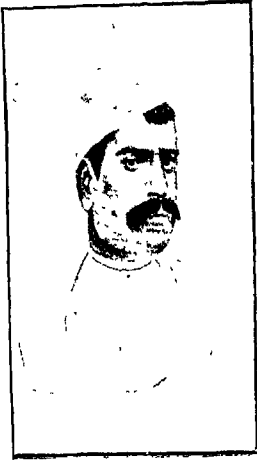
स्व० बाबू जगन्नाथजी बाजोरिया (शिवदयाल जगन्नाथ)

स्व० बाबू कृष्णलालजी बाजोरिया (शिवदयाल जगन्नाथ)

बाबू हरीबख्शजी भगत (हरीबख्श गोपीराम)

बाबू नारायणदासजी बाजोरिया बी० ए०
([illegible])

मेसर्स सूरजमल घनश्यामदास

इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए १८।२० वर्ष हुए। कलकत्ता फर्मका संचालन बाबू घनश्यामदासजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—सूरजमल घनश्यामदास ६५ लोअर चितपुर रोड T. A, Peas—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—सूरजमल केदारनाथ १५३ अपर सरक्यूलर रोड—यहां आपकी आॅइल मिल है।

सीतापुर (लखनऊ)—सूरजमल घनश्यामदास—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

बिस्वान (सीतापुर)—सूरजमल घनश्यामदास " "

मेसर्स हरीबख्श गोपीराम भगत

इस फर्मके मालिक स्व० सेठ बंशीधरजी भगतके छोटे भाई सेठ हरीबक्षजी भगत हैं। आपकी फर्मपर पहिले बंशीधर दुर्गादत्तके नामसे व्यवसाय होता था पर संवत् १९७४ से आपके भाई अलग २ हो गये तबसे आप उपरोक्त नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके भगत सज्जन हैं। आपके पुत्र सेठ गोपीरामजीका शरीरान्त होगया है। आपके पौत्र बा० प्रह्लादरायजी पढ़ रहे हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे देशमें शिवमन्दिर, कुआं, धर्मशाला आदि बनी हुई है। वहां आपकी ओरसे सदावर्तका भी प्रबंध है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ कलकत्ता—मेसर्स हरीबख्श गोपीराम २६ बड़तल्ला स्ट्रीट—यहाँ आढ़त, बेंकिंग तथा गल्लेका व्यापार होता है।

२ कलकत्ता—मेसर्स हरीबख्श गोपीराम १५ हलशीबगान रोड—यहा आपकी आइल मिल है।

छातेके व्यापारी

मेसर्स तेजपाल विरदीचंद सुराना

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरू (बीकानेर) में है। इसके वर्तमान मालिकोंमें श्रीयुत सेठ रामचन्द्रजी सुराना, श्रीयुत छोटेलालजी सुराना, श्रीयुत श्रीचन्द्रजी सुराना तथा श्रीयुत शुभकरणजी सुराना है। इस फर्मका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें चूरूके पोर्शनमें दिया गया है।

श्रीयुत शुभकरणजी सुराना सन् १९२८ में बहुमतसे बीकानेर लेजिस्लेटिव एसेम्बलीके मेम्बर चुने गये। तथा इसी वर्ष श्रीमान् बीकानेर नरेशने आपको हाइकोर्टका जूरर भी नियुक्त किया है। इसके अतिरिक्त आप कलकत्ता युनिवर्सिटी इनस्टट्यूटके सीनियर मेम्बर और नेशनल हार्स ब्रीडिंग एण्ड शो सोसाइटी ऑफ इण्डिया देहलीके आजीवन सदस्य हैं। आप सार्वजनिक कार्य्योंमें बहुत अच्छा भाग लेते हैं। आपके विद्याप्रेमका नमूना सुराणा पुस्तकालय है। इस पुस्तकालयमें करीब २५०० तो हस्तलिखित पुस्तकें हैं। और भी कई आश्चर्य्यजनक वस्तुएं इसमें संगृहीत की गई हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट T. A. Surana—इस फर्मपर विलायती कपड़ेका तथा छातोंके सामानका इम्पोर्ट होता है।

कलकत्ता—मेसर्स तेजपाल विरदीचन्द २ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहा छातोंकी बिक्री होती है। नं० ४३ आर्मेनियन स्ट्रीटमें आपका छातेका बहुत बडा कारखाना है। इसमें करीब ३०० दर्जन छाते रोज तैय्यार होते है।

कलकत्ता—मेसर्स श्रीचन्द सोहनलाल—२ रघुनन्दन लेन—यहां भी छातेका एक कारखाना है।

कलकत्तेके छातेके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है।

मेसर्स मोजीराम पन्नालाल

इस फर्मको स्थापना लगभग ८० वर्ष पूर्व भिनासर (बीकानेर) निवासी सेठ मौजीराम बांठियाने कलकत्तेमें की थी। इसका विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागमें पृष्ट १३५ पर दिया गया है। कलकत्तेमें यह फर्म छातेका व्यापार करती है। छाता तैयार करनेका इसका एक कारखाना भी है। इसका कलकत्तेका पता मेसर्स मौजीराम पन्नालाल ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट है और तारका पता है Rathyatra छातेके अतिरिक्त यहां हुण्डी चिट्ठीका काम भी होता है।

मेसर्स प्रेमराज हजारीमल

इस फर्मके संस्थापक बा० प्रेमराजजी बांठिया थे। वर्तमानमें इसके व्यवसायका संचालन आपके प्रपौत्र बा० बहादुरमलजी करते हैं। इसका विस्तृत परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभाग पृष्ट १२५ में दिया जा चुका है। इसका कलकत्तेमें कारबार ४ आर्मेनियन स्ट्रीट पर है। तथा तारका पता Chatastick है। यहां छाता तैयार करनेकी फैक्ट्री है और साथही छाताका इम्पोर्ट और बिक्रीका काम होता है।

चपड़ेके व्यापारी
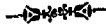
मेसर्स हीरालाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मिर्जापुर (यू० पी०) है। आप अग्रवाल वैश्य-जातिके हैं। इसफर्मका स्थापन करीब ३०।३२ वर्षों पूर्व हीरालालजी अग्रवालाके हाथोंसे हुआ था। कलकत्तेके चपड़ेके व्यवसाइयोंमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। सन् १९८४ से आपके यहा जूटके एक्सपोर्टका काम भी होने लगा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक वा० वंशीधरजी एवं बा० हीरालालजीके पुत्र बा० जवाहरलालजी वा० गणेशप्रसादजी हैं वर्तमानमें इस फर्मके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हीरालाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी ४ मिशन रो T. A. Shellac यहां चपड़ेका बहुत बड़ा व्यापार होता है। मिर्जापुर, मानभूमि, दुमका, पकोड़ आदि स्थानोंपर चपड़ेकी खरीद होती है। एवं आपकी आढ़तमे बिकनेके लिये भी वहासे आता है। इसके अलावा जूट बेलिंग और शीपिंगका काम होता है।

कलकत्ता (आलमबाजार) बारानगर – हीरालाल अग्रवाला कं० – यहां आपका चपड़ेका कारखाना है।

पकोड़ (संथालपरगना) मेसर्स वंशीधर जवाहरलाल—यहा चपड़ेकी खरीदी होती है।

डाल्टनगंज (पलामू) मेसर्स वंशीधर जवाहरलाल--यहां भी चपड़ेकी खरीदीका काम होता है।

बा० कन्हैयालालजी और वा० वसंतलालजीकी फर्मका परिचय इस प्रकार है।

मिर्जापुर—मेसर्स गोपालदास कन्हैयालाल—यहा चपडेका व्यापार तथा बैंकिंगका काम होता है।

बलरामपुर (मानभूमि)—मेसर्स कन्हैयालाल वसंतलाल—यहा चपड़ेका व्यापार तथा अढ़तका काम होता है। तथा चपड़ेका कारखाना है।

मेसर्स भागीरथीराम ब्रदर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मिर्जापुरमें है। आप जायसवाल जातिके सज्जन

हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए २८ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ भागीरथी रामजीने की। इस फर्मके मालिक रायबहादुर सेठ भागीरथीरामजी और गरीबदासजी हैं। आपको गव्हर्नमेंटकी ओरसे सन् १९२५ में रायबहादुर का खिताब प्राप्त हुआ। है। इसके अतिरिक्त आपने मिरजापुरमें एक हाइ स्कूल खरीदा है। यह स्कूल बाबूलाल हाइस्कूलके नामसे चल रहा है। इसके अतिरिक्त कलकत्ते और मिर्जापुरकी जायसवाल सभाके आप सभापति हैं इसी प्रकार और भी कई सार्वजनिक कार्योंमें आप भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रा० ब० भागीरथीराम ब्रदर्स १ लालबाजार स्ट्रीट T. No 638 Cal T.A. birbanket—इस दुकानपर चपड़ेका बहुत बड़ा बिजिनेस होता है।

पकौड़—(बंगाल) मेसर्स बसन्तलाल भगवतीप्रसाद—यहां चपड़ेका व्यापार होता है।

मिरजापुर—बाबूलाल भागीरथीराम—यहांपर चपड़ेका व्यापार होता है।

बलरामपुर—मेसर्स किशोरदयाल हीरालाल—यहां चपड़ेका व्यापार होता है।

चाईबासा—गरीबदासजी—चपड़ेका व्यापार होता है।

जरहण्डी (बिहार) ,, , ,,

मेसर्स जवाहरमल चिमनलाल एण्ड कं०

इस फर्मके दो पार्टनर बाबू चिमनलालजी एवं बाबू जवाहरमलजीके पुत्र बाबू श्रीगोपालजी तथा गोवर्द्धनदासजी, चण्डीप्रसादजी तथा माहलीरामजी हैं आपलोग प्रधानतया चपड़ा तथा लाखका व्यापार करते है।

इस फर्मके व्यापार इस प्रकार है—

कलकत्ता—जवाहरमल चिमनलाल ३।१ मेंगोलेन—यहां चपड़ाका व्यापार तथा दलालीका काम होता है।

कलकत्ता—आसाराम जुहारमल २४ ताराचन्द दत्त स्ट्रीट Mirch—यहां लाखका कामकाज होता है।

मिर्जापुर—बलरामपुर, झालदा (मानभूमि) डाल्टनगंज (पलामू) टाऊंजी (ब्रह्मा) रंगून—आसाराम जुहारमल—इन सब फर्मपर लाखकी खरीदी होकर कलकत्ता भेजी जाती है।

बाबू श्रीगोपालजी रतनगढ़ तथा बाबू चिमनलालजी चुरूके निवासी है। आपलोग अग्रवाल समाजके सज्जन है।

मेसर्स आसाराम जुहारमल, टरनर मरीसन कम्पनी लि०—के एजंट और ब्रोकर्स है।

मेसर्स किशुनप्रसाद बंशीधर

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मिर्जापुर (यू० पी०) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू किशुनप्रसादजीके हाथोंसे सन् १८९९ के करीब हुआ। बाबू किशुनप्रसादजीके हाथोंसे ही सर्वप्रथम चपड़ेकी व्यवस्थित रूपसे दलालीका कार्य आरंभ हुआ। आप एवं आपके पुत्र बाबू बंशीधरजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको विशेष तरक्की प्राप्त हुई। कलकत्तेके चपड़ेके व्यापारियोंमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

बाबू किशुनप्रसादजीके पुत्र बाबू सीतारामजी बाबू बंशीधरजी बाबू मुरलीधरजी एवं बाबू बिहारीलालजी हैं। इन सज्जनोंमेंसे बाबू बंशीधरजीका स्वर्गवास १ अक्टूबर सन् १९२३ को कलकत्तेमें होगया है। आप इस फर्मके बहुत होनहार तरक्की करनेवाले थे। बाबू सीतारामजी मिर्जापुरमें ऑनरेरी मजिस्टेट हैं। मुरलीधरजी श्रीराधाकृष्ण मिल कं० मिर्जापुरका संचालन करते हैं। आप सबलोग शिक्षित एवं सज्जन प्रकृतिके हैं। बाबू किशुनप्रसादजीको गव्हर्नमेंटसे सन् १९२३में राय साहबकी पदवी प्राप्त हुई। आपकी वय ६८ वर्षकी है। आपने वर्तमानमें फर्मके व्यवसायका भार अपने पुत्रोंपर छोड़ दिया है। कलकत्तेके व्यवसाय संचालनका कार्य बाबू बिहारीलालजी करते है।

मिर्जापुर - किशुनप्रसाद बिशुनप्रसाद—हेड ऑफीस, यहां लेडलार्डस, बेङ्किग,चपड़ेका व्यापार होता है।

मिर्जापुर—श्रीराधाकृष्ण वीविंग मिल्स—यह मिल कपड़ा बुननेका काम करती है। इसके अतिरिक्त इसमें ऑइलमिल आयर्नफाउंडरी वर्कस फ्लावर मिल आदि सम्मिलित हैं।

कलकत्ता—मेसर्स किशुनप्रसाद बंशीधर ७ मिशन रो T. NO. 4363 T. A Tiger - यहां चपड़ेकी दलालीका काम होता है।

कलकत्ता—बाराणसी घोष स्ट्रीट T. No 68 B B—गद्दी है।

कोटालपोखर (संथाल परगना) किशुनप्रसाद बंशीधर—चपड़ेकी खरीदी होती है।

डाल्टनगंज (पलामू) किशुनप्रसाद बंशीधर—चपड़ेका कारखाना है।

मिर्जापुरमें आपके बहुतसे मकान तथा जमीदारी है यहां आपकी एक बहुत विशाल कोठी बनी हुई है। उसमें आपकी ओरसे श्रीलक्ष्मीनारायणजीका मंदिर बना हुआ है।

कंट्राक्टर्स एण्ड इंजीनियर्स

मेसर्स कार एण्ड को०

इस फर्मके संस्थापक बाबू उपेन्द्रनाथ कार एम० ए० बी० ई० ने सन् १९०६ ई० में इस फर्मकी स्थापना कलकत्तेमें की थी। आपका जीवन बाल्यकालसे ही आशापूर्ण था। अतः आप क्षात्रवृत्ति, डिग्री तथा पदक प्राप्तकर सफल इंजिनियर हुए। आप इन्दौर राज्यमें ऐक्सीक्यूटिव इंजि-नियरके पदपर रहकर दरबारसे साधुवाद प्राप्त करनेमें यशस्वी हुए थे। आपकी ललितकला प्रवीण प्रतिभाका पता दरबारकी ओरसे आप द्वारा किये गये प्रिन्स आफ वेल्सके स्वागत सम्बन्धी सजावटके सुप्रबन्धसे लगा था। आपकी सजावट सम्बन्धी अभिरुचि और जानकारीकी प्रशंसा सभीने की थी।

आपने वहांसे आकर कलकत्तेमें अपना आफिस खोला और इंजिनियर्स एण्ड कन्ट्राक्टर्सके नामसे व्यापार आरम्भ किया। आज कल आपकी फर्म बहुत बड़े कन्ट्राक्टरका काम कर रही है। इस फर्मके कई एक भट्ठे ईंट और चूना तैयार करनेके खुले हुए हैं। इसकी कितनी ही सुरखी पीसनेकी मिलें भी हैं। गंगापुरका ईंट, चूना तथा सुरखीका मिल मशहूर है। कालीमाटीमें फर्मका लकड़ीका एक कारखाना भी है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स—कार एण्ड को० ६ लियान्स रेंज कलकत्ता T. A. Karcompy—यहां फर्मका हेड आफिस है तथा कंट्राक्का बहुत बड़ा काम होता है

मेसर्स जे० सी० बनर्जी

इस फर्मके संस्थापक बाबू जे० सी० बनर्जीका जन्म सन् १८८३ ई० में हुआ था। आपने कालेजसे निकलकर कंट्राक्ट लेनेका काम आरम्भ किया। आपके पिता बाबू नरेन्द्रनाथ बनर्जी बंगाल प्रान्तके अर्थ विभागमें उच्च पद पर थे तथा आपके भाई सभी प्रतिष्ठित और ऊंची योग्यताके थे। आपने सन् १९१० ई० में स्थानीय प्रेसीडेन्सी कालेजसे सम्बद्ध केकर लेबोरे-

टरी नामक रसायनिक प्रयोगशालाका कंट्राक्ट लिया और उसके लिये भवन निर्माण कराया। इसके बादसे आपने कितनी ही सरकारी इमारतोंके बनानेका कन्ट्राक्ट लिया और सफलतासे कार्य सम्पादन किया। फलतः आप प्रिन्स आफ कन्ट्राक्टर्स कहाने लगे।

आपने कंट्राक्टके काममें आने योग्य लोहेका सामन तैयार करनेके लिये स्टैण्डर्ड रिवेटबोल्ट एण्ड नट वर्क्स नामसे रामकिष्टोपुरमें लोहेका एक कारखाना खोला जो आज भी अच्छी उन्नत अवस्था पर है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स— जे० सी० बनर्जी २० स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता—यहां फर्मका हेड आफिस है और सभी प्रकारकी सरकारी और प्रायवेट कंट्राक्टका काम होता है।

स्टेण्डर्ड रिवेट बोल्ट एण्ड नट वर्क्स रामकिष्टोपुर हबड़ा—यहा फर्मका लोहेका कारखाना है। जहां सरकारी विभागका माल बनानेका ठेका है। जहाजी कम्पनियों तथा इतर कन्ट्राक्टोंका काम भी तैयार होता है।

मेसर्स डी० गुप्तू एण्ड को०

इस फर्मकी स्थापना डा० द्वारिकानाथ गुप्तू ने सन् १८४० ई० में कलकत्तेमें की थी। आप कलकत्तेके देशी डाक्टरोंमें प्रथम डाक्टर थे। फलतः ईस्ट इण्डिया कम्पनीने आपको मेडिकल अफीसरके पद पर सन् १८३६ ई० मे नियुक्त किया पर स्वतंत्र व्यवसायके प्रेमी नौकरीमें कब लगने वाले थे अतः उसे अस्वीकार कर दिया। इसके कुछ ही दिन बाद आप स्थानीय टैगोर परिवारके डाक्टर नियुक्त किये गये। सन् १८४० ई० में आपने विलायती दवाइयोंका प्रथम दवा खाना खोला। सन् १६६२ ई० में आपके स्वर्गवासी हो जाने पर आपके पुत्र बाबू गोपालचंद्र गुप्तू, रामचंद्र गुप्तू, तथा चन्दूलाल गुप्तू इस फर्मके मालिक हुए। इसके बाद फर्मने अच्छी उन्नति की। फर्मके व्यवसायकी उन्नतिके साथ स्थायी सम्पत्ति भी बना ली।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स डी० गुप्तू एण्ड को० ३६६ अपर चितपुर रोड - यहां केमिस्ट और ड्रगिस्टका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स—डी० गुप्तू एण्ड को० १३ स्लैनेड रो ईस्ट - यहा दवाईयों और स्टेशनरी तथा कंट्राक्ट आदिका काम होता है।

मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को०

इस फर्मके मालिक इलाहाबादके रहनेवाले हैं। आप सारस्वत ब्राह्मण जातिके सज्जन हैं।

श्याम बिल्डिंग, गोरखपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई ग कम्पनी (पी० एल० जेतली एण्ड को०)

हेड आफिस अलाहाबाद (पी० एल० जेतली एण्ड को०)

बीचमें स्व० पण्डित मुरलीधरजी जेतली
१ पं० पुरुषोत्तमलालजी जेतली　　२ पं० नरोत्तमलालजी जेतली
३ स्व० पं० श्यामसुन्दरलालजी जेतली　　४ पं० केशरीनारायणजी जेतली
(पी० एल० जेटली एण्ड को० कलकत्ता.)

इस फर्मकी स्थापना पं० मुरलीधरजी जेटली तथा आपके पुत्र पं० पुरुषोत्तमलालजी जेटलीने सन् १६१६ में की। इस फर्मपर आरम्भमें हार्डवेयरका व्यापार किया गया तथा संस्थापकोंकी व्यवसाय संचालन योग्यताके परिणाम स्वरूप इस फर्मने अच्छी उन्नति की और आज यह फर्म इलेक्ट्रिक गुड्सका बहुत बड़ा व्यापार करती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक पं० मुरलीधरजी जेटली, पं० पुरुषोत्तमलालजी जेटली, पं० नरोत्तमलालजी जेटली, और पं० केशरीनारायणजी जेटली हैं। पं० मुरलीधरजी जेटलीके एक पुत्र पं० श्याम सुन्दरलालजीका स्वर्गवास हो चुका है। आप सब शिक्षित सज्जन हैं। आप लोग मिलन सार और स्वभावके सरल महानुभाव हैं। आप लोग सार्वजनिक कार्योंके प्रति भी अच्छा अनुराग रखते हैं। पं० पुरुषोत्तमलालजीके हाथोंसे इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई है। आप हीके कारण इस कार्ममें यह फर्म भारतीय फर्मों में बहुत ऊंची समझी जाती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं :—

कलकत्ता—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० २८ स्ट्राण्ड रोड यहांसे आपका सब फर्मोंपर इलेक्ट्रिक सामान और हार्ड वेअर भेजा जाता है। यहां डयरेक्ट विलायतसे इनका इम्पोर्ट होता है।

अलाहाबाद—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० १५-१७ कैनिंग रोड, तारका पता Jetly, टेली फोन नं० ३५४—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। तथा इलेक्ट्रिक सामान और मेनेजिंग एजंटका काम होता है। यह फर्म कई इलेक्ट्रिक सप्लाईंग कम्पनी की मैनेजिंग एजंट है।

अलाहाबाद—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० —८ ह्विवेट रोड, तारका पता Jetly—यहां हार्ड वेअर और इलेक्ट्रिक स्टोअर सप्लायका काम होता है।

कानपुर—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को०- मालरोड, तारका पता Jetly टेलीफोन नं० २२६०

यहा इलेक्ट्रिक तथा कंट्राक्टिङ्गका काम होता है।

लखनऊ—मेसर्स पी० एल० जेटली एण्ड को० हजरतगंज, तारका पता Jetly टलीफोन नं० १६३ यहां इलेक्ट्रिक तथा कंट्राक्टरका काम होता है। यहां स्टेशन रोड तथा सदरमे इसी नामसे आपकी और फर्मे हैं। जहां पेट्रोल एजंसी तथा मोटर एसेसरिज़का काम होता है।

पटना—मेसर्स पी०एल० जेटली एण्ड को० फ्रेमर रोड, तारका पता Jelly टेलीफोन नं० ३१० यहां इलेक्ट्रिक तथा कंट्राक्टिंगका काम होता है।

गोरखपुर—गोरखपुर इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी लि०—तारका पता Cesco है टेलीफोन नं० ३४ है इस कम्पनीकी यह फर्म मैनेजिङ्ग एजेन्ट है।

धातुके व्यापारी

लोहेके व्यापारी

मेसर्स माधोराम हरदेवदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान देहली है। आप खंडेलवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन दिल्लीमें करीब १०० वर्ष पहिले सेठ माधोरामजीके हाथोंसे हुआ था। आपके २ पुत्र लाला बुधसिंहजी और लाला हरदेवदासजी हुए। लाला बुधसिंहजीके ३ पुत्र थे। लाला जीवनलालजी, लाला रघूमलजी एवं लाला जगरमलजी। इन सज्जनोंमेंसे लाला जीवनलाल जी और लाला रघूमलजीके हाथोंसे इस फर्मके कारबारको विशेष उन्नति प्राप्त हुई। लाला हरदेवदास जीके पुत्र रणजीतमलजीका थोड़ी ही वयमें देहान्त हो गया था। लाल रघूमलजीके हाथोंसे फर्म की व्यवसाय वृद्धिके साथ २ मान एवं प्रतिष्ठामें भी बहुत उन्नति हुई।

इस फर्मकी कलकत्ता ब्रांचका स्थापन ६० वर्ष पूर्व लाला माधोरामजीके हाथोंसे हुआ। इसके अलावा संवत् १९४० में बम्बईमें, १९४६ में करांचीमें और १९७६ में कानपुरमें शाखाएं स्थापित की गईं। आरम्भ सेही यह फर्म लोहेका बहुत भारी व्यापार करती आ रही है।

लाला रघूमलजीके जमानेमें इस फर्मपर लोहेके व्यापारके अलावा और भी कई नवीन व्यापारोंका कार्य शुरू किया गया। आपने कपड़ेकी २ दुकानें कलकत्तेमें और १ दिल्लीमें खोली। शक्करके व्यवसायके लिये आप डेविडसासुन कम्पनीके वेनियन नियुक्त हुए। गल्लेके एक्सपोर्टका काम भी आप करते थे। उस समय आपने अपना एक ऑफिस जापानमें भी खोला था, एवं अपनी निजकी जहाज सर्विस चालूकी थी। व्यवसायकी उन्नतिके साथ २ आपने फर्मकी स्थायी सम्पत्ति बढ़ाने एवं दान धर्मकी ओर भी विशेष लक्ष दिया। करीब ३० लाख रुपयोंकी स्टेट आपने कलकत्ते खरीद की, ६ लाखकी लागतकी २ कोठिया मसूरी पहाड़पर बनवाई। इसके अलावा करांची देहलीमें भी आपने जायदाद खरीदी।

लाला रघुमलजीने ११ लाख रुपये प्रदानकर इन्द्रप्रस्थ गुरुकुलका स्थापन किया, देहलीके कन्या गुरुकुलको भी आपने १ लाख रुपया प्रदान किया। सन १६१९ में जब देहलीमें गोली चली थी, उसमें आहत व्यक्तियोंकी यादगारके लिये एक शहीदेहाल बनानेके लिये १ लाख रुपया देनेका तार आपने स्वामी श्रद्धानन्दको दिया था। उस रकममेंसे एक पाटोदी हाउस बिल्डिंग खरीदी गई, जिसमें वर्तमानमें नेशनल हाईस्कूल और यतीमखाना चल रहा है। सन् १६१८ के इन्फ्ल्यूएंजाके समय २५ हजार रुपया आपने यतीमोंकी सहायताके लिये दिया। २५ हजार रुपया के० डी० शास्त्रीको गरीबों का इलाज मुफ्त करनेके लिये समान खरीदनेको दिया। इसी प्रकार कई संस्थाओंको बड़ी २ रकमें बरसोंतक आपने दीं। आपने अपने जीवनमें करीब ४०।५० लाख रुपयोंका भारी दान किया था। आप विधवाओं और विद्यार्थियोंकी मदद करनेमें बड़े उदार थे। इस प्रकार गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास ५ सितम्बर सन् १६२६ को हुआ। आपने ४ सितम्बर सन् १६२६ को एक बिल लिखा, जिसमें २० लाख रुपयोंकी जायदाद दानकी। इसके ट्रस्टी बाबू घनश्यामदासजी बिड़ला, बाबू देवीप्रसादजी खेतान, बाबू गुरुप्रतापजी पोद्दार (जयनारायण रामचन्द्र) बाबू छाजूरामजी चौधरी एवं लाला दीनानाथजी (लाला रघुमलजीके भानजे) नियुक्त किये गये। लालाजीके कोई पुत्र नहीं था अतएव आपने अपनी सम्पत्तिके ४ बराबरके स्वामी बनाये। जिनके नाम (१) धर्मपत्नी लाला रघुमलजी, (२) पुत्री लाला रघुमलजी (तथा दामाद लाला हंसराजजी गुप्त)(३) और (४)अपने २ भानजे लाला गोरधनदासजी और दीनानाथजी हैं।

वर्तमानमें इस फर्मकी कलकत्ता, बम्बई, कानपुर एवं करांची ब्रांचेजका कार्य संचालन लाला हंसराजजी गुप्त एम०ए०करते हैं एवं देहलीका कार्य्यलाला गोरधनदासजी एवं लाला दीनानाथजी सह्मालते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिल्ली—मेसर्स माधौराम बुद्धसिंह—(हेड आफीस)लोहेका व्यापार बेङ्किग और जायदादका काम होता है। यहां आपकी फर्म श्यूगर केन मिल्स मेन्युफेक्चरर भी है।

कलकत्ता—मेसर्स माधौराम हरदेवदास ६ धरमाहट्टा स्ट्रीट - लोहेका व्यापार और जायदादका काम होता है।

बम्बई—मेसर्स माधौराम रघुमल, बम्बादेवी नं० २—लोहेका व्यापार होता है।

करांची—मेसर्स माधौराम हरदेवदास, मेकलोड रोड—लोहेका व्यापार) जायदाद एवं सराफी लेनदेन का काम होता है।

कानपुर—मेसर्स जीवनलाल रणजीतमल, हलसी रोड—लोहेका व्यापार होता है।

एल्यूमिनियम मरचेंट्स

मेसर्स जीवनलाल एण्ड को०

इस फर्ममें चोरवाड (काठियावाड़) निवासी सेठ जीवनलाल मोतीचंद और अमरेली (काठियावाड़) निवासी सेठ कमानीरामजी हंसराज का साझा है। आप दोनों गुजराती सज्जन हैं। सेठ जीवनलाल मोतीचंदकी प्रेरणासे सेठ कमानीरामजी हंसराज के द्वारा इस फर्मका स्थापन हुआ है। आप ही दोनोंके बुद्धिवल एवम व्यापारिक चतुरतासे यह फर्म इतनी उन्नत अवस्थामें पहुंची है। वर्तमानमें भारतके एल्युमिनियमके व्यापारियोंमें इस फर्मका स्थान बहुत ऊंचा है। इसकी भिन्न २ स्थानोंमें कई शाखाएं हैं। इसका कारखाना वेलूरमें क्राउन एल्यूमिनियम वर्कसके नामसे है। इस फर्मके संचालक सरल और उदार प्रकृतिके मेधावी सज्जन हैं। आप गांधीजीके और खादीके बड़े भक्त हैं। गरीबोंके प्रति आपके हृदयमें अच्छा स्नेह है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० हे० आ० ४४ इजरास्ट्रीट T. A. Martalumin T No 3152 Calयहां इस फर्मका हेड आफिस है तथा एल्यूमिनियमके वर्तनोंका व्यापार होता है। इसका बेलूरमें बहुत बड़ा कारखाना है।

बम्बई—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० कसेराचाल, कालबादेवी रोड T. A T. No 20159—यहां एल्युमिनियमका व्यापार होता है।

रंगून—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० ६४ डलहौसी स्ट्रीट पौस्ट T No 1651—

गुजरानवाला—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० सरक्यूलररोड " "

अमृतसर—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० क्लार्थमार्केट ' "

राजामंड्री—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० " "

मद्रास—मेसर्स जीवनलाल एण्ड को० T No 2415 स्वामी विल्डिंग मिंट स्ट्रीट

मेसर्स भारत एल्यूमीनियम वर्क्स

इस फर्मका मालिक मेसर्स पी० नगीनदास एण्ड कम्पनी है। जिसके प्रधान संचालक सेठ फूलचन्द पुरुषोत्तम और सेठ नगीनदास हैं। सेठ फूलचन्द जामनगर और सेठ नगीनदास मांगरोल (काठियावाड़) निवासी श्रीमाली वणिक जैन समाजके सज्जन हैं।

सेठ फूलचन्द पुरुषोत्तम करीब १५ वर्षोंसे कलकत्तेमें गोवर्द्धनदास माणिकलालके साथमें
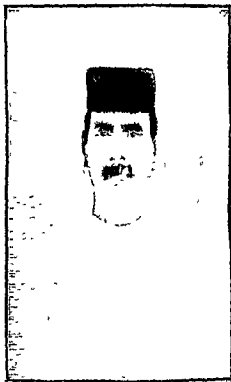
स्व० लाला रघूमलजी (माधौराम हरदेवदास)

सेठ जीवनलाल मोतीचंद (जीवनलाल एण्ड कं०)
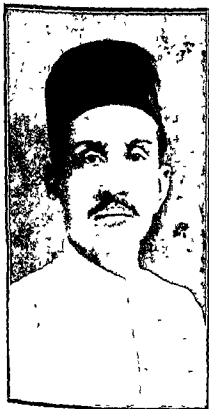
सेठ फूलचन्दजी पुरषोत्तम डोशी
(भारतएल्युमिनियम वर्क्स)
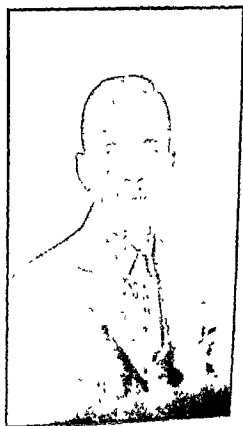
सेठ रामजी हंसराज (जीवनलाल एण्ड कं०)

एल्यूमीनियमका व्यवसाय करते थे। इधर २ वर्षसे आपने उक्त फर्मसे अलग होकर भारत एल्यू-मीनियम वर्क्सके नामसे अपनी फेक्टरी खोली। इस फेक्टरीका माल चांदतारा मार्काके नामसे मशहूर है। तथा सारे भारतमें इस फेक्टरीका बना माल जाता है।

सेठ फूलचंद पुरुषोत्तमको एल्यूमीनियमके व्यवसायकी अच्छी जानकारी है। गोल्ड मोहर मार्काकी जब आपके पास एजंसी थी, तब उसकी आपने अच्छी प्रसिद्धि की थी। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—भारत एल्यूमीनियम वर्क्स ५६।१ कैनिंग स्ट्रीट फोन नं० ५५६५ कलकत्ता तारका पता Remember—यहां एल्यूमीनियम वर्तनोंका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

कलकत्ता—भारत एल्यूमीनियम वर्कशाप १०।१३ चंडालपाड़ा लेन फोन नं० ३२० हवड़ा—यहां आपकी फेक्टरी है। इसमें चांद तारा मार्का वर्तन बनाये जाते हैं।

राजमहेन्द्री (रंगरेजपेठ)—एल्यूमीनियमका व्यापार होता है।

धातुके व्यापारी

मेसर्स प्रयागदास जमनादास

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू जीवनदासजी बिन्नाणी एवम् बाबू ग्वालदासजी बिन्नाणी है आपका विशेष परिचय चित्रों सहित इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं०१२६में दिया गया है। यहां इसका आफिस ६२ क्लाइवस्ट्रीटमें है। यहां सब प्रकारकी धातुओंका बहुत बड़ा व्यापार होता है।

मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ पुरुषोत्तमदासजी तथा आपके पुत्र बाबू नरसिंहदासजी बिन्नानी हैं। इस फर्मका विस्तृत सचित्र परिचय हमारे इसी ग्रन्थके प्रथम भागके राजपूताना विभागके पृष्ठ १२४में दिया गया है। इसका कलकत्तेका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स पुरुषोत्तमदास नरसिंहदास ४३ स्ट्रांडरोड—यहां धातुके इम्पार्ट तथा आढ़तका काम होता है। यहां सरकारी तथा रेलवेके कंट्राक्टरोंको माल सप्लाई किया जाता है।

मार्चेस मेन्युफेक्चरर

मेसर्स एम० एन० मेहता

इस फर्मके स्थापन कर्ता सेठ मेहरवानजी नानाभाई मेहता मूल निवासी नवसारी (वड़ोदा) के हैं। आपका जन्म सन् १८५७ की १५ अक्टोवरको हुआ था। मामूली शिक्षा प्राप्त कर लेनेके वाद आप थोड़ी अवस्थामें ही कलकत्ता आये। कलकत्तेमें आपने ३ वर्ष तक प्रसिद्ध सेंट जेवियर कालेजमें शिक्षा प्राप्त की।

सेठ एम० एन० मेहता उन महानुभावोंमेंसे एक हैं, जो बहुत मामूली परिस्थितिसे व्यापार स्थापितकर अपने उद्योग, परिश्रम एवं व्यापारिक चतुराईसे व्यापारिक जगतमें बहुत बड़ा नाम पैदा कर लेते हैं। आरंभसे आपकी व्यावसायिक बुद्धि बड़ी तीव्र थी। आपके मामा सेठ एदलजी नवरोजजी मेहताने आपके पास केवल १३ पेटी चूड़ीकी भेजी, अपने व्यापारको शुरू करनेकी यही आपके पास आरंभिक पूंजी थी। इतनी थोड़ी पूंजीसे आपने कारवारको शुरू कर सन् १८७६ मे एम० एन० मेहता नामक फर्मका स्थापन किया। आप आस्ट्रियासे माल मंगाते थे, बरसों तक आप इस व्यापारको करते रहे। सन १८९७ में आप चीन गये एवं व्यापारको सुसंगठित बनानेके लिये आपने वहा अपनी एक ब्राच स्थापित की। सन १९०५ में आपने सारी दुनियाकी मुसाफिरी की। विलायत जानेके वाद आपने विदेशोंके नवीन अनुभवोंसे अपने व्यापारकी तरक्की आरंभ की, सन १९१४ में जब लड़ाई आरंभ हुई तब आप दूसरी बार विलायत गये। एवं वहां आस्ट्रियामें और भारतमें अपनी सामर्थ्यके मुताबिक मालका संग्रह किया। इस खरीदीसे आपको बहुत जादा मुनाफा प्राप्त हुआ, इसी समयसे आपके व्यापारकी दिनों दिन अधिकाधिक उन्नति होने लगी। सन १९१५ में आपने जापानमें फर्मकी ब्राच स्थापित की, तथा सन १९१६ में आपने वहां जाकर नई २ तरहकी चूंड़िया बनानेका कार्य जापानियोंको सिखाया, इस व्यापारमें आपको "मानोपोली" मिली। इस प्रकार कलकत्ताके बाजारमें आप बगड़ीके प्रथम श्रेणीके व्यापारी माने जाने लगे। सन १९१६ में आपने अपनी फर्मकी एक ब्रांच बम्बईमें भी स्थापित की।
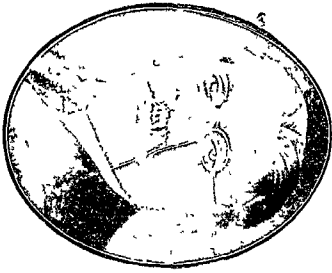
स्व०सेठ एम०एन०मेहता (माचिस म्येनुफेक्चरर)

सेठ पी०एम०एन०मेहता (माचिस म्येनुफेक्चरर)
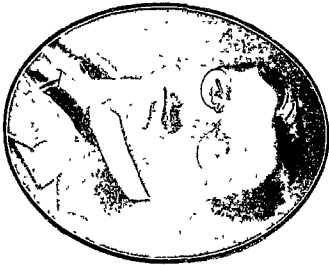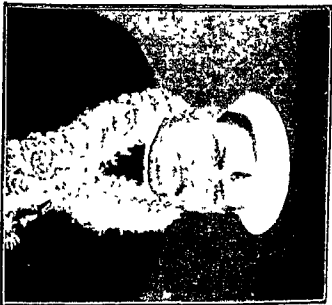
बाबू किशुनप्रसादजी (किशुनप्रसाद वंशीधर)

चूड़े के साथ आप माचीसका भी बहुत बड़ा व्यापार करते थे। पर जब गव्हर्नमेंटने रेवेन्यू बढ़ानेके लिये माचिस पर ड्यूटी बढ़ाई तब सेठ एम० एन० मेहताके दिलमें कलकत्तेमें मेचिस फेक्टरी खोलनेका विचार हुआ और आपने जापानसे एक्सपर्ट कारीगर बुलाकर सन १९२५ में बहुत बड़े परिमाणमें माल तयार करनेके लिये कारखाना आरम्भ किया। इस समय आपकी फेक्टरी का माल मद्रास, पंजाब, मध्यप्रांत, करांची, चीन आदि प्रांतोंमें अच्छे परिमाणमें जाता है।

आपको सन् १९२७ और २९ में मालकी उत्तम क्वालिटीके लिये दो पूर्णिया सिटीमें चार गोल्ड मेडिल मिले।

सेठ मेहरवानजी नानाभाई मेहताने व्यापारमें लाखों रुपयोंकी सम्पत्ति अपने हाथोंसे प्राप्त की सम्पत्ति प्राप्तकर आपने सखावत कार्योंकी ओरसे भी अच्छी रुचि रक्खी, आपने करीब ३ लाख रुपयोंकी सम्पति नवसारी,कलकत्ता आदि स्थानोंमें गरीब पारसी भाइयोंकी मददके लिये एवं विद्यार्थियों के लिये तथा इसी प्रकार और कई सखावतोंमें लगाई। जर दोस्थियोंके अवसरके समय काम आनेके लिये आपने अपनी कई बिल्डिंग भेंटकी। आपके दोनोंसे प्रसन्न होकर नामदार गायक वाड़ सरकारने सन् १९१६ में अपने साल गिरहकी खुशीमें आपको "दातार मंडल" नामका सोनेका चांद इनायत किया था। इस प्रकार गौरवमय जीवन विताते हुए आपका स्वर्गवास ७१ वर्ष की अवस्थामें जुलाई सन् १९२८ में हुआ।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ एम० एन० मेहताके पुत्र सेठ फीरोजशाह मेहता हैं। आप भी योग्य पिताकी योग्य संतान हैं। तथा अपने पिताजीके स्थापित किये हुए व्यापारको भली प्रकारसे संचालित कर रहे हैं। सेठ एम० एन० मेहताने आपको सन १९०८ से ही अपने हाथके नीचे व्यापारिक दीक्षा दी है। १९१४में आप पेढ़ीमें पार्टनर मुकर्रर हुए। आप अपने पिताजीके साथ यूरोप अमेरिका आदिका भ्रमण भी कर आये हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स एम० एन० मेहता ६५ इजरा स्ट्रीट फोन नं० १५३ cal तारका पता Chonglee — यहां बंगड़ी माचिस तथा हायजरीका बहुत वड़ा व्यापार होता है।

कलकत्ता—एम० एन० मेहता मेच फेक्टरी उलटाडांगी रोड फोन नं० 1775 B. B. —इस नामसे आपकी मेच फेक्टरी है।

कैंटान (चीन)—मेसर्स एम० एन० मेहता तारका पता Mehta—यहांसे हिन्दुस्थानके लिये बंगड़ीका एक्सपोर्ट होता है।

कोबे (जापान)—मेसर्स एम०एन०मेहता तारका पता Merwanjee—यहांसे चूड़ी,तथा हायजरीका एक्सपोर्ट होता है।

बम्बई—मेसर्स एम० एन० मेहता T. A. Bangles—यहा चूड़ी, हायजरी तथा माचिसका व्यापार होता है।

रंग

रंग

भारतमें रंगका व्यवहार बहुत पुराना है। यहां अच्छे २ रंग तैयार होते थे। यहांकी मनमोहक रंगाई और छपाई पर सारा संसार लट्टू था। पर आज वही भारत विदेशी रंगकी बिक्रीका प्रधान अड्डा माना जाता है। भारतमें उत्पन्न होनेवाले वनस्पति जात रंगोंकी निकासी बिलकुल ही गिर गयी है। विदेशसे आनेवाले रंगके साथ रंगीन सूत और रंगीन कपड़ेकी आमदनी भी बहुत बढ़ गयी है।

विदेशसे आनेवाले रंगके प्रकार तीन होते हैं जैसे अनीलीन [अलकतरेसे बने हुये रंग अलीजेरीन मंजीठसे तैयार किये गये रंग और कृत्रिम नील Synthetic endigo के रंग। भारतमें प्राचीन-युगमें नील, लाख और आलके रंग बहुत प्रसिद्ध थे। इनके बाद हल्दी, कुसुम, हर्रा, बहेड़ा, तथा कितने ही वृक्षोंके फूल,पत्ती और छालसे अच्छे और सुहावने रंग तैयार किये जाने लगे। पर विदेशी सस्ते रंगोंने इनको नष्ट कर दिया। सर्व प्रथम जर्मनीने नवीन कृत्रिम रंगोंका आविष्कार कर भारतमें रंग आरम्भ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतमें नीलके रंगका सर्वनाश हो गया और साथ ही लाख और आलके रंग भी सदाके लिये बैठ गये। इसके बाद ही बेलजियम और फ्रान्सने भारत रंग भेजना आरम्भ किया और आज तो इंग्लैंड, अमेरिका, जापान आदिका रंग भी जोरोंसे यहां आता है। भारतसे आज भी नील, त्रिफला, कत्था आदि विदेश जाते हैं और इन्हींकी सहायतासे कपड़ा, रंगने और चमड़ा रंगनेके द्रव्य तैयार किये जाते हैं। ये चीजें अधिक परिमाणमे आस्ट्रिया हंग्री, बेलजियम, जर्मनी, मिस्र और संयुक्तराज्य अमेरिका जाती हैं।

मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम

इस फर्मके मालिकोंमेंसे श्रीयुत प्रतापमलजीका मूल निवासस्थान श्रीडूंगरगढ़ और श्रीयुत गोविन्दरामजीका मूल निवासस्थान बीकानेरमें है। आप दोनों ही ओसवाल जातिके भनसाली

बाबू प्रतापमलजी भनराली (प्रतापमल गोविन्दराम)

बाबू गोविन्दरामजी (प्रतापमल गोविन्दराम)

बाबू मादनमलजी सोपानी (मादनमल धनमचन्द
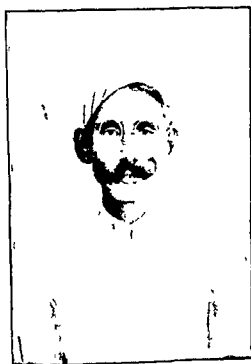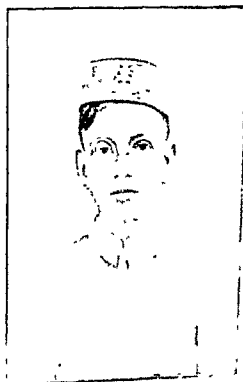
गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको यहांपर स्थापित हुए करीब २२ साल हुए। इसकी स्थापना आप दोनों ही सज्जनोंने की। आपने अपने ही हाथोंसे इस फर्मकी इतनी उन्नति कर द्रव्य लाभ किया। आप दोनों ही बड़े सज्जन हैं। श्रीयुत प्रतापमलजीके इस समय चार पुत्र हैं। प्रतापचन्दजीके एक भाई श्रीयुत मूलचन्दजी हैं। मूलचन्दजीके दो पुत्र हैं। श्रीयुत गोविन्दरामजीके एक पुत्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार हैं :—

कलकत्ता——मेसर्स प्रतापमल गोविन्दराम ११८।१६ खङ्गरापट्टी —इस दुकानपर रंग, कपूर, जीनतान, पीपरमेण्ट और अंग्रेजी दवाओंका होल सेल और रिटेल बिजीनेस होता है। यह फर्म बंगाल आसाम और बिहार उड़ीसाके लिये पीपरमेंट और जीनतानकी सोल एजण्ट है।

कलकत्ता—मेसर्स प्रतापमल मूलचन्द ३६ आर्मेनियन स्ट्रीट—इस दुकानपर कपड़ा वगैरह प्रत्येक वस्तुकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

गौरीपुर धोवड़ी (मैमनसिंह)—मेसर्स प्रतापमल मूलचन्द—इस दुकानपर कपड़ेका व्यापार होता है

फारबिसगंज (पूर्णिया)-मेसर्स हीरालाल भींवराज—इस दुकानपर पाटका व्यापार होता है।

मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया

इस फर्मके मालिक बीकानेर निवासी श्रीभेरूंदानजी सेठियाके सबसे छोटे पुत्र ज्ञानपालजी सेठिया हैं। इस नामसे यह फर्म संवत् १९७९ के सालसे काम कर रही है। इस फर्मके मालिकोंका पूर्ण परिचय हम इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेरमें दे चुके हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

कलकत्ता—मेसर्स ज्ञानपाल सेठिया २, आर्मेनियन स्ट्रीट—इस फर्मपर इस समय रंगका व्यापार तथा किरानेकी कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स लहरचन्द खेमराज

इस फर्मके प्रोप्राइटर श्रीयुत् लहरचन्दजी सेठिया बीकानेर निवासी श्रीयुत् भैंरूदानजी सेठियाके तृतीय पुत्र है। यह फर्म इस नामसे करीब दो वर्षसे स्थापित हुई है। इसके मालिकों का विस्तृत परिचय हम इस ग्रन्थके प्रथम भागमें बीकानेरके पोर्शनमें दे चुके हैं। इस समय इस फर्मपर नीचे लिखा व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लहरचन्द खेमराज, १०८, ओल्ड चीनाबाजार पोस्ट बक्स नं०१५५—यहां मनिहारीकी कमीशन एजंसी और अंग्रेजी दवाइयोंके तय्यार करने और बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स सादलमल पूनमचन्द सोपानी

इस फर्मके मालिक उदरामसर (बीकानेर) निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको कलकत्तेमें स्थापित हुए करीब बारह, तेरह वर्ष हुए। इस फर्मके संस्थापक बाबू सादलमलजी हैं। आप बाबू चन्दनमलजीके पुत्र हैं। इस फर्मकी तरक्की आपहीके हाथोंसे हुई हैं। आपके इस समय एक पुत्र हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता - मेसर्स सादलमल पूनमचन्द १०५, ओल्ड चाइना बाजार - इस फर्मपर फूंका, दाना और मनिहारी सामानका जापानसे डायरेक्ट इम्पोर्ट होता है। और यहासे दूसरी जगहको चालानी होती है। इसके अतिरिक्त पीसगुड्स और जूटका व्यापार भी यह करते हैं।

कुछ विदेशी कम्पनियां

—:※:—

मेसर्स अण्डरसन राइट एण्ड को.

यह फर्म जेनरल मरचेन्ट्स और कमीशन ऐजेन्टके रुपमें काम करती है। यह फर्म स्थानीय जूट मिलोंके अतिरिक्त खरडा कम्पनी लि०, बोकरो एण्ड रामगढ़ लि०, सेन्ट्रल करकेन्ड कोल कम्पनी लि० गोपालीचक कोल कम्पनी लि०, तथा सकरडीह सेन्डीकेट लि० आदिकी मैनेजिंग ऐजेन्ट है। इसी प्रकार कमर्शियल यूनियन ऐसुरेन्स कम्पनी लि० और नेटाल डायरेक्ट लाइन आफ स्टीमर्सकी एजेन्सी भी इसी फर्मके पास है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २२ स्ट्रांड रोड पर है।

मेसर्स एण्ड्यूयल एण्ड को. लि.

इस विदेशी फर्मका व्यवसाय बहुत विस्तृत है। यह फर्म १० जूट मिलों, १४ चाय बगान कम्पनियों, ३ जहाजी कम्पनियों, २३ कोल कम्पनियों, २ तेलकी मिलों, और १ आटाकी मिलकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट हैं। इसके अतिरिक्त सेन्ट्रल हाइड्रालिक प्रेस कम्पनी लि०, चितपुर गोलाबारी कम्पनी लि०, बंगाल इरेटिङ्ग गैस फैक्ट्री लि०, हुगली प्रिन्टिङ्ग कम्पनी लि०, पोर्ट इंजिनियरिंग वर्क्स लि०, रिलायन्स फाइबेरिक एण्ड पाटरी कम्पनी लि०, ऐसोसियेटेड पावर कम्पनी लि० आदि कल कारखानेके क्षेत्रमें काम करनेवाली लगभग २० कम्पनियोंकी यह फर्म डायरेक्टर है। इसी प्रकार २ रबड़ कम्पनियों तथा १० से अधिक वीमा कम्पनियोंका संचालन भी यही फर्म करती है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ८ क्लाइव रो में है। इसका T. A. Unicorn और Yuletide

---

मेसर्स ऐङ्गस कम्पनी लि०

इस फर्मके यहां मैन्यूफैक्चर्सके रूपमे काम होता है। इसके ऐङ्गस जूट वर्क्स और ऐंगस

इंजिनियरिङ्ग वर्क्स नामक दो बड़े कारखाने हैं। इसके पास इस्थमेन स्टीमशिप लाइनकी बंगालके लिये ऐजेन्सी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ३ क्लाइव रो में है। T. A. Anguspence है।

मेसर्स केटल बुलेयन एण्ड को. लि.

इस फर्मके पास २ जूट मिलों, ३ काटन मिलों, २ चाय बगानोंकी मैनेजिंग ऐजेन्सी और ३ बीमा कंपनियोंकी जेनरल ऐजेन्सी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २१ स्ट्राण्ड रोडपर है और तारका पता Ketbullen है।

मेसर्स गिलैडर्स अरबुथनाट एण्ड को०

यह फर्म बैंकर्स, जेनरल मर्चेन्ट्स और कमीशन ऐजेन्टके रूपमें व्यापार करती है। यह फर्म हुगली जूट मिल्स तथा चंद्रनगर वाले जूट मिलकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इसके अतिरिक्त ६ चायबगान कम्पनियों, ६ कोल कम्पनियों, ७ रेलवे कम्पनियों और १० बीमा कम्पनियोंकी यह फर्म मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इतना ही नहीं यह फर्म कितनी ही लकड़ी, सीमेन्ट, चूना, रस्सा, कत्था, लोहा पेट्रोल आदिकी कम्पनियोंकी ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ८ क्लाइव स्ट्रीटमें है। इसका तारका पता Gillanders.

मेसर्स जार्डिन स्कीनर एण्ड को.

यह फर्म एक्सपोर्ट, इम्पोर्ट, बीमा कम्पनियों और छियरिङ्ग ऐजेन्सीका व्यवसाय करती है। यह फर्म ४ जूट मिलों, ३ कोल कंपनियों, ८ चाय बगान कंपनियोंकी मैनेजिंग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ४ क्लाइव रो में है। इसका तारका पता Jardines है।

मेसर्स जार्ज हेन्डरसन एण्ड को. लि.

यह फर्म उस एम० डेविड एण्ड को० की मालिक है जिसकी शाखायें नारायणगंज, सिराजगंज, चांदपुर, मदारीपुर अखउरा आदिमें हैं। यह फर्म कितनोही चाय बगान कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग डायरेक्टर भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस १०।११ क्लाइव स्ट्रीटमें है और तारका पता Scotsword. है।

मेसर्स डंकन ब्रदर्स एण्ड को० लि०

यह फर्म जेनरल मर्चेंट्स एण्ड कमीशन एजेन्ट्सके रूपमें काम करती है। यह फर्म ऐङ्ग्लो इण्डिया जूट मिल्स कम्पनी लि० के अतिरिक्त अन्य १७ चाय बगान कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट और साथ ही ४ बीमा कम्पनियों और १५ चाय बगानोंकी ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस १०१ क्लाइव स्ट्रीट में है और तारका पता Duncans. है।

मेसर्स एफ० डब्लू० हेलगर्स एण्ड को०

यह फर्म जेनरल मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन ऐजेन्ट्सके रूपमें काम करती है। इसके यहां कोयला, कागज, तेल आदिका व्यापार होता है। यह फर्म टीटागढ़ पेपर मिल्स, २ जूट मिलों ८ कोल कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है तथा ३ बीमा कम्पनियोंकी ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीटमें है तथा तारका पता Helgers. है।

मेसर्स फिनले जेम्स एण्ड को. लि.

इस फर्मका हेड आफिस २२ वेस्ट नाइल स्ट्रीट ग्लासगो (ग्रेट ब्रूटेन) में है। भारतमें इसकी ब्रांचें कलकत्ताके अतिरिक्त बम्बई, करांची, चटगांवमें भी हैं। यह फर्म ३ जूट मिलों, १६ चाय बगान कम्पनियोंके अतिरिक्त मैंगनीज़की खानों, नीलकी कोठियों, शक्करके कारखानों, रेलवे कम्पनियों, जहाजी कम्पनियों और बीमा कंपनियोंकी मैंनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस १ क्लाइव स्ट्रीटमें हैं और तारका पता Mercator है।

मेसर्स बर्क मेयर ब्रदर्स

यह फर्म जूट मैन्यूफैक्चरर्स और मर्चेन्ट्सके रूपमें व्यवसाय करती है। यह रसड़ाके हेस्टिङ्ग मिल्सकी मालिक है तथा स्थानीय रस्सेके कारखानेकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस ६ फ्लाव रो में है और तारका पता Birkmygres है

मेसर्स बेग डनलप एण्ड को. लि.

यह फर्म जेनरल मर्चेन्ट्स एण्ड कमीशन ऐजेन्टके रूपमें व्यवसाय करती है। यह फर्म

४ जूट मिलों, १३ चाय बगान कम्पनियों; ३ बिजली सप्लाइ करनेवाली कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इतना ही नहीं ४ शक्करके कारखाने, कानपुरका एलगिन मिल्स आदि २ कपड़ेकी मिलों, ८ चाय बगान कम्पनियों, २ बीमा कम्पनियों तथा कानपुरकी मशहूर बिजलीकी कम्पनी मेसर्स वेगसदरलैण्डकी ऐजन्ट भी यही फर्म है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २ हेयर स्ट्रीटमें है। इसका तारका पता Dunbegg है।

मेसर्स वर्ड एण्ड को०

यह फर्म जूट, गनीका एक्सपोर्ट, बैंकिंग व्यवसाय, तथा बीमा कम्पनियोंका काम करती है। पत्थर, लकड़ी, कोयला, कपड़ा, आदि कितने ही प्रकारके मालका एक्सपोर्ट एण्ड इम्पोर्ट करती है। यह फर्म कुली सप्लाई करनेका काम भी करती है। इसके पास ४ कोल कम्पनियों, ६ जूट मिलों, २ जूट प्रेसों, तथा कितनी ही अन्य प्रकारकी लि० कम्पनियोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी है। तथा ७ बीमा कम्पनियोंकी यह फर्म जेनरल ऐजेन्ट भी है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस चार्टर्ड बैंक बिल्डिंग क्लाइव स्ट्रीटमें है तथा तारका पता Popinjay है।

मेसर्स बर्न एण्ड को.

यह फर्म कलकत्ता नगरकी बहुत पुरानी फर्म है। कर्नेल आर्ची बाल्ड स्वीनटन नामक किसी योरोपियन सज्जनने सन् १७८१ ई० में इस फर्मका स्थापन किया था। उसके कुछ ही समय बाद फर्मने हवड़ेके पास लोहेका एक बड़ा कारखाना खोला और सभी प्रकारका लोहेका सामान तैयार करने लगी। आज इसका लोहेका कारखाना प्रथम श्रेणीके कारखानोंमें माना जाता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिकोंमें कलकत्तेके सर राजेन्द्र नाथ मुकर्जी केटी०, के०सी० आई० ई०;के० सी०वी० ओ, ही आज कल सीनियर पार्टनर है। यह फर्म इण्डियन आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०,इण्डियन स्टैण्डर्ड वैगन कम्पनी लि०,तथा टोरी कोल एण्ड मिनरल्स प्रास्पेक्टिङ्ग कम्पनी लि० की मैनेजिंग ऐजेन्ट है। इतना ही नहीं हवड़ा आयर्न वर्क्स, रानीगंज एण्ड जबलपुर पाटरी वर्क्स, गुलफरबारी फायर ब्रिक वर्क्स, लालकोट सिलिका ब्रिक वर्क्स, दुर्गापुर टाइल वर्क्स, नंगी ब्रिक फील्ड और शंकरपुर कालरीज आदिकी मालिक मेसर्स बर्न एण्ड को० लि० नामक प्रसिद्ध विदेशी कम्पनीकी यह फर्म मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है। इस फर्मका आफिस—हांगकांग हाउस कौन्सिल हाउस स्ट्रीटमें है और तारका पता Burn है।

सर राजेन्द्रनाथ मुकर्जी केटी; के० सी० आई० ई०; के० सी० वी० ओ; सी० आई० ई०; एम० आई० एम० ई० (आनरेरी आजीवन सदस्य) सिविल इञ्जिनियर । आपका जन्म सन् १८५४ ई० में बसीरहाट (बंगाल) में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय भवानीपुरके मिशन स्कूलमें आरम्भ हुई। आप यहांके प्रसिद्ध प्रेसीडेन्सी कालेजके छात्र थे। व्यवसायिक क्षेत्रमें आपका बहुत बड़ा मान और प्रतिष्ठा है। आपके अनुभवके सम्बन्धमें जो कुछ भी कहा जाय थोड़ा है। आप बर्न एण्ड को० के सीनियर पर्टनर तो हैं ही साथ ही बंगालके प्रसिद्ध बराकरके लोहाके कारखानेकी मालिक दि आयर्न एण्ड को० इंजिनियर्स कन्ट्राक्टर्स एण्ड मर्चेन्ट्सके भी सीनियर पार्टनर हैं। इतना ही नहीं नगरकी कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियोंके डायरेक्टर भी हैं जिनमेंसे अन्य व्यापार सम्बन्धी कम्पनियोंके अतिरिक्त जूट, कोल और चाय तथा चाय बगीचोंका व्यापार करने वाली कितनी ही ज्वाइन्ट स्टाक कम्पनियाँ भी हैं।

आपका सार्वजनिक जीवन भी महत्व पूर्ण है। आप इम्पीरियल बैंक आफ इण्डियाके गवर्नर; रोयल करंसी कमीशनके सदस्य, कलकत्तेके शरीफ, इन्स्टीट्यूट आफ इंजिनियर्स (इण्डिया) के प्रेसीडेन्ट रह चुके हैं। आप इण्डियन इंडस्ट्रियल कमीशनके सदस्य भी रहे हैं। आप कलकत्ता विश्व विद्यालयके फेलो, सिरामपुर कालेज आफ इंजिनियरिङ्गकी संचालक समितिके सदस्य, इण्डियन इन्स्टी ट्यूट आफ साइन्सके विजिटर्सके बोर्डके मेम्बर, और कलकत्तेके इण्डियन म्यूजियमके ट्रस्टियोंमें हैं। आपके निवास स्थानका पता ७ हैरिङ्गटन स्ट्रीट कलकत्ता है।

मेसर्स बेरी एण्ड को०

यह फर्म जनरल मरचेन्ट एण्ड कमीशन ऐजेन्टके रूपमें व्यापार करती है। यह फर्म लन्दन एण्ड लंकाशायर इन्सुरेन्स कम्पनी लि० और कतिपय अन्य १० चाय बगान कम्पनीकी ऐजन्ट और नदिया मिल्स कम्पनी लि० के समान ३ कारखानोंकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्ट है।

इस फर्मका कलकत्ता आफिस २ फेयर्ली प्लेसमें है तथा तारका पता Barrycoy है।

मेसर्स मार्टीन एण्ड को०

यह फर्म कलकत्तेकी पुराने फर्मोंमें मानी जाती है। यह फर्म यहां इंजिनियर्स, कन्ट्राक्टर्स और मर्चेन्ट्सके रुपमें व्यवसाय करती है। जिस समय रानीगंजके समीप लोहा गलानेका काम आरम्भ करनेके लिये कम्पनी स्थापित की गयी थी उस समय भी यह फर्म अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर चुकी थी। सन १८८९ ई० में इसने बराकर (बंगाल) की लोहा गलानेकी फर्मको खरीद कर सारा कार्य भार हाथमें लिया और उसे सफल बनानेमें आज यह यशस्वी सिद्ध हुई है। इस फर्मके सीनियर पार्टनर सर राजेन्द्रनाथ मुकर्जी केटी०; के० सी० आई० ई०; के० सी० वी० ओ० हैं और आपके

बाबू हरदयालजीने मथुरा, काशी, रामगढ़ आदि स्थानोंमें धर्मशालाओंका निर्माण कराया है। आपने इस कुटुम्बमें अच्छी ख्याति पैदा की है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सलकिया—मेसर्स ठाकुरदास सुरेका १८२ ओल्ड घुसड़ीरोड—यहाँ फर्मकी गद्दी है। तथा लोहेके नाले, कड़ाही आदिका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है। आपका कारखाना नं० ८ चंडालपाड़ा लेनमें है।

मेसर्स मोहनलाल खत्री बहादुर

रा० ब० मोहनलालजी वृंदावन से ५०।६० वर्ष पूर्व कलकत्ता आये थे। आप अरोड़ा खत्री समाजके सज्जन हैं। आरम्भमें आपने काटनका व्यवसाय शुरूकिया, तत्पश्चात जूटप्रेसका स्थापन किया। इस व्यापारमें सफलता प्राप्तकर आपने सलकियामें जमींदारी संग्रहकी। सन् १९०४में आप अपने भ्राता बा० किशनलालजीसे अलग हुए। आपलोगोंकी ओरसे सलकिया घाट बनवाया गया है। इसी प्रकार आपने वृन्दावनमें भी श्रीसत्यनारायणजीका एक मन्दिर निर्माण करवाया है।

बा० मोहनलालजी हवड़ेके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन होगये हैं। आपको सन् १९०१ में गवर्नमेंटसे रायबहादुरकी पदवी प्राप्त हुई। आप सलकियाके आनरेरीमजिस्ट्रेट थे। आप करीब सन् १९०९ में स्वर्गवासी हुए। आपके कोई संतान नहीं थी, अतएव फर्मका व्यवसाय संचालन आपकी धर्मपत्नी करती हैं। आपका भी धार्मिक कार्मोकी ओर अच्छा लक्ष है। आपने अपने मकानमें श्रीमनमोहनजीका मन्दिर बनवाया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सलकिया (हवड़ा) रायमोहनलाल खत्री बहादुर, किशनलाल बर्म्मन रोड १४ बांधाघाट—यहां जूटबेलिङ्ग और जायदाद का काम होता है फोन नं० ५४ हवड़ा है।

सलकिया—इम्प्रेस आफ इण्डिया जूटप्रेस—ओल्ड घुसड़ीरोड—इस नामसे आपकी एक प्रेसिंगफेक्टरी है इसमें जूटकी पक्की गाठें बाधीजाती है।

मेसर्स हरदत्तराय गुलाबराय

इस फर्मके मालिक फतहपुर (जयपुर)के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ६५ वर्ष पूर्व बा० गुलाबरायजीके हाथोंसे बहादरमल हरदत्तरायके नामसे हुआ। बाबू

स्व० हरदयालजी सुरेका (ठाकुरदास सुरेका) सलकिया
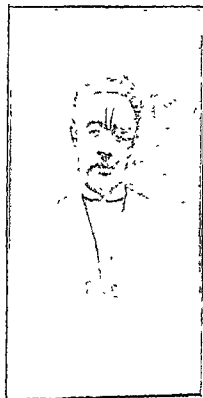
स्व० राय मोहनलालजी खत्री बहादुर, सलकिया
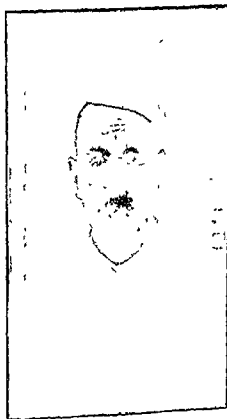
बा० ठाकुरदासजी सुरेका सलकिया

गुलाबरायजीने पहिले पहल अकवान और सेमल काटनका शिपमेंट करना आरम्भ किया था। आपको व्यवसायमें अच्छी सफलता मिली, आपहीके हाथोंसे केपक मिलका स्थापन करीब ४० वर्ष पूर्व किया गया। आपका स्वर्गवास संवत् १६८३ में हुआ।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक सेठ गुलाबरायजीके पुत्र बा० मटरूमलजी हैं। आपकी फर्म २१ वर्षोंसे उपरोक्त नामसे व्यापार कर रही है। आपने काटन शीपिंगका काम संवत १६८३ से फिर आरम्भ किया है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सलकिया—मेसर्स हरदत्तराय गुलाबराय १७।१।१ ओल्ड घुसड़ी रोड, फोन नं० ८१ हवड़ा तथा तार का पता Kapok—यहां सेमल तथा अकवान रुईका व्यापार, शिपमेंट तथा सराफी लेन देनका काम होता है।

सलकिया—मेसर्स हरदत्तराय गुलाबराय केपाक मिल ४१ ग्रेन्ड ट्रंक रोड—यहां सेमल और अकबान रुई साफ करनेकी मिल है।

सलकिया—हरदत्तराय गुलाबराय बेलिङ्गप्रेस, २ माली पांचगढ़ा—यहां अकवान तथा सेमल रुईकी पक्की गांठ बांधनेका प्रेस है।

व्यापारियोंके पते

चाय मर्चेन्ट्स और डीलर्स

अकबर अली लुकमानजी एण्ड को०
१३ पोलक स्ट्रीट
एशियाटिक ट्रेडिङ्ग कार्पोरेशन लि०
१० गवर्नमेन्ट प्लेस
इम्पीरियल टी० सप्लाई एण्ड को० १८ मैङ्गोलेन
ग्रेट ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कम्पनी ३०।१ भोलाराम
बोस घाट रोड
जार्ज पैने एण्ड को १ क्लाइव स्ट्रीट
टीन ब्रूक्ष एण्ड को० २३ लालबाजार
दिलखुश टी० कम्पनी लि० २२ केनिङ्ग स्ट्रीट
नीलमनी एण्ड संस ५३ मनोहरदास चौक
पण्डित एण्ड को० २१ केनिङ्ग स्ट्रीट
बनर्जी एण्ड को० ६ A. डफ लेन
बंगाल ट्रेडर्स लि० ८४।१ बो बाजार
बाम्बे टी० ट्रेडिंग कम्पनी ४४ आर्मेनियन स्ट्रीट
बिड़ला ब्रदर्स १३७ केनिङ्ग स्ट्रीट
ब्रूक बाण्ड एण्ड को० लि० २ मेट्काफ स्ट्रीट
एम० ए० इस्पहानी एण्ड संस ५१ इजरा स्ट्रीट
मित्रा एण्ड को० १० केनिङ्ग स्ट्रीट
एम० ए० सासुन एण्ड सन्स लि० ५४ इजरा स्ट्रीट

यूनिवर्सल ड्रग स्टोर्स ५५ केनिङ्ग स्ट्रीट
रावले डेविस एण्ड को० ८ क्लाइव रो
लिपटन लि० ९ वेस्टन स्ट्रीट
लियाल्स लि० ११ ब्रिटिश इण्डियन स्ट्रीट
एस० एम० कुण्डू एण्ड सन्स ४९ वेन्टिक स्ट्रीट
सेन मजूमदार एण्ड को० २४ स्ट्राण्ड रोड
एच मित्रा एण्ड को० २३।२४ स्ट्राण्ड रोड
हेल्थ एण्ड को० लि० ३१ ओल्ड चाइना बाजार
हैरीसन्स एण्ड क्रास फील्ड लि० ५ बैंकूस हाल स्ट्रीट
हैरीसन एण्ड ईस्टर्न एक्सपोर्ट लि० ५ बैंकूसहाल स्ट्रीट

चाय बगान मशीनरी बनाने वाले

डेविड सन्स एण्ड को० लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
प्लैन्टर्स स्टोर्स एण्ड ऐजेन्सी कम्पनी लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
मार्शल सन्स एण्ड को० लि० ९० क्लाइव स्ट्रीट

चाय बगीचोंके चाय स्टोर्स

आलेक्जेण्डर यङ्ग (लन्दन) लि०–२७।२ स्ट्राण्ड रोड

ऐङ्गस कीथ एण्ड को० ६८।५ क्लाइव स्ट्रीट
आसाम बंगाल कमर्शियल्स लि० १५४ धर्मतल्ला स्ट्रीट
ईवान्स जोन्स लि० १२ मिशन रो
कमर ब्रूदर्स एण्ड को० लि० १४ राजावुडमन्ट स्ट्रीट
गोपालचन्द्रदास एण्ड को० लि० ८६ क्लाइव स्ट्रीट
वालमेयर लारी एण्ड को० लि० १०३ क्लाइव स्ट्रीट
विपिन बिहारी धर २८१ A बहूबाजार स्ट्रीट
मार्शल सन्स कम्पनी लि०९९ क्लाइव स्ट्रीट
मैकुग्रेगोर एण्ड वालफर लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
राबर्ट मैकूलीन एण्ड को० लि० २३ लाल बाजार
लांगोविका लि० १०२ क्लाइव स्ट्रीट

पत्थरके कोयलेके व्यापरी

आल इण्डिया ट्रेडिङ्ग एण्ड को० लि० ५० बेनियापुखुर लेन
इण्डिया कम्पनी लि० १०० क्लाइव स्ट्रीट
करमचन्द थापर एण्ड ब्रदर्स ८ ओल्ड कोर्ट हाउस
कोल बंकरिङ्ग एण्ड शिपिङ्ग को० लि० १८ सेन्ट्रल ऐवीन्यू
खेंगरजी अमृतलाल एण्ड को० १३ क्लाइव स्ट्रीट
जे० सी० बनर्जी एण्ड को० २० स्ट्राड रोड
टर्नबुल ब्रदर्स लि० ११२ हेयर स्ट्रीट
टर्नर मारिसन एण्ड को० लि०६ लियान्स रेंज
पटेल एण्ड मुकुर्जी १०० क्लाइव स्ट्रीट
बंगाल बंकर्स लि० १०२ हेयर स्ट्रीट
बी० एल० बनर्जी एण्ड को० ८१ क्लाइव स्ट्रीट
एम० के० खन्ना एण्ड को० लि० ८ ओल्ड कोर्ट हाउस
लायड ब्रोकर एण्ड को० लि० डलहौसी स्कायर
शालिगराम हरबंशलाल ७१ केनिङ्ग स्ट्रीट
एस० एम० कुण्डू एण्ड सन्स३० बहूबाजार स्ट्रीट

लोहा फौलादके व्यापारी और इम्पोर्टर्स

आनन्दजी हरिदास एण्ड को० २० दर्माहट्टा स्ट्रीट
जी० सी० बनर्जी एण्ड को० ६७।४ स्ट्राण्ड रोड
जादवराय भानूमल ६४ लोअर चीतपुर रोड
डायना इंजिनियरिङ्ग कम्पनी ३१ क्लाइव स्ट्रीट
फ्रैन्टर्स स्टोर्स ऐजेन्सी कम्पनी लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
सन्तोषकुमार मल्लिक २१ दर्माहट्टा स्ट्रीट

लोहा गलाने और ढालनेवाले

मार्शल सन्स एण्ड को० लि० ९९ क्लाइव स्ट्रीट
ऐंगुस इंजिनियरिङ्ग वर्क्स कलकत्ता

छाता बनाने और इम्पोर्ट करनेवाले

पावल एण्ड को०१३०।१६१ओल्ड चाइना बाजार
पूर्णचन्द्र बासक ४० केनिङ्ग स्ट्रीट
एम० एल० दे एण्ड को० २३ हरिसन रोड
एस० सी० बनर्जी एण्ड ब्रदर्स ६२—२।४ हरिसन रोड

आइल मर्चेन्ट्स एण्ड डीलर्स

अटलस ट्रेडिङ्ग कम्पनी २४ जोड़ाबगान
ए० के० आदित्य८।२ हेस्टिङ्ग स्ट्रीट
वालमेयर लारी एण्ड को० लि० १०३ क्लाइव स्ट्रीट

वामापदघोष एण्ड सन्स १७।४ कनाल वेस्ट रोड
वेकर० ग्रे०एण्ड को० लि० कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
माणिकलाल पाल एण्ड को० ९२ हरिसन रोड
मेट्रापालिटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी ३ डेविड जोसेफ लेन
मौलावक्स एण्ड ब्रदर्स राजमोहन स्ट्रीट

अभ्रकके व्यापारी

इण्डो ट्रेडिङ्ग कम्पनी ११ क्लाइव रो
ईस्टर्न ट्रेडिङ्ग कार्पोरेशन २४८ बहूबाजार स्ट्रीट
जे० डी० जोन्स एण्ड को० ८ क्लाइव स्ट्रीट
डब्लू० एन० कुमार दुर्गाचरण डाक्टर रो
एन० के० सरकार ३।१ वैंकुसहाल स्ट्रीट
नड० एण्ड० समोन्ट एण्ड को० लि० २६ स्ट्राड रोड
लक्ष्मीनारायण शराफ १८० क्रास स्ट्रीट
सिद्धेश्वर सेन एण्ड को० लि० ३३ केनिङ्ग स्ट्रीट

विलायती कपड़ेके इम्पोर्टर्स

इण्डियन स्टेट्स एण्ड ईस्टर्न ऐजेन्सी ५ टेम्पल चेम्बर
ओरियण्ट एण्ड को० ८६ क्लाइव स्ट्रीट
केशरीमल कुंदनमल ३५ आर्मेनियन स्ट्रीट
के० पाञल एण्ड को० ८१ क्लाइव स्ट्रीट
कहान एण्ड कहान १४ क्लाइव स्ट्रीट
ग्रीवज काटन एण्ड को० लि० मर्केंटाइल बिल्डिङ्ग लाल बाजार
ग्रोमर्स एण्ड को० लि० ८३ ओल्ड चाइना बाजार
चंदनमल सिगमल १७८ हरीसन रोड
जान कटलो एण्ड सन्स लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
जापान काटन ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० क्लाइव बिल्डिङ्ग क्लाइव स्ट्रीट
जीवनराम गंगाराम एण्ड को० ११३ मनोहरदास चौक बड़ा बाजार
जेम्स टाइलर एण्ड को० लि० ३८ स्ट्राड रोड
टाटा सन्स लि० १०० क्लाइव स्ट्रीट
तेजपाल वृद्धिचन्द्र ७।१ आर्मेनियन स्ट्रीट
दत्त हरिदास एण्ड को० ६० कोलूटोला स्ट्रीट
धनधनिया एण्ड को० १३६ काटन स्ट्रीट
नरसिंहदास बसन्तलाल ५ बासक स्ट्रीट
पाचीराम नाहटा १७७ हरिसन रोड
फ्रेड्रिक गेवेल एण्ड को० १५ क्लाइव रोड
बेरर एण्ड को०२४ A कार्पोरेशन प्लेस
बींजराज हुकुमचन्द काटन स्ट्रीट
भगवानजी देवकरन ११३ क्रास स्ट्रीट
मोलवी मफीजुर्रहमान चौधरी ६६ लोअर चितपुर रोड
रामप्रसाद महादेव १२ चितरंजन एविन्यू (दक्षिण)
शीतलप्रसाद खड़गप्रसाद ३०।३१।३१-१ बड़तल्ला
स्टैन्स वरी डायर एण्ड को०लि० वैंकंसहाल स्ट्रीट
सुमेरमल सुराना ६२ क्लाइव स्ट्रीट
सुन्दरदास ठाकसी एण्ड को० २ लुकास लेन आर्मेनियन स्ट्रीट
एस० एन० वैरिक १०८ मानिक तल्ला स्ट्रीट
एस० एल० चरवन ब्रदर्स ६२ क्लाइव स्ट्रीट
एस० इजरा एण्ड को० ६५ लोअर चीतपुर रोड
लक्ष्मीनारायण हजारीमल २०३।१ हरिसन रोड
हनुतराम तुलसीराम ४० आर्मेनियन स्ट्रीट

हीरालाल हजारीमल १४८ काटन स्ट्रीट

हर्बर्ट ह्वाइट वर्थ लि० २६ स्ट्रांड रोड

काटन मिलोंक ऐजेन्ट

अब्दुला भाई जुमा भाई लालजी ५५ केनिंग स्ट्रीट

ऐलेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० ७ हेयर स्ट्रीट.

ऐण्ड्रू यूल एण्ड को० लि० क्लाइव रो

डी० वी० मेहता ५५ केनिंग स्ट्रीट

म्योर मिलस लि० २५ चौरंगी रोड

हरिवल्लभदास एण्ड को० ७ आगा कर्बला मोहम्मद स्ट्रीट

एफ० डब्लू० हेलगियर्स एण्ड को० चार्टर्ड बैंक बिल्डिंगस क्लाइव स्ट्रीट

ग्रेन एण्ड ग्रेन सीड्स मर्चेन्ट्स

अटलस इम्पोर्ट एण्ड एक्सपोर्ट कम्पनी ३३ केनिङ्ग स्ट्रीट

इण्डियन ग्रेन स्टोर्स १५ A जस्टिस रमेशचन्द रोड भवानीपुर

कोसन टेली ब्रदर्स ७ मिशन रो

ग्रेन सप्लाइङ्ग कम्पनी २,४,५,४३,४४,४५ मोती-सील स्ट्रीट

जोहार एण्ड सन्स ८२ कोलूटोला स्ट्रीट

एन० सी० धनर्जी १०० क्लाइव स्ट्रीट

वेकर ग्रे एण्ड को० लि० हांगकांग हाउस कौन्सिल हाउस स्ट्रीट

वेलीलियस एण्ड को० २८३ वेलीलियस रोड हवड़ा

आर० एस० हार्ट ब्रदर्स डोवर लेन

रेली ब्रदर्स १२ चर्च लेन

राइस मर्चेन्टस

एलमान्स अराकान राइस एण्ड ट्रेडिङ्ग कम्पनी लि० ३६ डालहौसी स्कायर

ऐडी० एण्ड को० ७८ चेट्ला रोड अलीपुर

के० डी० मुकर्जी एण्ड को० ८६ क्लाइव स्ट्रीट

वी० डी० सम्पत ४ मल्लिक स्ट्रीट

आर० गजाधर एण्ड को० लि० मन्क्स लेन

शीशेके व्यापारी

अमेरिकन फ्लेमिङ्ग कम्पनी २८ फ्री स्कूल स्ट्रीट

ईस्ट इण्डिया ट्रेडिंग कम्पनी ८।२ हेस्टिंग स्ट्रीट

कलकत्ता ग्लास ट्रेडिंग कम्पनी ४ रोयल एक्सचेन्ज प्लेस

कुंजबिहारी चन्द्र एण्ड सन्स १०।१ स्वालो लेन

डायना इंजिनियरिंग कम्पनी ३१ क्लाइव स्ट्रीट

नारायणचन्द्र दे २ स्वालो लेन

फनीन्द्रनाथपाल ११३।२ केनिंग स्ट्रीट

फटिकलाल सील एण्ड सन्स ५२ A स्वालो लेन

वनर्जी ब्रदर्स १०१-१०२ अहिरी टोला स्ट्रीट

मारिस जार्ज एण्ड सन्स ५२ A डायमन हार्बर रोड

राय वनर्जी एण्ड को० १८२ लोअरचीतपुर रोड

सीतानाथ ला एण्ड को० ७ स्वालो लेन।

पेपर मर्चेन्ट्स

कलकत्ता पेपर ट्रेडिंग कम्पनी १३३ केनिंग स्ट्रीट

जान डिकिन्सन एण्ड को० लि० पोस्ट बाक्स ४५

जे० एन० चटर्जी एण्ड को० ६२ B राधाबाजार स्ट्रीट

जे० वी० ऐर्नाल्ड एण्ड को० कलकत्ता

डा०मल्लिक एण्ड को ६७ ओल्ड चाइना बाजार

एन० सी० बनर्जी १०० क्लाइव स्ट्रीट
पूर्णचन्द्र कुण्डु एण्ड सन्स १३६ ओल्ड चाइना बाजार
बालमेयर लारी एण्ड को० लि० ७१ केनिंग स्ट्रीट
ब्रिगिन्स,टीपे एण्ड ऐलेक्स पोई टाई लि०६मैङ्गो लेन
बी० डाइडेन एण्ड को०लि०१२ डलहौसी स्क्वायर
भोलानाथदत्त एण्ड सन्स १३४ ओल्डचाइना बाजार
एल० एन० चन्दर एण्ड को० १४४ राधाबाजार स्ट्रीट

टिम्बर मर्चेन्ट्स

कलकत्ता बिल्डर्स स्टोर्स लि० ६२ बहूबाजार स्ट्रीट
गुलाबराय शिवबक्स ६७।२० स्ट्राण्ड रोड
डेविडसन एण्ड को० लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
ग्रुमर ब्रदर्स एण्ड को ७ हेयर स्ट्रीट
बर्ट एण्ड को क्लाइव स्ट्रीट
बंगाल कमर्शियल कम्पनी ६७ क्लाइव स्ट्रीट
मिलर्स टिम्बर एण्ड ट्रेडिंग कम्पनी लि० २५ डलहौसी स्क्वायर
एस० पी० सर्वाधिकारी एण्ड को० ३४ मोहन बगान रोड
एच० डियर एण्ड को० लि० ८ क्लाइव स्ट्रीट
डब्लू०पी०वारेन एण्ड को०लि०१२ लिण्डसे स्ट्रीट

रंगके व्यापारी

जे० टी० जोन्स एण्ड को० लि०८ क्लाइव स्ट्रीट
जी० सी० लाहा १ धर्मतल्ला स्ट्रीट
पी० दे० श्याम एण्ड को० ४ डेविड जोसेफ लेन
बंगाल पेन्ट मर्चेन्ट कम्पनी १६ ग्रानफील्ड लेन
मानिकलाल पाल एण्ड को० ६२ हरिसन रोड
मुरारका पेन्ट एण्ड वार्निश वर्क्स लि०१३१ केनिंग स्ट्रीट
एस० नगीनदास पारेख ५ पोलक स्ट्रीट

बैंतका फर्नीचर तैयार करनेवाले

टी० ह्यूज्ज एण्ड को० २३ लालबाजार
पाचियाङ्ग एण्ड को० २ लिण्डसे स्ट्रीट
मलायन केन एण्ड ट्रेडिङ्ग कम्पनी २४ राधाबाजार

विज्ञापन बांटनेवाले

इण्डियन पब्लिसिटी सर्विस ३ मैङ्गो लेन
इन्टरनेशनल ऐडवर्टाइजिङ्ग लि० ३।१ बैंकसहाल स्ट्रीट
कलकत्ता ऐडवर्टाइजिङ्ग ऐजेन्सी १५ कालेज स्क्वायर
कलकत्ता पब्लिसिटी कम्पनी २८ वाटरलू स्ट्रीट
ट्रेडर्स ऐडवर्टाइजिङ्ग कम्पनी १३ स्वालो लेन
बंगाल ट्रेडर्स लि० ३७ क्लाइव स्ट्रीट
पब्लिसिटी सोसाइटी इण्डिया लि० वाटरलू स्ट्रीट

फार्वर्डिंग, क्लियरिंग एण्ड शिपिंग एजेण्ट

अब्दुल रहीम एस० एन्ड सन्स लि० १५ मार्केट स्ट्रीट
ऐलेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० ७ हेयर स्ट्रीट
ऐंग्लो इण्डिया कैरिंग कम्पनी १०३ क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता लैंडिंग एण्ड शिपिंग कम्पनी लि०
फाक्स एण्ड किंग्स लि० ५ बैंक्स हाल स्ट्रीट
फिलिक निक्सन एण्ड को० १०१ क्लाइव स्ट्रीट
ईराक चंदन लि० १० कोलूटोला स्ट्रीट

थामस कुक एण्ड सन्स लि० ६ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट
निपन यूसेन कैशा २, ३ क्लाइव रो
बयसाक लैंडिंग एण्ड शिपिंग कम्पनी लि० २६ A क्लाइव स्ट्रीट
वालमेयर लारी एण्ड को०लि० १०३ क्लाइवस्ट्रीट
एस० एम० कुण्डू एण्ड सन्स १०।११ स्प्लेनेड ईस्ट
भीकमदास रावजी सन्स १४ बंदर रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट ।

ऐलेक्स एस० एण्ड सन्स—१२ नाथ पार्क स्ट्रीट
ऐलेन एण्ड हैनबरीज लि०—क्लाइव स्ट्रीट
कलकत्ता केमिकल कम्पनी लि०—बालीगंज
कल्पतरु फार्मेसी—चितरंजन ऐविन्यू
कमला फार्मेसी—९ नरकुल डागामेन रोड
डी० गुप्त एण्ड को० ३६६ अपर चीतपुर रोड
दास डन एण्डको०—५६।४ ग्रे स्ट्रीट
नगेन्द्रनाथ सेन एण्ड को० लि०—१८।१-१९ लोअर चीतपुररोड
एन० भट्टाचार्य्य एण्ड को०—१६ बांनफील्ड लेन
बटो कृष्टोपाल एण्ड को०—बानफील्ड लेन
बर्मन फार्मेसी—१६६ बो बाजार स्ट्रीट
बंगाल केमिकल एण्ड फर्मेस्यूटिकल वर्क्स—१५ कौलेज स्क्वायर
मेडिकल सप्लाई ऐसोसियेशन—३९।६ सुखिया स्ट्रीट
स्टैण्डर्ड ड्रग एण्ड केमिकल को० लि० २ रोयल एक्सचेंज प्लेस

जेनरल मर्चेण्ट्स एण्ड कमीशन एजेंट्स

अल्फ्रेड हर्बर्ट (इण्डिया) लि० १३ बृटिश इण्डिया स्ट्रीट
आपुकर एण्ड को० ६ स्ट्राण्ड रोड
इलियट एण्ड को० लि० ७ क्लाइव रो
ईविङ्ग एण्ड को० २ रोयल एक्सचेंज प्लेस
एडी एण्ड को० ५ रोयल एक्सचेंज प्लेस
लेन ब्रदर्स एण्ड को० लि० ७ हेयर स्ट्रीट
ए० बोनर एन्ड को० ९८ क्लाइव स्ट्रीट
ए० टी० गेलू स्पाई लि० ५ हेस्टिंग स्ट्रीट
ई० मेयर एण्ड को० लि० २८ पोलक स्ट्रीट
इम्पोर्ट एण्ड सप्लाई एजेन्सी कम्पनी ८।१ पोलक स्ट्रीट
इन्टरनेशनल कमर्शियल को० लि० क्लाइव स्ट्रीट
ईशनचंद चटर्जी एण्ड सन्स २१ धर्माहट्टा स्ट्रीट
ईवान जोन्स एण्ड को०नार्टन बिल्डिंग लालबाजार
कवोल्ड एण्ड को० ९, १२ लालबाजार
कहान एण्ड कहान ५ क्लाइब घाट स्ट्रीट
कार्तिक चरणदत्त एण्ड को० १३४ केनिंग स्ट्रीट
क्राफर्ड एण्ड को० लि० ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट
क्लि बर्न एण्ड को० ४ फेयर्ली प्लेस
किलिक निकसन एण्ड को० १०१ क्लाइव स्ट्रीट
के० जे० बोले एण्ड को० २१ केनिंग स्ट्रीट
के० जे० गजदर २३ केनिंग स्ट्रीट
ग्लैडस्टोन विली एण्ड को०५ कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
ग्राहम एण्ड को० ९ क्लाइब स्ट्रीट
गोस्ट बिहारी भूर ३५६ अपरचीतपुर रोड
घोष मित्तर एण्ड को० ३३ एमहर्स्ट स्ट्रीट
घोष दे एण्ड को० ९ विश्वास नर्सरी लेन बेलियाघट्टा
जानकीदास जगन्नाथ ३२ आर्मेनियन स्ट्रीट

जे० डी० जोन्स एण्ड को० ८ क्लाइव स्ट्रीट
जे० मरे एण्ड को० लि० २१ ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट
जे० एम० ब्राउने एण्ड सन्स टालीगंज लेन
जे० डी० वागराम एण्ड को० ४।२ क्लाइव रो
जी० ए० आर्चर्ड एण्ड को० २५ मैंगोलेन
जी० एथर्टन एण्ड को० ८ क्लाइव स्ट्रीट
टीकमजी जीवनदास एण्ड को० ५ इजरा स्ट्रीट
त्रिभुवन हीराचन्द एण्ड को० ६ अमरतल्ला स्ट्रीट
डी० सी० नियोगी एण्ड सन्स ६५ क्लाइव स्ट्रीट
डान वाट्सन एण्ड को० ८ लियान्स रेंज
डेवेन पोर्ट एण्ड को० ८।१ कौन्सिल हाउस स्ट्रीट
डेविड सासुन एण्ड को० लि० ४ लियान्स रेंज
डेमेट्रियस ब्रदर्स ५७ राधाबाजार स्ट्रीट
दीनशा एण्ड शोरावजी ८ धर्मतल्ला स्ट्रीट
पारक एण्ड को० ४० केनिंग स्ट्रीट
पैरी एण्ड को० ११ क्लाइव स्ट्रीट
प्लेन्टर्स स्टोर्स एण्ड एजेन्सी को० लि० ११ क्लाइव स्ट्रीट
बाल्मेयर लारी एण्ड को० १०३ क्लाइव स्ट्रीट
बाइरन एण्ड को० ४ चौरंगी रोड
विश्वास एण्ड को० ४ कमर्शियल बिल्डिंग
बिलासीराम ठाकुरदास १३१ हरीसन रोड
भूधरनाथ सिनहा एण्ड ब्रदर्स ७१ A क्लाइव स्ट्रीट
एम० एम० भगत एण्ड को० ७२ केनिंग स्ट्रीट
आर० के० मोदी १११ केनिंग स्ट्रीट
मुकुन्दलाल पाल चौधरी एण्ड सन्स ६७२१ स्ट्रांड रोड
मुकर्जी दत्त एण्ड को० ३१ जेक्सन लेन
मैंकूलाड एण्ड को० २८ डलहौसी स्क्वायर
मैंकंजी लियाल एण्ड को० ५ मिशन रो
मोबर्ली ऐण्ड को० ६ मैंगोलेन
मोदी एण्ड को० १८० हरीसन रोड
मोतीलाल गुलजारीलाल ८।१ रूपचन्दराय स्ट्रीट
यूनिवर्सल स्टोर सप्लाई कम्पनी २ अनाथनाथ देव लेन
यूनिवर्सल एजेन्सी १०।१ रसा रोड
एम० खलील शिराजी एण्ड को० १२ मिशन रो
एन० एन० घोष एण्ड को० ७ स्वालो लेन
एन० घोष एण्ड को० ४ कमर्शियल बिल्डिंग
आर० बी० मण्डल एण्ड को० ४० केनिंग स्ट्रीट
रायली ब्रदर्स १, २ चर्च लेन
लियाल मार्शल एण्ड को० २५ मैंगो लेन
वालेस स्टुअर्ट एण्ड को० लि० २१ केनिंग स्ट्रीट
विलियमसन मैगर एण्ड को० ४ मैंगो लेन
सेन० ला० एण्ड को० ५२ ; ५३ वेलस्ली स्ट्रीट
स्टैनली आक्स एण्ड को० ६ मैंगो लेन
सी० हार्टमैन एण्ड को० ६७ क्लाइव स्ट्रीट
सेण्ट्रल ट्रेडिंग को० ४२।१ गंगाधर बुलेस लेन
एस० ए० बी० बक्सी एण्ड को० ७१ कोलूटोला स्ट्रीट
एस० अब्दुल सत्तार एण्ड को० ७८ कोलूटोला स्ट्रीट
हाजी अब्दुल अली रजा २२ जकरिया स्ट्रीट
हाजी मोहम्मद इस्माइल मोहम्मद रफी ८० कोलू टोला स्ट्रीट
हर्बर्ट सन्स एण्ड को० ११ ए० राधाबाजार
हर्बर्ट हाइट वर्थ लि० २६ स्ट्रांड रोड
होअर मिलर एण्ड को० ५ फेयर्ली प्लेस
हालैण्ड बाम्बे ट्रेडिंग कम्पनी लि० २६ पोलक स्ट्रीट

बंगाल

BENGAL.

बंगाल

यह प्रान्त, अपने व्यापारकी दृष्टिसे, अपनी पैदावारकी दृष्टिसे; अपने इतिहासकी दृष्टिसे, अपनी जनसंख्याकी दृष्टिसे, अपने कलाकौशलकी दृष्टिसे, तथा अपनी विद्वत्ताकी दृष्टिसे भारतवर्षमें बहुत ऊंचा स्थान रखता है। जिस प्रकार इसका इतिहास प्राचीन और अर्वाचीन दोनों ही दृष्टियोंसे अपना महत्व रखता है। उसी प्रकार इसका व्यापारिक महत्व भी अपनी दृष्टिसे अनोखा ही है। भारतीय व्यापारके प्राणरूप रूई और जूट इन दोनों पदार्थोंमेंसे जूटका तो यह क्षेत्र केवल भारतहीमें नहीं प्रत्युत सारे संसारमें अद्वितीयकेन्द्र है। इसी प्रकार कोयला, लोहा, रेशम इत्यादि वस्तुओंके लिए यह स्थान बहुत महत्वपूर्ण हैं। ऐसे महत्वपूर्ण स्थानका संक्षिप्त परिचय इस ग्रन्थमें देना अत्यन्त आवश्यक है। स्थानाभावके कारण यद्यपि हम इसके सम्बन्धमें अधिक नहीं लिख सकते हैं फिर भी इस अभावकी पूर्तिके लिए दो शब्द लिख देना आवश्यक समझते है

ऐतिहासिक परिचय

बंगालका प्राचीन इतिहास बहुत पुराना है। इस रंगभूमिपर अनेक जातियोंके पैर जमे और उखड़ गये, अनेक सिंहासन बने और बिगड़ गये। पहले यह भूमि हिन्दू साम्राज्यके अधिकारमें रही, हिन्दू-साम्राज्यका अन्त होनेपर बहुत समयतक यह मुसलमानी साम्राज्यकी क्रीड़ाक्षेत्र बनी रही। और उसके पश्चात् संसार प्रसिद्ध अंग्रेज जातिके अधिकारमें यह आई। यह सारा इतिहास बड़ा लम्बा, बड़ा विस्तृत और बड़ा रोचक है। मगर व्यापारनीतिसे सम्बन्ध रखनेवाले इस ग्रन्थमे उसपर प्रकाश पड़ना असम्भव है। फिर भी इस इतिहासमें एक बात बड़ी महत्वपूर्ण है।

वह यह कि अपने जन्मसिद्ध अधिकारोंके लिए, अपने राजनैतिक स्वत्वके लिए तथा अपने पर होनेवाले अत्याचारोंके विरुद्ध बंगाल हमेशासे आवाज उठाता रहा है। भारतवर्षके वर्त्तमान राजनैतिक इतिहासमें, भारतकी स्वाधीनताके संग्राममें, बंगालका स्थान हमेशा चमकता हुआ रहा है। जिस प्रकार यहाके लोग अपने आला राजनैतिक दिमागके लिए प्रसिद्ध हैं, उसी प्रकार यहांके नवयुवक अपने त्यागके लिए, अपने बलिदानके लिए, हंसते २ अपने प्राणोंकी आहुति देनेके लिए भी प्रसिद्ध

है। यहांके कई नवयुवकोंने अपने देशके लिए हंसते २ फांसीके तख्तेको स्वीकार किया है, अण्डमानकी भयङ्कर यातनाओंको सहा है। भारतके राजनैतिक इतिहासमें उनका नाम स्वर्णाक्षरोंमें अंकित है।

व्यापारिक परिचय

व्यापारकी दृष्टिसे भी बंगाल भारतवर्षमें सबसे अधिक बढ़ाचढ़ा है। संसार प्रसिद्ध व्यापारिक केन्द्र कलकत्ता इसी प्रान्तमें है। बाहरसे होनेवाले अन्तराष्ट्रीय व्यापारमें कलकत्तेका स्थान भारतवर्षमें पहला है। भारतवर्षमें शायद एक्सपोर्ट और इम्पोर्ट करनेमें इसके सानीका दूसरा नगर नहीं है।

कलकत्तेके अतिरिक्त बंगालमें और भी कई मण्डियां हैं जहांपर जूट, चाय, रेशम, चावल इत्यादि वस्तुओंका बहुत बड़ा व्यापार होता है। ये सब वस्तुएं इन मण्डियोंसे कलकत्तेमें आती हैं और यहांसे बाहर एक्सपोर्ट होती हैं।

उपज और पैदावार

यहांके व्यापारका उत्कर्ष यहांकी उपज और पैदावारपर ही निर्भर है। प्रकृतिगत विशेषतासे यहांपर कुछ वस्तुएं तो ऐसी पैदा होती है जिनकी सानीकी वस्तुएं शायद संसारभरमें उपलब्ध नहीं है। इनमें खासकर जूट, लाख, चाय वगैरह प्रधान हैं। नीचे हम यहांकी पैदावारके कुछ अङ्क देते है। जिससे इनकी उपजका पता चल जायगा। ये अङ्क सन १९२७ के हैं।

जूट	२९३३००० एकड़में बोया गया	९००४००० गाठ तैयार हुई।
कपास	१६५००० ,, ,,	६०००० गाठें तैयार हुई।
धान	१९७१३००० ,, ,,	७२९४.०० टन पैदा हुआ।
गेहूं	१२९००० ,, ,,	३२००० ,, ,,
ईख	२०१००० ,, ,,	२१५००० ,, ,,
चाय	१८८७०० ,, ,,	९५००९३०० रतल पैदा हुई

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज

यहांकी फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीजका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है -

नाम कारखना	संख्या	मजदूर	नाम कारखाना	संख्या	मजदूर
कपडा बुननेकी मिलें	१३१	३३९६	उलन मिल्स	१	१५०
हाडमली फैक्टरीज़	४	४३२	इस्पात, लोहा गलाने के मिल	३	५८६१
जूट मिल्स	८३	३३८२९७	सीसा गलानेवाले]	१	२७४
सिल्क मिल्स	१	११२	अभ्रकके कारखाने	१	३१

ग्रामोफोन रेकार्डका कारखाना	... १ .४३६	केमिकल्सके कारखाने	... २ ..१८७५
आर्डिनेन्स फैक्टरीज	... ४ ..६६५३	कांचके कारखाने	... ४...८४५
रस्सेके कारखाने	.. ४...१०८३	लाखका कारखाना	... १...७२५
जनरल इंजिनियरिंग	...११६ ..२०८४०	माचीसके कारखाने	... ११...३१८६
टीन फैक्टरियां	... ८ . ५३८७	तेलके मिल	... ६२...२७२६
मेटल स्टेम्पिंग	... २. .६६६	साबनके कारखाने	... ६ .११७६
रेल्वे वर्कशाप	. १७.. ३५८३२	पेपर मिल्स	... ३. .३७४४
जहाजके कारखाने	.. १३ ..१६०८३	खपड़िया नलिया कारखाना-(सुर्खी मिल)	.. ५...४६०
ट्राम्वे वर्क्स	.. २...१११६		
लोहे और फौलाद ढालनेके मिल	३...५८६१	सुतारी कारखाने	... ८...१३७३
लेड ढालनेका कारखाना	.. १. .२७४	सिमंट और चूनेके कारखाने	... ६ .१४२८
फ्लोअर मिल्स	.. ७ ..१२४५	लकड़ीके मिल	.. २ ..१२१
बर्फके कारखाने	... १२.. ८५५	पत्थर फैक्टरी	. ४...४१०
चावलके मिल	.. १७१...८३८४	टेनेरी फैक्टरी	.. ८...७५०
शक्करका कारखाना	.. १ ..१००	काटन जिनिंग और बेलिंग फैक्टरियां	... १०...१८७६
चाय फैक्टरियां	.. २०४. .१३६६२		
तमाखूके कारखाने	... २...४२३	जूट प्रेस	... १०१...३१६९८

जिले और जनसंख्या

यह प्रान्त शासन व्यवस्थाकी दृष्टिसे ५ कमिश्नरियोंमें बंटा हुआ है और ये कमिश्नरियां २८ जिलोंमें विभक्त हैं—जिनका विवरण निम्नाङ्कित है—

कमिश्नरियां

नाम	क्षेत्रफल	जनसंख्या
ढाका	१४८२२ वर्गमील	१,२८,३७,३११
राजशाही	१६०१८ „	१,०३,४५,६६४
प्रेसीडेन्सी	१७४०५ „	९,४,६१,३६५
वर्द्धवान	१३,८५४ „	८,०५०,६४०
चटगांव	११,७१० „	६०,००,५२४

इन पाच कमिश्नरियोंमे २८ जिले हैं जिनके नाम ये हैं मैमनसिंह, ढाका, त्रिपुरा, मिदनापुर

चौवीस परगना, बाकरगंज, रंगपुर, फरीदपुर, जैसोर, दिनाजपुर, चटगाव, राजशाही, नदिया, नोआखोली, खुलना, वर्दवान, पबना, मुर्शिदाबाद, हुगली, बोगड़ा, बाँकुरा, हबड़ा, मालदा, जलपाईगोड़ी, कलकत्ता, वीरभूमि, दार्जिलिंग, और चटगाव।

औद्योगिक केन्द्र

इस प्रान्तके प्रधान औद्योगिक केन्द्र ये है। काशीपुर, मानिकतोला, गार्डनरीच, हबड़ा, भातपारा, टीटागढ़, बैंघवटी, चाम्पदानी, भद्रेश्वर, सेरामपुर, हालिशहर, नईहटी, कमरहटी, खर्दह वड़ानगर, दमदम, गरुलिया, बजबज, उत्तरपाड़ा, बाली, खड़गपुर, कचराबाड़ा, सैय्यदपुर आसनसोल, रानीगंज, नारायणगंज, मदारीपुर, चटगाव, मलकारी इत्यादि। इनमेंसे प्रथम ४ तो कलकत्तेके समीपवर्ती उपनगर है। उसके पश्चात् १६ मिल केन्द्र हैं। उसके पश्चात् ५ रेलवे केन्द्र हैं। जहां लोहे और कोयलेका भारी काम होता है। अन्तके शेष तीन जूट संग्रह करनेके महान् केन्द्र हैं। चटगाव और मलकारी इस प्रान्तके प्रधान बन्दर हैं। चटगाँव, चाँदपुर, चौमुहानी सुपारीकी प्रधान मण्डियां हैं।

प्रधान मण्डियां

जूट, चाय, रेशम इत्यादि वस्तुओंकी प्रधान मण्डियोंका वर्णन इस ग्रन्थके प्रारम्भिक भागमें हम कर चुके है।

भिन्न २ प्रकारके व्यवसाय करनेवालोंकी संख्या

व्यवसाय	जनसंख्या	व्यवसाय	जनसंख्या
जमीदारी	१३१६३०२	वकील	८७७५६
खाद्यपदार्थके व्यवसायी	२४,३६,८५६	डाक्टर और वैद्य	१७७,३६६
कपड़ेके व्यवसायी	१,८६,६६४	धार्मिकढोंगसे पेट भरनेवाले	३०१०६७६
महाजनी करनेवाले	१,५५,१११	खनिज मजदूर	६७३१२
आमोदप्रमोदकी चीजोंवाले	७३,२२८	रेशमबुनने वाले	१३५७७
खाल और चमड़ेवाले	६६,६०३	कपास कातने और कपड़ा बुननेवाले	५,२३,५०१
फर्नीचर और हार्डवेअरवाले	४७,०६४	जूट कातने और बुननेवाले	४,६३,४१८
जूट वाले	४२०६५	चाय और काफीसे मजदूर	२,६२,६१०
दलाल	३०,६३७	मछली मारनेवाले	४,३८,३७३
रासायनिक पदार्थवाले	१५०२१	मछलीबेचनेवाले	४,३४,२४०
धातुवाले	१०६८६	रेलवे और जहाजके कुली	३२२६०

बंगालका सामाजिक जीवन

विचार जगतकी दृष्टिसे देखाजाय तब तो बंगालके सामाजिक जीवनमें कई व्यक्तियाँ ऐसी हुई हैं जिन्होंने यहाके सामाजिक जीवनमें उलट फेर कर दिया है। इन महानुभावोंमे राजा राम-मोहनराय, पं० ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा केशवचन्द्र सेन, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि प्रसिद्ध है। इन महापुरुषोंकी वजहसे यहाके सामाजिक जीवनमें कई अभिनन्दनीय उलटफेर हुए, और उन्हींका प्रताप है कि आज बंगालमे ब्रह्म समाजके समान उत्कृष्ट संस्थाओंका अस्तित्व दिखलाई देता है। फिर भी यदि यहाकी जनसंख्याकी निगाहसे देखाजाय तो सुधारकी दृष्टिमे बंगालका सामाजिक जीवन अब भी बहुत पिछड़ा हुआ है। अब भी यहा बाल विवाह, बेमेल विवाह, दहेज प्रथा, व वैधव्यके करुणाजनक दृश्य भयङ्कर रूपमे अभिनीत होते हुए देखे जाते है। खासकर यहांके छोटे ग्रामोंमे तो इस प्रकारके दृश्य बहुत ही दिखलाई देते है। जिससे यहांका नारी जीवन बड़ा ही त्रस्त हो रहा है। व्यभिचार भी यहांपर बहुत बढ़ा हुआ है। खासकर वैश्या-वृत्तिपर जीवन यापन करनेवाली नारियोंकी संख्या और दशा यहा पर बहुत ही भयङ्कर है। यहाके छोटे २ गावोंमें सैकड़ोंकी तादादमें ये पाई जाती है। कलकत्ता नगरमें भी इस वृत्तिके भयङ्कर दृश्य देखनेको मिलते हैं। छोटी २ गन्दी और अत्यन्त संकीर्ण गलियोंके अन्दर सैकड़ोंकी तादादमें ये वैश्याएं भरी हुई मिलेंगी। जो केवल पेटभर अन्नके बदलेमें व्यभिचारके लिये प्रस्तुत हैं। इस वृत्तिको करते २ इनके नारी स्वभाव-सुलभ स्वाभाविक गुण भी नष्ट हो गये है। स्वास्थ्य, सौन्दर्य्य और सदाचारको ये भाग्यकी मारी हुई ललनाएं खो चुकी है। इनकी भयंकर स्थितिका दृश्य देखकर करुणा चीख उठती है, मनुष्यत्व कांप उठता है। सचमुच बंगालके सामाजिक जीवनके लिये यह भाग बड़ाही कलंकपूर्ण है।

जलपाईगौड़ी

यह स्थान करीब ७० वर्ष पूर्व एक छोटेसे देहातके रूपमें था। सत्तर वर्षसे ही इसकी उन्नतिका इतिहास शुरू होता है। पहले यहा जलपाईके बहुत वृक्ष थे। कहा जाता है कि इन्हीं जलपाईके वृक्षोंकी वजहसे इस शहरका नाम जलपाईगौड़ी पड़ा। आजकल यह स्थान उत्तरी बंगालमें एक ही माना जाता है। गवर्नमेंटकी इन्कमटैक्स रिपोर्टसे मालूम होता है कि इन्कमटैक्सकी आमदनीमें इसका नम्बर कलकत्तेसे दूसरे नम्बर पर है। यहांकी बसावट साफ सुथरी एवम लम्बी

है। इसके पासही कटला नामक नदी बहती है। उत्तरी बंगालमें व्यापारिक दृष्टिसे यह पहला स्थान है।

व्यापार—यहा मुख्य व्यापार चायका है। यहासे करीब एक माईलकी दूरी पर प्रसिद्ध टीस्टा नदी है। इसके उस पार डोअर नामक स्थान है। इसमे सैंकडो चायके बगीचे हैं। इन्हीं बगीचोंसे यहा चाय तैय्यार होती है। प्रायः सभी चाय बागानमे यहा टी फैक्टरिया होती है। इनफैक्टरियामें यहा चाय तैय्यारकी जाती है। यहा की चाय फर्स्ट कालिटीकी मानी जाती है।

कुछ समय पूर्व चायके बगीचे सिर्फ युरोपियन लोगोंके ही हाथमे थे। इस काममें उनका एकमात्र आधिपत्य था मगर कुछ समयसे इसमें भारतीयोंने भी घुसना शुरू कर दिया है। फलस्वरूप आज कई चाय बागान भारतीय पूंजीपतियोंके आधीन चल रहे हैं। इस प्रयासका प्रथम श्रेय यहाके प्रसिद्ध टी प्लेंटर्स मेसर्स घोष एण्ड संसके स्वर्गीय मालिक श्री गोपालचन्द्र घोपको है। इन्हींके प्रयत्नसे इस व्यापारमें भारतीय लोग घुसे। आज यह व्यापार भारतीयोंके द्वारा भी बहुत अच्छी तरहसे संपादित होता है। इस कार्यमे विशेष उन्नति करनेके उद्देश्यसे यहाके भारतीय टी प्लेंटर्सने इण्डियन टी प्लेंटर्स ऐसोसिएशन नामक एक संस्था खोल रक्खी है। यह संस्था चायकी खेतीके कार्यमे बहुत उन्नति कर रही है। चायके सिवा यहा चाय बागानके शेअरोंका भी बहुत बड़ा व्यापार होता है।

प्रधान काम तो यहा चायका ही है। मगर इसके साथ कपड़ा, गल्ला, आटा, जूट आदिका व्यापार भी अच्छा होता है। इस व्यापारके करनेवाले कई व्यापारी यहा निवास करते हैं। कपडा, आटा, गल्ला एवम मनोहारी सामान बाहरसे यहा आकर बिकता है। तथा चाय और जूट यहांसे बाहर जाते हैं। इन व्यापारियोंकी भी मरचेंट्स एसोसिएशन नामक एक संस्था है। इस संस्थाका उद्देश्य आपसके व्यापारिक झगड़ोंको निपटा कर व्यापारकी उन्नति करना है।

जलपाईगोड़ीसे करीब ६ माईल पर भीतरगढ़ नामक एक प्राचीन किला है। यहा एक व्यापारिक मेला लगता है। इसमें कई व्यापारी अपना माल लाते हैं इसके अतिरिक्त जलपेशा नामक स्थान—जो १० माईलकी दूरी पर है—पर भी फाल्गुन मासमे एक मेला लगता है। यहां भी भीतरगढके मेलेकी भाति व्यापारी लोग अपना माल लाते हैं।

फैक्ट्रीज़ एण्ड इंडस्ट्रीज़—यों तो यहा करीब सौ सवा सौ फैक्ट्रियां है। मगर सब चायकी है और वे भी चाय बागानोंमें। हा, इनके सिवा यहा दो एक फ्लोअर मिल और एक छोटासा माचीसका कारखाना अवश्य है। मगर बहुत साधारण।

———

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स कालूराम नथमल

इस फर्मके मालिक सरदार शहर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जातिके जैन सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ६० वर्ष पूर्व सेठ कालूरामजीके हाथोंसे हुआ। आपका स्वर्गवास होगया है। आपके २ पुत्र हुए सेठ पांचीरामजी एवम नथमलजी। करीब १० सालसे आप दोनों भाई अलग २ हो गये हैं।

वर्तमानमें इस फर्मका संचालन बाबू नथमलजी एवम आपके पुत्र सुमेरमलजी करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है —

जलपाई गौड़ी—मेसर्स कालूराम नथमल—यहां जमींदारी एवम बैङ्किंगका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स नथमल सुमेरमल—१७७ हरिसन रोड—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट और व्यापार होता है। यहांका तारका पता Mubicum. है।

मेसर्स कालूराम रामचन्द्र

इस फर्मका हेड आफिस लुक्सान (जलपाई गौड़ी) है। वहां यह फर्म करीब ३० वर्षसे स्थापित है। यहां इसका स्थापन १० वर्ष पूर्व सेठ कालूरामजीके द्वारा हुआ। आपहीके द्वारा इस फर्मकी तरक्की हुई। आपके रामचन्द्रजी नामक एक पुत्र हैं। आप भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स कालूराम रामचन्द्र—यहा आपकी जमींदारी है।

लूक्सान (जलपाई गौड़ी) मेसर्स कालूराम बद्रीप्रसाद—यहा टी बागानमें रुपैया सप्लाई करनेका एवम कपड़े और लकड़ीका व्यापार होता है।

कातकिया—पो० आ० कैरन (जलपाई) मेसर्स कालूराम बद्रीप्रसाद—यहां कपड़े एवम टी बागानमें रुपैया सप्लाई करनेका काम होता है।

गठिया—पो० आ० नगर काटा (जलपाई) मेसर्स कालूराम बद्रीप्रसाद—यहा बेंकिंग और भूटान स्टेटकी ट्रेजरीका काम होता है।

चेंगमारी—पो० आ० कैरन (जलपाई) बद्रीप्रसाद जानकीदास—यहा टी गार्डनमे रुपैया सप्लाईका काम होता है।

मेसर्स घोष एण्ड सन्स

इस फर्मके वर्तमान संचालक जे० सी० घोष तथा आपके पुत्र डी० सी० घोष और बी० सी० घोष हैं। आप बंगाली सज्जन हैं। यों तो यह फर्म यहां कई वर्षोंसे स्थापित है मगर सन् १९१५ ई० से उपरोक्त नामसे व्यापार कर रही है। इसके स्थापक जे० सी० घोष हैं। आपहीके हाथोंसे इसकी विशेष उन्नति हुई।

इस फर्मके मूल स्थापक बाबू जी० सी० घोष थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपही यहां प्रथम भारतीय थे जिन्होंने चायकी खेतीका काम प्रारम्भ किया। चायकी खेतीके विषयमें भारतियोंमें आपका नाम सबसे पहले माना जायगा।

बाबू जे० सी० घोष यहाके नामाकित व्यक्तियोंमेंसे है। आप कई चाय बगानके एजेण्ट, प्रोप्राइटर, मैनेजिङ्ग एजेण्ट एवम डायरेक्टर हैं। इसके अतिरिक्त कई बैंक और कई संस्थाओंके आप मेम्बर, चेयरमैन एवम डायरेक्टर है।

इस फर्मपर निम्नलिखित कार्य होता है —

जलपाई गौड़ी—मेसर्स घोष एण्ड सन्स -T A. Ghoseson इस फर्मपर बैंकिङ्ग, जोतदारी एवम जमींदारीका काम होता है। यह फर्म गोपालपुर टी कम्पनीकी मैनेजिङ्ग एजेण्ट, मालहाटी और कादम्बिनी टी गार्डनकी प्रोप्राइटर एवम विजयनगर, सौदामिनी; लक्ष्मीकान्त आदिके मैनेजिंग एजेण्ट हैं।

मेसर्स जीवनदास वृद्धिचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। यहा यह फर्म जूटका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इसके वर्तमान मालिक सेठ सरदारमलजी, वृद्धिचन्दजी एवम रामलालजी है। आप ओसवाल समाजके गोठी सज्जन हैं। यहा इस फर्मपर जमींदारी एवम बैंकिंगका काम होता है। यहा इस फर्मकी बहुत बड़ी जमींदारी है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें जूटके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है।

मेसर्स जेठमल रामकिशन

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू फतेचन्दजी कलानी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको यहा स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इसके स्थापक सवाई रामजी तथा जेठमलजी दोनों भाई थे। यहा आकर आप लोगोंने कपड़ेका व्यापार किया। इसमें अच्छी सफलता रही। आप लोगोंका स्वर्गवास हो गया है।

स्व० सेठ मोहनलालजी डागा जलपाईगोड़ी
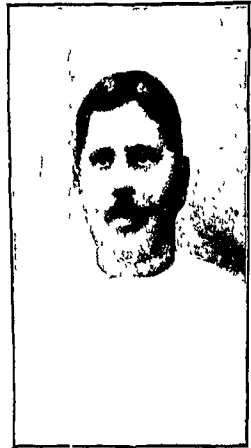
स्व० सेठ रामचन्द्रजी डागा जलपाईगोड़ी

बाबू [illegible] डागा जलपाईगोड़ी

बाबू जोगेशचन्द्र घोष जलपाईगोड़ी

वर्तमानमें आपकी फर्मपर बैंकिंग, मनीलेंडर और जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स पन्नालाल बीजराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब जमनाधरजी हैं। आपका हेड आफिस साहबगंज है इस फर्मका विशेष परिचय साहबगंजमें दिया गया है। यहां यह फर्म जूट, गल्ला और किरानेका व्यापार करती है।

मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र डागा

इस फर्मके मालिक नौहर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके डागा सज्जन हैं। इस फर्मको यहा स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ मोहनलालजी थे। आप बहुत साधारण स्थितिमें यहा आये थे। अपनी व्यापार कुशलतासेही आपने यहां अच्छी सम्पति एवम सम्मान प्राप्त किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके दो पुत्र हुए। बाबू रामचन्द्रजी एवम दुलीचन्दजी। रामचन्द्रजीका स्वर्गवास हो गया है। आपके समयमें भी इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू दुलीचन्दजी, रामस्वरूपजी, रामानन्दजी, भगवान दासजी एवम गौरीशंकर जी हैं। दुलीचन्दजीके बाबू बद्रीनाथजी, बन्शीधरजी और सीतारामजी नामक तीन पुत्र हैं।

इस फर्मकी यहा अच्छी प्रतिष्ठा है। बाबू रामदीनजी स्थानीय कई संस्थाओं और टी गार्डनोंके मेम्बर एवम डायरेक्टर हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र डागा T. A Daga—यहां बैंकिंग, जमींदारी और टी प्रेरुटर्सका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामचन्द्र दुलीचन्द ६२ क्लाइव स्ट्रीट—यहां सब प्रकारकी कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स आर० डी० डागा एण्ड को०—यहां कपड़ा एवम कण्ट्राक्टिंगका काम होता है

शिशुआबाड़ी—मेसर्स रामस्वरूप रामानन्द—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

यह फर्म निम्नलिखित टी गार्डनकी एजेण्ट मैनेजिंग एजेण्ट एवम डायरेक्टर हैं।

१ सरस्वतीपुर टी गार्डन	४ जादवपुर टी गार्डन
२ कोरोनेशन ,, ,,	५ बंगालडोअर्स ,, ,,
३ कोहीनूर ,, ,,	६ जयन्ती ,, ,,

मेसर्स मनोहरदास गोरखमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान खेतड़ी (जयपुर) है। इस फर्मको यहा स्थापित हुए बहुत वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ खेमकरणजी एवम मनोहरदासजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ खेमकरणजीके पुत्र बाबू प्रहलादरायजी हैं। आपही दुकानका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स मनोहरदास गोरखराम—यहा कपड़ा और जमींदारीका काम होता है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स प्रहलाद राय दुर्गाप्रसाद—यहा इस नामसे गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामचन्द्रदास रामेश्वरदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्यजातिके सिंघाड़ा निवासी सज्जन हैं। यह फर्म करीब ५० वर्षसे काम कर रही है। इसके स्थापक रामचन्द्रदासजी थे। आपके तीन पुत्र हुए। जिनके नाम क्रमशः रामेश्वरदासजी, भगवानदासजी एवम डेढराजजी हैं। वर्तमानमें आपही इस फर्मके मालिक है। तीनोंही सज्जन व्यापारमे भाग लेते है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स रामचन्द्रदास रामेश्वरदास—यहा बैंकिंग और कपड़ेका काम होता है। इसके अतिरिक्त कई टी गार्डनोंके शेयर भी आपके पास हैं।

मेसर्स रतीराम तनसुख राय

इस फर्मके वर्तमान संचालक रतीरामजीके पुत्र बाबू तनसुखरायजी हैं। यह फर्म यहा करीब ४० वर्ष पहले रतीरामजी द्वारा स्थापित हुई थी। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके ही द्वारा इस फर्मकी विशेष तरक्की हुई। आपने शुरु २ में कपडेका व्यापार प्रारम्भ किया था जो आज-तक चला आरहा है। बाबू तनसुखरायजी शिक्षित एवम नूतन विचारोंके सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलपाई गोडी—मेसर्स रतीराम तनसुखराय—यहा कपड़ा, टी गार्डनके शेअर, धान, चावल एवम बैंकिङ्गका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रतीराम तनसुखदास—४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां चालानीका काम होता है।

बाबू उमरावसिंहजी (हरचन्दराय कन्हैयालाल)
जलपाईगौड़ी

बाबू रामेश्वरदासजी सिंघाणिया (रामचन्द्रदास रामेश्वरदास)
जलपाईगौड़ी
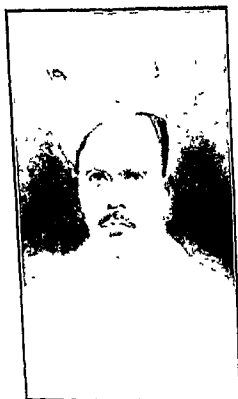
बाबू प्रतापसिंहजी (हरचन्दराय कन्हैयालाल)
जलपाईगौड़ी

बाबू रामचन्द्रजी अग्रवाल (कालूराम रामचन्द्र)
जलपाईगौड़ी

मेसर्स सीताराम वैजनाथ

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू वैजनाथजी, बाबू श्रीलालजी एवम बा० बिहारीलालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके हैं। इस फर्मको यहा स्थापित हुए ३० वर्षके करीब हुए। इसका स्थापन सेठ सीतारामजी द्वारा हुआ। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जलपाई गौड़ी—मेसर्स सीताराम वैजनाथ—यहा गल्ला तथा किरानेका काम होता है। यहा बर्मा आईल कम्पनीकी ऐजेन्सी भी है।

सीलीगौड़ी—मेसर्स सीताराम वैजनाथ—यहां गल्ला तथा किरानेका काम होता है।

बाग्नेस—मेसर्स सीताराम वैजनाथ—यहां पर गल्ला एवम किरानेका व्यापार होता है।

मेसर्स हरचंदराय कन्हैयालाल

यह फर्म करीब ५५ वर्ष पूर्व सेठ हरचंदरायजी द्वारा स्थापित हुई। आप झुंझुनू नामक स्थानके मूल निवासी थे। आपका स्वर्गवास होगया। आपके तीन पुत्र हुए बाबू कन्हैयालालजी प्रभुदयालजी एवम जमनादासजी। इनमें कन्हैयालालजी एवम प्रभुदयालजीका स्वर्गवास हो गया है। आप लोगोंके द्वारा भी इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कन्हैयालालजीके पुत्र उमरावसिंहजी एवम मुत्सद्दीलालजी हैं। आपके तीसरे भाईका स्वर्गवास हो गया है। इनके रामकुमारजी नामक एक पुत्र हैं।

बा० उमरावसिंहजी यहाके अच्छे आदमियोंमेंसे हैं। आप यहांकी कई संस्थाओंके मेम्बर आदि हैं। आपके प्रतापसिंहजी नामक एक पुत्र है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

जलपाई गौड़ी—मेसर्स हरचंदराय कन्हैयालाल—यहां बैंकिङ्ग तथा आढ़तका काम होता है।

जलपाईगौड़ी—मेसर्स ओ० निंग ब्रदर्स एण्ड को०—यह फर्म साहब लोगोंसे व्यापार करती है। चाय बगानमें आपके बहुतसे शेअर हैं। यहां जनरल मर्चेंट एण्ड कमीशन एजंटका काम भी होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स फालूराम जेठमल

„ गोपाल भण्डार

„ जलपाईगौड़ी ट्रेडिंग कम्पनी

मेसर्स बजरंगदास लायकराम

„ मनोहरदास गोरखराम

„ रतीराम ननसुखराय

„ रामचन्द्र रामेश्वर

" रामरिछपाल लादूराम
" रामनारायण भगवानदास
" रामनारायण रामजसराय
" हजारीमल मंगतूराम

बैंकर्स

आर० जी० बैं० लिमिटेड
इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड
इण्डियन कार्पोरेशन बैंक
मेसर्स कालूराम नथमल
जलपाई गोड़ी बैंकिंग एण्ड ट्रेडिंग कार्पोरेशन लिमिटेड
मेसर्स जेठमल केवलचन्द
जोहार्स बैंकिंग एण्ड ट्रेडिंग कार्पोरेशन लिमिटेड
बंगाल डाअर्स बैंक लिमिटेड
मेसर्स मोहनलाल रामचन्द
" शिवलाल मामराज

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स कालूराम नथमल
" जेठमल केवलचंद
" धनसुखराय मानिकचन्द नाहटा

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स फत्तीराम रामदेव
" फूलचन्द रामप्रसाद
" गोवर्द्धनदास मुरलीधर
" गौरीदत्त गजानंद
" मल्लूराम जानकीलाल
" पन्नालाल बीजराज
" प्रहलादराय दुर्गाप्रसाद
" हरचंदराय कन्हैयालाल

जूटके व्यापारी

" कुन्दनमल ऊँचन्दलाल
मेसर्स मोहनलाल रामचन्द्र
" रायली ब्रादर्स
" लंदन क्लार्क
" सिम कम्पनी

टी प्लेंटर्स

आर० के नियोगी
आर० डी० डागा
ए० ई० रहमान
ए० बी० राय
ए० सी० राय
ए० सी० सेन
ए० सन्याल
एस० होरे
एम० एल० चक्रवर्ती
एन० बागची
एल० घटक
ए० एम० एल० रहमान

बर्तनके व्यापारी

मेसर्स गोकुलचन्द रिछपाल
" प्रसादीलाल प्रभुदयाल
" रामनारायण भगवानदास
" रामसहाय हजारीमल

लोहेके व्यापारी

" लक्ष्मीनारायण रामकिशन

किरानेके व्यापारी

" पतिराम भगवानदास
" जयनारायण गणपत

प्रिंटिंग प्रेस

फ्रेंटर्स प्रिंटिंग प्रेस
गयल प्रिंटिंग प्रेस
सरला प्रिंटिंग प्रेस

टाइगर हिलसे सूर्योदयका दृश्य—दार्जिलिंग

दार्जिलिंगके मार्गमें रेलवेका घुमाव

दार्जिलिंग

—:o:—
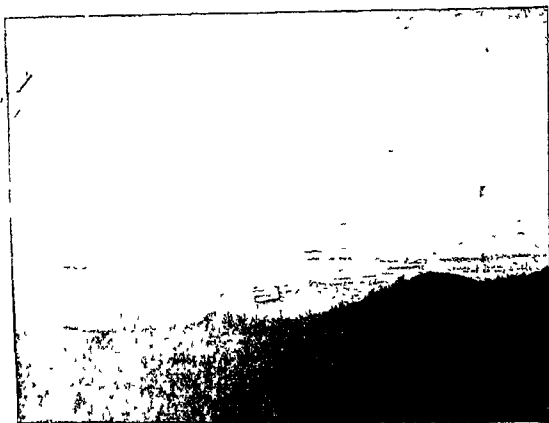
यह स्थान समुद्रकी सतहसे करीब ७ हजार फीट ऊंचा हिमालय पहाड़ पर सुन्दर ढंगसे बसा हुआ है। इ० बी० आर० के आखिरी स्टेशन सिलीगौड़ीसे यहां जानेके लिये दार्जिलिंग हिमालयन रेलवेमें जाना होता है। सिलीगौड़ीसे टेक्सियें भी जाया करती है। रास्ता बड़ा टेढ़ा मेढ़ा सुन्दर एवं हृदयहारी है। पहाड़ों परसे गिरते हुए जल-प्रपातोंका सुन्दर सीन देखते ही बनता है। यह स्थान हिल स्टेशन है। गर्मियोंमें यहां कई लोग हवा खाने आया करते हैं। इन्हीं दिनोंमें बंगाल के गवर्नरका आफिस भी यहा आ जाता है। यहांसे टाईगर हिल पास ही है। जहांसे हिमालयकी प्रसिद्ध एवरेस्ट चोटी दिखलाई पड़ती है। इसका विवरण आगे किया जायगा।

व्यापार—यहांका प्रधान व्यापार चाय एवं जंगली पैदावार ही का है। यही वस्तुएं बाहर जाती है। इनमें चाय, आलू और बड़ी इलायची बहुत मशहूर हैं। यहांसे करीब १ लाख मन आलू ३० हजार मन बड़ी इलायची, २० हजार मन चिरायता, ५ हजार मन मजीठ, २ हजार मन मोम और इसी प्रकार शहद आदि बाहर जाते हैं। बाहरसे आनेवाले सामान मे से यों तो सभी वस्तुएं हैं मगर उनमें कपड़ा, गल्ला, हार्डवेअर आदि विशेष है।

सामाजिक स्थिति— यहांकी पहाड़ी जातियोंकी सामाजिक स्थिति भिन्न है। यहां विशेष कर सब काम स्त्रियां ही करती हैं। व्यापार वगैरहका काम भी कई स्थानोंपर स्त्रियों पर ही निर्भर रहता है। यहां के स्त्री पुरुष स्वस्थ और सुन्दर होते है। इनमें विवाह शादीके रीति रिवाज बड़े भिन्न है। तलाक प्रथाका यहा जोरोंसे प्रचार है। ये लोग पहाड़ी लोग कहलाते हैं। इनमें भी तेली, लोहार, क्षत्री, ब्राह्मण आदि सभी हिन्दू जातिया होती है। ये लोग बड़े भोले और सच्चे होते हैं।

दर्शनीय स्थान—एक प्रकारसे देखा जाय तो दार्जिलिंग में कोई ऐसी जगह नहीं जो देखने योग्य न हो। सारा दार्जिलिंग शहर ही प्रकृतिदेवीका लीला निकेतन बना हुआ है। यहांके मकान पहाड़ पर इस ढंगसे बने हुए हैं, मालूम होता है एक पर एक खड़े किये गये हों।

यहाके दर्शनीय स्थानोंका कुछ परिचय इस प्रकार है :

फूल बागान—इसका अंग्रजी नाम बोटानिकल गार्डन है। इसमें संसारके भिन्न २ स्थानोंसे कई प्रकारके पौधे एवं झाड़ मंगवा कर लगाये गये हैं। दर्शकोंकी सुविधाके लिये उन सब पर नाम लिखा हुआ है। इसी बागानके ठीक बीचमे एक काचका घर बना हुआ है इसमें बहुत

कीमती झाड़ियां एवं पौधे रखे हुए हैं। ये पौधे यहांकी वायुको सहन नही कर सकते। इस बागान की यह खास दर्शनीय वस्तु है।

विक्टोरिया वाटर फाल—शहरसे करीब पौन मिलकी दूरीपर यह प्रसिद्ध फाल स्थित है। कई सौ फीट ऊपरसे गिरकर देखते २ नीचे गिरने लगता है। इसका सीन बहुत सुन्दर है। प्रकृति-प्रेमियोंके देखने योग्य है।

टाईगर हिल—यह स्थान दार्जिलिंगसे ६ माईलकी दूरी पर स्थित है। इसकी उंचाई समुद्रकी सतहसे करीब ८००० हजार फीट है। यहां जानेके लिये मोटरें मिलती हैं। ट्रेनसे भी घूम नामक स्टेशनसे जा सकते हैं। इस स्थानसे सूर्य्योदयका दृश्य भारत भरमें सबसे सुन्दर दिखलाई देता है। इसके अतिरिक्त हिमालयकी प्रसिद्ध गगन चुम्बी चोटी माउंट एवरेस्ट दिखलाई पड़ती है। इस पर जब बादल घिर जाते हैं तब इसका सीन लाजवाब हो जाता है इसी प्रकारके कई प्राकृतिक सीन यहासे देखनेको मिलते हैं।

विक्टोरिया पार्क—यह पार्क दार्जिलिंग टाउनके सबसे ऊंचे स्थान पर है। यहांसे दार्जिलिंग हथेलीके समान मालूम होता है। यहासे एक ओर दार्जिलिंग टाउनका सीन और दूसरी ओर पहाड़ोंकी चोटियोंका दृश्य देखने काबिल है। हवा तो यहा इतनी सुन्दर आती है कि कहना ही क्या ? यहां प्रायः अंग्रेज बस्ती है। भारतीय भी यहा हवा खाने आया करते हैं।

इनके अतिरिक्त चौक बाजार, दार्जिलिंग रोडके रेलवेके सीन आदि देखने योग्य है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स खेतसीदास रामलाल

इस फर्मके मालिक श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके पारिख सज्जन हैं। इस फर्मको दार्जिलिंगमे स्थापित हुए ५० वर्ष हुए। इसकी स्थापना खेतसीदासजी के द्वारा हुई तथा उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आप व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन थे। आपके भाई रामलालजी थे। आप दोनोंका स्वर्गवास होगया। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक खेतसी-दासजीके पुत्र गंगारामजी पारिख हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

दार्जिलिंग - खेतसीदास रामलाल—यहा गल्लेका व्यापार होता है।

कालिमपोंग—खेतसीदास रामलाल— „ „

कलकत्ता—खेतसीदास रामलाल ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहा गल्ले तथा कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।
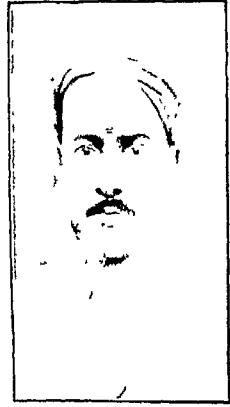
स्व० बा० छोगमलजी चोखानी (जेठमल भोजराज)
दार्जिलिंग

बा० लक्ष्मीनारायणजी चोखानी (जेठमल भोजराज)
दार्जिलिंग

बा० देवीप्रसाद चोखानी (जेठमल भोजराज)
दार्जिलिंग

बा० प्रतापचन्द चोखानी (जेठमल भोजराज)
दार्जिलिंग

करसियांग—खेतसीदास रामलाल—यहां गल्लेका काम होता है। यह फर्म इम्पीरियल टोबाकू कम्पनीकी सिगरेटकी एजंट है।

मेसर्स जेठमल भोजराज

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिरसा (हिसार) का है। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके सुखाणी सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८४५ से स्थापित है। इसकी स्थापना सेठ जेठमलजी एवम उनके भतीजे भोजराजजी द्वारा हुई। आप दोनोंहीके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके पश्चात् इस फर्मके कार्यका संचालन सेठ भोजराजजीके पुत्र छोगमलजीने किया। आपको भारत सरकारकी ओरसे राय बहादुरीका खिताब मिला था। आपके समयमें इस फर्मपर कई नये व्यवसाय शुरू हुए। उसमें अभ्रक एवम सिकीम गवर्नमेंटके स्टेट बैंकर का काम विशेष उल्लेखनीय हैं। आपका भी स्वर्गवास होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालन छोगमलजीके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप शिक्षित एवं योग्य सज्जन हैं। इस फर्मके इतिहासमें यह बात विशेष उल्लेखनीय है कि शुरुसेही इसपर योग्य एवं अनुभवी मुनीम लोग रहते आये हैं। जिसमेंसे तुलसीरामजी भियाणी और रामचन्द्रजी मड़दाका नाम विशेष उल्लेखनीय है। इस समय भी रामचन्द्रजीके पुत्र बा० भैरोंदानजी मड़दा और बा० बालकृष्णजी मड़दा इस फर्मके कार्यका योग्यतासे संचालन करते हैं।

इस फर्मकी ओरसे दार्जिलिंग, सिलीगोड़ी, फेफना (बीकानेर) और दार्जिलिंग जिलेके कई स्थानोंपर धर्मशाला एवं कुए बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दार्जिलिंग—मेसर्स जेठमल भोजराज—माउण्ट प्लेझेंट रोड—यहां कपड़ा, बैंकिंग और सब प्रकारके बिल्डिंग सम्बन्धी सामानका व्यापार होता है। यहां इस फर्मकी तीन दुकानें है। बैंकिंग व्यापार अलाहदा फर्मपर होता है।

सिकिम—मेसर्स जेठमल भोजराज—राजधानी गग्टकमें यह फर्म स्टेट बैंकर है। यहां कपड़े एवं सब तरहकी तिजारतका काम होता है। इसके सिवा इसी राज्यमें मंगन, नामची, रम्फू इन स्थानोंपर भी आपकी दुकानें है। यहां बड़ी इलायचीका व्यापार होता है।

कोडरमा—मेसर्स जेठमल भोजराज—यहां आपकी अभ्रककी खाने है। १९०८ मे ये खाने सेठ छोगमलजी सुखाणी द्वारा स्थापित हुई थी।

कलकत्ता—मेसर्स जेठमल भोजराज, ४ दहीहट्टा—यहां बड़ी इलायचीका व्यापार एवं घरकी दुकानों पर माल भेजनेकी चलानीका काम होता है।

मेसर्स पुरुखचन्द लखमीचन्द

इस फर्मके मालिक रैनी (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य जातिके मंत्री सज्जन हैं। आपकी फर्म यहा करीव ५० सालसे व्यवसाय कर रही है। इस फर्मकी स्थापना सेठ लक्ष्मणदासजी तथा पुरुखचन्दजीके हाथोंसे हुई। आप दोनों भाईयोंने शुरु में कपड़ेका व्यापार किया। आपका स्वर्गवास हो गया है। सेठ लक्ष्मणदासजीके दो पुत्र हुए, रामचन्द्रजी तथा हीरालाल जी। सेठ पुरुखचन्दजीके एक पुत्र हुए बाबू लक्ष्मीचन्दजी। बाबू हीरालालजीका देहान्त हो चुका है।

सेठ लक्ष्मीदासजी व पुरुखचन्दजीके पश्चात् आपके पुत्र इस फर्मका संचालन करते रहे। सन् १९२६ से आप दोनों भाई अपना अलग अलग कारबार करते हैं

वर्तमानमे इस फर्मका संचालन बाबू लक्ष्मीचन्दजी करते हैं। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम वन्सीधरजी कालूरामजी, देवचन्दजी, और केदारनाथजी है। इस समय आप सब लोग व्यवसायमे भाग लेते हैं। आप मिलनसार एवम सज्जन है।

आपकी ओरसे रैनीमे कुआ और धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कालिमपोंग—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द T A Purukhchand —यहा हेड आफिस है तथा ऊन और कपासका व्यापार होता है। यह फर्म तिब्बतके लिये गवर्नमेंट कैरिन कन्ट्राक्टर है।

दार्जिलिङ्ग—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द T. A Purukhchand —यहा कपड़ा और इलायचीका काम होता है।

कलकत्ता मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द ३० काटन स्ट्रीट T. No 389 B. B., T. A. Anlastu—यहां आढ़तका काम होता है।

सिलीगोड़ी—मेसर्स पुरुखचन्द लखमीचन्द—यहाँ जूटका काम होता है।

टीस्टा ब्रिज—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीनारायण—यहा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

याटूंग (तिब्बत)—मेसर्स पुरुखचन्द लखमीचन्द—गवर्मेंट केरिन कन्ट्राक्टरका काम होता है

बा० लक्ष्मीचन्दजी मन्त्री (पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द),
दार्जिलिंग

बा० केदारमलजी मन्त्री (पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द)
दार्जिलिंग
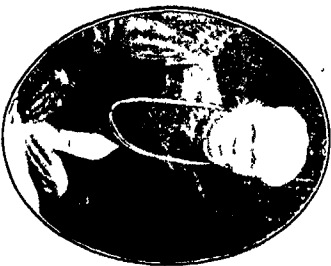
स्व० बा० हरदेवलालजी (हरदेवलाल श्रीलाल)
करसियांग

ग्यानसी (तिब्बत)—मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द Po.सूकिया पोखरी —गवर्मेन्ट केरिन कन्ट्राकरका काम होता है।

गोरखिया (नेपाल) मेसर्स पुरुखचन्द लक्ष्मीचन्द—यहां कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स भगवानराम गोगाराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक द्वैचन्द्रामजी एवं लच्छीरामजी हैं। इसका हेड आफिस दिनाजपुरमें है। अतएव इसका विशेष परिचय वहां मेसर्स द्वैचन्दराम लच्छमीरामके नामसे दिया गया है। यहा इस फर्मपर गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स मोहनलाल शिवलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बडुआ (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गौत्रिय सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक मोहनलालजी तथा शिवलालजी दोनों भाई थे। आप दोनोंका देहान्त हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोहनलालजीके दत्तक पुत्र लोकरामजी,सेठ शिवलालजीके पुत्र परशुरामजी और पुरुषोत्तमदासजी हैं।

आपकी ओरसे बडुआ नामक स्थानपर धर्मशाला तथा तालाव और दार्जिलिङ्गमें एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दार्जिलिङ्ग—मेसर्स मोहनलाल शिवलाल—यहां हार्डवेअर, कपड़ा व कांचके सामानका व्यापार होता है।

यह फर्म मकान, बिजली आदि का कन्ट्राक्ट भी करती है।

कलकत्ता—मेसर्स मोहनलाल शिवलाल ४२ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां आड़तका काम होता है।

मेसर्स श्रीकृष्णदास कन्हैयालाल

यहां यह फर्म करीब ७५ वर्षोंसे व्यापार कर रही है। आजकल इसका हेड आफिस कलकत्ता है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू कन्हैयालालजी और जगन्नाथजी हैं। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्ता विभागके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म सोना चांदी एवम किरानेका व्यापार करती है।

कपड़ेके व्यापारी

जेठमल भोजराज
बुरुलचन्द लखमीचन्द
दीनाराम वंशीधर
साहीराम ख्यालीराम
गजानंद कालूराम
मालीराम रामेश्वर
हुकुमचन्द हरदयाल
सुखराम श्रीनारायण
हरदयाल केदारनाथ
परसराम लालजीराम
भगवानदास दुलीचन्द

गल्ले और किरानेके व्यापारी

अमरचन्द इसरदास
श्रीकिशनदास कन्हैयालाल
चतुरभुज काशीराम
खेतसीदास रामलाल

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लि० (ब्रांच)
मेसर्स जेठमल भोजराज

हार्ड वेअरके व्यापारी

जेठमल भोजराज
मोहनलाल शिवलाल
रामप्रसाद गनेशीलाल
जयलाल नरसिंहदास
हरलाल जगन्नाथ

जनरल मरचेण्ट्स

फ्रांसिस हेरिसन हाय वे एण्ड० को० चौरस्ता
हबीब मल्लिक एण्ड सन्स ,,
गुलाम महम्मद एण्ड ब्रदर्स ,,
हाल एण्ड अण्डरसन लि० ,,
स्मिथ सेनीस्टरीट एण्ड को० ,,
वाड़ो एण्ड फ्लीना ,,
पायोनियर स्पोर्ट्स, जनरल मरचेंट ,,
मेयर एण्ड को स्पोर्ट्स डीलर्स ,,
जयलाल नरसिंहदास माउंट प्लीमेंट रोड
इमामडीन ए० एण्ड सन्स फरियर्स
अब्दुल समाद एण्ड सन्स

क्यूरियो एण्ड सिल्क मरचेन्ट्स

धनराज परशुराम सिल्क हाउस
शिवसुन्दर एण्ड सन्स क्यूरियो
मास्टर एण्ड को० क्यूरियो
जमनालाल एण्ड सन्स
परशियन सिल्क मार्ट
के हासम एण्ड को०

फोटो ग्राफर्स

प्रिन्स एण्ड को०
एस० एण्ड को० लि०
जान्स एण्ड को०
वेलिंगटन स्टूडिओ
दास एण्ड को०

जौहरी

जे बोसेक एण्ड को
पी० सी० बेनर्जी एण्ड को०
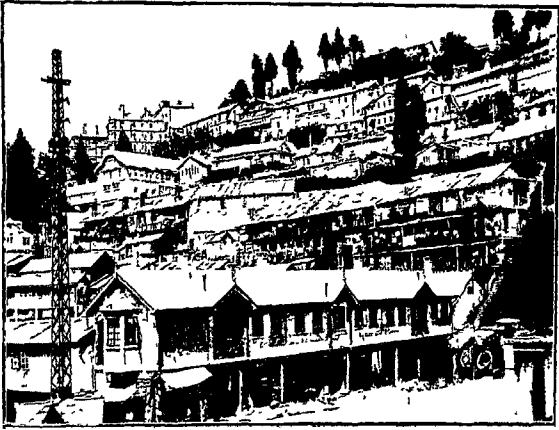
चौक बाजारसे दार्जिलिंगका दृश्य

विक्टोरिया पार्क दार्जिलिंग

करसियांग

यह स्थान हिमालय पहाड़ पर समुद्रकी सतहसे करीब ५ हजार फीट उंचाई पर बसा हुआ है। सिलीगोड़ी और दार्जिलिङ्गके बीचमें यह स्थान पड़ता है। यह डी० एच रेलवेका बड़ा स्टेशन है। यहां भी लोग हवाखाने आया करते हैं। इसके आस-पास भी बहुतसे प्राकृतिक स्थान देखने योग्य हैं। यहांका व्यापार चाय आलू और इलायची का है। ये तीनों ही पदार्थ यहांसे हजारों मनकी तादादमें बाहर जाते हैं। बाहरसे प्रायः सभी वस्तुएं आती है। जिसमें विशेष कर कपड़ा, गल्ला, तेल, चद्दर, हार्डवेअर आदि हैं। यहां भी बड़े २ व्यापारी निवास करते हैं। उनका परिचय नीचे दिया जाता है।

मेसर्स खेतसीदास रामलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक गंगारामजी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म दार्जिलिङ्गमें करीब ५० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय दार्जिलिङ्गके पोर्शनमें दिया गया है। यहां यह फर्म गल्ले एवं सिगरेटकी एजन्सीका काम करती है।

मेसर्स गोयनका एण्ड को०

इस फर्मके मालिक भिवानी निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके गोयनका सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८६६ से व्यापार कर रही है। इसके स्थापक बाबू पोखरमलजी तथा शिवनारायजी हैं। बाबू शिवनाराणजीका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू नागरचन्दजी गोयनका और पोखरमलजी बगड़िया है। इस फर्ममें आप दोनोंका साझा है। बाबू पोखरमलजीके दो पुत्र हैं। वामनचन्द्रजी तथा लक्ष्मी-नारायणजी। वामनचन्द्रजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करसियांग—मेसर्स पोखरमल शिवनारायण—यहां इस फर्मका हेड आफिस है। यहां बैंकिंग, कपड़ा और चलानीका काम होता है।

करसियांग—मेसर्स गोयनका एण्ड को० T. A. Burmoilo & Goenka Co.—यहां हार्डवेअर, कपड़ा, मनिहारी आदिका काम होता है यह फर्म बर्माशेल कम्पनीकी पेट्रोल और किरासनकी एजेन्ट है।

दार्जिलिंग—पोखरमल शिवनारायण—हार्डवेअर, मनिहारी तथा एजेन्सीका काम होता है।

सिलीगोड़ी—पोखरमल शिवनारायण—यहा हार्डवेअर, मनिहारीका एवं एजंसीका काम होता है।

मेसर्स पदमचन्द रामगोपाल

यह फर्म यहा सन् १८७५से स्थापित है। इसके स्थापक बाबू पदमचन्दजी थे। आप अग्रवाल वैश्य जातिमे गर्ग गोत्रिय सज्जन थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें सिरसा निवासी बाबू पदमचन्दके पुत्र बाबू रामगोपालजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करसियांग मेसर्स पदमचन्द रामगोपाल—यहा कपड़ा तथा कन्ट्राक्टिङ्गका काम होता है।

मेसर्स भगवानदास गोगाराम

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुर (बंगाल) है। वहा यह फर्म करीब ५० वर्षोंसे व्यापार कर रही हैं। इसके वर्तमान संचालक ढूंचन्दरामजी तथा लच्छीरामजी है। इसका विशेष परिचय मेसर्स ढूंचन्दराम लच्छीरामके नामसे दिनाजपुरमें दिया गया है। यहा चाय एवं जमींदारी का काम होता है।

मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान भिवानी (पंजाब) का है। आप अग्रवाल जातिके गोयनका सज्जन हैं। आपकी फर्म यहा सन् १८७५ से स्थापित है। इसके स्थापक बा० हरदेवदासजी थे। आप व्यापार कुशल थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन बा० श्रीलालजी करते हैं। आप यहाके आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेंबर है। आपके पुत्र जौहरीमलजी और सत्यनारायणजी हैं आप भी व्यापारमें भाग लेते हैं

इस फर्मकी ओरसे बनारसमें एक विद्यालय तथा अन्नक्षेत्र और भिवानीमें एक अन्न क्षेत्र चल रहा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करसियाग—हरदेवदास श्रीलाल (T. A Goenka)—यहा बैंकिंग और जमींदारीका काम होता है यह फर्म टी गार्डनकी प्रोप्राइटर भीहै।

सिली गोड़ी-बंगाल राइस मिल—यहां आपका चाँवलका मिल है।

यह फर्म सिपाई धूरा टी स्टेट, महालदेराम टी स्टेट, माटीगरा टी स्टेटकी प्रोप्राइटर है।

हिमालयकी किंचिनजंगा चोटी (बादलोंसे घिरा हुई) (दार्जलिंग)

माउंट एवेरेस्टका दृश्य टाइगर हिलसे (दार्जलिंग)

बैंकर्स

मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल

कपड़ेके व्यापारी

,, तुलसीराम बालचन्द

,, पदमचन्द रामगोपाल

,, पोखरमल शिवनारायण

,, रामजसराय बजरंगलाल

,, शिवबगसदास कालूराम

,, हनुमानदास श्रीसुखराय

गल्ला किरानेके व्यापारी

,, तुलसीराम बालचन्द

,, डुमाराम भरोसीराम

,, पोखरमल शिवनारायण

,, हनुमानदास श्रीसुखराम

जनरल मरचेण्ट्स

,, गोयनका एण्ड को०

,, जे तारापुर एण्ड को०

,, शेख गुजल हुसेन

टी प्लेन्टर्स

करसियांग दार्जिलिंग टी कम्पनी लिमिटेड

(मैनेजिंग एजण्ट जार्डन कीनर एण्ड को०)

स्प्रिंग साइट टी स्टेट लिमिटेड

(मैनेजिंग एजण्ट जार्डन कीनर एण्ड को०)

केसलटन टी स्टेट लिमिटेड

(मैनेजिंग एजंट वार्लो एण्ड को०)

सिंगल टी कम्पनी लिमिटेड

(मैनेजिंग एजंट हामौलर एण्ड को कलकत्ता)

गोइटी व्हेट टी कम्पनी लिमिटेड

(जी० डवल्यू० आर० करसियांग मैनेजिंग एजंगट) महालदेराम टी स्टेट

(प्रोप्राइटर मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल करसियांग) सिपाई कोरा टी स्टेट

(प्रोप्राइटर मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल करसियांग)

माटीगारा टी स्टेट

(प्रोप्राइटर मेसर्स हरदेवदास श्रीलाल करसियांग)

रंगपुर

रंगपुर तीन गांव मिलकर बन हुआ है। माहीगंज नवावगंज, एवम आलम बाजार। इन तीनोंमें करीब २ दो माईलका फासला है। आलम बाजार जूटके लिये, माहीगंज जूट, तमाखू और गल्लेके व्यापारके लिये एवम नवावगंज साधारण कपड़े वगैरह व्यापारके लिये प्रसिद्ध है। यह स्थान इस्टर्न बंगाल रेल्वेकी छोटी लाईनपर अपने ही नामके स्टेशनके पास बसा हुआ है। आलम बाजार स्टेशनपर ही है। माहीगंज एवम नववागंज २ मीलकी दूरीपर भिन्न दिशामें हैं। सवारीके लिये मोटर और घोड़ा गाड़ियां मिल जाया करती हैं।

व्यापार—यहांका प्रधान व्यापार तमाखू एवम जूटका है। इन्हीं दोनोंकी वजहसे यहा की गतिविधी बहुत अच्छी है। यहांके आसपासके देहातोंमें जैसे हरागाध, हाबू, बोटवाड़ी आम्रूलिया,

गंगाचढ़ा, बुड़िया हाट आदि स्थानोंमें तमाखू बहुत पैदा होती है। यहांकी तमाखू होती भी बहुत अच्छी क्वालिटीकी है। इसकी मौसिम चैत्र और बैसाख मासमें होती है। तमाखूका तोल ५ मनका एक मन गिना जाता है। यह कालाचंदी तोल कहलाता है। जाति और मोतिहारी तमाखू के तोलमे ६० सेरका मन माना जाता है। यह तमाखू हलकी होती है। यहासे प्रति वर्ष लाखों रुपैयेकी तमाखू बाहर जाती है। इसका भाव कालाचंदी मनसे करीब ६०) के होता है।

इसके अतिरिक्त जूटका व्यापार भी यहाँ अच्छा होता है साल भरमे करीब ५ लाख मन जूट यहांसे बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त गल्ला, कपड़ा मनीहारी, किराना आदि बाहरसे यहा आकर बिकते है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद गोकुलचंद इन्द्रचंद

इस फर्मका हेड अफिस कलकत्तामें मेसर्स मौजीराम इन्द्रचन्द नाहटाके नामसे है। यह फर्म यहां बहुत पुरानी है। इसके वर्तमान मालिक बा० पूरणचंदजी एवम बा० ज्ञानचंदजी है। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके बैंकर्स विभागमें दिया गया है। यहां यह फर्म जमीदारी एवम बैंकिंगका व्यापार करती है।

मेसर्स छोगमल तिलोकचन्द

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान गंगाशहर है। आप ओसवाल जातिके चोपड़ा सज्जन है। इस फर्मका हे० आफिस माहीगंज रंगपुरमे हैं। वहा इस फर्मको संवत् १६५० में सेठ पूसराजजी तथा बिदामलजी चोपडाने स्थापित की। आरंभसे ही इस फर्मपर गल्ले तथा पाटका कारबार होता रहा है।

वर्तमानमे इस फर्मके संचालक लादूरामजीके पुत्र मंगलचन्दजी, गुमानीरामजीके पुत्र इन्द्रचन्दजी तथा बिदामलजीके पुत्र तिलोकचन्दजी हैं। आपका स्व० हो गया है। आपके सुगनचन्द जी नामक एक पुत्र हैं। पूसराजजी तथा बिदामलजी आजीवन तक मेसर्स मौजीराम इन्द्रचन्द नाहटाके यहा मुनीमातका काम देखते रहे।

बा० छोगमलजी आजकल वकीलातका काम काम करते हैं। आप बी० ए० बी० एल० हैं। आप मा० चेम्बर आफ कामर्सके ज्वाइण्ट सेक्रेटरी है। ओसवाल स्वेताम्बर जैन सभा (तेरापंथी) के भी आप सेक्रेटरी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रंगपुर—(माहीगंज) मेसर्स छोगमल तिलोकचन्द—यहां जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स छोगमल तिलोकचन्द जगत सेठकी कोठी खंगरापट्टी T. A. UdBhan—
यहां जूटकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स जेसराज रिधकरण

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रिधकरणजी हैं आप राजलदेसर (बीकानेर) निवासी ओसवाल जैन सम्प्रदायके तेरापंथी सज्जन हैं। आपके पड़दादा बाबू उम्मेदमलजीने करीब १२५ वर्ष पूर्व इस फर्मकी स्थापना की थी। तबसे यह फर्म बराबर उन्नति करती जा रही है। आपके दादा बाबू जेसराजजीने इस फर्मकी विशेष उन्नति की थी।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगपुर—जेसराज रिधकरण—यहा बैंकिंग और जूटका काम होता है।

कांवनिया—जेसराज रिधकरण—जूटका काम होता है।

जूटकी मौसिमपर यह फर्म और भी कई जगह जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स नगराज माणिकचन्द

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़के निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जातिके सज्जन है। करीब ३५ वर्ष पूर्व इसकी रंगपुरमें स्थापना हुई। वर्तमानमें नगराजजी इसके मालिक है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

रंगपुर—मेसर्स नगराज माणिकचन्द माहीगंज—यहां जूटकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स फतेचन्द प्रतापमल सम्पतमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक प्रतापमलजी एवं मिर्जामलजी हैं। आप ओसवालजातिके राजलदेसर निवासी सज्जन है। कलकत्तेमे यह फर्म ७७ वर्षोसे काम कर रही है। इसका विशेष परिचय मेसर्स फतेचन्द चौथमल मिर्जामलके नामसे मैमनसिंहमे दिया गया है। यहां इस फर्मपर पीतल, ताम्बा और कांसी आदि धातुओंके वर्तनोका व्यापार होता है।

मेसर्स रतनचन्द जौहरीलाल

इस फर्मके स्थापक बाबू माणकचन्दजी बेद हैं। आप पड़िहारा (बीकानेर) निवासी हैं। आप ओसवाल जैन सम्प्रदायके तेरापंथी सज्जन हैं। आपने ८ वर्ष पहिले इस फर्मकी स्थापना की थी। इस फर्ममें पडिहारेके भैरोंदानजीका और आपका साझा है। बाबू माणकचन्दजी ही वर्तमानमें इस फर्मका संचालन कर रहे हैं। आपके इन्द्रचन्दजी नामक एक बड़े भाई हैं। जो काबनियामें अपनी फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगपुर—मेसर्स रतनचन्द जौहरीलाल—यहा जूटका काम होता है इसमें आपका साझा है।

कलकत्ता—मेसर्स रतनचन्द जौहरीलाल—१६ सेनागो स्ट्रीट—यहा आढ़त तथा जूटकी चालानीका काम होता।

अखोरा (त्रिपुरा) नरसिंदी (ढाका) और ग्वालंदोमें भी इसी नामसे आपका फर्म जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स रामलाल सुगनचन्द

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिके चोरडिया सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू सेरमलजी अपने निवासस्थान नागोर (जोधपुर) से करीब ३० वर्ष पहिले यहा आये। आपका स्वर्गवास संवत् १९८२ में हो गया है। आपके दो पुत्र हैं बाबू सुगनमलजी, तथा बाबू हीरालालजी। आप दोनों भाई इस समय उपरोक्त फर्मका संचालन कर रहे हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रंगपुर—मेसर्स सेरमल सुगनमल चोरड़िया—माहीगंज—यहा गल्लेका तथा जूटका व्यापार होता है।

गायबंधा—सेरमल हीरालाल—यहा गल्लेका काम होता है।

मेसर्स सेरमल सुगनमल

इस फर्मके मुख्य कार्यकर्त्ता और मालिक कालूरामजी, सुगनचन्दजी नथमलजी, और सुमेरमलजी हैं। यहा यह फर्म करीब ८० वर्षोंसे व्यापार कर रही है। इसका विशेष परिचय कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें रामलाल सुमेरमलके नामसे दिया गया है। यहा यह फर्म कपड़ा किराना और जूट मर्चेंटका काम करती है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स उदयचन्द माणकचन्द माहीगंज
„ चुन्नीलाल भैरोंदान नवाबगंज
„ चुन्नीलाल भैरोंदान आलमनगर
„ छोगमल मन्नालाल माहीगंज
„ जवाहरमल मूलचन्द नवाबगंज
„ जेठमल रावतमल „
„ प्रेमचन्द जेसराज माहीगंज
„ भेखराज नेमचन्द आलमनगर
„ भैरुदान वनेचन्द „
„ मूलचन्द देवचन्द नवाबगंज
„ मेघराज दुलीचन्द „
„ रामलाल सुगनचंद आलमनगर
„ लाभराम आसकरण माहीगंज

जूट के व्यापारी

„ आसकरण नथमल आलमनगर
„ उदयचन्द माणकचन्द माहीगंज
„ छोगमल मन्नालाल „
„ छोगमल तिलोकचन्द „
„ जेसराज रिधकरण „
„ नेमचन्द मोतीचन्द आलम नगर
„ नगराज डोसी „
„ पृथ्वीसिंह खुशालसिंह „
„ रतनचन्द जवरीलाल „
„ रायली ब्रादर्स „
„ रतनचन्द तेजमल माहीगंज
„ रावतमल मोतीचन्द „
„ सेरमल सुगनचन्द „
„ हजारीमल मालू „
„ हनुतमल हनुमानदास „

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स जोधराज चौथमल माहीगंज
„ भैरोदान भंवरलाल आलमनगर
„ रामलाल सुगनचन्द „
„ सतेन्द्रनाथ नगेन्द्रनाथ चंद „
„ सीरेमल सुगनचन्द माहीगंज
„ हस्तीमल कल्याणमल आलमनगर

जनरल मरचेण्ट्स

„ गुलाबचन्द फूलकरू नवाबगंज
„ जोधराज चौथमल माहीगंज
„ वख्तावरमल लच्छीराम आलमनगर
„ रामलाल सुगनचन्द „
„ सुगनचन्द बोरड़ माहीगंज
„ हंसराज हीरालाल आलमनगर

वर्तनके व्यापारी

„ चुन्नीलाल भैरोंदान नवाबगंज
„ तोलाराम तिलोकचन्द „
„ फतेचन्द प्रतापमल सम्पतमल माहीगंज
„ मालचन्द जवरीलाल नवाबगंज
„ सम्पतमल चोथरा „

डोमार

यह छोटा ग्राम जूटकी अच्छी मंडी है। देहातवाले डोमारके व्यापारियोंके हाथ जूट बेचदेते है। यहा जूटके अच्छे २ व्यापारियोंकी दुकाने हैं। यहा आसपासके देहातोंमें जूट बहुतायतसे पैदा होता है। प्रधानतया गल्ला तमाखू तथा जूटका व्यापार विशेष रूपसे होता है जिसमेंसे जूट करीब ८ लाख मन और तमाखू करीब १ लाख मन यहासे बाहर जाती है यहासे अदरख और चट्टी भी बाहर जाती है। यहापर गल्ला करीब ४ लाख मन बाहरसे आता है इसके अलावा कपड़ा, किरोसिन तेल आदि वस्तुएं बाहरसे आकर यहा बिकती हैं।

मेसर्स छोगमलजी घींसूलाल

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बीकानेर) के निवासी है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं आपकी फर्म यहा ३५ वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू तोलारामजी हैं। आप व आपके पुत्र इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

इसफर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—मेसर्स छोगमलज घींसूलाल—यहा पाट और गल्लेका काम होता है।

धूब्री—मेसर्स मोहनलाल डूंगरमल—गल्लेका व्यापार होता है।

भोमरादे—(दिनाजपुर) शंकरमल सागरमल—यहा पाटका व्यापार होता है

मेसर्स ताराचंद वींजराज

इस फर्मका हेड आफिस २ राजा उडमाट स्ट्रीट कलकत्तामें हैं। यहा यह फर्म १९६२ से काम कर रही है। इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहा यह फर्म जूट और तमाखूका व्यापार करती है।

मेसर्स वींजराज ग्रा [illegible]चंद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। यहा यह फर्म जूटकी खरीदीका काम करती है। कलकत्तेके जूटके व्यापारियोंमें इसकी अच्छी प्रतिष्ठा है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके १४२ पेजमे दिया गया है।

मेसर्स मिरजामल मानिकचन्द

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके बांसलगोत्रीय सज्जन हैं। आप रतनगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ मिरजामलजी हैं। यह फर्म यहा १९५६ से स्थापित है। इस समय आप व आपके भाई मानिकचन्दजी आदि इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—मिरजामल मानिकचन्द—यहा गल्ला तथा आढ़तका व्यापार होता है। यहा बर्मासेल कम्पनीकी तेलकी तथा इम्पीरियल टौबेको कम्पनीकी सिगरेटकी एजंसी है।

धूब्री—नेतराम कन्हैयालाल—गल्लेका व्यापार होता है तथा किरासिन तेलकी एजंसी है।

कलकत्ता—धरमचन्द डेढ़राज—१७२ सुतापट्टी—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स शोभाचन्द सोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदारशहर (बीकानेर) का है। आप ओसवाल जातिके चोरड़िया सज्जन हैं। यह फर्म करीब १५ वर्षसे जूटका व्यापार कर रही है। इसके स्थापक बाबू शोभाचन्दजी है। आपने कई आपत्तियोंका सामना कर अपनी व्यापार कुशलता एवं मिलनसारितासे अपनी फर्मकी उन्नति की। वर्तमानमें आपही इस फर्मका संचालन कर रहे हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—शोभाचन्द सोहनलाल—यहां जूटका व्यापार होता है।

कलकत्ता—शोभाचन्द सोहनलाल—यहां जूटकी आढ़तका काम होता है।

डोमोहानी (जलपाईगोड़ी) यहां पाटकी खरीदी होती है।

मेसर्स सूरजमल महीपाल

इस फर्मके संचालक बाबू सूरजमलजी हैं। आपहीने इसे करीब ५५ साल पहिले स्थापित किया आप बीकानेर निवासी ओसवाल जातिके सुराणा सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—मेसर्स सूरजमल महीपाल—यहां जूट और जमीदारीका काम होता है।

इसके सिवाय जलालगढ़ पूर्णिया और दोमोहानीमें आपका जूटकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स हीरालाल रामकुमार

इस फर्मके मालिक बोरसु (जोधपूर) निवासी है। आप माहेश्वरी जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहा करीब १० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू हीरालालजी हैं। आप व आपके छोटे भाई रामकुमारजी वर्तमानमे इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डोमार—मेसर्स हीरालाल रामकुमार—यहा जूटका व्यापार होता है जूटकी मोसिममे आप और भी स्थानोंमें जूट खरीदते हैं।

जूटके व्यापारी

मेसर्स जी० एन गोसाईं
" ताराचंद बीजराज
" वाल्डमेर ब्रादर्स
" बींजराज शोभाचन्द
" रायली ब्रदर्स
लंदन क्लार्क
" शोभाचन्द सोहनलाल
" सूरजमल महीपाल
" हनुतमल हरकचन्द
" हीरालाल कैसराज
" हीरालाल रामकुमार

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स छोगमल घींसूलाल
" नथमल गणपतराय
" बैजनाथ मदनगोपाल
" भैरोंबक्स सूरजमल
" मिर्जामल मानिकचन्द
" रघुनाथराय रामप्रताप

तमाखूके व्यापारी

मेसर्स ताराचंद बींजराज
" रासबिहारी पोद्दार
" लोकनाथ साह
" शशिभूषण साह
" सुखलाल भोमराज
" हनुतमल हरकचन्द

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स बैजनाथ मदनगोपाल
" लक्ष्मीचन्द दुर्गाप्रसाद
" हरिकिशन बद्रीप्रसाद

लकड़ीके व्यापारी

दी डोमार टिम्बर ट्रेडिंग एण्ड को
परशुराम खागेन
हसुभ छोकीउद्दीन

चट्टीके व्यापारी

रामचन्द्र बद्रीनारायण
हजारीमल रामचन्द्र

सेदपुर

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी अपनेही नामकी स्टेशनके समीप बसा हुआ है बंगालके दूसरें शहर अथवा ग्रामोंकी तरह इसमें भी छोटे २ मकान बने हुए हैं।

यह ग्राम छोटा होते हुए भी व्यापारका अच्छा क्षेत्र है। यहां आसपास जूट, सोंठ, तमाखू आदि वहुतायतसे पैदा होती है। यहांसे करीव ५ लाखमन जूट करीब २० हजार मन अदरक करीब ५ हजारमन सोंठ और ५०,६० हजार मन तमाख हरसाल वहर जाती है। और गल्ला, चद्दर कपड़ा आदि वस्तुएं वाहरसे आकर विकती हैं।

यहांकी सोंठ खानेमें तेज होती है। इसकाभाव साधारणतया ३० रुपये प्रतिमन तथा अदरकका भाव ८) रुपये प्रति मन रहता है।

मेसर्स ख्यालीराम जगन्नाथ

इस फर्मके मालिक धानोटी (वीकानेर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके केडिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीव ३५ सालसे स्थापित है। इस फर्म के स्थापक बाबू ख्यालीराम जी थे। आपका देहान्त हो चुका है। आपके दो पुत्र बाबू जगन्नाथजी तथा बाबू टिकूरामजी इस समय इस फर्मके मालिक हैं। वावू जगन्नाथजी सेदपुर कमर्शियल बैंकके डाइरेक्टर हैं। आप मिलनसार हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेदपुर—(रंगपुर) -मेसर्स ख्यालीराम जगन्नाथ—पाट, कपड़ा तथा गल्लेका काम होता है।
वादरगंज (रंगपुर) मेसर्स ख्यालीराम धनराज —यहां पाटका काम होता है।

मेसर्स बेवरचन्द दानचन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक दानचन्दजी है आप लाडनूं (जोधपुर) निवासी ओसवाल जातिके चोपड़ा सज्जन है। यहा यह फर्म जूटका व्यापार करती है। इसका विस्तृत परिचय प्रथम भागके राजपूताना विभागके १३९ पृष्ठ में देखिये।

मेसर्स मुरलीधर बनेचन्द

इस फमके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजगढ़ (वीकानेर) है। आप अग्रवाल जातिके

सिंगल गोत्रीय सज्जन है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ साल हुए। इसके स्थापक बाबू मुरलीधरजी हैं। आपके वयोवृद्ध होनेसे आपके पुत्र बाबू बनेचन्दजी, टोडरमलजी, जगन्नाथजी ईसरदासजी तथा तुलसीरामजी इस फर्मका संचालन करते हैं। बाबू बनेचन्दजी स्थानीय अग्रवाल सभाके सभापति हैं। बाबू तुलसीरामजी स्थानीय युवक सभाके सेक्रेटरी हैं। आप उच्चविचार रखनेवाले सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सेदपुर (रंगपुर)—मेसर्स मुरलीधर बनेचन्द— T. A. Singhania—यहा जूटका और गल्लेका व्यापार होता है

कलकत्ता—मेसर्स मुरलीधर बनेचन्द—१७८ हरिसन रोड T. A. Reinforce—जूटकी आढ़तका काम होता है।

फारबिसगंज—मुरलीधर तुलसीराम—यहा जूटका काम होता है

मेसर्स रामरिछपाल गणपतराय

इस फर्मके वर्तमान मालिक रामरिछपालजी हैं। आपहीने १५ वर्ष पहिले इस फर्मको स्थापित की। आप अग्रवाल जातिके वासल गोत्रीय सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान खरक (रोहतक) का है।

सेदपुर—(रंगपुर) रामरिछपाल गणपतराय - यहा—यहा गल्लेका काम होता है।

कलकत्ता—गणपतराय लक्ष्मीनारायण ५ नारायणप्रसाद लेन T. A. Durga—यहा कपड़ा व जूटकी आढ़तका काम होता है।

सहजनुवा (गोरखपुर) गणपतराय लक्ष्मीनारायण—यहा गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवजी रामजी बूचा

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिका बूचा गोत्रीय सज्जन हैं। इसके स्थापक बाबू शिवजी रामजी करीब ५० साल पहिले अपने निवासस्थान बिदासर (बीकानेर) से यहा आये। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे कपड़ेके व्यापारमें अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की। बाबू तोलारामजी व बाबू सोहनलालजी नामक आपके दो पुत्र हैं। आप दोनों सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं। आपके—यहां कपड़ा, बैंकिंग और पाटका काम होता है। यहापर आपकी ६ ब्राचेज हैं।

जूट मरचेंण्ट्स

मेसर्स अर्जुनदास वालचन्द
" ख्यालीराम जगन्नाथ
" घेवरचन्द दानचन्द
" चन्दूलाल वद्रीदास
" मुरलीधर वनेचन्द
" शिवजीरामजी वूचा
" शिवनाथराम अमीलाल
" हरखचन्द कालूराम

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स ख्यालीराम जगन्नाथ
" चंदूलाल वद्रीदास
" लक्ष्मीचन्द सूरजमल

मेसर्स शिवजीराय सोहनलाल
" शिवरामदास अग्रवाल

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स कनीराम महादेव
" मंगलचन्द वनारसीदास
" रमणीमोहन दत्त
" रामरिछपाल गणपतराय
" शंकरदास गणपतराय
" सूरजमल वैजनाथ

तमाखूके व्यापारी

मेसर्स शिवजीरामजी वूचा
" सुन्दरमल धनराज

दिनाजपुर

दिनाजपुर अपने ही नामके जिलेका प्रधान स्थान है। यह इस्टर्न बंगाल रेल्वेके प्रसिद्ध जंकशन पार्वतीपुरसे २ माईलकी दूरीपर वसा हुआ है। पार्वतीपुरसे कठियार जानेवाली रेल्वे लाईन पर यह स्थान आता है। इसकी वसावट साफ सुथरी है। यहां वंगालकी भांति टीनके मकान वहुत कम नज़र आते हैं। प्रायः सभी मकान पक्के एवम आलिशान वने हुए है। यहां जिलेकी वड़ी अदालत होनेसे वडी गति विधी रहती है। सैंकड़ो व्यक्ति मामले मुकदमेंके लिये रोजाना यहां आया करते हैं।

व्यापार

व्यापारिक दृष्टिसे भी इस स्थानका अच्छा महत्व है। विहार और वंगाल प्रांतके करीव २ वीचमें आजानेसे दोनों ही प्रान्तोंके व्यापारियोंका यहांसे सम्बन्ध है। यहासे पास ही वारसोई, किशनगंज आदि अच्छो मंडियां हैं। इससे यहाका व्यापार और भी उन्नतिपर है। यहांकी पैदावारमें खासकर धान, चावल, और जूट ही विशेष हैं। तीनों ही वस्तुएं काफी तादादमें यहांसे वाहर जाती है। वाहरसे आनेवाले मालमें कपड़ा एवम गल्ला विशेष है। कपड़ेका व्यापार यहांपर

वहुत जोरपर है। आसपासके कई गांववाले व्यापारी यहासे माल खरीदकर ले जाते हैं। गल्लेकी खपत यहींपर होती है। जूट यहांसे कलकत्ता भेजा जाता है। इनके अतिरिक्त और भी कई प्रकारके गृहस्थी सामान जैसे मनोहारी वगैरह बाहरसे यहां आकर विकते हैं। चट्टीका व्यापार भी यहा वहुत अच्छा है। यहांसे दक्षिण भारतमें इसकी चलानीका काम होता है। मुसाफिरोंके ठहरनेके लिये यहा धर्मशाला भी वनी हुई है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स कस्तूरचन्द फतेचन्द

इस फर्मके मालिक किशनगढ निवासी ओसवाल जातिके विरमेचा गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ कस्तूरचन्दजी करीव ४० वर्ष पहिले यहा आये और आपने कपड़ा तथा सोना चांदीका व्यवसाय शुरु किया। आपने अपनी फर्मकी अच्छी तरक्की की। आपके पाच पुत्र हुए। जिनमेंसे वावू सुगनचन्दजी व माणकचन्दजी विद्यमान हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की सवसे वड़े भाई वावू फतेचन्दजीके हाथोंसे हुई। आपका देहान्त हो चुका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स कस्तूरचन्द फतेचन्द—कपड़ा व सोना चांदीका काम होता है।

मेसर्स कुशलचन्द चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान जैतपुर है। आप महेश्वरी जातिके मूंदड़ा सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीव ५० साल हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ पन्नालालजी थे। सेठ पन्नालालजीके पुत्र कुशलचंदजी हुए और सेठ कुशलचन्दजीके तीसरे पुत्र वावू चुन्नीलालजी इस फर्मके वर्तमान मालिक हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर - कुशलचन्द चुन्नीलाल—यहा कपड़ा, पाट, और धान चावलका काम होता है।

कलकत्ता—चुन्नीलाल किशनगोपाल ४३ आर्मेनियन स्ट्रीट—पाटकी आढ़त तथा चलानीका काम होता है।

मेसर्स कुशलचन्द रामप्रताप

इस फर्मके मालिक जेतपुर निवासी हैं। आप महेश्वरी जातिके मूंदड़ा सज्जन हैं। इस फर्मको

स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ पन्नालालजी देशसे यहां आये। आपने यहां आकर कपड़ेका काम शुरु किया। आपने अपनी फर्मकी अच्छी उन्नति की व सम्पति प्राप्त की। आपका स्वर्गवास सम्वत् १९५२ में हुआ। आपके दो पुत्र हुए। कुशलचन्दजी और बख्तावरमलजी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ कुशलचन्दजीके पुत्र रामप्रतापजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—कुशलचन्द रामप्रताप—यहां पाट तथा धान चांवल और कपड़ेका काम होता हैं।

मेसर्स केशरीचन्द जालमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान मोमासर (बीकानेर) है। आप ओसवाल जातिपटावरी सज्जन है। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ केसरीचन्दजी व दुलीचन्दजीने की आप दोनों भाई थे आपने शुरुमे कपड़ेका व्यापार किया। दुलीचन्दजीने इस फर्मकी उन्नति की। सेठ केसरीचन्दजीके दो पुत्र हुए। जालमचन्दजी और हरकचन्दजी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू हरकचन्दजी व जालमचन्दजीके पुत्र हैं। आपकी ओरसे मुमासरमें एक धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स केसरीचन्द जालमचन्द—यहां धान, चावलका प्रधान काम होता हैं और पाटका काम भी होता है।

बिरमपुर (दिनाजपुर) मेसर्स हरकचन्द माणकचन्द— „ „ „ „

दावदपुर (दिनाजपुर) हरकचन्द मोहनलाल—कपड़ा, पाट, चांदी, सोना व टीनका व्यापार होता है

कलकत्ता—केसरीचन्द तोलाराम—चालानी और पाटकी आढ़तका काम होता है इस फर्ममे सब भाइयोंका साझा है।

मेसर्स खूमचन्द तोलाराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सुजानगढ़ (बीकानेर) है। आप ओसवाल जातिके भूतोड़िया तेरापंथी सज्जन है। आपकी फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ पनेचन्दजी थे। आपने शुरुमें कपड़ेका व्यवसायकर अपनी फर्मकी उन्नति

की। आपके भाई सेठ गुलाबचन्दजी थे। आप दोनों भाइयोंकी मृत्युके पश्चात् आपके चचेरे भाई खूबचन्दजीने इस फर्मके कार्य्यको संचालन किया। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्री गुलाबचन्दजीके पुत्र सेठ तोलारामजी तथा खूबचन्दजी के पुत्र बाबू इन्द्रचन्दजी है। सेठ तोलारामजीके पुत्र बाबू खेमकरणजी कलकत्तेमें बी० एल० की परीक्षाके लिये अध्ययन कर रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिनाजपुर—खूमचन्द तोलाराम—यहां धान, चावल, बैंकिंग तथा जमींदारीका काम होता है।
मदारगंज (दिनाजपुर) खूमचन्द तोलाराम—यहा कपड़ा तथा चादी, सोनाका काम होता हैं।
पूलाहार—(दिनाजपुर) „ „ —धान, चावल, सेमलकी रूई (Kapot)का काम होता है।

मेसर्स खेतसीदास चिमनीराम

इस फर्मके मालिक बीकानेर राज्यान्तर्गत नोहर नामक ग्रामके निवासी है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक सेठ भगवानदासजी १०० वर्ष पहले देशसे यहां आये। आपने वर्तन, मसाला, कपड़ा आदिका व्यापार कर अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ भगवानदासजीके ज्येष्ठ पुत्र चिमनीरामजी हैं।

आपकी ओरसे यहां बाबू बाड़ीमें तथा नौहरमें एक २ धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिनाजपुर—मेसर्स खेतसीदास चिमनीराम -यहांपाट धान, चावल और कपड़ेका काम होता है।
रायीवन्दर (दिनाजपुर) ईसरदास चन्दनमल—यहा सूत और तमाखूका व्यापार होता है।

मेसर्स गुलाबचन्द नेमचन्द इन्द्रचन्द नाहटा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बालूचर (मुर्शिदाबाद) है। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू पूरणचन्दजी एवम बाबू ज्ञानचन्दजी हैं। आजकल आप विलायत निवास करते है। इस फर्मका विशेप परिचय चित्रों सहित मेसर्स मौजीराम इन्द्रचन्दके नामसे कलकत्ताके बैंकर्स विभागमे में दिया गया है। यहा यह फर्म बैंकिंग एवम जमींदारीका काम करती है।

गौरांग सेवक ज्वेलर्स

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी है। आप बंगाली स्वर्णवणिक जातिके सज्जन हैं।
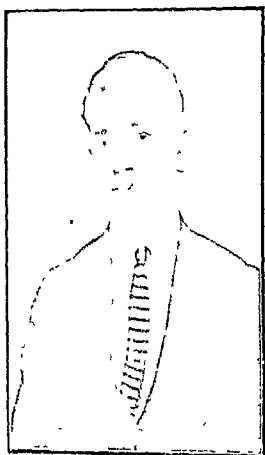
यह फर्म यहांके अच्छे जमींदारोंमें से है। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ५ वर्ष हुए। इसके वर्तमान संचालक गोपीनाथदास वड़ाल और गौरपददास वड़ाल हैं। आपके पिताजीका नाम विशम्भरदास वड़ाल है। आप धार्मिक पुरुष हैं। आजकल अपना जीवन धार्मिकतामें वितानेके लिये वृन्दावन निवास करते है।

आपकी ओरसे नवद्वीप (नदिया) में गङ्गाके तीरपर एक घाट बना हुआ है। तथा निजकी ठाकुरवाड़ीमें आपने ३५०० रुपयेकी जमींदारी प्रदानकी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

दिनाजपुर—गौरांग सेवक जौहरी—यहां जवाहिरातका व्यापार होता है।

मेसर्स चन्द्रकान्तदास ब्रादर्स

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मालदा (बंगाल) है। यहां यह फर्म २०० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू लोकनाथदास थे। आपका कुटुम्ब अग्रवाल वैश्य एरंनगोत्रका है। बाबू लोकनाथदासने शुरूमें किरानेका व्यापार कर अपनी फर्मकी उन्नति की।

इस समय आपके पौत्र बाबू चन्द्रकान्तदास, बाबू कृष्णचन्द्रदास, बाबू रामचन्द्रदास और गौरचन्द्रदास ही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स चन्द्रकान्तदास ब्रादर्स-किराना, पाट, बर्तन बेङ्किगका काम होता है। यह फर्म बोड़ामंट एण्ड कम्पनीके सोड़ाको सोल एजंट, तथा कार्न प्रोडेक्ट कम्पनीके स्टाचे पाउडर, क्रिसेनस्टाच कर्न ग्लूट आदिकी दिनाजपुर मालदा और पूर्णियाके सोल एजंट है।

मेसर्स चौथमल कुन्दनमल

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बिकानेर) निवासी हैं। आप ओसवाल जातिके सेठिया सज्जन है। इस फर्मके स्थापक सेठ बींजराजजी और चौथमलजी संवत् १९४० में देशसे यहां आये। आप दोनों भाई थे। आपने यहां आकर मनिहारीकी छोटीसी दुकानकी थी। फिर अपनी व्यापार कुशलतासे आपने अच्छी सम्पत्ति प्राप्त की। तत्पश्चात् दोनों भाई अलग २ हो गये।

उपरोक्त फर्मके वर्तमान मालिक श्री चौथमलजीके पुत्र बाबू लादूरामजी, बाबू कुन्दनमलजी, और बाबू माणकचन्दजी हैं।

बाबू कुन्दनमलजी समाजसेवी देशभक्त और मिलनसार व्यक्ति हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स चौथमल कुंदनमल—यहा पाट, धान और चावलका व्यापार होता है।

कलकत्ता—सुमेरमल रायचन्द ७।१ बाबूलाल लेन—यहा पाटका और पाटकी आढ़तका काम होता है।

रायगंज (दिनाजपुर) चौथमल कुंदनमल—यहां पाटको खरीदीका काम होता है।

मेसर्स जमनदास केदारनाथ

इस फर्मके वर्तमान मालिक राय साहब जमनाधरजी चौधरी हैं। इस फर्मका हेड आफ़िस साहबगंजमें है। अतएव आपका विशेष परिचय मेसर्स पन्नालाल बीजराजके नामसे वहा दिया गया है। यहां यह फर्म आढ़त एवं जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स जुहारमल इन्द्रचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मुकुनगढ़ (सीकर) है। आप अग्रवाल जातिके बासल गोत्रीय सज्जन है। इस फर्मको स्थापित हुए चालीस वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक जुहारमल-जी देशसे यहा आये और गल्लेका व्यापार शुरू किया। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे अपनी फर्मकी तरक्की की। सेठ जुहारमलजीके बाद आपके बड़े भाई हरदेवदासजीने इस फर्मका संचालन किया। आपका देहान्त भी हो चुका है।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू इन्द्रचन्दजी,बाबू बालचन्दजी, व बाबू शिवप्रसादजी है। बाबू इन्द्रचन्दजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स जुहारमल इन्द्रचन्द-गल्ला व आढ़तका काम होत

दिनाजपुर—मेसर्स जुहारमल इन्द्रचन्द—कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स जेसराज शिवलाल

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। आप महेश्वरी जातिके लोहिया सज्जन है। करीब ३६ साल पहिले जेसराजजी व शिवलालजी ने इस फर्मकी स्थापना की। पहिले पहल इस फर्म पर आटा, मेदा किराना, मसाला आदिका व्यापार होता था। इस फर्मके दोनों स्थापक व्यापार दक्ष है। जेसराजजी के दो पुत्र है लालचन्दजी और हरनारायणजी। शिवलालजी के तीन पुत्र हैं, दीपचन्दजी लक्ष्मीनारायणजी और छगनमलजी।

बा० तुनसीरामजी सिहानिया सैदपुर
[मुरलीधर घेनचन्द]

बा० हरनारायणजी लोहिया दिनाजपुर
(जसराज शिवलाल)
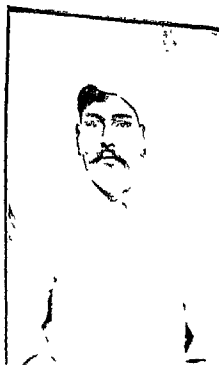
आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स जेसराज शिवलाल—चट्टीकी आड़तका काम दिनाजपुर में मुख्य रुपसे आप ही की फर्म करती है। यह फर्म दक्षिणी भारतमें चट्टीका चलान करती है। किराना, जूट धान चावलका व्यापार करती है।

कलकत्ता—मेसर्स केदारमल केसरीचन्द—जूटकी आड़त व चलानी का काम होता है।

बोचागंज (दिनाजपुर) मेसर्स केदारमल केसरीचन्द—धान चावल व चट्टीका काम होता है।

मेसर्स तिलोकचन्द जीतमल

इस फर्मके मालिक नौहर (बीकानेर) के मूल निवासी हैं। यह फर्म यहां करीब ४५ वर्षसे स्थापित है, इस फर्मको सेठ तिलोकचन्दजी ने स्थापितकी शुरूमें आपने गल्लेका व्यापार शुरू किया। तत्पश्चात् कपड़ेका काम करने लगे। इसके बाद जेलों का काम करने से आपकी विशेष तरक्की हुई। आपको बंगाल जेलोंसे कई प्रशंसा पत्र मिल चुके हैं। इस फर्मकी विशेष तरक्की आप ही के हाथोंसे हुई है। आपके तीन पुत्र हुए। जीतमलजी, चांदमलजी, और दानमलजी। इनमेंसे जीतमलजी का देहान्त हो चुका है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स तिलोकचन्द जीतमल-गल्ला, किराना, व पाटका काम होता है। यह फर्म बंगाल जेलोंमें माल सप्लाइ करती है।

कहरोल (दिनाजपुर) तीलोकचन्द जीतमल कपड़ा, जमीदारी और बैंकिंग का काम होता है।

जैनंद (दिनाजपुर) तीलोकचन्द जीतमल कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स द्वैचन्दराम लच्छीराम

इस फर्मके मालिक कुल पहार (छपरा) के निवासी हैं। आप बनियां जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब ५० वर्षोंसे व्यापार करती है। सेठ भगवान रामजीने इसको स्थापित किया था। पहले यह फर्म भगवानराम गोगारामके नामसे व्यवसाय करती थी आप दोनों भाई थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक द्वैचन्द रामजी तथा लच्छीरामजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स द्वैचन्दराम लच्छीराम-गल्ला और राइस मिलका काम होता है।

दार्जिलिंग—भगवानराम गोगाराम-गल्लेका काम होता है।

करसियांग—भगवानराम गोगाराम-यहां चायकी खेतीका काम होता है।
कूचबिहार, दिनाजपुर, करसियांग में इस फर्मकी जमीदारी है

मसर्स दुलीचन्द नेमचन्द पटावरा

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मोमासा (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके पटावरिया सज्जन है। आपकी फर्म यहा पर करीब ५० साल से स्थापित है। इस फर्मके स्थापक सेठ दुलीचन्दजीने पहिले कपड़ेका व्यवसाय प्रारंभ किया। आप ही ने इस फर्मकी तरक्की की

वर्तमानमे इस फर्म के मालिक सेठ दुलीचन्दजीके पुत्र बाबू नेमचन्दजी व बाबू सुगन चन्दजी है। आप दोनों सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स दुलचन्द नेमचन्द-यहां कपड़ा, सोना, चादी, टीन पाट आदिका काम होता है।
कलकत्ता मेसर्स केसरीचन्द तोलाराम-२ राजा उडमंट स्ट्रीट-यहां चालानी तथा पाटकी आढ़तका काम होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

उपरोक्त फर्ममें लाडनू निवासी मूलचन्दजी गिड़िया का साझा है। आप भी ओसवाल जातिके सज्जन है। आप इस फर्मके प्रधान कार्य कर्त्ताओं में से हैं।

मेसर्स प्रतापचन्द सेठ

इस फर्मके मालिक मालदाके निवासी है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए १७ वर्ष हुए। बा० कुजरालन पोद्दारने फर्मको स्थापना की। आपहीने इस फर्मको तरक्कीपर पहुंचाया। अभी आपही इस फर्मका संचालन कर रहे हैं। बाबू कुजरामन पोद्दार इस फर्मके मैनेजर हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक प्रतापचन्द सेठ और नंदगोपाल सेठ हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दिनाजपुर—मेसर्स प्रतापचन्द सेठ—गल्ले और किरानेका व्यापार होता है। यहा इम्पीरियल टोबाकू कंपनीकी दिनाजपुर जिलेके लिये सोल एजेन्सी है।
दिनाजपुर—मेसर्स नंदगोपाल सेठ—गल्ला और किरानाका व्यापार होता है।
मालदा—नंदगोपाल सेठ—हेड आफिस है। गल्ला किरानाका काम होता है B. O. C. की किरासिनकी एजेन्सी है। बैंकिंग और जमींदारीका काम होता है।

लालगोला—(मुर्शिदबाद) प्रतापचन्द सेठ—इम्पीरियल टोबेको कंपनीकी एजेन्सी B. O. C की एजंसी और किरानेका काम होता है।

राजशाही—प्रतापचन्द सेठ—घोड़ाकी एजंसी और किरानेका काम होता है।

आपकी ओरसे सादुलपुरमें गंगाके तीरपर एक धर्मशाला हैं।

मेसर्स पन्नालाल बख्तावरमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान जोधपुर (बीकानेर) है आप माहेश्वरी समाजके मूंदड़ा सज्जन हैं यहापर यह फर्म करीब ५० सालसे स्थापित है। इसके स्थापक सेठ पन्नालालजीने आरंभमें कपड़ा, सूत, और धान चावलका कार्य शुरू किया। आपने अपनी फर्मकी अच्छी तरक्की की। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपके दो पुत्र हुए। जिनके नाम कुशलचन्दजी और बख्तावरमलजी थे।

वर्तमानमें फर्मके मालिक सेठ बख्तावरमलजीके पुत्र गिरधारीलालजी है।

आपकी ओरसे अर्जुनसर नामक स्टेशनपर धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

दिनाजपुर—मेसर्स पन्नालाल बख्तावरमल—यहां कपड़ा, पाट, धान, चांवल, व सोना चांदीका व्यापार होता है।

कलकत्ता मेसर्स पन्नालाल बख्तावरमल ४६ स्ट्रांड रोड— यहां चालानी व पाटकी आढ़तका काम होता है।

चिड़ीबंदर—बख्तावरमल गिरधारीलाल —पाट, धान और चावलका काम होता है।

चिलहाटी (रंगपुर) पन्नालाल बख्तावरमल—पाट, धान, चावल व तमाखूका काम होता है।

बावसी (मैमनसिंह) पन्नालाल बख्तावरमल—पाट, धान, चावलका काम होता है।

मेसर्स बींजराज संचियालाल वेद

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तामें हैं। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू जयचन्द लालजीके ७ पुत्र हैं। जिनमें सबसे ज्येष्ठका नाम बींजराजजी हैं। यह फर्म दिनाजपुरमें बींजराज संचियालालके नामसे पाट, धान और चावल, का व्यापार करती है। इसका विस्तृत परिचय कलकत्ता पोर्शनमें जूटके व्यापारियोंमे दिया है।

नौगांव

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेके सन्तहार नामक जंक्शनसे करीब १ मीलकी दूरीपर हुआ है।

यह गाजेके लिये सारे भारतमें मशहूर है। यहा करीब ४५०० मन गाजा प्रति वर्ष पैदा होता है। यह सब गांजा कोआपरेटिव सोसाइटी खरीद लेती है कोई दूसरा व्यापारी इसका व्यापार नहीं कर सकता। सोसाइटी कृषकोंसे ८०) रुपयेसे १००) रुपये प्रतिमन तक गाजा खरीदती है और फिर वाहर भेजती है। नौगावमें भी यही १।~) फी तोला पब्लिकको वेचा जाता है।

यहां आसपास जूट भी पैदा होता है यहासे ५ लाख मन जूट वाहर भेजा जाता है। और कपड़ा व किरासन आइल आदि पदार्थ वाहरसे आकर बिकते है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान नवलगढ़ (जयपुर स्टेट) है। आपलोग गौड़ ब्राह्मण समाजके सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक पं० शिवनारायणजीने लगभग ५० वर्ष पूर्व यहां आकर अपनी फर्मका स्थापन किया। कुछ दिन वाद गांजा पैक करनेके बोरोंका कंट्राक्ट आपने लिया। आपके स्वर्गवासी हो जानेके पश्चात् पं० श्रीनिवासजी शर्माने १६ वर्षतक आपके व्यापारको चलाया। आपके पुत्र पं० दुर्गाप्रसादजी शर्माने १३ वर्षकी आयुमें व्यापार संचालन भार संभाला, फर्मकी प्रधान उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप सज्जन और मिलनसार हैं। आपके तीन पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः पं० श्रीराधाकृष्णजी, पं० विश्वंभरजी और पं० गौरीशंकरजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नौगांव (राजशाही)—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहां गाजा, अफीम, और भंगके ठेकेका काम होता है। इम्पीरियल टोबैको कम्पनीकी सिगरेट और वर्मा आइल कम्पनीके वर्माशेल पेट्रोलकी ऐजेन्सियाँ इस फर्म पर हैं। यहा जूटका काम भी होता है। कोआपरेटिव सप्लाई और सेल सोसाइटीके जूट विभागके दलालीका काम भी यहा होता है।

सन्ताहार—मेसर्स दुर्गाप्रसाद राधाकिशन—यहा भी इम्पीरियल टोबैको कम्पनीकी सिगरेटकी ऐजेन्सी है।

मेसर्स रामरक्षपाल कस्तूरीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान बलाहा (नारनौल) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजमें सज्जन हैं। सेठ रामरक्षपालजीने यहां आकर इस फर्मकी स्थापना लगभग ३५ वर्ष पूर्व की थी। आपने कपड़ेकी दुकानदारीसे आरम्भ कर अपने व्यवसायको बहुत उन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया। आपके पांच पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू कस्तूरीलालजी, दुर्गादत्तजी, गजानन्दजी रामचन्द्रजी, और बलभद्रजी हैं। आपलोग सभी साक्षर एवं उदार सज्जन हैं तथा व्यापार संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नौगांव (राजशाही)—मेसर्स रामरक्षपाल कस्तूरीलाल—यहां कपड़ा गल्ला और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

कलकत्ता—रामरक्षपाल कस्तूरीलाल—७।१ बाबूलाल लेन—यहां कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स रामरछिपाल कस्तूरीलाल

" सतीशचन्द्र बेसाक

गल्लेके व्यापारी

छोटूलाल सेठिया

जगदीश्वर मानी

मदनमोहन मल्लिक

जूट मरचैण्टस

कालीनारायण चौधरी

केशवलाल साव

कोआपरेटिव सप्लाइ एण्ड सेल्स सोसाइटी

चुन्नीलाल साव

छगनलाल अग्रवाला

छोटूलाल सेठिया

शशिमोहन राय

राजशाही

इसका दूसरा नाम रामपुर बोलिया भी है। यह स्थान इ० बी० आरके नाटोर नामक स्टेशनके समीप बसा हुआ है। यहां जानेके लिये नाटोरसे मोटर सर्विस रन करती है। यहां खास व्यापार जूट एवम धान और कपड़ेका है। करीब १ लाखमन जूट यहांसे बाहर जाताहै। धान भी कभी २ बाहर चला जाता है। आनेवाले मालमें किराना, गल्ला, कपड़ा आदि है। यहांका व्यापार भी पासके देहातोंसे संबन्ध रखता है। यहां कोई खास चहलपहल नहीं है। इस गावकी बसावट

टेढ़ीमेढ़ी, लम्बी एवम खराब है। सफाईकी ओर यहाके निवासी बहुत कम ध्यान देते हैं।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स गुलराज विसेसरलाल चौधरी

इस फर्मके मालिक फतेपुर (सीकर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। इसके स्थापक बाबू नंदरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। इस समय आपके पुत्र बाबू गुलराजजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

राजशाही—गुलराज विसेसरलाल यहा जूट, सोना चांदी, बैंकिंग और कमीशन एजन्सीका काम होता है। चारघाटमे व राजशाहीमें आपकी और भी शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज विसेसरलाल १८० हरिसन रोड यहा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स प्रतापचंद सेठ

इस फर्मका हेड आफिस दिनाजपुर हैं। इसके वर्तमान मालिक प्रतापचन्द सेठ और नंदगोपाल सेठ हैं। आप बंगाली समाजके सज्जन हैं। वहा यह फर्म १७ वर्षसे काम कर रही है। यहांपर किराना एवम सोडाकी एजंसीका काम होता है। इसका विशेष परिचय दिनाजपुरके पोर्शनमें दिया गया है।

मेसर्स मालचन्द शोभाचंद

इस फर्मके वर्तमान मालिक मालचन्दजी, शोभाचंदजी आदि सात भाई हैं। आप राजलदेसरके निवासी हैं। यह फर्म यहा बहुत वर्षोंसे व्यापार कर रही है। यहा जमींदारी, बैंकिंग, जूट और कपड़ेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागके जूटके व्यापारियोंमे मेसर्स मेघराज उमचन्दके नामसे दिया गया है।

मेसर्स मोहनलाल जयचंदलाल

इस फर्मका हेड आफिस वर्दमान (बंगाल) है। वहा यह फर्म करीब १०० वर्ष पूर्व स्थापित हुई थी। इसके वर्तमान मालिक जैचंदलालजी तथा आपके भतीजे विजयचंदजी एवम महालचंदजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय वर्दमानमे तिलोकचंद मोहनलालके नामसे दिया गया है। यहा यह फर्म बैंकिंग और जमींदारीका व्यापार करती है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स खूबचन्द झूमरमल
" गुलाज बिसेसर लाल
" बद्रीदास वंसीधर
" मोहनलाल सोहनलाल
" हरकिशनदास रामकुमार
" ज्ञानीराम भूरमल

पाटके व्यापारी

मेसर्स जवारमल कुन्दनमल
" मालचन्द शोभाचन्द
" रामलाल मुरलीधर

मेसर्स लालचन्द बालचन्द
" सावलदास नेमचन्द
" सेठूमल भैरोंदान

बैंकर्स

मेसर्स मोहनलाल जैचन्दराय

जनरल मरचेण्ट्स

मेसर्स जमनाराम हरिहर प्रसाद
" द्वारिकानाथसाह सूतीलालसाह
" देवकीनाथ विश्वनाथ प्रसाद
" मोहिनीमोहन साह

धुब्री

ईस्टर्न बंगाल रेलवेके इसी नामके स्टेशनके पास बसा हुआ यह एक ग्राम है। यह ग्राम ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसा हुआ है। इस ग्रामकी सड़कें टूट फूट रही हैं। यह एक लम्बा बसा हुआ ग्राम है इसके मकान अधिकांश चद्दर तथा बांसके बने हुए हैं।

यह ग्राम जूटका एक प्रधान क्षेत्र है। आस पासके देहातोंमें ब्रह्मपुत्रमें नाव द्वारा जूट यहां आकर बिकता है। यहांके व्यापारी उसे खरीद कर बाहर भेज देते हैं। धान, चावल भी यहां पैदा होता है तथा बाहर भेजा जाता है। गल्ला, कपड़ा, किराना, चद्दर आदि बाहरसे आकर यहां बिकते हैं।

मेसर्स गिरधारीमल जसरूप

इस फर्मके मालिक ओसवाल जातिके जैन श्वेतांबरी तेरापंथी सज्जन हैं। यह फर्म यहां २५ सालसे स्थापित है इसके स्थापक डूंगरगढ़ (बीकानेर) निवासी बाबू जसरूपजी हैं। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे इस फर्मकी अच्छी तरक्की की है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धुब्री - गिरधारीमल जसरूप—यहां कपड़ा तथा जूटका काम होता है। यहांपर "चुन्नीलाल जीवराज"के नामसे आपकी गल्लेकी दुकान है।

मेसर्स थानसिंह करमचन्द

इस फर्मके मालिक त्रिदासर (बीकानेर) के निवासी हैं। आप ओसवाल सज्जन है। इस फर्मकी और भी कई शाखायें हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। विशेष परिचय कलकत्ते विभागके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार करती है। इसकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेसर्स नेतराम कन्हैयालाल

इस फर्मके स्थापक रतनगढ़ (बीकानेर) निवासी बाबू नेतरामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। आपही इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

धुब्री—नेतराम कन्हैयालाल—यहां गल्ला तथा सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है। यह फर्म बर्मा शेल आइल कम्पनीकी एजेण्ट है। यहां "रामचन्द्र रघुनाथ" नामसे आपकी गल्ला तथा आढ़तकी दुकान है

मेसर्स मोहनलाल भोपासिंह

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। इसकी और भी कई स्थानोंपर शाखायें स्थापित हैं। यह फर्म विशेषकर जूटका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नम्बर १४६ में दिया गया है। इस फर्मपर बैंकिंग, गल्ला और किरानेका व्यापार होता है। जूटका व्यापार भी यह फर्म करती है।

मेसर्स रामवल्लभ मोहनलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाडनू निवासी बाबू रामवल्लभजीके पुत्र बा० छगनलालजी, मोहनलालजी तथा किशनरामजीके पुत्र बाबू बालाबक्सजी, छगनलालजी तथा लक्ष्मीनारायणजी हैं। आप अग्रवाल सज्जन हैं। बाबू रामवल्लभजी तथा बा० किशनरामजीने इस फर्मको करीब १५ साल पहले यहां स्थापित की थी। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धुब्री—रामवल्लभ मोहनलाल—यहां गल्ला, किराना तथा जूटका काम होता है तथा सिगरेटकी एजेंसी है।

कलकत्ता—फोदामल रामवल्लभ, ४६ स्ट्राण्ड रोड—यहां जूट, कपड़ा तथा चालानीका काम होता है।

गौरीपुर (आसाम)—रामवल्लभ पन्नालाल—यहां गल्ला, किराना तथा जूटका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म यहां ७ सालसे स्थापित है। इसके स्थापक बा० लक्ष्मीनारायणजी तथा रामचन्द्रजी हैं। आपही इस फर्मका संचालन सफलता पूर्वक कर रहे हैं। आप व्यापार कुशल सज्जन हैं।

आपकी ओरसे शोभासर और जसवंतगढ़में एक एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धुब्री—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र—यहां गल्ला, किराना, जूट तथा सोना, चांदीका व्यापार होता है।

गौरीपुर (आसाम)—रामचन्द्र रामानन्द—यहां कपड़ा तथा उपरोक्त काम होता है।

कलकत्ता—कोड़ामल लक्ष्मीनारायण ६४ लोअर चितपुर रोड—यहां बैंकिंग तथा जूटकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स शिवजीराम हरपतराय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान जोदका (हिसार) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गोयन गोत्रीय सज्जन हैं आपकी फर्मको यहां स्थापित हुए ५८ वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू शिवजीरामजी तथा हरपतरायजी थे।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू हरपतरायजीके दत्तक पुत्र बाबू रामचन्द्रजी हैं

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धुब्री—मेसर्स शिवजीराम हरपतराय—यहां गल्ला, और जूटका व्यापार होता है। और किरासिन तेलकी एजंसी भी हैं।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गिरधारीमल बालचन्द

" छोगमल रावतमल

" हाउस स्टोर कम्पनी

श्री लक्ष्मी भंडार

मेसर्स लालचन्द कुशालचन्द

" हरकचन्द तनसुखराय

" पाल ब्रादर्स

गल्लेके व्यापारी	जूटके व्यापारी
मेसर्स चुन्नीलाल जीवराज	मेसर्स आरसिम कम्पनी
" नंदलालराम श्यामलालराम	" ओंकारमल ज्वालाप्रसाद
" नेतराम कन्हैयालाल	" गिरधारीमल बालचन्द
" बद्रीकात वल्लभ	" थानसिंह करमचन्द
" मोहनलाल भोमसिंह	" बालाबक्ष रामचन्द्र
" रामवल्लभ मोहनलाल	" मोहनलाल भोमसिंह
" लक्ष्मीनारायण रामचन्द्र	" रायली ब्रादर्स

कूच बिहार

यह देशी राज्य है। यहांके शासक महाराजा कहलाते हैं। महाराजाके महल आदि देखने योग्य हैं। इस शहरमें दूर २ मकानात बने हुए हैं। बाजारमें तलाव एवम् टाउन हाल आदिके कारण यहांकी सुन्दरता बहुत बढ़ गई है। शहरमें सफाई काफी रहती है। यह स्थान ई० बी० आरके लालमनीर हाटनामक जंकशनसे चार पाच स्टेशनपर है। यहांसे कूचविहारतक रेल्वे गई है। यहांका प्रधान व्यापार तमाखू, एवम् जूटका है। तमाखू हजारों मन यहांसे बाहर जाती है। इसके बड़े २ व्यापारी यहां निवास करते हैं। गल्ले एवम् किरानेका व्यापार भी यहां अच्छी उन्नतिपर है। प्रायः आसपासके देहातवाले यहींसे सब माल खरीदकर ले जाते हैं।

मेसर्स कालूराम नथमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदारशहर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके सेठिया सज्जन है। इस फर्मका हेड आफिस कूचविहारमें है। यहा इसका स्थापन हुए १०० वर्षोंके करीब हुए। इसका स्थापन सेठ कालूरामजीके हाथोंसे हुआ तथा आपहीके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपके २ पुत्र हुए। श्रीयुत नथमलजीका तो संवत् १९४४ में स्वर्गवास हो गया। श्रीयुत भिखमचंदजी इस समय वर्तमान हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक श्रीयुत भिकमचंदजी तथा आपके पुत्र भीमराजजी और श्री नथमलजीके पुत्र श्रीबुलीचन्दजी हैं। आप सज्जन, शिक्षित, एवम विद्याप्रेमी हैं।

आपकी ओरसे सरदारशहरमें करीब ५१ हजारकी लागतसे एक अस्पताल चल रहा है। तथा नथमलजी सेठिया जैन पुस्तकालय भी खुला हुआ है ये दोनों श्रीयुत नथमलजीके स्मारक स्वरूप चल रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कूचविहार—मेसर्स कालूराम नथमल हे० आ०—यहां बैंकिङ्ग, जमींदारी तथा दुकानदारीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स कालूराम नथमल ४६ स्ट्रांड रोड T. A. "Dulearaj" यहां जूट बेलिंग, बैङ्किंग और कमीशन एजंसीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त मौसिमपर और भी आपकी टेम्परेरी शाखाएं खुल जाया करती हैं।

मेसर्स जालिमसिंह हुकमीचन्द

इस फर्मका हेड आफिस यहीं है। यहां करीब १०० वर्षसे यह फर्म व्यवसाय कर रही है इसकी और भी शाखाएं हैं। इसके वर्तमान संचालक बाबू गिरधारीमलजी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म बहुत अच्छी मानी जाती है। इसका विस्तृत परिचय कलकत्ता विभागके कमीशन एजंटोंमें चिमनीराम जसवंतमलके नामसे दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग, जमींदारी, जूट और दूकानदारीका व्यापार करती है।

मेसर्स शोभाचन्द श्रीचन्द

यह फर्म यहां बहुत वर्षोंसे स्थापित है। इसपर जमींदारी, जूट एवम् गल्लेका कारबार होता है। इसके वर्तमान संचालक राजलदेसर निवासी मालचंदजी, शोभाचन्दजी, हरिलालजी, सन्तोपचन्दजी, चम्पालालजी, सोहनलालजी और श्रीचन्दजी है। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके जूटके व्यापारियोंमें मेसर्स मेघराज उमचन्दके नामसे दिया गया है।

जूटके व्यापारी

आसकरण तनसुखदास भादानी

कालूराम नथमल सेठिया

जालिमसिंह हुकुमचन्द

स्वरूपचन्द धनराज

हनुतमल हनुमानदास

कपड़ेके व्यापारी

कालूराम नथमल

कालूराम आईदान

ताराचन्द इन्द्रचन्द

बींजराज शोभाचन्द

भीखनचन्द भैरोंदान

गल्लेके व्यापारी

कालूराम नथमल

किसनराय जोरमल

रामलाल गंगाजल

तमाखूके व्यापारी	लोहेके व्यापारी
आसकरण तनसुखदास	सुखलाल हीरालाल
कालूराम नथमल	हीरालाल मिस्त्री
जालिमसिंह हुकुमीचन्द	वर्तनके व्यापारी
वालचन्द जैचन्दलाल	गुरुगोविन्दसाह
	ललितमोहनपोद्दार

सिराजगंज

भारतकी प्रसिद्ध नदी ब्रह्मपुत्राके किनारेपर बसी हुई यह एक बड़ी मंडी है। यह ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी सिराजगंज शाखाका आखिरी स्टेशन है। स्टेशनके पाससे ही यह मंडी बसी हुई है ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसी होनेके कारण वर्षा ऋतुमें यहां मकानों तकमें पानी भर जाता है। यहांके खास निवासी इसी तरह पानीमें अपना कार्य करते रहते हैं।

इस मंडीमें जमीदारी सिस्टम जारी है। जमीदार लोग यहांके निवासियोंको पक्का मकान बनानेकी आज्ञा नहीं देते है। पक्का मकान बनानेकी आज्ञा लेनेके लिये जमीदारको बहुत रुपया देना पड़ता है। इस लिये इस मंडीमें अधिकांश मकान चद्दर तथा बासके बने हुए हैं। सारे शहरमें सात आठ मकान दुमंजिले दृष्टिगोचर होते हैं। यहां बास ज्यादा तादादमे पैदा होनेके कारण मनुष्योंको बासका मकान बनानेमें ज्यादा सुविधा होती है।

शहरकी सफाई व रोशनीकी ओर यहाकी म्युनिसिपैलिटीका विशेष खयाल नहीं है। सिराजगंजकी सड़क भी बहुत टूटीफूटी है। यहा रोशनीका भी अच्छा इन्तिजाम नहीं है रोशनी बहुत दूरीपर लगी हुई है,इस लिये शहरमें अंधेरा हो जाता है। जिससे लोगोंको बड़ी तकलीफ होती है।

सिराजगंज शहरके बीच होकर ब्रह्मपुत्रकी एक छोटी सी शाखा गुजरी है। ग्रीष्म ऋतुमें यह सूख जाती है पर वर्षाऋतुमें तो यह सिराजगंजको दो भागोंमे विभक्त कर देती है। इस समय लोग नावोंमे बैठकर इधर उधर आते जाते हैं। तथा नावों द्वारा व्यापार करते हैं।

ऐसा सुननेमें आता है कि ब्रह्मपुत्र नदी करीब आठ दस वर्षके पहले सिराजगंजसे दोतीन मील दूर बहती थी। पर अब बिलकुल पासही बहने लगी है। इससे सिराजगंजकी कोर्ट इत्यादि सरकारी इमारतें खतरेमें आगई हैं इस लिये सरकारने दूसरे स्थानपर कोर्ट आदिकी व्यवस्था की है।

सिराजगंज जूटकी प्रसिद्ध मंडी है यहाका जूट अपनी विशेषताके लिये मशहूर था।

पहिले सिराजगंज जूटका नाम ही भर लेनेपर भावसे चार आने ज्यादा मिलते थे। उस समय यहां रेलवे नही थी ब्रह्मपुत्रमें जूट नावों द्वारा भेजा जाता था। अब जबसे यहां रेलवे हो गई है तबसे इस मंडीका महत्व कम हो गया है आस पास रेलवेकी स्टेशनें हो जानेसे यहां जूटकी आमदनी कम होगई है। अब यहांसे करोब सात आठ लाख मन जूट जाता है जूटके इतिहासमें सिराजगंज का नाम उल्लेखनीय है। यहांका जूट चमकीला साफ और बहुत अच्छा होता है जूटके सिवा यहां आसपासके देहातोमें धान चावल भी पैदा होता है धान चावलका व्यापार भी यहां होता है यहांसे जूट तथा धान चावल बाहर जाता है तथा चद्दर, कपड़ा आदि वस्तुएं बाहरसे आकर बिकती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स टीकमचन्द दानसिंह

इस फर्म पर जमींदारी बैंकिंग और जूटका व्यापार होता है। इसका हेड आफिस कलकत्ता में है। विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६५ में दिया गया है।

मेसर्स बुधमल बालचन्द

इस फर्मके हेड आफिस कलकत्ते में है। इसका विशेष परिचय वहांके जूटके व्यापारियों में दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैंकिंग और जूटका व्यापार होता है।

मेसर्स रतनचन्द नथमल

इस फर्मके दो पार्टनर हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस भी कलकत्ता है। अतएव इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिङ्ग और जूटका व्यापार एवम कमीशन एजंसीका काम करती है। कलकत्तेकी प्रसिद्ध फर्म हरिसिंह निहालचन्दकी जूट खरीदी इसी फर्मके मार्फत होती है।

मेसर्स लछमनदास मोतीलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लाडनूमें है। आप ओसवाल वंश जातिके

बरमेधा सज्जन है। कलकत्तेमें इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसकी स्थापना सेठ मोतीलालजीके हाथोंसे हुई। आपहीके द्वारा इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आप बड़े व्यापार दक्ष पुरुष हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोतीलालजी तथा आपके भाई पृथ्वीराजजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स लछमनदास मोतीलाल १५नारमल लोहिया लेन - यहां जूट तथा कमीशन एजन्सीका काम होता है।

सिराजगंज—मेसर्स खुशालचंद लछमनदास—इस फर्मकी स्थापना यहा संवत् १९३३ मे हुई। यहां जूट बैंकिंग तथा सोना चादीका काम होता है।

फरीदपुर

यह पूर्वी बङ्गालमें ईस्टर्न बंगाल रेलवे की इसी नामकी स्टेशनके समीप बसा हुआ है। रेल्वे तो इस ग्रामके भीतरसे होकर जाती है। इसके बाजार चौड़े हैं। ग्राममे विशेष मकान टीनके बने हुए है भी यहां चहलपहल ज्यादा होनेसे शहरमें जीवन मालूम होता है।

यहा जूट तथा धान पैदा होता है ये दोनों ही वस्तुएं यहांसे वाहर जाती है। गल्ला, कपड़ा आदि सब वस्तुएं बाहरसे आकर यहा बिकती हैं। इन वस्तुओंका यहा अच्छा व्यापार होता है। पासके सब देहातोमे यहींसे माल जाता हैं। यहा बड़ी कोर्ट भी है। यह स्थान अपने ही नामके जिलेकी मुख्य जगह है।

मेसर्स गेवरचंद दानचंद चापड़ा

इस फर्मके मालिक सुजानगढ़ निवासी हैं। इसके वर्तमान मालिक बा० दानचन्दजी चपोड़ा हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके १३९ पेजमें दिया गया है। यहा इस फर्मपर जूटका व्यापार एवम कमीशनका काम होता हैं।

मेसर्स चम्पालाल कोठारी

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० मूलचंदजी, मदनचंदजी एवम चम्पालालजी हैं। यहा इस

फर्म पर जूटकी खरीदीका काम होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६० में दिया गया है।

मेसर्स प्रतापमल मगनीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक लाडनू निवासी नेमीचन्दजी वेद हैं। इसका हे० आफिस कलकत्ता है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६६ में दिया गया है। यहां यह फर्म बैंकिंग और जूटका व्यापार करती है। इसकी यहां एक शाखा और है जहां गल्ले किराने आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स प्रेमसुख गोवर्धन

इस फर्मके मालिक रेवासा (जयपुर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी जातिके कावरा सज्जन हैं। यह फर्म यहां ५५ वर्षसे स्थापित है इसके स्थापक बाबू रामप्रतापजी थे।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामप्रतापजीके लघुभ्राता बाबू प्रेमसुखजीके पुत्र बाब गोवर्धनजी और भगवानदासजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बोगरा—मेसर्स प्रेमसुख गोवर्धन—यहां जूट, बैंकिंग और लकड़ीका व्यापार होता है। आपकी यहां पूरनमल बेगराजके नामसे एक कपड़ेकी दुकान है।

मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसाद

इस फर्मसे मालिकोंका मूल निवासस्थान परशुरामपुर (जयपुर) है। आप अग्रवाल जातिके बिट्ठल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू भोलारामजी थे। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे स्थापित है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू भोलारामजीके पुत्र बाबू मुरलीधरजी और बाबू वंशीधरजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बोगरा—मेसर्स भोलाराम दुर्गाप्रसाद—यहां कपड़ेका काम होता है।

गोविन्द गंज—(रंगपुर) मेसर्स भोलाराम मुरलीधर—यहां जमींदारी और कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—रामधनदास द्वारकादास—४२।१ स्ट्रांड रोड—यहां आढ़तका काम होता है।
बाराबंकी—रामधनदास भगवानदास—कपड़ा तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रिखचन्द नाथूलाल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लादूरामजी कालूरामजी, और लक्ष्मीनारायणजी हैं। यह फर्म करीब ४० वर्षोंसे कलकत्तेमें व्यापार कर रही है। वहीं इसका हेड आफिस है। यहां इसपर कपड़ा तथा गल्लेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त मेसर्स लादूराम जमनालालके नामसे भी यहा एक दूकान और है इसपर भी यही काम होता है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें कमीशन एजंटोंमें मेसर्स रामलाल शिवलालके नामसे दिया गया है।

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स चांदमल भंवरीलाल
" जुहारमल धन्नालाल
" बालमुकुन्द महादेव
" भीमराज शिवप्रसाद
" रिखचन्द नाथूलाल
" लादूलाल धन्नालाल

कपड़ेके व्यपारी

" किशनलाल तोंदी
" गणपतराय तोलाराम
" गोविन्दराम कालूराम
" गोबिन्दराम लादूराम
" पूरणमल बेगराज
" बीजराज जगन्नाथ
" बीजराज लादूराम
" रामचन्द्र बालाबक्ष
" रामवल्लभ किशनलाल
" रामचन्द्र रामप्रताप

मेसर्स लादूराम जमनालाल
" लछमनराम बालमुकुन्द
" हजारीमल मदनलाल

चांदी सोनाके व्यापारी

" जैचन्दलाल बरमेचा
" बालमुकुन्द महादेव

जूटके व्यापारी

" घनश्यामदास नेमीचन्द
" चम्पालाल कोठारी
" प्रेमसुख गोवर्धन
" मोतीलाल पूनमचन्द

चद्दरके व्यापारी

" गजानंद कन्हैयालाल
" चम्पालाल कोठारी
" बालमुकुन्द महादेव
" भीमराज शिवप्रसाद
" मोतीलाल पूनमचन्द

गायबंधा

यह स्थान इस्टर्न बेंगाल रेल्वेके अपने ही नामके स्टेशनपर बसा हुआ है। यह आस पासके स्थानोंमें व्यापारिक दृष्टिसे बड़ा स्थान है। यहां इस जिलेकी बड़ी कोर्ट भी है। इससे अच्छी गतिविधी रहती है। यहांका मुख्य व्यापार जूट, कपड़ा एवम धान चावलका हैं। कपड़ा, किराना गल्ला आदि बाहरसे आते हैं। एवम जूट यहांसे बाहर जाता है। इसकी तादाद करीब ६,१० लाख मन है। इसी व्यापारसे यहां बड़ी रौनक मालूम होती है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय नीचे दिया जाता है—

मेसर्स छगनमल नेमचंद

इस फर्मका हे० आफिस कलकत्ता है। यहां इसपर गल्ला एवम किरानेका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १९९ में दिया गया हैं।

मेसर्स छत्तूमल चोथमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान गोगोलाव (नागौर) है आप लोग ओसवाल समाजके वाइसटोलाकांकरिया सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ छत्तूमलजी लगभग ५० वर्ष पूर्व यहां आये और आपने सेठ कुशालचंदजीके यहां नौकरी करली। पर ४ वर्ष बाद आप उसी फर्ममें भागीदार हो गये। इसके कुछ ही समय बाद आपने अपनी उपरोक्त फर्मकी स्थापना की। आपने अपनी इस फर्मको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया। आपका स्वर्गवास सं० १९५१ में हुआ।

इस फर्मके वर्तमान मालिक आपके वंशज ही हैं। इनके नाम क्रमशः सेठ अमोलखचंदजी, दुलीचंदजी, मुकुन्दमलजी, रेखचंदजी, किशनलालजी, भैरवदानजी, पूसराजजी, और जेठमलजी हैं। आप सभी सज्जन व्यापारमें भाग लेते हैं। सेठ अमोलखचंदजीके पुत्र बाबू बछराजजी तथा सेठ दुलीचन्दजीके पुत्र बाबू भंवरलालजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तुलसीघाट—मेसर्स छत्तूमल चौथमल—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है तथा जूट,

कपड़ा, सोना, चांदी, ा, टीनका काम होता है। यहां आपकी बहुत बड़ी जमींदारी है। और बैंकिङ्गका काम भी होता है।

गायबंधा—मेसर्स छत्तूमल जोहारमल—यहां पाट, कपड़ा, सोना, चांदी, गल्ला और टीनका काम होता है। इसमें सेठ जोहारमल सिंघीका हिस्सा है।

गायबंधा मेसर्स अमोलखचन्द दुलीचन्द—यहां पाटका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स छत्तूमल मुलतानमल ७।२ बाबूलाललेन—यहां जूटकी आढ़त और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

पलासबाड़ी (रंगपुर) छत्तूमल राजमल—यहां जूट और गल्लेका काम होता है।

सादुलापुर (रंगपुर) मेसर्स मुलतानमल अमोलकचंद—यहां जूट, गल्ला, कपड़ा, और टीनका काम होता है।

चौतरा (रंगपुर)—मेसर्स पुसराज बछराज—यहां जूट, गल्ला, कपड़ा और टीनका काम होता है।

कौशुलपुर—(रंगपुर)—मेसर्स छत्तूमल राजमल—यहां जूट, गल्ला, कपड़ा और टीनका काम होता है।

मेसर्स मालमचन्द हुलासमल

इस फर्मके मालिक लाडनू (जोधपुर) के निवासी हैं। आप लोग ओसवाल जैन श्वेताम्बर बरमेचा सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ धनराजजीने लगभग १५ वर्ष पूर्व यहां आकर अपनी इस फर्मकी स्थापना की और जूटका व्यापार करने लगे। आपके दो पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः बाबू मन्नालालजी, और बा० जयचन्द्रलाल हैं। बाबू जयचन्द्रलालजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ मन्नालालजी, सेठ मालमचंदजी के पुत्र बाबू सागरमलजी, और निदासरके बाबू मंगलचन्दजी बेद हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तुलसीघाट—मेसर्स मालमचन्द चम्पालाल—यहां गल्ला, और जूटका काम होता है।

गायबन्धा - मेसर्स मालमचंद हुलासमल—यहां गल्ला और जूटका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स मालमचंद मन्नालाल ६५।३ पांचा गली—जूटका काम है।

पाटग्राम—मेसर्स हुलासमल सागरमल—यहां जूट तम्बाकूका काम होता है।

फोर्ड़ग्राम—(रंगपुर) मेसर्स हुलासमल सागरमल - जूट, कपड़ा और तम्बाकू काम होता है।

मेसर्स सेरमल हीरालाल

इस फर्मका हेड आफिस रंगपुर है। यहां यह फर्म गल्लेका व्यवसाय करती है। इसका विशेष परिचय रंगपुर विभागमें दिया गया है। वहां यह फर्म करीब ३० वर्षोंसे गल्लेका व्यापार कर रही है।

बैंकर्स

आसाम बंगाल बैंक

गायबंधा यूनाइटेड बैंक लि०

लोन आफिस

जूटके व्यापारी

मेसर्स अमोलकचन्द दुलीचंद

" सी० आर० साहा

" जयकिशनदास मल्ल

" मालमचन्द हुलासचन्द

" एम० डेविड एण्ड को०

" राली ब्रदर्स

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स खूबचन्द तखतमल

" डालचन्द भैरोंदान

" घेवरचन्द मोतीलाल

" तखतमल रघुनाथ

" भैरोंदान मूलचन्द

" मनीराम पूनमचन्द

गल्ले और किरानेके व्यापारी

मेसर्स छगनमल नेमचन्द

" पूर्णचन्द्र शाहा

" पूसाराम रामनारायण

" बरदीचन्द खेमराज

" राम सुभाग राम

" बामासुन्दरी जतीन्द्र मोहन ललित मोहन साहा

" शेरमल हीरालाल

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स आफताब ब्रदर्स

" इब्राहिम सौदागर

दी न्यू साईकल कम्पनी

मेसर्स पूर्णचन्द्र साहा

" वामासुन्दरी जतीन्द्रमोहन ललितमोहनसाहा

" हरदेवदास रघुनाथराय

कुष्टिया

गोराई नदीके किनारेपर बसा हुआ यह एक अच्छा ग्राम है। इसके समीप इस्ट बंगाल रेलवेकी स्टेशन इसी नामसे पुकारी जाती है। रेलवे शहरके मध्य भागमेंसे होकर जाती है। ग्राम होते हुए भी यहांकी चहल पहल अच्छी है।

यहा आसपास जूट, हलदी, धनिया, उड़द, मसूर, तिलहन आदि वस्तुएं पैदा होती है। और बाहर जाती है। तथा घी, धान, केरोसिन आइल आदि वस्तुएं बाहरसे आकर बिकती है। यहापर गल्लेकी खेती भी ज्यादा तादादमें होती है। यहांपर गन्नेका रस निकालनेकी सैकड़ों मशीने हैं। जो किसानोंको किरायेपर दी जाती है।

यहांपर मोहिनी मिल नामकी एक मिल है। इसमे धोती जोड़े साडी, छींट, चेक आदि वस्तुएं तैयार होती हैं। ये अच्छी क्वालिटीकी होती है। इस मिलके कपडेकी बाजारमें अच्छी प्रतिष्ठा है। यहासे इस मिलका कपड़ा बावे कलकत्ता आदिके बाजारोंमे बिकता है।

मेसर्स खुशालीराम वैतरणीमल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके गाठेड वाला सज्जन हैं। इसके स्थापक नवलगढ़ निवासी खुशालीरामजी थे। इस समय इसका संचालन बाबू खुशालीरामजीके पुत्र वैतरणीमलजी तथा पौत्र महादेवलालजी करते है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया—खुशालीराम वैतरणीमल—यहा कपड़ा और मनिहारीका काम होता है।

कलकत्ता—वैतरणीदास महादेव—२०१ हरिसन रोड, यहां कमीशन एजेंसी तथा कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स गौरीशंकर भगवानदास

इस फर्ममे झूंझनू (जयपुर) निवासी बाबू गौरीशंकरजी तथा सिरमुख (राजगढ़) निवासी बाबू भगवानदासजीका साझा है। आप दोनों अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म करीब ८ वर्षसे व्यापार कर रही है। इसके पहिले बाबू गौरीशंकरजीके पिता बाबू रामचन्द्रजी यहा कपड़ा तथा ठेकेदारीका व्यवसाय करते थे। यहा पहिले पहल आपही इमारती लकड़ी और चद्दर लाये थे। आपका देहान्त हो चुका है। इस समय इस फर्मके मालिक बाबू गौरीशंकरजी तथा भगवानदासजी हैं। इस फर्मकी ओरसे यहा एक ठाकुरबाड़ी और बगीचा बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया—गौरीशङ्कर भगवानदास—यहा, लकडी, टीन, जूट गल्ला और आढ़तका काम होता है।

इसके सिवाय बाबू गौरीशंकरजी की प्रायवेट फर्म रामचन्द्र गौरीशंकर के नामसे है जो मकानोंका किराया वगैरहका काम करती है।

मेसर्स मनीराम अर्जुनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सुरेका सज्जन है। यह फर्म यहां ५० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू मनीरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपके तीन पुत्र हुए। महादेवप्रसादजी, विलासरामजी, तथा अर्जुनदासजी। इनमेंसे अभी अर्जुनदासजी विद्यमान हैं। इस समय बाबू अर्जुनदासजी तथा महादेवप्रसादजीके पुत्र हरिरामजी और किशनदयालजी इस फर्मका संचालन करते हैं। इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया - मेसर्स मनीराम अर्जुनदास—यहां यह फर्म कपड़ेका सबसे ज्यादा व्यापार करती है।

यहां ही आपकी दूसरी फर्मपर गल्ला और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—अर्जुनदास हरीराम, ४ वेहरापट्टी—यहां सराफी तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

ग्वालंदो—अर्जुनदास द्वारकादास—यहां जूटका काम होता है।

बाबू अर्जुनदासजी यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट है आप मारवाड़ी अग्रवाल पंचायत और गौशालाके सेक्रेटरी भी हैं।

मेसर्स लक्ष्मीचन्द मामराज

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके जैनधर्मावलम्बी सज्जन हैं। आप बिसाऊ (जयपुर) के निवासी हैं। इस फर्मके स्थापक बाबू लक्ष्मीचन्दजी है। यह फर्म यहां ५० वर्षसे स्थापित है। आपके एक पुत्र है। जिनका नाम मामराजजी है। आपभी व्यापारमें भाग लेते है। आप मिलनसार हैं।

इस फर्मका व्यापारिका परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया लक्ष्मीचन्द मामाराज—कपड़ा तथा सरसोंके तेलका व्यापार होता है। यहा हाथीमार्क किरासिन तेलकी एजंसी है और एक सुरखी मिल है।

मेसर्स श्रीनारायण पूरणमल

इस फर्मके स्थापक बाबू श्रीनारायणजी हैं। आप रामगढ़ (सीकर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सिंगल गोत्रीय सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू पूरणलजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कुस्टिया—मेसर्स श्रीनारायण पूरणमल—यहां इमारती लकड़ीका काम होता है। यहां आपकी दो शाखाएं और है। जो अलग २ नामसे पाट और लकड़ीका व्यापार करती हैं।

गल्ला और जूटके व्यापारी

मेसर्स गणपतराय मुरलीधर
„ गोविन्दराम सावलराम
„ गौरीशंकर भगवानदास
„ डेढराज मदनलाल
„ श्रीचन्द्रपाल ज्ञानोदा सुन्दरीदासी
„ मधुसुदन पाल प्यारेलाल पाल
„ श्रीगोपाल चराडीप्रसाद
„ ज्ञानेन्द्रनाथ दां०

लकड़ीके व्यापारी

„ गौरीशंकर भगवानदास
„ बद्रीदास बनारसीलाल

मेसर्स मदनलाल गोरीशंकर
„ महादेव जगदीश
„ श्रीनारायण पूरणमल
„ हरिदास रायबल्लभ

कपड़ेके व्यापारी

खुशालीराम वैतरणीमल
डालूराम सागरमल
मनीराम अर्जुनदास
लक्ष्मीचन्द मामराज
श्रीकिशनदास शिवप्रसाद
हरमुखराय भगवानदास

ढाका

यह शहर आसाम बंगाल रेलवेके अपनेही नामके स्टेशनसे करीब आधा मीलकी दूरीपर नदीके किनारे बसा हुआ है। इसकी बसावट एक दम लम्बी है। मालूम होता है कि यहां सफाईकी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। इसका इतिहास बहुत प्राचीन है। मुगल साम्राज्यके समयमें भी यह स्थान बड़ा प्रसिद्ध रहा है। उस समय यह व्यापारका केन्द्र माना जाता था। यहाके बने हुए कपड़ोंके लिये विदेशी लोग तरसते थे। इन्हें पहनना अपना परम सौभाग्य समझते थे। यहांके कारीगरोंने इस कौशलमें कमाल हासिल कर लिया था। उस समय ढाका भारतमें ही नहीं प्रत्युत

दुनियामे अपनी कारीगरीके लिए मशहूर था। यहांकी मलमल इतनी महीन होती थी कि कई तह करके पहनने पर भी उसमें अङ्ग प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ते थे। उस समयका इतिहास बतलाता है कि एक छोटी सी बांसकी नलीमें इतना बड़ा मलमलके कपड़ेका थान समा जाता था कि जिससे हाथी अम्बारी सहित ढक जाय।

यहांके कारीगरोंने कपड़ेके बुननेमेंही कुशलता प्राप्त की हो सो बात नहीं है। प्रत्युत और भी कई कलाकौशलमें वे पारङ्गत थे। उस समय यहांके चांदी सोनेके इत्रदान आदि जेवर पर की गई खुदाई एवम पालिस संसारमें अपना एक स्थान रखती थी। इसी प्रकारके और भी कई कलाकौशल यहां विद्यमान थे। लेकिन समयकी गतिने इसे एकदम पलट दिया। जहां यहांके कपड़ों आदिके लिये विदेशी लोग ताका करते थे। आज वहींके लोग विदेशके कपड़ेका मुंह ताकते हैं। समयकी गति बड़ी विचित्र है। ※

वर्तमान व्यापार—प्राचीन समयकी तरह तो अब ढाकेमें कोई कला कौशलके काम नहीं है। पर हां, शंखकी चूड़ियां, साबुन, इत्रदान, चांदी सोने पर नक्काशीका काम अब भी बहुत अच्छा बनता है। इसका विवरण नीचे दिया जा रहा है—

शंखकी चूड़िया—यहां शङ्खकी चूड़ियोंका व्यापार बहुत जोरों पर है। अथवा यों कहना चाहिये कि ढाकेको छोड़ शायदही कहीं शंखकी चूड़िया बनती हो। यहा इस कामके करने वाले करीब १००० घर हैं। इस काममें यहांके कारीगरोंकी कारीगरी देखतेही बनती है। शंख ऐसी वस्तुको अपनी कुशलतासे ये लोग इतना सुन्दर रूप दे देते हैं कि देखकर आश्चर्य होता है। इन चूड़ियोंपरकी खुदाई एवम आवश्यकतानुसार स्थान स्थानपर सोनेकी जड़ाईका काम बहुत सुन्दर होता है।

चांदी सोनेके जेवर—इस काममें भी यह प्रसिद्ध है। खासकर इत्रदान, पानदान, गुलाबदान आदि शौकिया चीजोंपरकी कारीगरी तो यहां बड़ी अद्भुत होती है।

ढाकेका कपड़ा—मुसलमानी कालमें तो इस काममें ढाका संसार प्रसिद्ध था मगर आज इसकी बड़ी शोचनीय हालत है। यहां आज भी इस कामके करने वाले करीब ५ हजार घर है। मगर उन्हें किसी प्रकारकी सुविधा नहीं है इससे वे काममे उन्नति नहीं कर सकते। आजकल भी यहांका कपड़ा ढाकेके नामसे प्रसिद्ध है। यहा धोती जोड़े, शर्टिंग, मलमल एवम कोटका हाथका

※ नोट—यदि इस विषयमें और अधिक पढ़ना चाहे तो इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें भारतका व्यापारिक इतिहास नामक विभागमें देखिये।

—सम्पादक

कना बुना कपड़ा बहुत सुन्दर एवम मजबूत होता है। हमने कुछ वर्षों पहलेका बना हुआ एक मलमलका थान देखा। व्यापारीने उसकी ६५०) रुपये कीमत मांगी। वह दस गजका थान था। थान इतना महीन था कि कई तह करनेपर भी शरीर उसमेंसे दिखलाई पड़ता था।

साबुन फेक्टरीज—साबुन बनानेके भी यहां करीब २५ बड़े बड़े कारखानें हैं। इनमें स्वदेशी साबुन बनता है और हजारों रुपयोंका साबुन बाहर जाता है। यह साबुन सस्ता और बढ़िया होता है। साबुन स्नान करने तथा कपड़े धोनेका दोनोंही तरहका बनता है।

इसके अतिरिक्त जूट, कपड़ा, गल्ला, चमड़ा, मनीहारी आदिका व्यापार भी यहां बहुत अच्छा होता है। यहांसे करीब ७ लाख मन जूट बाहर जाता है। धान चावलका भी व्यापार यहां कम नहीं होता है।

यहां शिक्षाका भी बहुत प्रचार है। यहांकी ढाका युनिवर्सिटी बहुत प्रसिद्ध है। सारे भारतवर्षमें इसी युनिवर्सिटीमें टीचिंग ट्रेनिङ्ग कालेज है। यहां कई शिक्षक अध्ययन करनेके लिये आया करते हैं। भारतवर्षके प्रसिद्ध ढाका शक्ति औषधालयका हेड आफिस भी यहीं है। इसमें शुद्ध रीतिसे आयुर्वेदिक दवाइयें तैयार की जाती हैं। इसकी भारतवर्षमें और कई शाखायें हैं।

बेंकर्स

इम्पीरियल बेंक आफ इण्डिया लिमिटेड

कपड़ेके व्यापारी

अमृत वस्त्रालय पटुआटोली
कमलालय इस्लामपुर
किशोरी वस्त्रालय पटुआटोली
गोपीमोहन मास्टर ,,
गोविन्द चरण पाल एण्ड सन्स बाबू बाजार
[illegible] साह चौक बाजार
गोपीमोहन साह ,,
[illegible] बाबू बाजार
[illegible] मोहन चौक बाजार
[illegible] वस्त्रालय पटुआटोली
तारणीचरण गिरीशचरण साह चौक बाजार
दास ब्रादर्स पटुआटोली
नारायण स्वदेशी स्टोअर
भगवानदास गोविन्ददास बाबू बाजार
माणिक वस्त्रालय पटुआटोली
मिहिलाल सखीलाल साह चौक बाजार
रविदास कृपानाथ ,,
रामकृष्ण वस्त्रालय पटुआटोली
लालमोहन कुन्दलालपाल बाबू बाजार
लोकनाथ वस्त्रालय पटुआटोली
विपिनविहारी साह चौक बाजार
सुखलाल कृष्णचन्द्र साह ,,
श्रीनाथ पद्मचन्द ,,
हाकिम मोहम्मद हुसेन ,,

ढाकाके बने हुऐ कपड़ेके व्यापारी

चांदमोहन प्राणवल्लभ वेसाक नवाबपुर
जी० एन० नागदास ,,
जे० पी० वेसाक ,,
मंगलचन्द राधाश्याम ,,

सोना चांदीके व्यापारी

गोविन्द हरिधर पोद्दार इस्लामपुर
गोविन्दहरि प्रल्हादधर ,,
ठाकुरदास गोप ,,
नागरचन्द दे ,,
प्रसन्नकुमार सेन ,,
पारसनाथ दास ,,

जौहरी

चौधरी एण्ड० को० हरिप्रसन्नमित्र रोड
मारनचांद सेन इस्लामपुर
परखनाथ दत्त हरिप्रसन्नमित्र रोड
हरकचन्द जोहरी ,,

गल्लाके व्यापारी

अब्दुल रहमान व्यापारी इमामगज
अरोज अली ,, रहमतगंज
आलमचन्द ,, वादामटोली
कदमअली ,, रहमतगंज
कन्हैयालाल घोष इमामगंज
गंगासागर साह रहमतगंज
जगतचन्द कार्तिकचन्द साह रहमत गंज
जनाबअली व्यापारी वादामटोली
जोगेन्द्रचन्द्रधर इमामगंज
दारकनाथ किष्टकमल साह वादामटोली
रिक्मुतअली ,,
हाफिस महम्मद हुसेन रहमत गंज

वतनोंके व्यापारी

कुञ्जलाल शतीशचन्द्रदास पत्थरहट्टा
प्यारीमोहन गोपीनाथ दास मुगलटोली
प्यारीमोहन कृष्टोदास ,,

शंखकी चूड़ियोंके व्यापारी

प्रेमचन्द्र सुर संखारी बाजार
रामगोपालधर ,,
सुरेशचन्द्र सूर ,,
हेमचन्द्र कर ,,

वाच मरचेण्ट्स

एस बनर्जी एण्ड को० पटुआ टोली
जी० वेसाक एण्ड को० पटुआ टोली
एन० बी० सुर इस्लामपुर

ट्रंक मरचेण्टस

कृष्णचन्द्र दास मौलवी बाजार
केशवलाल दास मुगलटोली
गेंदवल्लभ दत्त ,,
नगेन्द्रनाथ पाल ,,
पारसलाल शील ,,
मगनलाल गोप बंसी बाजार
मतीलाल सींग मुगल टोली
रमेशचन्द्र जोगेशचन्द्र ,,
सीतानाथ पाल ,,
हरिमोहन शील ,,

जूटके व्यापारी

आर सिम कंपनी नलगोला
के० जी० साह कम्पनी „
चुन्नीलाल भैरोंदान „
जे० लेजारस „
सिम कंपनी „
सोनाकाटा वेलिंग कम्पनी „

जनरल मरचेण्ट्स

अमृतलाल पाल नवाबपुर
एन० के० मित्र एण्ड को० „
कालीचरण राधागोविन्द फिराजगंज
कुंजबिहारी पुष्पलाल „
जतीन्द्रकुमार दास मुगलटोली
मधुमोहन केशवलाल फिराजगंज
रजनीकांत नवद्वीप मुगलटोली
शशिनन्दन रविनन्दन „
हरिमाधव वेनीमाधव मौलवी बाजार
हरिचरण विस्टपचरण „

पेपर मरचेंटस

पर्वती चरणसिंह मुगलटोली
पापुलर पेपर मार्ट पटुआटोली
पार्वती चरण पाल मुगलटोली
राध वल्लभ दत्त „
सीतानाथ पाल „

हार्डवेअर मरचेंटस

जतीन्द्रकुमार राधाकान्त दास मुगलटोली
दशरथ साह वंसी बाजार
दीनानाथ राय मीट फोर्ट रोड
पाप्पुलर हार्डवेअर एण्ड को पटुआटोली
पुष्परेपत साह स्वारी घाट

फार्मेसी एण्ड मेडिकल हाल

अक्षय फार्मेसी
एम्पायर मेडिकल हाल
केम्पवेल मेडिकल हाल
जार्ज मेडिकल हाल
ढाका शक्ति औषधालय
ढाका आयुर्वेदिक फार्मेसी
दी हाल फार्मेसी
प्युपिल फार्मेसी
सुधाराम फार्मेसी
स्टार मेडिकल हाल

नारायणगंज

नारायणगंज सीतालख्या नामक नदीके किनारे बसा हुआ है। यह ए० बी० आरलाइनका एक प्रधान व्यापारिक स्टेशन है। यहांके मोहल्ले दूर २ बसे हुए हैं। सुन्दरताकी दृष्टिसे इस शहरमें कोई बात नज़र नहीं आती। दूर २ बस्ती होनेसे यहां सफ़ाई आदि अच्छी है।

व्यापार—व्यापारिक दृष्टिसे इस स्थानका बहुत बडा महत्व है। इसका कारण यह है कि यहां व्यापार नदीके जल मार्ग एवं रेल्वेके थलमार्ग दोनों ही मार्गों द्वारा होता है। साथ ही यह स्थान ऐसी जगह स्थित है कि इसके आस पास कई छोटी २ जूट की मंडियां हैं। इन मंडियोंसे सारा जूट इसी शहरमें आता है और यहांसे स्टीमर द्वारा कलकत्ते भेजा जाता है। आजकल भारतवर्षमें नारायणगंज ही एक ऐसा स्थान है जहासे सबसे अधिक जूटकी रफ्तनी होती है। जूटका व्यापार विशेष कर सीतालख्या नदीके किनारे सीतालख्या मोहल्लेमें होता है। यहां कई बड़े २ जूटके खरीददारोंकी फर्में है। यहांसे करीब ५० लाखमन जूट प्रतिवर्ष बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त कपड़ा, धान, चावल आदिका व्यापार भी यहां बहुत अच्छा है।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज—योंतो यहां चावलके मिल और जूटके प्रायवेट प्रेस बहुत हैं, जिनका विवरण प्रथम दिया जा चुका है। मगर यहांकी खास वस्तु है यहांके काटन मिल्स। इनकी संख्या दो है। प्रथम श्रीढाकेश्वरी काटन मिल और दूसरा लक्ष्मीनारायण काटन मिल है। प्रथम पुराना मिल है। दूसरा अभी शुरू हुआ है। इन मिलोंमें धोती जोड़े, जनानी साड़ियां वगैरह अच्छी बनती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स नवरंगराय नागरमल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म यहां १२ वर्षसे स्थापित है। इसके संस्थापक बाबू नागरमलजी हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू नागरमलजी, ओंकारमलजी, मालीरामजी, और ब्रह्मदत्तजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

नारायणगंज—नवरंगराय नागरमल—यहा जूटका व्यापार होता है T. A. "Nawarangrai"

कलकत्ता—„ „ ४३ काटनस्ट्रीट T. A. Nominator—यहां बैंकिंगका काम होता है।

गोहाटी—नवरंगराय किशनदयाल फाली बाजार T A Nawarangrai—यहां जूट, गल्ला, सरसों तथा चालानीका काम होता है।

डिबरूगढ़—नवरंगराय उदयराम—यहां आपकी २ तेलकी मिल हैं।

नौगांव (आसाम) नौरंगराय किशनदयाल—यहां जमींदारी और पाटका काम होता है।

सपाई (नौगांवा) नौरंगराय किशनदयाल—यहां जूटका काम होता है।

मेसर्स राधाकृष्ण मोतीलाल

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है जहां इस पर मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संन्स नाम पड़ता है। यह फर्म वहां बहुत प्रतिष्ठित समझी जाती है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागमें बैंकर्समें दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। इसका तारका पता "Star" है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड (ब्रांच)
काशीनाथ वासीनाथ निताईगंज
गोपीनाथ पोद्दार ,,
जयगोविन्द देवेन्द्रचन्द्र प्रभाचन्द्रराय चौधरी निताईगंज
नवीनराय चन्दन साह
मचाई गोपीनाथ

जूटके व्यापारी

नाम	
आर० सिम कम्पनी	सीताललक्ष्या
एम० डेविड कम्पनी	,,
कंभनपुर जूट कम्पनी	,,
जगन्नाथ जुगुलकिशोर	,,
भूरामल पन्नालाल	,,
जूट मार्केटिंग एजंसी	,,
जे० सी० पाल	,,
तुलाराम बछराज	,,
नवरंगराय नागरमल	,,
नारायणगंज कम्पनी	,,
बंगाल बेलिंग कम्पनी	,,
बालमुकुन्द ओंकारमल	,,
माइकल सन्स	,,
रायली ब्रदर्स लिमिटेड	,,
राधाकिशन मोतीलाल	,,
लंदन क्लार्क कम्पनी	,,
ह्वाट ब्रदर्स	,,
सरूपचन्द हुकुमचन्द एण्ड को	,,
सोना कांदा बेलिंग कम्पनी	,,

कपड़ेके व्यापारी

नगरवासी कुण्डू भगवानगंज

गोपीनाथ पोद्दार निताईगंज
काशीनाथ वासीनाथ „
सचाई गोपीनाथ „

गल्लेके व्यापारी एवं आढ़तिया

आनन्द रामचन्द्र पाल भगवानगंज
कैलाशचन्द्र वृन्दकांत निताईगंज
जयगोविन्द देवेन्द्रचन्द्रराय चौधरी „
जगन्नाथ पूर्णचन्द्र साह „
जगन्नाथ जशोदालाल भगवानगंज
बंकबिहारी साह निताईगंज
मदनमोहन आशुतोष „
रजनीकांत राधाकांत „
रविदास नंदकुमार साह भगवानगंज
हरदेवदास गनेशनारायण „
हाइवाडी वृंदावन निताईगंज

जनरल मरचेंट्स

विपिन विहारी साह भगवानगंज

राधावल्लभ राधिकामोहन साह भगवानगंज

वर्तनोंके व्यापारी

ताराचन्द कुंजविहारीपाल भगवानगंज

तेलके व्यापारी

घनश्यामदास वैजनाथ निताईगंज
राधाकिशन श्रीनिवासदास „

इमारती लकड़ीके व्यापारी

मोतीलाल राधाकिशन टान बाजार

टीनके व्यापारी

भागचन्द दुलीचन्द सोनी बन्दर

बेंतके व्यापारी

मेसर्स गोपालराय सेवाराम

(देखो आसाम पेज नं०१६)

„ रामरिखदास गंगाप्रसाद

(देखो आसाम पेज नं०१६)

मैमनसिंह

यह स्थान ढाका जिलेका एक प्रधान स्थान है। यहा विशेषकर जूटहीका व्यापार है। इसी व्यापारके हेतु यहां अच्छी गतिविधी है। आसपासके देहातोंसे यहा नदी द्वारा माल आता है, और फिर नारायणगंज होता हुआ कलकत्ता जाता है। जूटकी खरीद करनेवाले कई व्यापारियोंकी यहां फर्मे स्थापित हैं। यह व्यापार प्रायः शहरसे २ मीलकी दूरीपर जूट आफ़िस नामक स्थानमें होता है। इसके अतिरिक्त यहां कपड़े एवं चद्दरका व्यापार भी बहुत अच्छा है।

मैमनसिंह नगर ए० बी० रेलवेके अपनेही नामके स्टेशनसे पास ही बसा हुआ है। इसकी बस्ती साधारण है। हा, नदीकी सीमा पासही आजानेसे इसकी सुन्दरता अवश्य बढ़ गई है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स कन्हैयालाल लोहिया एण्ड कम्पनी

इस फर्मके मालिक खास निवासी चुरूके हैं। इसका हेड आफिस कलकत्ता है। यहां करीब २५ वर्षों से यह फर्म काम कर रही है। इसके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी लोहिया हैं। आपका विशेष परिचय कलकत्ताके जूटके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है। यहा इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। इसका तारका पता 'Lohia' है।

मेसर्स चम्पालाल कोठारी

इस फर्मपर जूटकी खरीदी एवं गल्लेकी बिक्रीका व्यापार होता है। और भी कई स्थानोंपर इस फर्मकी शाखाएं हैं। जहा इसका पता जूट आफिस है, तारका पता Kothari है। इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके १६० पेजमें दिया गया है।

मेसर्स नेमीचंद हरकचंद राय विशनचंद बहादुर

इस फर्मके मालिक अजीमगंजके राजा विजयसिंहजी दुधेरिया बहादुर हैं। यह बहुत पुरानी एवं प्रतिष्ठित फर्म है। इसका हेड आफिस कलकत्तामें है। जहा इसका विस्तृत परिचय चित्रों सहित बैंकर्समें दिया गया है। यहा यह फर्म बैंकिंग और जमींदारीका काम करती है।

मेसर्स फतेचन्द चौथमल भिखमचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान राजलदेसर (बीकानेर) है। आप ओसवाल वैश्य जातिके योग्य सज्जन हैं। कलकत्तेमे इस फर्मको स्थापित हुए ७७ वर्ष हुए। इस फर्मकी स्थापना सेठ फतेचन्दजीके पुत्र पनेचन्दजीके द्वारा हुई थी। आप चार भाई थे। जिनके नाम क्रमशः बालचन्दजी, पनेचन्दजी, हीरालालजी तथा चौथमलजी था। आप चारों योग्य सज्जन थे। इस फर्मकी विशेष उन्नति चौथमलजीके द्वारा हुई। आपका स्वर्गवास संवत् १९४८ में हुआ। आपके पश्चात् इस फर्मका सञ्चालन श्री प्रतापमलजीने किया। वर्तमानमे आप तथा आपके भतीजे श्री भिखमचन्दजी इस फर्मके मालिक हैं। आपकी ओरसे राजलदेसर स्टेशनपर एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स फतेचन्द चौथमल करमचन्द १३ नारमल लोहिया लेन T. A. Better—यहां जूट, हैसियन, बैंकिंग तथा कमीशन एजेंसीका काम होता है।

रंगपुर—मेसर्स फतेचन्द प्रतापमल सम्पतमल—यहां पीतल, तांबा, कांसा आदिधातुओंके वर्तनोंका व्यापार होता है।

मैमनसिंह—फतेचन्द चौथमल मिर्जामल—यहां जूट,हुण्डी, चिट्ठी, सोना, चांदी और कमीशन एजेंसी का काम होता है।

नवाबगंज—श्रीसम्पतमल बोथरा—यहा भी बर्तनोंका काम होता है।

मेसर्स रामबगस जैनारायण

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना पोर्शनके १४३ पेजमें दिया गया है।

मेसर्स रामदयाल मालचन्द

यह फर्म यहा संवत् १६४८ से व्यापार कर रही है। इसके स्थापक बाबू रामदयालजी अपने मूल निवासस्थान लाडनू (जोधपुर) से यहां आये थे। यहा आकर आपने रामदयाल केशरीचन्दके नामसे फर्म स्थापित की थी। और अपनी व्यापार कुशलतासे अच्छी सम्पत्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त क। आपके तीन पुत्र हुए—बाबू छगनमलजी, मेघराजजी तथा चांदमलजी। आप तीनों भाई इस समय इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मैमनसिंह—रामदयाल मालचंद—यहा गल्लेका काम होता है।

कलकत्ता—रामदयाल माणकचंद १६।१।१ हरिसन रोड—यहा आढ़तका काम होता है।

सिरसा वाडी जूट कम्पनी

इसमें इस फर्मके वर्तमान संचालक मनसुखदासजी एवं कन्हैयालालजीका साझा है। यह फर्म यहां जूटका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय सिरसावाड़ीमें मनसुखदास लक्ष्मीनारायणके नामसे दिया गया है।

पाटके व्यापारी

आर०सिम कम्पनी	पाट आफिस
उदयचन्द अमोलकचन्द	"
एच० के० बैंक	"
कन्हैयालाल लोहिया	"
के० एम० साह	"
चम्पालाल कोठारी	"
जयकिशनदास मनसुखदास	"
जेसराज जयचन्दलाल	"
फतेचन्द चौथमल, मिरजामल	"
मेघराज छोगमल	"
रायली ब्रा,सं	"
राय एण्ड सेन	"
सेन एण्ड को०	"
सोहनलाल वेद	"

कपड़ेके व्यापारी

कैलाशचन्द्र दास	बड़ा बाजार
गिरीशचन्द चक्रवर्ती	"
नेमचन्द हरकचन्द राय बिशनचन्द बहादुर	"
वेगराज भंवरलाल	"
मुल्तानचन्द बिरदीचन्द	छोटा बाजार
महेन्द्रलाल सिंह	बड़ा बाजार
माणिकचन्द राधारमण दास	"
विन्दावन मंडल	बड़ाबाजार
विपिनविहारी दत्त	"
विहारीलाल अग्निहोत्री	"
संतोषचन्द चन्दनमल	"
सुखदेव खुशालचन्द तोपनीवाल	"
सुखलाल तोलाराम	छोटा बाजार
देवेन्द्रमोहन देवेन्द्रमोहनदास	बड़ा बाजार

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स कार्तिकचन्द्र साह	छोटा बाजार
" केसरीचन्द मांगीलाल	"
" पूर्णभगत गोपालराम	"
" रामदयाल मालचन्द	"
" रामदयाल भगराज	"
" हीरालाल किशनलाल	"

जनरल मरचेण्ट्स

" अब्दुल लतीफ	छोटा बाजार
" कार्तिकचन्द गणेशचन्द साह	"
" ट्रेडिंग कम्पनी	स्वदेशी बाजार
" मंगचन्द्र गजेन्द्रचन्द्र साह	छोटाबाजार
" यादवचन्द्र दे एण्ड सन्स	"

तेलके व्यापारी

" राधाकिशन श्रीनिवास (किरासन)

" घनश्याम बैजनाथ (मीठा)

सिराजगंज

आसाम बंगाल रेलवेके अपने ही नामके स्टेशनसे समीप ही यह स्थान है। इसके पास ही ब्रह्मपुत्र नदी बहती है। यहासे जगन्नाथगंज घाट द्वारा स्टीमरसे भी यात्रा कर सकते हैं। जगन्नाथ घाटसे सिराजगंज घाटतक स्टीमर सर्विस चलती है। यहाका प्रधान व्यापार जूटका है।
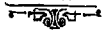
यहांसे करीब ५ लाख मन जूट प्रतिवर्ष बाहर जाता है। कपड़ा और गल्लेका व्यापार भी अच्छा है। यहां बस्ती बहुत साधारण एवं गरीब है।

सिरसावाड़ीके पास ही जमालपुर नामक स्थान है। आजकल यह स्थान भी जूटके व्यापारके लिये मशहूर है। यहासे भी करीब ४,५ लाख मन जूट प्रतिवर्ष बाहर जाता है। इधरके गांवोंकी बस्तीमें मकान प्रायः सब टीनके हुआ करते है। जमींदार लोगोंकी वजहसे धनिक लोग भी अपना पक्का मकान नहीं बना सकते।

मेसर्स जीतमल प्रेमचन्द

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। वहां करीब ७० वर्षोंसे यह फर्म काम कर रही है। इसके वर्तमान संचालक बा० प्रेमचन्दजी एवं जीतमलजीके चार पुत्र है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्ताके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटकी खरीदीका काम होता है। यहांका तारका पता Singhi है।

मेसर्स मनसुखदास लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान डीडवाना जोधपुरका है। आप माहेश्वरी जातिके मूंदड़ा सज्जन हैं। आपकी फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २० वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू मनसुखदासजी व्यापारकुशल एवं सज्जन व्यक्ति हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी अच्छी तरक्की हुई। वर्तमानमें आप व आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सिरसाबाड़ी—मनसुखदास लक्ष्मीनारायण—यहां बैंकिंग, धान, चांवल तथा तेलकी एजंसीका काम होता है।

सिरसाबाड़ी—सिरसावाड़ी जूट कम्पनी—यहां पाटका काम होता है। इसमें जयकिशनदासजीके पुत्र बाबू कन्हैयालालजीका साझा है।

जमालपुर—यहां श्रीसिरसावाड़ी जूट कम्पनीकी ब्राच है।

मैमनसिंह „ „ „ „ „

मेसर्स श्रीरामचन्द्र लछमनलाल

इस फर्मके मालिक लाडनू निवासी हैं। आप सरावगी जातिके जैन धर्मावलम्बी सज्जन

है। यह फर्म यहां ३० वर्षसे व्यापार कर रही है। इसके स्थापक श्रीरामचन्द्रजी है। इस समय आप व आपके भाई लछमनलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है--

सिरसावाड़ी—श्रीरामचन्द्र लछमनलाल—यहां पाट, धान, चावल, सरसों आदिका काम होता है।

मेसर्स हरिसिंह निहालचन्द

इस प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध फर्मके मालिक मुर्शिदाबादके निवासी है। आप ओसवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तामें नं० १ पोर्चुगीज स्ट्रीटमे है। यह फर्म कलकत्तेमे जूट बेलर्स एण्ड शीपर्समें बहुत प्रसिद्ध मानी जाती है। यहा जूट एवम बैंकिंगका व्यापार होता है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्ता विभागके जूटके व्यापारियोंमें दिया गया है।

पाटके व्यापारी

मेसर्स आर० सिम एण्ड को०
" कन्हीराम पदमसुख
" कॉपरेटिव्ह जूट सोसाइटी
" चित्तगाव कम्पनी
" जीतमल प्रेमचन्द
" प्रेमसुख बिरदीचन्द
" रायली ब्रदर्स
" लंदन क्लार्क
" सिरसावाड़ी जूट कम्पनी
" श्रीराम लछमनलाल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स प्यारीमोहन राधिकामोहन पोद्दार
" रंगलाल हरलाल साह
" शशीरानी मथुरामोहन सेन

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स जतीन्द्रमोहन गनीन्द्रमोहन साह
" नेतूलाल मेवलाल साह
" प्रेमसुख बिरदीचन्द
" मनसुखदास लक्ष्मीनारायण
" मातादीनराम हीरालाल
" वेनीमाधवराम भैरूप्रसाद
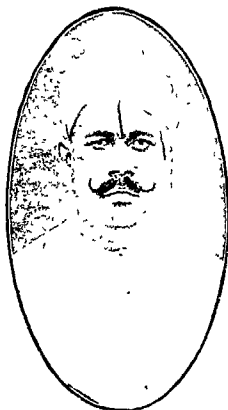
बा० मनसुखदासजी मूंदड़ा, सिरसाबाड़ी

बा० लक्ष्मीनारायणजी मूंदड़ा, सिरसाबाड़ी

राय उपेन्द्रनाथ बहादुर, चटगांव

बा० रामगौर चौधरी (रामकमल रामवर) चटगांव

चटगांव

यह नगर कर्णफुली नदीके तटपर बसा हुआ है। योंतो बहुत पुराने समयसे यह स्थान व्यापारकी दृष्टिसे महत्वका माना जाता था। पर आसाम बंगाल रेलवे लाइनके खुल जानेसे आसाम और उत्तर पूर्वीय वङ्गालके व्यापारका यह प्रधान बन्दर माना जाने लगा है। आजकल जूट, चाय, चावल धान आदिका एक्सपोर्ट यहासे बहुत होता है। चाँदपुर और नारायणगंजसे जूटकी गांठें यहां आती है। और सीधे विदेश भेज दी जाती है। आसाम वङ्गाल रेलवेके किनारेवाले चाय बगीचोंकी चाय भी इसी बन्दरसे विदेश रवाना की जाती है। विदेशसे यहा आनेवाले इम्पोर्ट मालमें नमक प्रधान है। इसके अतिरिक्त चाय बगीचोंमें काम आनेवाली मशीनरी, टीनकी चादरें और रेलवेका सामान भी विदेशसे आता है।

इस बंदरमें ४ जेठी है जो रेलवे कम्पनीकी है और जिनमें माल चढ़ाने उतारनेके लिये क्रेन मशीनोंकी सुविधाका सम्बन्ध हैं। रेलवेके सात शेड भी है जिनमें चायके बक्स, जूटकी गाठें, चावलके बोरें आदि स्टोर किये जाते हैं मिट्टीके तेलके व्यवसायकी सुविधाके लिये तेल लाने और ले जानेवाले जहाजोंके लिये भी अच्छा सुप्रबन्ध है। जहाजोंकी मरम्मतकी भी सुविधा है।

यहाकी प्रधान व्यापारिक संस्था चटगांव चेम्बर आफ कामर्स है। इसकी स्थापना १९०६ ई० में हुई थी। यह दो व्यापारियोंके बीचका व्यापार सम्बन्धी झगड़ा भी निपटाती है।

यहांके व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहा

इस फर्मके मूल संस्थापक बाबू रामकमल शाहाने आजसे लगभग सौ वर्ष पूर्व चटगाव आकर मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहाके नामसे यह फर्म स्थापित की। उस समयसे यह फर्म निरन्तर दृढ़तासे व्यवसाय करती जा रही है। और चटगांवमें महाजनी व्यवसाय करनेवाली भारतीय फर्मोंमे इसका स्थान बहुत ऊंचा माना जाता था।

यों तो यह फर्म सभी प्रकारका व्यवसाय करती है पर प्राइवेट बैंकिङ्ग; सामान्य प्रकारकी वस्तुओंका व्यवसाय; धान, चावल, रूई, लोहा (Corrogated iron), शक्कर नमक, तम्बाकू, मीठा तेल आदिका काम विशेषरूपसे है। उपरोक्त व्यवसायके अतिरिक्त बर्मा आइल कम्पनीकी सोल ऐजेंन्सी चटगांव और नोआखालीके जिलोंके लिये इसी फर्मके हाथमें है। इसी प्रकार ११ जिलोंके लिये यह फर्म स्वीडिश मैच कम्पनी नामक दियासलाईकी कम्पनीकी सोल एजेन्ट है।

इस फर्मके वर्तमान मालिकोंके नाम इस प्रकार हैं। बाबू मथुरामोहन चौधरी, बा० अमरकृष्ण चौधरी, बाबू लालमोहन चौधरी, बाबू हरिदास चौधरी, बाबू कामिनी कुमार चौधरी, बाबू अश्विनीकुमार चौधरी, बाबू चन्द्रकुमार चौधरी, तथा बाबू श्रीशचन्द्र चौधरी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

१ चटगाव—मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहा सदर घाट T. A. Ram—यहाँ फर्मका हेड आफिस है। तथा बैंकिङ्गका बहुत बड़ा काम होता है।

२ चटगाव—मेसर्स रामकमल रामवल्लभ शाहा नमूना बाजार—यहा दियासलाईकी ऐजेन्सीका हेड आफिस है और धान, चावल, गल्ला माल तथा लकड़ीका काम होता है। यहा एक्सपोर्ट तथा इम्पोर्टका काम भी है।

३ चटगाव—मेसर्स मथुरामोहन महेशचन्द्र चौधरी खतनगंज—यहा स्थानीय खपतका काम होता है। तथा सभी प्रकारका व्यवसाय है।

इसके अतिरिक्त चटगाव मुफस्सिलमें आपकी तीन दुकानें है तथा बासपर (नोआखोली) राजूमियां बजार और गुनवती इन स्थानोंपर भी आपकी फर्मे स्थापित हैं। कलकत्तेमें मेसर्स मथुरा मोहन चौधरीके नामसे ६७।४४ स्ट्राण्ड रोड पर आपकी दुकान है। जहां तम्बाकू और आर्डर सप्लाय का काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान तो नावणी जिला हिसार है। पर गत २० वर्षोंसे आप लोग सीकर (जयपुर स्टेट) में रहते हैं। आप लोग माहेश्वरी वैश्य जातिके सोमानी सज्जन हैं। लगभग ५० वर्ष पूर्व इस परिवारके पूर्व पुरुष सेठ मोतीलालजी सोमानीने मेसर्स लक्ष्मी-नारायण रामविलासके नामसे बर्माके अकयाब नामक प्रसिद्ध बन्दरमें इस फर्मकी स्थापनाकी। जहा आज भी इस फर्मके कारबारका हेड आफिस है। आरम्भमें इस फर्मपर कपड़ा और गल्लेका काम होता था पर वर्तमानमें सभी प्रकारका ऊंचा व्यापार होता है।

इस फर्मके मालिकोंने सीकर रेलवे स्टेशनपर १ लाखसे अधिककी रकम से एक धर्मशाला बनवायी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बृजलालजी सोमानी, सेठ लक्ष्मीनारायणजी सोमानी तथा स्व० सेठ मोतीलालजीके पुत्र बाबू गुलाबचन्दजी और बाबू सागरमलजी, स्व० सेठ रामविलासजीके पुत्र बाबू मदनलालजी, स्व० प्रेमसुखजीके पुत्र बाबू रामप्रसादजी और रामनिवासजी है। सेठ बृजलालजी हेड आफिसका काम देखते हैं हैं

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

अकयाव—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास तारका पता—Nadriwalla—यहां फर्मका हेड आफिस है तथा धान, चावल, सोना, चांदी, कपड़ा, सूत और बैंकिंगका काम होता है। अकयाब जिलाके लिये वर्मा आइल कम्पनीकी सोल एजेंसी भी इसके पास है।

कलकत्ता—मेसर्स रामविलास रामनारायण १६२ क्रास स्ट्रीट T. A. Gold Silver—यहां कपड़ेकी चलानीका काम होता है।

रंगून—मेसर्स मोतीलाल प्रेमसुखदास ६३६ मर्चेण्ट स्ट्रीट तारका पता Somani—यहां बैंकिंग और धान चावलके शिपमेंटका काम होता है।

चटगांव - मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास लामा बाजार और स्ट्राण्ड रोड T. A. Nadriwalla—यहां बैंकिंग, धान चावलका बहुत बड़ाकाम होता है।

सॉडवे—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामविलास तारका पता Nadriwalla—यहां धान, चावलका बहुत बड़ा काम होता है। यहा इस फर्मका लकड़ीका एक कारखाना है। रेलवे कण्ट्राक्ट और इमारती लकड़ी सप्लाईका काम भी होता है।

खुलना—मेसर्स रामविलास रामनारायण—यहां जूटका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण जोखीराम

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुरमें) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके जालान सज्जन हैं। यह फर्म यहा करीब ३० वर्षोंसे व्यवसाय कर रही है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लक्ष्मीनारायणजी तथा सेठ जोखीरामजी हैं। आप ही इसके संस्थापक हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

चटगांव—मेसर्स लक्ष्मीनारायण जोखीराम लामा बाजार—यहां चीनी, गल्ला और किरानेका बड़ा व्यापार होता है। यह फर्म चीनीका डायरेक्ट इम्पोर्ट करती है। महाजनीका काम भी होता है।

कलकत्ता—मेसर्स रामजसराय आसाराम १७३ हरिसन रोड—इस फर्मके द्वारा चीनी, किराना आदिकी खरीदी कर चटगांवकी फर्मको माल भेजा जाता है।

चांदपुर

यह ब्रह्मपुत्र नदीके किनारेपर बसा हुआ एक अच्छा नदी बंदर है। यहासे नारायणगंज, ग्वालंदो, कलकत्ता आदि स्थानोंको स्टीमर जाते हैं। यह आसाम बंगाल रेलवेका स्टेशन है। ब्रह्मपुत्र होनेके कारण रेलवे यहीं रुक जाती है। यहाके मकान प्रायः चद्दर और बांसके बने होते है।

चांदपुरके आसपास सुपारी बहुतायतसे पैदा होती है इसके पास ही चौमुहानी नामक सुपारीकी प्रसिद्ध मंडी है। यहासे बाहर बहुत सुपारी भेजी जाती है।

इसके सिवाय यहा नावों द्वारा आसपासके देहातोंसे जूट आकर बिकता है। यहाके व्यापारी जूट खरीदकर कलकत्ता भेज देते है। मतलब यह है कि चादपुरसे सुपारी व जूट बाहर जाता है तथा कपड़ा गल्ला आदि बाहरसे आकर बिकता है।

मेसर्स कन्हैयालाल शिवदत्तराय

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। यहा यह फर्म दुकानदारी एवम सुपारीका व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके कमीशनके काम करनेवालोंमें दिया गया है। इसके वर्तमान मालिक बाबू कन्हैयालालजी है।

मेसर्स गोवर्धनदास चोथमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान सीकर (जयपुर स्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके गोयल सज्जन है। आजसे लगभग १७ वर्ष पूर्व सेठ गोवर्धनदासजीने इस फर्मकी स्थापना चादपुरमे की थी। प्रारम्भमें इस फर्मपर गल्ला, चीनी, मैदा तथा तेलका व्यापार आरम्भ हुआ जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गोवर्धनदासजी तथा आपके पुत्र बाबू शिवरामदासजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

चांदपुर—मेसर्स गोवर्धनदास चौथमल—यहा गल्ला, चीनी, मैदा और तेलकी थोक बिक्रीका काम होता है और प्राइवेट बैंकिङ्गका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गोवर्धनदास चौथमल ७३ सूतापट्टी—यहा सूतका व्यापार होता है।

मेसर्स जयनारायण मथुरालाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान फतेपुर सीकर (जयपुर स्टेट) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके सराफ सज्जन हैं। गत सम्वत् १९६६ में इस फर्मकी स्थापना सेठ जयनारायणजी तथा आपके भाई मथुरालालजीने चांदपुरमें की थी।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मथुरालालजी बाबू मोतीलालजी (स्व० जयनारायणजीके पुत्र) तथा सेठ मथुरालालजीके पुत्र बाबू चौथमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

चांदपुर—मेसर्स जयनारायण मथुरालाल—यहां आढ़तका बहुत बड़ा काम होता है।

चौमुहानी—(नोआखाली जि०) मेसर्स जयनारायण मथुरालाल—यहां केवल सुपारी पैदा होती है और इसीकी आढ़तका बहुत बड़ा काम यहां होता है। यह फर्म देसावरोंकी खरीदी कर सीधा माल उन्हें भेजती है।

मेसर्स सूरजमल नागरमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सूरजमलजी जालान एवम नागरमलजी बाजोरिया हैं। आप अग्रवाल वैश्य हैं। कलकत्तेमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसका हनुमान जूट मिल नामक एक प्राइवेट मिल भी है। इसका विशेष परिचय कलकत्तेके मिल ऑनर्समें दिया गया है। यहा यह फर्म जूटका व्यापार करती है।

फरीदपुर

यह नगर बंगाल प्रान्तमें है। यह बंगालके प्रधान जूट केन्द्रोंमें माना जाता है। बंगालके जूट केन्द्रोंमें प्रायः देखा जाता है कि वहांके स्थानीय व्यापारी कलकत्तेके जूट व्यवसायियोंसे फसलमें अपना व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। फलतः कलकत्तेके व्यवसायियोंकी ओरसे जूट केन्द्रोंमें प्रबन्ध किया जाता है। और वहां कुछ ऐजेन्ट भी फसलपर पहुंच जाते हैं। वहांके स्थानीय व्यापारी जूट बोनेवालोंको आरम्भमें ही आर्थिक सहायता दे रखते हैं अतः फसलपर वे लोग इन्हीं व्यापारियोंके हाथ अपना जूट बेच देते हैं। स्थानीय व्यापारी कलकत्ते वालोंकी आर्थिक सहायतासे उनके ऐजेन्टोंकी उपस्थितिमें जूट खरीदते और गाठ बांध २ कर माल कलकत्ते वाले

व्यापारीकी फर्मपर भेजते हैं। कलककेत्ते जूट व्यवसायी यहाकी मिलोंसे पहिले ही कण्ट्राक्ट कर रखते हैं। ज्योंही जूट आना आरम्भ हुआ कि गांठ बाध २ कर ये लोग कण्ट्राक्टका माल सप्लाई करते है। इस प्रकार जूट केन्द्रोंके स्थानीय व्यापारियोंके पारस्परिक सहयोगसे कलकत्तेके जूट व्यवसायी अपनी फर्में जूट केन्द्रोंमें खोलकर जूटकी खरीदीका काम करते है। यही प्रधान कारण है कि जूट केन्द्रोंमें वहाके स्थानीय व्यापारी तो प्रायः प्रकट रूपमें नहीं देखेंगे पर कलकत्तेके व्यापारियोंकी फर्में अवश्य ही मिलती हैं। इसी लिये फरीदपुरके जूट व्यापारियोंका हम नाम नीचे दे रहे हैं इनका इच्छित परिचय कलकत्ता विभागमें मिलेगा।

१ मेसर्स नौरंगराय नागरमल—फरीदपुर, हेड आफिस—४३ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

२ मेसर्स डालूराम गोरानमल—फरीदपुर, हेड आफिस १७८ हरिसन रोड कलकत्ता।

३ लक्ष्मीनारायण रामकुमार—फरीदपुर, हेड आफिस ४३, ४४ काटन स्ट्रीट कलकत्ता।

४ मेसर्स गणपतराय मुरलीधर—फरीदपुर, हेड आफिस १७८ हरिसन रोड कलकत्ता।

ग्वालंदो

यह ग्राम ईस्टर्न बंगाल रेलवेकी इसी नामकी स्टेशनके पास बसा हुआ है। ब्रह्मपुत्र नदीके किनारे बसा होनेसे रेलवे यहींतक जा सकती है। यहासे चांदपुर स्टीमर जाता है इस ग्रामके मकान टीनके बने हुए हैं। जब ब्रह्मपुत्रमे पानी बढ जाता है तब ग्रामके लोग एक स्थानसे उठकर दूसरे स्थानपर अपने मकान बना लेते है। ब्रह्मपुत्रका बहाव अनिश्चित रहता है यह कभी एक तरफ और फिर कभी दूसरी तरफ बहने लग जाता है। इसलिये ग्राम भी कभी यहा तो कभी वहा बस जाता है। ग्रामकी निश्चित स्थिति न होनेसे कोई पक्के मकान नहीं बनाते। चद्दरका मकान बना लेते हैं। यहाके मकानोंके नींव नहीं होती इनके नीचे मजबूत लकड़िया गाड़कर उसीपर मकान बना लेते हैं। जिससे पानी भरा रहनेपर भी मनुष्य मकानोंमे सो सकते है। यह हालत यहींकी नहीं वरन ब्रह्मपुत्रके किनारेपर बसे हुए करीब २ सभी ग्रामोंकी है।

ग्वालंदो कई हिस्सोंमें विभक्त है जैसे ग्वालंदो नंबर १ नंबर २ इत्यादि। इतने हिस्से होनेका एकमात्र कारण ब्रह्मपुत्रका अनिश्चित प्रवाह ही है। यहापर विशेषकर जूटका व्यवसाय है। आसपासके ग्रामोंसे नावोंमें जूट आता है व्यापारी उसे खरीदकर कलकत्ता भेज देते है। कपड़ा गल्ला आदि बाहरसे यहा आकर बिकता है। यह स्थान जूटकी अच्छी मंडी माना जाता है।

मेसर्स अर्जुनदास द्वारकादास

इस फर्मका हेड आफिस कुस्टियामें हैं। वहां यह फर्म ५० वर्षसे स्थापित है। इसके वर्तमान मालिक अर्जुनदासजी तथा आपके भतिजे हरिरामजी और किशनदयालजी हैं। इस फर्मका विशेष परिचय कुस्टियामें दिया गया है। यहां यह फर्म जूटका व्यापार करती है।

मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द चोपड़ा

इस फर्मके मालिक बाबू दानचन्दजी चोपड़ा हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी और भी शाखाएं हैं। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १३६ में दिया गया है। यहां इस फर्मपर जूटका व्यापार होता है। यह फर्म यहां सबसे बड़ी मानी जाती है।

मेसर्स गणेशदास सागरमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान नवलगढ़ (जयपुरस्टेट) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके पारोदिया सज्जन हैं। यह फर्म यहा करीब ३५ वर्षोंसे स्थापित है। इसके स्थापक सेठ गणेशमलजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सागरमलजी तथा आपके पुत्र बाबूलालजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

ग्वालन्दो (जि० फरीदपुर) मेसर्स गणेशदास सागरमल यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां आढ़तका बड़ा काम होता है। यहा ग्वालन्दोके लिये आपके पास वर्मा आइल कम्पनीकी एजेन्सी है।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास जगन्नाथ १७१ हरीसन रोड—यहां कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स मालमचंद सूरजमल

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्ता है। यहा यह फर्म जूटकी खरीदी, आढ़त एवम् बैंकिंग व्यापार करती है। इसका विशेष परिचय इसी ग्रन्थके प्रथम भागमें राजपूताना विभागके पेज नं० १६६ में दिया गया है।

मेसर्स हीरानन्द बालाबक्स

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बालाबक्सजी, आपके भाई अनन्तरामजी और आपके पुत्र बाबू चिमनलालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके रतननगर निवासी सज्जन हैं। करीब ७ वर्षसे यह फर्म यहां स्थापित है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स हीरानन्द बालाबक्स १७१ ए हरिसन रोड—यहां हेड आफिस है और कपड़ेकी आढ़तका बहुत बड़ा काम होता है।

ग्वालन्दो (जि० फरीदपुर) मेसर्स हीरानंद बालाबक्स ग्वालन्दो घाट—यहा ब्राच आफिस है। यहा धान, चावल, तथा जूटकी आढ़तका बहुत बड़ा काम होता है। नं० ६ ग्वालन्दो बाजारमें इस फर्मका जूट प्रेस है।

जूट और गल्लेके व्यापारी

२ मेसर्स बद्रीदास मोतीलाल—ग्वालंदो, हेड० आ० ४६ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता
३ मेसर्स शंकरमल राधाकिशन—ग्वालन्दो, हेड० आ० ४६ स्ट्रायड रोड कलकत्ता
४ मेसर्स गजानन्द ज्वालादत्त—ग्वालन्दो, हेड० आ० ४३, ४४ काटन स्ट्रीट कलकत्ता
५ मेसर्स लक्ष्मीनारायण महादेव—ग्वालन्दो, हेड आफिस ४६ स्ट्रायड रोड कलकत्ता
६ मेसर्स मालमचंद सूरजमल—ग्वालन्दो, हेड० आ०—बैंक बाजार कलकत्ता
७ मेसर्स रतनचंद जौहरीलाल—ग्वालन्दो, हेड० आ० १६ सेनागाग स्ट्रीट कलकत्ता
८ मेसर्स गेवरचन्द दानचन्द—ग्वालन्दो, हे० आ० २ राजा वडमण्ड स्ट्रीट कलकत्ता

वर्द्धमान

वर्द्धमान इस्ट इण्डिया रेल्वेकी हवड़ा देहली मेन लाईनका अच्छा शहर है। यह कलकत्ते से '७ मीलकी दूरीपर स्थित है। यहांके व्यापारका विशेष सम्बंध कलकत्तासे है। इसकी बसावट बहुत घड़ी एवम लम्बी है। प्रधान व्यापार चावल, तेल एवम धानका है। यही यहांसे बाहर जाते हैं। चावल एवम तेलके यहा कई मिल हैं।

यहांके चावलोंमे रामदयालदेके मिलका चावल बहुत प्रसिद्ध है। यहांसे इन्दौर प्रभृति सेन्ट्रल इण्डियाके शहरोंतक चावल जाता है। यहांके व्यापारियोंकी सुविधाके लिये कलकत्ते और यहांके बीच कई ट्रेनें दौड़ती हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स तिलोकचन्द मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लाडनू (जोधपुर) है। आप ओसवाल जातिके भूतोडिया सज्जन हैं। बर्दमानमें यह फर्म बहुत पुरानी है। इसकी स्थापना करीब १२० वर्ष पूर्व हुई थी। इसकी स्थापना सेठ गंगारामजी भूतोड़िया द्वारा हुई। गंगारामजीके तीन पुत्र थे। श्रीतिलोकचन्दजी, छोटूलालजी तथा बींजराजजी। यह फर्म इनमेंसे सेठ तिलोकचन्दजी की है। सेठ तिलोकचन्दजीके भी तीन पुत्र हुए। श्रीनेमीचन्दजी, हजारीमलजी तथा मोहनलालजी। उपरोक्त फर्म सेठ मोहनलालजीकी है। आप बड़े व्यापार दक्ष पुरुष थे आपका स्वर्गवास संवत् १९७७ में हो गया।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मोहनलालजीके पुत्र जैचन्दलालजी हैं। आपके भाई श्री खेमचन्दजीका स्वर्गवास हो गया है। आपके विजयचन्दजी एवम महालचंदजी नामके दो पुत्र हैं

जैचन्दलालजीके पुत्रका नाम श्रीरावतमलजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्दमान—मेसर्स तिलोकचन्द मोहनलाल—यहां आपकी जमींदारी है। तथा बैंकिङ्ग बिजनेस होता है।
राजशाही—मेसर्स मोहनलाल जैचन्दलाल ,, ,,

मेसर्स बनवारीलाल पांजा

इसफर्मके मालिक यहींके मूल निवासी हैं। आप बंगाली उग्र क्षत्रिय सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब २५ वर्ष हुए। इसका स्थापन बाबू बनवारीलालजी पांजाने किया। इस फर्मकी उन्नति भी आपहीके हाथोंसे हुई। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू बनवारीलालजीके पुत्र बा० शतीन्द्रनाथ पांजा, बाबू प्रफुल्लकुमार पांजा, और बाबू राधेश्याम पाजा हैं। आप सब लोग अपनी फर्मका संचालन करते हैं। इस फर्मकी यहा अच्छी प्रतिष्ठा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

वर्द्धमान—मेसर्स बनवारीलाल पांजा (T. A. "Panja) यहां बैंङ्किग, जमींदारी, चांवलका एक्सपोर्ट व सरसों गल्ला आदिके इस्पोर्टका काम होता है।

कटवा (वर्द्धमान)—यहां भी उपरोक्त व्यापार होता है

कलकत्ता—मेसर्स बनवारीलाल पांजा २९ धर्मांहटा स्ट्रीट-नमक, चीनी, खली आदिका व्यपार होता है।

मेसर्स भैरोंबक्स लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके मालिक सतनाली (नारनौल) के निवासी हैं। आप खंडेलवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहां ५० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक सेठ बक्षीरामजी हैं। आपहीके हाथोंसे इसकी तरक्की हुई है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बक्षीरामजी तथा आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी और डूंगरी निवासी बाबू भैरोंबक्सजी हैं।

आपकी ओरसे डूंगरी तथा रेनवालमें एक २ धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धमान—मेसर्स भैरोंबक्स लक्ष्मीनारायण T.A Bakshiram—यहां गल्लेका और खासकर चांवलकी आढ़तका काम होता है।

बोलपुर—मेसर्स भैरोंबक्स लक्ष्मीनारायण—यहां धान चावलका काम होता है।

मेसर्स बेनीप्रसाद भगत रामस्वरूपराम

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान बलिया जिलामें है। आप बनिया बारुत जातिके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक बेनीप्रसाद भगत हैं। आपहीने यहां शुरूमें कारबार शुरू किया। आपके ६ पुत्र हैं। जिनकी फर्में वर्तमानमें अलग २ व्यवसाय कर रही हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू रामस्वरूपरामजीके पुत्र बाबू अवधबिहारी भगत हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

वर्द्धमान मेसर्स बेनीप्रसाद भगत रामस्वरूपराम—यहां सब प्रकारकी आढ़तका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी और आढ़तिया

भैरोंबक्स लक्ष्मीनारायण
बनवारीलाल पाजा
रामचन्द्र मदनलाल
मुरलीधर नारायणप्रसाद
बेनीप्रसाद शिवप्रसाद
बेनीप्रसाद अवधबिहारी
बेनीप्रसाद बालेश्वर

कपड़ेके व्यापारी

रामजीदास भगवानदास
लादूराम बद्रीनारायण
हरनंदराय बालमुकुन्द

सराफ व बैंकर्स

गंगाराम तिलोकचंद
तिलोकचन्द मोहनलाल
गंगाराम छोटेलाल
तिलोकचन्द नेमचन्द

रानीगंज

रानीगंज कोयलेकी खानोंके लिये भारतमें प्रसिद्ध है। भारतके भूगोलमें इसका वर्णन मिलता है। यह शहर ईस्ट इण्डियन रेलवेकी इसी नामकी स्टेशनसे समीप ही बसा हुआ है। यहां मारवाड़ियोंकी कई अच्छी २ इमारतें बनी हुई हैं।

यहांसे कोयला एवम लोहा खानोंसे निकालकर भेजे जाते हैं। इसके आसपासके देहातोंमें धान पैदा होता है। यहां राइस मिल है जिनमें धानका चावल बनाकर यहांसे बाहर भेजा जाता है। शेष गल्ला, कपड़ा आदि सब वस्तुएं बाहरसे आकर यहां बिकती हैं।

यहांपर तिलक पुस्तकालय नामक संस्था है इसमें ५३०० पुस्तकें हैं। इनमें अधिकतर हिन्दी है। इस पुस्तकालयमें ५३ हिन्दी ४ बंगला और १ इंग्लिश पत्र आते हैं। तिलक स्मृतिमें यह पुस्तकालय सन् १६२० में खोला गया है। इसके कार्यकर्त्ता सुयोग्य होनेसे इसकी अच्छी उन्नति हुई है।

यहा मारवाड़ी सनातन विद्यालय है। इसमें १२५ विद्यार्थी पढ़ते है। इसमें मिडिल क्लासतक पढ़ाई होती है। इस विद्यालयके सिवाय यहां सावित्री पाठशाला है। इसमें करीब ६० लड़कियां पढ़ती है। इसमें अपर प्राइमरी तक पढ़ाया जाता है। ये दोनों विद्यालय हिन्दीके हैं।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गौरीदत्त छोटेलाल

इस फर्मके मालिक फतेपुरके (सीकर) मूल निवासी है। आप अग्रवाल जातिके गनेड़ीवाला सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब ८० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू गौरीदत्तजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

इस समय बाबू छोटेलालजी और बाबू बनारसीलालजी इस फर्मका संचालन करते हैं

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—गौरीदत्त छोटेलाल—यहा आपका आइल मिल है। तथा बेङ्किंग और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जानकीदास हरिप्रसाद

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके मित्तल गोत्रीय सज्जन है। इसके स्थापक बाबू सीतारामजी ३५ वर्ष पहिले मलसीसर (जयपुर) से यहां आये। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ सीतारामजीके पुत्र बाबू बनारसीलालजी, जानकीलालजी के पुत्र मोहनलालजी, शिवदत्तरायजीके पौत्र भिखारामजी और कालूरामजीके पुत्र प्रल्हादरायजी हैं। सीतारामजी, जानकीलालजी, शिवदत्तरायजी और कालूरामजी सब भाई हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—जानकीदास हरिप्रसाद—यहां गल्ला और आढ़तका काम होता है।

दुबराजपुर—(बीरभूमि) सीताराम प्रल्हादराय—यहां चावल और आढतका काम होता है।

सूरजगढ़ (मुंगेर) सुखदेवदास सीताराम—यहां बैंकिंग और जमींदारीका काम होता है।

अभयपुर (मुंगेर) सुखदेवदास कृष्णराम—यहां बैंकिंग और जीमींदारीका काम होता है।

मेसर्स महादेवलाल रामनिवास बजाज

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिक सीकरके (जयपुर) मूल निवासी हैं। आपने अग्रवाल वैश्य जातिमें जन्म ग्रहण किया है। इस फर्मके स्थापक बाबू महादेव लालजी देशसे कलकत्ता आये और वहीं अपना व्यापार प्रारम्भ किया। आपने अपनी व्यापार कुशलता एवं मेधावी शक्तिसे व्यापारमें अच्छी सम्पत्ति पैदाकी। करीब ४० वर्ष पहले आपने महादेवलाल मिलके नामसे यहां एक तेलकीमिल खोली। जो अभी तक सफलता पूर्वक चल रही है। इस फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू महादेवलालजीके पुत्र बाबू रामनिवासजी हैं। आप मिलनसार एवम सज्जन व्यक्ति है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—मेसर्स महादेवलाल रामनिवास—यहां बैंकिंग, आढत और तेलका व्यापार होता है। यहां आपकी एक तेलकी मिल भी है।

मेसर्स विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडावा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके झूंझनू वाला सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब १०० वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू बलदेवदासजी तथा आपके भाई मंगलचन्दजी थे। उस समय इस फर्मपर मंगलचन्द बलदेवदास नाम पड़ता था। बाबू बलदेवदासजीके तीन पुत्र हुए। जगन्नाथजी, विसेश्वरलालजी और केदारनाथजी। भाइयोंमें हिस्सा हो जानेसे करीब ८ सालसे यह फर्म उपरोक्त नामसे व्यवसाय कर रही है

बा० रामविलासजी बजाज (महादेवलाल रामविलास)
रानीगंज
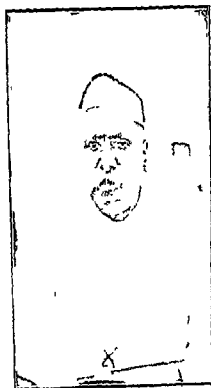
बा० विसेश्वरलालजी (विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद)
रानीगंज

बा० लक्ष्मीनारायणजी (मंगीचन्द लक्ष्मीनारायण)
वर्द्धमान

बा० बद्रीप्रसादजी (विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद)
रानीगंज

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू विसेश्वरलालजी तथा उनके पुत्र बाबू गोकुलचन्दजी और केदारनाथजीके पुत्र बाबू बद्रीप्रसादजी हैं।

बाबू बद्रीप्रसादजी स्थानीय म्युनिसिपैलिटीके मेम्बर हैं। आप देशभक्त एवं स्वदेशी व्रत-धारी हैं। आप स्थानीय तिलक पुस्तकालयके प्रेसिडेण्ट हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रानीगंज—विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद —T. A Bisseswarlall यहा बेंकिंग, गल्ला, सीमेण्ट, इमारती लकड़ी और कोयलेका व्यापार होता है। यहा आपकी तेल और चावलकी मिल है और कोयलेकी खदान हैं।

रानीगंज—श्री लक्ष्मी भण्डार, बद्रीप्रसाद गोकुलचन्द—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—बलदेवदास विसेश्वर लाल—७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T No 740 BB—यहां बेंकिंगका काम होता है—

आसनसोल—विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद—यहा बैंकिंग तथा लकड़ीका काम होता है।

मेसर्स वासुदेव केदारनाथ

इस फर्मके मालिक फतेपुर निवासी बाबू बासुदेवजी, मंडावा निवासी बाबू केदारनाथजी तथा मदनलालजी हैं। आप तीनों अग्रवाल हैं। आप तीनोंका उपरोक्त फर्ममें साझा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

रानीगंज—मेसर्स वासुदेव केदारनाथ—यहा तेल, गल्ला, सिमेण्ट तथा चालानीका काम होता है। इसकी एक शाखा युवराजपुर (वीरभूमि) में है।

कलकत्ता—बस्तीराम द्वारका प्रसाद, ४ बेहरापट्टी—यहां कपड़ेकी चालानीका काम होता है। इसमे वासुदेवजी तथा केदारनाथजीका साझा है।

बेंकर्स	कपड़ेके व्यापारी
इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमिटेड (सब एजन्सी)	मेसर्स ईसरदास वंशीधर
	„ चुन्नीलाल शङ्करदास
मेसर्स विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद	„ धीरेन्द्रनाथ नन्दी

मेसर्स नगेन्द्रनाथ दे
„ बिहारीलाल बाबूलाल
„ सोजीराम शिवनारायण

कोयलेके व्यापारी

मेसर्स एन० सी० डुलई
„ चन्द्रमल इन्द्रकुमार
„ देवीदत्त कालूराम
„ बिहारीलाल सराफ
„ बजरंगलाल बनवारीलाल
„ भगवानदास खेतान
„ मदनलाल झूमनुवाला

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स केशवराम गोपीराम
„ गणेशदास मथुरादास
„ गौरीदत्त छोटेलाल

मेसर्स जानकीदास हरिप्रसाद
„ प्रल्हादराय नागरमल
„ पूरणमल रामेश्वर
„ बद्रीदास आनन्दीलाल
„ बन्शीधर सूरजमल
„ वासुदेव केदारनाथ

बर्तनके व्यापारी

जालीराम सुपडामल
हरचन्दराय जोधाराम

तमाखूके व्यापारी

अब्दुल रहमान

बीड़ीके व्यापारी

अब्दुल रहमान
गोपीराम काशीराम

शामाखा

सागरमल बीड़ी मरचेण्ट

आसनसोल

यह ईस्ट इण्डियन रेलवेका बहुत बड़ा जंकशन है। यहाँ पर रेलवेका बहुत बड़ा कारखाना है इसी कारखानेके कारण यहा मजदूर लोग बहुत संख्यामे रहते हैं। ग्राम स्टेशनके पासही बसा हुआ है। यहाका खास व्यापार कोयलेका है। लोहा भी यहा पाया जाता है। यहाका कोयला अच्छा होता है एवम बहुत तादादमें बाहर जाता है। इसके अतिरिक्त कपड़ा, गल्ला, किराना आदि बाहरसे यहां आकर बिकते हैं। इनका भी यहा अच्छा व्यापार होता है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

श्रीदुर्गा स्टीलट्रंक फेक्टरी

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके पोद्दार सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस यहाकर है। इस फर्मको यहा बाबू दुर्गादत्तजीने स्थापितकी। इस समय आपही इस फैक्टरीका संचालन करते हैं। आप बिसाऊके (जयपुर) निवासी हैं। आपके पिताकानाम मूंगीलालजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आसनसोल—श्रीदुर्गा स्टीलट्रंक फेक्टरी—यहां कुरसी, स्टील ट्रङ्क, सूटकेस वगैरह बनते और बिकते हैं।

आसनसोल—इम्पीरियल स्टील ट्रङ्क हाउस—यहां स्टील ट्रङ्क सूटकेस आदि बिकते हैं।

पूर्लिया—मेसर्स मूंगीलाल दुर्गादत्त—यहां उपरोक्त काम होता है।

पूर्लिया—बिहार स्टील ट्रङ्क हाउस—यहां भी उपरोक्त काम होता है

बराकड़—मेसर्स मूंगीलाल दुर्गादत्त—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स रामकुमार मन्नालाल

इस फर्मके मालिक सूरजगढ़ (जयपुर) निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके केडिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब २५ वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू रामकुमारजी हैं। आप सज्जन व्यक्ति हैं।

आपकी ओरसे सूरजगढ़में धर्मशाला और मंदिर बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आसनसोल- मेसर्स रामकुमार मन्नालाल--यहां बेङ्किंग, गल्ला और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स विसेश्वरलाल बद्रीप्रसाद

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू विसेश्वरलालजी, गोकुलचन्दजी एवम बद्री प्रसादजी हैं। इस फर्मका हेड आफिस रानीगंज है। इसका विशेष परिचय रानीगंजमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर बैंकिंग लकड़ी एवम सिमेंटका व्यापार होता है।

मेसर्स सीताराम रामचन्द्र

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चिंधाणा (जयपुर) है। आप अग्रवाल जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३५ वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू सीताराम जी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू सीतारामजीके पुत्र बाबू रामचन्द्रजी हैं। आप यहांकी कोर्टके जूरी रहे हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आसनसोल—मेसर्स सीताराम रामचन्द्र—यहा बैंकिंग, जमींदारी और गल्लेका काम होता है। यह फर्म कोयलेकी खानकी मालिक भी है।

गल्लेके व्यापारी

ज्वालाप्रसाद मन्नालाल

नौरंगीलाल हरकिशन

वलदेवदास भीमराज

रामकुमार मन्नालाल

सीताराम रामचन्द्र

कपड़ेके व्यापारी

बालमुकुन्द बनारसीलाल

मक्खनलाल महादेव

रामप्रताप रामचन्द्र

जनरल मरचेंट्स

दुर्गा स्टील ट्रंक फेक्टरी

मनोर घाटी

सत्तो घाटी

मोटरके सामानके व्यापारी

महम्मद दीन पंजावी

नूरदीन मिस्त्री

बराकर

यह ईस्ट इण्डिया रेलवेकी इसी नामकी एक छोटीसी स्टेशनके समीप ही बसा हुआ है। यह ग्राम बराकर नामक नदी पर बसा हुआ है। इसी नदीके नामसे ही यह ग्राम भी बराकरके नामसे पुकारा जाता है। बराकर छोटा ग्राम है। इसके रास्ते बहुत संकीर्ण है। यहांकी सडकें जर्जर होगई है ग्रामकी सफाईकी ओर जनताका विशेष ध्यान नहीं है ऐसा मालूम होता है।

यहा धान पैदा होता है धान हीका व्यापार यहां होता है व्यापारी यहांसे धान, चांवल, बाहर भेजते हैं, कपड़ा गल्ला आदि बाहरसे आकर यहा बिकता है। और आसपासके आदमी यहांसे माल खरीद कर ले जाते है। यहाके व्यापारियोंकी झरिया नामक स्थानमे कई कोलिइारियां है।

मेसर्स गोपालराय हरसुखदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान लोयल (राजपूताना) का है। आप लोग अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन है। यह फर्म यहा करीब ४० वर्षसे स्थापित है। पहले इस फर्मपर मेसर्स

मामराज हरसुखदासके नामसे कारबार होता था। करीब एक सालसे इसकी २शाखाएं हो गई जिसमेंसे यह फर्म भी एक है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ गोपालरायजी एवम आपके पुत्र बाबू फलूरायजी और ओंकारमलजी है। आप शिक्षित एवम् सज्जन व्यक्ति है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बराकर—मेसर्स गोपालराय हरसुखदास—यहां बैकिङ्ग तथा कोपिमारीका काम होता है। इसके अतिरिक्त कालूराम अग्रवालाके नामसे मशीनरीएंजिन वगैरहका व्यापार भी होता है।

करमाटांड (झरिया) श्रीरामकोल कम्पनी—इसमें आपका साझा है। तथा आपही इसके मैनेजिङ्ग डायरेक्टर हैं।

बुखारो (झरिया) अग्रवाला ब्रादर्स—इस नामसे यहां भी कोलियारी है। इसमें भी आपका साझा है।

मेसर्स दुर्गादत्त रामदेव

इस फर्मके मालिक जसरापुरा (खेतड़ी-राजपूताना) के निवासी हैं। यह फर्म यहां करीब १० वर्षसे व्यापार कर रही है। इसके पहले ४० वर्षोंसे संगलेलियामें यह स्थापित है। इसके स्थापक सेठ दुर्गादत्तजी एवम् रामदेवजी हैं। सेठ दुर्गादत्तजीका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इसके संचालक रामदेवजी एवम दुर्गादत्तजीके पुत्र बालूरामजी, हरिरामजी, रामलाल और इन्द्रलालजी हैं। आप सब सज्जन और व्यापार कुशल व्यक्ति है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।—

बराकर—मेसर्स दुर्गादत्त रामदेव – यहां सूत और गल्लेका व्यापार होता है।

डिसेरगढ़—मेसर्स दुर्गादत्त रामदेव—चांवल, गल्ला और आढ़तका काम होता है।

बुखारो (झरिया) मेसर्स अग्रवाल ब्रादर्स—इस नामसे यहां कोयलेकी खान है। इसमे भी आपका साझा है।

मेसर्स मोहनराम गंगाराम

यह फर्म यहां करीब ७० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बिंगस (जयपुर) निवासी बाबू मोहनरामजी थे। आपने अपनी व्यापार कुशलतासे इस फर्मकी अच्छी उन्नति की। उपरोक्त नामसे यह फर्म संवत् १९३९ से व्यापार कर रही है। बाबू मोहनरामजी तथा आपके भाई

गंगारामजीका स्वर्गवास हो गया है। बाबू मोहनरामजीके दो पुत्र हुए, बाबू मोतीरामजी तथा बाबू चुन्नीलालजी। अपने पिताकी मृत्युके पश्चात् आप दोनों भाइयोंने इस फर्मके कार्यका संचालन किया। आपने कोयलेकी खानें आदि खरीदकर अपनी फर्मकी प्रतिष्ठाको बढ़ाया। आप दोनों ही भाइयोंका स्वर्गवास हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू मोतीरामजीके पुत्र बैजनाथजी, वंशीधरजी, महादेवलालजी तथा चुन्नीलालजीके पुत्र शिवनारायणजी, और सांवरमलजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सिंगल गोत्रीय गोयलका सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बड़ाकर—मोहनराम गंगाराम—यहां बैङ्किगका काम होता है यहा आपका हेड आफिस है।

करवा—(वर्दमान) शिवनारायण जानकीलाल—यहा गल्ला तथा चावलकी आढ़तका काम होता है। इसके सिवाय करकेन्दकी मोतीराम रोशनलाल कोल कम्पनी लि० और बलिहारीकी 'चुन्नीलाल टीकमचन्द कोल कम्पनी लिमिटेड की यह फर्म मेनेजिंग एजंट एवं पाटनर है।

मेसर्स सोनीराम जीतमल

इस फर्मका हेड आफिस नागपुर है। यह फर्म भारत भरमें टाटा संस लिमिटेडके मिलोंके कपड़ेकी सोल एजंट है। इसकी और भी कई शाखाएं हैं। इसका विस्तृत परिचय कलकत्ताके कपडेके व्यापारियोंमें चित्रों सहित दिया गया है। यहा भी यह फर्म कपड़ेका व्यापार करती है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स कुंजलाल मामराज

" मुंगीलाल दुर्गादत्त

" मुंगीलाल शिवनारायण

" सोनीराम जीतमल

मेसर्स दुर्गादत्त रामदेव

" धोंकलमल महादेव

" मेघराज गौरीदत्त

" लक्ष्मीनारायण पीरामल

" सुखदेवदास रामचन्द्र

गल्लाकिरानाके व्यापारी

" गड़सीराम सूरजमल

" चन्द्रराम शिवदत्तराय

कोयलाके व्यापारी

" कालूराम अग्रवाला

" मोहनराम गंगाराम

बांकुड़ा

दक्षिणी बंगालके कुछ अच्छे २ शहरोंमें इसकी गणना है। यह शहर एक दम लम्बा बसा हुआ है। शहरसे स्टेशन करीब आधा मील दूरी पर है। इसके बाजार चौड़े हैं। तथा शहरमें सफाई भी रहती है।

यहां पर धान, चावल, हरड़ा, कुचला, इमली, महुवा आदि वस्तुएं पैदा होती है ये वस्तुएं यहांसे बाहर भी भेजी जाती हैं। यहांपर कांसेके बर्तन बनाये जाते है। जो काफी तादादमे बाहर जाते हैं। इसके सिवाय यहापर सूती चद्दरें और कपड़ा भी बनता है। जो यहासे बाहर भेजा जाता है। गल्ला, विलायती कपड़ा, केरोसिन आइल आदि वस्तुएं बाहरसे आकर यहां बिकती हैं।

यहासे पासही विष्णु नामक स्थान है। वहां हाथसे कपड़ा बनानेवालोंके बहुत घर है। वहाके कारीगर कपड़ा भी अच्छा बनाते है। यह काम पहले यहा बहुत जोर पर होता था। मगर विदेशी कपड़ेकी मारने यहाके कपड़ेके व्यवसायको बिठा दिया। हां, जबसे स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ हुआ है तबसे यहांके कपड़ेमें फिर कुछ तरक्की हुई है।

मेसर्स चन्दुराम आसाराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू परशुरामजी हैं। आपने यह फर्म करीब १५ वर्ष पूर्व स्थापित की। इस फर्मका हेड आफिस बराकरमें है। बराकरमें ३५ वर्ष पूर्व बाबू चन्दुरामजी द्वारा इस फर्मकी स्थापना हुई थी। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान सतनाली (नारनोल) का है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू शिवदत्तरायजी बाबू आसारामजी तथा आपके भतीजे बाबू परशुरामजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बांकुड़ा—चन्दुराम आसाराम—यहां गल्ला, किराना, तथा धान चांवलका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

बराकर—चन्दुराम शिवदत्तराय—यहां गल्ला और किरानेका काम होता है।

विष्णुपुर—तनसुखराय ओंकारमल—यह फर्म परशुरामजीकी प्राइवेट है यहा गल्लेका काम होता है।

मेसर्स द्वारकादास फूलचन्द

इस फर्मके स्थापक खंडेला (शेखावाटी) निवासी शिवनारायणजी थे आप खंडेलवाल वैश्य समाजके रखत सज्जन थे। यह फर्म करीब ५० वर्षसे स्थापित है।

इसके वर्तमान मालिक बाबू शिवनारायणजीके पुत्र बाबू ओंकारमलजी, द्वारकादासजी, फूलचन्दजी, तथा आपके भतीजे मदनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बांकुड़ा—द्वारकादास फूलचन्द—यहां गल्ला, किराना और सूतका व्यापार होना है।

मेसर्स नारमल शिवबक्स

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ (बीकानेर) निवासी है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके बाजोरिया सज्जन है। यह फर्म यहां करीब २१ सालसे स्थापित है। इसके स्थापक सेठ नारमलजी बाजोरिया हैं इस फर्मको तरक्की आपहीके हाथोंसे हुई है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बांकुड़ा- मेसर्स नारमल शिवबक्स—इस फर्मपर बैंकिंग और सूतका व्यापार होता है यह फर्म कई मिलोंके सूतकी एजेण्ट है।

बांकुडा—शिवबक्ष केदारनाथ—यहां गल्ला, तिलहन और किरानेका व्यापार होता है। चक्रधरपुर, रांची, रतनगढ़,टाटानगर,खड़गपुर,पूर्लिया,मिदनापुर, विष्णुपुर आदि स्थानोंमें इस फर्मकी तेलकी एजेंसिया है।

कलकत्ता—नारमल शिवबक्ष—१७४ हरिसन रोड—यहां चालानीका काम होता है।

मेसर्स लच्मीनारायण रामजीवन

इस फर्मके मालिक सतनाली (नारनोल) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके स्वासरिया सज्जन है। यह फर्म यहां करीब १५ वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू रामजीवनजी है। इस फर्मका हेड आफिस बराकर है। रामजीवनजीके भाई बाबू लक्ष्मीनारायणजी बराकर की फर्मका संचालन करते है। आपके दो भाई और हैं जिनका नाम पीरामलजी तथा सनेहीलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बांकुड़ा—मेसर्स लक्ष्मीनारायण रामजीवन—यहां गल्ला तथा धानका व्यापार होता है।

बराकर—मेसर्स लक्ष्मीनारायण पीरामल—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

दुबराजपुर—मेसर्स कन्हैयालाल केदारनाथ—यहां गल्ला तथा धान चावलकी चलानीका काम होता है।

मेसर्स हरकिशनदास राठी

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान देशनोक (बीकानेर) का है आप महेश्वरी जातिके राठी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ६६ वर्ष हुए। इसके स्थापक बाबू हणुतरायजी थे पहिले इस फर्मपर हणुतमल सुखदेवके नाममें कपड़ा तथा व्याजका काम होता था। पर अब उपरोक्त नामसे यह फर्म सूतका व्यापार करती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू हरकिशनदासजी राठी है। आप सज्जन एवं समझदार व्यक्ति है। आपने बांकुड़ामें एक धर्मशाला, एक संस्कृतपाठशाला, तथा एक गौशाला स्थापित की है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बांकुडा—मेसर्स हरकिशनदास राठी—यहां बैंकिंग जमीदारी तथा सूतका व्यापार होता है। काशीनाथ जी राठीके नामसे यहां आपकी एक मालकी दुकान भी है।

अजीमगंज

मुगल मानके महान मार्तंडकी अन्तिम आभासे आलोकित बंगालके नवाब अलिवर्दी खांकी प्रभाव परिपूर्ण राजधानी मुर्शिदावादके विशाल वैभवकी स्मृति दिलाने वाले उसके वर्तमान अस्ति पंजर स्वरूप ग्राम पुंजका वर्तमान अजीम गंज भी एक अंग माना जाता है। वर्तमानके अजीमगंज, वालूचर, धुलिश्रान, वरमपुर और जियागंज नामक उपनगर उस समयके इतिहास अमर मुर्शिदाबादके अंग मात्र थे। इस भूभागका इतिहास भारतके इतिहासको नवीन परिच्छेदमें विभाजित करने वाला सदा ही सिद्ध हुआ है। इतिहासमें केवल उत्तर भारत ही ऐतिहासिक घटनाओंका प्रधान लीला निकेतन माना गया है। यही कारण है कि कितनी ही प्रभाव परिपूर्ण प्रकाण्ड शक्तियां वहां समय समय पर उत्पन्न हुईं और कराल कालके विशाल गालमें सदाके लिये गल कर पच गयीं। एक समय वह भी था जब मगधके पुष्पमित्रके शासनके अन्तर्गत यह प्रदेश आया था। एक दिन वह भी था जब मुगलोंके मान मस्तकको मान न देकर अलिवर्दी खा ने अपनी स्वतंत्रता उद्घोषित कर इसी मुर्शिदा वादको अपनी राजधानी वना या। इस नगरने कुछ ही समय बाद बंगालके लाड़िले नवाब सिराजुद्दौला को पलासीके मैदानमें अंग्रेजोंके साथ लोहा लेनेका मनुष्योचित साहस करते देखा। यह वही नगर है जिसने विश्वासघाती मीरजाफरको भी बंगालकी शाही मसनद पर बैठे देखा था। मीर कासिम और क्लाइवकी राजनैतिक पैंतरेवाजी भी इसी नगरके वक्षस्थल पर अभिनितकी गयी थी। अतः यह नगर स्वयं इतिहासकी विस्तृत पुस्तक है जिसमें कितने ही कौतूहलपूर्ण पटपरिवर्तन देखे गये हैं। वर्तमान अजीमगंज उसी मुर्शिदावादका एक अंग है। इस नगरमें मारवाड़के ओसवाल परिवारोंका आगमन १८ वीं शताब्दीके मध्यकालीन युगसे आरम्भ होता है। यह समय इस नगरके विकासका महत्वपूर्ण समय माना जाता है। उस समय कलाकौशल, व्यापार वाणिज्यका यही प्रधान केन्द्र था जहां इन्होंने आकर अपना व्यवसाय आरम्भ किया।

यहांकी उर्वरा भूमिमें सभी प्रकारके पदार्थ उत्पन्न होते हैं। अतः कला कौशलकी उन्नतिमें पूरी सहायता मिलती है। यही कारण है कि शासकोंके प्रोत्साहनको पाकर यहां रेशमी कपड़े

बुनने, हाथी दांतका उत्तम माल तैयार करने और गंगा जमुनी कारीगरीने अच्छी उन्नतिकर ली जो आज भी किसी न किसी रूपमें वहां अवश्य ही जीवित है। अजीमगंजके पास बेलडागा और गंगीपुरमें रेशमके कीड़े पालकर रेशम तैयारकी जाती है। और इसीसे मुर्शिदाबादके कारीगर रेशमी माल तैयार करते हैं। अब हम यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय दे रहे हैं।

मेसर्स निहालचंद डालचंद सिंघी

इस फर्मका विस्तृत परिचय कलकत्तामें जूट बेलर्स और शीपर्स विभागमें पृष्ट २८२ में दिया गया है। कलकत्तेमें यह फर्म जूट एक्सपोर्टका बहुत बड़ा व्यापार करती है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू बहादुरसिंहजी सिंघी हैं। आपका कुटुम्ब अजीमगंजमें एक लम्बी अवधिसे निवास कर रहा है। तथा यहांके प्रतिष्ठित जमीदार और धनिक कुटुम्बोंमें माना जाता है। स्वर्गीय बाबू हरीसिंहजी, बाबू निहालचंदजी तथा बाबू डालचन्दजी सिंघीने अपने धार्मिक कार्योंसे ओसवाल जैन समाजमें बहुत बड़ी ख्याति पाई है। बाबू डालचन्दजी सिंघी अपने स्वर्गवासी होनेके समय कई लाख रुपयोंकी सम्पत्ति अपने रिस्तेदारोंमें वितरित कर गये थे। आपकी अजीमगंज फर्मपर जमीदारी और बैंकिंग काम होता है।

मेसर्स पंजीराम मौजीराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्वर्गीय बाबू इन्द्रचन्द्रजीके पुत्र बाबू पूरनचंदजी और ज्ञानचन्दजी नाहटा है। बालूचरमें करीब १०० वर्ष पूर्वसे आपका कुटुम्ब निवास कर रहा है। आपका विस्तृत परिचय चित्रों सहित कलकत्तामे बैंकर्स विभागमें पृष्ट २५८ में दिया गया है।

मेसर्स प्रसन्नचंद फतेसिंह

यह फर्म आसाम और बंगालके ख्याति प्राप्त महानुभाव राय मेघराज बहादुरके छोटे पुत्र बाबू प्रसन्नचन्दजी की है। राय मेघराज बहादुरका स्वर्गवास सन १९०१ में हुआ। सन् १९०७ में आपके पुत्र बाबू जालिमचन्दजी और बाबू प्रसन्नचन्दजीका कारबार अलग अलग हो गया। बाबू प्रसन्नचन्नजीका स्वर्गवास १९०७ में हुआ। आपके ३ पुत्र हुए बाबू भँवरसिंहजी कोठारी, फतेसिंहजी कोठारी और चन्द्रपतसिंहजी कोठारी, जिनमें दो भाई बहुत थोड़ी वयमें स्वर्गवासी हो गये हैं। बा० प्रसन्नचंदजीकी माताका स्वर्गवास १९२७ में करीब ८८ वर्षकी आयुमें हुआ।

बीचमें बैठे हुए—स्व० राय बुद्धसिंहजी दुधोरिया बहादुर, ऊपर न० १—स्व० बा० अजितसिंहजी दुधोरिया
ऊपर नं० २—स्व० बा० कुंवरसिंहजी दुधोरिया नीचे न० १—बा० जयकुमारसिंहजी दुधोरिया
नीचे न० २—बा० नवकुमारसिंहजी दुधोरिया,)

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू फतेसिंहजी हैं। आप बहुत शांत प्रकृतिके समझदार सज्जन हैं। आपका कुटुम्ब ओसवाल समाजमें बहुत बड़ी प्रतिष्ठा एवं सम्मान रखता है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजीमगंज—मेसर्स प्रसन्नचन्द फतेसिंह—यहां बेङ्किग व जमीदारीका काम होता है।

राय बुद्धसिंहजी दुधोरिया बहादुर

अजीमगंज (मुर्शिदाबाद) का दुधोरिया परिवार भारतका बहुतही पुराना परिवार है। मसीह सन् से १३५—११० वर्ष पूर्व राजा चबन नामक चौहान क्षत्रिय राजा अजमेरमें राज्य करते थे। इन्हीं महा पुरुषसे इस परिवारकी उत्पत्ति है। इनके ३०० वर्ष बाद राजा दुधोर राव गद्दी पर बैठे। आपने सम्वत् २२२ (सन् १६५ ई०) में जैन धर्मकी दीक्षा ली और तभीसे यह राज परिवार दुधोरिया वंशके नामसे प्रसिद्ध हुआ। राजा दुधोररावके तीसरे पुत्र मोहनपालके समय यह परिवार अजमेर प्रदेशके गढ़चन्दोरीमें चला आया और वहांसे समय समयपर यह परिवार बनी-कोट,रतलम आदि होता हुआ बीकानेरके राजलदेसर स्थानपर चला गया। यह समय १८ वीं शताब्दी के मध्यकालके बादका है। सन् १७७४ ई० में हरजीमलजी दुधोरिया अपने दो पुत्र सवाईसिंहजी और मौजीरामजीको लेकर अजीमगंज आये और यहीं बस गये। आपने व्यवसाय आरम्भ किया और अपनी योग्यता वश अल्पकालमें अच्छी उन्नति कर ली। पर व्यवसायकी वास्तविक उन्नति हरकचन्दजी दुधोरियाके समय हुई। आपने अजीमगंजके अतिरिक्त कलकत्ता, सिराजगंज, जंगीपुर और मैमनसिंहमें बैंकिंगकी अपनी फर्मे स्थापित कीं। आप सन् १८६२ में स्वर्गवासी हुए। आपके दो पुत्र थे वुद्धसिंहजी और बिसनचन्दजी। आप दोनों ही बाल्यकालसे कुशाग्र बुद्धि और होन-हार थे। अतः अपनी फर्मके व्यवसायको आप लोगोंने बड़ेही सुचारुरूपसे संचालितकर बहुत अधिक बढ़ा लिया। आप लोगोंने अपनी पूंजी जमीदारी खरीदनेके काममें लगाई। और थोड़े ही समयमें मुर्शिदाबाद, मैमनसिंह,वीर भूमि,नदिया,फरीदपुर, पूर्निया, दीनाजपुर, और राजशाही जिलोंमें आपकी जमीदारी होगयी। आप लोगोंने धन संचयके अतिरिक्त उसके सदुपयोगकी ओर भी अच्छा ध्यान दिया और अपनी समाजके दीन व्यक्तियों की सहायता करना, भूखोंको खिलाना, अकालके समय अन्नक्षेत्र खोलकर पीड़ितोंकी अन्न वस्त्रसे सहायता करना, आदि कितनेही लोका-पकारी कार्य किये। इन सबसे प्रसन्न होकर सरकारने दोनों भाइयोंको रायबहादुरके सम्मानसे सम्मानित किया। आप लोग मुर्शिदाबादकी लालबागकी बेंचके आनरेरी मैजिस्ट्रेट नियुक्त किये गये। सन १८७७ ई० मे दोनों भाई अलग होगये और अपने २ नामसे काम करने लगे। सन् १८६२

में राय विसुनचन्दजी दुधोरिया बहादुरका स्वर्गवास हुआ। उस समय उनके पुत्र वर्तमान राजा विजयसिंहजीकी अवस्था केवल १४ वर्षकी थी अतः उनका कारबार भी सन १९०० तक राय बुद्ध सिंहजी बहादुर संचालित करते रहे।

रायबुद्धसिंहजी दुधोरिया बहादुरके इन्दचन्द्रजी, अजित सिंहजी तथा कुमारसिंहजी नामक तीन पुत्र हुए बाबू इन्द्रचन्द्रजी बड़े ही होनहार सुशिक्षित एवं उत्साही नवयुवक थे। आपके बा०जगतसिंहजी और रणजीतसिंहजी नामक दो पुत्र हुए, जिनमें बा०रणजीतसिंहजी विद्यमान हैं। सन १८८९ ई० में बाबू इन्द्रचन्द्रजी दुधोरियाने योरोपकी यात्राकी और वहांसे लौटनेपर आपने अपने पितासे सामाजिक सम्बन्ध विच्छेदकर लिया। कुछही समय बाद आपका भी स्वर्गवास हो गया।

बाबू अजितसिंहजी एवं बाबू कुंवरसिंहजी दुधोरिया—आप राय बुधसिंहजी बहादुरकी दूसरी धर्म पत्नीसे हुए आप दोनोंका खेद जनक स्वर्गवास सन् १९१० ई० में २४ घन्टोंके अन्तर से हो गया। बाबू अजीतसिंहजीका व्याह हरावतके राजा नरपतसिंहजीकी लड़कीसे हुआ था इनके दो पुत्र हुए जिनका नाम बाबू नवकुमारसिंहजो और बाबू जयकुमारसिंहजो हैं। यही दो पौत्र वर्तमानमें रायबहादुर बुद्धसिंहजीके उत्तराधिकारी हैं। बा० कुमारसिंहजीका व्याह अजीमगंजके डालचन्दजी सिंघीकी पुत्रीसे हुआ था। आपके कोई सन्तान नहीं हुई।

दुधोरिया राजवंशकी इस प्रधान शाखाके ये दोनों उत्तराधिकारी अपने पितामहके स्वर्गवासके समय सन १९२० मे केवल १५ और १४ वर्षके थे अतः इनके संरक्षणका भार आपके सुयोग्य चचा राजा विजयसिंहजी दुधोरियाके हाथमें आया। आपने अपनी वंश परम्पराके अनुकुल उच्च शिक्षा दे इन्हें योग्य बनाया। इन दोनों महानुभावोंका व्याह मोहीमपुरके इतिहास प्रसिद्ध जगत सेठकी [illegible] और पुत्रीसे सन १९१९में हुआ। इनके भी एक एक पुत्र है। वयस्क होते ही इन्होंने अपनी स्टेटका सारा कार्य भार सन् १९२६ के अगस्त माससे सम्माल लिया। आप दोनोंही होनहार और उत्साही नवयुवक हैं। आप अपने कुल परम्पराके अनुसारही अपना सारा प्रबन्ध संचालित करते हैं। आपके पूर्वजोंके द्वारा प्रोत्साहित सभी कार्यों और संस्थाओंको बराबर आप लोग सहायता दिया करते हैं। आपके यहां प्रधान व्यापार बैंकिंगका है। आपकी बहुत बड़ी जमीदारी है।

राय बुद्धसिंहजी बहादुर पुराने ढङ्गके जैन थे। आपको १८८८में राय बहादुरीका सम्मान प्राप्त हुआ। आप नम्र और उदार सज्जन थे। आपका व्यवहार स्पष्ट और सादा था। इन्ही विशेषताओंके कारण आपकी बहुत बड़ी प्रतिष्ठा थी। सन १९०४ मे आपने अ० भारतवर्षीय जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेन्सके कोटा अधिवेशनमें सभापतिका आसन सुशोभित किया था आपको सभी [illegible]। आप दोनों भाइयोंने जंगीपुर डिस्पेन्सरी और अस्पतालके लिये एक

मूल्यवान भवन तैयार कराया था। इन्होंने गिरिडिह और जंगीपुरमें जैन मंदिर तथा पावांपुरी (विहार) आबू पर्वत पारसनाथ पहाड़ी, बम्बई, रानी (मारवाड़) और अजीमगंजमें धर्मशालायें बनवाई थीं। आप लोगोंने अजीमगंजमें कन्या पाठशाला और अजीमगंज, बनारस, पालीताना, और घोराजीमें जैन पाठशालायें चलायीं, आप और आपके भाई राय विशनचन्दजी बहादुरकी उपरोक्त सम्मिलित लोकोपकारी कार्योंके अतिरिक्त कितने ही अन्य स्थान भी ऐसे है जिन सबका अनुमानित अंग बहुत बड़ा होता है। जैन समाजमें इस परिवारकी बहुत प्रतिष्ठा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजीमगंज—राय बुद्धसिंह दुधोरिया बहादुर इस नामसे आपकी जमीदारी मुर्शिदाबाद, दिनाजपुर, वीरभूमि, नदिया, संथाल परगना दुमका आदि जिलेमें है। इसके अलावा बेङ्किग काम होता है।

सिराजगंज—नेमचन्द हरकचन्द—जमीदारी, बेङ्किग और मकानोंके भाड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—राय बुद्धसिंह बहादुर ७४।१ क्लाइव स्ट्रीट—बेङ्किग और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।

बुद्धसिंहजी प्रतापसिंहजीका परिवार

यह एक प्राचीन राजवंशी परिवार है। इसकी उत्पत्ति राजपूत चौहान बंशसे है। यह राजबंश पहिले सिद्धमौर और फिर अजमेरके पास बीसलपुर नामक स्थानमें राज करता था। सन् ६३८ में इस राजबंशमें राजा माणिकदेव हुए, जिनके पिता राजा महिपालने जैनाचार्य श्री जिनवल्लभ सूरिजीसे जैन धर्म अंगीकार किया। आपके क्रमशः दो तीन पीढ़ी बाद दूगड़ और सुगड़ नामक महानुभाव हुए, जिनके नामसे दूगड़ गौत्र चला। इनके कई एक पीढ़ी बाद श्रीमान् सुखजी सन् १६३२ ईस्वीमें राजगढ़ आये, आप बादशाह शाहजहांके यहां पांच हजार सेनापर अधिपति नियुक्त हुए और राजाकी पदवीसे विभूषित किये गये। आपके बाद १८ वी शताब्दिमें धर्मदासजीके पुत्र वीरदासजी हुए, जो अपने निवास स्थान किशनगढ़ (राजपूताना) से सपरिवार पार्श्वनाथ तीर्थकी यात्राके लिये आये, और बंगालके मुर्शिदाबाद नामक ऐतिहासिक नगरमें बस गये। आपने यहां बेङ्किग व्यवसाय आरम्भ किया। आपके पुत्र बुद्धसिंहजी हुए और इस व्यवसायको बुद्धसिंहजीके पुत्र बहादुरसिंहजी एवं प्रतापसिंहजीने तरक्कीपर पहुंचाया। बहादुरसिंहजी निसंतान स्वर्गवासी हुए, अतः सब कारबार प्रतापसिंहजीके जिम्मे रहा

राजा प्रतापसिंजी दूगड़—आपने अपने बेङ्किग व्यापारको बहुत उन्नत अवस्थामें पहुंचाया, साथ ही साथ भागलपुर, पुर्णिया, रंगपुर, दीनाजपुर, माल्दा; मुर्शिदाबाद, कूचविहार आदि जिलोंमें

जमीदारी खरीद की। आप बहुत धार्मिक मनोवृत्तिके महानुभाव थे, एवं बंगालके जैन सामाजमें प्रतिष्ठा सम्पन्ननेता मानेजाते थे। अपने कई स्थानोंपर जैन मंदिरोंका निर्माण कराया, पब्लिकके कामोंमें बड़ी बड़ी रकमें भेंटकी। अपनी जातिके सैंकडों व्यक्तियोंके उत्थानमें आपने बड़ी उदारता दिखाई, आपका आश्रय पाये हुए आज सैंकड़ों लखपति व्यापारी हैं। दिल्लीके बादशाह और बंगालके नवाबने खिउत बख्शकर आपका सम्मान किया था। बंगालके जैन समाजमे आप सबसे बड़े जमींदार थे। आपने पालीताना और सम्मेद शिखरजीकी यत्राके लिये एक पैदल संघ निकाला, जिसमें बंगालके सैंकड़ों कुटुम्ब आमंत्रित किये गये थे। उस यात्रामें आपने संत्रुजय तीर्थमें कार्तिकी पोर्णिमापर नौकारसी का बड़ा भारी जीमन किया, तबसे यह प्रथा आपके परिवारमें बराबर चली आती है। और प्रति वर्ष पालीतानामें दस पंद्रह हजार आदमियोंका नौकारसीका जीमन होता है। इस प्रकार पूर्ण गौरव मय जीवन व्यतीत करते हुए सन् १८६० में आप स्वर्गवासी हुए। अपने स्वर्गवासी होनेके कुछ ही मास पूर्व, आप अपने पुत्र लखमीपतसिंहजी और धनपतसिंहजीका विभाग अलग २ कर गये थे। इन दोनों भाइयोंने भी अपने पिताजीकी कीर्ति और प्रतापमें बहुत ज्यादा वृद्धि की। आप दोनोंभाइयोंका पारस्परिक भ्रातृभाव अद्वितीय था। आप लोगोंके समयमे भी सैंकडों धार्मिक एवं समाजिक कार्य हुए। राजाप्रतापसिंहजी एवं आपके पुत्र राय लखमीपतसिंहजी बहादुर और राय धनपतसिंहजी बहादुरके हाथोंसे इतने बड़े २ धार्मिक कार्य हुए कि सारे भारतका जैन समाज आपसे परिचित हो गया

राय लखमीपतसिंह बहादुर—[सन् १८३५ से सन् १८८६ तक] आपने अपने जीवन कालमें अपनी विस्तृत जमीदारीमें कितनेही स्कूल और अस्पताल स्थापित किये। एवं सार्वजनिक संस्थाओंमें यथेच्छ सहायताएं दी, जैन समाजमे आपने भी बहुत बड़ी कीर्ति पैदा की थी। आपने छत्र बाग [कठगोला] नामक एक दिव्य उपवन लाखों रुपयोंकी लागतसे सन् १८७६ में बनाया, जो मुर्शिदाबाद और बंगालका दर्शनीय स्थान है। इसमे एक सुन्दर जिन मंदिर भी बना है। आपकी दान वीरता एवं सार्वजनिक कार्योंसे रीझकर सन् १८६७ मे गव्हर्नमेंटने रायबहादुरकी पदवीसे अलंकृत किया। आपने भी सन् १८७० मे एक संघ निकाला इस संघमे राजपूतानाके कई नरेशोंसे आपका परिचय हुआ। इसी परिचय स्वरुप जयपुर महाराज सवाई रामसिंहजी जब कलकत्ता आये थे, तब आपके यहां अतिथि होकर रहे थे। आपने अपने जीवन समयमें कभी समयका दुरुपयोग नहीं किया, समयकी पाबंदीका आपको बहुत बड़ा खयाल रहता था। आपके पुत्र छत्रपतसिंहजी [१८५७ से १९१८] हुए। आप बहुत स्वतंत्र विचारोंके निर्भीक सज्जन थे। कलकत्तेके जैन समाजमें आप बहुत सुपरिचित महानुभाव थे। वर्तमानमें आपके पुत्र श्रीपतसिंहजी और जगतपतसिंहजी विस्तृत जमीदारीका प्रबंध करते हैं, आप भी सरल स्वभावके शिक्षित महानुभाव हैं। समा-

जमें आप सज्जनोंका भी अच्छा सम्मान है। जगतपत सिंहजीके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः राजपत सिंहजी (आप बी० ए० में पढ़ रहे हैं) कमलपतसिंहजी, प्रजापतसिंहजी और यदुपतिसिंहजी हैं। श्रीपतसिंहजी साहब बृटिश इण्डिया एसोशियेसन, कलकत्ता क्लब आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपकी जमींदारी संथाल परगना मुंगेर, भागलपुर, पुर्निया, रंगपुर, दिनाजपुर आदिमें है।
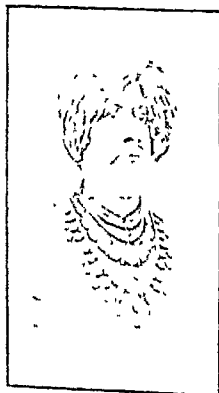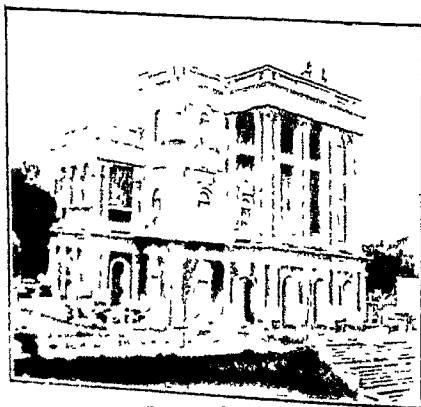
राय धनपतसिंजी बहादुर—(१८४० से १८६६ तक) आप अपने योग्य पिताकी योग्य सन्तान थे। आपने जैन धर्मके अप्रकाशित आगम ग्रन्थोंके प्रकाशनका अभूत पूर्व कार्य हाथोंमें लिया और प्रचुर धन व्यय करके उन्हें प्रकाशित कराया और मुफ्तमें बंटवाया। आपके इस कार्यकी जैन समाज चिरकाल तक स्मृति न भूलेगा। इसके अतिरिक्त आपने अजीमगंज बालूचर, नलहट्टी, भागलपुर, लक्खीसराय, गिरीडीह, बड़ाकर, सम्मेद शिखर, लछवाड़, काकंड़ी, राजगिरी, पावांपुरी-जी, गुनाया, चम्पापुरी, बनारस, बटेश्वर, नवराही, आबू पालीताना, तलाजा, गिरनार बम्बई तथा किशनगढ़में मंदिर और धर्मशालाओंका निर्माण कराया। इन सबमें विशेष उल्लेखनीय शत्रुंजय तलहट्टीका मंदिर है। जिसका चित्र ग्रन्थमें दिया गया है। इसकी प्रतिष्ठा सन १८९२ में कराई गई। यह मन्दिर दिनों दिन तरक्की पर है जैन समाजका इस मन्दिर पर अच्छा प्रेमभाव है। इसी प्रकार जैन समाजके कई एक कार्य आपके हाथोंसे हुए, आपने तीन चार संघ भी अपने समयमें निकाले थे। राय धनपतसिंह बहुत उदार चेता महानुभाव थे, बंगालकी सभी संस्थाओंमें एवं सार्व-जनिक चन्दोंमें आप मुक्त हस्तसे सहायतायें प्रदान किया करते थे। आपके गुणोंसे प्रसन्न होकर सन् १८६५ में गवर्नमेण्टने आपको राय बहादुरीका सम्मान समर्पण किया।

आपके तीन पुत्र हुए राय गनपतसिंहजी बहादुर, श्री नरपतसिंहजी एवं तीसरे श्री महाराज बहादुर सिंहजी। इन सज्जनोंमेंसे सन् १८८७ में आपने राय गनपतसिंहजी और नरपतसिंहजीको प्रथक किया।

राय गणपतसिंहजी बहादुर (१८६४-१९१५) को सन् १८९८ में राय बहादुरकी पदवी प्राप्त हुई आपने अपनी स्टेटमें बहुत तरक्की की, छात्रोंको मदद देकर उच्च शिक्षा दिलानेकी ओर आपका विशेष ध्यान रहता था। आपके कोई पुत्र नहीं था, फलतः आपकी सम्पत्तिके उत्तराधिकारी आपके छोटे भ्राता नरपतिसिंहजी हुए। नरपतसिंहजीके ३ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः श्री सुरपतसिंहजी महीपतसिंहजी, एवं भूपतसिंहजी हैं। आप ही तीनो सज्जन वर्तमानमें जमीदारीके विस्तृत क्षेत्रका संचालन करते हैं। नरपतसिंहजी बहुत संतोषी और उच्च चरित्रके महानुभाव थे।

राय नरपतसिंहजी बहादुर कैसेरे हिन्द और आपके भ्राता राय गनपतसिंहजी बहादुरने मिलकर भागलपुर जिलेमें हरावन नामक स्थानमें अपनी जमीदारी स्थापित की, और वहांके राजाके

नामसे आप लोग प्रख्यात हुए। आपकी जमीदारी ४०० वर्ग मीलमें फैली हुई है, तथा १३०००० जन संख्यासे भरी पुरी है। आपने अपनी जमीदारीमें स्कूलअस्पताल आदि बनवाये हैं। तथा प्रार्थना करनेपर विद्यार्थियोंके लिये उच्च शिक्षा दिलानेका प्रबन्ध भी आपके द्वारा किया जाता है। वर्तमानमें श्रीसुरपतसिंहजीके पुत्र नरेन्द्रपतसिंहजी तथा बीरेन्द्रपतसिंह और महीपतसिंहजीके पुत्र योगेन्द्रपतसिंहजी आदिन्द्रपतसिंहजी, कनकपतसिंहजी और कीर्तिपतसिंह हैं। और भूपतसिंहजीके राजेन्द्रपतसिंह नामक एक पुत्र है।

महाराज बहादुर सिंहजी—आपका जन्म १८८० में हुआ। आप अच्छे शिक्षित समझदार एवं उदार हृदयके रईस हैं। अपने पूज्य पिताजी द्वारा स्थापित किये हुए मंदिर, धर्मशाला स्कूल आदि की-सुव्यवस्थाका भार आपहीके जिम्मे है। सम्मेद शिखरजी चम्पापुरीजी आदि तीर्थोंका प्रबन्ध भार जैन समाजकी ओरसे आपके जिम्मे है। और उसमें आप बड़ी तत्परतासे भाग लेते हैं। अपने पूर्वजोंकी कीर्तिको अक्षुन्न बनाये रखनेका आपके हृदयोंमें बड़ा स्थान है। आपके ६ पुत्र हैं जिनके नाम क्रमशः कुमार ताजबहादुरसिंहजी एम० एल० सी०, श्रीपाल बहादुरसिंहजी, महीपालबहादुरसिंहजी, भूपालबहादुरसिंहजी तथा जगतपाल बहादुर सिंहजी हैं। श्रीताजबहादुर सिंहजी सुशिक्षित एवम विचारवान नवयुवक है। अभी ६ जून १९२९ को आप बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिलके मेम्बर निर्वाचित हुए हैं। आप लोगोंकी विस्तृत जमीदारी बंगाल तथा बिहार प्रांतके, मुर्शिदाबाद, वीरभूमि, हुगली, वर्द्धमान, रंगपुर, दिनाजपुर, पुर्णिया, संथाल परगना, राजशाही, हजारीबाग, गया, कूचबिहार, आदि जिलोंमें है। दिनाजपुरमें प्राइवेट बेङ्किग काम भी आपके यहां होता है। आपकी स्टेट बालूचर स्टेटके नामसे प्रसिद्ध है।

मेसर्स महासिंहराय मेघराज बहादुर

इस फर्मका विस्तृत परिचय चित्रों सहित तेजपुर [आसाम] में दिया गया है। राय मेघराज बहादुर मुर्शिदाबाद आसाम और बंगालके ख्याति प्राप्त व्यापारी हो गये हैं। आपने आसाम तथा बंगाल प्रांतमें बीसियों स्थानोंमें अपनी शाखाएं खोलीं। आपकी अजीमगंज दुकानपर बेङ्किग व जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स मूलचन्द हरकचन्द राय बिशनचन्द बहादुर

इस फर्मके वर्तमान मालिक राजा बिजयसिंहजी दुधोरिया हैं। आपका परिवारिक परिचय ऊपर दिया जा चुका है। आप भी अजीमगंजके बहुत बड़े जमीदार हैं। आपका विस्तृत परिचय

श्री पालिताना जैन मन्दिर

श्री आदिनाथ जैन मन्दिर [illegible]
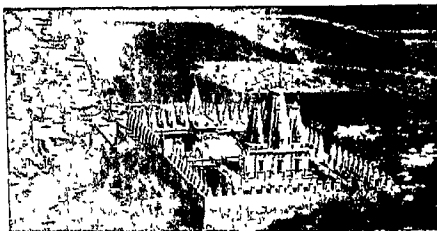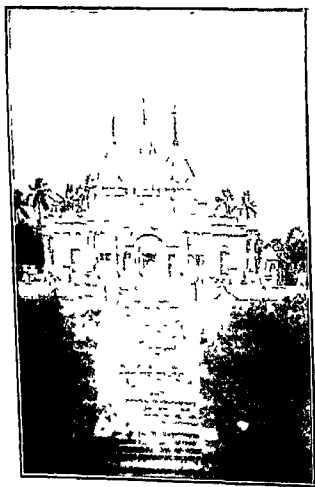
श्री महाराज बहादुर सिंहजीके पुत्र और पौत्र

ग्रंथके कलकत्ता विभागमें पृष्ठ २५७ में दिया गया है। आपकी जमीदारी मैमनसिंह, मुर्शिदाबाद वीरभूमि फरीदपुर नदिया, पूर्णिया तथा राजशाही जिलोंमें है।

मेसर्स हरकचन्द बूलचन्द नौलखा

अजीमगंजके नौलखा परिवारकी गणना ओसवाल समाजके अन्तर्गत होती है। यह परिवार समय २ पर भिन्न भिन्न नामसे सम्बोधित किया जाता था पर पुत्रीके व्याहमें ६ लाखकी भारी रकम देनेके कारण इसका नाम नौलखा परिवार पड़ा और आज भी यह परिवार उसी नामसे सम्बोधित किया जाता है। सबसे प्रथम सन् १७५० ई में देशसे बाबू गोपालचन्द्र नौलखा अजीमगंज आये। आप बड़ेही व्यापारदक्ष थे अतः थोड़ेही समयमें अच्छी उन्नति कर ली। आपने अपने भतीजे बाबू जयस्वरूपचन्दजीको दत्तक लिया और बाबू जयस्वरूपचन्दजीने बाबू हरकचन्दजीको दत्तक लिया। बा० हरकचन्दजी सन् १८५७ में अपने पितासे अलग हो गये और अपने नामसे स्वतंत्र व्यवसाय बैंकर और मर्चेंट्सके रूपमें आरम्भ कर अल्प कालहीमें अच्छी उन्नति कर ली। आपने कलकत्ता धुलियान, साहेबगंज, पुर्निया, मुर्लीगंज, महाराजगंज, बूरियाकुआरी और नवाबगंजमें अपनी फर्में खोलीं। आपने बैंकिंग व्यवसायके साथही जमींदारी खरीदनेमें भी पूंजी लगायी। फलतः आपकी जमींदारी मुर्शिदाबाद वीरभूमि और पुर्निया जिलोंमें हो गयी। आप स्वभावके सरल और मिलनसार थे। आपकी मान और प्रतिष्ठा योरोपियन और भारतीय समाजमें समान रूपसे थी। आपका स्वर्गवास सन् १८७४ ई० में हुआ। आपके तीन पुत्र हुए जिनमें बाबू बूलचन्दजी नौलखा, और बा० दानचन्दजी नौलखाका स्वर्गवास सन् १८४७ में हुआ। आपके तीसरे पुत्र बा० गुलाबचन्दजी नौलखाने अपने व्यवसाय और स्टेटको अधिक बढ़ाया, आप मुर्शिदाबादकी लालबाग बेंचके १० वर्ष तक आनरेरी मैजिस्ट्रेट रहे। आपने सन् १८८५ के अकालमे अपनी प्रजाका कर माफ कर दिया और तीन महीने तक दो हजार प्रपीड़ितोंको भोजन देते रहे। आप संगीतके प्रेमी थे। आपने अजीमगंजका प्रसिद्ध 'रोजविला' नामक उद्यान बनवाया। आप बहुतही लोकप्रिय सहृदय सज्जन थे आपका स्वर्गवास सन् १८९६ ई०के जून मासमें हुआ।

आपके पुत्र बाबू धनपतसिंहजी नौलखामें अपने पिताके सभी सद्गुण थे। आप बहुत ही उदार और सहृदय सज्जन थे। आपने विक्टोरिया मेमोरियलको २ हजार, एडवर्ड मेमोरियल फण्डमें २ हजार और इसी प्रकारके अन्य कामोंमें ७ हजारकी रकम दान की। आपने बंगाल सरकारको १५ हजारकी रकम अजीम गंज गोपालचन्द नौलखा अस्पतालके भवनके लिये दिये। इसी प्रकार २५ हजारकी रकम आपने कलकत्तेके पं० शम्भूनाथ हास्पिटलको सर्जिकल वार्ड बनानेके लिये दिये। सरकारने आपके कार्योंके सम्मान स्वरूप आपको सन् १९१० में राय बहादुरकी पदवी प्रदान की। इतनाही नहीं सरकारने आपको तलवार और कलंगीके रूपमें खिलत दे आपका आदर किया। आपका स्वर्गवास सम्वत १९७० में हुआ। आपके दो पुत्र थे। जिनके नाम बाबू आनन्दसिंह नौलखा और बाबू इन्द्रचन्दजी नौलखा थे। आप दोनों ही क्रमशः सन् १९०४ और सन् १९०८

में निसंतान स्वर्गवासी हुए। अतः वंशके अन्त होनेकी आशंकासे सम्वत १९७५ में बाबू निर्मल-कुमारजी दत्तक गये।

बाबू निर्मल कुमार सिंह नौलखा—करीब १६ वर्षकी अवस्थामें आप सुजानगढ़से नौलखा परिवारमें दत्तक लाये गये। एवं१९७६में आपने स्टेटका कारभार सम्हाला,आप बहुत होनहार राष्ट्रीय विचारोंके शिक्षित नवयुवक हैं। आपको शुद्ध खद्दरसे बहुत स्नेह है। अजीमगंजमें आपने खादी स्टोर खोला है, तथा कलकत्तेके खादी प्रतिष्ठानमें सहायता देते रहते है। आप जैन श्वेताम्बर सभा अजीमगंज, जियागंज एडवर्ड कोरोनेशन स्कूलके वाइस प्रेसिडेंट, अजीमगंज म्युनिसिपल कमिश्नर है १९८६ में आपकी ओरसे यहां एक बालिका विद्यालय खोला गया है। इसके अलावा आप बंगाल लैंड होल्डर्स एसोसियसन, कलकत्ता ब्रिटिश इण्डिया एससिएशन आदि संस्थाओंके भी मेम्बर हैं।

शिक्षा एवं सामाजिक प्रतिष्ठाके साथ धार्मिक कामोंकी ओर भी आपका अच्छा लक्ष है, संवत १९८२ में महात्मागांधीजी अजीमगंज आये थे उस समय आपने १० हजार रुपया उनकी सेवामें भेट किया था। उसी साल जैनाचार्य श्रीज्ञानसागरजी महाराजको भी ज्ञान भंडारमें १० हजार रुपया दिया था। श्री पाँवापुरीजीमें गांवके जैन श्वेताम्बर मंदिरके जीर्णोद्धारमें २० हजार रुपया लगाया था। संवत १९८५ के बंगाल दुर्भिक्षके समय आपने बहुत सहायता दी एवं चांवल आदि वितरित करनेका कार्य्य आपने हाथोंसे किया। इसी प्रकार जियागंज मेडिकल हास्पीटल,हास्पीटल स्कूल लाल बाग आदिमें सहायताएं दी हैं। फुटबाल आदि खेलोंसे आपको बड़ा शौक है। आपके पुत्र कुंवर चारित्रकुमारसिंहजी की वय ४ वर्ष की है।

बाबू निर्मल कुमारसिंहजीको पुरातत्व विषयोंसे भी बहुत स्नेह हैं। आपने अपने बगीचेमें पुरानी वस्तुओंका संग्रह किया है सम्वत् १९८४ मे आपने जमींदारीके गांव चन्दनवारीमें खुदाई करवाई थी, उसमें एक विशाल महादेवजीका लिंग एवं एक ५।। फुट डायमेटरकी पार्वतीजी की प्रतिमा निकली है। कहते हैं कि ८००।९०० शताब्दिके पूर्व मालवंशके समयकी यह प्रतिमा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

अजीमगञ्ज—मेसर्स हरकचंद बूलचन्द (T. A. Nowlakha) हेड आफिस—यहां जमींदारी बेंकिंगका काम तथा घी, कुस्टा एवं गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हरकचंद डालचन्द २२४ हरीसन रोड फोन न० 1926 B. B. तारका पता charitra यहा गल्ला जूट तथा चलानीका काम होता है।

साहबगंज—गुलावचन्द राय धनपतसिंह नौलखा बहादुर—गल्ला घी कुस्टाका व्यापार होता है।

धुलियान—गुलावचन्द राय धनपतसिंह नौलखा बहादुर—पाट, गल्ला और बेङ्किंगका काम होता है।

इसके अलावा पुर्नियां बुढ़िया (पुर्णिया) अकबरपुर (भागलपुर) मुरलीगंज (भागलपुर) पुवाडीगोला (पुर्णिया) मे हरकचन्द गुलावचन्दके नामसे बेंकिंग गल्ला और पाटका व्यापार होता है।

स्व० गुलाबचन्दजी नौलखा अजीमगंज

स्व० राय धनपतसिंह नौलखा बहादुर अजीमगंज
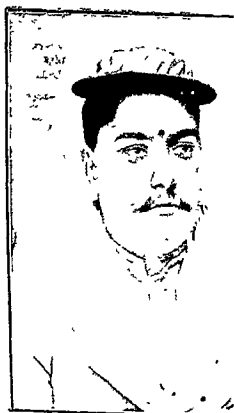
बा० निर्मलकुमार सिंहजी नौलखा अजीमगंज

साहबगंज

ईस्ट इंडिया रेलवेकी साहबगंज लूप लाइनपर बसी हुई छोटी सी, लेकिन सुन्दर मण्डी है। यहां तेल एवम चावलके बड़े २ कारखाने हैं जिनके लिये यह स्थान मशहूर है। यहां गल्ले, किराने, कपड़े और सावे घासका व्यापार भी होता है। यह घास कागज बनानेके काममें आती है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गुलाबचंद धनपतिसिंह नौलखा

इसके वर्तमान मालिक बाबू निर्मलकुमार सिंह जी नौलखा है। आपका हेड आफिस अजीमगंज है। साहबगंजमें यह फर्म ६० वर्षों से व्यापार कर रही है यहां प्रधान व्यापार पाट तथा गल्लेका होता है विस्तृत परिचय अजीमगंजमें दिया गया है।

मेसर्स द्वारकादास राधाकृष्ण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर शेखावाटी है। आप अग्रवाल वैश्य-समाजके भरथिया सज्जन हैं। प्रथम देशसे सेठ जादूरायजी पटना आये थे पटनेमें यह फर्म बहुत कार वार करती थी वहांसे सेठ जादूरायजीके पुत्र बा० ठाकुरप्रसादजीने साहबगंज आकर छोटी सी तेलकी मिल खोली,धीरे२ इस मिलने अच्छी तरक्की की और आज विहार प्रान्त भरमें यह मिल बहुत बड़ी है। इसमें ११००मन सरसोंका प्रतिदिन तेल निकाला जा सकता है। इस फर्मके वर्तमान मालिक ठाकुरदास जीके बड़े भ्राता रायसाहब द्वारकादासजी भरथिया तथा बाबू ठाकुरदासजीके पुत्र श्रीराधाकृष्णजी भरतिया एवं विहारीलालजी हैं। बाबू ठाकुरदासजीका स्वर्गवास करीब १५ वर्ष पूर्व हो गया है। सेठ द्वारकादासजीको गव्हर्नमेंटसे रायसाहबकी उपाधि प्राप्त हुई है आप यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। बाबू राधाकृष्णजी एवं विहारीलालजी भी अच्छे शिक्षित सज्जन हैं। आपकी मिलमें बहुत दिनोंसे आयर्न फाउण्डरीका.काम भी होता है। आपने वर्तमानमें इसमें इंजनियरिंग वर्कशाप भी खोला है। यहां २ एक्सपेलर तेल निकालनेका काम करते है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

साहबगंज –मेसर्स द्वारकादास राधाकृष्ण—यहां बहुत बड़ी तेल मिल है तथा आयर्न फाउंडरी वर्क और इंजनियरिंग वर्कशाप भी इसीमें है।

कलकत्ता—छोटेलाल बनवारीलाल २० उलटाडांगा रोड—आइलमिल और फाउंडरी है। इसमें भागलपुरवालोंके साथ आपका पार्ट है।

मेसर्स शिवदयाल रामजीदास बाजोरिया

इस फर्मका विशेष परिचय इसी ग्रंथके कलकत्ते विभागमें पृष्ठ २७८मे दिया गया है। यहा सावे घासका व्यापार होता है।

मेसर्स पन्नालाल बींजराज

इस फर्मके वर्तमान मालिक रायसाहब जमनाधरजी चौधरी है। आपका मूल निवास खेतड़ी (राजपूताना) है। इस फर्मका हेड आफीस साहबगंजमें है। राय साहब अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन है, और अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

साहबगंज—मेसर्स पन्नालाल बींजराज I'. A Chodhari—तेल मिल और गल्लेका व्यापार होता है।

कानपुर—जगन्नाथ बींजराज श्रीगंगा आइल मिल कोपरगंज—यहा आइल मिल है। और कॉटन जीन प्रेस फेक्टरी है।

कलकत्ता—जगन्नाथ बींजराज ९४ लोअर चितपुर रोड—आढतका काम होता है।

सुनहली [पूर्णिया] जमनादास राधाकिशन—गल्ला तिलहन और पाट आढ़तका काम होता है।

दिनाजपुर—जमनादास केदारनाथ—आढ़त और पाटका व्यापार होता है।

जलपाई गोड़ी—पन्नालाल बींजराज—किराना, गल्ला और पाटका व्यापार होता है।

वारनेस गंज जंकसन—पन्नालाल बींजराज— " "

चिंगडाबादा [जलपाई गोड़ी] पन्नालाल बींजराज " "

मेसर्स रावतमल बींजराज

साहबगंजमें इस फर्मको स्थापित हुए ३२।३३ वर्ष हुए, यहां प्रधान व्यापार जूट, गल्ला और आढत होता है। विस्तृत परिचय कलकत्तेमें दिया गया है।

आसाम

ASSAM.

वर्ड्स लेक शिलांग
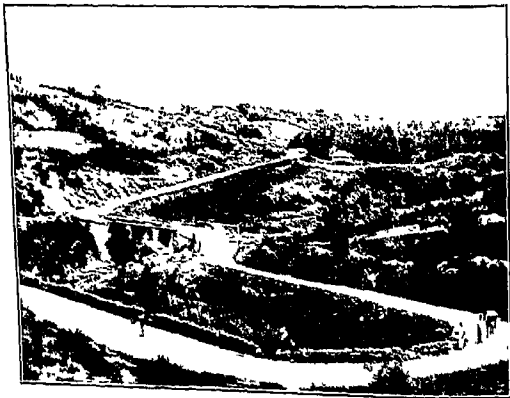
गौहाटी शिलांग रोडका दृश्य

शिलांग

शिलांग गौहाटीसे ६५ मीलकी दूरीपर खास्या जयन्त्या हिलपर बसा हुआ है। यह एक पहाड़ी स्थान है। यहां हजारों व्यक्ति प्रतिवर्ष हवा खानेके लिये आया करते हैं। यह स्थान आसाम प्रान्तका हेड़ कार्टर है। यहां बड़ी २ कोर्टे हैं। यहाकी बसावट साफ, सुथरी, उंची नीची एवं सुन्दर है। यहांकी म्युनिसिपेलिटीने इस ओर काफी ध्यान रखा है। शिलाग जानेके लिये पांडूघाट एवं गोहाटी दोनों स्थानोंसे मोटरें जाती हैं। यहां कई दर्शनीय स्थान है जिनका वर्णन आगे किया जायगा।

यहांसे पास ही चेरापूंजी नामक स्थान है। संसार भरमें यह स्थान पानीकी सबसे अधिक वर्षाके लिये प्रसिद्ध है। यहाके भी कई प्राकृतिक सीन देखने योग्य हैं। शिलांगसे यहां मोटर जाती है। यहांसे पास ही सिलहट नामक स्थान है।

व्यापार—यों तो यहां सभी प्रकारका व्यापार होता है। मगर विशेषकर आलूका व्यापार प्रसिद्ध है। यहां आस पासके पहाड़ोंपर लाखों मन आलू पैदा होते है। जो यहांसे बाहर गांवोंमें भेजे जाते है। मौसिममें यहा आलू ३, ३।) मन बिकते हैं। पहाड़ों परसे आलू नीचे लानेके लिये हालहीमें नवीन व्यवस्था हो रही है। इस व्यवस्थासे कम खर्चसे आलू पहाड़ परसे नीचे आने लग जायंगे। इससे इस व्यापारमें और भी उन्नति हो सकेगी।

इसके अतिरिक्त पींपर, शहद, काफी, संतरा, और नासपाती भी काफी तादादमें बाहर जाती है। यहासे सुगन्धित धूप भी बहुत बाहर जाती है। यह धूप यहा देवदारू इत्यादि सुगन्धित द्रव्यों से तैयार होती है। देवदारके यहां जंगलके जंगल खड़े हैं। इनसे पेकिंग बक्स बनाये जाते हैं। यहापर इसका कारखाना खोला जा सकता है। इस कारखानेके लिये यह उपयुक्त स्थान है।

प्रसिद्ध एवं दर्शनीय स्थान—यों तो सारा शिलाग ही दर्शनीय है। कोई बात नहीं जो सुन्दर और देखने लायक न हो। पर इनमेंसे खास २ स्थानोंके नाम नीचे दिये जाते हैं—

वर्ल्डस लेक, मावस्माई फाल्स, एलिफंट फाल्स, गौहाटी शिलाग रोड, बिपपफाल्स, बिडन-फाल्स, स्प्रेड इगला फाल्स आदि २। इनमेंसे कुछ स्थानोंके चित्र इस ग्रंथमें दिये गये हैं।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स गणेशदास श्री राम

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान चूरु (बीकानेर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके गोयनका सज्जन है। सबसे प्रथम इस फर्मके संस्थापक सेठ गणेशदासजी गोयनका स्वदेशसे लगभग सं० १६४० के गोहाटी आये और यहासे शिलाग चले गये। यहा आपने मेसर्स गणेशदास श्रीरामके नामसे गल्लेका व्यापार आरम्भ किया। ज्यों ज्यों इस व्यापारने उन्नति की त्यों त्यों दूसरे व्यापार भी क्रमानुसार खोले गये। शिलांगके समीपवर्ती भूभागमें आलू अधिक उत्पन्न होता है अतः आपने आलू खरीदकर वाहर भेजनेका काम आरम्भ किया और साथ ही दूसरे स्थानोंसे गल्ला आदि मगांकर वहा बेचनेका काम भी आपने जोरोंसे आरम्भ किया। सम्वत् १६५४ में आपने गोहाटीमें भी मेसर्स गणेशदास श्रीरामके नामसे व्यापार आरम्भ किया। गोहाटीसे मीठा तेल, मिट्टीका तेल तथा चावल आदि शिलाग भेजा जाने लगा और शिलागसे आलू आदि यहा आने लगा। इस प्रकार आपने थोड़ेही समयमें अपनी दोनों ही फर्मं सुदृढ बना लीं। सम्वत् १६७०में आपने मेसर्स गणेशदास वालचंदके नामसे कलकत्तेमें व्यापार आरम्भ किया। गोहाटी और शिलागसे हुण्डी चिट्ठी कलकत्ते जाती और वहासे शिलाग गोहाटी और आसाम प्रान्तके अन्य स्थानोंको आढ़तसे माल भेजा जाता था। इस प्रकार कलकत्ते वाली फर्ममें आढत की चलानीका काम जोरसे होने लग गया।

वर्तमानमें यह फर्म पंजाब, संयुक्तप्रान्त तथा विहारसे गल्ला मंगाती है और गोहाटी तथा शिलागकी अपनी दोनों फर्मोंके द्वारा समीपवर्ती भूभागमें ही नहीं वरन प्रान्तके सभी भूभागमें भेजती और बेचती है। इसके अतिरिक्त शिलागके समीपवर्ती भूभागसे आलू खरीदकर और गोहाटीके पास पाठशाला नामक स्थानसे घी खरीद कर प्रान्त और प्रान्तके वाहर दूसरे स्थानोंको भेजती है। इस प्रकार आलू और घी का काम इस फर्मपर प्रधान रूपसे होता है और इन दो वस्तुओंकी यह फर्म प्रधान और प्रतिष्ठित व्यापार करने वाली एक मात्र फर्म है। इस फर्मका घी अपनी विशुद्धता एवं पवित्रताके कारण बहुत ही प्रसिद्ध है अतः श्रेष्ठ माना जाता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ गणेशदासजीके पुत्र बाबू जीवनरामजी गोयनका हैं। तथा सेठ वालचंदजी गोयनकाके पुत्र बाबू हरिरामजी गोयनका, बाबू कमक्षालालजी गोयनका तथा बाबू दुर्गादत्तजी गोयनका और सेठ जीवनरामजीके पुत्र बाबू रामेश्वरलालजी गोयनका है।

बाबू जीवनरामजी गोयनका बड़े ही सज्जन एवं सरल स्वभावके सज्जन है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स गणेशदास श्रीराम शिलाग (आसाम) T A Goenka—यहा फर्मका हेड आफिस है।

और बड़ी स्थायी सम्पत्तिके साथ साथ विस्तृत जमीदारी है। यहां बैङ्किग का काम होता है। साथ ही कमीशन एजन्सीका काम होता है। बाहरसे गल्ला मंगाकर बेचा जाता है और आलू खरीदकर बाहर भेजा जाता है।

मेसर्स गणेशदास श्रीराम गोहाटी (आसाम) T. A. Goenke—यहां गल्ला, घी, तेल, किराना आदिकी खरीद बिक्री तथा आढ़तियोंको माल भेजनेका काम होता है। घी, पाठशाला (कामरूप)से खरीदकर बाहर भेजा जाता है।

मेसर्स गणेशदास बालचंद १७८ हरिसन रोड कलकत्ता—यहां कमीशन एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स भजनलाल श्रीनिवास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको सेठ भजनलालजीने करीब ४० वर्ष पूर्व स्थापित किया था। आपके हाथोंसे इसकी उन्नति भी हुई। आपके श्रीनिवासजी तथा कामाख्याप्रसादजी नामक दो पुत्र हुए। श्रीनिवासजीका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू कामाख्याप्रसादजी एवं श्रीनिवासजीके पुत्र बाबू ब्रजमोहनजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

शिलांग—मेसर्स भजनलाल श्रीनिवास—यहां बैंकिंग तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है। इस फर्मकी ओरसे गोहाटीसे शिलांगतक शुड्सके लिये मोटर लॉरी रन करती है।

शिलांग—श्रीलक्ष्मी मोटर ट्रान्सपोर्ट कम्पनी—इस कम्पनीकी मालिक उपरोक्त फर्म है।

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्मके वर्तमान संचालक-गण डिब्रूगढ़ रहते हैं। वहीं इस फर्मका हेड आफिस है। इसका विशेष परिचय चित्रों सहित डिब्रूगढ़के पोर्शनमें दिया गया है। यहां इस फर्मपर पेट्रोलकी एजेंसीका काम होता है।

मेसर्स सुखलाल भीमसिंह

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान छापर (बीकानेर) है। आप ओसवाल समाजके दुधोरिया सज्जन हैं। इसफर्मको स्थापन हुए करीब ८० वर्ष हुए। परन्तु करीब ३० वर्षोंसे उपरोक्त

नामसे यह फर्म व्यवसाय कर रही है। इसके स्थापक सेठ कालूरामजी हैं। आपके ही द्वारा इस फर्मकी उन्नति हुई। आपके सुखलालजी नामक एकपुत्र हैं। तथा सेठ सुखलालजीके सात पुत्र हैं इस फर्मकी विशेष देख रेख कालूरामजीके पुत्र बाबू सुखलालजी तथा कालूरामजीके छोटेभाई पाचीरामजीके पुत्र बाबू भौमसिंहजी करते है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

कलकत्ता—मेसर्स कालूराम सुखलाल ४६ स्ट्राड रोड यहां कमीशन एजेन्सी तथा गवर्नमेंट कंट्राक्टका काम होता है।

शिलांग—मेसर्स सुखलाल भौमसिंह, पल्टन बाजार यहां कपड़ा गल्ला तथा आलूका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त गवर्नमेंट कंट्राक्टर तथा मोटर लारीज़ सर्विसका भी काम आपकी फर्म पर होता है।

पटनासिटी—मेसर्स पाचीराम सुखलाल यहां गल्ला तथा कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

गौहाटी—कालूराम सुखलाल फासीबाजार T A Dudhoria यहां कमीशन एजंसी और दुकानदारीका काम होता है।

व्यापारियोंके पते :—

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया लिमेटेड ब्रांच

मेसर्स गणेशदास श्रीराम

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स उदयराम धनराज

„ गोवीदत्त कन्हैयालाल

„ डूंगरमल श्रीनिवास

„ रामरतन गणपतराय

„ हनुमानबक्स झाबरमल

„ हरदेवदास पूरणमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स उदयराम धनराज

„ भजनलाल श्रीनिवास

„ रामजसराय बिहारीलाल

मेसर्स सुखलाल भोमसिंह

„ शेरमल चौथमल

„ एस० लालचंद

जनरल मर्चेण्ट्स

मेसर्स नरसिंहप्रसाद दास

„ नवीनकृष्ण भट्टाचार्य

मोटर एजेन्सी

मेसर्स ए० नागी एण्ड संस

„ एच० एस० शरीफ

„ गणेशदास श्रीराम

„ भजनलाल श्रीनिवास

तेल पेट्रोल एजेंसी

मेसर्स रामजीराम राय चुन्नीलाल बहादुर

गौहाटी
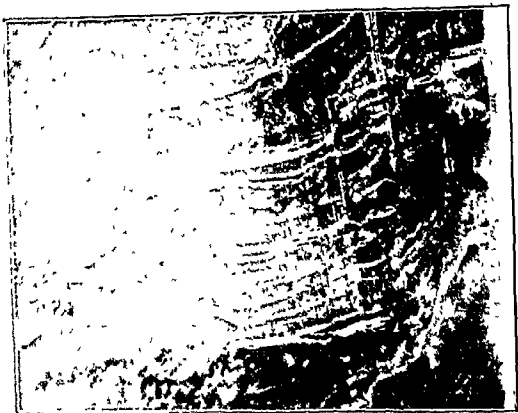
यह स्थान ए० बी० रेलवे पर बसा हुआ है। आसाम प्रान्तका सबसे बड़ा शहर होनेकी वजहसे यहांका व्यापार भी बड़ा बढ़ा चढ़ा है। यह शहर एकदम लम्बा बसा हुआ है। यहांसे तेजपुर और अमीन गाव दोनों स्थानों पर स्टीमर द्वारा जा सकते हैं। यहांकी मारवाड़ी पट्टी को छोड़कर शेष बसावट साफ और सुन्दर है। मारवाड़ी पट्टीमे काफी गन्दगी रहती है। आसाम प्रान्तका बड़ा शहर होनेकी वजह से यहा सरकारी कोर्ट भी है। यहा रातका सीन बहुत सुन्दर मालूम होता है। एक ओर पहाड और पास ही ब्रह्मपुत्रका किनारा और दूसरी ओर अमीन गांव एवं पाण्डू की बिजलियोंका सीन बड़ा ही मनमोहक मालूम होता है। यहांसे शिलांग मोटर जाती है।

व्यापार

यहांका प्रधान व्यापार आसामसिल्क, मूंगासिल्क और अण्डीसिल्कका है। इसके अतिरिक्त कपड़ा, गल्ला, जूट आदिका भी व्यापार यहां पर होता है। इस स्थानसे सारे आसाम प्रांतमें माल भेजा जाता है।

यहांसे पास ही पलासवाड़ी एवम नलबाड़ी नामक स्थानोंपर मूंगा, अंडी, घी एवम जूट काफी पैदा होता है। यहांकी मूंगा रेशम और मजबूत एवम सुन्दर होती है यह कारीगरों द्वारा गौहाटीके बाजारमें बिकने आती है। व्यापारी लोग यहांसे खरीदकर बाहर गांवोंमे इसकी चलानीका काम करते हैं। मूंगा सिल्क विशेषकर स्वालकूंची नामक स्थानसे आती है। यह स्थान पास ही है, यहां अमीनगांवसे नाव द्वारा जाना होता है।

यहां पर हाट एवम मेलेकी पद्धति भी है। प्रायः हफ्तेमें २-३ बार हाट लगता है। इसमें गृहस्थीकी आवश्यक सभी वस्तुएं बिकने आती हैं।

बाहरसे आनेवाले मालमें गल्ला, तिलहन दाना, कपड़ा, तेल, टीन आदि हैं और बाहर जाने वाले मालमें आसाम सिल्क, मूंगा, अंडी आदि प्रधान हैं। इससे कुछ दूरी पर पाटशाला नामक घी की बहुत बड़ी मण्डी है। यहासे पास ही २ मीलकी दूरी पर प्रसिद्ध कमक्षा देवीका मंदिर है। यहा हजारों व्यक्ति यात्राके निमित्त आते हैं। यह हिन्दुओंका तीर्थ स्थान है।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स कालूराम सुखलाल

इस फर्मका हेड आफिस शिलाङ्गमें है। इसके वर्तमान संचालक सेठ सुखलालजी तथा

भोमसिंहजी हैं। इनका विशेष परिचय शिलांगमें दिया गया है। यहां इसफर्मपर दुकानदारी एवं कमीशन एजेंसीका काम होता है।

मेसर्स गणेशदास श्रीराम

इस फर्मके मालिक चूरू (बीकानेर) के निवासी हैं। इसका हेड आफिस शिलांगमें है। इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित शिलांगके पोर्शनमें दिया गया है। इसफर्मपर यहां घी, गल्ला, तेल और किरानेका व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण सनेहीराम

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके जालान सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ जयनारायणजी जालान स्वदेशसे लगभग ८० वर्ष पूर्व गौहाटी आये और वहांसे डिब्रूगढ चले गये जहां लगभग डेढ़ वर्ष रहकर पुनः गोहाटी आये और सं० १९३२ में आपने मेसर्स जयनारायण दलसुखरायके नामसे कपड़ेका काम आरम्भ किया। यह फर्म लगभग ४० वर्ष तक बराबर काम करती रही जिसके बाद सेठ जयनारायणजी जालान अपने छोटे भाई सेठ दलसुखरायजीसे अलग हो गये और अपना स्वतन्त्र व्यापार मेसर्स जयनारायण सनेहीरामके नामसे सन् १९१८ ई० से करने लगे जो आज भी पूर्ववत् अवस्थामें हो रहा है। इस फर्मका प्रधान व्यापार वर्तमानमें प्राइवेट बैंकिङ्गका है। इसके अतिरिक्त यह फर्म सभी प्रकारके मालकी आढ़तका काम करती है। इस फर्मका एक राइस मिल नलवाडीमें है जहां चावल तैयार होता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जयनारायणजी जालान तथा आपके पुत्र बाबू सनेहीरामजी जालान तथा बाबू गोवर्द्धनदासजी जालान हैं।

बाबू सनेहीरामजी जालान नलवाडी (गौहाटी) के राइस मिलका काम देखते हैं और गोहाटीवाली फर्मसे सम्बद्ध सभी कारबारका का काम देखते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स जयनारायण सनेहीराम फासी बाजार गोहाटी (आसाम)—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है। यहां प्रधान रूपसे बैंकिङ्गका तथा सभी प्रकारके मालकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण गोवर्द्धनदास ९४ लोअर चीतपुर रोड कलकत्ता—यहां प्रधान रूपसे आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जयनारायण सनेहीराम राइस मिल्स नलबारी (गोहाटी, आसाम) - यहाँ इस फर्मका चावलका मिल है यहासे आसाम प्रान्तमें चावल भेजा जाता है।

मेसर्स नवरंग राय किशनदयाल

यहा यह फर्म जूट, गल्ला, सरसों तथा चालानीका काम करती है। इसके मालिक रतनगढ़ निवासी अग्रवाल जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन है। इस फर्मके वर्तमान मालिक बाब नागरमलजी, ओंकारमलजी, मालीरामजी, और ब्रह्मदत्तजी हैं। इसका विशेष परिचय नारायणगंज विभागमें देखिये।

मेसर्स तिलोकचन्द डायमल

इस फर्मके मालिक ओसवाल समाजके है। इसका हेड आफिस ७।२ बाबूलाल लेन कलकत्तामे है। अतएव इसका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्ता पोर्शनके कपड़े विभागमे दिया गया है। यहां इस फर्मपर गल्ला एवं कमीशन एजेन्सीका काम होता है।

मेसर्स पूनमचन्द माणकचन्द

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू गिरधारीमलजी पूनमचन्दजी एवम माणकचन्दजी हैं। आप ओसवाल समाजके सज्जन हैं। यह फर्म मेसर्स कालूराम सुखलाल नामक फर्मसे अलग हुई है। इसका स्थापन सन् १९२८ में हुआ।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गौहाटी—मेसर्स पूनमचन्द माणकचन्द फांसी बाजार—यहां पर गल्ला किराना और कमीशन एजेन्सी का काम होता है। यह फर्म एक्सपोर्ट और इम्पोर्टका काम भी करती है। इसके अतिरिक्त अएडी सिल्कका काम भी यहां होता है।

मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुर

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिक मुर्शिदाबादके निवासी है। इसका हेड आफिस तेजपुर (आसाम) में है। अतएव इस फर्मका विशेष परिचय चित्रों सहित वहां दिया गया है। यहां इसफर्मपर बैंकिंग, हुंडी चिट्ठी, जमींदारी एवम आढ़तका काम होता है। इस फर्मके अण्डरमे और भी आसपास कई शाखाएं है।

मेसर्स शालिगराम राय नोलाल बहादुर

इस फर्मके मालिक डिबरूगढ़में निवास करते हैं, और वहीं इसका हेड आफिस है। यहां इस फर्म पर विशेषकर आसाम आइल कम्पनीकी तेलकी एजेन्सीका काम होता है। इसका पूरा परिचय डिबरूगढ़के विभागमें दिया गया है।

मेसर्स सूरजमल हरि .स

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए ४२ वर्ष हुए। इसमें सूरजमलजी तथा हरिबगसजी का साझा है। सेठ सूरजमलजीका स्वर्गवास हो गया है। इस समय इसका संचालन हरिबगसजी करते हैं। आपके लक्ष्मीनारायणजी नामक एक पुत्र है।

आपकी ओरसे गौहाटी, कामाख्या आदि स्थानोंपर धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गौहाटी—मेसर्स सूरजमल हरिबगस—यहां मूंगासिल्क और, आसाम सिल्कका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है।

गौहाटी—मेसर्स सूरजमल जुहारमल—यहां चांदी, सोना, कपड़ा तथा वर्तनोंका व्यापार होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गनपतराय बाबूलाल
" गनेशदास बद्रीनारायन
" जगन्नाथ शिवलाल
" ऊंठमल महादेव
" तनसुखराय चौदूलाल
" दौलतराम रामगोपाल
" मोहनलाल गोविन्दराम
" शिवलाल हरिबक्ष
" शिवदयाल रामकुंवार

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गणेशदास श्रीराम
" जगरूप भगत महावीरराय
" जगेश्वर उमाचरण
" दासूराम मिर्जामल
" बीजराज हरदयाल
" मोतीचंद चौथमल
" बिशनभगत रघुनन्दनराम
" रामचन्द्र शिवदत्तराय
" रामरिखदास शिवदत्तराय
" कुंजबिहारी ठाकुर

सरसोंके व्यापारी
मेसर्स गणेशदास बद्रीनारायण
,, जेसराज तिलोकचंद
,, नोरंगराय किसनदयाल
लाखके व्यापारी
मेसर्स भोलाराम देवीदत्त
,, रामजीदास मुकुन्दराम
मेच एजण्ट्स
मेसर्स कह्लिक ब्रादर्स
,, आसाम मेच कंपनी लि०
स्टेशनरीके व्यापारी
मेसर्स अब्दुल्ला मोहम्मद
,, गणेशदास बद्रीनारायण
,, सूरजमल कमख्यालाल
,, सूरजमल हरिबक्स
,, शिवदयाल रामकुंवार
,, सांवलराम कस्तूरचंद
कांसा पीतलके व्यापारी
मेसर्स कमख्यालाल मुरलीधर
,, गंगाराम मुकुन्दराम
,, गोविन्दराम चतरभुज

जनरल मरचेण्ट्स
मेसर्स आसफ अली एण्ड सण्स
,, ई० टिम० एण्ड सन्स
,, उसमान गनी ब्रदर्स
,, गुलामरहमान एण्ड सन्स
,, वी० एन० चटर्जी एण्ड सन्स
,, शेख ब्रादर्स
,, एन० पी० गोगोई एण्ड को
,, पी० सी० बरुआ एण्ड ब्रादर्स
मोटरके समानके व्यापारी
मेसर्स आसाम साइकल एण्ड मोटरट्रेडिंग कम्पनी
,, एस० ब्रादार्स कंपनी (cycle)
,, ए० ए० भागी एण्ड सन्स
,, चक्रवर्ती एण्ड को
ड्रगिस्टस एण्ड केमिस्ट्स
गोहाटी फार्मेसी
स्टैण्डर्ड फार्मेसी
होमियोपैथिक फार्मेसी

तेजपुर

यह ब्रह्मपुत्र नदीके किनारे पहाड़ोंपर बसा हुआ बहुत सुन्दर स्थान है। यहांका इतिहास बहुत पुराना है। पुराणोंमें इसका वर्णन मिलता है। कहावत है कि यहांके अग्निपहाड़ नामक स्थानपर भस्मासुर और मोहनीकी बातचीत हुई थी। यही पर विष्णुरूप-मोहनी ने भस्मासुरको भस्म कर डाला था तभीसे इस स्थानका नाम अग्निपहाड़ पड़ा। इस प्रकारकी और भी बहुत सी कहावतें है। यहाकी वर्तमान बसावट बहुत साफ सुथरी एवम सुन्दर है। ऊंची पहाडीपर बसा हुआ होनेकी वजहसे आस पासके सुन्दर सीनोंको देखने रहनेकी इच्छा होती है। उसमें भी खासकर ब्रह्मपुत्रके किनारेके दृश्य तो लाजवाब है। यहासे पास ही वृटिश गवर्नमेंटकी सरहद खतम होती है। उत्तरकी

और भूटानका इलाका शुरू होता है। यहा यात्रियोंकी सुविधाके लिये एक धर्मशाला बनी हुई है।

व्यापार

यहांपर जंगलकी पैदावरका ही विशेषरूपसे व्यापार होता है। पास ही पहाड़ी स्थानोंसे पहाड़ी लोग जंगली उपज जैसे पीपल, मोम, शहद, अगर, गोंद, लाख हाथीदात इत्यादि वस्तुएं लाते हैं और इनके एवजमें नमक, चोनो, कपड़ा आदि गृहस्थीकी आवश्यक वस्तुएं ले जाते हैं।

इसके अतिरिक्त यहासे २० मील दूरीपर लकरा और ३० मील दूरीपर उदाल कुड़ी (दुरंग) नामक स्थान है। यहापर पीपल, मोम, ऊन, कस्तूरी, चंवर, घोड़ा, मिर्च आदि अच्छी पैदा होती है। भूटिया लोग इन्हे लेकर तेजपुरके बाजारमें बेंच जाते हैं और बदलेमें आवश्यकीय वस्तुएं खरीद ले जाते हैं। यही यहांसे जानेवाली वस्तुओंका व्यापार है।

आनेवाले मालमें गल्ला, कपड़ा, नमक, किरोसिन तेल, टीन, किराना आदि विशेष हैं।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स महासिंग राय मेघराज बहादुर

इस फर्मके मालिक मुर्शिदाबादके निवासी हैं। आप ओसवाल वैश्य जातिके श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रतनचंदजी और आपके छोटे भ्राता बाबू महासिंहजीके हाथोंमे सन १८१८ में ग्वाल पाड़ामें, सन् १८२२ में गोहाटीमें और सन् १८२४ मे तेजपुरमे हुआ। उस समय इस फर्म पर रबरका व्यापार, बैंकिंग तथा चाय बगानमें रसद सप्लाई करनेका काम होता था। बाबू महासिंहजीके पुत्र राय मेघराज बहादुर हुए। आपके तथा बाबू मेघराजजीके समयमे इस फर्मको बहुत उन्नति हुई और आसाम बंगाल प्रान्तमें बीसियों शाखाएं स्थापित की गई। आप बड़े व्यापार कुशल और मेधावी सज्जन थे। बाबू मेघराजजीको सन् १८६७ मे ग्वालपारा (दीवान गिरी) के भूटान युद्धके समय गव्हर्नमेंटकी मदद करनेके उपलक्षमे रायबहादुरकी पदवी प्राप्त हुई। आपका स्वर्गवास सन् १९०१ की १२ की जुलाईको हुआ। आपके २ पुत्र हुए। बाबू जालिमचंदजी और बाबू प्रसन्नचंदजी। बाबू जालिमचंदजीके स्वर्गवासी होनेके बाद सन् १९०७ मे दोनों भाइयोंका कुटुम्ब अलग २ हो गया।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक बाबू जालिम चंदजीके पुत्र बाबू धनपतसिंहजी बाबू लक्ष्मीपत सिंहजी बाबू खड्ग सिंहजी बाबू जसवंत सिंहजी और बाबू दिलीप सिंहजी हैं। आप सब शिक्षित सज्जन हैं। इस फर्मके हेड मुनीम स्वर्गीय गोवर्द्धनदासजी संचेती थे। आपने ५० वर्षोंतक इस फर्मका संचालन कर व्यापारको खूब बढ़ाया। वर्तमान इस फर्मके जनरल मैनेजर आपके पुत्र बाबू

स्व० राय मेघराज बहादुर (महासिंह राय मेघराज बहादुर) 'तेजपुर।

बाबू जालमचन्दजी (महासिंह राय मेघराज बहादुर तेजपुर।
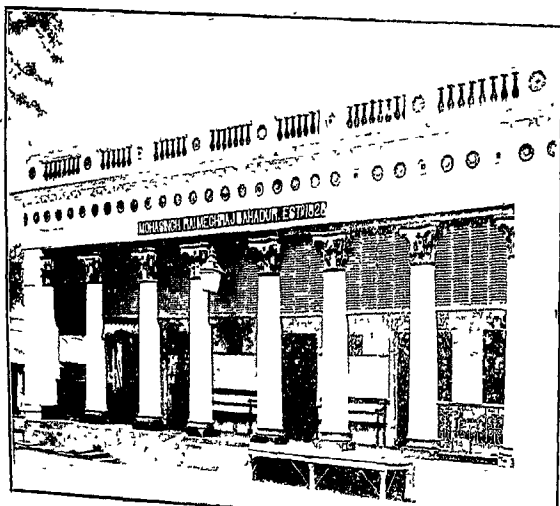
चुन्नीलाल जी संचेती हैं। बाबू पन्नालालजी बड़जातिया तेजपुर फर्मके मैनेजर हैं। आसाम बंगाल प्रान्तमें यह फर्म बहुत पुरानी और प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तेजपुर—मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुर—बेङ्किंग जमीदारी और आढ़तका काम होता है।

गोहाटी—मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुर— " " " "

ग्वालपाड़ा—मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुर—" " " "

विश्वनाथ—मेसर्स महासिंह राय मेघराज बहादुर—" " " "

इसके अतिरिक्त महासिंह राय मेघराज बहादुरके नामसे बड़गांव, उरांग, माणक्याचर, मुर्शिदाबाद, धुलियान, गुटारोही, जीयागंज, सिराजगंज तथा ग्वाल पाड़ामें आपकी स्वतंत्र दुकानें हैं। तथा तेजपुरके अण्डरमें—बाली पाड़ा पुराना घाट, बालीपाड़ा नयाघाट, आदाबाड़ी, बुढ़ागांव नूतन लाइनमें और विश्वनाथके अंडरमें, चुटिया, पामोई, टांगामारी, सांकूमाथा, गंभीरी घाट, कदम तोला, जांजिया, फूल सुन्दरी, झड़ानी, बांसबाड़ी, सूर्सिया, बड़गांव हाट, नौमारी, पावरीपारा, लावखुवा, गारोहिल, आदि स्थानों पर आपकी दुकानें है। जिनपर उपरोक्त प्रकारका व्यापार होता है।

मेसर्स गणेशदास विलासीराम

इस फर्मका स्थापन करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ गणेशदासजीके द्वारा हुआ। आप अग्रवाल वैश्य जातिके रतनगढ़ निवासी सज्जन हैं। आपहीके द्वारा इस फर्मकी उन्नति हुई आपका स्वर्गवास हो चुका है आपके भाई विलासरायजी इस समय फर्मका संचालन करते है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक गणेशदासजीके पुत्र रामकुमारजी तथा रामप्रतापजी और विलासरायजी तथा आपके पुत्र गजाधरजी, जगन्नाथजी और सीतारामजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तेजपुर—मेसर्स गणेशदास विलासीराम—कपड़ा, गल्ला, जूट तथा आढ़तका काम होता है।

तेजपुर—श्रीगणेशदास आईल एण्ड राईसमिल—यहा आपका तेल तथा चावलका मिल है। इसकी स्थापना १८६२ में हुई थी।

कलकत्ता—मेसर्स गणेशदास विलासीराम १८८ क्रास स्ट्रीट—यहा कमीशनएजन्सीका काम होता है।

इसके अतिरिक्त तेजपुर डिस्ट्रीक्टमें आपकी और भी शाखाएं है।

व्यापारियोंके पते

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स किशनचंद मालचंद
- ,, गणेशदास बिलासीराम
- ,, चतुर्भुज पन्नालाल
- ,, भारमल सूरजमल
- ,, रतनचंद खुमानचंद
- ,, हजारीमल मुन्तानमल
- ,, हजारीमल आसकरन सौभागमल

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स गणेशदास बिलासीराम
- ,, भारमल सूरजमल
- ,, रतनचंद खुमानचंद
- ,, महासिंग राय मेघराज बहादुर

जूटके व्यापारी

मेसर्स गणेशदास बिलासीराम
- ,, महासिंग राय मेघराज बहादुर
- ,, रतनचंद खुमानचंद
- ,, हजारीमल आसकरण सौभागमल
- ,, हजारीमल मुल्तानमल

टी प्लेंटर्स

ज्योतिचन्द्र मित्र

रुक्मनी मोहन दे

राधानगर टी स्टेट

रेशम, मूंगा, अंडीके व्यापारी

महासिंग राय मेघराज बहादुर

डिब्रूगढ़

यह स्थान उत्तरीय आसाममें व्यापारकी प्रधान जगह है। यह डी० एस० रेल्वेके अन्तिम स्टेशनपर इसी नामके स्टेशनके पास बसा हुआ है। यहांकी बसावट लम्बी एवम् सुन्दर है। ब्रह्म-पुत्रका किनारा होनेकी वजहसे इसकी सुन्दरता और भी अधिक बढ़गई है। इसके आसपास चायकी बहुत खेती होती है।

व्यापार

यहा पर सभी प्रकारका व्यापार होता है। मगर चाय, चांवल, तेल और कपड़ेका व्यापार प्रधान रूपसे होता है। यहासे हजारों मनकी तादादमें ये वस्तुयें बाहर जाती हैं। इसके अतिरिक्त इसके पासवाले हिमालयके जङ्गलमें बेंत भी बहुत पैदा होती है। यहाके व्यापारी ठेकेपर इन बेंतोंको लेकर जंगलसे मंगवाते हैं तथा फिर बाहर गांव भेजते है।

यहासे बाहर जानेवाली प्रधान वस्तुएं चाय, चावल, तेल, बेंत आदि है। और आनेवाले मालमें कपड़ा, टीन किराना, गल्ला आदि प्रधान हैं।

यहा मालकी आमदनी एवम रफ्तनी दो रास्तेसे होती है। एक जलमार्गसे और दूसरी

स्व० राय बहादुर चन्नीलालजी सरावगी
डिब्रूगढ़

स्व० किशनलालजी माहेश्वरी एम० बी० ई०
डिब्रूगढ़

सेठ ध्यानमलजी पाण्ड्या डिब्रूगढ़

सेठ बिरदीचन्दजी काबा डिब्रूगढ़

स्थलमार्गसे । जलमार्गसे जहाज द्वारा यहा मालकी आमद रफ्त होती है । एवम स्थलमार्गसे रेल्वे द्वारा । स्थलके लिये तो हम उपर रेल्वेका जिक्र करही चुके है। जलसे यहा डिवरूगढ़ घाट नामक स्टीमर स्टेशन है। वहांसे कलकत्ता तक माल आता तथा जाता है।

आजकल यहाके व्यापारमे तिनसुकिया मंडीके आबाद होजानेसे अवश्य कुछ धका लगा है। मगर फिर भी यहांका व्यापार गिरा नहीं है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है

मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

इस फर्ममें सरदारशहरके सेठ शालिगरामजी तथा लालगढ़के राय चुन्नीलालजी बहादुरका साझा है। सेठ शालिगरामजी माहेश्वरी समाजके करवा सज्जन हैं। तथा राय चुन्नीलालजी बहादुर सरावगी जैन जातिके बाकलीवाल सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन १८६१ से स्थापित है। इसके स्थापक उपरोक्त दोनों ही सज्जन हैं। जिस समय आपलोग यहां आये थे आपकी बहुत साधारण स्थिति थी। पर आप बड़े व्यापार कुशल एवम मेधावी सज्जन थे। यही कारण है कि आपने अपनी फर्मकी बहुत उन्नति की। संवत १८५४ में सेठ चुन्नीलालजीको भारत गवर्नमेंटकी ओरसे रायबहादुरकी उपाधि प्राप्त हुई थी। आप दोनों सज्जनोंका स्वर्गवास होगया है।

सेठ शालिगरामजीके चार पुत्र हुए। मगर उनमें तीन सज्जनोंका स्वर्गवास होगया जिनके नाम क्रमशः किशनलालजी, प्रेमसुखजी, तथा रामचन्द्रजी था। चौथे पुत्र श्री वृद्धिचन्द्रजी इस समय विद्यमान है।

राय चुन्नीलालजी बहादुरके तीन पुत्र हुए। बा० मोहनलालजी, बा० निहालचंदजी तथा बा० घनश्यामदासजी। इनमेंसे मोहनलालजीका स्वर्गवास होगया है। आपके कंवरीलालजी नामक एक पुत्र है।

इस फर्ममें लालगढ़ निवासी सेठ छगनमलजी पांड्याका भी साझा है आप भी सरावगी जैन जातिके हैं।

यह फर्म आसाममें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिबरुगढ़—मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर (T. A. Rai Bahadur) यहा बैंकिंग, कंट्राक्टिंग तथा बर्मा आईल कम्पनीको एजेन्सीका काम होता है। यह फर्म इम्पीरियल बैंककी ट्रेझरर है।

कलकत्ता — मेसर्स शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर दही हट्टा (T. A. Hukum) T. No 1807 B. B. इस फर्मपर बैंकिंग, जूट तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

इनके अतिरिक्त गौहाटी, शिलाग, नौगाव, नज़ीरा, जोरहाट, ख :लपाड़ा, तिनसुकिया डिगबोई मारगरेटा, दूमदूमा आदि स्थानोंपर भी आपकी दुकानें है जहा मेसर्स शालिगराम राय चुनीलाल बहादुरके नामसे बैंकिंग, एवम तेलकी एजंसीका काम होता है।

मेसर्स कन्हीराम किशनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतननगर (बीकानेर) का है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन है। इस फर्मका स्थापन करीब ४० वर्ष पूर्व सेठ कन्हीरामजीके द्वारा हुआ। आपके हाथोंसे इसकी अच्छी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास होगया है। वर्तमानमे इस फर्मके संचालक आपने पुत्र किशनलालजी धानुका है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिबरूगढ़—मेसर्स कन्हीराम किशनलाल, यहा कपड़ा, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है। यहा इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है।

मेसर्स गोपालराय सेवाराम

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान मंडावा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके खेमाणी सज्जन हैं। इस फर्मको यहा स्थापित हुए करीब ६५वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवनारायणजी तथा आपके भाई सेवारामजी थे। आप हीके समयमे इसकी उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपकी फर्में भी संवत् १९६० से अलग २ हो गई है।

वर्तमानमे इस फर्मके संचालक सेवारामजीके द्वितीय पुत्र बाबू प्रहलादरायजी है। आपके द्वारका प्रसादजी नामक एक पुत्र है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरूगढ़—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहा बैंकिंग तथा ठेकेदारीका काम होता है। यह फर्म यहाके जंगलोंसे बेत निकलवाकर बाहर चालान करती है।

नारायणगंज—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहा बेतकी बिक्रीका काम होता है।

तारपासा—मेसर्स गोपालराय सेवाराम, यहा भी बेतका व्यापार होता है।

मेसर्स जमनादास रामकुमार

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनादासजी तथा आपके पुत्र बाबू रामकुमारजी
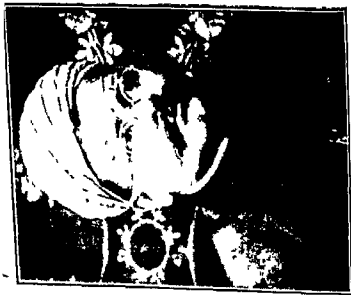
बाबू प्रह्लादरायजी (गुलाबराय सेवाराम)
डिब्रूगढ़ (देखो आसाम पृष्ठ १६)

बाबू भगवान दासजी (ललूराम बैजनाथ)
डिब्रूगढ़ (देखो आसाम पृष्ठ १७)
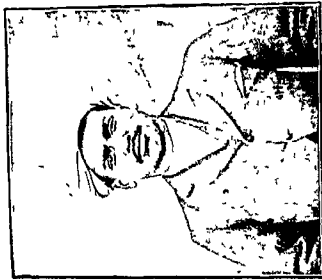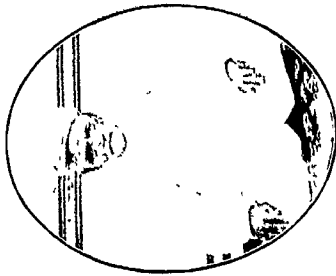
बाबू नरसिंहदासजी (नरसिंहदास सूरजमल)
तिनसुकिया (देखो आसाम पृष्ठ २४)

द्वारकादासजी, ब्रजमोहनजी तथा दुर्गादत्तजी है। आपका विशेष परिचय तिनसुकियामें देखिये। यहां इस फर्म पर बैंकिंग, गल्ला, जमींदारी तथा कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स डालूराम बजनाथ

इस फर्मके मालिक रामगढ (सीकर) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके कयानी सज्जन है। इसफर्मको स्थापित हुए ४० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवदत्तरायजी तथा डालूरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। उपरोक्त फर्म सेठ डालूरामजीके वंशजोंकी है। सेठ डालूरामजीके दो पुत्र हुए। गंगा बिशनजी तथा बैजनाथजी। आपके समयमें इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। आपका भी स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बैजनाथजीके पुत्र बाबू भगवानदासजी तथा बाबू हेमराजजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरूगढ़—मेसर्स डालूराम बैजनाथ, यहा गल्ले तथा कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स किशनलाल हेमराज १६।१।१ हरिसन रोड (T. A. Sidhada'a) यहां चलानीका काम होता है। इस फर्ममें आपका साझा है।

मेसर्स डूंगरसीदास ख्यालीराम

इस फर्मके वर्तमान संचालक डूंगरसीदासजीके पुत्र बाबू ख्यालीरामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके अंसारिया सज्जन है। इस फर्मकी स्थापना करीब ७० वर्ष पूर्व सरदारशहर निवासी सेठ तनसुखरायजी तथा डूंगरसीदासजीने की थी। आप दोनों भाई थे। आपका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू ख्यालीरामजीने यहां एक अंसारिया सोप फैक्टरी नामक साबुनका कारखाना खोला है। इसमें चर्बी आदि अस्पृश्य वस्तुओंका बिलकुल व्यवहार नहीं होता।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरूगढ़—डूंगरसीदास ख्यालीराम रिहावाड़ी, यह फर्म अंसारिया सोप फैक्टरीकी मालिक है। आपके यहां इत्र, तेल, साबुन, शर्बत आदिके तैय्यार करनेका तथा उनकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स बलदेवदास हनुमानबक्ष

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू हनुमान बक्षजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य सरावगी जातिके सज्जन है। इस फर्मका स्थापन संवत् १९२७ है। मगर कई नाम बदलते हुए वर्तमानमें उपरोक्त नामसे यह फर्म व्यापार करती है। इसके संचालक सरल एवं मिलनसार प्रकृतिके व्यक्ति है।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स बलदेवदास हनुमान बक्ष, यहा बैंकिंग, आसाम सिल्क एवं कमीशन एजंसीका काम होता है। यह फर्म टीप्लेंटर्स भी है। इसके कई टी बागान है।

कलकत्ता—मेसर्स ए० डी० लेफ्ट ७४ बड़तल्ला स्ट्रीट, यहा चायकी बिक्री एवं पेकिंगका काम होता है। इसके सोल एजंट हनुमानबक्ष सरावगी है।

डिब्रूगढ़—दी आसाम काटन एण्ड सिल्क फैक्टरी इस नामसे आपकी एक छोटी फैक्टरी है। यहां सिल्क तथा काटनका काम होता है।

मेसर्स बींजराज आसाराम

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू आसारामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। आपकी फर्मको स्थापित हुए करीब ८० वर्ष हुए। पहले इस पर दूसरा नाम पड़ता था इसके मूल स्थापक सेठ नवरंगरायजी थे। पश्चात् रामसुख दासजीने इसके कामको संचालित किया। आपके बींजराजजी तथा ताराचंदजी नामक दो पुत्र हुए। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ बींजराजजीके तीसरे पुत्र है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिब्रूगढ़—मेसर्स बींजराज आसाराम, यहा कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स दुर्गादत्त हरिबक्ष १६१।१ हरिसन रोड, यहा चलानीका काम होता है। इसफर्ममे आपका साझा है।

मेसर्स रामजसराय जैनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतेपुर (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके घेलिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ रामजसरायजीके हाथसे संवत् १९४६ में हुई। आपके द्वारा इसकी उन्नति भी बहुत हुई। आपका स्वर्गवास होगया है। आपके पुत्र बाबू जैनारायणजी इस समय इस फर्मके मालिक है। आप सरल प्रकृतिके व्यक्ति हैं। आपके पुत्रोंका नाम बाबू रामगोपालजी और बाबू मन्नालालजी है। आप दोनों उच्च शिक्षा प्राप्त सज्जन हैं।

स्व० गंगाप्रसादजी केडिया (रामरिखदास गंगाप्रसाद)
डिबरूगढ़

बाबू श्रीनिवासजी केडिया (रामरिखदास गंगाप्रसाद
डिबरूगढ़

बाबू नोपनरायजी केडिया (रामरिखदास गंगाप्रसाद)
डिबरूगढ़

बाबू ज्वालादत्तजी केडिया (रामरिखदास गंगाप्रसाद
डिबरूगढ़

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरुगढ़—मेसर्स रामजसराय जैनारायण, यहां बैंकिंग तथा जमींदारीका काम होता है।

शाल कटा—हाल कटा सॉ मिल्स, यहां आपका लकड़ीका कारखाना है तथा आईलमिल है।

इस फर्मकी ओरसे शीघ्रही डिबरुगढ़में विजली सप्लाय करनेका कारखाना खोला जाने वाला है।

मेसर्स रामरिखदास गंगाप्रसाद

इस फर्मके संचालकोंका निवास स्थान फतेपुर (सीकर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके केडिया सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब ६० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ रामरिखदास थे। आपके तीन पुत्र हुए। जमनादासजी, गंगाप्रसादजी तथा हरिदासजी। सेठ गंगाप्रसादजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापारको विशेष उत्तेजन मिला। आप व्यापार कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास होगया है। संवत् १९७८ में इस फर्मकी तीन शाखाएं होगई।

उपरोक्त फर्मके वर्तमान मालिक गंगाप्रसादजीके पुत्र बाबू श्रीनिवासजी, बाबू नौपदरायजी, एवं बाबू ज्वालादत्तजी हैं। चौथे पुत्र जुगल किशोरजी अपना स्वतंत्र व्यापार करते हैं। इस फर्मकी ओरसे जलालसर (राजपूताना) नामक स्थानमें धर्मशाला कुंआ आदि बने हुए हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

डिबरुगढ़—मेसर्स रामरिख दास गंगाप्रसाद (T A Kedia) यहा बैंकिंग हुंडी चिट्ठी और कमीशन एजंसीका व्यापार होता है। यह फर्म यहांके जंगलोंसे बेत निकलवाती है। तथा बाहर चालान करती है। इसकी यहा चायके बगीचोंमें ६ दुकाने हैं।

डिबरुगढ़—मेसर्स गंगाप्रसाद नवपदराय, यहा कपड़ा, गल्ला तथा किरानेका काम होता है।

कलकत्ता—रामरिखदास गंगाप्रसाद १७३ हरिसन रोड, यहां चलानीका काम होता है।

गोहाटी – रामरिखदास गंगाप्रसाद, यहा आटा मैदा तथा आढ़तका काम होता है।

नारायणगंज —रामरिखदास गंगाप्रसाद, यहां बेतका व्यापार होता है।

चांदपुर—रामरिखदास गंगाप्रसाद यहा भी बेंतका व्यापार होता है।

मेसर्स रामपतदास मोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सरदार शहर (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके चौधरी सज्जन है। यह फर्म यहा संवत् १९२३ से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ

रामपतदासजी थे। आप व्यापार कुशल एवं मेधावी सज्जन थे। आपहीके द्वारा इस फर्मकी विशेष उन्नति हुई। आपके २ भाई और थे, शिवनारायणजी तथा मगनीरामजी। आप तीनोंहीका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ रामपतदासजीके पुत्र फूलचंदजी एवं मगनीरामजीके पुत्र मोहनलालजी हैं। इसकी विशेष उन्नति बा० फूलचंदजीके द्वारा हुई। आप वयोवृद्ध एवं मिलनसार सज्जन हैं। आपके तीन पुत्र हैं। बा० मोहनलालजी, बा० ओंकारमलजी तथा बा० हेमराजजी। बा० मोहनलालजी सेठ मगनीरामजीके यहां दत्तक गये है। आप तीनों ही व्यापारमें सहयोग देते हैं। आपकी ओरसे सरदार शहरमें धर्मशाला, कुआ, कुंड, बगीचा आदि बना हुआ है।

आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :-

डिबरूगढ़—मेसर्स रामपतदास मोहनलाल (T A. mohanlal) यहा बैंकिंग, कंट्राक्टिंग तथा टीबागानमें दुकानदारीका काम होता है। यहा आपकी ७ शाखाएं हैं।

कलकत्ता—मेसर्स मगनीराम फूलचंद १८२ क्रास स्ट्रीट (T A ca vpea) यहा बैंकिंग तथा चलानीका काम होता है।

मेसर्स श्यामलाल रामकुमार

इस फर्ममें मंडावा निवासी बा० श्यामलालजी तथा रामकुमारजीका साझा है। आप दोनों एक ही वंशके है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके खेमाणी सज्जन हैं। इस फर्मकी उन्नति आपहीके हाथोंसे हुई। आप मिलनसार व्यक्ति है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिबरूगढ—मेसर्स नंदराम बालावक्ष—यहा बैंकिंग, मूंगा सिल्क, कस्तूरी आदिका व्यापार होता है। यह फर्म श्यामलालजीकी है।

डिगबोई—मेसर्स श्यामलाल श्रीनिवास—यहा दुकानदारीका काम होता है। इसमें श्यामलालजीका साझा है।

मेनेजिया—यहा भी उपरोक्त नामसे उपरोक्त ही काम होता है।

डिबरूगढ—मेसर्स श्यामलाल रामकुमार—इस नामसे आपका तेल, फ्लोअर तथा आयर्न फाउण्डरीके मिलका काम होता है यह बहुत बडी मिल है।

डिबरूगढ़—सेवाराम रामकुमार यहां बैंकिंग, बेंत तथा जमींदारीका काम होता है। यह फर्म रामकुमारजीकी है।

बाबू फूलचन्दजी चौधरी (रामपतदास मोहनलाल)
डिबरूगढ़

बाबू मोहनलालजी चौधरी (रामपतदास मोहनलाल)
डिबरूगढ़

श्री ओंकारमलजी चौधरी S/o बाबू फूलचन्दजी चौधरी
डिबरूगढ़

श्री हेमराजजी चौधरी S/o बाबू फूलचन्द चौधरी
डिबरूगढ़

मेसर्स शिवदत्तराय प्रहलादराय

इस फर्मको यहां स्थापित हुए ४० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवदत्तरायजी तथा डालू-रामजी थे। आप अग्रवाल वैश्य जातिके कमान सज्जन थे। आपके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। वर्तमान फर्म सेठ शिवदत्तरायजीके वंशजोंकी है। सेठ शिवदत्तरायजीके २ पुत्र हुए श्रीमंगतूरामजी तथा प्रहलादरायजी। मंगतूरामजीका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें इसके संचालक सेठ प्रहलादरायजी तथा आपके ५ पुत्र है। जिनमें बा० किशनलालजी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपकी ओरसे रामगढ़में एक धर्मशाला बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

डिबरूगढ़—मेसर्स शिवदत्तराय प्रहलादराय—यहां कपड़े तथा गल्लेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स किशनलाल हेमराज १६१।१ हरिसन रोड (T. A. Sidhi data) यहां चलानीका काम होता है। इसमें आपका साझा है।

मेसर्स हनुतराम रामप्रताप

इस फर्मके मालिक कालाडेरा (जयपुर) के निवासी हैं। आपलोग अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ७० वर्ष हुए। इस फर्मके स्थापक सेठ हनुतरामजी थे। आपहीके द्वारा इसकी विशेष उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपके रामप्रतापजी तथा रामप्रसादजी नामक दो पुत्र थे। आपका भी स्वर्गवास हो गया है। आप दोनोंके कोई पुत्र न होनेसे आपने बाबू रामेश्वरलालजी को दत्तक लिये है। वर्तमानमें आप ही इस फर्मके मालिक हैं। आपने इस फर्मकी बहुत उन्नति की। यह फर्म यहां अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

यहां मुनीम नथमलजी काम देखते हैं। आप बहुत वर्षोंसे यह काम कर रहे हैं। इस फर्मकी ओरसे यहां एक धर्मशाला और कालाडेरामें कुंआ और औषधालय बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डिबरूगढ़—मेसर्स हनुतराम रामप्रताप बड़ा गोला, यहां बैंकिंग, कमीशनएजंसी तथा जमींदारीका काम होता हैं। यह फर्म कई चाय बागानोंकी मालिक है। तथा चायबगानमें आपकी कई दुकानें हैं। जहां दुकानदारी एवं बैंकिंग बिजिनेस होता है।

बल्लिमारा, सत्यनारायण टी इस्टेट, कठालगुड़ी आदि स्थानोंपर आपके चायके बगीचे हैं।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स कन्हीराम किशनदयाल।
„ चुन्नीलाल रामविलास।
„ जमनादास रामकुमार।
„ डालूराम वैजनाथ।
„ दत्तूराम लक्ष्मीनारायण।
„ दीपचंद शुभकरण।
सेठ नेमचंद सोनावत।
मेसर्स बींजराज आसाराम।
„ बीजराज दुर्गादत्त।
„ वंशीधर बद्रीदास।
„ विलासराय तनसुखराय।
„ रंगलाल रामेश्वर।
„ शिवनारायण मेघराज।

गल्ले और किरानेके व्यापारी

मेसर्स गुलराज बछराज।
„ डालूराम वैजनाथ।
„ टेडराज ब्रह्मदत्त।
„ दत्तूराम लक्ष्मीनारायण।
„ दीपचन्द शुभकरण।
„ फूलचन्द कन्हैयालाल।
„ वन्सीधर बद्रीदास।
„ भगवानदास मोतीराम।
„ भीमराज चौथमल।
„ मंगलचन्द [illegible]।
„ [illegible]।
„ [illegible]।
„ शिवदत्तराय प्रह्लादराय।

मेसर्स सनेहीराम केदारबक्ष।
„ श्रीनिवास हनुमानबक्ष।
„ टीनवाले
„ वंशीधर बद्रीदास।
„ रामपतदास मोहनलाल।

सोना चांदीवाले

„ कनीराम किशनदयाल।
„ खेतसीदास भगवानदास।
„ तनसुखराय फूलचन्द।
„ नन्दराम बालावक्ष।
„ नेमचन्द सोनावत।
„ फूलचन्द ताराचन्द।
„ रंगलाल रामेश्वर।
रामपतदास मोहनलाल।
„ शिवदत्तराय प्रह्लादराय।
„ शालिग्रामराय चुन्नीलाल बहादुर।

मूंगा सिल्क खरीदनेवाले व्यापारी

मेसर्स डूंगरसीदास जानकीलाल।
„ धनराज बीजराज।
„ सरदारमल गीरीदत्त

बेंकर्स

„ भीमराज चौथमल।
„ रामपतदास मोहनलाल।
„ शालिग्राम राय चुन्नीलाल बहादुर।
„ हणुतराम रामप्रताप।

सीमेंटके व्यापारी

„ टेडराज ब्रह्मादत्त।
„ रामपतदास मोहनलाल।
„ शालिग्राम राय चुन्नीलाल बहादुर।

बेनके व्यापारी

मेसर्स रामरीखदास गंगाप्रसाद।

मेसर्स गोपालराम सेवाराम।

लोहेके व्यापारी

मेसर्स गंगाराम पन्नालाल।

„ जमनादास रामकुमार।

„ डेडराज ब्रह्मादत्त।

„ हाजीलख्खू खां।

धान चावलके व्यापारी

मेसर्स रामपतदास मोहनलाल।

„ शालिग्राम राय चुन्नीलाल बहादुर।

„ श्यामलाल रामकुमार (राइस मिल)

इमारती लकड़ीके व्यापारी

„ रामजस राय जयनारायण।

„ रामपतदास रामेश्वर।

टी प्लेन्टर्स

मेसर्स गंगाराम पन्नालाल।

„ नन्देश्वर चक्रवर्ती।

„ प्रसन्नकुमार बड़ुवा।

„ बलदेवदास हनुमान बक्स।

„ रामदेव हीरालाल।

„ हणुतराम रामप्रताप।

मोटर और साइकल असेसरी मरचेण्ट्स

मेसर्स दुर्गादत्त ब्रह्मादत्त।

„ विलासराय खेमानी (cycle)

मेच एजेन्ट

मेसर्स जयचन्दलाल पूनमचन्द।

जनरल मरचेण्ट्स

मेसर्स हाजीलख्खू खां एण्ड सन्स।

हाजी इब्राहीम एण्ड सन्स

तिनसुकिया

यह एक छोटीसी मण्डी है। ए० बी० रेलवे और डी० एस० रेलवेके जङ्कशनपर बसा हुआ होनेकी वजहसे आजकल यहां व्यापारमें बड़ी चहल पहल है। छोटा होते हुए भी व्यापारिक गतिविधीके कारण यह भला मालूम होता है। यहांका प्रधान व्यापार धान चावलका है। तेलका व्यापार भी यहां अच्छा है। धान चावल और तेल ये यहांसे बाहर जानेवाली वस्तुएं हैं और बाहरसे आने वाले मालमें गल्ला, किराना, कपड़ा, टीन, मनीहारी सामान आदि विशेष हैं। इन चीजोंका व्यापार आस पासकी छोटी छोटी बस्तियोंके देहाती आदमियोंके साथ होता है।

तिनसुकियाके पासही मारगरेटा, डुमडुमा आदि मण्डियां हैं। यहाका प्रधान व्यापार भी गल्ले और कपड़ेका है। इसके अतिरिक्त डिगबोई नामक स्थान भी यहांसे पासही है। यहां तेलकी खानें हैं। यहीं आसाम आईल कम्पनीका आफिस है। यहांसे नल द्वारा तेल तिनसुकिया लाया जाता है। पश्चात् टीन और टंकीमें भरकर बाहर भेजा जाता है टीनका भी यहां एक कारखाना है

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीधर

इस फर्मके संचालकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके लोहिया सज्जन हैं। इस फर्मका पूर्व परिचय मेसर्स सनेहीराम डूंगरमलकी फर्मके साथ दिया गया है वर्तमानमें इस फर्मके सञ्चालक सेठ मुरलीधरजी हैं। यहाँ आपकी बहुत जमीदारी है। आपके शिव भगवानजी नामक एक पुत्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तिनसुकिया—मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीधर—यहाँ बैंकिङ्ग, कंट्राक्टिङ्ग जमींदारी तथा कमीशन एजेन्सीका काम होता है। यह फर्म बुढापार एवम् आसाम मेपास नामक टीगार्डन्सकी मालिक है। इसके अतिरिक्त ओखराई उडबीन एवम् चांदमारी नामक स्थानोंपर चुन्नीलाल मुरलीधरके नामसे इस फर्मपर बैंकिङ्ग एवम् दुकानदारीका काम होता है।

मेसर्स जमनादास रामकुमार एण्ड को०

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान लक्ष्मणगढ़ (सीकर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन हुए करीब ५० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ शिवनारायणजी एवं जमनादासजी हैं। शिवनारायणजीका स्वर्गवास हो गया है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक जमनादासजी तथा आपके चार पुत्र हैं। आप लोगोंके नाम क्रमशः बाबू रामकुमारजी, द्वारकादासजी, ब्रजमोहन तथा दुर्गादत्तजी हैं। आप चारों सज्जन व्यक्ति हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

तिनसुकिया—मेसर्स जमनादास रामकुमार एण्डको०—यहा बैंकिंग, जमींदारी, कंट्राक्टिङ्ग, गल्ला तथा कपड़ेका थरू और कमीशन एजेंसीका काम होता है।

तिनसुकिया—मेसर्स ब्रजमोहन दुर्गादत्त—यहा आपका आईल, फ्लोर तथा राईस मिल है। यह फर्म करीब २५०० बीघा जमीनमें चायकी खेती करती है।

डिब्रूगढ़—मेसर्स जमनादास रामकुमार—यहा बैंकिङ्ग, जमींदारी, गल्ला कपड़ा आदिका व्यापार होता है।

मेसर्स नरसिंहदास सूरजमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ नरसिंहदासजी तथा आपके पुत्र बाबू सूरजमलजी हैं। [illegible] जातिके सज्जन हैं। इस फर्मको यहाँ स्थापित हुए ३२ वर्ष हुए।

इसके स्थापक तथा इसकी उन्नति करनेवाले आपही हैं। बा० सूरजमलजीके बा० मुरलीधरजी नामक एक पुत्र हैं। तिनसुकिया दुकानपर मुनीम सूरजमलजी काम करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तिनसुकिया—मेसर्स नरसिंहदास सूरजमल—यह फर्म तिनसुकिया राईस एण्ड आईल मिलकी प्रोप्राइटर है। यहाँ बैंकिङ्ग, कमीशन एजेन्सी, धान, और चावलका काम होता है। यह फर्म दीनजोई टी इस्टेटकी मालिक तथा जवाखन्ध टी इस्टेटकी शेयर होल्डर है।

मेसर्स सनेहीराम डूंगरमल

इस फर्मके संचालक रतनगढ़के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके लोहिया सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १८६६ से स्थापित है। इसके स्थापक सेठ कन्हीरामजी थे। आपके दो पुत्र हुए। मुन्नीलालजी तथा सनेहीरामजी। आप दोनोंके समयमें इस फर्मकी बहुत उन्नति हुई। आपका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें आप दोनों भाइयोंकी अलग अलग फर्में चल रही हैं। उपरोक्त फर्म सेठ सनेही रामजीके वंशजोंकी है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ डूंगरमलजी हैं। आपके चार पुत्र हैं। जिनके नाम क्रमशः बा० दुर्गादत्तजी, ज्वालादत्तजी, शिवभगवानजी तथा गौरीशंकरजी हैं। बाबू दुर्गादत्तजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

स्थानीय सनेहीराम गवर्नमेण्ट एड स्कूल आपहीके द्वारा स्थापित हुआ है। आपकी ओरसे मारवाड़ी संस्कृत कालेज मीरघाटमें भी अच्छी सहायता दी गयी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

तिनसुकिया—सनेहीराम डूंगरमल—यहां बैंकिङ्ग, जमींदारी, और कमीशन एजेंन्सीका काम होता है। यह फर्म शिवपुर टी इस्टेटकी प्रोप्राइटर है।

तिनसुकिया—डूंगरमल दुर्गादत्त—यहां धान, चावल और गल्लेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—सनेहीराम डूंगरमल १७३ हरिसन रोड (T. A. Parbrahma) यहां चलानीका काम होता है।

डूमार—सनेहीराम डूंगरमल —गल्ला तथा केरोसिन तेलका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त गिलापुखरी, घेलाखाद, दुकानपुखरी आदि स्थानोंपर भी सनेहीराम डूंगरमलके नामसे गल्लेका व्यापार होता है।

बैंकर्स एण्ड जमींदार्स

मेसर्स चुन्नीलाल मुरलीधर
„ जमनादास रामकुमार एण्ड को०
„ नरसिंहदास सूरजमल
„ सनेहीराम डूंगरमल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स किशनदयाल नन्दलाल
„ खूबीलाल गजानन्द
„ चन्दूलाल रामानन्द
„ हरदेवदास अर्जुनदास
„ सरावगी एण्ड ब्रदर्स

गल्लेके व्यापारी

मेसर्स अहमद ब्रादर्स
„ चुन्नीलाल मुरलीधर
„ जमनादास रामकुमार एण्ड को०
„ दीनदयाल किशोरीलाल
मेसर्स हुकुमचन्द मदनलाल
„ हुकुमचन्द हरदेवदास
„ हासम कासमदादा
„ हाजी हबीब पीरमहमद

तेलके मिल मालिक

मेसर्स नरसिंहदास सूरजमल
„ ब्रजमोहन दुर्गादत्त

केरोसिन तेलके व्यापारी

मेसर्स जमनादास रामकुमार एण्ड को०
„ शालिगराम राय चुन्नीलाल बहादुर

मनीहारीके व्यापारी

मेसर्स हाजी पूलम मिया
„ हबीबुल्ला शफीबुल्ला

बर्तनके व्यापारी

मेसर्स जमनादास रामकुमार
„ दिलसुखराय रंगलाल

मनीपुर

मनीपुर देशीराज्य है। यह स्थान ए० बी० आरकी मेन लाईनके मनीपुर रोड नामक स्थानसे १३७ मीलकी दूरीपर पहाड़ोंमें बसा हुआ है। यहां जानेके लिये मनीपुर रोड – डीमापुरसे मोटरें जाती हैं। यहाका प्राकृतिक पहाड़ी दृश्य दर्शनीय वस्तु है यहा जानेके लिये एक ही मार्ग है। मार्गकी दोनों ओर बड़े ऊंचे २ पहाड़ हैं। मार्ग इतना तङ्ग है कि एक साथ एकही मोटर जा सकती है। यदि कोई गाड़ी जारही है तो आनेवाली नहीं आ सकती और यदि आ रही है तो जानेवाली नहीं जा सकती। इस लिये स्टेटकी ओरसे प्रबन्ध है कि आने और जानेवाली गाड़िया सवेरे जल्दी छूटती हैं। दोनों ओरका रास्ता रास्तेके एक निश्चित स्थानपर हो जाता है वहींसे जानेवाली गाड़ियां चली जाती हैं एवम् आनेवाली आ जाती हैं।

यहांकी आबहवा सर्द है। यहांके प्राकृतिक सौन्दर्यके साथ स्त्री और पुरुष भी बहुत सुन्दर

होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि यहां जनसंख्यामें सैकड़ा ८३ स्त्रियां और सैकड़ा १७ पुरुष हैं। स्त्रियोंकी इतनी अधिक संख्या होनेकी वजहसे यहांके सामाजिक जीवनमें स्त्रियोंका ही प्राधान्य है। व्यापार वगैरह भी प्रायः स्त्रियां ही करती हैं।

यहांका प्रधान व्यापार सूत, चावल, एवम् मनीपुरी कपड़ेका है। यहांसे हजारों मन चावल वाहर जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहांके बने हुये कपड़े बहुत मशहूर हैं। जो दूसरी जगह मनीपुरी कपड़ेके नामसे प्रसिद्ध हैं। पगड़ियां यहांकी वहुत दूर २ तक जाती हैं। कपड़ा, मूंगा, अएडी और आसाम सिल्कका भी यह अच्छा बाजार है। कपड़ेके सिवाय चावल भी यहां बहुत सस्ता विकता है। कहते हैं यहां -)॥ -)॥। में भी आदमी अपना गुजारा कर सकता है।

वाहरसे आनेवाले मालमें कपड़ा, गल्ला, तेल, चद्दर आदि फुटकर सामान हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुख

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बेरी (जयपुर) है। आपलोग सरावगी समाज के पाटनी सज्जन । सबसे प्रथम सेठ जयसुखलालजी पाटनी स्वदेशसे लगभग ७० वर्ष पूर्व मनीपुर आये और मेसर्स जयसुखलाल कालूरामके नामसे कपड़े तथा सभी प्रकारके आवश्यक मालका व्यापार आरम्भ किया। सम्वत् १९६५ में इस फर्मके मालिक लोग अलग हो गये और सेठ जयसुखलालजीने अपना स्वतंत्र व्यापार मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुखके नामसे आरम्भ किया। व्यापारने थोड़े ही समयमें अच्छी उन्नति की। जहां प्रथम केवल चावलका ही व्यापार प्रधान रूपसे होता था। वहां सरकारी फौजको रसद आदि देनेका कन्ट्राक्ट भी आरम्भ किया गया। व्यापार की उन्नतिके साथ ही फर्मने अच्छी प्रतिष्ठा भी प्राप्त की।

आजकल यह फर्म चावल, सूत, हर प्रकारके मालकी आढ़तका काम, प्राइवेट बैंकिङ्ग तथा रसद देनेका काम करती है। इस फर्मके पास मेसर्स फार्वेस एण्ड फार्वेस कम्पनीकी डीमापुरके लिये दियासलाई की ऐजेन्सी हैं। इसके अतिरिक्त यह फर्म मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स आदिका काम भी करती है। इसके पास मेसर्स जे० मैकजी तथा कान्टीनेन्टल कम्पनीकी मोटर ऐजेन्सी भी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गणेशलालजी पाटनी तथा आपके पुत्र वावू प्रेमसुखजी पाटनी और सेठ गणेशलालजी पाटनीके भाई एवं सेठ मोतीलालजी पाटनीके पुत्र वावू छगनलालजी पाटनी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुख इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां चावल, सूत, राशन कन्ट्राक्ट, दियासलाई, टायर्स, ट्यूबकी एजेन्सी, और प्राइवेट बैंकिङ्गका काम होता है।

मेसर्स जयसुखलाल गणेशलाल डीमापुर—यहां माल सप्लाई तथा आढ़त दारीका काम होता है।

मेसर्स गणेशलाल प्रेमसुख ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता—यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स जमनालाल मांगीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान लोसल (जयपुर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके सिंघाडियां सज्जन है। इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जमनालालजी तथा आपके पुत्र बाबू मांगीलालजी और बाबू हरखचंदजी है।

सेठ जमनालालजी सिंघाड़ियाँ वयोवृद्ध सज्जन हैं। व्यापारका समस्त संचालन कार्य आपके पुत्र बाबू मांगीलालजी देखते हैं। आप शिक्षित युवक है। आपके भ्राता बाबू हरकचंदजीभी व्यापारमें योग देते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स जमनालाल मांगीलाल सदर बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां पेचा पगड़ी तथा सभी प्रकारके मनीपुरी कपड़ेका व्यापार होता है। इसके अतिरिक्त गल्ला माल स्टेशनरी और फेन्सी गुड्स का काम भी होता है।

मेसर्स प्रभूलाल फूलचन्द

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बेरी (जयपुर) है। आपलोग सरावगी समाजके पाटनी सज्जन हैं। यह फर्म यहां सन् १९२६ से स्थापित है। इसके स्थापक बाबू प्रभूलालजी एवम फूलचन्दजी दोनों भाई है। इसके पहले आप लोग मङ्गलचन्द कालूरामकी फर्ममें सामीदार थे। आप ही दोनोंके हाथसे इसकी उन्नति हुई है। आप सज्जन और व्यापार कुशल व्यक्ति है। इस फर्मके वर्तमान मालिक आप ही लोग है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स प्रभूलाल फूलचन्द्र मैक्सुमल बाजार इम्फाल (मनीपुर स्टेट)—यहां फर्मका हेड औफिस है। तथा मनीपुरी कपड़ा, चावल, लाल मिर्च, गुड़, घी का काम होता है। मोट पार्टसकी बिक्री भी होती है।
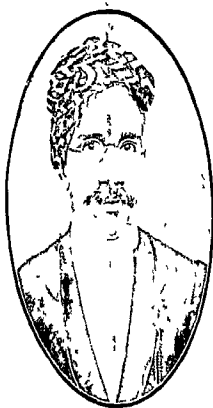
बाबू कस्तूरचन्दजी पाटनी (मगलचन्द कस्तूरचन्द)
मनीपूर (देखो आसाम पृ० २६)

बाबू भैरोंदानजी (भैरुंदान भगवान दास)
मनीपूर (देखो आसाम पृ० २६)

बाबू बद्रीनारायणजी सिंहानिया (शिवनारायण विलासीराम)
डीमापुर (देखो आसाम पृ० ३५)
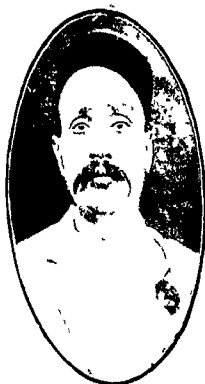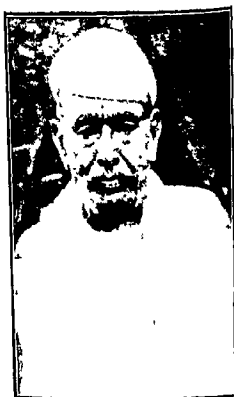
बाबू जयनारायणजी (जयनारायण सनेहीराम)
गोहाटी (देखो आसाम पृ० ८)

मेसर्स प्रभूलाल फूलचन्द मु०. कानकोपी मनीपुर स्टेट—यहां प्रधान रूपसे कपड़े की बिक्री तथा घीकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स कालूराम प्रभूलाल मु० लोकरा जि० तेजपुर—यहां सरकारी पल्टनके रसद देनेका कन्ट्राक्ट हैं।

मेसर्स कालूराम प्रभूलाल डीमापुर, रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां जेनरल मर्चेन्ट और कमीशन ऐजेन्टका काम होता है। आपके यहां आर्डर स्प्लाई और फार्वर्डिङ्ग ऐजेन्टका काम भी होता है।

मेसर्स कालूराम मङ्गलचन्द ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता—यहां सभी भाइयोंका सम्मिलित काम है। यहां पर चालानीका काम विशेष रूपसे होता है

मेसर्स भैरवदान भगवानदास

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बीकानेर है। आपलोग माहेश्वरी समाजके मोहता सज्जन हैं। मनीपुर विद्रोहके समय सेठ बनेचन्दजी मोहता यहां आये और आपने व्यापार करनेके लिये मेसर्स बनेचन्द चतुर्भुजके नामसे फर्म खोली। सम्वत् १९५० में सेठ भैरवदानजी भी यहीं आ गये, और व्यापारमें सहयोग देने लगे। बहुत दिन तक व्यापार इसी नामसे होता रहा पर सम्वत् १९६३ में मालिकोंके अलग हो जानेके कारण सेठ भैरवदानजीने अपना स्वतंत्र व्यापार मेसर्स भैरवदान भगवानदासके नामसे आरम्भ किया जो आज भी अपना पूर्ववत व्यापार करते जा रहे है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भैरवदानजी तथा आपके पुत्र बाबू नथमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स भैरवदान भगवानदास सदर बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां सभी प्रकारके मनीपुरी कपड़ेका तथा चावलका काम होता है। सोना चांदीका तथा सभी आवश्यक वस्तुओंका व्यवसाय भी यहां होता है।

मेसर्स बनेचन्द भैरवदान डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां भी मनीपुरी कपड़ा, चावल, सोना, चांदी आदिका काम होता है।

मेसर्स मंगलचन्द कस्तूरचन्द

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बेरी (जयपुर) है। आपलोग सरावगी समाजके पाटनी सज्जन हैं। आजसे लगभग ७० वर्ष पूर्व इम्फाल (मनीपुर स्टेट) में

जो फर्म मेसर्स जयसुखलाल कालूरामके नामसे स्थापित हुई थी उसी फर्मसे अपना व्यापारिक सम्बन्ध अलग कर सेठ कालूरामजीने सम्वत् १९७१ में अपनी स्वतन्त्र फर्म मेसर्स कालूराम मङ्गलचन्दके नामसे स्थापित कर व्यापार आरम्भ किया। व्यापारमें आपने अच्छी सफलता प्राप्त की। जहां आरम्भमें इस फर्मपर केवल कपड़ेका ही काम होता था। वहां क्रमशः चावल, मोटर पार्ट्स आदिका काम भी होने लगा और मोटर कम्पनी एलेनबेरीकी एजेन्सी भी इस फर्मने ली। इसी प्रकार सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट भी लिया। इस प्रकार व्यापार उन्नत अवस्था पर पहुंचा परन्तु सन् १९२६ में इस फर्मके मालिक अलग हो गये और सेठ कस्तूरचन्दजीने अपने बड़े भाई सेठ मङ्गलचन्दजीके साथ मेसर्स मङ्गलचन्द कस्तूरचन्द नामसे व्यापार आरम्भ किया। इस फर्मपर पहिलेकी भांति राशन कन्ट्राक्ट, मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स, मेसर्स ऐलेनबेरी नामक मोटर कम्पनीकी ऐजेन्सी आदिका व्यापार होने लगा जो अब भी पूर्ववत् हो रहा है। इसी बीच सन् १९२८ ई० में सेठ कालूरामजीका स्वर्गवास हो गया।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मङ्गलचन्दजी पाटनी और सेठ मङ्गलचन्दजीके पुत्र बाबू मेघराजजी तथा सेठ कस्तूरचन्दजीके पुत्र बाबू जौहरीमलजी, बाबू माणिकचन्दजी तथा बाबू ताराचन्दजी हैं।

इस फर्मका वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स मङ्गलचन्द कस्तूरचन्द सैक्सुबल बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां इस फर्मके व्यापारका हेड आफिस है। यहां कपड़ा, धान, चावल तथा सभी प्रकारके मनीपुरी मालका काम है। मोटरपार्टस, ट्यूबटायर्स आदिकी मेसर्स ऐलेनबेरीकी ऐजेन्सी है। राशन कन्ट्राक्टका काम भी होता है।

मेसर्स कस्तूरचंद जौहरीमल कोहिमा जि० नागाहिल्स—यहां गल्ला कपड़ा, सूत, आदि का काम है। और विशेषरूपसे यहां सरकारी कंट्राक्टका काम है।

मेसर्स मङ्गलचंद कस्तूरचंद डीमापुररेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां चावलका काम प्रधान रूपसे होता है। और फार्वर्डिंग ऐजेन्सी का काम भी है।

मेसर्स मङ्गलचंद कस्तूरचंद सदिया जि० लखीमपुर—यहां सरकारकी सीमास्थित फौजको रसद देनेके कंट्राक्टका काम होता है।

मेसर्स कालूराम मङ्गलचंद ४६ स्ट्रैण्ड रोड कलकत्ता T A Parpatni—इस फर्मपर अभी स्वयं सेठ कालूरामजी पाटनीके छहों पुत्रोंका सम्मिलित काम है। यहां चालानीका काम होता है।

मैसर्स लादूलाल चतुर्भुज

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान छापड़ा (जयपुर) है। आप लोग दिगम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना आजसे २५ वर्ष पूर्व नागा पहाड़ीपर बसे हुए कोहिमा नगरमें हुई थी जहां आज भी पूर्ववत् व्यापार हो रहा है। इम्फालमें इस फर्मकी स्थापना आजसे लगभग १० वर्ष पूर्व हुई थी। फर्मके संचालकोंकी तत्परतासे फर्मने उन्नति की ओर पैर उठाया है। इस स्थानपर होने वाले चावल, लाल मिर्च आदिके व्यापारके अतिरिक्त यह फर्म प्रधानरूपसे मनीपुरी कपड़ेको चलानीकी काम ही करती है यहां आसाम सिल्क, मूंगा, और अण्डीकी चलानीका काम जोरसे होता है। यह फर्म अच्छे परिमाणमें 'अरीकोलन' अर्थात् अण्डी रेशमकी कुसियारी जिससे अण्डीका रेशम तैयार होता है बाहर भेजती है और साथ ही मनीपुरसे बाहर जाने वाले सभी प्रकारके मालको भेजनेका काम करती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ लादूलालजी तथा सेठ चतुर्भुजजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स लादूलाल चतुर्भुज इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां मनीपुरी कपड़ेका तथा अण्डी, मूंगा, और आसाम सिल्ककी चलानीका काम होता है। चावल लाल मिर्चका व्यापार भी होता है।

मेसर्स लादूलाल चतुर्भुज कोहिमा नागापहाड़ी आसाम—यहां मोमकी तथा कपासकी खरीदी और नमक तथा सूतकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स लच्छमणराम भूरामल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बेरी (जयपुर) है। आप लोग सरावगी समाजके सेठी सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक सेठ भूरमलजी सम्वत् १९४२ के लगभग देशसे मनीपुर आये। यहां आकर आपने अपनी फर्म खोली तबसे यह फर्म बराबर अपना व्यापार करती आ रही है। आरम्भमें इस फर्मपर केवल कपड़ेका काम होता था परन्तु ज्यों २ व्यापारमें उन्नति हुई त्यों त्यों कपड़ेके अतिरिक्त चावल, सोना, चांदी आदिका काम भी खोला गया।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ गूगनरामजी तथा आपके छोटे भाई सेठ मुरलीधरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरमल इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहां कपड़ा, चावल, सोना, चांदी का काम होता है। तथा सभी प्रकारके मनीपुरी मालकी खरीद बिक्रीका काम है।

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरमल मु० सिंगमई पो० इम्फाल, मनीपुर स्टेट—यहा कपड़ा, चावल आदिकी खरीद और बिक्रीका काम है।

मेसर्स खेतराज भूरमल कोहिमा नागाहिल्स यहा कपड़ा, सूत, नमक आदिकी बिक्री तथा धान चावलकी खरीदीका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मणराम भूरमल डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर—स्टेट फर्वर्डिङ्ग ऐजेन्सीका काम होता है।

मेसर्स सदासुख मनसुख

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान नागोर (मारवाड़) है। आप लोग सरावगी समाजके पहाड़या सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक स्व० सेठ सदासुखजी देशसे सम्वत् १९३५ के लगभग आसाम प्रान्तके डिब्रूगढ़ नामक स्थानमें आये और मेसर्स सदासुख मनसुखके नामसे कपड़ेका काम आरम्भ किया। धीरे धीरे गल्लाका भी व्यापार करने लगे। कुछ समय पश्चात् आप मनीपुर आये और मेसर्स सेरमल सदासुखके नामसे कपडेका काम आरम्भ किया। आपको यहांके व्यापारमें अच्छी सफलता मिली अतः व्यापारने अच्छी उन्नति की। इस नामसे बर्षोंतक व्यापार होता रहा पर सन् १९२८ ई० के मई माससे मालिक लोग अलग हो गये। अतः उपरोक्त फर्मके प्रधान संचालक सेठ मनसुखजीने अपना व्यापार मेसर्स सदासुख मनसुखके नामसे आरम्भ किया जो पूर्ववत् उन्नत अवस्थामें आज भी हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मनसुखजी तथा स्व० सेठ सदासुखजीके पुत्र बाबू झूमरमलजी, और स्व० सेठ सदासुखजीके भाई स्व० सेठ मूलचन्दजीके पुत्र बाबू हरखचंदजी तथा सेठ सदासुखजीके भाजे बाबू किशनलालजी और बाबू सूरजमलजी हैं।

इस फर्मका वर्तमान व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सदासुख मनसुख सदर बाजार इम्फाल मनीपुर स्टेट—यहा फर्मके व्यापारका हेड आफिस है। यहा प्रधान रूपसे कपड़ा, सुत और चावल का काम होता है। सोना, चांदी, किराने इत्यादिमालका भी काम होता है। आसाम आइल कम्पनीकी ऐजेन्सी तथा इम्पीरियल टौबेको कम्पनीकी ऐजेन्सी भी इस फर्म पर है। यह फर्म पोलीटिकल ऐजेन्ट इन मनीपुर स्टेटकी फार्वर्डिङ्ग ऐजेन्ट भी है। यहासे मनीपुरी कपड़ा बाहर भेजा जाता है। यहा प्राइवेट बैंकिङ्गका काम भी है।

मेसर्स सदासुख मनसुख डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहा फार्विडिङ्ग ऐजेन्सीका काम होता है।

मेसर्स सदासुख मनसुख डिब्रूगढ़—यहां कपड़ा, सूत, चावल, सोना, चांदी, किराना, गल्ला, पेट्रोल, सिगरेट, आदिका काम है। प्राइवेट बैंकिङ्गका काम भी यहां होता है।

मेसर्स सदासुख मनसुख मु० लायमेकुरी जि० डिब्रूगढ़—यहां सरकारका लकड़ीका जो कारखाना है। उसमें काम करनेवालोंकी सुविधाके लिये यह फर्म सभी प्रकारका आवश्यक माल रखती है।

इसके अतिरिक्त इस फर्मकी दुकानें इम्फाल नगरके मेक्सुअल बाजार तथा मनीपुर राज्य के कानकोपी, कैथी मास्वी, तथा थोपार नामक स्थानोंपर हैं जहां कपड़ा, चावल, सूत आदिका काम होता है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुखराय

इस फर्मके संचालक रतननगर (बीकानेर) निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके जीवराजका सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीब २१ वर्ष हुए। इसके पहले यह फर्म शिलांगमें रसद सप्लाई और कन्ट्राक्टिंगका काम करती थी। इसके स्थापक सेठ सनेहीरामजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। आपने मनीपुरके पासही एक तालाब बनवाया है। आपके पश्चात् इस फर्मका संचालन सेठ तनसुख रायजीने किया। आपके समयसेही इस फर्मपर मनीपुर दरबारकी फारवर्डिंग ऐजेन्सी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व० सेठ सनेहीरामजीके पुत्र बाबू रामकुमारजी तथा स्व० सेठ तनसुखरायजीके पुत्र बाबू हनुमान प्रसादजी तथा बाबू हरिप्रसादजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुखराय सदर बाजार इम्फाल, (मनीपुर स्टेट)—यहां राशन कण्ट्राक्ट, मनीपुर स्टेटके बिल्डिङ्ग रोड आदिका कण्ट्राक्ट, फोर्ड मोटरकी ऐजेन्सी, मोटर पार्टसकी एजेन्सी तथा चावल, सूत और मनीपुरी कपड़ेका काम होता हैं। मनीपुर दरबारके फार्वडिङ्ग ऐजेन्सीका काम भी होता है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुख राय मैक्सुअल बाजार इम्फाल (मनीपुर स्टेट)—यहां मनीपुरी कपड़े, बर्त्तन तथा मोटर एजन्सीका काम होता है।

मेसर्स सनेहीराम तनसुखराय डीमापुर, स्टेशन मनीपुर रोड—मनीपुर दरबारके फार्वडिंङ्ग ऐजेण्ट हैं तथा गल्ला कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स हजारीमल दुलीचन्द

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान वेरी (जयपुर) है। आप लोग सरावगी समाज

पाटनी सज्जन हैं। आप लोग स्व० सेठ कालूरामजीके पुत्र हैं। सन् १९२६ में कालूरामजीके पुत्र अलग होकर अपना व्यापार स्वतन्त्र रूपसे करने लगे तो बाबू हजारीमलजीने अपने भाई बाबू दुलीचन्दजीके साथ मेसर्स हजारीमल दुलीचन्द नामकी यह फर्म खोली पूर्व व्यापारक्रमके अनुसार इस फर्मपर भी मनीपुर कपड़े, चावल, तथा सूत आदिका व्यापार होता है।

इस फर्मके मालिक सेठ हजारीमलजीके पुत्र बाबू महादेवजी तथा सेठ दुलीचन्दजीके पुत्र बाबू कुन्दन मलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स हजारीमल दुलीचन्द मैक्सुमल बाजार इम्फाल—यहाँ फर्मका हेड आफिस है। तथा कपड़ा चावल आदि सभी प्रकारके मनीपुरी मालका व्यापार और सूतका काम होता है।

मेसर्स कालूराम हजारीमल डीमापुर, रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड—यहां फार्वर्डिंग ऐजेण्टका काम होता है।

मेसर्स कालूराम हजारीमल कोहिमा, जिला नागा हिल्स—यहां नमक, तेल, सूत तथा गल्ला मालका काम है ओर सरकारी पलटनकी रसदका कण्ट्राक्ट है।

मेसर्स कालूराम मंगलचन्द ४६ स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता—यहा सभी भाइयोंका सम्मिलित व्यापार पूर्ववत् होता है। यहां प्रधान रूपसे चलानीका काम होता है।

डीमापूर

आसाम बङ्गाल रेलवेकी मेन लाईनपर मनीपुर रोड नामक स्टेशनके पास ही यह मण्डी बसी हुई है। यह एक बहुत छोटी मण्डी है। पर फिर भी फारवर्डिंग स्टेशन होनेकी वजहसे यहा काफी गति विधि रहती है। यहांपर विशेष व्यापार लकड़ी एवम चावलका होता है। चावल मोटर-लारियों द्वारा मनीपुरसे यहा आता है। एवम यहांसे हजारों मन बाहर दिसावरोंमें भेजा जाता है। यहांपर भी कई अच्छे अच्छे व्यापारियोंकी फर्में हैं। इनके हेड आफिस प्रायः मनीपुरमें है। मनीपुरके व्यापारियोंने माल मंगवाने एवम भेजनेकी सुविधाके लिये यहा दुकानें खोल रखी हैं। यहासे मनीपुर स्टेट (इम्पाल) को मोटर जाती है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है

मेसर्स कालीचरनराम बलदेवराम

इस फर्मके मालिक बलिया जिलेके रहने वाले वैश्य सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना बाबू

कालीचरनजीने १८ वर्ष पूर्वकी थी। आरम्भमें इस फर्मने साधारण स्थितिसे काम किया पर आज यह फर्म कपड़ा, गल्ला, बर्तन आदि सभी आवश्यक वस्तुओंका व्यापार करती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

डीमापुर—मेसर्स कालीचरन राम बलदेव राम यहां कपड़ा, बर्तन, और गल्ला मालका व्यापार होता है।

बोकाजान (शिवसागर)—मेसर्स जमुनाराम शिवधनी, यहां लाख, तिल, कपासकी खरीदीका और कपड़ा, बर्तन, गल्ला मालकी बिक्रीका काम होता है।

मेसर्स तनसुखदास जयनदास

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बीकानेर है। आप लोग ओसवाल समाजके सोखानी सज्जन हैं। इस फर्मके संस्थापक सेठ लूनकरणजी लगभग ६० वर्ष पूर्व डीमापुर आये और यहां आपने मेसर्स रामलाल लूनकरणके नामसे गल्ले मालका व्यापार आरम्भ किया। ३० वर्षके बाद मालिक लोग अलग हो गये और सेठ लूणकरजीके पुत्र सेठ घेवरचंदजीने मेसर्स घेवरचंद तनसुखदासके नामसे व्यापार आरम्भ किया। पर ७ वर्ष बाद ये लोग भी अलग हो गये तब सेठ तनसुख दासजीने मेसर्स तनसुखदास जयनदासके नामसे व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है।

यह फर्म प्रधान रूपसे लाख, अण्डी रेशमकी कुसियारी तथा सरसों और कपासका काम करती है।

इस फर्मके मालिक सेठ तनसुखदासजी तथा आपके पुत्र बाबू जयनदासजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स तनसुखदास जयनदास डीमापु रे० स्टे० मनीपुर रोड यहां लाख, अण्डी रेशमकी कुसियारी, कपास, तिल, सरसों, कपड़ा आदिका काम होता है।

मेसर्स शिवनारायण विलासीराम

इस फर्मके संचालक लोसल (जयपुर-स्टेट) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सिंघाणियां सज्जन हैं। इस फर्मको यहा स्थापित हुए करीब १६ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ विलासी रामजी हैं। इसके पहले यह फर्म सिराजगंज आदिस्थानोंमें व्यापार करती थी।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ विलासीरामजी, तथा आपके भाई बद्रीनारायणजी है। आप लोग व्यापार दक्ष सज्जन हैं। सेठ विलासीरामजीके लक्ष्मीनारायणजी नामक एक पुत्र हैं। आप शिक्षित सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स शिवनारायण विलासीराम डीमापुर रेलवे स्टेशन मनीपुर रोड T. A. Bilasiram—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है। यहां चावल आदि सभी प्रकारके मनीपुरी मालकी आढ़तका काम होता है। महाजनी लेन देनका काम भी होता है।

मेसर्स शिवनारायण विलासीराम डीफू जि० नवगाव—यहां इस फर्मका लकड़ीका कारखाना है। यहां इमारती लकड़ी सप्लाईका काम होता है। रेलवे कम्पनियोंको स्लीपर्स सप्लाई करनेका ठेका भी लिया जाता है।

मेसर्स शिवनारायण विलासी राम, बोकाजान जि० शिवसागर—यहा जंगली प्रदेशकी सभी प्रकारकी उपज जैसे कपास, सरसों, अरण्डी रेशमकी कुसियारी तथा लाख आदि संग्रह कराने और उसे आसाम प्रान्त तथा अन्य प्रान्तोंको भेजनेका काम है। यहां वेंत और चावल मोगरा संग्रह कर बेंचनेका सरकारी ठेका भी इसी फर्मके पास है।

सिलचर

यह भी एक पहाड़ी स्थान है। ए० बी० आरके बदरपुर जंकशनसे एक लाईन सिलचर तक गई है। इसका आखरी स्टेशन सिलचर ही है। यहा पर विशेषकर चाय एवम कपासका व्यापार होता है। चाय तो यहा पासही पहाड़ोंपर पैदा होती है। मगर कपास यहांसे कुछ दूरीपर होता है पहाड़ोंपरसे किसान लोग जंगलमें एक निश्चित स्थानपर आ जाते हैं और साथमें कपास ले आते हैं। व्यापारी लोग मोटर या किसी सवारीमें कच्चे रोड द्वारा चलेजाते हैं। और वहीं किसानों तथा व्यापारियोंका सौदा तय होजाता है। इस प्रकार यहाके व्यापारी कपासका व्यापारकरते हैं। यहाका कपास साधारण क्वालिटीका होता है।

चाय बागानकी वजहसे यहा मजदूर लोगोंकी बस्ती बहुत है। इस लिये यहा साधारण दुकानदारोका व्यापार ही अधिक है

यहासे बाहर जानेवाली वस्तुओंमे चाय और कपास एवम् जंगली पैदावार है एवम् आनेवाले मालमे प्रायः सभी प्रकारका गृहस्थीका समान है।

मेसर्स छोटेलाल सेठ एण्ड को०

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान आगरा है। आप लोग वैश्य समाजके खण्डे-

ल्वाल सज्जन हैं। लगभग २० वर्षसे बाबू छोटेलालजी सिलचर रहते हैं। आपकी फर्मपर मोटर पार्ट्‌स, मोटर ऐसेसरीज, ट्यूब, टायर्सका काम होता है। इसी प्रकार धान, चावल तथा पाट आदिका व्यापार होता है। फर्मके पास सरकारी फौजको रसद देनेका कण्ट्राक्टका काम है। यह फर्म मेसर्स राली-ब्रदर्सको कपास सप्लाई करती है।

बाबू छोटेलालजी प्रभावशाली व्यक्ति हैं और यहांके प्रतिष्ठित व्यापारी तथा सुसभ्य नागरिक हैं। आप सभी सार्वजनिक कार्योंमें प्रमुख भाग लेते हैं। आप यहांकी म्यूनिसिपैलिटीके म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं। यहांकी बिजली कम्पनीके आप डायरेक्टर हैं। इसी प्रकार आप कितनी ही संस्थाओंके सदस्य एवं पदाधिकारी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स छोटेलाल सेठ एण्ड को० यहां फर्मका हेड आफिस है। तथा मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स, और मोटर असेसरीजका काम होता है।

सिलचर मेसर्स छोटेलाल ओंकारनाथ—इस नामसे इस फर्ममें देशी कारबार होता है।

मेसर्स जेसराय रामप्रताप

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान सरदारशहर (बीकानेर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके कन्दोयी सज्जन हैं। इस फर्मका हेड आफिस तिनसुखिया है इसकी एक ब्रांच सन् १९२० में सिलचरमें खोली गयी। यह ब्रांच चावलका व्यापार प्रधान रूपसे करने लगी। इसे व्यापारमें अच्छी सफलता मिली फलतः सन १९२५ में एक चावलका मिल भी शिवशङ्कर राइस मिल्सके नामसे यहां खोला गया जो अच्छी उन्नत अवस्थामें है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स जेसराय रामप्रताप यहां धान तथा चावलका व्यापार प्रधान रुपसे होता है।

तिनसुखिया मेसर्स जेसराय रामप्रताप यहां फर्मके कारवारका हेड आफिस है।

मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके चौदगोड़िया सज्जन हैं। लगभग ४० वर्ष पूर्व सेठ दुर्गाप्रसादजी स्वदेशसे आसाम प्रान्तके सिलचर नगर आये और मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायणके नामसे कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। इसके बाद क्रमशः धान, चावल, तथा सभी प्रकारके गल्ले मालका व्यापार भी आपने आरम्भ

किया। सं० १९५६ में आपने लूशाई पर्वतश्रेणीके दुर्गम पहाड़ी प्रदेशान्तर्गत ऐजल नामक स्थानमें अपनी दूसरी फर्म खोली। यहां आप मालका वहुत बड़ा स्टाक रख व्यापार करने लगे। कुछ ही दिन वाद यहां रहनेवाली सरकारी सैन्यको रसद देनेका कन्ट्राक्ट भी आपने लिया जो आज भी आपके ही हाथमें है। इसी प्रकार सिलचरमें भी सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट इसी फर्मके पास है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ दुर्गाप्रसादजी तथा आपके पुत्र वाबू लक्ष्मीनारायणजी, वाबू विहारीलालजी, वाबू गणेशप्रसादजी, बाबू भोमलालजी और वाबू सोहनलालजी हैं।

इस फर्मजा व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर कछार मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण यहां फर्मका हेड आफिस है। धान, चावल, कपड़ा आदिका व्यापार होता है। तथा सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट है।

ऐजल मेसर्स दुर्गाप्रसाद लक्ष्मीनारायण यहा सभी प्रकारकी आवश्यक वस्तुओंका ऊंचा व्यापार है। सरकारी पल्टनको रसद देनेका कन्ट्राक्ट भी है।

मेसर्स सेढ़मल मांगीलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान मीठड़ी (जोधपुर) है। आपलोग गाड़ोदिया अग्रवाल सज्जन हैं। आजसे लगभग १२ वर्ष पूर्व सेठ सेढ़मलजी सिलचर आये और यहां आपने मेसर्स सेढ़मल मांगीलालके नामसे चायका व्यापार आरम्भ किया। यह फर्म सिलचरमें चाय खरीदती और कलकत्ते भेजती थी। इसके वाद ही फर्मने चावलका काम भी खोला और आसामके विभिन्न स्थानोंको चावल भेजने लगी। इस फर्मको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। सन् १९२६ में सेठ सेढ़मलजीने एक चायका वगीचा खरीदा इस जिसे आप सब विधि उन्नत अवस्थापर पहुंचाकर संचालित कर रहे हैं। इसके वाद आपने कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया जो आज भी पूर्ववत् हो रहा है। आपने एक और नवीन वगीचा तैयार कराया है जो अच्छी उन्नति कर रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ वच्छराजजी, सेठ सेढ़मलजी तथा सेठ जेठमलजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर मेसर्स सेढमल मागीलाल यहा चाय, चावल, कपड़ा, और गल्ला मालका काम होता है। चावलकी आढ़तका काम भी है। महाजनी लेनदेन भी होता है। यहा पर आपकी स्थायी सम्पत्ति तथा जमींदारी है।

स्व० गुलराजजी गाड़ोदिया (सेढ़मल मांगीलाल)
सिलचर

बा० सेढमलजी गाडोदिया (सेढमल मांगीलाल)
सिलचर
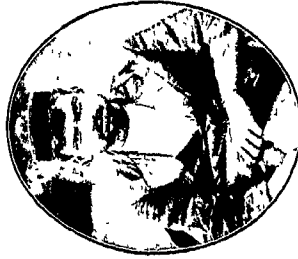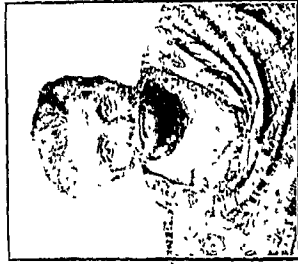
बा० रामकन्हाई मुईयां (हरिश्चन्द्र रामकन्हाई)
सिलचर

डिहावाड़ी (डिबरुगढ़) मेसर्स गुलराज वच्छराज मो० यहां हेड आफिस है। कपड़ा, चाय, चावल, गल्लाका व्यापार तथा महाजनी लेनदेन होता है।

इस फर्मके पास दो चायके वगीचे हैं।

१ नोअर वन्द टी० कम्पनी	}	पो० Doarband
२ सरस्वती टी० स्टेट	}	(Cochar)

मेसर्स हरिश्चन्द्र रामकन्हाई भुइय्यां

इस प्रतिष्ठित फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान गोपालदेयी, जि० ढाका है। आप लोग वैश्य समाजके सज्जन है। इस फर्मके आदि संस्थापक बाबू हरिश्चन्द्र भुइय्यांने लगभग ६० वर्ष पूर्व अपने जन्मस्थान गोपालदेयी बाजारमें मेसर्स हरिश्चन्द्र रामकन्हाई भुइय्यांके नामसे व्यापार आरम्भ किया। आपको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली और आपने अपना व्यापार विस्तृत करना आरम्भ कर दिया। प्रथम कलकत्तेमें आपने अपनी फर्म खोली फिर क्रमशः बंगाल और आसामके कितने ही नगरमें शाखायें खोलीं। आपके स्वर्गवासी होनेके बाद आपके पुत्र बा० रामकन्हाई भुइय्याने व्यापारको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया। आप सन् १६१२ में स्वर्गवासी हुए और व्यापारका संचालन आपके भाई बाबू चन्द्रमाधव भुइय्यां और इनके बाद बाबू दारोगानाथ भुइय्यांके हाथों हुआ।

इस समय इस फर्मका संचालन प्रधान रुपसे बाबू कैलाशचंद्र भुइय्यां करते है और आपके आदेशानुसार विभिन्न विभागोंकी व्यवस्था बाबू रेवतीमोहन भुइय्यां, बाबू शशिमोहन भुइय्यां तथा बाबू दशरथ भुइय्यां करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलचर कच्छार मेसर्स हरिश्चन्द्र रामकन्हाई भुइय्यां—यहा फर्मका हेड आफिस है। तथा सभी प्रकारकी ऐजेन्सियोंका प्रवन्ध आफिस है। वर्मा आइल कम्पनी, सुरमा आइल कम्पनी और वर्नर मारड एण्ड को० की यहां ऐजेन्सी है। जमीदारी और आढ़तदारीका काम भी होता है। हुण्डी चिठ्ठीका काम भी है चाय बगानोंके साथ बहुत बड़ा व्यापार है।

कलकत्ता—२३ चितपुर-कालीकुमार बनर्जी लेन—यहा प्राइवेट बैङ्किङ्गका काम होता है।

गोपालदेयी बाजार (ढाका)—यहा जमीदारी और धान चावलका काम होता है।

बालागंज (सिलहट)—यहा जमीदारी और वर्न डिमाण्ड ऐजेन्सी है।

मदनगंज (ढाका)—यहां फुटकर मालका व्यापार होता है।

झालोकाटी (बैरीसाल)—यहा धान, चावल, आढ़तदारीका काम है। फुटकर मालका व्यापार होता है।

बदरपुर घाट (सिलहट)—यहा वर्मा आइल कम्पनीकी सव ऐजेन्सी है। और फुटकर मालका व्यापार है।

करीमगंज (सिलहट)—जमीदारी, सब एजेन्ट वर्न डिमाण्ड कम्पनी है

चटगाव—यहां प्राइवेट बैंकिंगका काम होता है और फार्वर्डिंङ्ग ऐजेन्सीका काम करते हैं।

लक्खीपुर (सिलचर)—यहा कपासकी खरीदीका काम है।

नरसिंह डी (ढाका)—यहा फुटकर मालका व्यापार होता है।

लाला बाजार (कच्छार)—यहा वर्मा कम्पनीकी सव ऐजेन्सी है।

पटना—फार्वर्डिंग ऐजेन्सीका काम होता है।

सिलहट

यह स्थान ए० बी० रेलवेकी कुलौरा सिलहट बाजार ब्रांच लाइनके अपने ही नामके आखरी स्टेशनके पास बसा हुआ है। यह एक पहाड़ी स्थान हैं। यहा पहाड़ोंपर चायकी खेती होती है। यही यहाकी खास पैदावार है। इसके अतिरिक्त संतरा यहांका बहुत मशहूर होता है। ये दोनों ही चीजें काफी तादादमें बाहर जाती है। इसके अलावा चूनेका व्यापार भी यहां कम नहीं है। यहांका चूना बढ़िया क्वलिटीका होता है जो बाहर जाता है। इसके अलावा शीतलपट्टी भी यहां अच्छी बनती है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स जोहारमल तोशनीवाल

इस फर्मके मालिकोंका निवासस्थान देशनोक (बीकानेर) है। आपलोग माहेश्वरी समाजके तोषनीवाल कोठारी सज्जन है। सेठ जोहारमलजी तोषनीवालने वाल्य कालसे ही व्यापारकी ओर ध्यान दिया था अतः स्वदेश छोड़ कईवार आप अन्य प्रान्तोंमें गये। इसी प्रकार सन १६३६ ई० मे आप सिलहट आये और नौकरीकर व्यापारका प्रवन्ध बैठाते रहे। ६ मास बाद ही आपने कपडेका काम खोला और इसके २॥ वर्ष वाद आपने कलकत्तेकी आढ़तका काम भी आरम्भ किया। आपको व्यापारमे अच्छी सफलता मिली फलतः १० वर्ष बाद आपने दो असफल योरोपियनोंसे

चीयका बगीचा मोल ले लिया। इस बगीचेकी अवस्था अत्यन्त शोच्य हो रही थी और दोनों योरोपियन चायकी उद्योगकी भावी असफलताकी आशंकाका अनुमान कर अपने बगीचेसे सब विधि उकता गये थे। पर सेठजीके साहसने साथ दिया और स्वयं निजी देख-रेखमें आपने बगीचेको सम्मुन्नत अवस्थापर पहुंचा दिया। वर्तमानमें आपके पुत्र बाबू मुरलीधरजी तोषनीवाल आपकी इस चिकनागोल टी स्टेटके प्रधान प्रबन्धक हैं। चायके पौधोंके परिपालनसे तैयार चायतकके सभी कार्यको बाबू साहब ही देखते हैं। इस प्रकार सेठ जोहारमलजी तोषनीवाल अपने विस्तृत व्यवसायको जमा-कर उन्नत अवस्थापर पहुंचानेमें सफल हुए हैं। गत ३० वर्षोंसे सिलहट जेलमें चावल सप्लाई करनेका कंट्राक्ट आपहीके पास है। आपकी यहां बहुत बड़ी जमीदारी है। आप बैंकिङ्ग व्यवसाय भी बहुत बड़ा करते है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ जोहारमलजी तोषनीवाल, तथा आपके पुत्र बाबू मुरलीधरजी तोषनीवाल, बाबू गंगाधरजी तोषनीवाल, और बाबू नरसिंहदासजी तोषनीवाल हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलहट—मेसर्स जोहारमल तोषनीवाल बन्दर बाजार—यहां फर्मके कारबारका हेड आफिस है। यहां कपड़ेका काम बहुत बड़ा और विशेषरूपसे होता है। बैंकिङ्ग और जमींदारीका काम भी यहां होता है।

चिकना गोल टी स्टेट चिकनागोल सिलहट—यहां चायका बगीचा है जहा चाय उत्पन्न की जाती है और फैक्ट्रीमें बनायी जाती है।

मेसर्स लच्छीराम मेघराज

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान बीकानेर है। आप लोग ओसवाल समाजके कोठारी सज्जन हैं। सेठ मेघराजजीने स्वदेशसे कलकत्तेमें आ सम्वत् १६३८ ई० में दलाली की पर कुछ ही समय बाद आप कछार गये जहां आपने नौकरी कर ली। जिस समय आसाम बंगाल रेल्वे निकल रही थी उस समय आपने रेलवे लाइनके किनारे रसदकी दूकान कर ली। सम्वत् १९५८ मे आप सिलहट गये और वहां कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया। आपको व्यापारमें सफलता मिली सम्वत् १६७३ में आपने मेसर्स लच्छीराम कन्हैयालालके नामसे कलकत्तेमे चलानीका काम खोला। आप आज भी इसे चला रहे हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ लच्छीरामजी कोठारी और आपके पुत्र बाबू कन्हैयालाल जी कोठारी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलहट—मेसर्स लच्छीराम मेघराज बन्दर बाजार - यहा कपड़ेका काम प्रधान रूपसे होता है।

कलकत्ता—मेसर्स लच्छीराम कन्हैयालाल ५।६ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहाँ कपड़ेकी चलानीका काम होता है।

बोलपुर—मेसर्स कन्हैयालाल मेघराज - यहा कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स सुरंगमल पूनमचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान देशनोक (बीकानेर) है पर वर्तमानमे आपलोग गतः ३० वर्षोंसे बीकानेर हीमें रहते है। आपलोग ओसवाल समाजके सुराना सज्जन है। सेठ सुरंगमलजी देशसे सम्वत् १९३४ में सिलहट आये और कपड़ेका व्यापार कारम्भ किया। सम्वत् १९४० में आपने कलकत्तेमें गुलावचंद सरदारमलके नामसे चलानीका काम खोला, सम्वत् १९६२ में आपने छातक जिला सिलहटमे गल्ले और कपड़ेका काम खोला। इस प्रकार आपको व्यापारमें अच्छी सफलता मिली। आपने सन् १९०७ ई० के अकालमें अन्न कष्ट प्रपीड़ितोंको अच्छी सहायता प्रदान की थी। आपकी इस सेवाकी प्रशंसा सरकारने भी की है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुरंगमलजी सुराना तथा आपके पुत्र बाबू कन्हैयालालजी सुराना और बाबू पूनमचंदजी सुराना है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सिलहट—मेसर्स सुरंगमल पूनमचंद बन्दर बाजार—यहां फर्मका हेड आफिस है। यहां कपड़ेका काम प्रधानरूपसे होता है। सोना, चाँदी, महाजनी और जमीदारीका काम भी है।

सिलहट—मेसर्स सुरंगमल कन्हैयालाल कालीघाट रोड तारका पता Corogatod—यहां गल्ला,टीन,तेल, घी, और तम्बाकूका व्यवसाय होता है।

छातक (जि० सिलहट)—मेसर्स सुरंगमल पूनमचंद—यहा सोना, चाँदी, कपड़ा, गल्ला माल और महाजनी तथा जमीदारीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुलावचंद सरदारमल ६५।३ पाँचागली—यहा सोना, चाँदी, गल्ला कपड़ा आदिकी चलानीका काम होता है।

५ बीकानेर—सुरानाकी गवार पुराना निजामत—यहा बैंकिंगका काम होता है।

बा० बींजराजजी पटवा (छोगमल मूलचन्द)
श्रीमंगल

बा० सुगनचन्दजी पटवा (धनराज जुहारमल
श्रीमंगल

बा० रतनचन्दजी पटवा (छोगमल मूलचन्द)
श्रीमंगल

बा० भिखमचन्दजी मेड़िया ([illegible])

श्रीमंगल

मेसर्स छोगमल मूलचन्द

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान भीनासर (बीकानेर स्टेट) है। आपलोग ओस-वाल समाजके पटूवा सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ छोगमलजीके हाथों सम्वत् १९५३ में श्रीमङ्गल जिला सिलहटमें हुई थी। इस फर्मपर कपड़ा, सोना, चांदी आदिका व्यापार आरम्भ हुआ। संवत् १९६२ ई० में आपके स्वर्गवासी होनेपर आपके पुत्र बाबू मूलचन्दजी पटवाने व्यापारको संभाला। संवत् १९६५ में सेठ मूलचन्दजीने मनुमुख जि० सिलहटमें मेसर्स हनुतमल बीजराजके नामसे कपड़े, पाट तथा टीनका व्यापार किया। आप संवत् १९६७ में स्वर्गवासी हुए और मनुमुख वाली फर्मका समस्त उत्तरदायित्व भीनासर निवासी सेठ नेमचन्दजी कांकरिया मालिक फर्म भागचन्द नेमचन्द राजा वुडमण्ड स्ट्रीट कलकत्ताको संभालकर उपरोक्त फर्मके उत्तराधिकारी अलग हो गये। बाबू बींजराज पटवाने अपनी बाल्यावस्थामें ही अपनी श्रीमङ्गलवाली फर्मका समस्त भार सम्भाल लिया और अपनी योग्यता एवं सामर्थ्यसे उक्त फर्मको आज भी पूर्ववत् चलाये जा रहे है।

बाबू बींजराजजी आधुनिक सुधरे हुए विचारोंके युवक हैं। आपके उद्योगसे श्रीमङ्गलमें एक हिन्दी पाठशाला भी चल रहा है जिसमें बालक बालिकायें सभी सछूत तथा अछूत जातिके एक साथ पढ़ते हैं। यही क्यों आपके यहांकी तीन बालिकायें भी इसी स्कूलमें पढ़ती है। आप जिस प्रकार सफल व्यापारी एवं परिश्रमी कार्यकर्ता है उसी प्रकार सार्वजनिक कार्य्योंमें भी भाग लेते है। आप धर्मार्थ लोगोंको औषधि भी देते हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ बींजराजजी पटवा तथा आपके भतीजे बाबू रतनलाल जी पटूवा है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

श्रीमङ्गल, जिला सिलहट मेसर्स छोगमल मूलचन्द —यहां कपड़ा, सोना, चांदी, घड़ी, छत्री आदि आवश्यक वस्तुओंका व्यापार होता है और साथही महाजनी कारबार भी है।

मेसर्स धनराज जुहारमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि स्थान भीनासर (बीकानेर स्टेट) है। आप लोग ओस-वाल समाजके पटूवा सज्जन हैं। सबसे पहले सेठ धनराजजी देशसे बड़ुवान (आसाम) आये और

कपड़े तथा गल्ले का व्यापार आरम्भ किया। यहांसे संवत् १६५६ के लगभग आप श्रीमंगल आये और अपनी उपरोक्त फर्मकी स्थापनाकर कपड़ेका व्यापार आरम्भ किया और अपने परिश्रमसे अपने व्यापारको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया।

आजकल आप वृद्धावस्थाके कारण देशमें ही रहते हैं और यहाकी फर्मका समस्त व्यापार आपके द्वितीय पुत्र बाबू सुगनचन्दजी देखते हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ धनराजजी पटूवा तथा आपके पुत्र बाबू जुहारलजी पटूवा बाबू सुगनचन्दजी पटूवा तथा बाबू छागनमलजी पटूवा हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

श्रीमङ्गल, जिला सिलहट मेसर्स धनराज जुहारमल—यहां प्रधान कपड़ेका व्यापार है। इसके अतिरिक्त सोना, चादी तथा महाजनीका काम भी होता है।

मेसर्स पीरदान रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान देशनोक (बीकानेर स्टेट) है। आपलोग ओसवाल समाजके गुलगुलिया सज्जन हैं। सबसे प्रथम लगभग संवत् १६३६ के सेठ पीरदानजी देशसे मैमनसिंह आये और वहासे सिलहट होते हुए मोलवी बाजार गये। मैमनसिंह तथा सिलहटमें रहकर जिस प्रकार आपने नौकरीकी थी उसी प्रकार मोलवी बाजारमें भी आपने आरम्भमें नौकरीकी पर सं० १६४२ में आपने छोटे भाई सेठ रावत मलजीको कपड़ेकी दुकान खुलवाकर व्यापारमे प्रवेश कराया। कुछ समय बाद आपने भी नौकरी छोड़ दी और दोनों भाई अपने स्वतन्त्र व्यापारकी उन्नतिमें लग गये। आपकी व्यापार चातुरीने अपना प्रभाव दिखाया और व्यापारने उन्नति की ओर पैर बढ़ाया। मोलवी बाजारमे अपना व्यापार विस्तृत एवं सुदृढ़ बना संवत् १६५२ मे आपने श्रीमङ्गलमें अपनी फर्म खोली और स्वयं भी यहीं आकर रहने लगे। यहां आरम्भ तो आपने कपड़ेके व्यापारसे किया पर ज्यों-ज्यों आपको सफलता मिलती गयी त्यों त्यों आपने अपने व्यापारको बढ़ाया और फलतः कुछही समयमें आपकी फर्म प्रतिष्ठित फर्म हो गयी। सम्वत् १६७८ में आप स्वर्गवासी हुए और आपके ज्येष्ठ पुत्र बाबू मोतीलालजीने व्यापारका समस्त उत्तरदायित्व अपनेपर ले लिया। उस समय बाबू मोतीलालजीकी अवस्था कम थी पर आपने बड़े साहस एवं धैर्य्यसे अपने विस्तृत व्यापारको संभाला और क्रमशः और अधिक बढ़ाया। आप बड़ेही मिलनसार एवं सरल स्वभावके युवक हैं। आप विद्या प्रेमी एवं आधुनिक विचारशैलीके महानुभाव हैं।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ मोतीलालजी तथा आपके भाई बाबू नेमचन्दजी तथा बाबू सोहनलालजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

श्रीमङ्गल (जिला सिलहट) मेसर्स पीरदान रावतमल—यहां फर्मका हेड आफिस हैं और कपड़ा, धान, चावल, दाल, गल्ला माल, चीनी तथा मोटर पार्टस, ट्यूब, टायर्स आदिका काम है। तथा प्राइवेट बैंकिंगका काम भी है।

श्रीमङ्गल मेसर्स पीरदान रावतमल—यहां बर्मा आइल कम्पनीकी रशीदपुर और तेलगांवके बीच किरासीन, पेट्रोल, मोबील तथा ग्रीजकी ऐजेन्सी है।

मेसर्स सूरजमल भीखमचन्द

आप लोग मिनासर (बीकानेर) के रहनेवाले हैं। आप ओसवाल समाजके सेठिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना सेठ भीखमचन्दजीने संवत् १९५७ मे की थी। यहांपर कपड़ेका काम आरम्भसे ही होता आया है। आजकल इस फर्मपर प्रधान रूपसे कपड़ेका तथा सोना, चांदीका काम होता है। इसके अतिरिक्त टीनका काम भी होता है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ भीखमचन्दजी तथा आपके पुत्र बाबू हनुमन्तमलजी बा० रतनलालजी, बा० भ्रमर मलजी, बा० हनुमानमलजी तथा बा० जीवराजजी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

श्रीमङ्गल—मेसर्स सूरजमल भीखमचन्द—यहां कपड़ा, सोना, चांदी और टीनका व्यापार होता है।

जोरहाट

यह आसाम प्रांतका एक जिला है। इसकी बसावट साफ एवं घना है। यहांका व्यापार बहुत अच्छा है। विशेपकर यहां बैंकिङ्ग एवं चायका व्यापार होता है। बैंकर्स चाय बागानमें अपना रुपैया लगाते हैं। चायका व्यापार यहांपर अच्छा है। जोरहाटके पास ही एक स्थानमें चायकी परीक्षाका केन्द्र हैं। यहां सब प्रकारकी चायका एक्सपेरिमेंट किया जाता है। चायके पौधे के रोगका इलाज भी इसी जगह होता है। कौन २ सी जातिकी चाय किस प्रकारकी आब हवा

एवं खाद्य द्वारा तरक्की कर सकेगी, अथवा किस आवहवामें रहनेसे उसका नाश हो जायगा आदि २ सभी बातें यहा देखी जाती हैं। जिस समय टीटावारसे जोरहाट जाते हैं तब रास्तेमें यह स्थान पड़ता है। ट्रेनसेही इस स्थानपर कई प्रकारकी चाय बोई हुई दिखलाई देती है। यहां चायकी परीक्षा आदिके लियेबडे २ यंत्र आदि रखे हुए हैं जिस प्रकार पूसा नामक स्थान खेती वाड़ी सबंधी विषयके लिये भारत भरमें एक ही है उसी प्रकार यह स्थान भी इस कामके लिए पहला ही है।

चायके अतिरिक्त यहा कपड़ेका व्यापार भी वहुत जोरोपर होता है। कपड़ेके कई बड़े २ व्यापारी यहा निवास करते हैं। इसके अतिरिक्ति गृहस्थी सम्बन्धी सभी वस्तुओंका छोटी बड़ी तादादमें यहां व्यापार होता है। ये सब वस्तुएं बाहरसे यहां आकर बिकती हैं।

यहासे आसपास कई व्यापारिक जगहोंमें मोटर सिर्विस रन करती है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स आसकरण पांचीराम रावतमल

इस फर्मके मालिकोंका निवास स्थान सरदार शहर है। इसके वर्तमान मालिक रावतमलजी पींचा हैं। इसका स्थापन करीव १०० वर्ष पहले हुआ। इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथम भागमें सरदार शहरके पोर्शनमें दिया गया है।—यहा निम्न लिखित व्यापार होता है—

जोरहाट—मेसर्स आसकरण पाचीराम रावतमल—यहा बैंकिङ्ग तथा दुकानदारीका काम होता है। यह फर्म यहा वहुत बड़ी मानी जाती है। इसकी करीव १० शाखाएं यहींपर और हैं। जहा दुकानदारीका काम होता है।

मेसर्स कस्तूरचन्द मोहनलाल

इस फर्मके वर्तमान संचालक बा० मोहनलालजी, जगन्नाथजी तथा चम्पालालजी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके सज्जन है। यह फर्म सम्बत् १९२६ से स्थापित है। इसके संस्थापक सेठ कस्तूरचंदजी थे। आपका स्वर्गवास हो चुका है। आपहीके द्वारा इस फर्मकी उन्नति हुई। वर्तमान संचालक आपके पुत्र हैं। इस फर्मकी ओरसे नौखा नामक स्टेशनपर एक धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

जोरहाट—मेसर्स कस्तुरचंद मोहनलाल—यहा बैंकिङ्ग, हुंडी, चिट्ठी तथा आढ़तका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहा चायके बागानमें आपकी दुकानें है

कलकत्ता—मेसर्स कस्तुरचंद मदनचंद ४६ स्ट्राड रोड यहा चलानीका काम होता है

कपड़ेके व्यापारी

आसचंद सुहागमल

कस्तूरचंद मोहनलाल

वंशीलाल रामचंद्र

रामलाल चिमनीराम

रामदेव हरकचंद

गल्लेके व्यापारी

कस्तूरचंद मोहनलाल

किशनराम कुन्दनमल

गोविन्दराम श्रीराम

बालचन्द बृद्धिचंद

रामप्रताप चुन्नीलाल

रामप्रताप ओंकारमल

रावतमल भैंरवदान

जनरल मर्चेण्ट्स

अमरचंद मेघराज

किशनराम कुन्दनमल

मेघराज लक्ष्मीचन्द

हुकुमचन्द श्रीचन्द

टी प्लेंटर्स

चन्द्र वकील

शिवप्रसाद बुड़वा

मोटर साइकल डीलर

चोथमल नथमल

नज़ीरा

यह आसाम प्रान्तके शिवसागर जिलेका एक कस्वा है। यह ए० वी आर० की मेन लाईन पर नदीके किनारे अपनेही नामके स्टेशनसे २ मीलकी दूरीपर लम्बे आकारमें वसा हुआ है। सिमालूगुड़ी जंकशनसे भी यहां जा सकते हैं। वहांसे यह स्थान २॥ मीलके करीव होता है। यहाका प्रधान आफिस शिवसागर है।

यहांका व्यापार खासकर कपड़ा, गल्ला, किराना आदिका है। यही वाहरसे यहा आकर बिकते हैं एवं धान चावल वाहर जाते हैं। यहांसे करीव १५ मीलकी दूरी पर कोयलेकी खानें भी हैं।

मेसर्स जीवराज चुन्नीलाल

इस फर्मके मालिक रतनगढ़ (बीकानेर) के निवासी हैं। आप माहेश्वरी वैश्य समाजके लाहोटी सज्जन हैं। इस फर्मको यहां स्थापित हुए करीव १०० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ जीवराजजी तथा चुन्नीलालजी थे। आपका स्वर्गवास हो गया है। इस फर्मकी विशेष उन्नति आप ही लोगोंके हाथोंसे हुई। वर्तमान फर्म सेठ चुन्नीलालजी के वंशजोंकी है। आपके ५ पुत्र हुए। मिर्जामलजी, गोवर्द्धनदासजी पूरणमलजी, हरिवक्सजी तथा छोटेलालजी। इनमेंसे प्रथम दोका

स्वर्गवास हो गया है। शेष तीनों इस फर्मके मालिक हैं। यह फर्म यहां अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। इसके मुनीम गंगापुर निवासी राधावल्लभजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

नजीरा—मेसर्स जीवराज चुन्नीलाल—यहां बैङ्किग, कंट्राकिंग तथा कमीशन एजेंसीका काम होता है। ठाकुरबाड़ी नामक टी बागानकी यह फर्म मालिक है। इसी नामसे इस फर्मकी चार शाखाएं यहा और है जहा गल्ला, तेल मनीहारी कपड़ा आदिका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल गोवर्द्धनदास १६२ क्रास स्ट्रीट T A. Geodhan—यहां बैंकिंग तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स हरिबक्स गजानन्द गणेश भगतका कटरा सूतापट्टी—यहा कपड़ेका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स पूरणमल रामकुमार १६२ क्रास स्ट्रीट—यहा नमकका व्यापार होता है। इसमें रामकुमारजीका साझा है।

आमगुरी—मेसर्स चुन्नीलाल हरिदास—यहा धान चावलका व्यापार होता है।

चामगुरी—मेसर्स चुन्नीलाल मिर्जामल—यहा दुकानदारीका काम होता है।

गावस—जीवराज चुन्नीलाल—यहा बैङ्किग तथा दुकानदारीका काम होता है।

खुमटाई— ” ” ” ”

शिवसागर— ” ” यहा तेल, पेट्रोल तथा मोटरगुड्सका व्यापार होता है।

सिमालुगुड़ी—मेसर्स चुन्नीलाल पूरणमल—यहां धान चावलका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त और भी छोटी २ शाखाएं है।

नजीरा कोल कम्पनी लि०

इस कम्पनीकी स्थापना सन् १९१३ ई० में हुई थी। इसके डायरेक्टरोंमें बाबू पी० सी० चौधरी भी हैं। इसकी मैनेजिङ्ग ऐजेन्सी कलकत्तेके मेसर्स शाहवालेस एण्ड को० नामक कम्पनीके पास है। इस कम्पनीकी स्वीकृत पूंजी ६ लाखकी है। जो ६० हजार शेयरोंमें विभाजित की गयी है। आसाम बंगाल रेलवेके सिमालुगोड़ी स्टेशनसे १५ मील दूर २७३० एकड़ भूमिमें इसकी खाने हैं। यह घाटी जहां खाने हैं १००० हजार फीट ऊंची पहाड़ियोंके बीचमें हैं। ऐसी अवस्थामें घाटीके बीचमें आसामानपर झुलते हुए झूलेमें माल बाहर लाया जाता है। यहांका कोयला उत्तमश्रेणीका होता है इसमें केवल २ प्रतिशत खरा रहती है।

बैंकर्स एण्ड मरचेंट्स

मेसर्स जीवराज चुन्नीलाल	मेसर्स जीवराज बालमुकुन्द
” जमनादास शिवभगवान	” लक्ष्मीराम किशनलाल

करीमगंज

मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण।

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान बीकानेर है। आपलोग ओसवाल समाजके वख्शी सज्जन हैं। सेठ सुमेरमलजी वख्शी देशसे सम्वत् १९४३ में कलकत्ते आये और सम्वत् १९६४ में आपने मेसर्स तेजकरण केवलचंदके नामसे व्यापार आम्भ किया। सम्वत् १९६५ में आपने करीमगंज (जि० सिलहट) में अपनी दूसरी फर्म स्थापित की, सम्वत् १९६८ में सेठ तेजकरणजीने अपना हिस्सा फर्मसे निकाल लिया अतः यह फर्म कलकत्ता और करीमगंजमें मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायणके नामसे व्यापार करने लगी।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ सुमेरमलजी तथा आपके पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायणजी और आपके भाई स्व० आनन्दमलजीके पुत्र बाबू भंवरलालजी हैं (ये बाबू लक्ष्मीनारायणजीके पुत्र हैं जो सेठ आनन्दमलजीके गोद गये हैं)

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करीमगंज—मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण —यहां प्रधान रुपसे कपड़ाका काम होता है। सोना, चाँदी धान चावलका काम भी है।

कलकत्ता—मेसर्स आनन्दमल लक्ष्मीनारायण ३९ आर्मोनियन स्ट्रीट—यहां कपड़ा, सोना, चाँदी आदिकी चलानीका काम होता है।

मेसर्स नौरंगराय हरचंदराय।

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवासस्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके मोर सज्जन हैं। यह फर्म सम्वत १९१७ के लगभग मेसर्स नरसिंहदास सोहन रायके नामसे स्थापित की गयी थी और सम्वत् १९३४ में मेसर्स हरचंद राय गणेशदासके नामसे दूसरी फर्म कलकत्तेमे खुली। इस फर्मने व्यापारसें अच्छी उन्नति की। सम्वत् १९५४ मे इस फर्मके मालिक लोग अलग हो गये और ४ भिन्न २ फर्में स्थापित कर व्यापार करने लगे।

उपरोक्त फर्मके वर्तमान मालिक बाबू नौरंग रायजी मोर हैं। आप वयोवृद्ध सज्जन हैं। आपने अपनी फर्मको अच्छी उन्नत अवस्थापर पहुंचाया। आपने कलकत्तेमें तेलकी कल खोली और तेलकी बिक्रीके उद्देश्यसे करीमगंज और सिलचरमें शाखाये स्थापित की गयीं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करीमगंज—मेसर्स नवरङ्गराय हरचंदराय—यहां प्रधान रुपसे तेलकी विक्रीका काम होता है।

सिलचर—मेसर्स नवरंगराय हरचंदराय यहां प्रधान रुपसे तेलका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स नौरंग राय मोर १६।१।१ हरीसन रोड—यहां आपका तेलका मील है। और यहांसे वाहरको तेलकी चलानीका काम होता है और खलीका काम भी जोरों से होता है। इसके अतिरिक्त बैंकिङ्ग और कमीशन ऐजेन्सीका काम होता है।

श्री शिवसागर मिश्र

इस फर्मके मालिक उन्नाव जिलेके मम्भावा नामक स्थानके रहनेवाले कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। लगभग ३० वर्ष पूर्व पं० शिवसागरजीने करीमगंजमें अपनी फर्म खोली थी। इसके ५ वर्ष बाद आपने अपनी दूसरी फर्म हाजीगंज (त्रिपुरा) में खोली। प्रथम यहापर नमक और मिट्टीके तेलका बहुत बड़ा व्यापार होता था पर वर्तमानमें इसके अतिरिक्त सुपारी धान चावल आदिका भी अच्छा व्यापार यह फर्म करती है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक पं० कालीचरणजी मिश्र, पं० कालीशंकरजी मिश्र और पं० शिवशंकरजी मिश्र हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

करीमगंज (जि० सिलहट) मेसर्स शिवसागर मिश्र—यहां धान, चावल, नमक, मीठा तेल और सभी प्रकारके गल्ला मालका व्यापार होता है।

सिलहट—मेसर्स शिवसागर मिश्र—यहा रंगूनी चावलका काम होता है। कानपुरके मेसर्स नारायणदास लछमणदासकी इस फर्मपर तेलकी ऐजेन्सी है।

हाजीगंज—(त्रिपुरा) मेसर्स शिवसागर मिश्र—यहा मिट्टीके तेल और नमककी विक्री तथा सुपारी और लाल मिर्चाकी खरीदीका काम जोरोंसे होता है।

कानपुर—मेसर्स शिवसागर मिश्र लोकमन मोहाल—यहा सुपारी और अन्य पूर्वीय मालकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स सवाईराम बैजनाथ

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रतनगढ़ (बीकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके हैं। इस फर्मको गोहाटीमें स्थापित हुए ८० वर्ष हुए। इसके स्थापक नरसिंहदासजी थे।

बा० नवरंगरायजी मोर, करीमगंज

बा० अयोध्याप्रसादजी (अयोध्याप्रसाद वृन्दावन)
कुलौरा
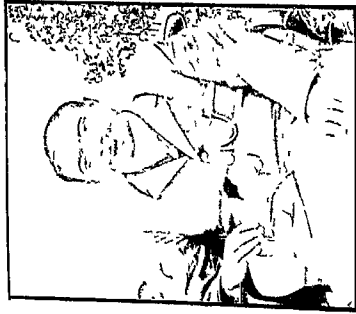
बा० हमीरमलजी पटवा (चन्नीलाल सोहनलाल)
शाइस्तागंज

आपके चार पुत्र हुए। उपरोक्त फर्म आपके द्वितीय पुत्र सवाईरामजीके वंशजोंकी है। इस फर्मके वर्तमान संचालक सेठ सवाईरामजीके पुत्र हरदत्तरायजी एवम चुन्नीलालजी हैं। चुन्नीलालजीके पुत्र बैजनाथजी दुकानके संचालनमें भाग लेते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गोहाटी—मेसर्स सवाईराम हरदत्तराय—यहां सरसोंकी खरीद तथा चलानीका काम होता है।

करीमगंज—मेसर्स गोविन्ददेव चुन्नीलाल—यहां चावल तथा तेलकी कल है। तथा सवाईराम बैजनाथके नामसे चलानीका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स सवाईराम हरदत्तराय ४ नारायण बाबू लेन—T-No 3695 B. B.—यहां चलानीका काम होता है।

कुलौरा

मेसर्स अयोध्याप्रसाद वृन्दावन

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान हसनापुर (रायबरेली) है। आपलोग कान्य कुब्ज ब्राह्मण जातिके शुक्ल सज्जन हैं। इस फर्मके आदि संस्थापक पं० अयोध्याप्रसादजी शुक्ल सर्व प्रथम लगभग ५० वर्ष पूर्व सिलहट आये और कपड़ेका काम आरम्भ किया। वहांसे मोलवी बाजार गये जहां आपने कपड़ेका काम खोला। कुछ दिन बाद आप कुलौरा गये और वहीं उपरोक्त नामसे व्यापार आरम्भ किया। यहां आपने महाजनी लेन देनका काम भी खोला और साथ ही चाय बगीचोंकी हुण्डी चिट्ठीका काम भी प्रारम्भ किया। जो आज भी उन्नत अवस्थामें हो रहा है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक स्व पं० अयोध्यप्रसादजी शुक्लके पुत्र पं० वृन्दावनजी शुक्ल हैं। पं० वृन्दावनजी शुक्लके पुत्र पं० सुर्यप्रसादजी शुक्ल, पं० सूर्यकुमार शुक्ल तथा पं० राधेश्याम शुक्ल हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मेसर्स अयोध्याप्रसाद वृन्दावन कुलौरा सिलहट—यहां महाजनी लेन देन, चाय बगानकी हुण्डी चिट्ठीका काम होता है। यहां टीनकी ऐजेन्सी है। मोटर पार्टस, ट्यूब टायर्सका व्यापार होता है। इसके सिवा यहां बर्मा आइल कम्पनी मिट्टीके तेल, पेट्रोल, मोबील तथा ग्रीज आदिकी ऐजेन्सी भी है।

शाईस्ता गंज

मेसर्स चुन्नीलाल सोहनलाल

इस फर्मके मालिकोंका आदि निवास स्थान भीनासर (बीकानेर स्टेट) है। आप लोग ओसवाल समाजके पट्वा सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना आजसे लगभग १० वर्ष पूर्व बाबू हम्मीरमलजी पट्वाके हाथोंसे यहां हुई थी। इस फर्म पर आरम्भमें कपड़ेका काम और फिर क्रमशः स्टेशनरी, फैन्सी गुड्स धान चावल तथा गल्ले मालका व्यापार आरम्भ हुआ। जो आज भी पूर्ववत् उन्नत अवस्थामें हो रहा है। उपरोक्त मालके व्यवसायके अतिरिक्त आजकल सोना चांदी तथा टीनका काम भी होता है। स्टैण्डर्ड आइल कम्पनी आफ न्यूयार्ककी पेट्रोल तथा मोवील और किरासन तेलकी ऐजेन्सी भी इसी फर्मके पास है। यह फर्म शाइस्ता गंजकी प्रतिष्ठित फर्म हैं।

कलकत्तेकी मेसर्स सालमचंद कनीराम बाठिया नामक फर्ममें इस फर्मके मालिकोंकी व्यापारिक हिस्सेदारी भी है।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ चुन्नीलालजी पट्वा तथा आपके पुत्र बाबू हम्मीरमलजी पट्वा, बाबू हीरालालजी पट्वा, बाबू सोहनलालजी पट्वा, और बाबू हस्तमलजी पट्वा हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल सोहनलाल शाईस्ता गंज जि० सिलहट—यहां फर्मके व्यापारका हेड आफिस है। यहां कपड़े तथा सोना चांदीका काम प्रधान रूपसे होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल पट्वा शाइस्तागंज (जि० सिलहट)—यहां स्टेशनरी, गल्लामाल, धान चावल और टीनका व्यापार होता है।

मेसर्स चुन्नीलाल पट्वा एण्ड को० शाईस्तागंज (जि० सिलहट)—यहां स्टैण्डर्ड आइल कम्पनी आफ न्यूयार्ककी ऐजेन्सी है।

इसके अतिरिक्त कलकत्ते वाली भागीदारीकी फर्मका पता इस प्रकार है।

मेसर्स सालमचंद कनीराम बांठिया १०५ ओल्ड चाइना बाजार कलकत्ता—यहां चालानीका व्यवसाय होता है।

विहार

BIHAR.

बिहार

इतिहासके जिन स्वर्णाङ्कित पृष्ठोंसे किसी भी जातिका मुख उज्ज्वल हो सकता है, अतीत-की जिन गौरवमयी घटनाओं पर किसी भी देशको नाज हो सकता है, मनुष्यके जिन देवोपम कृत्योंसे मनुष्यत्वका मुख उज्ज्वल हो सकता है। मानवीय साहित्यके अन्तर्गत उनका मिलना बहुत ही कठिन है। इतिहासमें बहुत ही कम घटनाएं ऐसी मिलती हैं जिनसे मनुष्यत्वका पौधा खिल उठता है—जिनसे देवत्व भी मुसकरा उठता, जिनसे मानवीयताकी सभी सत्प्रवृत्तियां एक साथ विकसित हो उठती हैं।

बिहारका प्राचीन इतिहास, ऐसी ही गौरवमयी घटनाओंसे, ऐसे ही देवोपम कृत्योंकी कथाओंसे भरा पड़ा है। इसी भूमिपरसे भगवान बुद्ध और भगवान् महावीरका "अहिंसा परमोधर्म" का सन्देश सारे संसारमें गूंज उठा था, इसी भूमिपर महाप्रतापी सम्राट् बिम्बसारका गौरवमय सिंहा-सन स्थापित हुआ था, इसी भूमिपर महाप्रतापी मौर्य्य-साम्राज्यका उदय हुआ था और इसी भूमिपर इतिहास प्रसिद्ध गुप्त साम्राज्यकी स्थापना हुई थी। संसार प्रसिद्ध सम्राट् चन्द्रगुप्त और अशोक, द्वितीय चन्द्रगुप्त और समुद्रगुप्त भी इसी भूमिपर लालित-पालित हुए थे। जिस नालन्दके विश्व-विद्यालयकी प्रशंसा आजके इतिहासज्ञ मुक्तकण्ठसे कर रहे हैं, वह भी इसी भूमिपर स्थापित हुआ था। मतलब यह कि बिहारका प्राचीन इतिहास उतना ही उज्वल है जितना किसी भी मानव-समाजका उज्वलसे उज्वल इतिहास हो सकता है।

पूर्वनाम

प्राचीन कालमें यह प्रान्त "मगध देश" के नामसे प्रसिद्ध था। गुप्त साम्राज्यके कालतक अर्थात् ईसाकी तीसरी चौथी शताब्दीतक यह इसी नामसे सम्बोधित किया जाता था। इसका "बिहार" नाम कब और कैसे पड़ा इसके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी ऐसा अनुमान किया जाता है कि इस प्रान्तमें बौद्ध और जैन साधुओंके अनेकानेक विहार स्थापित होने-हीसे सम्भवतः इसका नाम बिहार पड़ा हो। जो हो, इस व्यापारी ग्रन्थमें इस सम्बन्धकी ऊहापोह

करना व्यर्थ है। इतना ही लिखना पर्याप्त है कि पहले जो देश मगधके नामसे प्रसिद्ध था उसीको आजकल बिहार कहते हैं।

प्राचीन नगर और तीर्थस्थान

वैसे तो सारा बिहार प्रान्त ही बहुत प्राचीन है। मगर उसमें राजगृही, पाटलिपुत्र, विहार, नालन्द इत्यादि स्थान विशेष प्रसिद्ध है। पाटलिपुत्रके पूर्व इस प्रान्तकी राजधानी राजगृही थी सम्राट् बिम्बसार तक यही राजधानी रही। पर उनके पश्चात् उनके पुत्र सम्राट् आजातशत्रु जब अपने पिताको मारकर सिंहासनासीन हुआ तब उसने यहासे राजधानीको उठाकर पाटलिपुत्रको बसाया और वहीं राजधानी स्थापित की। नालन्दका विश्व विद्यालय संसार प्रसिद्ध रहा है। इसमें हजारों विद्यार्थी आकर भिन्न २ विषयोंका ज्ञान प्राप्त करते थे। उस कालमें यह विद्यालय सारे संसारमें अद्वितीय था। बिहारके पास पावापुरी नामक स्थानमें जैन तीर्थंकर भगवान् महावीर और चम्पापुरी नामक स्थानमें भगवान् वासुपूज्य मोक्षगामी हुऐ थे। अतः ये दो स्थान भी बड़े प्राचीन और तीर्थ स्थान माने जाते हैं। इसके अतिरिक्त हजारीबाग जिलेमें सम्मेद शिखर (पार्श्वनाथ हिल) नामक जैनियोंका प्रसिद्ध और सबसे बड़ा तीर्थस्थान हैं। इनके अतिरिक्त हरिहरक्षेत्र, जनकपुर गया, बैद्यनाथ, जगन्नाथपुरी आदि हिन्दुओंके, बुद्ध गया, राजगृही, विहार, नालंद आदि बौद्धोंके और बिहार शरीफ मुसलमानोंका तीर्थस्थान है।

जनसंख्या और जीविका

इस प्रांतमें करीब ३ करोड़ ८० लाख मनुष्य बसते है। इनमेंसे सैकड़े ८०॥ खेती ४। व्यापार १। नौकरी और ७। शिल्पके कार्य करते हैं बाकी दूसरे कार्यसे अपना निर्वाह करते हैं।

उपज और पैदावार

इस प्रांतकी प्रधान उपज चांवल, गेहूं, तिलहन, ऊख, नील, तमाखू इत्यादि है। कत्था हजारी बाग और सम्भलपुर जिलेमें तैयार होता है। रांची और हजारोबागमें चायकी खेती होती है। तिहुत और भागलपुर कमिश्नरीमें नीलकी खेती होती है। यहाकी पैदावारके अंक निम्नांकित हैं। ये अंक १९२७ के हैं।

नाम वस्तु	क्षेत्रफल जिसमें बोनी हुई		पैदावार	
कपास	७९०००	एकड़	१४००० गांठ (४०० रतलकी एकगांठ)	
जूट	२४१०००	,,	६६७००० गाठ ,,	,,
नील	१३१००	,,	१६००	हंडरवेट
धान	१३९३२०००	,,	४७२९०००	टन

नाम वस्तु	क्षेत्रफल जिसमें बोनी हुई		पैदावार	
गेहूं	११८६०००	„	५०००००	टन
ईख	२८६०००	„	३०३०००	टन
चाय	२१००	„	२७८४००	रतल

खनिज पदार्थ

इस प्रदेशमें कोयला, लोहा और अभ्रककी बहुत बड़ी २ खदानें हैं। ताता नगरका प्रसिद्ध कारखाना और झरियाकी कोयलेकी खदानें भी इसी प्रांतके अन्तर्गत हैं। और भी कई एक खानिज़ द्रव्य इस प्रांतमें पाये जाते हैं जिनका विवरण इस प्रकार है।

द्रव्य — स्थान

कोयला—पलामू, संथालपर्गना, मानभूमि, और संभलपुर जिलेमें तथा अठमल्लिक गंगापुर और तालचरके देशी राज्योंमें।

लोहा—रांची, हजारीवाग, पलमू. सिंहभूमि और सम्मलपुरके जिलोंमें तथा मयूरभंजके देशीराज्यमें।

अभ्रक—गया, हजारीवग, कोडरमा, रांची मानभूमि, सम्भलपुर, लोहरदागा इत्यादि स्थानोंमें।

शीशा—चकाई, खड़गपुर, बांका, देवघर, रांची और सम्भलपुर जिलेमें।

हीरा—सोनपुर राज्य और सम्भलपुर जिलेमें पाया जाता है।

फैक्ट्रीज और इंडस्ट्रीज

इस प्रांतकी खास २ फैक्ट्रीज और इंण्डस्ट्रीजके नाम गवर्नमेंट रिपोर्टके आधार पर नीचे दिये जा रहे हैं।

नाम कारखाना	संख्या	काम करनेवाले मजदूर
काटन मिल	१	४६३
ऊलन मिल	१	५००
इंजिनियरिङ्ग	२४	३४८६
रेलवे वर्कशाप्स	११	१४३०६
लोहा गलाने और ढालनेके कारखाने	३	३१२६४
चावलके मिल	४०	२३०७
शक्करके कारखाने	१५	४६८६
चायकी फैक्टरियां	३	१४६
तमाखूके कारखाने	४	३११४
नीलके कारखाने	३६	२०५६
लाख फैक्टरियां	१५	१०५७
माचिसके कारखाने	२५	१४८२
खपड़ा नलिया कारखाने	६	१६१०
जूट प्रेस	४	५४१
लकड़ीके मिल	६	१६१
सिमेंट और चूना	३	४७५

पटना

ऐतिहासिक परिचय

इसाके पूर्व छठी शताब्दीमें, जिस कालमें भगवान महावीर और भगवान् बुद्धके दिव्य उप-देशोंसे भारत वसुन्धरा मुकलित हो रही थी, मगध देशमें शिशुनाग वंशके सुप्रसिद्ध सम्राट् बिम्बसार राज्य करते थे। उस समय मगधकी राजधानी राजगृही थी। मगर बिम्बसारके पुत्र अजातशत्रुने राज्यके लोभमें आकर अपने पिताकी हत्या करवा डाली, और स्वयं राज्य को और अपनेको सुरक्षित करनेके उद्देश्यसे गंगाके दक्षिणी किनारेपर पाटली नामक स्थानमें एक किला बनवाया। यही किला आगे चलकर पाटलिपुत्रके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

इसके पश्चात् तो इस नगरका इतिहास दिन २ जगमगाता गया। मौर्य्य वंशके प्रसिद्ध सम्राट् चन्द्रगुप्तने जगत् प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ कौटिल्यकी सहायतासे विशाल मौर्य्य साम्राज्यकी स्थापना की उस साम्राज्यकी राजधानी इसी नगरमें स्थापित की इसके पश्चात् संसार प्रसिद्ध सम्राट् अशोकका यहा शासन फलाफूला। फिर यहा गुप्त साम्राज्यका सूर्य्य उदय हुआ और अस्त भी हो गया।

इसके पश्चात् यह शहर मुसलमानी साम्राज्यके अन्तर्गत भी रहता गया। प्रसिद्ध विजेता शेरशाहने सन १५४१ यहा एक सुन्दर किला भी बनवाया। तभीसे शायद यह नगर पाटलीपुत्रसे "पटना" कहलाने लगा। इस प्रकार इसके जीवनमें कितने ही उलट फेर हुए।

मतलब यह कि भारतवर्षके इतिहासमें यह स्थान अत्यन्त प्राचीन, अत्यन्त महत्व पूर्ण और अत्यन्त गौरवमय स्थान रखता है।

व्यापारिक परिस्थिति

इस स्थानका व्यापार कुछ समय पूर्व बहुत उन्नति पर था। तमाम उत्तरी और दक्षिणी बिहारका व्यापारिक सम्बन्ध पटनेसे था। पर इधर कुछ वर्षोंसे गयाकी ओर ईस्टइण्डिया रेलवे की ग्रेंडकार्ड लाईन हो जानेसे दक्षिण बिहारका व्यवसायिक सम्बन्ध डायरेक्ट कलकत्तेसे हो गया। तथा उधर उत्तरमें मुकामाघाटसे बी० एन० डब्ल्यू० की लाइनका सम्बन्ध हो जानेसे उत्तरीय बिहारका व्यापार भी सीधा कलकत्तेसे होने लगा। इस कारण कई व्यापारिक क्षेत्र इससे अलग हो गये
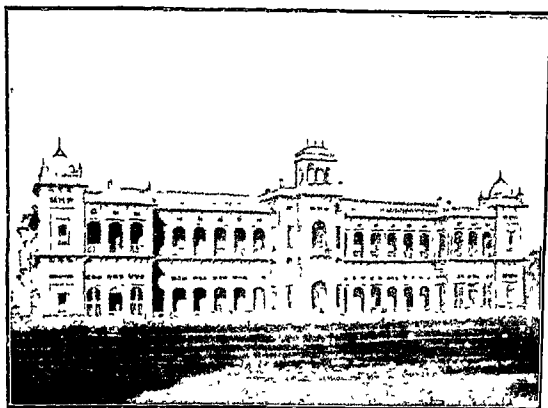
पटना म्युजियम
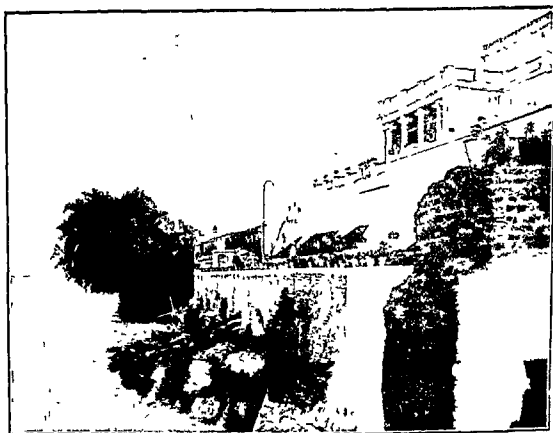
शेरशाहका किला पटना (रायबहादुर राधाकृष्ण जालान)

इधर सन् १९१२ से जब बङ्गालसे बिहार अलग किया गया और पटनामें बिहार प्रांतकी राजधानी कायम हुई, तबसे व्यवसायमें पुनः उत्तेजन प्राप्त हुआ। यह स्थान गङ्गा, गण्डक और सोन नामक ३ नदियोंके सङ्गमपर बसा है। इसलिये इस स्थानपर विशेष व्यापार नावों द्वारा होता है।

बसाहट—यह शहर गंगाके किनारे २ करीब ६ मील लम्बा बसा हुआ है। इसमें प्रधान व्यापारिक स्थान पटना सिटी है पटना जङ्कशन नई बसाहट है। सन् १९१३ में गवर्नमेंण्टने ६ हजार बीघा जमीन लेकर हाईकोर्ट, कालेज, हास्पीटल, आदि ऑफिसोंकी बिल्डिंग्स बनवाई हैं।

व्यवसायिक स्थल—मारूफगञ्ज—यह गल्लेकी बहुत भारी मण्डी है। यहां गल्ला किरानेका व्यापार होता है। इस स्थानपर ऑइल फ्लावर मिल, आइस फैक्ट्री और आयर्न फाउण्डरी वर्क है। इस स्थानपर पटनाघाट नामक स्टेशन है जो जलमार्गका व्यापारिक सम्बन्ध ई० आई० आर० से जोड़ता है।

चौक—यहां कपड़ेका व्यापार एवं जनरल व्यापार होता है।

मछरहट्टा बाजार—यहां चांदी, सोना, कपड़ा, रंगका व्यापार और सब प्रकारका जनरल व्यवसाय होता है इसके आगे गुड़की मण्डी है। खाजेकलांपर नदी द्वारा फल फूल सब्जी उतरते हैं।

मुरादपुर—इस स्थानपर सब प्रकारका जनरल व्यवसाय होता है। अदालत आफिस स्कूल कालेजोंके कारण यहां अच्छी चहल पहल रहती है।

फ्रेजर रोड, डाकबङ्गला रोड, स्टेशन रोड—यहां की सुन्दर सड़कें है, इनपर मोटर कम्पनियां लिमिटेड कम्पनीज आदि जनरल फर्में हैं।

दर्शनीय स्थान—गुरु गोविन्द सिंहका जन्म स्थान, (हरमंदिर गली) छोटी बड़ी पटनदेवी, अशोक कूप (अगम कुंआ) शेरशाहका किला, पटना कालेज, पटना म्यूजियम, गोलघर, खुदाबख्श खां की लाईब्रेरी, सेक्रेटरियट, गोल लाइन, सुल्तान अहमदखां का मकान, साइन्स कालेज आदि हैं।

रेलवे स्टेशन और घाट—पटना घाट, पटना सिटी, गुलजार बाग, पटना जङ्कशन। महावीर घाट, महेन्द्र घाट और दिघा घाट इनमेंसे पटना घाट, सीटी, गुलजार बाग तथा जङ्कशन और दीघा घाट ई० आइ० आरके स्टेशन हैं। और महावीर घाट तथा महेन्द्र घाट पर बी० एन० डब्ल्यू आर के जहाज उत्तरी बिहारसे सवारी और गुड्स ढोते हैं।

फैक्टरीज और इण्डस्ट्रीज—पटना सिटीमे ५ आइल राइस फ्लावर एण्ड दाल मिल और १ आइस फैक्टरी है। इसके अतिरिक्त इस स्थानपर दरी, सलमे, सितारेका काम, टि कुली

और खिलोने अच्छे बनते है। पटना जङ्कशनमें राइस मिल और मीठापुरमें लोहेका कारखाना है। इसके अलावा मोटर वर्कशाप, इलेक्ट्रिक वर्क, बिहार उड़ीसा काटेज इंस्टियूट आदि हैं।

बैंकर्स एण्ड लैंड लार्डस्

मेसर्स कल्लू बाबू लल्लू बाबू

इस कुटुम्बका निवास देहली की ओर है। पर २०० वर्षोंसे यह खानदान यहीं बस गया है। बाबू मटरूमलजीके समयसे इस कुटुम्बके व्यापार का आरम्भ ज्ञात होता है। आपके पुत्र कल्लू बाबू और पौत्र लल्लू बाबूने इस फर्मके व्यापार, मान, एवं प्रतिष्ठामें बहुत वृद्धि की। श्रीकल्लू बाबू के समय में इस फर्मपर किराना और गल्लाका व्यापार होता था। आपने पटनेसे छींट छपवाकर विलायत एक्सपोर्ट करनेका काम शुरु किया। इस व्यापारमें आपने अच्छी सफलता हासिल की। आपके समयमें कल्लू बाबू लालचंदके नामसे दुकान स्थापित की गई।

कल्लू बाबूके पश्चात् उनके पुत्र लल्लू बाबूने इस फर्मके कामको उन्नति पर पहुंचाया। आपके पश्चात् आपके पुत्र बा० हिंगन लालजी और जगन्नाथजी हुए उनके पश्चात् बा० राधाकृष्णजी के पुत्र बा० जयकृष्णजीने इस कामको सम्हाला आपके पिताजीका स्वर्गवास आपके जन्मके दो मास पूर्व ही होगया था इस लिये आपकी शिक्षा उनके मामा बा० जगन्नाथजीके द्वारा कलकत्तेमें हुई। आपने पटना और कलकत्तेमें संस्कृत हिन्दी एवं अंग्रेजी पुस्तकोंका बहुत अच्छा संग्रह किया था। राजनैतिक आन्दोलनोंमे भी आप पूरा भाग लिया करते थे।

वर्तमानमे बाबू जयकृष्णजीके पुत्र बाबू विनयकृष्णजी फर्मके प्रधान संचालक है। बाबू विनयकृष्णजी शिक्षित एवं विनयी हैं। आपने सन् १९२४ मे इण्डिया इलैक्ट्रिक वर्कस नामका कारखाना अपने पिताके मित्र बाबू विशुनदासजी आदिके साथमे खोला। इसमे बिजलीके पंखे तैयार होते हैं। इस प्रकारका कारखाना अभी तक किसी भारतीय फर्मका नहीं था। इसमें तारको छोड़कर बाकी सब चीजें देशी काममें लाई जाती है। आपने बंगाल सरकारके इलेक्ट्रिक इंजिनियर मि० भट्टाचार्यके पेटेंट किये हुए पंखेका पेटेण्ट लिया। वह पंखे आजकल गवर्नमेंट डिपार्टमेंट, रेलवे आदिमे अच्छी मात्रामें बिकते हैं। इसकी सोल सेलिंग एजंट मेसर्स जोसफ एण्ड कम्पनी है। इसका कारखाना २५ साउथ एनटली रोड कलकत्तामे है। (Phone No 3122 Cal)

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—मेसर्स लल्लूबाबू कल्लूबाबू धौलपुरा कोठी, वेगमपुर—यहा बैङ्किग और जमीदारीका काम होता हैं। पटना, मुजफ्फरपुर, आरा तथा दरभंगा जिलेमे आपकी जमीदारी है।

कलकत्ता—मेसर्स कल्लूबाबू लल्लूबाबू ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट—यहां बैङ्किग और मकानोंके किरायेका काम होता है।

मेसर्स गुरुमुखराय राधाकृष्ण जालान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान रामगढ़ (राजपूताना) है। इस कुटुम्बको यहां आये करीब ८० वर्ष हुए। आप अग्रवाल वैश्य समाजके जालान सज्जन हैं। प्रथम सेठ गुरुमुख रायजीने यहां आकर कपड़े और गल्लेका व्यापार शुरू किया था, आपका स्वर्गवास संवत् १९५०।५१ में हो गया है। आपके पुत्र बाबू मदनगोपालजी, बाबू नन्दूलालजी, बाबू गज्जूलालजी एवं बाबू राधाकृष्णजी जालान सन् १९१५ तक शामिल रोजगार करते रहे। बादमें भाई २ अलग हो गये। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक रायबहादुर राधाकृष्णजी जालान हैं। आपके एक पुत्र श्री हीरालालजी जालान हैं।

राय बहादुर राधाकृष्णजी जालान पटने और बिहारके अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपको गवर्नमेंटने सन् १९१८ में राय बहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया है। आप पटना कौंसिलके नोमिनेटेड मेम्बर निर्वाचित हुए थे। आप बिहार चेम्बर आफ कामर्सके प्रेसिडेंट, पटना म्यूजियम के मेम्बर एवं पटना इलैक्ट्रिक कम्पनीके डायरेक्टर हैं। आपके कुटुम्बकी ओरसे पटनामें श्री सत्य-नारायण जीका मन्दिर बनवाया गया है।

बाबू राधाकृष्णजी जालानको बाल्यकालसे ही पुरातत्व द्रव्य एवं कारीगरीकी वस्तुओंके संग्रह करनेका बड़ा शौक रहा है। फलतः वर्षोंके संग्रहसे कई लाख रुपयोंकी लागतका आपका दर्शनीय संग्रहालय तैयार हुआ है इसमें नियोलेथिक पीरियड की (प्रस्तर काल) एक पत्थरकी कुल्हाड़ी करीब ५००० वर्ष पुरानी है। इसमें परशियन, अरेबियन, संस्कृत, नेपाली, तिब्बती आदि भाषाओंके प्राचीन हस्त लिखित ग्रंथ एवं मुगलकाल और उसके पूर्व के चित्रोंका बड़ा संग्रह है। इसके अतिरिक्त अढ़ाई हजार वर्षोंके पुराने सिक्के, ओल्ड चायनाके सुन्दर २ सामान, आइवरी संगे एसब, बिल्लौर और हाथीदांतकी कारीगरीकी वस्तुओंका दर्शनीय संग्रह किया गया है।

सन् १९१९ में राय बहादुर राधाकृष्णजी जालानने बादशाह शेरशाहका बनाया हुआ पटनेका किला खरीदा, इस किलेके तीन ओर गंगाजी हैं एवं हमेशा इसकी दीवालसे सटी हुई गंगा की धारा रहती है, इस किलेकी रिपेअरी करवाकर बहुत सुन्दर कर दिया है। वर्तमानमें आपका संग्र-हालय यहीं सजाया गया है। यह स्थान पटनेकी दर्शनीय जगहोंमेंसे एक है। इसका चित्र इस ग्रंथमें दिया गया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

पटना सिटी—मेसेर्स गुरुमुख राय राधाकृष्ण जालान (T A Jalan) किला हाउस—यहां बैंङ्किग व्यवसाय होता है और हेड आफिस है इसके अतिरिक्त पटनामें एक लॉ प्रेस नामक आपका बहुत बड़ा प्रेस है और इसी नामसे चौक बाजारमें आपकी एक दूकान और है इस पर बंगाल पेपर मिलकी एजन्सी है और कागजका व्यापार होता है।

दरभंगा—दरभंगा श्यूगर कम्पनी लि० लोहट दरभंगा—इस मिलमे गन्नेसे शुद्ध चीनी तैयार की जाती है। इसके सोल एजंट आप हैं इस मिलके सबसे बड़े शेअर होल्डर महाराज दरभंगा हैं।

बांकीपुर—मेसर्स जालान एण्ड सन्स—यहां आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुरुमुखराय राधाकृष्ण १६।११ हरीसन रोड T. NO. 3558 B B तारका पता Jalan—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास स्थान देहरागाजीखां डिस्ट्रिक्ट के डाजल नामक स्थानमें है। आप अरोड़ा खत्री समाजके सज्जन है। यह कुटुम्ब पटनेमें सन् १७१६ में देशसे आया उस समय रेलवे नहीं थीं। आरंभसे ही इनके यहां इसी नामसे व्यापार होता है। शुरुमें नावों द्वारा आनेवाले मालकी खरीदी और बिक्रीका काम होता था।

बाबू बिश्वेश्वरनाथजीके समयसे इस कुटुम्बके कारबारको तरक्की प्राप्त हुई। आपने इस फर्मके व्यापार एवं मानमें वृद्धि की। आपका स्वर्गवास करीब १७ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू बिश्वेश्वरनाथजीके छोटे भ्राता बाबू तेजूरामजी एवं बिश्वेश्वरनाथजीके पुत्र श्रीनारायनदासजी अरोड़ा हैं। श्रीनारायणदासजी शिक्षित सज्जन हैं। पटनेमें आपकी फर्म सबसे पुरानी है। इस फर्मकी यहा अच्छी प्रतिष्ठा है। बिहार, छपरा आदि स्थानों पर आपकी जमी दारी है। इसी प्रकार देशमे भी आपकी जमींदारी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ हाजीगंज T A. Shreenarayan—यहां प्रधान व्यापार बैङ्किगका होता है इसके अतिरिक्त किराना और घीका बहुत बड़ा व्यापार तथा आढत और रूईका काम होता है। यहा बङ्गाल पेपरमिलकी मुंगेर, भागलपुर और दरभंगाके लिये एजंसी है
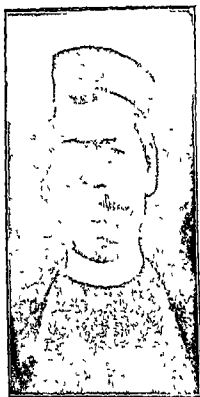
स्व० बा० नन्दुलालजी जालान
(गुरुसुखराय राधाकृष्ण) पटना

बा० रामजीराम टेकरा, पटना

रायबहादुर राधाकृष्णजी जालान पटना
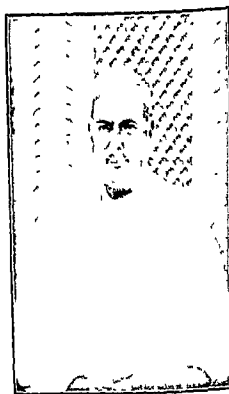
बा० बद्रीदासजी (म्हालीराम रामनिरंजनदास) पटना

मुंगेर—मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ बड़ीबाजार—किरानाका व्यापार होता है। यह फर्म ५० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है।

मेसर्स म्हालीराम रामनिरंजनदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बिसाऊ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके कारुंडिया सज्जन हैं। आरंभमें सेठ म्हालीरामजी देशसे करीब ७० वर्ष पूर्व पटना आये थे, आपके यहां उस समय म्हालीराम हरसुखदासके नामसे कारबार होता था। सेठ म्हालीरामजीके ३ पुत्र हुए, सेठ हरसुखदासजी, सेठ रामचन्द्रजी, एवं सेठ रामनिरञ्जनदासजी। संवत् १९४६ में आप तीनों भाइयोंका व्यवसाय अलग २ हो गया। तबसे सेठ रामनिरञ्जनदासजी पटने में म्हालीराम रामनिरञ्जनदास और कलकत्तेमें रामनिरञ्जन बद्रीदासके नामसे अपना स्वतन्त्र व्यापार करने लगे। सेठ रामनिरञ्जनदासजीके पश्चात् इस फर्मके व्यापारको आपके पुत्र बद्रीदासजीने सम्भाला आप दोनोंका स्वर्गवास हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बद्रीदासजीके पुत्र गोपीकृष्णजी हैं। आपकी अवस्था अभी १२ वर्षकी है। आपकी नाबालगीके समय फर्मका प्रबंध भार एक ट्रस्टके जिम्मे है। पटनेमें यह फर्म अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है।

बनारसमें आपकी ओरसे एक मन्दिर और अन्नक्षेत्र तथा लक्ष्मणझूलापर एक धर्मशाला और एक अन्नक्षेत्र बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स म्हालीराम रामनिरञ्जनदास चौक T.N0.531—यहां सराफी लेन देनका काम होता है। इसके अतिरिक्त पटना सिटीमें आपका एक तेल और चावलका मिल है। और एक दूकान और है जिस पर गल्ला और किराने का व्यापार होता है।

कलकत्ता—रामनिरञ्जनदास बद्रीदास ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. N0. 1103 B.B.—बैङ्किंग, गल्ला, जूट सेलिंग और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामजीराम बैंकर्स

इस कुटुम्बका पहिला निवास आगरेमें था। पर दोसो वर्ष हुए आप पटनाकी ओर आकर बस गये। सम्वत १९६१ में पटनेमें मेसर्स सीताराम माधोरामके नामसे आपकी एक दुकान आरंभ हुई पर आपसी झगड़ोंके कारण सन् १९०८ मे यह फर्म बन्द होगई। वर्तमानमें उपरोक्त फर्मके मालिक

बा० रामजीराम है। आपकी ओरसे पटनेमें एक घाट और एक मन्दिर बना है तथा पुरीमें एक मंदिर है। उसमें अन्नक्षेत्रका प्रबंध है। बा० रामजीरामको पुरानीतस्त्रीरों और अशर्फियोंका बहुत शौक है। पटनेमें आप बड़े धनिक और मोतविर रईस समझे जाते हैं। आपका सुन्दर मकान गंगाघाट पर बना हुआ है। आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स रामजीराम चौक पटना सिटी—आपके यहा बैङ्किग तथा जमींदारीका काम होता है।

मेसर्स बिसुन दयाल बजनाथ

इस फर्मके मालिक अलसीसर (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके झूंझनूंवाल सज्जन हैं। इस दुकानको बाबू बिसुनदयालजीके पिता सेठ चेतरामजीने करीब ७० वर्ष पहिले स्थापित किया था। इसके कारबारको विशेप तरक्की बाबू बिसुन दयालजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। शुरूमें आपके यहा चेतराम बिसुन दयालके नामसे कपड़े और ब्याजका काम होता था। इस समय बाबू बिसुन दयालजीकी अवस्था ७८ वर्षकी है। वर्तमानमें इस फर्मका संचालन बाब बिसुनदयालजीके पुत्र बाबू बैजनाथजी करते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स बिसुनदयाल बैजनाथ T. No 523 चौक—यहां जमीदारी, बैंकिंग तथा चादी सोनेका व्यापार होता है।

पटना सिटी-बिसुन दयाल खेमचंद मछरहट्टा बाजार—यहां जर्मन सिलवरके बर्तनोंका व्यापार होता है।

पटना सिटी-बैजनाथ प्रसाद कम्पनी मछरहट्टा बाजार—मनिहारी सामान और जनरल मर्चेंटका व्यापार होता है।

पटना सिटी—देवी प्रसाद हरीकृष्ण मिरचाईगंज –कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—मेसर्स बिसुनदयाल] बैजनाथ ७१ बड़तल्ला स्ट्रीट T. NO. 2769 B.B. तारका पता-Palandewı—यहां आढ़तका कारबार होता है।

मेसर्स शिवरामदास रामनिरंजनदास

इस फर्मका स्थापन सेठ परसादीरामजीके हाथोंसे संवत् १९१५ में शिवरामदास मंसुख रायके नामसे हुआ। आरंभमें यहां गल्ले और कपड़े का व्यापार होता था। कलकत्तेमें संवत् १९१८ में शिवरामदास मंगलचंदके नामसे सर्व प्रथम फर्मकी स्थापनाकी गई। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक

सेठ रामनिरंजनदासजी मुरारका एवं उनके ८ पुत्र हैं। आपका विस्तृत परिचय कलकत्तामें चित्रों सहित दिया गया है।

जौहरी

मेसर्स मुन्नीलाल सितावचन्द

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास वसई (पटियाला स्टेट) है। आप श्रीमाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन हैं। इस कुटुम्बको पटनामें आये करीब १५० वर्ष होगये हैं। वावू उत्तम चन्दजीके पुत्र वावू मुन्नीलालजीके हाथोंसे इस फर्म पर जवहरातका व्यापार और जमीदारीका काम शुरू हुआ। आपके हाथोंसे इस फर्मके कारबारकी वृद्धि हुई। आपके यहां वावू सितावचंदजी लखनऊसे गोद लाये गये। बाबू सितावचन्दजीके २ पुत्र हुए पहिले कृष्णचन्दजी (उर्फ सोना वावू) और दूसरे वावू बुद्धसिंहजी। इनमेंसे वावू कृष्णचन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९५६ के फाल्गुन मासमें हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक वावू बुद्धसिंहजी जौहरी है। आपकी फर्म पटनेमें पुरानी एवं प्रतिष्ठित मानी जाती हैं। आपके पुत्र कमलसिंहजी पदमसिंहजी एवं श्रीपालसिंहजी पढ़ते हैं।

आपके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स मुन्नीलाल सितावचन्द जौहरी, श्वेताम्बर जैन टेम्पल लेन—यहां जवाहरातकी आढ़त, व्यापार तथा जमीदारीका काम होता है। सोना चांदीके जेवरकाभी व्यवसाय आपके यहां होता है।

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गुलावराय रामप्रताप

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास बिसाऊ (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। इस कुटुम्बके व्यापारका स्थापन ७० वर्ष पहिले सेठ गिलीरामजीके हाथोंसे हुआ था। बादमे उनके पुत्र गुलावरायजी और मंगलचंदजी अलग २ हो गये। इस समय गुलावरायजीके पुत्र रामप्रतापजी और गणपतरायजी अलग २ व्यापार करते हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामप्रतापजी कमलिया हैं आपके पुत्र मोतीलालजी चुन्नीलालजी, काशीप्रसादजी, सीतारामजी, और दुर्गाप्रसादजी व्यापारमें भाग लेते हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

पटना सिटी—गुलावराय रामप्रताप चौक T. No513—यहा आढ़तका काम होता है।

पटना सिटी—गुलावराम रामप्रताप चौक - कपड़ेका कारवार होता है।

पटना सिटी रामप्रताप रामेश्वर मारूफगंज—गल्लेकी आढ़तका काम होता है।

बृजमनगढ़ (गोरखपुर) रामप्रताप मोतीलाल—आढ़तका कारवार होता है।

मेसर्स जीवणराम महावीरप्रसाद

इस फर्मका स्थापन पटनेमें सन् १९२१ में हुआ, इसके मालिक नागपुरके बाबू जमनाधरजी पोद्दार हैं। वर्तमानमें इसके संचालक सेठ जीवनरामजी पोद्दारके पुत्र हैं। जिनमें बड़े बाबू महावीरप्रसादजी गयामें, मुरलीधरजी पटनामें और पन्नालालजी नागपुरमे कार्य करते हैं। यहा एम्प्रेस मिल नागपुर और एडवास मिल अहमदाबाद की एजंसी है। आपकी पटना सिटीकी दुकानपर थोक एवं मुगदपुर (जंकशन) पर खुदरा बिक्रीका व्यापार होता है।

मेसर्स जिन्दाराम मदनलाल

इसके वर्तमान मालिक पुरुषोत्तमदासजी अग्रवाल जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका ७०।८० वर्ष पहिले कपड़ेका रोजगार शुरू हुआ था। कपड़ेके व्यापारियोंमें यह बहुत पुरानी दुकान है। पहिले यहां जौहरीमल जिन्दारामके नामसे कारवार होता था। १९६६ से इस नामसे कार-बार होता है। आपका पता इस प्रकार है।

पटना सिटी—मेसर्स जिन्दाराम मदनलाल चौक—कपड़ेका कारबार और सराफी काम होता है।

मेसर्स मनोहरदास जयनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान फतहपुर (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय बूबना सज्जन हैं। यह कुटुम्ब करीब ५०।६० वर्ष पूर्व पटनेमें आया। इस फर्मके व्यापारको विशेष तरक्की बाबू मनोहरदासजी और बाबू जयनारायणजीके हाथोंसे प्राप्त हुई। बाबू मनोहरदासजीके ७ पुत्र हुए जिनके नाम क्रमशः बाबू जयनारायणजी बाबू हरनारायणजी

स्वर्गीय बाबू मनोहरदासजी चूड़ना पटना

स्वर्गीय बाबू जयनारायणजी चूड़ना पटना
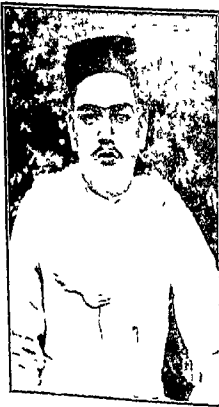
बाबू जगन्नाथ प्रसादजी डालमिया गया (पृष्ठ ८१)
(गोवर्द्धनदास जगन्नाथ)

बा० गोपीरामजी डालमियां गया (पृष्ठ वि० ८१)
(गोवर्द्धनदास जगन्नाथ)

बाबू शिवनारायणजी, बाबू गुलाबरायजी, बाबू भीमराजजी, बाबू रामनिवासजी एवं बा० वैजनाथप्रसाद जी है। इन सज्जनोंमेंसे बाबू जयनारायणजी एवं सेठ मनोहरदासजीका स्वर्गवास हो चुका है।

काशीमें इस फर्मकी ओरसे बूवना संरकृत पाठशालामें ४०।४५ विद्यार्थी भोजन एवं शिक्षा पाते है। पटनेकी संस्कृत पाठशालामें भी विद्यार्थियोंके लिये भोजन और शिक्षाका प्रबन्ध है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

पटना—मनोहरदास जयनारायण चौक T A Ramji T NO 548 यहां कपड़ेका थोक व्यापार एवं चांदी सोनेका काम और वर्मा शेल ऑइलकी एजंसीका काम होता है। इसके अतिरिक्त इसी नामसे एक दुकान और है जहां गल्ला और आढ़तका काम होता है।

पटना सिटी—गौरीशंकर पूरनमल नईसड़क—लोहेका व्यापार होता है।

बाकीपुर -जयनारायण शिवनारायण मुरादपुर—कपड़ेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—शिवनारायण गुलाबराय कॉटन स्ट्रीट—यहां चांदी, सोना, बैङ्किंग, कपड़ा आढ़तका व्यापार तथा गनी ब्रोकरका काम होता है।

हाजीपुर—भीमराज रामनिवास—कपड़ा किराना आढ़तका व्यापार और वर्मा सेलकी एजंसीका काम होता है।

बनारस—मेसर्स जयनारायण हरनारायण और मेसर्स जयनारायण शिवनारायण नीचीबाग—बनारसी माल तथा चांदीकी चीज वल्लम, आसा, सोटा घोड़ाका साज गंगा जमनी आदिकी तैयारी और बिक्रीका व्यापार होता है।

सैय्यद राजा—जयनारायण शिवनारायण—गल्ला और आढ़तका काम होता है।

पटोरी (दर्भंगा) भीमराज रामनिवास कपड़ा आढ़त तथा तेलकी एजंसीका काम होता है।

इसके अलावा सैयद राजा दिलदारनगर तथा गया लाइनमें और अंदरमें कई जगह गल्लेकी खरीदीका व्यापार होता है।

ऑइल फ्लावर मिल

श्री० विहारीजी मिल्स

इस फर्मके मालिक मेसर्स हरचन्द राय अनन्दराम भागलपुरवाले है। बाबू सूरजमल दुर्गाप्रसाद शाह भागलपुर वालोंका भी इस फर्ममें भाग है। इस मिलका संचालक बाबू सूरजमलजी शाहके छोटे पुत्र बाबू जयरामदासजी करते हैं। आपका कुटुम्ब ५० वर्षोंसे भागलपुरमें निवास कर

रहा है। आप उदयपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। बिहारीजी मिल्स पटनेमें बहुत बड़ा कामकाज करती है। इनके यहांका आटा विशेष प्रख्यात है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है :—

पटना सिटी—श्रीबिहारीजी मिल्स पटना घाटT. No. 513 तारका पता flour.—यहां रोलर फ्लावर.मिल, आइल, राइस दाल मिल एवं आयर्न फाउंडरी वर्कस है।

पटनामें विक्री और खरीदीकी शाखाएं—

(१)मारूफगंज—पटना सिटी (२) बाकरगंज (पटना जंकशन)

बाहरकी शाखाएं मेसर्स बिहारीजी. मिल्सके नामसे :—

आरा, संझोली (जिला शाहाबाद),नोहखा (जिला शाहाबाद), सहसराम, कुदरा (शाहाबाद) भभुआ रोड (शाहाबाद) चोसा, (शाहाबाद), बक्सर, मसौढी (पटना), बारागनियां (चम्पारन), गोगरी (मुंगेर), फैजाबाद (यू० पी०), नवाबगंज (गोंडा), सहजनवा, बलरामपुर (गोंडा) मस्कनवां रिशिया (बहराइच), नेपालगंज (बहराइच)।

इन फर्मोंपर सरसों, तिलहन, गेहूं, धान, अरहर, मसूर, तिशारी, चूंट, आदि सभी प्रकारकी खरीदीका काम होता है। इस मिलने अरहरका पूरा छिलका उतारी हुई दाल भी तैयार की है।

माधव मिल्स लिमिटेड

इस मिलका स्थापन आसोज सुदी १० संवत् १९८२ में हुआ यह .मेसर्स सदासुख कावरा कलकत्ता और रामदेव हरखचन्द कलकत्ताकी प्राइवेट लिमिटेड है। बाबू सदासुखजी कावरा माहेश्वरी समाजके और रामदेव हरखचन्दके मालिक पन्नालालजी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—श्रीमाधवमिल लिमिटेड मारूफगंज T. N. 537—यहां आइल फ्लावर एवं दालमिल तथा आयर्न फाउण्डरी वर्क और आइस मिल है।

कलकत्ता—श्रीमाधव मिल्स लिमिटेड २ रॉयल एक्सचेन्ज प्लेस T. N. 2649 cal—यहां इसमिल का हेड ओफिस है।

जमनियां—श्रीमाधोमिल—मालकी खरीदीका काम होता है।

बा० मूलचन्दजी सिंघी पटना
(शिवचन्द सुलतानमल)
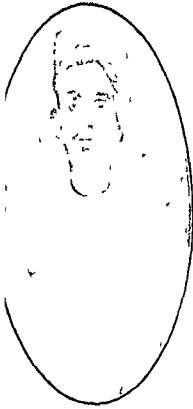
बा० श्यामलालजी साहू पटना
(श्यामलाल भगवानदास)

बा० मुरलीधरजी पोद्दार पटना
([illegible])
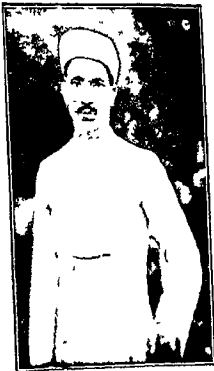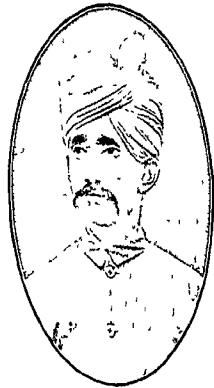
बा० भगवतप्रसादजी गयावाल पटना
(श्यामलाल भगवानदास)

मेसर्स श्यामलाल भगवानदास

इस फर्मके मालिक दानापुरके निवासी हैं। आपलोग जायसवाल समाजके सज्जन हैं। इस मिलका स्थापन बा० श्यामलालजी और भगवानदासजीके हाथोंसे सन् १९१५में हुआ बा० श्यामलालजी वैद्यनाथ धाम आर्य गुरुकुलके ट्रेझरर तथा पटना मिल ऑनर्स एसोसियेसनके सभापति हैं।

बा० श्यामलालजी शाहके पुत्र बा० भागवतप्रसादजी जायसवाल शिक्षित सज्जन हैं। आप बिहार उड़ीसा चेम्बर आफ कामसमें ज्वाइंट सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दनापुरकेंट—मेसर्स श्यामलाल भागवत प्रसाद—गल्लेका व्यापार होता है।

पटनासिटी-श्यामलाल भगवानदास मारूफगंज T. No 501 तारका पता mill—यहा आंइल एवं राइस मिल है अभी बा० भागवत प्रसादजीने एक आयर्न फाउंडरी वर्क भी खोला है। इस फर्ममें बा० रामनारायणजी एवं दशरथ लालजी जायसवालका पार्ट है।

मेसर्स मंगलचंद शिवचंद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान बीकानेर है। आप ओसवाल जैन तेरापंथी समाजके भाबक सज्जन हैं। इस फर्मको २५।२६ वर्ष पहिले बाबू मंगलचंदजीने स्थापित किया। मद्रासमें यह फर्म बहुत लम्बे समयसे व्यापार कर रही है एवं वहांके प्रधान व्यापारियोंमें मानी जाती है। बाबू मंगलचंदजी विशेष कर देशमें ही रहते हैं आपके पुत्र बाबू शिवचंदजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

पटनासिटी—मेसर्स मंगलचंद शिवचंद तारका पता Jhabak—सराफी लेन देन और आढ़तका काम होता है। इस फर्म पर बाबू शिवनारायणजी भाभू संवत् १९६८ से काम करते है।

मद्रास—मेसर्स केशरीचंद मगनमल ४२० साहुकार पैठ—बैंकिंग व्यापार होता है।

मद्रास—मेसर्स शिवचंद जतनलाल ११३ गोडवीन स्ट्रीट—कपड़ेका व्यापार और कमीशनका काम होता है।

सुकामा—मंगलचंद शिवचंद Jabak—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स शिवचन्द सुलतानमल

इस फर्मके मालिक लाडनूं (जोधपुर) के निवासी ओसवाल श्वेताम्बर जैन समाजके सज्जन

हैं। इस फर्मका कारवार आरम्भमें सेठ शिवचंदजीके हाथोंसे करीब ७०।७५ वर्ष पूर्व शुरु हुआ था। एवं इसके कारवारको आपहीके हाथोंसे तरक्की प्राप्त हुई। पटनेमें यह दूकान २५ वर्ष पूर्व खोली गई सेठ शिवचंदजीके यहा सुल्तानमल जी एवं सेठ सुल्तानमलजीके यहां बाबू मूलचंदजी दत्तक लाये गये।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू मूलचंदजी सिंधी है। लाडनूं स्टेशन पर आपने सुन्दर धर्मशाला बनवाई है। वहाकी गौशालाकी स्थापनामें आपने बहुत परिश्रम उठाया है और स्वयं अपनी ओरसे ११ हजार रुपया प्रदान किया है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—मेसर्स शिवचंद सुल्तानमल चौक T. A. Singhi—आढ़तका काम होता है। इस फर्म पर लाडनूं निवासी बाबू प्रतापमलजी बोथरा ६ वर्षोंसे पार्टनर है। आप भी ओसवाल समाजके है।

कलकत्ता—शिवचंद सुल्तानमल २६।२ आर्मेनियन स्ट्रीट Shiw Ganpati—यहां आढ़तका कारवार होता है।

फतुहा (पटना)—शिवचंद सुल्तानमल—आढ़त और गल्लेका काम होता है।

चावड़ाहाट (कुचबिहार) सुल्तानमल मूलचंद—आढ़त तथा तमाखूका व्यापार होता है।

किरानेके व्यापारी

मेसर्स नारायणदास लक्ष्मणदास

इस फर्मके मालिक रस्तोगी जातिके सज्जन हैं। आपका निवास स्थान पटना ही है। करीब ४५ वर्ष पूर्व इस फर्मका स्थापन नारायणदासजीके हाथोंसे हुआ था। आरम्भसे ही यहां किरानेका व्यापार होता है। पटनेके किरानेके व्यापारियोंमें यह फर्म पुरानी मानी जाती है। इसके कारवारको नारायणदासजीके छोटे भ्राता लक्ष्मणदासजी रस्तोगीके हाथोंसे तरक्की प्राप्त हुई।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक बाबू लक्ष्मणदासजी रस्तोगी बाबू रामदासजी (लक्ष्मणदासजी के छोटे भ्राता) के पुत्र पन्नालालजी रस्तोगी एवं नारायणदासजीके पुत्र चतुर्भुजनारायणजी रस्तोगी है। बाबू लक्ष्मणदासजीके पुत्र गयामोहनजी व्यवसायमे भाग लेते है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पटनासिटी—मेसर्स नारायणदास लक्ष्मणदास मारुफगंज T No 555 T A Rastoji—यहां हेड आफिस है। किरानेका व्यापार होता है। यह फर्म सोड़ा और रंगके लिये पीरियल केमिकल कम्पनीकी और मेचिसके लिये फारवस कम्पनीकी एजंट है।

कलकत्ता—मेसर्स रामदास गोवर्द्धन दास २० धरमाहट्टा स्ट्रीट T A Glorious —यहां आढ़तका काम होता है।

श्रीखड्गविलास प्रेस

इस प्रेसकी स्थापना सन् १८८० में महाराजकुमार रामदीन सिंहजी और आपके मित्र बाबू साहबप्रसाद सिंहजीके हाथोंसे हुई। इसका नाममझोलेके महाराज कुमार खड्गबहादुरमल्लजी के सम्मानार्थ खड्गविलास प्रेस रक्खा गया। आप दोनों मित्रोंने मिलकर करीब १०।११ वर्षोंमें इस प्रेसकी इतनी उन्नति की कि बड़े २ युरोपियन ग्रन्थ प्रकाशक भी दंग रह गये। इस प्रेसकी ओरसे हिन्दी साहित्यकी बहुत सेवा हुई। इस प्रेसके द्वारा करीब ३० वर्षोंसे शिक्षा, ४२ वर्षोंसे हरिश्चन्द्र कला एवम ३१ वर्षोंसे विद्याविनोद नामक पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। इनके अतिरिक्त अभीतक करीब १००० ग्रन्थ इस प्रेसकी ओरसे प्रकाशित हुए हैं। हिन्दीके प्रेसोंमे यह बहुत पुराना प्रेस है।

वर्तमानमें इसके प्रधान संचालक रायबहादुर रामरण विजयसिंहजी हैं। आपके छोटे भ्राता बाबू शारंगधर सिंहजी पटना हाईकोर्टमें वकालात करते हैं। एवं दूसरे भाई रामजीतसिंहजी अभी वकालतका अध्ययन कर रहे हैं।

रायबहादुर रामरण विजयसिंहजी स्थानीय कई संस्थाओंके मेम्बर एवम् संचालक हैं। आप बिहार चेम्बर आफ़ कामर्सके वाईस प्रेसिडेन्ट हैं।

इस प्रेसका व्यापारिक परिचय इस प्रचार हैं—

पटना जंकशन—श्रीखड्गविलास प्रेस मुरादपुर—इस प्रेसमें अंग्रेजी, बंगला, उर्दू, आदि भाषाओंकी छपाईका घरू एवम जनताका काम होता है। इसके अतिरिक्त टाईप- फाऊंडरी, फोल्डिंग मेशीन, लिथोमेशीन, लिथो जिंकप्लेटिंग और निकलप्लेटिंगका काम होता है।

मेसर्स भानामल गुलजारीमल

यह फर्म सन १८६२ मे लाला भानामलजीके द्वारा स्थापित की गई। आप देहली निवासी खंडेलवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आरंभमे यहां गल्लेकी मशीनका काम शुरू किया, तथा बाद सन् १९१० मे लोहेका कारखाना चालू किया गया। लाला भानामलजी तथा आपके पुत्र लाला गुलजारीमलजीका स्वर्गवास हो गया है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक लाला बनवारीलालजी एवं आपके पुत्र लाला बालकिशनलालजी हैं। देहलीमें आपके द्वारा कई सार्वजनिक काम हुए हैं. बड़ा लम्बे समयसे यह फर्म लोहेका व्यापार करती है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

देहली—भानामल गुलजारीमल चावड़ी बाजार T A Bhanamal T No 5639—हेड आफिस हैं यहां बेङ्कर्स आयर्न मर्चेंट्स एण्ड आयर्न फाउंडर्सका काम होता है।

बम्बई—भानामल गुलजारीमल ३१२ कालबादेवी रोड T A. Lohabala. 21158 यहां बेङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

पटना जंक्शन—भानामल गुलजारीमल मीठापुर T A. Bhanamal T. No 62—यहां ऊख पेलनेकी मशीन, धानमशीन, कुट्टीमशीन, पानी निकालनेके पम्प, जाली जंगले आदि ढाले जाते हैं और बिक्री होते है, यह फर्म बिहारके लिये टाटा स्टील कं० की सेलिंगएजेन्ट तथा गार्टर, टी आयरन चद्दर आदिकी बिक्री और बेङ्किग काम होता है।

कलकत्ता—आदोराय भानामल ९४ लोअर चितपुर रोड T. A Lohia T. NO. 832 B. B. बेङ्किग तथा कमीशन एजंसीका काम होता है।

फैजाबाद—भानामल गुलजारीमल T. A. Bhanamal—बेङ्किग आयर्न मर्चेंटका काम होता है।

खेरली (राजपूताना) भानामल गुलजारीमल T. A. Bhanamal -बेङ्किग और आयर्न मर्चेंट

मेसर्स शिवचन्द राय सूरजमल

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू सूरजमलजी जैन हैं। आपने २८ वर्षों पूर्व बहुत थोड़ी पूंजीसे इस दूकानपर कपड़े कारवार शुरु किया था और साहसपूर्वक व्यापारमें अच्छा पैसा पैदा किया। अभी करीब ४० हजार रुपया लगाकर आपने फतेहपुरमें मंदिरकी प्रतिष्ठा करवाई है। आप फतहपुर (शेखावाटी) निवास जैन अग्रवाल समाजके सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू वसंतलालजी व्यवसाय संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—सूरजमल वसंतलाल १८१ हरिसन रोड—आढ़तका काम होता है।

पटना—शिवचन्द सूरजमल, अदालत—कपड़ेका व्यापार होता है।

पटना—सूरजमल वसंतलाल मुरादपुर—कपड़ेका व्यापापार होता है।

पटना—सूरजमल जैन स्टेशनके पास—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स एम० एन० वर्मन एण्ड कम्पनी

इस फर्मका स्थापन सन् १८८६ में बहुत थोडी पूंजीसे बाबू शरद कुमार वर्मनके हाथोंसे हुआ था। दिन प्रतिदिन आपकी दुकान तरक्की पाती गई। सन् १९१८ में आपने अपना निजक

युनिव्हर्सिटी प्रेस खोला, आपके पुत्र बाबू प्रद्योत कुमार वर्म्मन और बाबू विद्युत कुमार वर्म्मन फर्मका संचालन करते हैं। आपके यहा सब प्रकारकी स्कूली पुस्तकोंका बहुत ज्यादा स्टाक रहता है। पटना जंक्शनमें अदालतके पास आपकी फर्म है। (T. A. Barman) है।

पटनासिटी

बैंकर्स एण्ड लैंड लार्ड्स

मेसर्स कल्लू बाबू लल्लू बाबू धौलपुरा कोठी
" गुरुमुखराय राधाकृष्ण किला हाउस
" गोपीनाथ बद्रीनाथ हाजीगंज
" प्यूपल्स बैंक पटना सिटी
" म्हालीराम रामनिरंजनदास चौक
" बिसुनदयाल बैजनाथ चौक

क्लाथमरचेंट्स

मेसर्स गिलीराम गुलाबराय चौक
" जिन्दाराम मदनलाल "
" जीवणराम महावीरप्रसाद "
" गुलाबराय रामप्रताप "
" देवीप्रसाद हरीकृष्ण "
" भीमराज देवीबख्श "
" मनोहरदास जयनारायण "
" मंगलचन्द राधाकिशन "
" लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर "
" हरसुखराय लक्ष्मीनारायण "
" श्रीनिवास सीताराम "

ग्रेन मरचेंट्स

मेसर्स रामनिरंजन बद्रीदास मारुफगंज
" सरजूराम किशुनराम "

मेसर्स लच्छूभगत किशुनराम मारुफगंज
" लच्छू भगत बिशुनराम "
" बिशुन साव बेनीमाधव प्रसाद "
शंकरराम भगवतीदास "
" सीताराम रामधनी "

गोल्ड एण्ड सिलवरमरचेंट्स

" खरचलाल मकसूदनलाल चौक
" पालीराम मानिकराम "
" मनोहरदास जयनारायण "
" मंगलचंद मुरारका "
" रामकिशनदास रस्तोगी "
" बिशुन दयाल बैजनाथ "

मिल्स

श्री बिहारीजी मिल्स, (रोलर फ्लावर, आइल, राइस, दाल एण्ड फाउंड्री)
म्हालीराम रामनिरंजनदास
आइल एण्ड फ्लावर मिल
माधव मिल लिमिटेड. (आइल आटा एण्ड आयर्न फाउंड्री)
मोहन राइस मिल गुलजार बाग
श्यामलाल भगवानदास पटना (फ्लावर आटा मिल आइल. फाउंड्री)

किरानेके व्यापारी

मेसर्स कुंज बिहारीलाल रघुनंदन प्रसाद मारूफगंज
„ गंगाप्रसाद जगन्नाथ प्रसाद „
„ ठाकुरप्रसाद धनीलाल „
„ नारायणदास लक्ष्मणदास „
„ सरजूप्रसाद महादेव प्रसाद „
„ सागरमल रामचन्द्र „

पेपर एजेंट

मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ हाजीगंज (एजंट बंगाल
„ पेपर मिल, मुंगेर, भागलपुर दरभंगाकेलिये)
„ गुरुमुखराय राधाकृष्ण चौक (एजंट बंगाल पेपर मिल लि० पटनाके लिये)
„ विश्वम्भरनाथ निरंजनलाल मारूगंज (एजंट टीटागढ़ पेपर मिल)
„ अच्छेखा मिन्नतखा पुलौरीगंज (मरचेंट)

कमीशन एजंट

मेसर्स गोपीनाथ बद्रीनाथ हाजीगंज
„ गुलाबराय रामप्रताप चौक
„ जुगुल किशोर भोलानाथ
„ जैठमल चांदमल
„ पाचीराम सुखलाल
„ मनोहरदास जयनारायण मारूफगंज
„ बींजराज सागरमल चौक
„ बटुकृष्ण कमलाकान्त पटनासिटी
„ मङ्गलचन्द शिवचन्द चौक
„ शिवचन्द सुल्तानमल चौक
„ शशिभूषण घोष कालीदाससिंह पटनासिटी

मेसर्स सीताराम रामधनी
„ हरदयाल बख्शीराम

लोहेके व्यापारी

मेसर्स बंधूराम लक्ष्मीनारायण मारूगंज
„ गौरीशंकर पूरनमल

रंगके व्यापारी

मेसर्स राम गोपाल लक्ष्मीनारायण मछरहट्टा
„ शिवजी धनजी मछरहट्टा
„ हंसराज जेठमल मछरहट्टा

जनरल मरचेंट्स

बैजनाथ प्रसाद कम्पनी मछरहट्टा बाजार
मदनलाल राधाकिशन चौक
रामगोपाल लक्ष्मीनारायण मछरहट्टा
सुन्दरलाल भगवानदास मछरहट्टा
सौदागरलाल शिवनंदनलाल मछरहट्टा

ज्वेलरी मरचेंट्स

बद्रीदास मदनलाल
मुन्नीलाल सितावचंद

दरीके व्यापारी

गंगाधर नन्थीमल मारूगंज
जुगुलकिशोर भोलानाथ

धर्मशालाएं

किशोरीलाल चौधरी धर्मशाला गुलजारबाग
गुरुमुखराय धर्मशाला स्टेशन
मारवाड़ी धर्मशाला चौक
राय अनंतलाल धर्मशाला नयीसड़क

बुकसेलर्स

कन्हैलाल जैन बुकसेलर चौक

एक्सप्रेस प्रेस मँवरपुखरा।
कैलाश प्रिंटिंग प्रेस मुरादपुर
खड्गविलास प्रेस बाकरगंज
गव्हर्नमेंट प्रेस गुलजारबाग
चीप प्रिंटिंग प्रेस कदमकुआं
चीफ प्रिंटिंग प्रेस कदमकुआं
पटना प्रिंटिंग प्रेस बाकरगंज
महावीर मुद्रण सब्जीबाग
युनिव्हर्सिटी प्रेस सब्जीबाग
ला प्रेस डाकबंगलारोड
रॉयल प्रेस पीरबहोर
सर्चलाइट प्रेस पटना गयारोड
सेंट्रल प्रिंटिंग प्रेस मछुआटोली

बुक सेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

श्री कमला बुक डेपो, चोहट्टा
श्री खड्ग विलास प्रेस बाकरगंज
ग्रंथमाला कार्यालय बाकरगंज
बिहार पब्लिशिंगहाउस ठठेरी बाजार
एम० एन० बर्मन एण्ड कं० अदालत
स्टूडेन्ट इम्पोरियम मुरादपुर
सरस्वती भंडार चौहट्टा
हिन्दी साहित्य एजेंसी मुरादपुर
हेमचन्द्र नेवगी मुरादपुर

साइकल मरचेंटस

अलखनारायण एण्ड को० चोहट्टा
इम्पीरियल साइकल स्टोर्स चोहट्टा
ए० होफिन एण्ड को० सब्जीबाग
केपिटल साइकल एण्डको०
पायोनियर साइकल कम्पनी मुरादपुर
भादुरी एण्ड को० स्टेशनके पास

चश्मेके व्यापारी

जंग० को० ऑपटीशन मुरादपुर
बी० एन० वेम्फल चोहट्टा

ज्वेलर्स

जे० एन० गंगोली ब्रदर्स
मुन्नीलाल सितावचन्द जौहरी सिटी

स्पोर्टर्स गुड्स डीलर्स

ए० डी० पाल० सिकंदर मंजिल
ए० वेल्स एण्ड को० मुरादपुर
बिहार ट्रेडिंग कम्पनी
एस० ब्रदर्स दानापुर
सिविल एण्ड मिलिटरी वर्क मुरादपुर

फैक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

श्री आर्यन मिल
पटना आईस फेक्टरी
श्रीदास राइस मिल
विश्वकर्मा ऑइल राइस मिल दीघाघाट
बिहार उड़ीसा कॉटेज इंस्टीट्यूट बाकरगंज
भानामल गुलजारीमल आयर्न फाउंड्री वर्क

लायब्रेरीज

आर्य समाज वाचनालय नयाटोला
ओमिया लायब्रेरी
खोदाबक्श खा लायब्रेरी मुरादपुर
राधिका सिनहा लायब्रेरी पटना गयारोड
सुहृद परिषद, हेमचन्द्र वाचनालय, लंगरपुरा

केमिस्ट एण्ड डगिस्ट

मेन मेडिकल होल मुरादपुर

बेस एण्ड कम्पनी बाकरगंज

मुकर्जी एण्ड को० बाकरगंज

रायली फार्मसी मुरादपुर

लहरी एण्ड को० पीरबहोर

लॉयन एण्ड को मछुवा टोली

सिनहा एण्ड को० मुरादपुर

यूरोपियन होटल्स

काफिडे लेक्स होटल्स फ्रेजर रोड और बक०

कोसमो पुलेटियन होटल मुरादपुर

ड्यास होटल्स फ्रेजर रोड और बाकरगंज

रेजिस होटल एकजीबीशन रोड

इंडियन होटल्स

कैलाशभवन अदालत

वेलनम लॉज गोविन्द मिल रोड

मित्रालय गोविंद मित्ररोड

एस० एल० कपूर एण्ड को० स्टेशन

मुजफ्फरपुर

उत्तरी बिहारके हरे भरे प्रांतमें स्थित तिर्हुत कमिश्नरी एवं अपने नामके जिलेका यह प्रधान नगर है। यह स्थान बी० एन० डब्ल्यू रेलवेका बड़ा जंकशन है। यहांसे मोतीहारी, दरभंगा और हाजीपुरकी ओर बी० एन० डब्ल्यू रेलवेकी लाइन जाती है। इस स्थानका प्रधान व्यापार कपड़ेका है। कानपुर, दिल्ली, बम्बई एवं कलकत्तेके व्यापारियोंकी यहां कपड़ेकी दुकानें एवं ऐजंसिया हैं। करीब १॥ से लगाकर १॥। करोड़ रुपयोंका कपड़ा प्रतिवर्ष यहासे बिक्री होता है। कपड़ेके व्यापारियोंने अपनी सुविधाके लिये मारवाड़ी एसोसिएशनकी स्थापना की है। इस संस्थाका स्थापन यहांके उत्साही मारवाड़ी नवयुवक व्यापारियों द्वारा सन् १९२२ ई०में हुआ था। इसका उद्देश कपड़ेके व्यवसायमें व्यापारियोंकी सब प्रकारकी अड़चनें दूर करना है। इस संस्थाने आरंभसे अभी तक ८६ हजार रुपया रेलवे कम्पनीसे क्लेमका वसूल किया है।

कपड़ेके व्यापारके अतिरिक्त सभी प्रकारका गल्ला यहांके बाजारमें बिकनेके लिये आता है। यहां गल्लेका व्यवसाय गोलारोडमें होता है।

कल कारखाने—कलकारखानोंमें यहां आर्थर बटलर कम्पनीका लोहेका कारखाना सबसे बड़ा है, यह विदेशी फर्म है। इसके अलावा ओटोमोबाइल वर्कशाप, इलेक्ट्रिक सप्लाई कम्पनी, आइस फेक्टरी और आइलमिल हैं। सब प्रकारकी कारीगरीकी शिक्षा देनेके लिये गवर्नमेंटकी ओरसे टेकनिकल इंस्टिट्यूट स्थापित है।

व्यापारिकस्थल—यहांका प्रधान व्यापारिक बाजार सूजागंज है, इसमें कपड़ा, किराना तथा सब प्रकारका

जनरल व्यापार होता है। गोलारोडमें गल्लेका व्यापार तथा पुरानी बाजारमें चांदी सोनेका व्यापार होता है। इस शहरमें लीची नामक फल कसरतसे पैदा होता है और बाहर जाता है, यहांके व्यापारियोंका संक्षेपमें परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स और जमींदार

रायबहादुर राधाकृष्ण साहब

राय बहादुर राधाकृष्ण साहबका कुटुम्ब मूल निवासी शाहजहापुर (यू० पी०) का है। वहां पहिले यह कुटुम्ब शाहजहापुर लखनऊ आदि स्थानों पर बैङ्किग व्यवसाय करता था। बाबू काशीनाथजीने पटना और बंगालमें अपनी शाखाएं खोलीं और अच्छी सफलता हासिल की। सन् १७५८ ई०में आप बिहार गवर्नर महाराजा रामनारायणके ट्रेझरर मुकर्रर हुए थे। लज्जारामजीके पौत्र बाबू वृजविहारीलालजीने सन् १८५७ मे गव्हर्नमेंटकी अच्छी सहायताकी थी, आप अपने भतीजे बाबू नंदनलाल साहब को होनहार समझकर अपनी सम्पत्तिका स्वामी बना गये। बाबू नन्दन ल लजी बड़े योग्य और कानूनदां पुरुष थे। आपका स्वर्गवास सन् १८८३ मे हो गया। आपके दो पुत्र हुए जिनके नाम बाबू महेश्वरप्रसादजी और बाबू राधाकृष्णजी है।

बाबू महेश्वर प्रसादजीने ऊंचेदर्जेकी इंग्लिश शिक्षा प्राप्त की थी। आपने अपनी थोड़ी ही अवस्थामें जनताके हृदयोंमें बहुत बड़ा स्थान पा लिया था। अपनी बड़ी स्टेटका संचालन करते हुए इंडिगो और टी ब्रान्चेजकी देख रेखमें भी आप दिलचस्पी रखते थे। आप मुजफ्फर पुर म्युनिसिपैलेटीके दो बार वाइस चेयरमेन निर्वाचित हुए, आप स्थानीय डिस्ट्रिक्ट एसोसिएशनके प्रेसिडेंट एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्डके मेम्बर, मुजफ्फरपुर कालेजके ट्रस्टी बनाये गये। आपके समयमें मुजफ्फरपुर वाटर वर्कसकी स्कीम पास हुई। इस प्रकार प्रतिष्ठा पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए आपका स्वर्गवास सन् १९२३ ई०में हुआ। आपके बाद आपके छोटे भ्राता बाबू राधाकृष्ण साहब पर संचालन भार आया।

आपको १९२७ मे गवर्नमेंटसे राय बहादुरकी पदवी प्राप्त हुई। सन् १९२६ तक आप बराबर ६ वर्षों तक बिहार कौंसिलके मेम्बर रहे। वर्तमानमें आप मुजफ्फरपुर म्युनिसिपैलेटीके चैयरमेन एवं १२ वर्षोंसे ओनरेरी मजिस्ट्रेट है। इसके अतिरिक्त कोऑपरेटिव्हबैंक सोसायटी, बिहारचेम्बर ऑफ-कामर्स, प्राविंशियल कमेटी, टेकनिकल इंस्टिट्यूट आदि संस्थाओंके मेम्बर हैं। आपका कुटुम्ब खत्री समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित एवं मुजफ्फरपुरका नामांकित रईस माना जाता है। स्वर्गीय बाबू महेश्वर प्रसादजीके पुत्र बाबू उमाशंकरप्रसादजी बी० एस० सी० है। आप होनहार नवयुवक है आपकी शिक्षा अभी जारी है।

स्वर्गीय बाबू नन्दनलाल साहब मुजफ्फरपुर
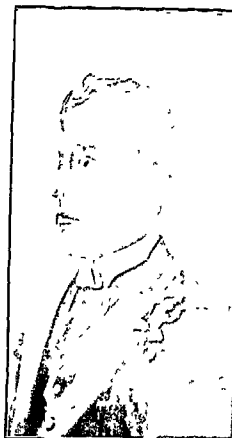
स्वर्गीय बाबू महेश्वर प्रसादजी मुजफ्फरपुर

रायबहादुर राधाकृष्ण साहब मुजफ्फरपुर

[illegible]
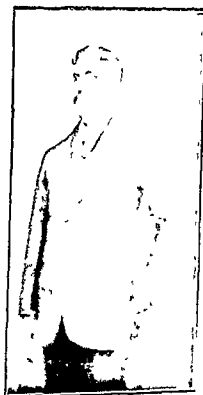
रा० ब० बाबू राधाकृष्ण साहबने सन् १६१३ में दि बिहार एण्ड ओड़ीसा ओटोमोबाइल कम्पनीके नामसे मोटरका व्यापर आरम्भ किया था इस फर्मके पास जनरल मोटर कार्पोरेशनकी ऐजेंसी है। आपका मोटर इम्पोर्टरोंसे डायरेक्ट सम्बन्ध है। आपके वर्कशापमें मोटरके पुर्जे ढाले जाते है। इस वर्कशापको सुव्यवस्थाके लिये एक अंग्रेज इंजिनियर नियुक्त है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुजफ्फरपुर—राय बहादुर राधकृष्णसाहब बैंकर्स एण्ड लैंडलार्डस—इस नामसे हाजीपुर, समस्तीपुर आदि स्थानोंमें जमीदारी हैं और बेकिङ्ग व्यापार होता है।

दि बिहार एण्ड ओड़ीसा ओटो मोबाइल कम्पनी—मुजफ्फरपुर तारका पता Krishna—यहां मोटर एवं मोटरगुड्सका इम्पोर्ट होता है, इस फर्मके वर्कशापमें मोटरके सब पुर्जे ढाले जाते है। मोटर सम्बन्धी सब समान और मोबील आॅइल अच्छी परिमाणमें स्टॉकमें रहता और बिक्री होता है। इस फर्मकी ब्रांचेज पटना, हाजीपुर और लहरियासरायमें है।

इंडिगो फेक्टरी—अंदाहा (मुजफ्फरपुर)—यहाकी तैयार की हुई नीलकी गोटी कलकत्ता भेजी जाती हैं।

मेसर्स रामलाल भगवानदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान सिद्धमुख (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके गोयल गोत्रीय कहनानी सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन संवत १६११ में बाबू हजा-रीमलजीके हाथोंसे हुआ था। बाबू हजारीमलजीके ३ भाई और थे, जिनका नाम बाबू रामलालजी, बाबू अमरचन्दजी एवं बाबू पत्तूलालजी था। संवत १६४५ मे इन सब भाइयोंका कारबार अलग २ होगया। तबसे रामलालजीके वंशज इस फर्मके मालिक हैं। इस फर्मके व्यापारको बाबू रामलालजी के पुत्र बाबू भगवानदासजीके हाथोंसे विशेष तरक्की प्राप्त हुई, बाबू रामलालजीका स्वर्गवास संवत १६५८में और भगवानदासजीका संवत १६६० मे हुआ।

इस समय इस फर्मके मालिक बाबू भगवानदासजीके पुत्र बाबू शिवबक्सलालजी कहनानी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्म पर जमीदारी खरीदी गई। मुजफ्फरपुर म्युनिसिपलेटीके आप ७ वर्षोंसे मेम्बर हैं। बिहार प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके मुजफ्फरपुर अधिवेशनके आप स्वागताध्यक्ष रहे थे। सिद्धमुख (बीकानेर) मे आपकी ओरसे संवत १६७५ मे एक धर्मशाला बनवाई गई है। बिहार कोआपरेटिव्हबैंकके आप आनरेरी ट्रेझरर रह चुके हैं। आपके पुत्र श्रीवैजनाथप्रसादजी मैट्रिकमें पढ़ रहे हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्सरामलाल भगवानदास, पुरानी बाजार—यहां प्रधानतया वेकिङ्ग और जमीदारीका काम होता है। इसके अतिरिक्त कपड़ेकी आढ़त और एजंसीका काम भी होता है।

मेसर्स लच्छीराम हनुमानप्रसाद

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (शेखावाटी) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय सज्जन है। इस फर्मका स्थापन बाबू लच्छीरामजीके हाथोंसे ६०।७० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके यहा प्रधानतया बेङ्किंग और जमीदारीका काम होता था। बाबू लच्छीरामजी अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हो गये हैं। आपने लच्छीराम धर्मशालाके नामसे बनारस और मुजफ्फरपुरमें धर्मशालाएं बनवाईं। आपके पुत्र बाबू हनुमानप्रसादजीका स्वर्गवास बहुत थोड़ी अवस्थामें हो गया था।

इस समय फर्मके मालिक बाबू बिहारीलालजी भावसिंहका है। आप बाबू हनुमानप्रसाद जीके यहा दत्तक लाये गये हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स लच्छीराम हनुमानप्रसाद, पुरानी बाजार, T. NO 27—यहां बेकिंग तथा जमीदारी का काम होता है।

मुजफ्फरपुर—बिहार नेशनल मोटर कम्पनी मोतीझील T. NO. 21—यहां ओव्हरलैंड व्हिलिजनाइट की मुजफ्फरपुरके लिये एजंसी है। तथा सब प्रकारका मोटरका सामान बिक्री होता है।

मुजफ्फरपुर—श्रीकृष्णवट कम्पनी सरैयागंज-यहां वेस्ट एण्ड वाच कं०, अगफाफोटो कं० तथा एवररेडी इण्डिया कं० आदि की एजंसियां हैं। तथा सब प्रकारके फेंसी गुडसका व्यापार होता है।

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स उदयराम जमनादास

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू उदयरामजीके पुत्र बाबू जमुनादासजी एवं मेघराजजी हैं। आप अग्रवाल समाजके गोयल गोत्रीय सज्जन हैं। आपका खास निवास सोनासर (शेखावाटी) है। इस फर्मका स्थापन बाबू उदयरामजीके हाथोंसे ३० वर्ष पूर्व हुआ था।

इसका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स उदयराम जमनादास मुजफ्फरपुर—देशी और विलायती कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

बाबू शिवबक्सलालजी कहनानी मुजफ्फरपुर

बाबू मेघराजजी चाचान (मेघराज रामचन्द्र)
मुजफ्फरपुर

बाबू बैजनाथप्रसादजी कहनानी
S/o बाबू शिवबक्सलालजी मुजफ्फरपुर

बाबू बिहारी लालजी भावसिंहका
(लक्ष्मीराम हनुमानप्रसाद) मुजफ्फरपुर

मेसर्स जमनादास प्रहलादराय

इस फर्मका स्थापन करीब ४०।४५ वर्ष पूर्व बाबू जमनादासजी बांसलके हाथोंसे हुआ। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू जमनादाजी के पुत्र प्रहलादरायजी हैं। आपका खास निवास झूंझनूं (शेखावाटी) है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स जमनादास प्रहलादराय, सरैयागंज—यहां देशी तथा विलायती कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मेसर्स जीवणराम रामचन्द्र

इस फर्मका हेड ऑफिस भागलपुर है। कलकत्तेमें इस फर्मपर जीवणराम शिवबक्स नामसे सूतका बड़ा कारबार होता है। मुजफ्फरपुर फर्मपर श्रीजय गोविन्दजी और ज्वालाप्रसादजी काम देखते हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

मुजफ्फपुर—मेसर्स जीवणराम रामचन्द्र, सरैयागंज—तारका पता murli—यहा देशी कपड़ेका थोक व्यापार होता है। और मॉडल मिलनागपुकी एजन्सी है।

मेसर्स नाथूराम रामनारायण

यह फर्म देशी कपड़ेके प्रसिद्ध व्यापारी मेसर्स चेनीराम जेसराज बम्बईवालोंकी ब्राच है। इसके व्यापारका विस्तृत परिचय मालिकोंके चित्रों सहित हमारे ग्रंथके प्रथम भागके बम्बई विभागमें पृष्ठ ४६ में दिया है।

मुजफ्फरपुरमें इसफर्मका स्थापन संवत १९७६ में हुआ था। इसपर टाटासंसकी इम्प्रेस मिल नागपुर, स्वदेशी मिल बम्बई, टाटामिल बम्बई तथा एडवांस मिल अहमदाबादकी सोल एजन्सी है। इसके वर्तमान मालिक बा० घनश्यामदासजी पोद्दार है। इसफर्मपर श्री गेन्दालालजी पुरोहित काम करते हैं। इसफर्मके व्यापारका परिचय इसप्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स नाथूराम रामनारायण, सरैयागंज, T. A. Swarga—यहां टाटासंसकी मिलोंका कपड़ा बिक्री होता है।

मेसर्स भगवानदास दन्नुराम

इसफर्मका स्थापन बा० भगवानदासजीके हाथोंसे करीब ४० वर्ष पूर्व हुआ था। आपका स्वर्गवास अभी ८ मास पूर्व होगया है।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक बा० भगवानदासजीके पुत्र बा० दत्तूरामजी, बैजनाथजी एवं जौहरीमलजी हैं। आपका खास निवास सांखू (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वेश्य समाजके बात्सल गोत्रीय सज्जन हैं। आपकी फर्म मुजफ्फरपुरमें कपड़ेका बड़ा कारबार करती है। इसफर्मकी ओरसे मारवाड़ी हाईस्कूलकी बिल्डिंग बनवाई गई है।

आपका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स भगवानदास दत्तूराम, तारका पता Kojariwol—देशी और विलायती कपड़े का थोक व्यापार होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स तेजपाल हीरालाल, न्यू माधोपुरा—देशी कपड़े की आढ़तका काम होता है। इसमें आपका हिस्सा है।

कलकत्ता—हनुतराम भगवानदास १३२ काटन स्ट्रीट—कपड़े की आढ़तका व्यापार होता है।

मेसर्स मेघराज रामचन्द्र चाचान

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नोहर (बीकानेर स्टेट) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके वासल गोत्रीय चाचान सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू शिवदत्तरायजीने करीब ६० वर्ष पूर्व किया था। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा, चांदी, सोना, गल्ला तथा जमींदारीका काम कर रही है। बाबू शिवदत्तरायजीका स्वर्गवास करीब २२ वर्ष पूर्व हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालन कर्ता बाबू मेघराजजी, रामचन्द्रजी और मदनलालजी हैं। मुजफ्फरपुरके व्यापारियोंमे यह फर्म पुरानी मानी जाती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स मेघराज रामचन्द्र चाचान, छाता बाजार—यहां देशी तथा बिलायती कपड़ेका थोक व्यापार और चांदी सोनेका काम होता है। आप यहांके जमींदार भी हैं।

मुजफ्फरपुर—मदनलाल बद्रीप्रसाद, गोलारोड—गल्लेका व्यापर और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेघराज रामचन्द्र १३२ काटन स्ट्रीट T. A. Noria—सराफी लेन देन और आढ़तका व्यापार होता है। यह फर्म ३० वर्षोंसे स्थापित है।

मेसर्स रतनलाल फूलचन्द

इस फर्मका स्थापन करीब ५० वर्ष पहले बाबू रतनलालजीके हाथोंसे हुआ था। वर्तमानमे इसके मालिक बाबू रतनलालजी और फूलचन्दजी हैं। बाबू रतनलालजीके पुत्र श्रीरामजी बंका अच्छे

उत्साही नवयुवक हैं। आप मारवाड़ी एसोसिएशनके सेक्रेटरी हैं। आपका मूल निवास सोनासर (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

मुजफ्फरपुर—मेसर्स रतनलाल फूलचन्द, सरैयागंज - देशी और विलायती कपड़ा और फेंसी गुड़सका थोक और खुदरा व्यापार होता है।

मेसर्स रुपनारायण रामचन्द्र

इस फर्मका हेड आफिस कानपुरमें है। वहा करीव ५० वर्षोंसे यह फर्म व्यापार कर रही है। कानपुरमें इस फर्मपर ४० वर्षोंसे मियोर मिलकी एजंसी एवं १० वर्षोंसे एलगिन मिलकी एजंसीका काम होता है। इसके मालिकोंका खास निवास नारनोल है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन है। इसके वर्तमान मालिक वावू रामचन्द्रजी हैं। आपकी अवस्था इस समय १६—१७ वर्षकी है। कानपुरकी प्रतिष्ठित फर्मोंमें इसकी गणना है जहा निहालचन्द बलदेव सहायके नामसे ४० वर्षोंसे मियोर मिलकी एजंसी और वङ्किग काम होता है। इसकी शाखाएं कानपुर (जनरलगंज नयागंज) दिल्ली, अमृतसर, मुलतान, झांसो आदि स्थानोंपर हैं। मुजफ्फरपुरमें इस फर्मका स्थापन करीव ३ वर्ष पूर्व किया गया है। यहा पं० वावूलालजी शर्म्मा काम करते हैं। फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स रुपनारायण रामचन्द्र, सरैयागंज—यहा एलगिन मिलका कपड़ा और सूत वेंचने की एजंसी है।

मेसर्स वासुदेव बैजनाथ

यह फर्म कलकत्तेमें मेसर्स जिंदाराय हरविलासके नामसे वावू जिंदारायजीके द्वारा स्थापितकी गई थी। मुजफ्फरपुरमे १० वर्ष पूर्व उपरोक्तनामसे शाखा स्थापितकी गई है। वर्तमानमे इसके मालिक वावू तेजपालजी सागानेरिया तथा वावू राधाकिशनजी है। आप लोग मलसीसर (जयपुर स्टेट) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। इसके व्यापारका परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—वासुदेव बैजनाथ, सरैयागंज—कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मुजफ्फरपुर—बैजनाथ सागानेरिया, सरैयागंज—गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जिंदाराम हरविलास १३२ कॉटन स्ट्रीट ता० प० होमरुल यहां आढतका काम होता है।

अहमदाबाद—मेसर्स तेजपाल हीरालाल, न्यूमाधोपुरा—इसमें भगवानदास दत्तूराम और आपका साझा है। तथा कपड़ेकी आढ़तका काम होता है।

बलिया—जिंदाराम नारायणदास—चीनीकी आढ़तका व्यापार होता है।

मऊनाट भंजन—तेजपाल झूथाराम—आढ़तका काम होता है।

श्री कांग्रेस खद्दर भंडार (बिहार चरखा संघ)

बिहार चरखा संघका हेड आफिस मुजफ्फरपुर है। इस संघके एजंट आल० इ० कांग्रेस कमेटीकी ओरसे बाबू राजेन्द्र प्रसादजी हैं। इस संघकी ओरसे बिहार प्रांतमें खादीके ६ उत्पत्तिस्थान और १४ सेलडीपो है।

इन डीपोपर अक्टूबर १९२८ से अप्रैल १९२९ तक १ लाख सवा १३ हजारकी खादी तैयारकी और २ लाख पचीस सौ की बिक्री की गयी।

किरानेके व्यवसायी

मेसर्स घीनाचौधरी गोपालचौधरी

इस फर्मका स्थापन सन् १८४० ई०में सेठ घीना चौधरीके हाथोंसे हुआ था, आरम्भसे ही यह फर्म किरानेका व्यापार कर रही है, तथ मुजफ्फरपुरके व्यापारियोंमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है। आपने इस फर्मको जमाया और आपके बाद आपके पुत्र बाबू गोपालजी चौधरीके हाथोंसे इसके कारबारको तरक्की प्राप्त हुई। बाबू गोपालजी चौधरीके इस समय चार पुत्र हैं जिनमेंसे बड़े बाबू गंगा प्रसादजी चौधरी और बाबू विश्वनाथजी चौधरी फर्मके व्यवसायका संचालन करते है तथा शेष बैजनाथजी और रामेश्वरप्रसादजी पढ़ते हैं।

किरानेके व्यापारके अतिरिक्त यह फर्म टीटागढ़ पेपर मिलकी एजन्ट भी है। एवं सभी प्रकारके देशी और विलायती कागजका व्यापार और इम्पोर्ट करती है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स घीना चौधरी गोपालचौधरी T. No. 23—यहा किरानेका व्यापार, बेङ्किग और जमीदारीका काम होता है। यह फर्म मोतीहारी? शुगर फेक्टरी मुजफ्फरपुरकी सोल एजंट है।

मुजफ्फरपुर—दि बिहार कामर्शियल एजंसी, सरैयागंज—यहा कागज, सिगरेट तथा दियासलाईका

व्यापार होता है। यह फर्म वेस्टर्न इण्डिया मैच मन्यूफेक्चरिंग कं० कलकत्ता, इम्पीरियल टोबेको कं० पटना तथा दि गंजेज प्रिंटिंग इंक फेक्टरी कलकत्ताकी एजंट है।

मुजफ्फरपुर—दि बिहार स्टेशनरीमार्ट सरैयागंज—यहां हर किस्मकी स्टेशनरीका व्यापार होता है।

बाबू गंगाप्रसादजी चौधरी, मेसर्स वेब्सदरलैंड कम्पनी कानपुरके ब्रोकर हैं।

मेसर्स रामरक्षालाल सत्यनारायण चौधरी

यह फर्म बहुत समयसे मुजफ्फरपुरमें किरानेका व्यापार कर रही है। बाबू रामरक्षालालजीके हाथोंसे इसके कारबारको तरक्की प्राप्त हुई। आपका स्वर्गवास करीब १२ वर्ष पूर्व हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू सत्यनारायणजी मुजफ्फरपुरके म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप पंचम कलवार मित्र सम्मेलन मुजफ्फरपुरके स्वागताध्यक्ष रहे थे।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स रामरक्षालाल सत्यनारायण चौधरी सरैयागंज—यहां किरानेका थोक व्यापार सराफी लेन देन तथा जमीदारीका काम होता है।

मुजफ्फरपुर—रामरक्षालाल सत्यनारायण सरैयागंज—किरानेका खुदरा व्यापार होता है।

<u>लोहेके व्यापारी</u>

मेसर्स टुनकी सा वैद्यनाथप्रसाद

इस फर्मके मालिक वैश्यसमाजके सज्जन है। इस फर्मपर बा० टुनकीसाके पिताजी जुगुलसाके समयसे लोहेका कारवार चला आता है। पहिले मेसर्स जुगुलसा बूढ़ासाके नामसे व्यापार होता था पर वहफर्म फैल होगई थी, इसलिये बा० टुनकीशाने करीब ४५ वर्ष पूर्व नवीन रूपसे अपना अलग कारवार शुरू किया। आप ही के हाथोंसे फर्मके व्यापार की वृद्धि हुई है। आपके पुत्र बाबू वैद्यनाथ प्रसादजी फर्मका व्यवसाय संचालन करते हैं।

बाबू वैद्यनाथ प्रसादजी म्युनिसियल कमिश्नर है। आप १९२८ में जातीय सभाके सभापति निर्वाचित हुए थे। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुजफ्फरपुर—मेसर्स टुनकीशा वैद्यनाथ प्रसाद सरैयागंज T. A. Tunkisa—यहां लोहेका व्यापार, वैङ्किग तथा जमीदारीका व्यापार होता है। आपका एक कड़ाही और नलियेतयार करनेका लोहेका कारखाना भी है।

मुजफ्फरपुर—वैद्यनाथ इलेक्ट्रिक वर्कस—यहां बिजलीका सामान बिक्री होता है। इस फर्मकी ओरसे सरैयागंजमे शीघ्रही एक धर्मशाला वानने वाली है।

ग्रेन मर्चेंट्स

मेसर्स उदयराम मक्खनलाल

इस फर्मके मालिक बाबू भगलरामजीके पुत्र महावीरप्रसादजी, बद्रीदासजी, बैजनाथजी तथा सागरमलजी हैं। इनमें बाबू महावीर प्रसादजीका स्वर्गवास होगया है, आपका विशेष परिचय बेतियामें दिया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

बेतिया—उदयराम मक्खनलाल—गल्ला, बैंङ्किग जमीदारीका काम होता है तथा रेंडीका मिल है।

मुजफ्फरपुर—उदयराम मक्खनलाल—गल्ला आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—उदयराम रामभगत १६१ बागड़ बिल्डिंग—आढ़तका काम होता है।

जनरल मर्चेंट्स

मेसर्स वर्मन एण्ड कम्पनी

इसका स्थापन सन् १९०५ मे हुआ था। इसके संचालक बाबू मंगलीप्रसादजी खन्ना, तथा आपके पुत्र बाबू शिवप्रसादजी खन्ना, "विशारद", एवं हरप्रसादजी खन्ना है। आपके यहां स्कूली पुस्तकें, खेलका सामान, बिजलीका सामान मशीनरी एवं पेटेण्ट मेडिसन्स और स्टेशनरीका व्यापार होता है हालहीमें आपने श्रीकृष्ण आइल मिल नामक मिल पार्टनररूपमें चालू की है। आपका तारका पता Shri Krishna और T. No. 51 है।

बेंकर्स एण्ड लैंण्डलार्ड्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड स्टेशन, रोड (ब्राच)

कोऑपरेटिव्ह बैंक, हासपीटल रोड

ट्रेडर्स सोसायटी बैंक, स्टेशन धर्मशाला

बनारस बैंक लिमिटेड, चंदवारा (ब्राच)

मेसर्स घीनाचौधरी गोपाल चौधरी सरैयागंज

राय बहादुर कृष्णदेवनारायण मेहता, मेहता हाउस जेल रोड

मेसर्स टुनकी शा वैद्यनाथप्रसाद सरैयागंज

मेसर्स मेघराज रामचन्द्र छाता बाजार

रायबहादुर राधाकृष्णजी साहब क्लब रोड
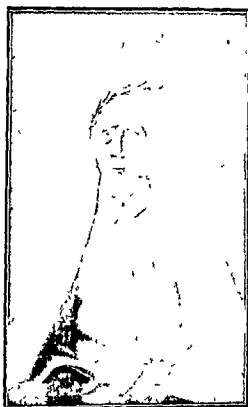
सेठ टुनकी सा (टुनकी सा बैजनाथ प्रसाद)
मुजफ्फरपुर
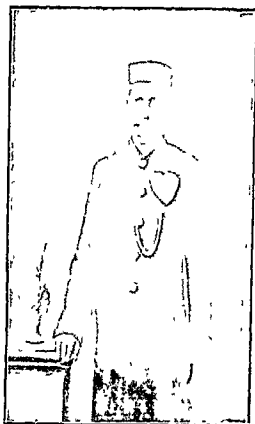
बा० सत्यनारायणप्रसाद चौधरी
मुजफ्फरपुर

बा० बैजनाथ प्रसाद
(टुनकी सा बैजनाथ प्रसाद) मुजफ्फरपुर

[illegible]

मेसर्स रामलाल भगवानप्रसाद पुरानी बाजार
बाबू श्यामनंदन सहाय बी० ए० सहाय भवन
मेसर्स लच्छीराम हनुमान प्रसाद पुरानी बाजार

क्लाथ मरचेंट्स

श्रीकांग्रेस खद्दर भंडार(बिहार प्रांतीय चरखा संघ)
मेसर्स कन्हैयालाल राधाकिशन सरैयागंज
„ उदयराम जमनादास
„ गंगाबिसन रामगोपाल
„ चंदूलाल सूरजमल (दिल्लीक्लाथ मिलके एजंट)
„ जमनादास प्रहलादराम सरैयागंज
„ जीवणराम रामचन्द्र (माडल मिल नागपुरके एजंट)
„ नंदराम रामप्रताप सरैयागंज
„ नाथूराम रामनारायण (एजंट टाटा संस)
„ प्रभूराम जयनारायण सरैयागंज
„ पोकरमल माधवलाल
„ बद्रीदास वंशीधर
„ भगवानदास दत्तूराम „
„ मेघराज रामचन्द्र छाताबाजार
„ मोतीलाल बिशेसरलाल सरैयागंज
„ रतनलाल फूलचंद „
„ रामचन्द्र सीताराम „
„ रूपनारायण रामचन्द्र „
„ बासुदेव बैजनाथ „

ग्रेन मर्चेंट्स एण्ड कमीशन एजंट्स

मेसर्स उदयराम मक्खनलाल
„ केदारनाथ गजानन्द

मेसर्स गनीसा लछमनसा
„ गंगासहाय शिवनारायण
„ जग्गूराम श्रीकृष्ण
„ डेढ़राज गंगाप्रसाद
„ दिलचन्दराम फूलचंदराम
„ बिहारीसा चेतसा
„ खूबलालसा खुबाड़ीसा
„ बैजनाथ सांगानेरिया
„ बेतरनीसहाय देवलाल
„ मदनलाल बद्रीप्रसाद
„ मंगलचंद रामचन्द्र
„ लछमनसा कालीप्रसाद
„ सांवलदास खन्ना
मेसर्स रायली ब्रादर्स (टेम्परेरी सब एजंसी)

किरानेके और रंगके व्यापारी

मेसर्स घीना चौधरी गोपाल चौधरी
„ नत्थूसा द्वारकादास
„ रामभजन चौधरी शिवप्रसाद
„ रामरक्षालाल सत्यनारायण चौधरी
„ सकुनलाल मकुनलाल
„ लक्ष्मी चौधरी

जनरल मरचेण्ट्स

मेसर्स अमला एजंसी सरैयागंज
„ अग्रवाल ब्रादर्स „
„ कृष्णब्रद कम्पनी „
„ मोहन ब्रदर्स „
„ मोगल एण्ड संस (टेलर्स)
„ विश्वेसर चौधरी एण्ड संस

" हनीफ एन्ड को० सरैयागंज

" हनीफ एण्ड को० सिविल मिलिटरी टेलर (चतुर्भुज स्थान रोड)

" ए० सापुरजी एण्ड को० (वाइन एण्ड जनरल मरचेंट)

" वर्मन कम्पनी (स्टेशनरी एण्ड स्पोर्टस)

लोहेके व्यापारी

मेसर्स जगाधरप्रसाद साह

" टुनकीशा बैजनाथप्रसाद

" भंडारीलाल भगवानसहाय

" श्रीराम हरीराम

मोटर एण्ड मोटर गुड्स डीलर्स

मेसर्स आर्थर बटलर एण्ड को (एजंट फोर्ट कार)

" बिहार एण्ड ओडीसा ओटो मोबाइल कम्पनी (एजंट जनरल मोटर कारपोरेशन)

" बिहार नेशनल मोटर कम्पनी

" पंजाब मोटर वर्कस गोला

" शांति मोटर वर्कस मोतीझील

" गणेशदास रामगोपाल

साइकिल एण्ड साइकिल गुड्स डीलर्स

मेसर्स घोष एण्ड को०

" चक्रवर्ती चटर्जी एण्ड को० मोतीझील रोड

" मित्र एण्ड को०

" मुकुरजी नेफ्यू एण्ड को० मोतीझील रोड

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

चीफ डिस्पेंसरी

ढाकाशक्ति औषधालय लि० (ब्रांच)

बोस एण्ड को०

मेरिट एण्ड को०

वाच मरचेंट्स

मेसर्स कृष्ण वाच कम्पनी सरैयागंज

" तिरहुत वाच कम्पनी छाता बाजार

एल्यूमीनियम मरचेंट

गनपतलाल चौधरी

मोहनसा बिहारीसा

फ्रूट मरचेण्ट्स एण्ड कमीशन एजंट्स

दि मुजफ्फरपुर आर्ट चर्ड एण्ड नरसरी फेकनर्स रोड

दि बिहार फ्रूट प्रियेरिंग कम्पनी आर्म टोला

इलेक्ट्रिक स्टोर्स

मेसर्स आर्थर बटलर एण्ड० को०

" टुनकी शाह बैजनाथप्रसाद

फैक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

आर्थर बटवर आयर्न फेक्टरी

बिहार एण्ड ओड़ीसा ओटो मोबाइल मोटर वर्क शाप क्लब रोड

मुजफ्फरपुर आइस फेक्टरी

मुजफ्फरपुर इलैक्ट्रिक सप्लाइ कम्पनी

श्रीकृष्ण आइल मिल

पेपर एण्ड स्टेशनरी मर्चेंट्स

चीना चौधरी गोपाल चौधरी सरैयागंज

बिहार कामर्शियल एजंसी

बिहार स्टेशनरी मार्ट

बोस एण्ड को०

अग्रवाल वैश्य गोत्रीय खेमका सज्जन हैं। इस फ़र्मका स्थापन करीब ६० वर्ष पहिले ताजपुरमें तथा ३५।३६ वर्ष पूर्व समस्तीपुरमे हुआ था। आरम्भमें बाबू वंशीधरजीने इस फर्म पर गल्ले और कपड़ेका व्यापार शुरू किया था, बादमें आपने थोड़ी जमीदारी भी खरीदी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ वंशीधरजीके पुत्र बाबू बसंतलालजी खेमका हैं। आपके हाथोंसे इस फर्म पर ताजपुरमे जमीदारी खरीदी गई। समस्तीपुर के आप अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं वर्तमानमें आप यहाकी म्युनिसिपिलेटीके वाइसचेयरमैन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

समस्तीपुर—मेसर्स बंशीधर बसंतलाल—यहा कपड़ा और गल्लाका व्यापार होता है।

ताजपुर—मेसर्स बंशीधर बसंतलाल—यहा बैंकिंग और जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स रामनारायण गयाप्रसाद गोयनका

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गयाप्रसादजी गोयनका हैं। इस फर्मका स्थापन आपके पिता बाबू रामनारायणजी गोयनकाके हाथोंसे करीब ५० वर्ष पहिले हुआ था। आरंभसे ही यह दूकान कपड़ेका रोजगार कर रही है। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू गयाप्रसादजीके ४ पुत्र हैं। जिनके नाम बाबू मदनलालजी, रामेश्वरलालजी, फतेहचंदजी एवं शिवशंकर प्रसादजी हैं। इनमेसे बड़े तीन व्यापारमे भाग लेते हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके फतेहपुर निवासी गोयल गोत्रीय गोयनका सज्जन हैं। आपकी ओरसे यहा एक सुंदर धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

समस्तीपुर—रामनारायण गयाप्रसाद—यहा आपकी एक दूकान पर थोक और दूसरी पर खुदरा कपड़े का व्यापार होता है। इसके अलावा जमीदारीका काम भी होता है।

समस्तीपुर—रामनारायण गयाप्रसाद—यहा आपकी दो दूकानें पर गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

दलसिंहसराय—मदनलाल रामेश्वर—कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

दरभंगा—गयाप्रसाद बजरंगलाल—गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—गयाप्रसाद बजरंगलाल २ राजा उडमंड स्ट्रीट—यहा आढ़तका कारबार होता है। इस दूकानमे और दरभंगाकी दुकानमे कन्हैयालाल बद्रीचंदका साझा है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल

इस फर्मका हेड आफिस दरभंगा है। वहां इसके व्यापारका विस्तृत परिचय दिया गया है। समस्तीपुर दूकानपर किरोसीन आईलकी एजंसी और आढतका काम होता है।

मेसर्स ए० पी० घोष एण्ड संस

इस फर्मका स्थापन सन् १८९३ में डाक्टर एच० पी० घोषके हाथोंसे हुआ। वर्तमानमें आपकी अवस्था ७० वर्षकी है। आप फर्मके व्यापारसे रिटायर्ड है। आपकी फेमिली ऊंचे दर्जेकी शिक्षित है। इस समय आपके ५ पुत्र है, जिनमेंसे छोटे बाबू राधाप्रसन्न घोष फर्ममें डाक्टर और बाबू राधामोहन घोष फर्मके मैनेजिंग प्रोप्राइटर है।

आपका व्यवसाइक परिचय इस प्रकार है।

समस्तीपुर—मेसर्स एच० पी० घोष एण्ड सन्स (P. A. Ghosha)—यहाँ केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट मोटर गुड्स एण्ड पेटरोल डीलर्स एवं जनरल मरचेंट्सका व्यापार होता है। इस फर्मकी एक एरेटर वाटर फेक्टरी भी है।

लहरिया सराय—एच० पी० घोष एण्ड संस—यहा उपरोक्त व्यापार होता है।

कपड़ेके व्यापारी

बंशीधर बसंतलाल खेमका
रामनारायण गयाप्रसाद गोयनका
रामेश्वरलाल श्रीलाल
रामप्रसाद दुर्गाप्रसाद
हरदत्तराय गोपीराम

गल्लेके व्यापारी

घासीराम चुन्नीलाल
निरपतसा नथनीसा
भातूसा धन्नूसा
मोतीसा रामदयाल
रामनारायण गयाप्रसाद

किरानेके व्यापारी

दमड़ीसा खोरीराम
बिन्दाप्रसाद राधागोविंद
लालबहादुर देवकीराम

फेक्टरीज और इंडस्ट्रीज

येक्सदर लैंड स्यूगर फेक्टरी
रामेश्वर जूट मिल (दरभंगा महाराज)
ऐरेटर वाटर फेक्टरी (घोष एण्ड संस
रेलवे वर्क शाप (बी० एन० डब्ल्यू रेलवे)

जनरल मरचेंटस	धर्मशालाएँ
एम० एन० पाल	मोतीसा रामदयाल धर्मशाला
रामदास भूपनारायण	महावीरसिंह धर्मशाला
समस्तीपुरको आपरेटिव्ह स्टेअर्स लि०	रामनारायण गयाप्रसाद गोयनका
एच० पी० घोष एण्ड संस	

दरभंगा

यह स्थान बी० एन० डब्ल्यू० आर० का जंकशन है। यहासे कई तरफ गाडिया जाती हैं। गल्लेकी पैदावारीके मध्यमें यह स्थान है, इसके आसपास मधुवनी, जयनगर आदि अनाजकी अच्छी मंडिया है। यह शहर हिमालयके नजदीक तराईमें आगया है। यहाकी पैदावार चांवल, गेहूं, अरहर मड़ुआ मकई, राई, तोरी, आदी, खोवी, पटुवा, सावे, आदि अन्न हैं। हिमालय पहाड़के समीप आजाने से सुपारी, कत्था, चन्दन, मसाला चिरायता, पिचपत्ता, मजीठ आदि भी मिलता है। इसके अलावा तालमखाना, आम और अमावट यहाके विशेष अच्छे होते हैं, और बाहर जाते हैं। इसके पासही जयनगरके रास्तेपर मधुवनी नामक स्थानमें शक्करका कारखाना है इस स्थानपर कोकटी नामक रंगीन कपासका कपडा वहुत सुन्दर बनता है।

यह नगर भी पटनेकी तरह दो विभागोंमें विभक्त है। (१) दरभंगा—यह पुरानी बस्ती है महाराज दरभंगाके महल यहीं हैं। बाघमती नदीके किनारे इस वस्तीकी बसाहट है। यहा की सड़कें टूटी और वेमरम्मत है। बाजार वहुत तंग और गंदे है। पटनासिटीकी तरह थोक व्यवसाइयोंकी दुकाने यहींपर हैं। यहापर २ राइस एवं आइस मिल हैं। यहाका अधिकतर व्यापार मारवाड़ी व्यापारियोंके हाथोंमे है। (२) लहरियासराय - यहा कोर्ट और सरकारी आफिस है, इस वजहसे विशेष चहल पहल रहती है। यहा कपड़ा चादी सोना तथा जनरल मर्चेण्टसकी दुकाने हैं।

दरभंगा जिलेको औसत वर्षा करीब ५२ इंच है। इस जिलेमें उन्तीस लाख बारह हजार मनुष्य संख्या है। जिनमे ७७ प्रतिशत मनुष्य खेती करते हैं।

बैंकर्स और जमींदार

मेसर्स भगवत प्रसाद रामप्रसाद

यह कुटुम्ब बहुत समयसे यहीं निवास कर रहा है। इस खानदानका आगमन आगरेसे हुआ था। बा० सीचनलालजीके समयसे इस कुटुम्बके व्यवसायकी वृद्धि हुई आपने बैंकिंग व जमींदारीके

स्व० बा० रामप्रसादजी
(भगवतप्रसाद रामप्रसाद) दरभंगा

स्वर्गीय मोहनलालजी बेरोलिया
(कुन्दनमल नथमल) दरभंगा।

बा० पद्मनाभप्रसादजी
(भगवतप्रसाद रामप्रसाद) दरभंगा

बा० श्यामाप्रसादजी पोद्दार
(शिवनन्दराय जौहरीराम) [illegible]

व्यवसायमें विशेष ख्याति प्राप्तकी। बा० सीबनलालजीके ३ पुत्र हुए, रायबहादुर देवीप्रसादजी, बाबू हरगोपालदासजी एवं बा० हरकिशनदासजी, बा० हरगोपालदासजीके पुत्र भगवतप्रसादजी एवं बा० लालजी लालजी हुए रा० ब० देवीप्रसादजीके पुत्र रा० ब० गोबर्द्धनलालजीके समयतक इस कुटुम्बका व्यापार उन्नति पर रहा।

बा० हरगोपालदासजीके समयमें ही उनके पुत्र भगवतप्रसादजी एवं लालजी लालजी अलग २ हो गये थे। इस फर्मके बैंकिंग तथा जमीदारीके व्यापारको बा० भगवतप्रसादजीके पुत्र बा० रामप्रसादजीने पुनः उत्तेजित किया। आपका स्वर्गवास सन् १९१८ में होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बा० रामप्रसादजीके पुत्र बा० पद्मनाभ प्रसादजी हैं। आप देशी बीसा अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपकी वय इस समय २७ वर्षकी है इतनी अल्प-वयमें ही आपने जनतामें अच्छा सम्मान पाया हैं। आप दरभंगाके आनरेरीमजिस्ट्रेट एवं म्युनिसिपल चैयरमेन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—मेसर्स भगवतप्रसाद रामप्रसाद—यहांप्रधान बैंकिंग और जमीदारीका काम होता है निमक तथा चीनाका व्यापार भी आपके यहां होता है।

गल्ले और कपड़ेके व्यवसायी

मेसर्स कुंदनमल नथमल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास सूरजगढ़के समीप लोटिया नामक स्थानमें है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंगल गौत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू मोहनलालजीके हाथोंसे ४५।५० वर्ष पहिले मोहनलाल हरदेवदासके नामसे बढ़ैयामें हुआ था। इस फर्मके व्यापारको बाबू मोहनलालजी एवं उनके पुत्र हरदेवदासजीके हाथोंसे तरक्की प्राप्त हुई। बाबू मोहनलालजीने देशमे धर्मशाला और बढ़ैयामें नोपचन्द मगनीरामके साझेमें मिडिल इंगलिश स्कूल बनवाया, इस समय यह स्कूल गव्हर्नमेंटकी ग्राट और व्यापारियोंकी वित्ती द्वारा हाई इंगलिश स्कूलके रूपमें काम कर रहा है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू हरदेवदासजीके छोटे भ्राता राय साहब नथमलजी, बाबू कुन्दनमलजीके पौत्र बाबू हजारीमलजी एवं राय साहबके पुत्र बाबू श्रीनिवासजी हैं। बाबू हजारी-मलजी एवं श्रीनिवासजी शिक्षित सज्जन हैं, आपकी ओरसे यहां कुंदनमल नथमल इंगलिश हाईस्कूल चल रहा है। वर्तमानमें इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—मेसर्स कुंनदमल नथमल—यहा आपका श्री महावीर राइस एण्ड आईल मिल है।

इस मिलमें रेल्वे साइडिंग भी लाई गई है। इसके अलावा गल्ला, बेङ्किग, जमीदारी एवं आढ़तका काम होता है।

बढ़ैया—मोहनलाल हरदेवदास—गल्ला और जमीदारीका काम होता है।

जयनगर—नथमल श्रीनिवास—गल्लेका बड़ा व्यापार तथा जमीदारीका काम होता

निर्मली (भागलपुर) नथमल श्रीनिवास—गल्लेका कारबार होता है।

कलकत्ता—नथमल श्रीनिवास १७३ हरिसन रोड T. N0 244 B. B. आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गयाप्रसाद बजरंगलाल

यह फर्म कलकत्तेके मेसर्स कन्हैयालाल बदरीचन्द और समस्तीपुरके रामनारायण गया-प्रसादके पार्टकी है। आप दोनोंका परिचय क्रमशः कलकत्ता और समस्तीपुरमें दिया गया है। इस फर्मपर गल्लाका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गुरुमुखराम रामचन्द्र

इस फर्मका स्थापन संवत् १९०५ में सेठ गुरुमुखरायजीके हाथोंसे हुआ। आरंभसे ही यह फर्म कपड़ेका कारबार कर रही है। वर्तमानमें इसके मालिक बाबू लक्ष्मीनारायणजी एवं मेघ-राजजी पोद्दार है। आप बिसाऊके निवासी है।

यह फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—गुरुमुखराय रामचन्द्र—कपड़ेका थोक व्यापार और सराफी लेनदेन होता है।

दरभंगा—रामचन्द्र जुगलकिशोर—कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स जुहारमल परशुराम

इस फर्मका स्थापन ५०।६० वर्ष पहले बाबु जुहारमलजीके हाथोंसे हुआ था। आप रेल्वेकी ठेकेदारी और कपड़ेका व्यापार करते थे। गोहाटीकी रेलवे सड़क पुल वगैरा आपके कंट्रा-क्टमें बनी थी। आपके ३ पुत्र हुए बाबू परशुरामजी बाबू ज्वालाप्रसादजी एवं बाबू बुद्धमलजी।

वर्तमानमे इस फर्मके संचालकोंमें बाबू बुद्धमलजी एवं ज्वालाप्रसादजीके पुत्र बाबू बृज-लालजी विद्यमान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है

दरभंगा—मेसर्स जुहारमल परशुराम—कपड़ेका थोक व्यापार जमीदारी तथा सराफी लेनदेनका काम होता हैं।

दरभंगा—बृजलाल हरीराम—गल्लाका व्यापार एवं आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता-जुहारमल परशुराम ४ बेहरापट्टी—आढ़तका काम होता है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल दारूका

इस फर्मके मालिक मूल निवासी जसरापुर (खेतड़ी) शेखावाटीके है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन है। इस फर्मका स्थापन बाबू थानमलजी दारूका और आपके छोटे भाई बाबू चुन्नीलालजीके हाथोंसे करीब ४५ वर्ष पूर्व हुआ था। वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू थानमलजीके पुत्र बाबू पालीरामजी, परमानन्दजी, नारायणप्रसादजी, काशीप्रसादजी और गौरीशंकरजी तथा बाबू चुन्नीलालजीके पुत्र बाबू भगवानदासजी दारूका है, इनमेसे गौरीशंकरजी आई० ए० में पढ़ते है तथा शेष सब सज्जन व्यापारमें भागलेते है।

यह फर्म दरभंगाके व्यवसायिक समाजमें अच्छी प्रतिष्ठित मानी जाती है बाबू पालीरामजी लहेरियासराय गौशालाके सेक्रेटरी एवं बाबू परमानन्दजी दारूका हिन्दु सभा, हिन्दू रिलिफ कमेटी आदि संस्थाओंके सेक्रेटरी हैं। यह फर्म दरभंगा गौशालाकी ट्रेभरर है। वर्तमानमें आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

१ दरभंगा—मेसर्स थानमल चुन्नीलाल बड़ी बाजार—यहां एक दुकानपर कपड़ेका थोक और एकपर खुदरा व्यापार होता है, और किरासिन तेलकी दरभंगा, जयनगर, समस्तीपुर दलसिंहसराय तथा रसड़ा घाटके लिये एजंसी है इसके अलावा जमीदारी और बेंकिंग व्यापार होता है, यह फर्म सन् १९२५ से दरभंगामें इम्पीरियल बेंककी ट्रेभरर और ग्यारंटी ब्रोकर है।

२ दरभंगा—काशीप्रसाद गौरीशंकर—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।

३ दरभंगा—पालीराम नारायण प्रसाद—टिम्बरका व्यापार होता है।

४ जयनगर—थानमल चुन्नीलाल—तेल एजंसी, गल्ला और टिम्बरका व्यापार है।

५ समस्तीपुर—थानमल चुन्नीलाल—तेलकी एजंसी और आढ़तका काम

६ लहरियासराय—पालीराम परमानन्द—कपड़ेका व्यापार होता है।

७ लहरियासराय—भगवानदास काशीप्रसाद—चांदी सोने और गहनेका व्यापार होता है।

८ जनकपुर रोड—चुन्नीलाल पालीराम—कपड़ा और गल्लाका कारबार होता है।

९ कलकत्ता—थानमल चुन्नीलाल ९ बेहरापट्टी T. A. Thanmal आढ़तका काम तथा कपड़ेका व्यवसाय होता है।

दरभङ्गा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड

इस फर्मका स्थापन सन् १९०६में हुआ। दस दस रुपयेके दो हजार शेअरोंमें इसकी बीस हजारकी पूंजी एकत्रित कीगई, यह फर्म गल्लेकी आढ़तका व्यवसाय करनेके उद्देश्यसे स्थापित की गई। आरम्भसे १९ वर्षोंतक बाबू बजरंगलालजी सराफने इसका मेनेजमेंट किया। इस फर्मने थोड़े समयमें ही व्यवसायिक समाजमें मिलकर काम करनेका अच्छा आदर्श उपस्थित किया। इसके वर्तमान मेनेजिंग डायरेक्टर बाबू भोमेश्वरप्रसाद वकील, बाबू शारदा चरण बनर्जी एवं बाबू मुन्नालाल साव हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दि दरभंगा ट्रेडिंग कम्पनी लिमिटेड दरभंगा—यहां सब प्रकारके गल्ला, तेलहन तथा मसालेकी खरीदी बिक्री और आढ़तका काम होता है,

मेसर्स दुर्गाप्रसाद चमड़िया

इस फर्मका हेड ऑफीस मेसर्स हरदत्तराय चमड़िया एण्ड संसके नामसे कलकत्तेमें है। इस दुकानका स्थापन १०।१२ वर्ष पूर्व यहा हुआ था। यहा बाबू रामरिखरामजीके पुत्र जवाहिर लालजी काम करते हैं। इस फर्मपर तीसी और गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स शिवनंदराय जोखीराम

इस फर्मके मालिक बिसाऊ (जयपुर स्टेट) के निवासी अग्रवाल वैश्यसमाजके पोद्दार सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ५० वर्ष पहिले बा० शिवनंदरायजीके हाथोंसे हुआ था। इसके व्यापारको बा० शिवनंदरायजी और उनके छोटे भ्राता बा० जोखीरामजीके हाथोंसे विशेष तरक्की प्राप्त हुई। बा० जोखीरामजीके पुत्र बा० बिसुनदयालजीका स्वर्गवास करीब ५ वर्ष पहिले हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बा० बिसुनदयालजीके पुत्र बा० महावीर प्रसादजी, बा० श्यामसुन्दरजी तथा बा० नागरमलजी पोद्दार हैं। आप तीनों सज्जन व्यवसाय संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दरभंगा—शिवनंदरायजी जोखीराम कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

दरभंगा—शिवनंदराय बिशुनदयाल—सूत और चांदी-सोनेका व्यापार होता है।

कलकत्ता—शिवनंदराय जोखीराम ४०१।७ अपरचितपुर रोड—आढ़तका व्यापार होता है।।

आइल मर्चेंट्स

मेसर्स राधाकिशन श्रीनिवास

इस फर्मका हेड आफिस कलकत्तेमें है। यह मेसर्स ताराचन्द घनश्यामदासकी ब्राच है। दरभंगामें इस फर्मपर २०।२५ वर्षोंसे बर्मा आइल कम्पनीका एजेन्सी है। इसकी शाखाएं जयनगर, मधुवनी, समस्तीपुर, दिलसिंगसराय, रसड़ाधाट भपटियाई, सिपोल, सहसराम आदिस्थानोंपर है। दरभंगा फर्मपर बा० महादेवलालजी १५ वर्षोंसे व्यवसाय करते हैं।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया दरभंगा ब्रांच

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल दारूका

मेसर्स भगवतप्रसाद रामप्रसाद

मेसर्स रघुनाथभगत बैजनाथभगत

क्लाथ मरचेंट्स

गुरुमुखराय रामचन्द्र

गनेशदास रामेश्वर

जुहारमल परशुराम

जेसराज रामरिखदास

थानमल चुन्नीलाल दारुका

पन्नालाल रामरिखदास

परमानन्द बद्रीदास

सुखाराम गजानन्द

मदनलाल गजानन्द

रघुनाथभगत बैजनाथ भगत

रामचन्द्र जुगुलकिशोर

शिवनन्दराय जोखीराम

हरमुखराय जयरामदास

चांदी सोनाके व्यापारी

तोलाराम गिरधारीलाल

नटवरलाल अगरवाला

प्रेमसुखदास रामरतन

मुरलीधर घासीराम

शिवनंदराय बिसुनदयाल

शिवबक्सराय तोलाराम

शिवनारायण रामकुंवार

फेक्टरीज और इंडस्ट्रीज

महावीरजी राइस एण्ड ऑइल मिल

दमड़ीसा ठाकुरराम गंगाप्रसाद राइस एण्ड ऑइल मिल

जयनगर

यह स्थान दरभंगासे उत्तर नेपालकी तराईमें भारतवर्षकी सीमापर स्थित है। यह स्थान गल्ले, चावल और तीसीके व्यापारकी बहुत अच्छी और छोटी सी मंडी है। पाट भी यहां कुछ पैदा होता है हिमालय पहाड़ नजदीक आ जानेसे कत्था, चंदन, तिजपत्ता, मजीठ चिरायता आदि औषधि और मसाला तथा इमारती काठ भी यहां आता है। यहांसे काठमांडू जानेकी ४।५ दिनकी राह है। यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स नथमल श्रीनिवास

इस फर्मका विशेष परिचय दरभंगामें दिया गया है। जयनगरमें इस फर्म पर गल्ला धान और आड़तका कारबार होता है।

मेसर्स थानमल चुन्नीलाल दारूका

इस फर्मका विस्तृत परिचय दरभंगाके पोर्शनमें दिया गया है। राजनगरमें आपके यहा केरोसिन तेल, लकड़ी और गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स बजरंगलाल लादूराम

इस फर्मके मालिकोंका विस्तृत परिचय कलकत्तेके व्यवसाइयोंमें मेसर्स कन्हैयालाल बरदीचंदके नामसे दिया गया है। राजनगरमें आपकी दूकान पर गल्लेका तथा चावलका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

मेसर्स मोतीलाल मोहरीलाल

इस फर्मके व्यापारका विस्तृत परिचय मेसर्स चम्पालाल रामस्वरूपके नामसे प्रथम भागके ब्यावर (राजपूताना) में पृष्ठ ३२ दिया गया है। वहा यह फर्म एडवर्ड मिलकी मैनेजिंग एजंट है। इस फर्मके अंडरमें करीब २० दुकानें और १३ कल कारखानें चल रहे हैं। इसके वर्तमान मालिक रा० ब० चम्पालालजी और आपके पुत्र राय साहब मोतीलालजी रानीवाले हैं।

जयनगरमें इस फर्मका एक राइस मिल है एवं गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

गल्लेके व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स कनीराम बहादुरमल
,, थानमल चुन्नीलाल
,, नथमल श्रीनिवास
,, बजरंगलाल लादूराम
,, बैजनाथ रामकुंवार
,, मंगतूराम जमनाधर
,, मोतीलाल मोहरीलाल
,, सांवलदास शिवदयाल

राइस मिल्स

मेसर्स कनीराम बहादुरमल
,, बैजनाथ रामकुंवार
,, मोतीलाल मोहरीलाल
मेसर्स सावलदास शिवदयाल

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स कनीराम बहादुरमल
,, मगराज गजाधर

सोना चांदीके व्यापारी

मगलूराम जमनाधर
संकररावत गोपाल रावत

किरानेके व्यापारी

डुमामंडल बालगोविंद
बिल्टमंडल छीतरमंडल
राधाकिशन श्रीनिवास
संकररावत गोपालरावत

सीतामढ़ी

बी० ए० डब्ल्यू रेलवेकी दरभंगा नरकटियागंज लाइनके मध्य यह स्टेशन है। यह स्थान गल्ला गुड़ और तीसीकी बहुत अच्छी मंडी है यहाके गुड़में विशेषता यह है कि वह भादवा मासमें ही तय्यार हो जाता है। इतनी जल्दी इस शहरको छोड़कर और कही गुड़ नहीं आता। संवत् १९५५ से यहांका गुड़ दिसावरोंमें जाना आरंभ हुआ। यहासे गुजरात काठियावाड़ हुशंगाबाद पंजाब आदि प्रांतोंमें जाता है। करीब १०।१२सेर भी १ एक मेली होती है। गुड़का रंगलाल और पीला होता है।

दूसरा प्रधान व्यापार यहा तीसी सरसों और अंडीका है। करीब २-२॥ लाखमन तीसी प्रति वर्ष यहासे कलकत्ता रवाना की जाती है। इसके अलावा धान, मसूरी, अरहर, बूंट आदि सब प्रकारके अनाजका व्यापार होता है। तीसी तथा रेंड़ोकी खरीदीके लिये रायलीब्रदर्सकी एजंसी भी यहा है।

यह स्थान जानकीजीका जन्म स्थान है, रामनवमीको यहा अच्छा मेला लगता है। इस शहरके आसपास जनकपुर बरगनिया आदि स्थानोंपर गल्लेकी मंडिया आइल मिल आदि है। यह प्रांत बहुत हराभरा एवं मनोरम है।

मेसर्स जयनारायण जमुनादास

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू रामनाथजी खेमका हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपका मूल निवास रतननगर (बीकानेर स्टेट) है इस फर्ममें मेसर्स जयनारायण रामचंद्र कलकत्ते वालोंका और बाबू जमनादासजीका पार्ट है।

बाबू जमुनादासजी और बाबू बिहारीलालजीने मिलकर ४० वर्ष पूर्व व्यापार आरंभ किया था। संवत् १९८१।८२ तक आपका शामिल कारबार होता रहा। वर्तमानमें जमुनादासजीके पुत्र उपरोक्त नामसे और बिहारीलालजीके पुत्र जयनारायण बिहारीलालके नामसे कलकत्तेवाली फर्मके सामेमें अपना अलग २ व्यापार करते हैं।

बाबू रामनाथजी खेमका श्रद्धानन्द अनाथालय श्रद्धानन्द पुस्तकालय आदि संस्थाओंके सेक्रेटरी और म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आपके कुटुम्बकी ओरसे जमुनाधर बिहारीलाल खेमका धर्मशाला बनी हुई है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सीतामढ़ी—मेसर्स जयनारायण जमुनादास T. A. Khemaka—यहां केरोसिन ऑइलकी एजंसी है इसके अलावा गल्ला चीनी, नमकका व्यापार और आडतका काम होता है।

सीतामढ़ी—खेमका मोटर एण्ड साइकल वर्कस—मोटर गुड्सका व्यापार और पेट्रोलकी एजंसी है।

जनकपुर—जयनारायण जमुनादास—कपडा और गल्लाका व्यापार होता है।

वासपट्टी—रामनाथ खेमका—गल्लाका व्यापार और किरासन तेलकी एजंसी है।

मेसर्स दौलतराम रावतमल

इस दुकानके मालिक कलकत्तेके प्रसिद्ध ग्रेनके व्यापारी मेसर्स दौलतराम रावतमल हैं। इधर कुछ माससे यहा गोला चालू किया गया है। आपके यहासे रेंडी, अलसी, तथा तीसी खरीदकर कलकत्ता भेजी जाती है। यहा बाबू गजानन्दजी मोदी काम करते हैं।

मेसर्स फूलचन्द बिहारीलाल

इस फर्मपर बाबू फूलचन्द साहुके समयमें चांदी, सोना, लोहा, तथा पत्थरका व्यापार होता था। आपके पुत्र बाबू गोपीलालजी साहु बिहारीलालजी साहु और महंत साहुके समय भी यही काम होता रहा। वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू गोपीलाल साहुके पुत्र ठाकुरदयालसाहु, रा० ब० नारायणप्रसाद साहु और बाबू महंतसाहुके पुत्र शिवनारायण प्रसादजी हैं। बाबू ठाकुर

बा० बसन्तीलालजी खेमका
समस्तीपुर (वि० पृष्ट ३८)

बा० रामविलास रायजी सराफ
सीतामढ़ी

बा० रामनाथजी खेमका सीतामढ़ी

बा० हीरालालजी साह मोतिहारी (वि० पृष्ठ ४-

दयालजी किशोरीलालजी; तथा बिंदालालजी और बाबू नारायणपसादजीके पुत्र बाबू जोगेश्वरप्रसादजी व्यवसायमें सहयोग लेते हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

सीतामढ़ी—मेसर्स फूलचंदसाहु बिहारीलाल —यहां बेङ्किग, जमीदारी तथा गल्लाका व्यापार होता है।

जनकपुर रोड - फूलचंदसाहु बिहारीलाल—तेल और नमकका व्यापार होता है।

मेसर्स बींजराज रंगलाल

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल समाजके गर्ग गोत्रीय सज्जन है इस फर्मका स्थापन ४० वर्ष पूर्व केशरीचंदजीके हाथोंसे हुआ था। आपके बड़े भ्राता बाबू बींजराजजीका स्वर्गवास करीब १।। वर्ष पूर्व होगया है। आरंभसेही यह फर्म ग्रेनका व्यापार करती है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू केशरीचंदजीके पुत्र बाबू रंगलालजी चौधरी और स्वर्गीय बींजराजजीके पुत्र हरिकृष्णदासजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बींजराज रंगलाल—यहां गल्लेका व्यापार और आढ़तका काम होता है। यह फर्म महाराज दरभंगाकी मुक्तापुर जूट मिलकी बेनियन है।

कलकत्ता—बींजराज हरीकृष्ण ३२ आर्मेनियन स्ट्रीट T. No. 1381 तारका पता Gopalniwas—यहा चलानीका काम होता है।

खगड़िया—कमलाप्रसाद श्रीनिवास—गल्ला और आढ़तका काम होता है।

चकिया—रंगलाल नथमल—जूट गल्लाका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

साहबगंज (मुजफ्फरपुर)—रंगलाल नथमल—जूट गल्लाका व्यापार होता है।

मेसर्स बैजनाथ नथमल

इस दुकानका स्थापन करीब ७० वर्ष पूर्व छपरामें बाबू रामजसरायजीने किया था। आपका कुटुम्ब फतहपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल समाज (सिंहल गोत्रीय) का है। आपके बाद आपके पुत्र अर्जुनदासजी और फूलचंदजीके हाथोंसे इसके कारबारको तरक्की मिली। यह दुकान करीब ४० वर्ष पूर्व सीतामढ़ीमें स्थापित कीगई।

वतमानमें इस फर्मके मालिक बाबू बैजनाथजीके पुत्र रामनाथजी और शिवनाथजी तथा बाबू नथमलजी और किशोरीलालजी है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बैजनाथ नथमल—यह फर्म बम्बईके हिन्दुस्तान मिल, क्राउन मिल, तथा वेस्टर्न

मिलकी सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, मोतीहारी, दरभंगा, सारन, बनारस और आजमगढ़के लिये एजंट है। तथा गल्ला और कपडा बिकता है।

कलकत्ता—रामजसराय अर्जुनदास—३,बेहरा पट्टी T.A No 4549 B B T.A. Arjundas—चलानी तथा बम्बईकी मिलोंकी एजंसीका काम होता है।

सरसुंड—शिवनाथ किशोरीलाल—कपड़े का व्यापार होता है।

मेसर्स रघुनाथराय रामविलास

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ (राजपूताना) निवासी अग्रवाल समाजके विंदल गोत्रीय सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बाबू रघुनाथरायजीके हाथोंसे ६० वर्ष पूर्व हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए। रामविलासरायजी, गोरखप्रसादजी तथा सूरजप्रसादजी। आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ा और गल्लाका व्यापार करती है। बाबू रामविलास रायजीके पुत्र बजरंगलालजी, जुगलकिशोरजी और हरीप्रसादजी हैं। इसमें से बजरंगलालजीका स्वर्गवास २ मास पूर्व हो गया है। गोरखनाथजी के पुत्र नंदलालजी और चंडीप्रसादजी हैं। सूरजमलजीके पुत्र रामनिरंजन प्रसादजी २० वर्षकी आयुमें स्वर्गवासी हो गये हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे यहां एक जानकीजीका विशाल मन्दिर बना है। बाबू रामविलास रायजी सीतामढ़ीमें ३५ वर्षोंसे आनरेरी मजिस्ट्रेट और ४० वर्षोंसे म्युनिसिपल कमिश्नर हैं नेपाल राज्यमें आपके २० गाव जमीदारीके हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

सीतामढ़ी—रघुनाथराय रामविलास—गल्ला, कपड़ाका व्यापार और सराफी लेन देनका काम होता है।

सीतामढ़ी—मेसर्स बजरंगलाल ब्रदर्स—यहां एलनबरी और मारिसकार कम्पनीकी मोटरकी एजंसी है, इसके अलावा साइकिलका इम्पोर्ट और पेटरोलकी एजंसीका काम होता है। इसका स्थापन बाबू बजरंगलालजीने किया था, आप बहुत होनहार थे।

कलकत्ता—रघुनाथराय रामविलास १९२ सूतापट्टी—चलानीका काम होता है।

बैंकर्स

सैंट्रल कोआपरेटिव्ह बंक
फूलचन्द साहु बिहारीलाल
क्राथ मरचेंट्स
मेसर्स कमलाप्रसाद हनुमानप्रसाद
" केदारबख्श कमलाप्रसाद

मेसर्स गनपतराय महादेव
" गंगाराम श्रीलाल
" बैजनाथ नथमल
" शिवकरणदास हरीप्रसाद
" रघुनाथराय रामविलास
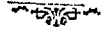
गल्लेके व्यापारी और कमशिन एजेंट

मेसर्स गंगाधर श्रीलाल
" कमलपतसा नथुनीराम
" जयनारायण बिहारीलाल
" जयनारायण जमनाधर
" दौलतराम रावतमल
" फूलचन्द साहु बिहारीलाल
" बींजराज रंगलाल
" रघुनाथराय रामविलास
" राजकुमार बिसनीराम
" रायली ब्रदर्स एजंसी

किरानेके व्यापारी

मेसर्स महंतशाह
" महावीरराम किशनराम
" मंगलचंद देवचंद
" राजकुमारसा बिसुनसा
" वंशलोचन शाह हरीहरप्रसाद

सोना चांदीके व्यापारी

मेसर्स निरसू साहु लछमीप्रसाद
" फूलचंदसाहु बिहारीलाल
" शिवसहायभगत मूलचन्द
" सुब्बालाल रामप्रसाद

गुड़के व्यापारी

मेसर्स दानमल गिरधारीलाल
" बालबक्स जानकीप्रसाद

लोहेके व्यापारी

मेसर्स खूबलालसाहु मोहनप्रसाद
" रामसुन्दर साहु नत्थूसाहु

मोटर गुड्स एण्ड पेटरोल मर्चेन्ट्स

मेसर्स ओटो मोबाइल कम्पनी
" खेमका मोटर एण्ड साइकल वर्क्स
" बजरंग लाल ब्रदर्स
" विश्वकर्मा ब्रदर्स (मायसेपंप, वाच आदि)

औषधालय

आयुर्वेद औषधालय
काली औषधालय

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

डा० मुकुन्दलाल स्टोर्स
सखावत हुसेन एण्ड को०
सूरज एण्ड को०

बर्त्तनके व्यापारी

चुन्नीलाल साहु
देवीराम सखीचंद साहु

सार्वजनिक संस्थाएं

श्रीसीतामढ़ी गौशाला
सनातन धर्मपुस्तकालय
श्रद्धानंद अनाथालय
श्रद्धानंद पुस्तकालय

तेलकी एजेंसी

जयनारायण जमुनाधर
मिर्जामल गोविंदबक्स

धर्मशालाएं

अर्जुनदास धर्मशाला
चतुर्भुज जगन्नाथ धर्मशाला
खेमका धर्मशाला

प्रिंटिंग प्रेस और बुकसेलर

भगवान प्रेस
गा० प० [illegible] प्रेस
गयाप्रसाद (बुकसेलर)

बेतिया

नर कटियागंजके समीप बी० एन० डब्ल्यू रेलवेका स्टेशन है। यह बेतिया राजकी राजधानी हैं। करीब ३६ वर्ष पूर्व यहांके महाराजा साहबका स्वर्गवास होगया, तबसे ठिकाना कोर्ट आफ वार्डसके अंडरमे है। कहते है कि महाराज बहुत प्रजाप्रिय थे। यह स्थान गल्लेकी अच्छी व्यापारिक मंडी है। यहासे गुड़ मारवाड़, पंजाब आदि प्रांतोंमे जाता है तथा हलदी कलकत्तेसे लेकर देहली तक जाती है। इसी प्रकार लहसुन प्याज बंगालमें और तिल मारवाड़की ओर जाते है। इसके अतिरिक्त यहांकी पैदावारमें सौंफ, आलू, अरहर, लहसुन, धनिया, मंगरेला, अदरख, तीसी, सरसों मकई, धान, मसूर आदि है। इस शहरके पास चनपटिया, रक्सोल, वरगनियां, आदि गल्लेकी अच्छी मंडिया हैं। वहा आइल मिल भी है।

बेतियाका मीनाबाजार बहुत अच्छा मालूम होता है। इसकी बनावट विशेष प्रकारकी है।

बैंकर्स एण्ड लैंडलॉर्ड्स

मेसर्स उदयराम सेवाराम

इस फर्मके मालिक रैनी (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके गर्ग गौत्रीय सज्जन हैं। संवत १९०२।३ में बा० उदयरामजी और आपके पुत्र मक्खनलालजी तथा सेवारामजी देशसे बेतिया आये। आरंभमें आपके यहां कपड़ेका व्यापार होता था। बा० मक्खनलालजीने इसके कार-बारकी वृद्धिकी थी, आपके समयमें कलकत्ता, आगरा, मोतीहारी आदिस्थानोंपर इसफर्मका कपड़ा और गल्लाका व्यापार होता था। बा० उदयरामजी का स्वर्गवास भादवा संवत १९३७, मक्खनलाल जीका स्वर्गवास ज्येष्ठ १९५३ तथा सेवारामजीका पौष १९५६ मे हुआ। संवत १९५९ में बा० मक्खनलालजी और सेवारामजीका कुटुम्ब अलग २ हो गया।

वर्तमानमें इसफर्ममें मालिक.बा० सेवारामजीके पुत्र बा० राधाकृष्णजी केदारनाथजी तथा महादेवप्रसादजी हैं। आपने बहुत बड़ी लागतसे बेतियामें एक मंदिर बनवाया है। एवं २० हजारकी जमींदारी धार्मिक कार्मोके लिये दी है। संवत १९६९ में आपके द्वारा एक .गौशालाका स्थापन किया गया। बा० राधाकृष्णजी संवत १९६२ से म्युनिसिपल कमिश्नर हैं। आप बिहार हिन्दीसाहित्य सम्मेलनके स्वागत सभापति निर्वाचित हुए थे। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—मेसर्स उदयराम सेवाराम—बैंकिंग जमीदारी तथा कपड़ेका रोजगार होता है।

रक्सौल—उदयराम सेवाराम—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।
मोतीहारी—उदयराम सेवाराम—बैंकिंग व्यापार होता है।
घोड़ासहन—(चम्पारन) उदयराम सेवाराम—कपड़ा तथा सराफी लेन देन होता है।

मेसर्स सूरजमल महावीरप्रसाद

इसफर्मके मालिक अलसीसर (जयपुरस्टेट) निवाकी अग्रवाल समाजके वांसल गौत्रीय सज्जन है। इस कुटुम्बके व्यवसाय का स्थापन ८० वर्ष पहिले रामपतदासजी रामकरणदासजी तथा हरसुखरायजीके हाथोंसे लखराम रामकरणदासके नामसे हुआ था। ४५ वर्ष पूर्वतक इस नामसे कपड़ा तथा गल्लाकाकारवार होता रहा। पश्चात रामपतदासजीकी फर्म रामपतदास हजारीमलके नामसे अपना अलग कारवार करने लगी। रामपतदासजीके ४ पुत्र हुए बा० हजारीमलजी रामचन्द्रजी, सूरजमलजी यथा महावीरप्रसादजी। आपकी ओरसे यहां एक मातृस्मृति धर्मशाला बनी हुई है। संवत १६५८ मे इनसब भाइयोंकी ३ फर्में हो गईं। वर्तमानमें इसके मालिक बा० सूरजमलजी और महावीर प्रसादजी है। बा० सूरजमलजी झूंझूनूंवाला अग्रवाल सभाके भागलपुर अधिवेशनके सभापति मुकर्रर हुए थे। आप यहा २६ वर्षोंसे म्युनिसिपल मेम्बर हैं। आपके यहां बैंकिंग जमींदारी और कपड़ेका व्यापार होता है।

कपड़ा और गल्लाके व्यापारी

मेसर्स उदयराम मक्खनलाल

इस फर्मका परिचय मुजफ्फरपुरमें दिया गया है। बेतियामे आपकी एक रंडीकी मिल है, तथा आढ़त गल्ला और जमीदारीका काम होता है

मेसर्स रामचन्द्र देवीदत्त

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू रामचन्द्रजी झूंझुनूवाला के ५ पुत्र देवीदत्तजी, केदारनाथ जी, संतप्रसादजी, गोपालप्रसादजी, आदि है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—रामचन्द्र देवीदत्त T.A. Ranisati—यहां जमीदारी, आढ़त, गल्ला तथा किरानेका व्यापार होता है।

चनपटिया—रामचन्द्र देवीदत्त—आढ़त तथा गल्लेका कारवार होता है।

मेसर्स हजारीमल विसेसरप्रसाद

यह फर्म बाबू रामपतदासजीके ज्येष्ठ पुत्र बाबू हजारीमलजी झूंझुनूवाला की है। आप बेतियामें आनरेरी मजिस्ट्रेट एवं म्यूनिसिपल कमिश्नर थे। आपकी फर्म रामपतदास हजारीमलके नामसे बेतिया राज बैंकर्स थी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू विश्वेसरनाथजी है। आप भी म्युनिसिपैलेटीके मेम्बर है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—हजारीमल विसेसरप्रसाद—बैंकिंग, गल्ला, आढ़त तथा जमोदारीका काम होता है।

बेतिया—मल एण्ड संस—मोटर आइलका व्यापार होता है।

सिकटा (चम्पारन)—गल्ला और जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स रामभगतराय सागरमल

इसका स्थापन ५० वर्ष पहिले बाबू अमोलक चंदजीके हाथोंसे हुआ था। वर्तमानमें बाबू सागरमलजी गोयनका इसके मालिक हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

बेतिया—रामभगतराय सागरमल—यहां कपड़े का थोक व्यापार होता है।

कलकत्ता—अमोलकचंद छोगमल १८० हरिसन रोड—चलानीका काम होता है।

बैंकर्स

दि नेशनल कोआॅपरेटिङ्ग बैंक

मेसर्स उदयराम सेवाराम

” सूरजमल महावीर प्रसाद

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स विसेसरलाल डालूराम

” महादेव प्रसाद रामनिवास

” मुन्नीलाल विलास राय

” रामभगत राय सागरमल

” सूरजमल महावीर प्रसाद

” सुन्दरमल हरीराम

मेसर्स सूरजमल नंदलाल

” सूरजमल नथमल

” हरनंदराय विसुनदयाल

” हिम्मतराम पालीराम

चांदी सोनेके व्यापारी

दुर्गादत्त वरदीचन्द

हीरालाल गुटीलाल

गल्लाके व्यापारी और आढ़तिया

मेसर्स उदयराम भगतराम

” गणपतराम लोटनराम

” गिरधारीलाल मोहनलाल

" छोटेलाल भगवान प्रसाद

" जानकीदास जगन्नाथ

" भगतराम जयनारायण

" मुल्तानमल मोहनलाल

" रामचन्द्र देवीदत्त

" हजारीमल विसेसर नाथ

" हरदयाल रामबक्श

मोटर गुड्स एण्ड पेट्रोल मरचेंट्स

मेसर्स मल एण्ड संस

" मोहन वेड़िया

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स मनोरंजन घोप

" मुनशीलाल

" मूलचन्दराम एण्ड को०

रूईकी मिल

उदयराम मक्खनलाल रूईमिल

लायब्रेरी, गौशाला और धर्मशाला

वेतिया पींजरापोल

वेतिया विक्टोरिया मेमोरियल

श्री मातृस्मृति धर्मशाला

वेनिया किंग मेमोरियल हास्पिटल

राज व्हेटरनटी हास्पिटल

मेसर्स राधाकिशन श्रीनिवास (गोरखपुरके अंदरमें)

मोतीहारी

मुजफ्फरपुर नरकटियागंज लाइनमें यह शहर है। यहा व्यापारिक गति [illegible] है। प्राचीन शहर है, पहिले यहाका व्यापार अच्छी उन्नति पर था। इसके नजदीक ही [illegible] कम्पनीका शक्करका कारखाना है। यहा श्री मोतीहारी राइस मिलके नामसे एक [illegible] है। यह शहर मोतीहारी झीलके किनारे पर है। और चम्पारन डिस्ट्रिक्टका प्रधान [illegible] है। इस जिलेकी जन संख्या १७ लाख ६० हजार ४ सौ ६३ है। यहां ८० प्रतिशत [illegible] करते हैं। इस जिलेमें धान, सब प्रकारका अनाज, गुड़ और तम्बाकूकी पैदावार होती है। [illegible] भी यहां अच्छी बनती है।

ही इस फर्म पर जमीदारी खरीदी गई। आप दोनों भाई अपनी मौजूदगीमें ही अलग २ हो गये थे तबसे बाबू काशी साहुका कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है। बाबू काशी साहुके ३ पुत्र हुए जिनमें बड़े हीरालाल साहु विद्यमान है, तथा रामावतार साहु और रामाश्रय साहु स्वर्गवासी हो गये हैं।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बाबू हीरालाल साहु तथा आपके पुत्र रामयाद प्रसादजी, रामदयाल प्रसादजी, महादेव प्रसादजी, भगवान प्रसादजी और कुंजनिवासजी एवं बा० रामावतार साहुके पुत्र कृष्ण प्रसादजी, रामस्वरूप प्रसादजी, गणेशप्रसादजी तथा बाबू रामाश्रय प्रसादजीके पुत्र शिवप्रसादजी, रघुनाथप्रसादजी, रामचन्द्रप्रसादजी तथा सीतारामजी है। आप सब सज्जन व्यापार में भाग लेते है। आपकी ओरसे हीरालाल साहुकी माताजीके नामसे स्टेशन पर एक धर्मशाला बनवाई जा रही है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मोतीहारी—हीरालाल सा किशुनप्रसाद सा—यहा बैङ्किग तथा जमीदारीका काम होता है।

मोतीहारी—गणेशप्रसाद कार्तिकप्रसाद—यहा कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

मोतीहारी—जोगेन्द्रप्रसाद जगधारी प्रसाद- थोक और खुदरा कपड़ेका व्यापार होता है।

श्री मोतीहारी राइस मिल मोतीहारी -इसका संचालन बाबू गणेशप्रसाद और महादेवप्रसाद करते हैं। गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स बिहारीलाल बैजनाथ

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू बिहारीलालजी केड़िया हैं। आप चूरू (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। आपकी दूकानका संस्थापन बाबू जयनारायणजीके हाथों से सम्वत् १९४२ मे हुआ, आरम्भसे ही यह फर्म कपड़ेका व्यापार करती है। बाबू जयनारायणजी का स्वर्गवास सम्वत् १९५३ में हुआ। आपके बाद आपके पुत्र घनश्यामदासजी, बिहारीलालजी और मदनलालजी सम्वत् १९७४ तक शामिल व्यापार करते रहे हैं।

बाबू बिहारीलालजी के चार पुत्र हैं जिनमें २ बड़े रामेश्वरप्रसादजी तथा शंकरप्रसादजी दूसरी जगह दत्तक रख दिये गये है। तथा शेष बाबू केदारनाथजी और बैजनाथजी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

मोतीहारी—मेसर्स बिहारीलाल बैजनाथ—कपड़ेका थोक व्यापार होता है।

ढाका (मोतीहारी) बिहारीलाल केदारनाथ—कपड़ेका व्यापार होता है।

बैंकर्स

देवीलालसा दीनानाथसा

मंगलप्रसादसा कन्हैया प्रसादसा

हीरालालसा किसुनप्रसादसा

कपड़ेके व्यापारी

मेसर्स गणेशप्रसाद कार्तिकप्रसाद

" गजानंद रामचन्द्र

" बिहारीलाल बैजनाथ

" वंशीशाह रामगुलामराम

" रामकुंवार प्रभूदयाल

" रामानंद गजानन

" लक्ष्मीनारायण किशोरीलाल

चांदी सोनेके व्यापारी

मेसर्स बद्रीप्रसाद दुर्गादत्त

" बिहारीलाल बैजनाथ

गल्लेके व्यापारी और कमीशन एजंट

मेसर्स किशुन प्रसाद गनेशप्रसाद

" गिरधारीलाल मोहनलाल

" भोलाप्रसाद भगवानप्रसाद

" महावीर प्रसाद अगरवाला

" लालचंदसा राम अगयाराम

" हनुमानप्रसाद खेमका

किरानेके व्यापारी

मेसर्स वसंतराम कालीराम

" वंशीसा रामगुलामराम

" महावीर राम बैजनाथराम

जेनरल मरचेंट्स

मेसर्स आयर्न कम्पनी

" मंगलचंद बिहारीलाल

" रामस्वरूपराम (स्टेशनर)

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

चटर्जी एण्ड को०

चौधरी एण्ड को०

मुंगेर

जमालपुर स्टेशनसे ई० आई० आरकी एक ब्रांचलाइन [illegible] आई है। [illegible] समस्तीपुर मुजफ्फरपुर आदि स्थानोंमें जानेके लिये यहांसे जहाज [illegible] सम्बन्ध जोड़ती है। यह शहर गंगा नदीके किनारे बसा हुआ है। पुराने जमानेमें [illegible] राजधानी थी। यहां एक प्राचीन किला बना हुआ है। [illegible] सिगरेट फेक्टरी बहुत मशहूर है। इसका संक्षेप परिचय इस प्रकार है।

इम्पीरियल टोबेको कम्पनी लि०—यह कम्पनी इण्डिया [illegible] भारतके लिये सोलएजंट है। इस कम्पनीकी हिन्दुस्तानमें मुंगेर [illegible]

के कारखाने है। मुंगेरका कारखाना पेनिनशुला टोबेको कम्पनीके नामसे मशहूर है। इसमें करीब ३ हजार मजदूर २०० क्लार्क और ५० अंग्रेज काम करते हैं। यह फेक्टरी लालहाथी, मोटर छाप, लैंटर्न, रेल्वे पेडू आदि मार्काकी सिगरेट तैयार करती है।

मुंगेरकी पैदावारमें सब प्रकारके अनाज, तेलहन, धान आदि हैं। यहासे भांग और स्लेट भी वाहर जाती है। इस स्थानपर बन्दूकें और आवनूसके कलमदान छड़ी बक्स अच्छे बनते हैं। इस शहरके समीप ही सीताकुण्ड नामक एक गरम पानीका झरना है।

मुंगेरके पास जमालपुरका प्रसिद्ध लोहे और रेलका कारखाना है। आसपासकी व्यापारिक मंडियोंमें खगड़िया, जमुई, वेगूसराय प्रधान है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स मगनीराम बैजनाथ गोयनका

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान नवलगढ़ (राजपूताना) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके गोयनका सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन श्रीमान् सेठ मगनीरामजी गोयनकाके हाथोंसे करीब ७० वर्ष पूर्व हुआ था। आरंभमें आप गल्ला, सोना, चांदी, महाजनी एवं जमीदारीका काम करते थे। आपका स्वर्गवास करीब २३ वर्ष पूर्व होगया है। आपके पश्चात इस फर्मका व्यवसाय आपके सुयोग्य पुत्र बाबू बैजनाथजी गोयनकाके हाथोंमें आया।

बाबू बैजनाथजी गोयनका बहुत प्रतापी, व्यापारदक्ष एवं ख्याति प्राप्त सज्जन हो गये हैं। आपके समयमें इस फर्मके नाम यश एवं प्रतिष्ठाकी बहुत अधिक वृद्धि हुई। आपने गया मुजफ्फरपुर पटना, भागलपुर, मुंगेर आदि स्थानोंमें बहुत बड़ी जमीदारीकी खरीदी की। स्वर्गवासी होनेके कुछ समय पूर्व आपने कलकत्तेके प्रसिद्ध व्यापारी रा० ब० सर हरीरामजी गोयनका के० टी० सी० आई० ई० एवं रा० ब० सूर्यमल शिवप्रसाद तुलस्यानके साथमें कुमार गुरुप्रसाद सिंहजीसे खेरा राज्य खरीदा, जो अभीतक आपके आधीनीमें है।

गवर्नमेंट द्वारा होनेवाले कार्योंमें आपने कई बड़ी बड़ी रकमें दी थीं। आपको सन् १६०१में गवर्नमेण्टने सर्टिफिकेट पदवीसे सम्मानित किया। सन् १६११ के देहली दरबारके समय आपको रा० ब० की उपाधि प्राप्त हुई। आपने मुंगेर स्टेशनके नजदीक एक सुन्दर धर्मशाला बनवाई। इस प्रकार पूर्ण गौरवमय जीवन बिताते हुए आपका स्वर्गवास सन् १६१६ में हुआ। आप अपने स्वर्गवासी होनेके समय बहुतसा दान कर गये थे।

स्व० रा० ब० सेठ बैजनाथजी गोयनका कैसरेहिन्द मुंगेर
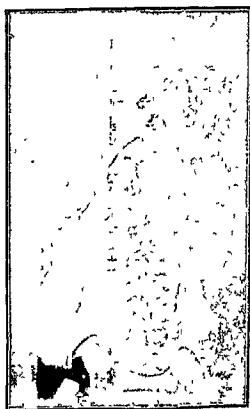
राजा रघुनन्दनप्रसाद सिंहजी एम०एल०ए० मुंगेर

बा० केदारनाथजी गोयनका (मगनीरामजी बैजनाथ) मुंगेर

वर्तमानमें इस फर्मके कारवारको रा० ब० बैजनाथजी गोयनकाके पुत्र बाबू केदारनाथजी गोयनका संचालित करते है। आपका जन्म ३० अक्टूवर सन् १९०९ मे हुआ। आप भी योग्य पिताकी योग्य संतान है। आपने अपने पूज्य पिताजीके स्मारकमें एक कन्या पाठशाला स्थापित करनेके लिये ११ लाख रुपयोंका भारीदान किया है। एवं अपनी माताजीके नामसे स्त्रियोंके आकस्मिक रोगोंके इलाजके लिये एक अस्पताल बनवानेमें २५ हजार दिया है। केदारनाथजी पशुकष्ट निवारिणी सभा मुंगेर और कोढ़ियोंके अस्पतालके सेक्रेटरी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

मुंगेर—मेसर्स मगनीराम बैजनाथ गोयनका T. No. 26—यहां जमीदारीका बहुत बड़ा काम होता है। मुंगेर, भागलपुर, पटना, मुजफ्फरपुर, तथा गया जिलेमें आपकी जमीदारी है। इस फर्मपर बैङ्किंग व्यापार भी होता है।

राजा रघुनन्दनप्रसाद सिंह एम० एल० ए०

राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह साहबके कुटुम्बने व्यवसायसे ही तरक्की पाई है। आपके पूर्वज बाबू रामप्रसादजीके समयमें इस फर्म पर जमीदारी खरीदी गई। आपके बाद आपके पुत्र राजा कमलेश्वरीप्रसाद सिंहजीके समय जमीदारीको तरक्की मिली। आप बड़े फारसी दां और स्वतन्त्र विचारोंके सज्जन थे। मुंगेर म्यूनिसिपल मार्केट, बबुआघाट, मुंगेर वाटर वर्क्स आदि स्मारक आपके हाथोंसे तैयार हुए, इन्हीं सब दानशीलताओंसे प्रसन्न होकर गवर्नमेंटने आपको राजा की पदवीसे सम्मानित किया। आपके दो पुत्र हुए बड़े राजा शिवनन्दनप्रसाद सिंहजी ओ० बी० ई० थे। आपमें लिखने और बोलनेकी अपूर्व प्रतिभा थी, आप आजन्म मुंगेर म्युनिसिपेलेटी एवं डिस्ट्रिक्ट बोर्डके चेयरमैन तथा फर्स्टक्लास मजिस्ट्रेट रहे। आपके पुत्र राजा देवकीनन्दन प्रसाद सिंह एम० एल० सी० हैं।

राजा रघुनन्दन प्रसाद सिंह जी एम० एल० ए०, राजा शिवनन्दन प्रसाद सिंहजीके छोटे भ्राता है। आप संस्कृतके विद्वान एवं वैष्णवसाहित्यके ज्ञाता हैं। दो बार आप बिहार कौंसिलके मेम्बर निर्वाचित हुए। आपने हजारों रुपयोंकी बड़ी २ रकमें गवर्नमेंटके चंदोंमें एवं पब्लिकके कामोंमें दी हैं। अभीतक आप करीब ६ लाखसे ऊपर रकम चारिटीके कामोंमे लगा चुके हैं। जिसमेंसे प्रेम मन्दिरके निर्माणमें एक लाख ५ हजार और उससे सम्बद्ध मुफ्त औषधालय तथा वैदिक संस्थाको जीवित रखनेके लिये २ लाख ७२ हजारके आदर्श दान विशेष रूपसे स्तुत्य हैं

मनीहारी समानके व्यापारी	सिनेरी पेन्टर
मंगतराम रामटहल	मदनलाल खेमका
सीताराम मनीहारीवाला	सीताराम खेमका
लोहेके व्यापारी	**मोटर ऑइल मर्चेन्ट्स**
खेमका स्टील ट्रंक फेक्टरी, मुंगेर	कार कम्पनी
रामचरणसा हरीमोहनप्रसाद	नेवीगेशन कम्पनी
रामप्रसाद खेमका	लादूराम नन्दलाल

भागलपुर

बिहार प्रान्तकी भागलपुर कमिश्नरीका यह प्रधान स्थान है। इस जिलेके उत्तरमें नेपाल, दक्खिनमें संथाल परगना, पूरबमें पूर्णिया एवं पश्चिममें मुंगेर और दरभंगा जिला है। इसका क्षेत्रफल ४२२६ वर्गमील एवं मनुष्य गणना ८७ लाख ८६ हजारके लगभग है। इस जिलेकी प्रधान उपज धान, रब्बी और मकई है। पहाड़ी जमीनमें कुरथी विशेष पैदा होती है। इसके सिवाय हर प्रकारका गल्ला यहां पैदा होता है।

व्यवसायिक साधन—मालको एक स्थानसे दूसरे स्थान भेजनेके लिये एवं यात्राकी सुविधाके लिये यहां ईस्ट इण्डिया रेलवे, और बी० एन० डब्ल्यू रेलवे जिलेमें दौड़ती हैं। गंगा नदीमें स्टीमर चलता है।

भाषा—यहांकी बोली मैथिलीसे मिली जुली है, इसके अतिरिक्त संथाल लोग संथाली एवं मुसलमान तथा कायस्थ उर्दू मिश्रित हिन्दी बोलते है। इस जिलेमें ६८ प्रतिशत मनुष्य खेती द्वारा निर्वाह करते है तथा शेषलोग कारीगरी, नौकरी एवं तिजारत करते हैं।

प्रसिद्ध स्थान—व्यवसायकी दृष्टिसे इस जिलेमे ३ स्थान प्रधान हैं। (१) भागलपुर सिटी (२) कहलगाव (३) सुल्तानगंज।

भागलपुर सिटी—यह शहर भारतमे सिल्क एवं टसरके व्यवसायके लिये विशेष प्रसिद्ध है। इसके आसपास दस दस और बीस बीस कोसोंतक टसर बिननेकी करीब २ हजार तानियां चलती है। यहासे करीब १४।१५ लाखका सिल्की एवं टसरी माल प्रति वर्ष भारतके विभिन्न बाजारोंमे जाता है। साधारणतया ६ गजका थान ६) से लगाकर ४०) तक के

मूल्यका तयार होता है। टसरीमालमें कोटिंग, शर्टिंग, सूटिंग, साड़ी, साफा मुरेठा आदि सभी प्रकारकी किस्म तयार होती है। यह माल अपनी पायेदारीमें विशेष विख्यात है। यों तो यहां यह व्यवसाय सैकड़ों वर्षोंसे चला आता है पर इधर कुछ वर्षोंसे इसमें कई सुधार हुए है। आजकल प्रायः तानीमें जापानी रेशमका विशेष उपयोग किया जाता है। भागलपुर शहरकी आवादी करीब ७५ हजार है। इस शहरकी वसाहट घनी एवं सुन्दर है। यहाके प्रधान बाजर सूजागंजमें विशेष चहल पहल रहती है। इस बाजारमें कपड़ा, चांदी सोना, सिल्क टसर, किराना तथा सब प्रकारका जनरल व्यापार होता है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स

मेसर्स भूदरमल चण्डीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मंडावा (राजपूताना) है। पर इस कुटुम्बको भागलपुरमें निवास करते हुए करीब १०० वर्ष हो गये हैं। सर्व प्रथम देशसे सेठ भानीदत्तजीके पुत्र सेठ रामकिशनदासजी, सेठ हरचन्दरामजी एवं सेठ सदासुखजी भागलपुर आये। सेठ हरचन्दरायजीने संवत १९०४ में कलकत्ता जाकर फर्मका स्थापन किया। इसप्रकार सेठ रामकिशनदासजी एवं हरचन्दराय जी दोनों भाई संवत् १९२४ तक शामिल व्यापार करते रहे। पश्चात् आप दोनोंका कुटुम्ब अलग अलग होगया। सेठ हरचन्दरायजीके २ पुत्र हुए आनन्दरामजी एवं गोवर्द्धनदासजी, वर्तमानमे इन दोनोंभाइयोंका कुटुम्ब अपना स्वतंत्र व्यापार कर रहा है।

सेठ रामकिशनदासजीके पुत्र भूदरमलजी एवं सेठ कालूरामजी संवत '१९३८ में अलग २ हुए भूदरमलजीके पुत्र क्रमशः चन्डीप्रसादजी, दुर्गाप्रसादजी, देवीप्रसादजी, लक्खीप्रसादजी हुए।

सेठ भूदरमलजीके हाथोंसे इस फर्मके व्यापार खूब तरक्की प्राप्त हुई। आपने भागलपुरमें एक धर्मशाला बनवाई, एक महावीरजीका मन्दिर बनवाया, बनारसमे अन्नक्षेत्र चालू किया। आपका स्वर्गवास सन् १९०० में हुआ।

सेठ भूदरमलजी अपने स्वर्गवासी होनेके समय एक ट्रस्ट बना गये थे उस ट्रस्टकी लिखावट के अनुसार कार्य भार सेठ देवीप्रसादजी पर आया, आपने २० वर्षों तक व्यवसायका संचालन किया, पश्चात ट्रस्टकी लिखावटके अनुसार फर्मके मालिकोंमे बटवारा होगया, तबसे सेठ चण्डीप्रसाद-जी एवं सेठ देवीप्रसादजीका कुटुम्ब इस फर्मका मालिक है।

स्व० बा० भूदरमलजी ढांढनियां
(भूदरमल चंडीप्रसाद) भागलपुर
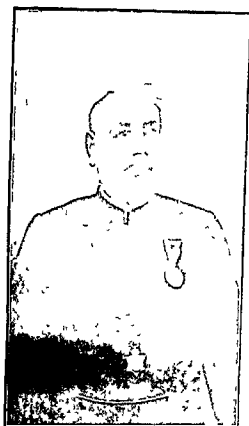
रायबहादुर देवीप्रसादजी ढांढनियां
(भूदरमल चंडीप्रसाद) भागलपुर
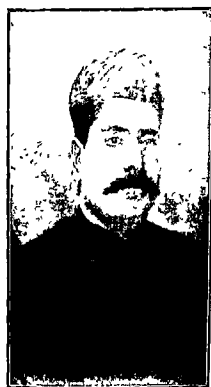
बाबू लक्खीप्रसादजी ढांढनियां
(भूदरमल लक्खीप्रसाद) भागलपुर

बाबू लोकनाथजी ढांढनियां
(भूदरमल चंडीप्रसाद) भागलपुर

सेठ देवीप्रसादजीके हाथोंसे फर्मके कार्योंमें अच्छी वृद्धि हुई, आपको सन् १९१३ में गवर्नमेंटने रायबहादुरकी पदवीसे सम्मानित किया, आपने बद्रीकाश्रम एवं सेतुबंध रामेश्वरमें धर्मशालाएं बनवाईं, बनारसमें अन्नक्षेत्रकी व्यवस्थाके लिये एक मकान बनवाया, भागलपुरकी मारवाड़ी पाठशालाका स्थापन कर कई वर्षों तक आपने उसका खर्च निबाहा।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिकोंमें राय बहादुर सेठ देवीप्रसादजी एवं सेठ चण्डीप्रसादजीके पुत्र बा० लोकनाथजी विद्यमान हैं। रा० ब० सेठ देवीप्रसादजी इस समय फर्मके कार्मोंसे रिटायर्ड होकर शान्तिलाभ करते हैं। एवं व्यवसायका कुल संचालन भार सेठ लोकनाथजी सह्मालते हैं। बा० लोकनाथजी मारवाड़ी पाठशालाके ज्वाइंट सेक्रेटरी हैं इसके सेक्रेटरी रा० ब० वंशीधरजी हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल चंडीप्रसाद—यह हेड आफिस है, यहां बेङ्किंग व्यापार होता है। यह फर्म इम्पीरियल बैंककी ग्यारण्टेड शेयर है।

भागलपुर—मेसर्स देवीप्रसाद बद्रीप्रसाद सूजागंज—यहां चांदी सोनेका व्यापर होता है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल चंडीप्रसाद सूजागंज—यहां गल्लेका व्यापार होता है।

भागलपुर—विहार स्वदेशी कम्पनी सूजागंज—सिल्क टसर तथा सब प्रकारके क्लाथका बिजिनेस होता है।

कलकत्ता - मेसर्स रामकिशनदास चंडीप्रसाद १३६ कॉटन स्ट्रीट T. A. Dhandania—यहाँ बैंकिंग और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—ढाढनियां एण्ड कम्पनी १३६ कॉटन स्ट्रीट—रेलवे मेटीरियलसका इम्पोर्ट बिज़िनेस होता है।

लक्खीसराय और कहलगांव—भूदरमल चंडीप्रसाद—गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स भूधरमल लक्खीप्रसाद

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान मंडावा है। पर बहुत समयसे यह कुटुम्ब भागलपुरमें निवास करता है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके ढाढनियां सज्जन हैं। इस कुटुम्बके व्यापारको सेठ भूदरमलजीके हाथोंसे बहुत तरक्की प्राप्त हुई। आप बहुत प्रतिभाशाली व्यक्ति हो गये हैं। आपके ४ पुत्र हुए, बाबू चंडीप्रसादजी, बाबू दुर्गाप्रसादजी, बाबू देवीप्रसादजी एवं बाबू लक्खीप्रसादजी। सन् १९२० ई०तक इन सब सज्जनोंका व्यापार शामिल होता रहा। सन् १९२०ई०

के बादसे सेठ चंडीप्रसादजी एवं रा० ब० देवीप्रसादजीकी फर्म भूदरमल चंडीप्रसादके नामसे एवं बाबू लक्खीप्रसादजीकी फर्म भूदरमल लक्खीप्रसादके नामसे अपना स्वतंत्र व्यापार करने लगीं।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू लक्खीप्रसादजी ढाढनियां हैं। आपके पुत्र बाबू त्रिवेणी प्रसादजी भी व्यापारमें भाग लेते हैं। आपका कुटुम्ब भागलपुरमें बहुत प्रतिष्ठित माना जाता है। बाबू लक्खीप्रसादजीकी माताजी अपने स्वर्गवासी होनेके समय बड़ी भारी रकम दान कर गईं थीं, उस रकमसे रा० ब० देवीप्रसादजीके द्वारा बद्रीकाश्रम एवं सेतुबंधु रामेश्वरमें धर्मशालाएं बनवाई गईं। इसी प्रकारके और भी कई धार्मिक कार्य हुए हैं। वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स भूदरमल लक्खीप्रसाद—यहां बेङ्किग, स्थाई सम्पत्ति एवं जमीदारीका काम होता है।

मेसर्स हरचन्दराय आनंदराम

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास मंडावा है। पर आप लोग करीब १००वर्षोंसे भागलपुरमें निवास कर रहे हैं। आप लोग अग्रवाल वैश्य समाजके सिंहल गोत्रीय ढांढनियां सज्जन हैं। संवत् १९०४ में सेठ भानीदत्तजीके पुत्र सेठ हरचंदरायजी कलकत्ता गये, एवं वहां अपनी फर्म स्थापित की। संवत् १९४५ तक आप व्यवसायका संचालन करते रहे। आपके पश्चात् आपके पुत्र सेठ आनन्दरामजी एवं गोवर्द्धनदासजीके हाथोंसे फर्मके कारबारको विशेष तरक्की मिली।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ आनंदरामजीके पुत्र बाबू द्वारकादासजी, रा० ब० बंशीधरजी एम० एल० सी० एवं बाबू श्रीमोहनजीके पुत्र केदारनाथजी, तथा सेठ गोवर्द्धनदासजीके पुत्र बाबू ज्वाला प्रसादजी, बाबू हीरालालजी एवं श्रीछोटेलालजी हैं। इन सज्जनोंमें बाबू श्रीमोहनजीका स्वर्गवास थोड़ी ही वयमें होगया है। बाबू द्वारकादासजीके बड़े पुत्र पन्नालालजीका भी स्वर्गवास होगया है। आपके छोटे पुत्र श्रीमोतीलालजी तथा रा० ब० बंशीधरजीके बड़े पुत्र शिवकुमारजी व्यापारमें भाग लेते है। श्री बाबूलालजी, ज्वाला प्रसादजीके यहां दत्तक आये हैं।

इस समय भागलपुर दुकानका संचालन राय बहादुर सेठ बंशीधरजी एम० एल० सी० एवं कलकत्ता दुकानका संचालन बाबू ज्वालाप्रसादजी ढाढनियां करते हैं। सेठ द्वारकादासजी वर्तमानमें व्यापारिक कार्मोंसे रिटायर्ड होकर शांतिलाभ करते है। रा० ब० सेठ बंशीधरजी एम० एल० सी० भागलपुरके अच्छे प्रतिष्ठित सज्जन हैं। आपको भारत सरकारने सन् १९२७ में राय बहादुरकी

स्व० सेठ हरचन्दरायजी ढांढनियां भागलपुर

स्व० सेठ आनन्दरायजी ढांढनियां भागलपुर

स्व० सेठ गोवर्द्धनदासजी ढांढनियां भागलपुर

रा० ब० बंशीधरजी ढांढनियां M.L.C. भागलपुर

बा० ज्वाला प्रसादजी ढांढनियां (भागलपुर)

बा० हीरालालजी ढांढनियां (भागलपुर)

बा० छोटेलालजी ढांढनियां (भागलपुर)
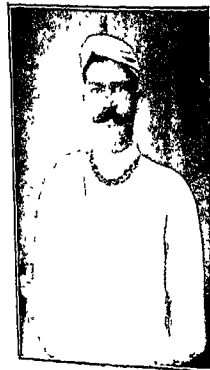
बा० मोतीलालजी ढांढनियां (भागलपुर)

पदवी प्रदान की है। इसके अतिरिक्त आप बिहार लेजिस्लेटिव कौंसिल, बिहार बोर्ड आफ इंडस्ट्रीज आदि कई संस्थाओंके मेम्बर हैं। बिहार चेम्बर ऑफ कामर्सके आप प्रेसीडेंट रह चुके हैं।

इस कुटुम्बकी ओरसे भागलपुरमें श्री आनन्द औषधालय चल रहा है, इसमें ३००-४०० रोगियोंको प्रति दिन औषधि वितरणकी जाती है। बनारसमें आपकी ओरसे एक अन्नक्षेत्र चालू है। कलकत्ता एवं भागलपुरके व्यापारियोंमें इस फर्मकी अच्छी प्रतिष्ठा है। संथाल परगना वगैरामें आप लोगोंकी बहुतसी जमीदारी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स हरचंदराय आनंदराम शुजागंज—यहां हेड ऑफिस है और बेङ्किग तथा जमीदारीका काम होता है।

भागलपुर—मेसर्स आनन्दराम गोवर्द्धनदास शुजागंज—यहां कपड़ेका व्यापार तथा आढ़तका काम होता है। यहां कानपुर ऊलन मिलकी एजंसी है। इसका काम सूरजमलजी शाहके पुत्र दुर्गा प्रसादजी देखते हैं

भागलपुर—हरचंदराय आनन्दराम T. A. Anand—यहां सिल्क एण्ड टसर म्येन्यूफेक्चरर एवं उसकी बिक्रीका व्यापार होता है।

भागलपुर—श्रीमोहन पन्नालाल T. A. Dhandhania—यहां राइस एवं ऑइल मिल है।

कलकत्ता—मेसर्स हरचंदराय गोवर्द्धनदास १८० हरिसन रोड, T. No. 2129 B. B. तारका पता Hargobar.—यहां कपड़ेका इम्पोर्ट, व्यापार आढ़त एवं लेन देनका काम होता है।

कलकत्ता—हीरालाल बब्बूलाल ६६ सूतापट्टी—धोतीका व्यापार होता हैं।

कलकत्ता—छोटेलाल बनवारीलाल २० उलटा डांगी रोड T. No. 1605 B B—यहां आइल मिल तथा आयर्न फाउंडरी वर्क है।

कलकत्ता—बाबूलाल रामेश्वरदास ४६ सूतापट्टी—सूतका व्यापार होता है।

पटना—श्री बिहारीजी मिल्स T. A. FLOUR T. No. 518 Patna—इसके अंडरमें आइल राइस, फ्लावर एवं दाल मिल तथा आयर्न फाउंडरी वर्क्स हैं। इसका विशेष परिचय पटनामें दिया गया है।

मेसर्स बोहितराम रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक मलसीसर (जयपुर स्टेट) के निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय झुनझुनूवाला सज्जन हैं। बाबू रामसनेहीदासजी ८० वर्ष पूर्व व्यापार निमित्त कलकत्ता आये थे। आपके चार भ्राता और थे जिनका नाम बाबू हरदयालजी, बोहितरामजी, रामचन्द्रजी एवं हरखामलजी था। इनमेंसे सेठ रामसनेहीदासजी एवं बोहितरामजीने मिलकर कलकत्तेमें रामसनेहीराम बोहितरामके नामसे फर्मका स्थापन किया। उसी समय करीब ७० वर्ष पूर्व भागलपुर में भी बोहितराम रामचन्द्रके नामसे फर्म स्थापित की गई।

वर्तमानमें सेठ बोहितरामजी, हरसामलजी एवं रामचन्द्रजी का कुटुम्ब इस फर्मका मालिक हैं, इस समय कार्य संचालन करनेवाले प्रधान व्यक्ति बाबू बैजनाथजी, रामेश्वरलालजी, ज्वालाप्रसादजी ओंकारमलजी, केशवदेवजी एवं महादेवलालजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

कलकत्ता—मेसर्स रामसनेहीराम बोहितराम ४।१।७ A अपरचितपुर रोड—आढ़तका काम होता है।

भागलपुर—बोहितराम रामचन्द्र—बैङ्किंग, सोना चांदी तथा जमीदारीका काम होता है।

भागलपुर—बैजनाथ रामेश्वरलाल, सुजागंज—फैंसी गुड्सका व्यापार होता है।

भागलपुर—रामेश्वरलाल केशवदेव, मिर्जानहाट—गल्लेका व्यापार होता है। यहां रामकुंवारजी काम देखते हैं।

नवगछिया—B.N.W.R. बलदेवदास महादत्त—गल्लेका व्यापार होता है।

रावराघाट (दरभंगा)—ओंकारमल महादेवलाल—गल्लेका व्यापार होता है।

किरानेके व्यापारी

मेसर्स शोभाराम जोखीराम

इस फर्मके मालिक बाबू जोखीरामजी मेहेसेका हैं। आपका मूल निवास मुकुन्दगढ़ (शेखावाटी) हैं। इस फर्मका स्थापन सेठ शोभारामजीके हाथोंसे करीब ६० वर्ष पूर्व हुआ था। इस नामसे यह फर्म ४८।५० वर्षोंसे व्यापार करती है। आरम्भसे ही यह फर्म किरानेका व्यापार कर रही है। सेठ जोखीरामजीके नाती श्रीयुत रामप्रसादजी है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स शोभाराम जोखीराम सूजागंज T A. Jokhiram—यहां किरानेका व्यापार होता है

बाबू जानकीदासजी गोयल भागलपुर
(जानकीदास बैजनाथ)

बाबू लादूरामजी मांडिया भागलपुर
(लादूराम नन्दलाल)

श्रीयुत रामप्रसाद मेंहसका भागलपुर
(गोभाराम जोखीराम)

बाबू पन्नालालजी मोदी रांची (वि० पृष्ट १०५)
(भीमराज [illegible])

यह फर्म नीचे लिखी कम्पनियोंकी भागलपुरके लिये सोल एजंट है।

१—इम्पीरियल टोबेको कम्पनी इण्डिया लिमिटेड पटना।

२—फारवस फारवस केम्बिल कम्पनी लि० कलकत्ता।

३—इम्पीरियल केमिकल इंडस्ट्रीज लि० कलकत्ता।

४—लोयन इण्डिया लि० कलकत्ता।

५—वर्मा सेल कम्पनी कलकत्ता।

६—धरहरा एम्बुलंस प्लेत्र स्टोन कम्पनी लि०

भागलपुर—जोखीराम भगवानदास, सूजागंज - मनीहारी सामानका व्यापार होता है।

भागलपुर—जोखीराम रामप्रसाद—अरण्डी, अतर, तेल सेंट, शरबतका कारखाना है।

राजमहल—जोखीराम प्रहलादराय—किराना तथा गल्लाका काम होता है।

साहबगंज—शोभाराम जोखीराम—किराना, गल्ला, और तेलका व्यापार होता है।

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स जयरामदास हनुमानदास

इसफर्मके वर्तमान मालिक बाबू हनुमानदासजी हिम्मतसिंहका हैं आप कलकत्तेके बाबू प्रभूदयालजी हिम्मतसिंहकाके बड़े भ्राता हैं, और भागलपुर निवासी सेठ जयरामदासजीके यहां दत्तक आये हैं। सेठ जयरामदासजी संवत् १९४० से भागलपुरमें कपड़ेका व्यापार करते थे। संवत् १९६० में बाबू हनुमानदासजीने इस फर्मका स्थापन किया। आपके पुत्र बाबू श्रीनिवासजी, नथमलजी एवं मदनलालजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके हिम्मतसिंहका सज्जन हैं। देशमें आपका निवास सिंहाना (शेखावाटी) है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

भागलपुर—मेसर्स जयरामदास हनुमानदास सूजागंज—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है। आपने कपड़ेका इम्पोर्ट भी शुरू किया है।

मेसर्स जानकीदास बैजनाथ

इस नामसे यह फर्म ८।१० वर्षोंसे यहां व्यापार कर रही है। इसके पूर्व ४८ वर्षोंसे यहां कपड़ेका कारबार होता है। इसके वर्तमान मालिक जानकीदासजीके पुत्र बैजनाथजी और मोहनलालजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—जानकीदास बैजनाथ—यहां कपड़ेका थोक व्यापार और हुंडी चिट्ठीका काम होता है।
भागलपुर (मिर्जानहाट) जानकीदास बैजनाथ और बैजनाथ मोहनलाल —यहागल्लेका व्यापार होता है।
कलकत्ता—जानकीदास बैजनाथ १७३ हरीसन रोड—यहां आढ़त और सराफी लेनदेनका काम होता है। इसके अतिरिक्त मुरलीगंज और आलामनगरमें कपड़ा और किराना बिकता है।

मेसर्स जीवनराम रामचन्द्र

यह फर्म कलकत्तेके सूतके व्यापारी मेसर्स जीवनराम शिवबक्सकी है। आपके यहां भागलपुर और नाथगंजमें रेशमी यार्न सूत, कपड़ा और भागलपुरी टसरका व्यापार होता है, यहां रामदेवजी गोयनका काम देखते हैं। इसकी एक ब्रांच मुजफ्फरपुरमें भी है। तारका पता Murli है।

मेसर्स लच्छीराम बलदेवदास

इसफर्मका स्थापन संवत १९५७ में हुआ, इसमें वर्तमान मालिक सेठ लच्छीरामजी एवं उनके पुत्र बलदेवदास और मूलचंदजी हैं। बलदेवदासजीके पुत्र महावीरप्रसादजी भी व्यापारमें भाग-लेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर - लच्छीराम बलदेवदास—यहां कपड़ेका थोक व्यापार होता है।
भागलपुर—हजारीमल महावीर प्रसाद—ऊलन, फैंसी गुड्स और रेशमी कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स हरनाथराय बींजराज

इसे सेठ हरनाथरायजीने १० वर्ष पहिले स्थापित किया। इसके पूर्व आप ४८।५० वर्षोंसे हरनाथ राय जानकीदासके नामसे कपड़ेका कारबार करते थे। इसके वर्तमान मालिक हरनाथ रायजी एवं उनके पुत्र बींजराजजी, लक्खीप्रसादजी तथा बनारसी प्रसादजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—हरनाथराय बींजराज—यहां कपड़ेका थोक व्यापार व सराफी लेन देन होता है।
भागलपुर—हरनाथराय लक्खीप्रसाद मिरजानहाट—गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है।
कलकत्ता—हरनाथराय बींजराज, ६५ लोअर चितपुर रोड—यहां आढ़तका काम होता है।

ऑइल एण्ड फ्लावर मिल ऑनर्स

मेसर्स बलदेवदास नारायणदास

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास मुकुन्दगढ़ (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके मेहेसेका सज्जन हैं। श्री बाबू बलदेवदासजी देशसे करीब ५० वर्ष पहिले भागलपुर आये थे। आपने किरानेके व्यापारमें अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्तकी। आपका स्वर्गवास करीब संवत १९६९में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ बलदेवदासजीके पुत्र बा० नारायदासजी एवं बा० जुगुल-किशोरजी मेहेसेका हैं। बा० नारायणदासजी भागलपुर के बड़े उत्साही सार्वजनिक कार्यकर्ता हैं। भागलपुरकी कई पब्लिक संस्थाओंके संचालनसे आपका संघनिष्ट सम्बन्ध है। आप भागलपुर गोशालाके ज्वाइंटसेक्रेटरी, और मारवाड़ी पाठशालाकी मैनेजिंग कमेटीके मेम्बर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर-मेसर्स बलदेवदास नारायणदास सूजागंज—यहां गद्दी है।

भागलपुर-शिवगोरीफ्लावर मिल—इसनामसे आपकी बहुत बड़ी रोलर फ्लावर मिल है। यह अपटूडेट ओटोमेटिक स्केलपर काम करती है। इसकी बिल्डिंग एवं मशीनरी अच्छी मजबूत है। यहां करीब ५० टन माल प्रतिदिन तैयार हो सकता है।

मेसर्स लादूराम नन्दलाल

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान उदयपुर (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके बांसल गोत्रीय भाउंडिया सज्जन हैं। भागलपुरमें करीब ५५ वर्ष पूर्व सेठ लादूरामजी आये थे। आरंभमें आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। तथा इधर २० वर्षोंसे शिवमिल नामसे एक तेलकल स्थापित की है। इस समय आपकी अवस्था ७५ वर्षकी है।

वर्तमानमें इस फर्मके व्यवसायको बाबू लादूरामजीके पुत्र बाबू नन्दलालजी बाबू बैजनाथजी एवं बाबू लोकनाथजी संचालित कर रहे हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर मेसर्स लादूराम नन्दलाल—यहां सिल्क एण्ड टसर स्टोरके नामसे आपका भागलपुरी टसर कपड़ा तैयार करनेका कारखाना है। तथा ब्याजका काम होता है।

भागलपुर शिवमिल कम्पनी, मुंदीचक—यहां ऑइल एवं राइस मिल है। तथा आढ़तका काम होता है।

गल्लाके व्यापारी

मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सिंहाना (शेखावाटी) है। आप अग्रवाल वैश्य समाजके प्राणसुखका सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन बा० ख्यालीरामजीके हाथोंसे करीब २० वर्ष पहिले हुआ था। आपका कुटुम्ब भागलपुरमें करीब सौ वर्षोंसे निवास कर रहा है। आरंभसे ही यह फर्म गल्लेका व्यापार कर रही है। बा० ख्यालीरामजीको गोसेवामें बहुत प्रेमथा। आपका स्वर्ग वास करीब २॥ वर्ष पूर्व हो गया है। वर्तमानमें आपके पुत्र बा० केदारनाथजी फर्मके मालिक हैं।

आपका व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

भागलपुर—मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ सूजागंज—गल्ले और आढ़तका काम होता है। तथा स्टेन्ड र्ड आइल कम्पनीकी एजंसी एवं कंट्राक्टरका काम होता है।

थाना बिहपुर—मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ—गल्लेका व्यापार होता है।

नौगछिया—मेसर्स ख्यालीराम केदारनाथ—गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स मोहनलाल चाथमल दुधेड़िया

इस फर्मके संचालक ओसवाल समाजके सज्जन हैं। भागलपुरमें यह फर्म गल्लाका व्यापार और आढ़तका काम करती है।

इसका विशेष परिचय हमारे ग्रन्थके प्रथमभागमें राजपूताना विभागमें पृष्ट १४५ में दिया गया है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लिमिटेड (ब्रांच)

बनारस बैंक लिमिटेड (ब्रांच)

भूदरमल चंडी प्रसाद

भूदरमल लक्ष्मीप्रसाद

बोहितराम रामचन्द्र

हरचंदराय आनंदराम

सिल्क एण्ड टसर मेन्युफेक्चरर

टसर एण्ड सिल्क स्टोर शुजागंज

महावीर सिल्क फेक्टरी शुजागंज

रामचन्द्र बंशीधर शुजागंज

सीताराम हरनारायण (मरचेंट) शुजागंज

हरचंदराय आनंदराम शुजागंज

गोरखराम दुर्गादत्त (नाथ नगर)

क्लाथ मरचेंट्स

आनंदराम गोवर्द्धनदास (कानपुर ऊलनमिल एजंसी)

जयरामदास हनुमानदास

जानकीदास बैजनाथ

जीवनराम रामचन्द्र (सूत कपड़ा)

दानमल मूलचंद

बैजनाथ रामेश्वरलाल (फैंसी गुड्स मरचेंट्स)

बैजनाथ जोधराज

बिहार स्वदेशी कम्पनी

लच्छीराम बलदेवदास

हरनाथराय बींजराज

ग्रेन मरचेंटस

ख्यालीराम केदारनाथ मिर्जानहाट

गोपीसहाय मुंशीसा मिर्जानहाट

जानकीदास बैजनाथ मिर्जानहाट

भगवतीराम देवीप्रसाद „

भूदरमल चंडीप्रसाद

मोहनलाल चौथमल दुधेरिया (कमीशनएजंट)

रामेश्वरलाल केशवदेव मिर्जानहाट

लछमनसा गोपालसा मिर्जानहाट

हरनाथराम लक्खीप्रसाद मिर्जानहाट

केदारनाथ निर्मलचन्द्र गोहा, मंसूरगंज (आयर्न फाउंडरी वर्क)

भूरामल भैंवगीलाल भुतेड़िया (कमीशनएजंट)

फैक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

श्रीमोहन पन्नालाल (राइल ऑइल)

विक्टोरिया मिल (ऑइल)

शिवमिल (लादूराम नन्दलाल आइल मिल)

शंकर मिल (आइल.) वसंतलाल गमजीदास

शिवगौरी फ्लावर मिल (बलदेवदास नारायणदास)

भागलपुर सिल्क ईंस्टिट्यूट(गवर्नमेंटकी ओरसे)

किरानेके व्यापारी

पीरामल श्रीराम

शिवबख्श राय सागरमल

शोभाराम जोखीराम

भागलपुरी क्लाथ मरचेण्ट्स

कुंजलाल गणपतराय

गणपतराय देवीप्रसाद

बिहार वीविंग फेक्टरी शाप

भूरामल लक्खीप्रसाद

लादूराम नन्दलाल

चांदी सोनेके व्यापारी

कन्हैयालाल बनारसीप्रसाद

खेतसीदास महादेवलाल

देवीप्रसाद बद्रीप्रसाद

बोहितराम रामचन्द्र

रामानन्द जौहरीमल

हीरालाल नंदलाल

प्रिंटिंग प्रेस

गोपाल स्टीम प्रेस

युनाइटेट प्रेस

लायब्रेरीज

श्रीभगवान पुस्तकालय

सरस्वती पुस्तकालय

धर्मशालाएँ

जैन धर्मशाला

टोरमल डिल्सुन्गर

भूदरमल चंडीप्रसाद धर्मशाला

[illegible]

हरदेवदास डोकनियां धर्मशाला	**औषधालय और अस्पताल**
जेनरल मरचेंट्स	आनन्द औषधालय
जगन्नाथराम बैजनाथराम	सरकारी अस्पताल
ढांढनियां एण्ड को० (इलैक्ट्रिक गुड्स)	ढाकाशक्ति औषधालय
शोभाराम जोखीराम सूत्रागंज	ढाका आयुर्वेदिक फार्मेसी लिमिटेड

दानापुर

यहां फौजी छावनी है। यह स्टेशन ई० आई आर लाइनमें पटना जंक्शनसे लगा हुआ है। छावनीकी वस्ती साफ और सुथरी है। इस स्थानका सब व्यापार पटनेसे सम्बन्ध रखता है, यहां और खगोलमें मिलकर करीब ६ आंइल और राइस मिल हैं।

आर्यन मिल

इस मिलका स्थापन सन् १६११ में हुआ। इसके मालिक बाबू लक्ष्मणप्रसाद सिंहजी एवं यशोप्रसादसिंहजी हैं। आप अवध्या कुरमी समाजके सज्जन हैं। वर्तमानमें फर्मके मैनेजिङ्ग प्रोप्राइटर बाबू गुरुप्रसादसिंहजी हैं। दानापुरमें इस फर्मकी बहुतसी जमीदारी है। कलकत्तेमें आपका बहुत बड़ा ईंटा बनानेका कारखाना है। करीब ४०।४२ पगमेल आप चलाते हैं। आप मेसर्स मेकेंटमर्स एण्ड कं०के ईंटा बनानेके कंट्राक्टर हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आर्यन मिल दानापुर T. No 611 T A Oryanmills,—यहां आटइल, फ्लावर राइस मिल एण्ड आयर्न फाउंडरी वर्क है

पटना सिटी—आर्यन मिल ब्रांच—मारुफगंज—यहां बिक्री व्यापार होता है।

पटना जं०—आर्यन मिल—आटइल और फाउंडरी है।

मेसर्स श्यामलाल भागवतप्रसाद

इस फर्मके व्यवसायका विशेष परिचय मेसर्स श्यामलाल भगवानदासके नामसे पटनेमें दिया है। दानापुरमें इस फर्मका राइस मिल है। और गल्लेका व्यापार होता है।

मेसर्स गोपीलाल मिश्रीलाल

इस फर्मके मालिक फतहपुर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके भरतिया सज्जन हैं। सेठ जादोरामजीने करीब ७० वर्ष पूर्व पटनेमें दुकान स्थापित की थी। उस समय इस फर्मको बहुतसी ब्रांचेज थीं जिनपरजादोराय जुहारमलके नामसे गल्ला और आढ़तका काम होता था। बाबू जादोरामजी नेही सबसे पहिले बिहार प्रान्तमें आइल मिल चलाया। २०।२२ वर्ष पूर्वसे जादोरामजीके पुत्र ठाकुरदासजीकी फर्म साहबगंजमें और जुहारमलजीके पुत्र गोपीलालजी की फर्म दानापुरमें अपना अलग २ कारवार करने लगी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू गोपीलालजी और मिश्रीलालजी दोनो भ्राता हैं आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

दानापुर—मेसर्स गोपीलाल मिश्रीलाल T No 608 Patna—यहां आपका फाउंडरी वर्क तथा आँइल मिल है। यह मिल बिहारमें सबसे पुरानी है। करीब ५२ वर्ष पहिले यह स्थापित की गई थी।

कपड़ेके व्यापारी

मनीराम बैजनाथ

रामप्रसाद भगवानप्रसाद

लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर

फेक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

गोपीलाल मिश्रीलाल ऑइल फ्लावर फौंड्री

लक्ष्मणप्रसादसिंह केशोप्रसादसिंह आयर्नमिल

लक्ष्मी राइस एण्ड आँइल मिल

श्यामलाल किनशलाल राइस मिल

इम्पीरियल मिल (खगोल)

भगवंती राइस आँइल मिल (खगोल)

गल्लेके व्यापारी

कपूरचंद लालराम वचनलाल

दुखितलाल भगवानदास

रामगोविन्दप्रसाद शिवगोविन्दप्रसाद

रामचरनलाल वनवारीलाल

श्यामलाल भगवानप्रसाद

चांदी सोनेके व्यापारी

डोमासाव किशनलाल

रामभगतसाव पारीसाव

जनरल मरचेंटस

गौरीलाल एण्ड ब्रदर्स

वालकराम एण्ड को०

ए० वी० डेरी फार्म

आरा

यह शहर ईस्ट इण्डिया रेलवेकी मेन लाइन पर पटना और मुगलसरायके मध्यमें स्थित है। यह स्थान विहार प्रांतके शाहाबाद जिलेका प्रधान नगर है। यहांसे आरा सहसराम लाइट रेलवे सहसराम की ओर गयी है। शाहाबाद कमिश्नरीमें आरा, बक्सर, सहसराम तथा भभुआ नामक चार प्रधान व्यापारिक स्थान हैं। इनके आस पास कई ऐतिहासिक स्थान है। जगदीशपुर (आरा) में सन १८५७ के विप्लवमें भाग लेनेवाले प्रसिद्ध बाबू कुंवरसिंहका निवास स्थान है। बक्सरमें सन् १७६४ में बंगालके नवाब मीरकासिम और शाहआलम के साथ अंग्रेजोंका युद्ध हुआ था। बक्सर के समीप ही श्रीरामचन्द्रजीने ताड़काका वध किया था। सहसराममें शेरशाहका मकवरा है यहां दरी, कालीन और मिट्टीके बर्तन अच्छे बनते हैं। नासरीगंजमें चीनी बनाई जाती है सहसराम सब डिविजिनमे रोहतास गढ़, शेरगढ़ नामक दो किले हैं। इस जिलेकी प्रधान पैदावार धान, मकई, गेहूं, रव्वी और भदई है।

आरा प्राचीन वस्ती है। यहां प्रधान व्यापार गल्ले और कपड़ेका होता है। इसके अतिरिक्त किराना और जनरल सामान बाहरसे आता है। यहां जैन समाजके कई धार्मिक कार्य है जिनमें विशेष उल्लेखनीय वीर बाला विश्राम है।

वीर बाला विश्राम—इस आश्रमकी संचालिका विदुषी देवी चंदाबाई हैं। आपके पति केवल १८ वर्षकी अल्पायुमे ही स्वर्गवासी हो गये थे तबसे आप बराबर परोपकारके कार्योंमें विशेष समय लगा रही है। आपने १९२१ में इस आश्रमकी स्थापना की। इस संस्थामें इस समय ५५ छात्रिकाएं अध्ययन करती है। जिनमें २० कन्याएं ३० विधवाएं एवं ५ सौभाग्यवती हैं। इस संस्थाके ध्रुवफंडमें तीन चौथाईसे अधिक रकम आपकी ओरसे दी गई है।

आराके व्यवसाइयोंका परिचय इस प्रकार है।

बैंकर्स और जमीदार

मेसर्स निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन

इस कुटुम्बका प्राचीन निवास इलाहाबादके नजदीक है। वहांसे बाबू प्रभूदासजी बनारस आये और वहासे करीब ८० वर्ष पूर्व आरा आये। यहा आपने जमीदारी और बैङ्किग व्यवसाय आरम्भ किया, एवं अपने समयमें धार्मिक कामोंमे अच्छी प्रसिद्धि पाई। आपने इलाहाबाद जिलेमें २ जैन मन्दिर, बनारसमें २ तथा आरामे एक जैन मन्दिरका निर्माण कराया। बनारसमें गंगातीरपर भदैनीका विशाल जैन टेम्पल आपहीका बनवाया हुआ है। आपका स्वर्गवास करीब ५० वर्ष

स्वर्गीय बाबू देवकुमारजी जैन आरा

बाबू निर्मलकुमारजी जैन आरा

बाबू चक्रेश्वरकुमारजी जैन बी० एस० सी० एल० एल० बी०

पूर्व हो गया है। आपके पुत्र बाबू चन्द्रकुमारजीके श्रीदेवकुमारजी एवं श्रीधर्मकुमारजी नामक दो पुत्र हुए। इन सज्जनोंमेंसे बाबू धर्मकुमारजीका सन् १९०१ में केवल १८ वर्षकी अल्पायुमें स्वर्गवास हो गया, आपके स्वर्गवासी होनेके बाद आपकी धर्मपत्नी श्रीमती देवी चंदाबाईने अपना धार्मिक जीवन बिताते हुए श्री जैनबाला विश्राम नामक एक आश्रम की स्थापना की, जिसका परिचय पूर्व दिया जा चुका है।

बाबू देवकुमारजी भी बड़े विद्वान और उच्च हृदयके होनहार सज्जन थे, आप भी ३० वर्षकी अल्पायुमें स्वर्गवासी हो गये, आप अपने स्वर्गवासी होनेके समय ८ हजार सालाना आमद-की जमीदारी दान कर गये, जिसकी आयसे वर्तमानमें आरा ओरियंटल जैन लायब्रेरी, जैन कन्या शाला, सम्मेद शिखर जैन औषधालय आदि संस्थाओंका संचालन और विद्यार्थियोंके स्कालर शिप-का प्रबंध होता है। बाबू देवकुमारजी, जैनमहासभा के सभापति भी मनोनीत किये गये थे, आपके स्वर्गवासी होनेके समय आपके पुत्रोंकी अवस्था छोटी थी अतएव ८।१० वर्षोंतक फर्मका प्रबन्ध भार कोर्ट आफ वार्डसके जिम्मे रहा।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक स्वर्गीय बाबू देवकुमारजीके पुत्र बाबू निर्मलकुमारजी एवं बाबू चक्रेश्वरकुमारजी जैन B S C.L L B हैं आप दोनों शिक्षित सज्जन हैं। बाबू निर्मलकुमारजी बिहारचेम्बर ऑफ कामर्सके वाइस प्रेसिडेन्ट हैं। आपके जिम्मे सम्मेद शिखर, पावापुरी आदि बिहारके जैन तीर्थोंका प्रबन्ध भार है। आपकी फर्म आल इण्डिया जैन महासभाकी ट्रेझरर है। आपका कुटुम्ब जैन समाजमें अच्छा प्रतिष्ठित माना जाता है।

वर्तमानमें आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आरा—मेसर्स निर्मल कुमार चक्रेश्वरकुमार जैन—इस नामसे आपकी शाहाबाद जिलेमें जमीदारी है

आरा—श्री सरस्वती प्रिंटिंग प्रेस, चौक—इस नामसे प्रेस है।

कपड़े और गल्लेके व्यापारी

मेसर्स कनीराम गणपतराय

इस फर्मके मालिक अलसीसर (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके यामन गौत्रीय सज्जन हैं। इसफर्मका स्थापन बा० कनीरामजीके हाथोंसे संवत् १९२६ में भभुआमें संवत् १९४८ में सहसराममें और १९५१ में आरामें हुआ। आपने भभुआ रोड और सहसराममें धर्म-

लाएं और देशमें ठाकुरवाड़ी बनवाई। आपका एवं आपके पुत्र जानकीदासजीका स्वर्गवास एक एक मासके अन्तरसे संवत् १९७२ में होगया है।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक कनीरामजीके छोटे भ्राता बा० गणपतरायजी और बा० जानकीदासजीके पुत्र इन्द्रचन्दजी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

आरा - मेसर्स कनीराम गणपतराय - कपड़ा, सोना-चांदी गल्लाका व्यापार और जमींदारी काम होता है।

सहसराम—कनीराम जानकीदास—गल्लाका व्यापार होता है।

बक्सर—कनीराम गणपतराय—यह फर्म संवत १९४६ से कपड़ेका व्यापार कर रही है।

भबुआ रोड—कनीराम गणपतराय—कपड़ागल्ला सोना चांदी व जमींदारीका काम होता है।

खुदरा—कनीराम गणपतराय—गल्ला तथा कपड़ाका व्यापार होता है।

कलकत्ता—कनीराम हजारीमल ४७ स्ट्राड रोड T. A. Astami—बैंकिंग और आढ़तका काम होता है।

डाल्टनगंज और मोहनिया—कनीराम गणपतराय—कपड़ा तथा गल्लाका व्यापार होता है।

मेसर्स रामनारायण सागरमल

इसफर्मका स्थापन संवत १९३४।३५ में बा० रामनारायणजीसे हाथोंसे हुआ था। आप चुरू (बीकानेर स्टेट) निवासी अग्रवाल समाजके बांसल गौत्रीय सज्जन हैं। वर्तमानमें इसफर्मके मालिक बा० सागरमलजी और आपके पुत्र बा० रामेश्वरप्रसादजी और हरिद्वारप्रसादजी हैं। बा० सागरमलजीने इस दुकानके कारबारको तरक्की दी है। आपकीओरसे आरामे एकधर्मशाला बनी हुई है बा० हरिद्वारप्रसादजी जालान शिक्षित नवयुवक हैं। आपने हिन्दीमें कई पुस्तकें लिखी है मारवाड़ी अग्रवाल सभामें आप उत्साहसे भाग लेते हैं। आपकी फर्मका व्यापारिक परिचय इसप्रकार है।

आरा—मेसर्स रामानारायणसागरमल—कपड़ा, गल्ला जमींदारी और सराफी लेन देन होता है।

हसनबाजार (आरा) रामनारायण सागरमल—राइस आइल और फ्लावर मिल है, तथा गल्लाका कारबार होता हैं।

कलकत्ता—मेसर्स रामनारायण सागरमल १७३ हरीसन रोड—चलानीका काम होता है।

मेसर्स रामदयाल द्वारकादास

यह फर्म झूसी (इलाहाबाद) के प्रसिद्ध व्यवसायी एवं धनिक कुटुम्ब लालाकिशोरीलाल मुकुंदीलालकी है। आपका विशेष परिचय चित्रों सहित कलकत्तेमें गल्लेके व्यापारियोंमे दिया गया है। इस फर्मकी कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, इलाहाबाद, बनारस कानपुर, नैनी आदि बीसियों स्थानोंमें दुकाने है, जिनमें प्रधान व्यापार गल्लेका होता है। आरामें भी यह फर्म गल्लेका व्यापार करती है।

बैंकर्स

आरा कोआपरेटिव्ह बैंक

बिहार बैंक लिमिटेड

बाबू अमीचंदजी जमीदार

निर्मल कुमार चक्रेश्वर कुमा जैन

क्लाथ मरचेंट्स

मेसर्स कनीराम गणपतराय

" जयदयाल रिधकरण

" रामनारायण सागरमल

" रामचन्द्र काशीनाथ

" सुखदयाल सोलाराम

" हजारीमल नागरमल

गल्लेके व्यापारी और कमीशनएजेंट

मेसर्स दुर्गाप्रसाद छोटेलाल

" धन्नूराम चौधरी

" रामदयाल द्वारकाप्रसाद

" रामनारायण सागरमल

" लखपतसिंह बीजासिंह

किरानेके व्यापारी

नायकराम मोतीराम

सोनीराम

गोल्ड सिल्व्हर मरचेंट्स

मेसर्स कनीराम गणपतराय

" नारायणराम श्रीराम

मेसर्स बालगोविंदराम मुकुंदीलाल

जनरल मरचेंट्स

" एस जाहिद एण्ड को०

" एन हक एण्डको०

" शिवशंकरलाल शिवनारायणलाल एण्ड को०

" लुकमान एण्डसंस (वाचमरचेंट)

केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट

रामप्रसाद एण्ड संस

मुकुरजी एण्ड को०

वजीर एण्ड को०

बुक सेलर्स एण्ड पब्लिशर्स

ए० कुमार० एण्ड संस

अमीचन्द एण्ड को (बुकसेलर)

फेक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

सोनडिग फेक्टरी लिमिटेड

धर्मशालाएं

सागरमलधर्मशाला

हरप्रसाद जैनधर्मशाला

सार्वजनिक संस्थाए

आरा गौशाला

गौर बाला विश्राम

मारवाड़ी सुधार समिति

गया

यह शहर पटनासे ५७ मील दूर फल्गू नदीके किनारे बसा है। भारत भरके हिन्दू, पितरोंको पिंड देनेके लिये यहां आते रहते है। इससे सब प्रांतोंके सभी जातियोंके लोगोंकी आमद रफत यहां बहुत अधिक संख्यामें रहती है। यहां भारत प्रसिद्ध होल्कर महिलारत्न देवी अहल्यावाई का बनवाया हुआ ऊंचे टीले पर दर्शनीय विष्णुपद का मंदिर है।

यहांसे ६ मील की दूरीपर बौद्ध गयामें भगवान बुद्धको बौद्धत्व प्राप्त हुआ था यहां एक सुन्दर बौद्ध मंदिर बना हुआ है। जिसमें शांतिमय भगवान बुद्धकी विशाल प्रतिमा दर्शनीय है बर्मा आदि देशोंसे यात्री भगवानबुद्धके शांतिस्थलके दर्शनोंके लिये यहां आते रहते हैं।

गया जिला बिहार प्रांतके दक्षिणी हिस्सेमें हैं। जिस प्रकार उत्तरी बिहारकी सस्य श्यामला भूमि अपनी कृषिकी उपजमें बढ़ी चढ़ी है उसी तरह इस प्रांतका दक्षिणी विभागकी अपने खनिज द्रव्योंकी उपजमें भारतकी सम्पत्तिको बढ़ानेमें प्रधान स्थान रखता है। इसके आसपास अभ्रक, लोहा, कोयला तथा शीशाकी खदाने हैं। जिनका परिचय बिहारके आरम्भमें दिया गया है। गया जिले तथा आसपासके स्थानोंकी पर्वतीय भूमिके गर्भमें अतुल सम्पत्ति भरी है। इसी जिलेमें कोडरमा नामक स्थान अभ्रकके व्यापारके लिये बहुत प्रसिद्ध है। मशहूर भानाखाप नामक अभ्रककी खदान इसीके समीप है।

गयासे हजारीबाग और रांची जानेके लिये कई मोटर लारियां रन करती रहती हैं। यहांसे रांची करीब १५० मीलकी दूरीपर है। शेरशाहकी बनाई प्रसिद्ध ग्रांडट्रंक रोड इसी मार्गमें है। इस सड़कके दोनो ओर सैकड़ों मील तक आमके झाड़ोंकी लगी हुई कतार बड़ी भली मालूम होती है। गर्मियोंमें वायु सेवनके लिये भ्रमण करनेवाले यात्री रांची हजारीबागके लिये इसी रोडसे होकर जाते हैं।

कपड़ा गल्लाके व्यापारी

मेसर्स गुलराज बालमुकुन्द

इस फर्मके वर्तमान मालिक बाबू गुलराजजी लक्ष्मणगढ़ (शेखावाटी) निवासी अग्रवाल जैन समाजके सज्जन है। इस फर्मका स्थापन करीब ५०।६० वर्ष पहिले बाबू रामचन्द्रजीके हाथोंसे हुआ था। सेठ बींजराजजीके पुत्र बाबू रामचन्द्रजी, बाबू जानकीदासजी, बाबू गुलाबरायजी और बाबू गुलराजजी संवत् १९७० तक शामिल कारबार करते रहे, बादमें सबका व्यापार अलग २ होगया, तबसे बाबु गुलराजजीकी फर्म इस नामसे अपना व्यवसाय करती है। आपके पुत्र श्रीबाल-

बाबू रामविलासजी पाटनी गया
(झूथालाल रामविलास)
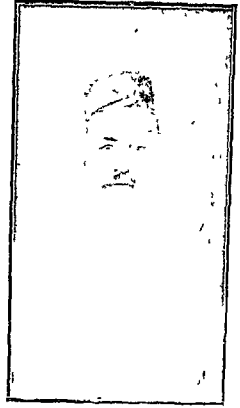
बाबू लक्ष्मीनारायण अग्रवाल
झरिया (विहार पृष्ठ ८६)

श्री गजानन्दजी पाटनी गया
(झूथालाल रामविलास)

बाबू बालकृष्णजी अग्रवाल झरिया (वि० पृष्ठ ८०

मुकुन्दजीका स्वर्गवास संवत् १९७५ में हो गया है। आपकी ओरसे गया जैन मंदिर आदिमें सहायता दी गई है। आपका व्यवसायिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स गुलराज बालमुकुन्द चौक—यहां कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स गुलराज रामविलास १६१।१ हरीसन रोड—यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स गोवर्द्धनदास जगन्नाथ

इस फर्मका स्थापन संवत् १९५१ में बाबू सुखदेवदासजी और बाबू लक्ष्मीनारायणजी डालमियांके हाथोंसे सुखदेवदास गोवर्द्धनदासके नामसे हुआ था। आपही दोनों सज्जनोंके हाथोंसे इसके कारबारको तरक्की मिली। बाबू सुखदेवदासजीका स्वर्गवास सं०१९६८ में हुआ। आपकी मौजूदगीमें ही आपके पुत्र गोवर्द्धदासजी स्वर्गवासी हो गये थे। आपके बाद फर्मका संचालन बाबू लक्ष्मीनारायणजी डालमियां करते रहे। संवत् १९८१ से बाबू लक्ष्मीनारायणजी और स्वर्गीय गोवर्द्धनदासजीके पुत्र बा० जगन्नाथजी और गोपीरामजी अपना २ अलग कारबार करने लगे। आपलोग अग्रवाल वैश्य समाजके डालमियां सज्जन हैं। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

गया—मेसर्स गोवर्द्धनदास जगन्नाथ, पुरानीगोदाम T. A. Jagannath.—यहाँ कपड़ेका व्यापार और सराफी लेनदेनका काम होता है।

गया—श्रीविष्णु ऑइल मिल—इस नामसे यहां आपकी एक ऑइल मिल है।

मेसर्स घनश्यामदास हनुमानदास

इस फर्मके मालिक बाबू घनश्यामदासजी डीडवाणियां हैं। आपके हाथों ही इस दुकानका कारबार ४० वर्ष पूर्व आरंभ हुआ था। आप फतहपुर (शेखावाटी) के निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। आपके पुत्र बाबू बालाबक्सजी और गनेशलालजी है। बाबू घनश्यामदासजी सरल स्वभावके सज्जन हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स घनश्यामदास हनुमानदास, T. A. Ghansham—आरंभसेही इस फर्मपर चांदी, सोना, गल्ला, तिलहन, तीसीका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

गया—श्रीबागेश्वर फ्लावर एण्ड ऑइल मिल—इस नामसे यहां आपकी एक मिल है।

मेसर्स जयदयाल मदनगोपाल

इस फर्मका हेड ऑफिस बनारसमें है। गयामें इस दुकानपर बेङ्किग, गल्ला तथा तिलहनका व्यापार होता है। इसके व्यापारका विशेष परिचय चित्रोंसहित कलकत्तेके गल्लेके व्यवसायियोंमें दिया गया है।

मेसर्स झूथालाल रामविलास

इस फर्मके मालिक नागवा (सीकर-शेखावाटी) के निवासी खंडेलवाल सरावगी जैन समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन ४० वर्ष पूर्व बाबू हनुमानबख्शजी पाटनीके हाथोंसे हुआ था। करीब २५ वर्ष पूर्वसे आपके भतीजे रामविलासजीका और आपका पार्ट अलग २ हो गया है।

इसके वर्तमान मालिक बाबू रामविलासजी पाटनी और आपके पुत्र बा० गजानन्दजी पाटनी हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—झूथालाल रामविलास—यहां कपड़ा तथा महाजनी लेनदेनका व्यापार होता है।

कलकत्ता—गुलराज रामविलास १६१।१ हरीसन रोड—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स जीतनराम रामचन्द्र

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी है। आपलोग माहुरी वैश्य समाजके सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन संवत् १९५१ मे बाबू जीतनरामजीके हाथोंसे हुआ था। आपके ३ पुत्र हुए बाबू निर्मलरामजी, बाबू रामचन्द्ररामजी एवं बाबू रामलालजी।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक बाबू रामचन्द्रराम और आपके पुत्र बा० गुरुसरनलालजी एवं बाबू निर्मलरामजीके पुत्र बा० हरिप्रसादजी, लक्ष्मीनारायणजी तथा विष्णुप्रसादजी है। आपकी फर्म गयामें भिन्न २ लाइनोंमे कई प्रकारका व्यापार करती है। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स जीतनराम निर्मलराम, पुरानीगोदाम—T. A. Jitan Ram—यहां चादी, सोना, सूत, नमक और बैङ्किगका काम होता है।

गया—मेसर्स रामचन्द्रराम हरीप्रसाद—यहा कपड़ा और गल्लाका कारवार होता है।

गया—मेसर्स रामचन्द्रराम गुरुसरनराम—यहां कच्ची आढतका काम होता है।

गया—रामचन्द्रराम—पुरानीगोदाम—यहां पक्की आढतका काम होता है।
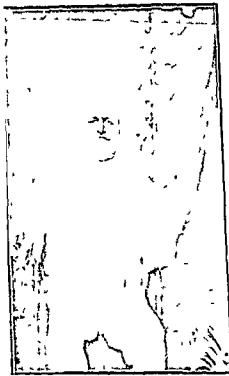
बाबू गयाप्रसादजी (सदासुख भैरवलाल) गया

बाबू गुलराजजी (गुलराज बालमुकुन्द) गया

बिल्डिंग, मेसर्स सदासुख भैरवलाल गया
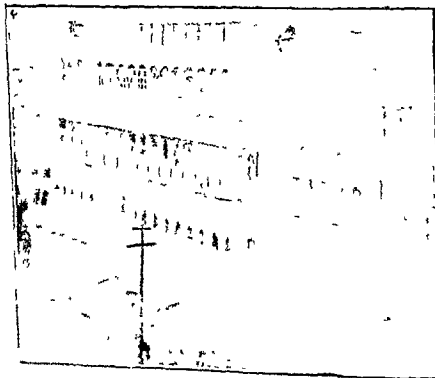
गया—रामचन्द्राम लक्ष्मीनारायण — यहां स्टैंडर्ड आॅइल कम्पनीकी एजंसी है।

गया—रामचन्द्राम एण्ड सन्स, पुरानी गोदाम—यहां लोहेका व्यापार होता है।

गया—रामचन्द्राम नागाराम, राइस एण्ड आॅइल मिल लिमिटेड—इसके संचालक बाबू गुरुसरनलालजी और बा० नागारामजी है। इसके आप लोग शेअर होल्डर हैं।

जहानाबाद (गया)—रामचरनराम लक्ष्मीनारायण—यहां कपड़ा, चांदी, सोना, सूत और पक्की आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स जीतनराम निर्मलराम २६ बड़तल्ला स्ट्रीट, T. A. Tributary—यहां आढ़तका काम होता है।

मेसर्स रामकुंवार दुलीचन्द

इस फर्मके मालिक चिड़ावा निवासी अग्रवाल वैश्य समाजके गर्ग गोत्रीय सज्जन है। बाबू रामानन्दजी ४२ वर्ष पूर्वसे पूरणमल गोविन्दरामके साथमें काम करते थे। सम्वत् १९७० से आपने उपरोक्त नामसे अपना कारबार अलग शुरू किया। आपका स्वर्गवास सं० १९८१ में हो गया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामकुंवारजी और बा० दुलीचंदजी खेतान है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—रामकुंवार दुलीचंद पुरानी गोदाम T A Dulichand—यहा आढ़तका व्यापार और गल्लेका काम होता है।

रफीगंज [गया]—रामकुंवार मदनलाल—यहां गल्लेका व्यापरा होता है।

मेसर्स रामलाल जुगलकिशोर

इस फर्मके मालिक यहींके निवासी हैं। आप माहुरी वैश्य समाजके सज्जन हैं। बाबू जीतनरामजीके ३ पुत्र हुए। बाबू निर्मलरामजी, बाबू रामचंद्ररामजी, एवं बाबू रामलालजी।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू रामलालजी माहुरी हैं। आपका कुटुम्ब गयामें लम्बे अरसेसे चांदी, सोना, नमक, गल्ला और सूतका कारबार कर रहा है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स रामलाल जुगलकिशोर पुरानी गोदाम—इस फर्म पर बैङ्किग, चांदी, सोना, नमक, गल्ला आदिका कारबार होता है।

मेसर्स सदासुख भैरवलाल

इसफर्मके मालिक मंडावा (जयपुर) के निवासी हैं। आप खण्डेलवाल वैष्णव समाज के सज्जन हैं। इसफर्मका स्थापन बा० सदासुखजीने संवत् १८६३ में गया जिलेके सहरघाटी नामक स्थानमें किया था। गया जिला जब कायम हुआ तब बा० सदासुखजीने संवत् १६१० में अपनी दुकान यहांपर स्थापित की। आपके हाथोंसे इसफर्मके कारबारकी तरक्की हुई। बा० सदासुखजीका स्वर्गवास संवत् १६६१ में हुआ। आपकी मौजूदगी में ही आपके पुत्र बा० भैरवलालजी और भजनलालजी स्वर्गवासी हो गये थे।

वर्तमानमें इसफर्मके मालिक बा० भैरवलालजीके पुत्र रायसाहब सुरजूलालजी, बा० गयाप्रसादजी, बा० शीतलप्रसादजी तथा बा० भजनलालजीके पुत्र बा० देवीप्रसादजी खंडेलवाल हैं। बा० सूरजमलजीको संवत् १६७३ में गवर्नमेंटसे रायसाहबकी उपाधि प्राप्त हुई है। आपकी फर्म आरंभसे ही गया कोआपरेटिव्ह बैंककी केशियर है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स सदासुख भैरवलाल चौक—यहां बैंकिंग और कपड़ेका व्यापार तथा जमींदारीका काम होता है।

गया—मेसर्स डी० एल० खंडेलवाल कं०—यह फर्म गया इलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कं० लि० की मैनेजिंग एजंट है।

गया—मेसर्स गोरधनदास गयाप्रसाद—यहां गल्ला और आढ़तका व्यापार होता है। इस फर्मपर किरासिन ओइल तथा पेट्रोलकी एजंसी भी है।

हजारीबाग—मेसर्स सदासुख भैरवलाल—यहा कपड़ेका व्यापार होता है। यहां आरंभसे ही रायसाहब रामनारायणलाल जी कापार्ट है।

डाल्टनगंज—देवूलाल रामनिवास—यहां आढ़तका काम होता है।

गढ़वा—देवूलाल रामनिवास आढ़तका काम होता है।

मेसर्स लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर

इसफर्मके मालिक बा० लक्ष्मीनारायणजी डालमिया है। आप संवत् १६५१ से गयामें
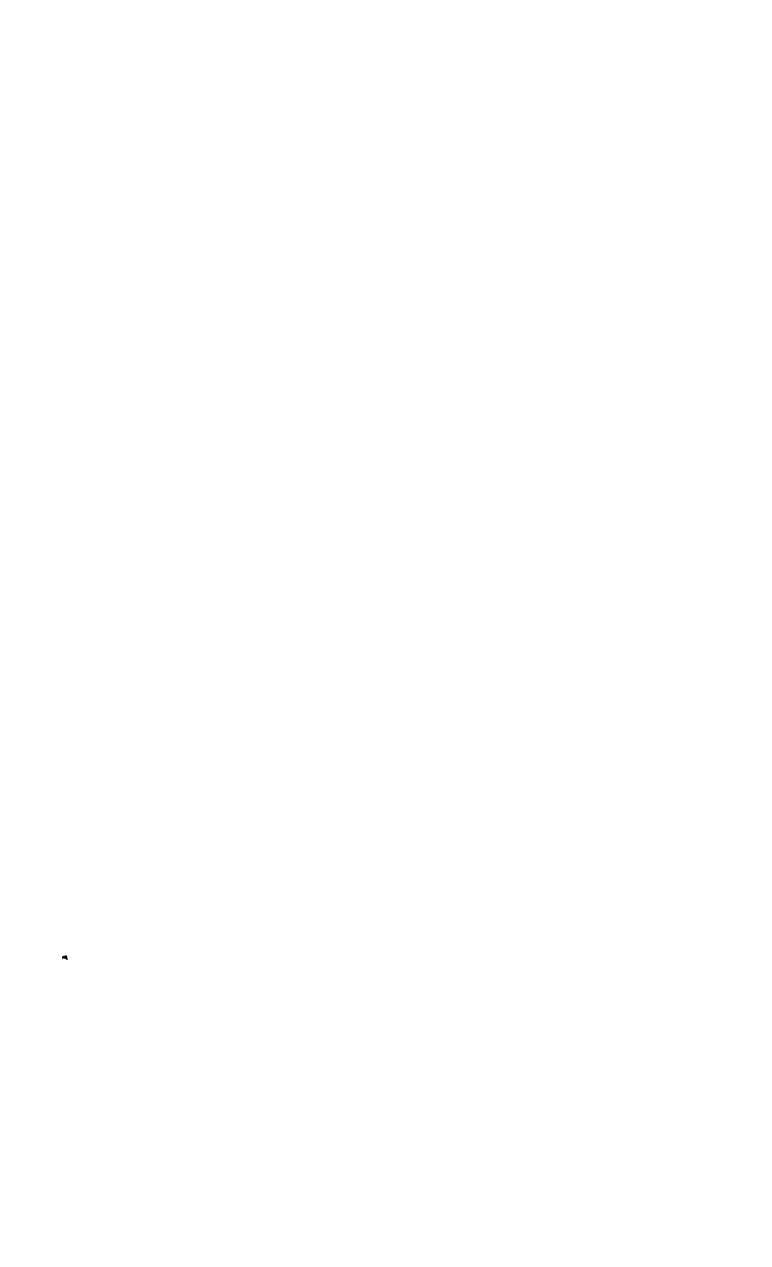
बाबू रामचन्द्रामजी माहुरी गया

बाबू श्रीनिवासजी सरावगी (श्रीनिवास रामकुमार) गया
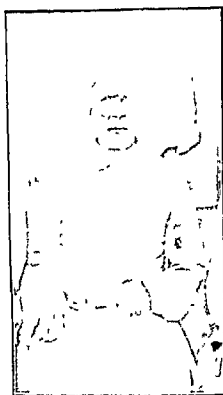
बाबू गुरुचरनलालजी माहुरी गया
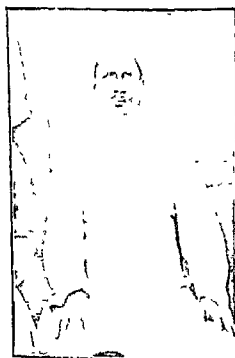
बाबू कृष्णदत्तजी सरावगी (श्रीनिवास रामकुमार) गया

व्यापार करते हैं, इसके पूर्व कलकत्तेके ग्लाडस्टन आफिसमें काम करते थे। संवत् १९८१ तक आपकी फर्म सुखदेवदास गोबर्द्धनदासके नामसे कारबार करती रही। बादमें गोबर्द्धनदासजी और आपका कारबार अलग हो गया।

बा०लक्ष्मीनारायणजी डालमियां चिड़ावा जयपुर स्टेट निवासी अग्रवाल समाजके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। आपके पुत्र बा० गौरीशंकरजी और गंगाधरजी व्यवसायमें भागलेते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया - मेसर्स लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर T. A. Dalmia—यहां सूतका कारवार और सराफी लेन-देन होता है।

मेसर्स श्रीनिवास रामकुंवार

इस फर्मके मालिक लक्ष्मणगढ़ [राजपूताना] के निवासी हैं। आप अग्रवाल समाजके गर्ग गोत्रीय सरावगी सज्जन हैं। इस फर्मका स्थापन सम्वत् १९५९ में कुदरामें, सम्वत् १९६४ में भभुआमें और सम्वत् १९७१ में गयामें बा० श्रीनिवासजीके हाथोंसे हुआ। इस समय आपकी आयु ७० वर्षकी है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक बा० श्रीनिवासजीके पुत्र बा० रामकुंवारजी, बा० कृष्णदत्त जी, बा० झाबरमलजी तथा बा० पुरुषोत्तमलालजी हैं। आप चारों सज्जन व्यवसायका संचालन करते हैं। आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

गया—मेसर्स श्रीनिवास रामकुंवार—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

गया—मेसर्स रामकुंवार कृष्णदत्त—यहां कपड़ेका व्यापार होता है।

कुदरा [आरा]—श्रीनिवास रामकुंवार—यहां कपड़ा और गल्लाका व्यापार तथा बैङ्किगका काम होता है। यहां आपकी श्रीमहावीर ऑइल मिल है।

भभुआ—रामकुंवार कृष्णदत्त—यहा कपड़ा और गल्लाका व्यापार होता है।

इसके अतिरिक्त आरा सहसराम लाइट रेलवे लाइनमें आपका गल्लाका व्यापार होता है।

बैंकर्स

इम्पीरियल बैंक ऑफ इण्डिया लि०
गया को-ऑपरेटिव्ह् बैंक लि०
बैंक ऑफ बिहार लिमिटेड
बिहार ट्रेडर्स बैंक
सदासुख भैरवलाल

क्लाथ मरचेंट्स

गजानंद जुगुल किशोर पुरानी गोदाम
गुलराज बालमुकुंद चौक
गोवर्द्धनदास जगन्नाथ पुरानी गोदाम
जमुनाधर पोद्दार पुरानीगोदाम
छोगालाल दानूलाल चौक
भूथालाल रामविलास चौक
डालूराम भवरीलाल
भीमराज चम्पालाल चौक
रामदयाल चैनसुख
रामलाल जुगुल किशोर पुरानी गोदाम
रामचन्द्रराम हरीप्रसाद पुरानी गोदाम
शिव दत्त चैनसुख
सदासुख भैरवलाल
श्रीनिवास राम कुंवार

गोल्ड सिल्व्हर मरचेंट्स

मेसर्स राजोराम बसंतलाल
" घनश्यामदास हनुमानदास
" जीतनराम निर्मलराम
" रामचन्द्रराउ सरार्‌फ

ग्रेन मरचेंट्स

मेसर्स ईश्वरदास रामनारायण
मेसर्स काशीराम कालूराम
" गोवर्द्धनदास गयाप्रसाद
" घनश्यामदास हनुमानदास पुरानी गोदाम
" जयदयाल मदनगोपाल
" रामकुंवार दुलीचन्द पुरानीगोदाम
" रामलाल जुगुल किशोर "
" रामसरनराम गुरुसरनराम "

किरानेके व्यापारी

मेसर्स बुद्धूराम कालीराम
" शिवचरणराम रघुनाथराम

सूतके व्यापारी

जीतनराम निर्मलराम
रामलाल जुगुलकिशोर
लक्ष्मीनारायण गौरीशंकर

जनरल मरचेंट्स

मेसर्स गणेशब्रदर्स (ऑइलमेन स्टोर्स)
" चन्द्रमणिलाल बलदेवलाल
" मथुराप्रसाद गंगालाल
" सावित्री भंडार (ऑइलमेन स्टोर्स)

मोटर एण्ड मोटर साइकल डीलर्स

मेसर्स खाकी मोटर सर्विस गया
" गोवर्द्धनदास गयाप्रसाद (पेट्रोल एजंट)
" देव इंजिनियरिंग वर्क्स
" पटना कोच वर्कस गया ब्रान्च
" मित्रा एण्ड को० (B. O. C. ऑइल एजंट)

फेक्टरीज एण्ड इंडस्ट्रीज

पटना इलेक्ट्रिक वर्कस लिमिटेड

बागेश्वर फ्लावर एण्ड ऑइलमिल

विष्णु ऑइल मिल

रामचन्द्राम नागाराम राइस मिल

समसुद्दीन मियां रामचरित्रसाव राइस ऑइल मिल

बुकसेलर्स

रामसहायलाल बुकसेलर

राजेश्वरी पुस्तकालय

प्रेस

कृष्ण आर्ट प्रेस

कालिका प्रेस

लक्ष्मी प्रेस

अग्रवाल प्रेस

धर्मशालाएं

रा० ब० सूरजमल शिवप्रसाद तुलस्यान धर्मशाला स्टेशनके पास और गया जीपर

दिगम्बर जैन धर्मशाला

दर्शनीय स्थान

बौद्ध गया मंदिर

विष्णुपद मंदिर

दिगम्बर जैन टेम्पल

झरिया

यह नगर संसार प्रसिद्ध झरिया कोल क्षेत्रका केन्द्र है। यहां पहुचनेके लिये ई० आई० रेलवेके धनवाद नामक स्टेशन पर उतरना पड़ता है और इसी स्टेशनसे इस कोल क्षेत्रके प्रधान केन्द्रके लिये एक ब्रांचलाइन गयी है। यह नगर अपनी व्यवसायिक चहल पहलके लिये तो सुख्यात नहीं है। पर यहाके केवल औद्योगिक केन्द्रकी स्फुर्तिका सहज ही अमिट अनुभव होता है। माल गाड़ीके डिब्बों और कोयलाकी प्रतिमूर्ति बने श्रमजीवियोंकी चलती फिरती भीड़ सहसा आगंतुकों को आकर्षित करनेमें सफल होती है।

भारतमें पत्थरके कोयलेके प्रधान केन्द्र तीन ही माने जाते हैं। इनमेंसे झरियाका कोल केन्द्र भी एक है। कलकत्तेसे १४० मील दूर वाले रानीगंज कोलक्षेत्रसे यह प्रायः ४० मील दूर है। यहांसे कोयला प्रायः रेलवे कम्पनियों, रेलवे कम्पनियोंके कारखानों, जूट मिलों और इतर छोटे मोटे कारखानोंको रेलवे और स्टीमर द्वारा जाता है। बड़े २ लोहेके कारखाने भी यहाके कोयलेके बल पर काम कर रहे है अतः इस एक प्रधान औद्योगिक विशेषताके कारण ही झरियाकी यह छोटी वस्ती भी आज ख्याति प्राप्त करनेमें समर्थ हुई है। यहां इस व्यवसायके अतिरिक्त और कोई भी व्यवसाय प्रधान रूपसे नहीं होता है। हा जो कुछ भी यहा सामान्य रूपसे व्यापारके नाम पर उद्योग होता है वह सब इसी एक औद्योगिक जागरुकताका कारण है।

यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :—

मेसर्स मोतीराम हरदेवदास

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चंदणा (खेतड़ीके पास शेखावाटी) का है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन है। यह फर्म यहा ३० वर्षसे स्थापित है। इस फर्मकी स्थापना सेठ हरदेवदासजीने की। लड़ाईके समयमें कोयलेकी खदानोंसे आपको बहुत फायदा हुआ। आपकी फर्मकी यहां अच्छी प्रतिष्ठा है।

आपकी ओरसे चंदणामें धर्मशाला और कुंआं बना हुआ है। तथा आपने स्थानीय डी० ए० व्ही० स्कूलके लिये मकान भी बनवाया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

झरिया—मेसर्स मोतीराम हरदेवदास T. N. २१६ झरिया - यहां कोयलेका काम होता है। इस फर्मके अंडरमें कई कोयलेकी खदानें है।

झरिया—एच० डी० अग्रवाल—यहा कपड़ेका काम होता है।

मेसर्स रामजसराय प्रभासकुमार

इस फर्मके मालिक चंदाणा (लोपल-जयपुर) के मूल निवासी है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं। यह फर्म यहा करीब ४० बर्षसे स्थापित है। इस फर्मके स्थापक वर्तमान सेठ रामजसरायजीके पिता सेठ जगन्नाथजी थे।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

झरिया—रामजसराय प्रभासकुमार —यहां आपकी कई कोयलेकी खदाने हैं।

मेसर्स महादेवलाल जयनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवासस्थान सिरोही (जयपुर) का है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सिंगल गोत्रीय सज्जन है। इस फर्मके स्थापक सेठ जयनारायणजी २५ वर्ष पहले देशसे यहां आये और इस फर्मकी स्थापना की।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

झरिया—मेसर्स महादेवलाल जयनारायण—यहा बैंकिंग, हुंडी, चिठ्ठी और गल्लेका थोक व्यापार होता है।

बांकुड़ा—मेसर्स महादेवलाल चिमनलाल—यहां चलानीका काम होता है।

मेसर्स घनश्यामदास लक्ष्मीनारायण

इस फर्मके मालिक चंदाणा (लोयल-जयपुर) के मूल निवासी है। आप अग्रवाल जातिके गर्ग गोत्रीय सज्जन हैं। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे अपना कारबार करती है। इस फर्मको सेठ घनश्यामदासजीने स्थापित की। आपने शुरूमें चावलका व्यापार शुरु किया और उसमें अच्छी सफलता प्राप्त की। फिर कोयलेकी खदानोंसे आपको युद्धके समय अच्छी सम्पति मिली।

इस फर्मके वर्तमान मालिक सेठ घनश्यामदासजीके पुत्र सेठ रामकृष्णजी, सेठ हरिप्रसादजी और लक्ष्मीनारायणजीके पुत्र बाबू भगवतीप्रसादजी, तथा ब्रजमोहनजी हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

झरिया—मेसर्स घनश्यामदास लक्ष्मीनारायण T.NO २१७ झरिया—यहां जमीदारीका काम होता है।

झरिया—मेसर्स एल० एन० अग्रवाला लि०—इस पर कोयलेका व्यापार होता है। यह फर्म कई कोलियारी की मालिक है।

श्रीलक्ष्मी कोलियारी

इस कोलियारीके मालिक मेसर्स शिवरामदास राम निरंजनदास कलकत्ता है। इस फर्मका हेड आफिस भी कलकत्ता ही है। इसका विशेष परिचय कलकत्ता विभागके बैंकर्सके पोर्शनमें दिया गया है। यहां कोयलेकी खानसे कोयला निकलवाया जाता है तथा उसका व्यापार होता है।

मेसर्स प्योअर झरिया कोलियारी कम्पनी

इस फर्मके वर्तमान मैनेजिंग पार्टनर देवजी दयाल ठक्कर हैं। आप कच्छ निवासी गुजराती सज्जन है। यह कंपनी सन् १९१७ में स्थापित हुई।

श्री देवजी दयाल ठक्कर मिलनसार और व्यापार कुशल सज्जन हैं। आप यहांके आनरेरी मजिस्ट्रेट है। आप बोर्ड आफ इण्डस्ट्रीज, (बी० एण्ड० ओ०) इण्डियन माइनिंग फेडरेशन, एडव्हाइसरी कंपनी सेंट्रल बेंक झरिया, कोलफील्ड माइनिंग इन्स्ट्रक्शन झरिया. सेंटर [illegible] कमिटी गवमेंट हास्पिटल धनबाद, झरिया राज-हास्पिटल झरिया, एल० बी० आयुर्वेदिक [illegible] झरिया, धनबाद हाइस्कूल, झरिया, राज स्कूल, डि० ए० व्ही स्कूल झरिया [illegible]

झरिया, एल० वी० हिन्दी बंगाली गर्ल्स स्कूल झरिया, आदि संस्थाओंके मेंबर हैं। और गुजराती गर्ल्स स्कूलके आनरेरी सेक्रेटरी, कोल फील्ड्स बाय स्काउट्स असोसियेशन झरियाके प्रेसिडेंट हैं आप धनवाद जेलके नान आफिशियल विजिटर हैं भारत सरकारने आपको राय बहादुर की पदवीसे सम्मानित किया है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

झरिया—मेसर्स प्योअर झरिया कोलियारी कंपनी—इस कंपनीके अण्डरमें यहां कई कोयलेकी खदाने हैं। देवजी दयाल ठक्कर इसके मेनेजिंग पार्टनर हैं।

कपड़ेके व्यापारी

कालूराम भोलाराम

गणेशनारायण नथमल

जानकीदास द्वारकादास

बजरंगलाल अग्रवाला

शिवप्रसाद फूलचन्द

सुखदेवदास सदाराम

गल्लेके व्यापारी

अर्जुनदास बाबूलाल

गोवर्धनदास रतीराम

जुगुलकिशोर तुलसीराम

बलभद्रराम बाबूलाल

भगवानदास चिमनराम

भगलूसाहु मोतीसाहु

महावीरलाल कन्हैयालाल

मनोहरलाल जयनारायण

मुंशीसाहु चौथूसाहु

मनोहरदास गुरुदयाल

रामेश्वर ताराचन्द

हजारीमल जीवनराम

हाजीदाऊद अय्यूब

चांदी सोनेके व्यापारी

कपिलभगवान रामेश्वर

नागरमल लिहला

निताईदत्त

बख्तावरमल अग्रवाला

विनोदविहारी सेन

सागरमल बिसेसरलाल

पीतलके बर्तनके व्यापारी

डालूराम मूलचन्द

महाबल हनुमानदास

घीके व्यापारी

मुरारजी लालचन्द माटलिया

लवजी वल्लभजी माटलिया

शिवलाल पोपट

धनबाद

यह नगर ई० आई० रेलवेके धनबाद स्टेशनके समीप ही छोटीसी बस्तीके रूपमें बसा हुआ है। यहींसे संसार प्रसिद्ध झरियाके कोयला क्षेत्रके लिये रेलवेकी एक ब्राञ्च लाइन जाती है। अतः यह स्थान प्रधानतया झरिया आनेजानेवाले लोगोंकी रेलगेलका क्रीड़ास्थल सा प्रतीत होता है। भारत सरकारके खान विभागके प्रधान पदाधिकारीका यहां हेड कार्टर है अतः उनसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी दफ्तरोंकी लीला भूमि भी यही स्थान है।

रत्नगर्भा भारत वसुन्धराका अक्षय भण्डार खानसे निकलनेवाले पदार्थोंसे भरा पूरा है पर राष्ट्रोचित सरकारके अभावके कारण यहां यथेच्छ परिमाणमें खानोंसे काम नहीं लिया जाता और परिणामतया यहांके नवयुवक आज अपने कुबेर भण्डारके वास्तविक स्वरूपकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। इन सब प्रकारकी कठिनाइयोंको दूर करनेके लिये कई बार सरकारका ध्यान आकृष्ट किया गया तब कहीं जाकर भूगर्भ विद्याकी शिक्षा देनेके लिये इसी स्थानपर एक छोटासा स्कूल खोला गया है। यह स्कूल अपने स्वरूपके अनुकूल कार्यक्षेत्रमें कुछ न कुछ कार्य कर ही रहा है यद्यपि यह भारत ऐसे विशाल राष्ट्रके लिये किसी भी गिनतीमें नहीं आ सकता। फिर भी नहींसे तो अच्छा ही है। धनबाद इन्हीं कतिपय विशेषताओंके कारण आज जनताके सामने है नहीं तो ऐसी बस्तीकी गणना ही कैसी? यहांका व्यापार भी इसी खेलके खिलाड़ियोंकी आवश्यकता पूरी करनेके लिये है अतः यहांके व्यापारियोंका संक्षिप्त परिचय हम नीचे दे रहे हैं:—

मेसर्स अर्जुनदास गुलाबराय

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान गुढ़ा (जयपुर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके गुटगुटिया सज्जन हैं। इस फर्मकी स्थापना करीब ६० वर्ष पूर्व सेठ अर्जुनदासजीके हाथोंसे हुई। इसका हेड आफिस कोरों (संथाल परगना) है शुरूसे ही वहां धान चावलका व्यापार होता आ रहा है। इस फर्मकी विशेष उन्नति सेठ अर्जुनदासजीके हाथोंसे ही हुई। आप व्यापार-कुशल व्यक्ति थे। आपका स्वर्गवास होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके संचालक सेठ अर्जुनदासजीके पुत्र बा० रामनारायणजी, एवं गुलाबरायजीके पुत्र बा० सीतारामजी, रामगोपालजी, मुरलीधरजी, बिहारीलालजी, [illegible] रामनारायणजीके पुत्र बा० विश्वनाथजी हैं। विश्वनाथजीको छोड़कर शेष सब व्यापारमें भाग लेते हैं।

इस फर्मकी ओरसे नीमका थाना नामक स्थानपर एक धर्मशाला तथा गुढ़ामें एक औषधालय स्थापित है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है—

धनबाद—मेसर्स अर्जुनदास गुलाबराय T, A Krishna—यहां तेलका काम होता है।

कलकत्ता—मेसर्स अर्जुनदास गुलाबराय ५ श्यामाबाई लेन T. A. Gutgutia T.No. 3123 B.B.—यहा कमीशन एजंसीका काम होता है। यह फर्म Senda सेंडा कम्पनीकी बेनियन है।

कटवा—(बर्दमान)—मेसर्स अर्जुनदास गुलाबराय T A. Krishna—यहा गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

करमाटर (संथाल परगना) „ „ —यहा गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कोरों („ „) „ „ —यहां बैंकिंग, जमीदारी तथा लेनदेनका काम होता है।

रामजीवनपुर (मिदनापुर) „ „ —यहां गल्लेका तथा आढ़तका काम होता है।

किरनहार [बीरभूमि] „ „ —यहां गल्लेका तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स गोपीराम भगवानदास

इस फर्मके मालिक सांवड़ (भवानी) के निवासी हैं। आप अग्रवाल जातिके सांवड़िया सज्जन हैं। आपकी फर्म यहा ४५ वर्षसे स्थापित है। इस फर्मको सेठ गोपीरामजीने स्थापित की। आपहीके हाथोंसे इसकी तरक्की हुई।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धनबाद—मेसर्स गोपीराम भगवानदास—यहा गल्ला, कपड़ा, बैंकिंग तथा जमींदारीका काम होता है।

धनबाद—छोटेलाल मनोहरलाल—यहां चावलका व तेलका काम होता है।

पुर्लिया—छोटेलाल बनारसीलाल—यहां गल्लेका थोक व्यापार होता है।
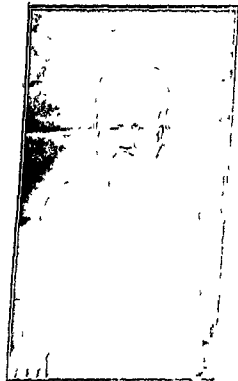
मेसर्स रतनजी भगवानजी

इस फर्मके मालिक मूल निवासी कालावड़ (जामनगर स्टेट) के हैं। आप गुजराती नंदवाणा ब्राह्मण सज्जन हैं। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ३० वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ भगवानजीके पुत्र सेठ रतनजी थे। आपके सेठ मायाशंकर नामक एक और भाई है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक सेठ मायाशंकरजी हैं।

आपकी ओरसे धनबादमें धर्मशाला तथा कालावड़में स्कूल, तथा हास्पिटल, कन्यास्कूल, और पचास हजारकी लागतसे एक बावड़ी बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

धनबाद—धनबाद इंजिनियरिंग वर्क्स—यहां मोटरकी रिपेअरी तथा फर्निचर तैयार होता है।

धनबाद—मेसर्स रतनजी भगवानजी—यहाँ बैंकिंग, मोटर पार्ट्स और बर्माशेलकी तेलकी एजंसी है।

झरिया— " " " " "

कतरास— " " " " "

दिल्ली—रतनजी भगवानजी एण्ड को० चावड़ी बाजार T A Ginning—यहा मिल जीन, स्टोअर सप्लाइका काम होता है।

कानपुर—रतनजी भगवानजी एण्ड को० लाइन्वी रोड—मिल जीन स्टोअर तथा मोटरकी एजंसी और पेट्रोलका काम होता है।

बम्बई—दौलतराम रतनजी एण्ड को० नागदेवी स्ट्रीट T A Compare—मिल, जीन, स्टोअर सप्लाइका काम होता है यहां सब समान विलायतसे इम्पोर्ट होता है।

कपड़ेके व्यापारी

गंगाजल सागरमल

गोपीराम भगवानदास

नागरमल महादेव

वृन्दावन जानकीदास

गल्लेके व्यापारी

गोपीराम भगवानदास

तुलसीराम गोविंदराम

नेतराम मनीराम

रामजीलाल चिरंजीलाल

सोरूपामल मनसाराम

कोयलेके व्यापारी

रतनजी भगवानजी

पण्डित विनायकराम

टाटानगर

यह नगर संसार प्रसिद्ध टाटा परिवारकी प्रख्यात महान प्रतिमाकी सजीव प्रतिमूर्ति टाटा आयर्न एण्ड स्टील वर्क्सके स्थापित किये जानेके बाद बसा है। इसके अन्तर्गत ३ बस्तियां हैं जिनमेंसे एक जहां संसार प्रख्यात टाटाका कारखाना है जमशेदपुर नामक बस्ती भी है। यह बी० एन० रेलवेका स्टेशन है। यहाकी बस्ती साफ सुथरी हैं। यहाकी चौड़ी समथल सड़कें सदा मोटरोंकी दौड़से सजीव रहती है। यहाका जल वायु स्वास्थ्य वर्द्धक है। यहाका प्रधान औद्योगिक केन्द्र यही कारखाना है जिसका परिचय इस प्रकार है।

टाटा आयर्न एण्ड स्टील कम्पनी लि०

संसार प्रसिद्ध इस कम्पनीका रजिस्टर्ड आफिस २४ ब्रूस स्ट्रीट बम्बईमें है। पर इसका कारखाना बी० एन० रेलवेके टाटा नगर नामक रेलवे स्टेशनके पास जमशेदपुरमें है। यह कम्पनी १०,९२,१२,५०० की स्वीकृत पूंजीसे काम कर रही है। इसके साधारण शेयरकी दर आरम्भ में ७५) प्रतिशेयरके हिसाबसे थी और प्रिफरेन्स शेयरकी दर १५०) प्रति शेयरकी थी। इसका संचालन भारत प्रख्यात अनुभवी व्यापारियोंकी एक संचालक समिति करती है जिसके सदस्योंमें श्रीयुत एन० बी० सकलतवाला सी० आई० ई०, सर कावसजी जहांगीर बैरोनेट; सर फाजल भाई करीम भाई, श्रीमान् सेठ नरोत्तम मुरारजी, सर फीरोज सेठना के० टी०, सर पुरुषोत्तमदासदास ठाकुर दास एम० एल० ए०, सर लल्लूभाई सांवलदास और ऑनरेबल सर रहीमतुल्ला आदि हैं।

भारतीय बाजारमें भारतके राष्ट्रीय कल कारखानोंको संसारके बड़े बड़े पूंजी पतियोंकी की सहायतासे चलनेवाले विदेशी कल कारखानोंके घने मालसे व्यापारिक प्रतियोगिता करनी पड़ती है। इतना ही नहीं स्वयं यहाकी शासन सत्ता भी वहांके पूंजी पतियोंके हाथका खिलौना है अतः वे लोग अपने मालको यहाके बाजारमें सरलतासे बेचनेके लिये राजनैतिक वर्चस्व को आत्मरक्षाके नैतिक अधिकारको ठुकराते हुए काममें लेते है। अतः इन्हीं निराशा पूर्ण घटाओंमें अन्धेरीमें इस राष्ट्रीय कारखानेको भी अपने सारे भविष्यको होड़में लगाकर आगे बढ़ना पड़ रहा है यदि आज इसके पास कोई पथ प्रदर्शन कारी आशाका प्रकाश है तो जन साधारणके प्रतिनिधियों द्वारा कष्टसे स्वीकृत करायी गयी सरकारी आर्थिक सहाय है। जो एक निश्चित समयकी अवधिके लिये मिली है। फिर भी सरकारकी इस आर्थिक सहायके लिये उसे अवश्य ही बधाई देनी चाहिये।

इस कम्पनीकी खानें मयूरभञ्ज राज्यमें है। इन खानोंको सबसे प्रथम मि० पी० एन०

वसुने खोज निकाला और टाटा कम्पनीको इसकी सूचना दी। कम्पनीने अमेरिकासे भूगर्भ विद्या वशेषज्ञ दो इंजिनियरोंको बुलाकर इन खानोंकी परीक्षा करायी और फिर इस कारखानेका आयोजन किया गया। इस राज्यमें १२ के लगभग लोहेकी बड़ी बड़ी खानें हैं। जिनमेंसे गुरुमेशिनी, ओकामपद और बदम पहाड़ोकी खानें सबसे बड़ी हैं। जमशेदपुरसे गुरुमेशिनी तक रेलवे लाइन है और इसीके द्वारा इन खानोंसे खनिज (कच्चा) लोहा जमशेदपुरके इस कारखानेमें लाया जाता है। इस कम्पनीकी लोहेकी दूसरी खानें रामपुर और दुर्ग जिले मे हैं। कच्चा लोहा गलानेके लिये पत्थरके कोयले और कली के चूनेकी जरुरत होती है। यह दोनों ही पदार्थ प्रचुर परिमाणमें इस इलाकेमें पाये जाते हैं।

यह कारखाना बहुतही बड़ा है और निजकी विद्युतशक्ति उत्पन्न कर अपना समस्त कार्य उसी शक्तिसे करता है। इसमें आधुनिक जगत की थाती स्वरुप ऊंचीसे ऊंची यान्त्रिक सुविधाओंका यथेच्छ समावेश किया गया है यहां सभी प्रकारका लोहेका सामान बनता है और रेलवे कम्पनियोंके काममें आने योग्य लोहेकी फौलादी रेल लाइनें भी ढाली जाती हैं तथा भव्य भवनोंमें काम देनेवाले बड़े से बड़े फौलादी गार्टस, तथा इतर इमारती सामान भी अधिक परिमाणमें तैयार होता है। इस कारखानेमें मेंगनीज (Ferro manganese)तैयार किया जाता है और उसीकी सहायतासे फौलाद तैयार किया जाता है। यहा काममें आनेवाले पत्थरके कोयलेसे कोक तैयार किया जाता है। यह कोयला जलानेसे तैयार होता है। जलाते समय जो धुंआ उठता है उसे रक्षित अवस्थामें संचित करनेका भी पूरा प्रबन्ध इस कारखानेमें किया गया है। इसी धुंएंसे अलकतरा, रोशनीकी गैस, और अमोनिया तैयार होता है। इसके तैयार करनेका कारखानेमें यथेष्ट प्रबन्ध है। अलकतरा देखनेमें काला भद्दा, स्वादमें कडुआ और सूंघनेमें बदबूदार होता है पर इसीसे नाना प्रकारके मनमोहक रंग तैयार होते हैं। शक्करसे ५५० गुना मीठा सैकरीन (Saccharine) नामक पदार्थ भी इसीसे तैयार होता है। और सात्वी इत्रोंमें आयोनोन (Ionone) नामक पदार्थ भी बनता है जिससे नाना प्रकारके सुगंधित नकली इत्र फुलेल [illegible] इस कारखानेमें इस प्रकार सहजमें प्राप्त होनेवाले अलकतरेके अनुषंगिक पदार्थों को (Bye products) तैयार करनेका उद्योग हो रहा हैं।

जमशेदपुरके इस कारखानेमें कंट्राक्टका माल भी बनता है। [illegible] बाहर जाता है। यहाके व्यपारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स गौरीदत्त गणेशलाल

इस फर्मके स्थापक सेठ गौरीदत्तजी थे। आपने ४० वर्ष पूर्व [illegible]

स्थापितकी थी। यह फर्म यहां करीब २५ वर्षसे स्थापित है। इसके मालिक अग्रवाल वैश्य जातिके नेगोतिया सज्जन हैं। आपका निवासस्थान दरगुकानागल (नारनोल) का है ठेकेदारी व बैंकिंगके व्यापारमें इस फर्मकी अच्छी उन्नति हुई। सेठ गौरीदत्तजीका स्वर्गवास होगया है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू गणेशीलालजी तथा आपके बड़े भ्राता बाबू गौरीदत्तजीके पुत्र बाबू मातादीनजी और बाबू मुरलीधरजी हैं। आप सब सज्जन व्यक्ति हैं।

बाबू मुरलीधरजी यहांकी म्यूनिसिपैलिटीके वाइस चेयरमेन हैं। तथा स्थानीय गौशालाके प्रेसिडेंट हैं।

आपकी ओरसे जुगसलाइमें एक ठाकुर बाड़ी बनी हुई है जिसमें मुसाफिरोंके उतरनेका प्रबन्ध भी है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

टाटानगर—गौरीदत्त गणेशलाल—यहां बैंकिंग ठेकेदारी और जमींदारीका काम होता है। इसके अतिरिक्त यहा आपका ७०० बीघेका बगीचा है।

खड़गपुर—मेसर्स गौरीदत्त गणेशीलाल—यहा गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

खड़गपुर—मुरलीधर रामवल्लभ—इस नामसे आपका एक राइस मिल है।

राजुर—(यवतमाल) बरार लाइम वर्क्स—यहा आपका एक चूनेका कारखाना है।

मेसर्स जूथाराम जानकीदास

इस फर्मके मालिक अग्रवाल वैश्यसमाजके सेदपुरिया सज्जन हैं। आपका मूल निवासस्थान चिड़ावा (जयपुर) का है। यह फर्म यहां १५ सालसे और चाईं वासामें करीब ४० वर्षसे व्यापार कर रही है। इस फर्मके स्थापक सेठ जूथारामजी हैं।

वर्तमानमे इस फर्मके मालिक बाबू जूथारामजी तथा आपके पुत्र जानकीदासजी मूलचन्दजी और रंगलालजी हैं। रङ्गलालजी टाटानगरकी फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

टाटानगर—जूथाराम जानकीदास—यहा बैंकिंग, तथा इम्पीरिल टोबेको कंपनीकी सिगरेटकी और ब्रुक बोंडकी सोड़ेकी एजन्सीका काम होता है यहा आपका एक चावलका मिल है।

चाईंबासा—जूथाराम जानकीदास—बैङ्किग, कपड़ा और आढ़तका काम होना है।

गड़हाट—जानकीदास मूलचन्द—यहा कपड़ा और सूतकी आढ़तका काम होता है।

मेसर्स खेमकरणदास जोखीराम

इस फर्मके मालिक लछमनगढ़ [सीकर] के मूल निवासी हैं। आप अग्रवाल वैश्य समाजके सज्जन हैं। यह फर्म यहाँ करीब १५ वर्षसे तथा चाईंवासामें करीब ५० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बाबू खेमकरणजी हैं। आपके हाथोंसे इस फर्मकी तरक्की होती आ रही है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू खेमकरणजी तथा आपके पुत्र बा० बैजनाथजी, शिवदत्त-रायजी तथा हरदत्तरायजी आदि हैं। बाबू कन्हैयालालजी यहाकी फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

टाटानगर—मेसर्स खेमकरणदास जोखीराम—यहां बैंकिंग और ठेकेदारीका काम होता है।

चाईंवासा—मेसर्स खेमकरणदास जोखीराम-यहां बैंकिंग तथा ठेकेदारीका काम होता है।

इस फर्मकी ओरसे चाईंवासामें एक धर्मशाला बनी हुई हैं।

गल्लेके व्यापारी

ओंकारमल महादेव जुगलाई
गुलाबराय मनोहरलाल विष्टोपुर
गोगराज लूनकरण जुगलाई
तोलाराम शिवनारायण ”
पूरनमल दुलीचन्द ”
भूरामल जगन्नाथ ”
मीनाराम गुलजारी ”
रामचन्द्र लदूराम ”
हरचरणदास मनीलाल जुगलाई
हीरालाल भगवानदास ”

कपड़ेके व्यापारी

ऊंकारमल महादेव जुगलाई
गोगराज लूनकरण ”
हरचरणदास मनीलाल ”

मनिहारीके व्यापारी

नरभेराम भाटिया

पुरुलिया

यह नगर अपनेही नामके जिलेका प्रधान स्थान है। यह बंगाल नागपुर रेलवेके अपने ही नामके स्टेशनके समीप ही बसा हुआ है। इसकी बसावट साफ एवम लम्बी है। जिलेका प्रधान शहर होनेकी वजहसे यहांका व्यापार भी चमकता हुआ नजर आता है। यहा प्रधानतया तेल, गल्ला और सराफीका व्यापार है। यहा चावलका व्यापार भी अच्छा होता है। इसी जिलेमें झालदा नामक स्थानपर लाखका अच्छा व्यापार होता है। लाखके लिये झालदा प्रसिद्ध है।

यहा तेलके तीन मिल हैं। इनमें तेलके साथ २ चावलके कारखाने भी हैं। यहां गल्ला

भी पैदा होता है मगर विशेषकर बाहरसेही आता है। यहाके गल्लेमें 'सावे' नामक गल्ला विशेष है जो बिहारको छोड़कर बाहर दूसरे प्रान्तोंमें शायद ही होता है। किराना, तेल, कपड़ा आदि सब बाहरसे यहा आकर बिकते हैं।

यहाकी जेलके हाथके बुने कपड़े, दरियां, निवार, गलीचे आदि अच्छे बनते हैं।

यहांके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स जयनारायण जगन्नाथ

इस फर्मके स्थापक बाबू जयनारायणदासजी तथा आपके पुत्र ठाकुरदासजी संवत् १९३६ में देशसे यहां आये। आपने यहां कपड़ेका व्यापारकर अच्छी सफलता प्राप्त की। आपका स्वर्गवास हो चुका है। पहिले आप जयनारायणदास ठाकुरदासके नामसे व्यापार करते रहे। फिर संवत् १९६९ में यह फर्म दो फर्मोंमें विभक्त होगई और तभीसे इस फर्मपर उपरोक्त नाम पड़ने लगा। दूसरी फर्म पर ठाकुरदास बद्रीनारायण नाम पड़ता है।

इस समय इस फर्मका संचालन देशनोक (बिकानेर) निवासी बाबू जयनारायणदासजीके पुत्र बाबू जगन्नाथजी, बाबू हरिदासजी, बाबू मदन गोपालजी, बाबू गोविन्दलालजी तथा बाबू रणछोड़-दासजी करते हैं। आप लोग महेश्वरी मल्ल गोत्रीय सज्जन है।

आपकी ओरसे यहां एक धर्मशाला तथा कुंआ बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—जयनारायणदास जगन्नाथ—यहा बैंकिंग, सोना, चांदी, गल्ला, सूत और आढ़तका काम होता है। तथा इम्पीरियल केमिकल इंडस्ट्री इण्डिया लिमिटेड, सांवतराम राम-प्रसाद मिल्स लिमिटेड आदि मिलोंकी एजेंसिया है।

पुरुलिया—जगन्नाथ हरिदास—यहा कपड़ेका व्यापार होता है।

मेसर्स तोलाराम नाथूराम

इस फर्मको बाबू तोलारामजीने ६० वर्ष पूर्व स्थापित की थी। आपने कपड़ेका व्यापार शुरू किया। आपके पश्चात् आपके पुत्र बा० नाथूरामजीने इस फर्मके कार्यका संचालन किया आपका स्वर्गवास संवत् १९४८ मे हो चुका है। आपके समयमें फर्मकी बहुत उन्नति हुई।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बाबू शालिग्रामजी तथा बाबू मदनगोपालजी हैं। आप

बाबू नाथूरामजीके पुत्र है। आपका मूल निवासस्थान चुरू (बिकानेर) है। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सज्जन हैं।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—तोलाराम नाथूराम (हेड आफिस)—यहां जमींदारी, बैंकिंग, आढ़त और मनिहारीका काम होता है।

पुरुलिया—तेजपाल मदनगोपाल—इस नामसे आपका एक तेलका मिल है।

कलकत्ता—तोलाराम नाथूराम १८० हरिसन रोड T. A. Notatuna—यहाँ बैंकिंग और चालानीका काम होता है।

बांकुड़ा—तोलाराम नाथूराम—यहां कमीशन एजंसीका काम होता है।

सराईकेला—(सिंहभूमि) तोलाराम नाथूराम—यहाँ आपकी चायना क्लेमाइन चिनी मिटीकी खानें है।

झरिया—बरारी जयरामपुर कोलियारी—इस नामसे यहां आपकी एक कोयलेकी खदान है।

झरिया—सुराटन कोलियारी— " " "

मेसर्स बालकिशनदास लक्खानी

इस फर्मके मालिक बीकानेरके निवासी हैं। बाबू बालकिशनदासजीने इस फर्मका स्थापन २ वर्ष पूर्व किया। आपके दो भाई और हैं जिनके नाम क्रमशः राधाकृष्णजी और शिवकिशनजी हैं। आप सब व्यापारमें भाग लेते है। आपकी ओरसे कोलायतजीमें मन्दिर बना हुआ है।

इस फर्ममें बा०हरकिशनदासजी,नरसिंहदासजी,शिवबक्षजी भी काम करते हे। बा०हरकिशनदासजीके तीन पुत्र है। आपकी ओरसे यहा एक ठाकुरबाड़ी बनी हुई है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—मेसर्स बाल किशनदास लक्खानी—यहा बैंकिंग, गल्ला, किराना, तेल, तथा आढ़तका काम होता है।

मेसर्स बालमुकुंद कृष्णगोपाल

इस फर्मके मालिक अग्रवाल जातिके गनेड़ीवाला सज्जन हैं। आप फतेपुर (सीकर) के निवासी है। यह फर्म यहां करीब ४० वर्षसे स्थापित है। इसके स्थापक बा० बालमुकुन्दजी थे। आपके एक पुत्र हैं जिनका नाम बा० कृष्णगोपालजी है। आपही इस समय इस फर्मका संचालन करते है।

आपकी ओरसे पुरुलियामें एक धर्मशाला बनी हुई है। साथही भजनाश्रम नामक एक स्कूल चलरहा है। इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—बालमुकुन्द कृष्णगोपाल—इस नामसे आपका एक तेल और चावल का मिल है।

विष्णुपुर (बाकुड़ा) " " " "

रानीगंज तथा पुरुलियामें आपकी जमींदारी और स्थायी सम्पत्ति है।

मेसर्स मिरजामल हरनारायण

इस फर्मके मालिकोंका मूल निवास स्थान चुरू (बीकानेर) का है आप अग्रवाल वैश्य समाजके सिंघाणिया सज्जन है। इस फर्मको यहां स्थपित हुए करीब ४५ वर्ष हुए। इसके स्थापक सेठ मिरजामलजी थे। आप व्यापार कुशल थे। आपके तीन पुत्र हुए। हरिनारायणजी, लक्ष्मीनारायण जी और रामेश्वरजी इनमेंसे प्रथम दो सज्जनोंका देहावसान हो चुका है।

वर्तमानमें इस फर्मके मालिक बा० रामेश्वरजी तथा बा० लक्ष्मीनारायणजीके दो पुत्र किशनलालजी और गोविन्दरामजी हैं। आप सब अपनी फर्मका संचालन करते हैं। बा० किशनलालजी स्थानीय मारवाडी नवयुवक मंडलके प्रेसिडेंट हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया मिरजामल हरनारायण—इस नामसे आपका चावल तेल और आटेका मिल हैं तथा बैंकिङ्ग जमींदारी और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—मिरजामल हरनारायण १८० हरिसन रोड—यहा बैंकिंग तथा चालानीका काम होता है।

मेसर्स महादेवलाल लेखराज

इस फर्मके मालिक फतेहपुर (जयपुर) निवासी अग्रवाल वैश्य जातिके सरावगी सज्जन हैं। यह फर्म यहा करीब ३५ वर्षसे कपड़ेका व्यापार करती है। बा० महादेवलालजी और लेखराजजी दोनों भाई इस फर्मके स्थापक व उन्नति करनेवाले हैं। आप व्यापार कुशल है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—महादेवलाल लेखराज—यहां देशी, विलायती, रंगीन और सादे कपड़ेका व्यापार होता है।

झरिया—वेस्ट गोरमुकड़ी, चाद कुइया—इस नामसे यहा एक कोलियारी है।

कलकत्ता—महादेवलाल मोतीलाल १८० हरिसन राड—यहां बैङ्किग तथा चालानीका काम होता है।

मेसर्स रघुनाथराय गौरीदत्त

इस फर्मके स्थापक बा० गौरीदत्तजी थे। आपही अपने देश अलसीसर (जयपुर) से यहां आये और कपड़ेका व्यापार शुरू किया। इस फर्मको स्थापित हुए करीब ० वर्ष हुए।

इस फर्मके वर्तमान मालिक बा० गौरीदत्तजीके पुत्र बा० जुगलकिशोरजी, तथा आपके पुत्र बा० नागरमलजी, बा० केदारनाथजी, शिवप्रसादजी, सांवलरामजी, तथा गोविन्दरामजी हैं। आप अग्रवाल वैश्य जातिके कटारुका सज्जन हैं।

इस फर्मकी ओरसे बलरामपुरमें महावीरका मन्दिर और एक कुंआ बना हुआ है।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—रघुनाथराय गौरीदत्त—यहां बैङ्किग, जमी री, और आढ़तका काम होता है। इस फर्म पर नागपुरके एम्प्रेस मिलकी सूत एवं कपड़ेकी एजंसी है।

बलरामपुर—जुगलकिशोर नागरमल पो० रांगड़ी T. A. Kataruka—यहां बैङ्किग तथा लाख, कपड़ेका व्यापार और आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—रूपनाथराय गौरीदत्त १८० हरिसन रोड T. A. Kataruka—यहां बैङ्किग तथा चलानी का काम होता है।

मेसर्स सुगनचन्द करणीदान

इस फर्मके मालिक माहेश्वरी वैश्य जातिके शारदा सज्जन हैं। यह फर्म यहां ७ वर्षसे व्यापार करती है। आप देशनोक [बिकानेर] के निवासी हैं।

बाबू सुगनचन्दजीके पुत्र बाबू करणीदानजी तथा बाबू मोतीलालजी इस समय उपरोक्त फर्मका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

पुरुलिया—सुगनचन्द करणीदान—यहां बैङ्किग, गल्ला, सोना, चांदी, सूत और किरानेका काम होता है। तथा पिंडरा नामक स्थानमें आपकी जमीदारी है।

गल्ले किरानेके व्यापारी

चतरभुज हरिकिशन

जैनारायण जगन्नाथ

ठाकुरदास बद्रीनारायण

तीनकौड़ी दत्त

धनराज लखोटिया

बद्रीदास केदारनाथ
बालकिशनदास लक्खाणी
मुरलीधर रावतमल
सुगनचन्द करणीदान

कपड़ेके व्यापारी

घनश्यामदास रामकुमार
जयनारायणदास जगन्नाथ
बाबू नारायणचन्द्र दत्त
वेगराज किशनलाल
भीमराज कन्हैयालाल
भोलाराम हरीराम
महादेवलाल लेखराज
हरचन्द केदारनाथ

तेलके व्यापारी

तेजपाल मदनगोपाल
बालमुकुन्द किशन गोपाल
मिर्जामल हरिनारायण

चपड़ेके व्यापारी

मेसर्स एम० एम० जार्डन
" कृपासिन्धुदत्त

जनरल मरचेंट्स

गुई सौदागर मुसलमीन
गौरीप्रसाद नारायणप्रसाद
तीनकौड़ी महीनदार शरत्चन्द्र हलदार
मैकुलाल मिश्र
सरजूप्रसाद लाला

तमाखूके व्यापारी

अब्दुल रहमान
प्रताप चन्द्रसेन
हनुतराम नथमल

हार्डवेअर मरचेण्ट्स

जगबन्धु कुण्डू
सूरजूनारायण दत्त

सिगरेट और बीड़ीके व्यापारी

जेठमल विट्ठलदास
श्रीचन्द छगनलाल

रांची

रांची बिहार प्रान्तके लोहारदगा नामक जिलेका प्रधान स्थान है। यह स्थान चारों ओर पहाड़ोंसे घिरा हुआ है। प्रकृति देवीने अपने अपूर्व सौंदर्य्यको बिखेरकर इसकी शोभाको बना रखी है। पहाड़ो एवं हवाखानेका स्थान होनेकी वजहसे सैकड़ो यात्री यहा घूमनेके लिये आया करते है। यहाकी आब हवा सुन्दर एवम स्वास्थ्य वर्धक है। यहासे हजारीबाग मोटर जाती है। हजारी बाग और रांचीके रास्तेमें सड़कके दोनों ओर आमकी कतारका दृश्य देखनेकी सामग्री है। इसके अतिरिक्त और भी कई प्राकृतिक स्थान देखने योग्य है। यह बी० एन०

रायसाहब गणपतरायजी बुधिया (चुन्नीलाल गणपतराय) रांची

बा० हनुमानदासजी पोद्दार (हरदत्तराय हुक्मीचंद) रांची

बा० राधाकृष्णजी बुधिया रांची
(चुन्नीलाल गणपतराय)
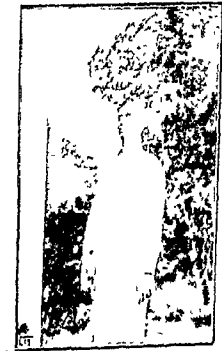
बा० मदनलालजी बुधिया रांची
(चुन्नीलाल गणपतराय)

रेलवेके अपनेही नामके स्टेशनसे करीब १ माईलकी दूरीपर बसा हुआ है। यहां भी बसावट साफ सुथरी और सुन्दर है। सड़कें चौड़ी एवम साफ है। बाहरके यात्रियोंके लिये यहां दो सुन्दर धर्मशालाएं भी बनी हुई है।

यहांका व्यापार गल्ले, कपड़े, किराने आदिका है। ये सब वस्तुएं बाहरसे यहां आकर बिकती हैं। यहांसे बाहर जानेवाले मालमें कोई विशेष वस्तु नहीं है।

यहाके व्यापारियोंका परिचय इस प्रकार है।

मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय

इस फर्मके मालिकोंका खास निवास चुरू (बीकानेर स्टेट) है। करीब ४५ वर्ष पूर्व सेठ चुन्नीलालजी देशसे रांची आये थे। आप अग्रवाल समाजके बुधिया सज्जन है। जिस समय सेठ चुन्नीलालजी रांची आये थे, यहां रेल आदि नहीं थी। आपने यहां सराफी लेनदेनका काम शुरू किया, धीरे २ आपका व्यापार तरक्की पाता गया, और वहांके अंग्रेज लोगोंसे आपका लेनदेन शुरू हुआ। आपके बाद आपके पुत्र रायसाहब गणपतरायजीने फर्मके व्यवसायमें विशेप उन्नति की, आपको सन् १९२० में अकाल पीड़ितोंकी सहायता करनेके उपलक्षमें गवर्नमेण्टसे राय साहबकी पदवी प्राप्त हुई है, आपकी ओरसे रांचीमे एक संस्कृत पाठशाला चल रही है, यहा छात्रोंके लिये भोजन वस्त्र एवं निवासका भी प्रबन्ध है। आपने राचीमें एक सुन्दर मारवाड़ी आरोग्य भवन बनानेके लिये ४० बीघा जमीन ली है। आपके ३ पुत्र हैं, बाबू राधाकृष्णजी बुधिया, बाबू गंगाप्रसादजी बुधिया एवं श्रीमदनलालजी बुधिया। श्रीमदनलालजी एफ० ए० में पढ़ रहे हैं तथा बाबू राधाकृष्णजी गंगाप्रसादजी फर्मके व्यापारका संचालन करते हैं।

इस फर्मका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची (बिहार) मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय—यहां इस फर्मका हेड ऑफिस है इसपर बैङ्किग, जमीदारी और कमीशनका काम होता है, यह फर्म वेडेलप नामक चायकी व्यवसायी फर्मकी ४० वर्षोंसे बैंकर हैं। यहां आपकी बहुत सी जमीदारी है।

कलकत्ता—मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय १७८ हरीसन रोड T. NO 417 B B—यहां बैङ्किग तथा आढ़तका काम होता है।

कटक—मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय—आढ़त तथा सराफी लेनदेन होता है।

वालटेर—(मद्रास) चुन्नीलाल गणपतराय " "

बिलासपुर (सी० पी०) मेसर्स चुन्नीलाल गणपतराय—आढ़त तथा सराफी लेन देन होता है।

डाल्टनगंज—चुन्नीलाल गणपतराय „ „

इसके अतिरिक्त इन स्थानोंके अंदरमें और भी ब्रांचेज हैं।

मेसर्स जमनाधर पोद्दार

इस फर्मका हेड आफिस नागपुर है। इसकी भारतभरमें कई शाखाएं हैं। यहां टाटा एण्ड संस लिमिटेडके मिलोंके कपड़ेकी सोल एजंसीका काम होता है। यह फर्म कपड़ेके व्यापारियोंमें बहुत अच्छी मानी जाती है। इसका विशेष परिचय कलकत्ताके कपड़ेके व्यापारियोंमें सोनीराम जीतमलके नामसे दिया गया है। यहां इस फर्मका अच्छा व्यापार होता है।

मेसर्स जोखीराम मूंगराज

इस फर्मके वर्तमान संचालक बाबू मूंगराजजी, बैजनाथजी, तथा जगन्नाथजी हैं। बाबू मूंगराजजी तथा आपके बड़े भाई केदारनाथजीने इस फर्मको करीब ३७ वर्ष पहिले स्थापित की। आप अग्रवाल वैश्य जातिके सरावगी सज्जन हैं। आप फतेहपुर (जयपुर) निवासी हैं।

आपकी ओरसे यहां एक सुन्दर धर्मशाला बनी हुई है।

आपका व्यापारिक परिचय इस प्रकार है।

रांची—जोखीराम मूंगराज T. A. Jokhiram —यहां सूत, कपड़ा, गल्ला तथा आढ़तका काम होता है।

कलकत्ता—जोखीराम मूंगराज १७३ हरिसन रोड T A Thikadar—यहां टाटा सन्सके लोहेके कारखानेमे बनी हुई चीजोंको एजंसी और चालानीका काम होता है।

बुण्डु (रांची) जोखीराम मूंगराज—गल्ला, कपड़ा, सोना और चांदीका व्यापार होता है॥

रामगढ़ (हजारीबाग) „ „ „ „ „

कोडरमा („) „ „ „ „ „

रायपुर (सी० पी०) „ „ „ „ „

रंगून „ „ „ „